जदीद व क़दीम तफ़ासीर और दीगर उ़लूमे इस्लामिया पर मुश्तमिल ज़ख़ीरए कुतुब की रोशनी में कुरआने मजीद की आयात के मत़ालिब व मआ़नी और उन से ह़ासिल होने वाले दर्सो मसाइल का मौजूदा ज़माने के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ इन्तिहाई आसान बयान

Siratul Jinan V-03 (Hindi)

सिरातुल जिनान फ़ी तफ़सीरिल क़ुरआन

तीसरी जिल्द
पारह 7..8..9

मुफ़स्सिर : शैख़ुल ह़दीस व तफ़्सीर,
अबू सालेह़ **मुफ़्ती मुह़म्मद क़ासिम** क़ादिरी अ़त्तारी مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي

www.dawateislami.net

जदीद व क़दीम तफ़ासीर और दीगर उ़लूमे इस्लामिया पर मुश्तमिल ज़ख़ीरए कुतुब की रोशनी में क़ुरआने मजीद की आयात के मत़ालिब व मआ़नी और उन से ह़ासिल होने वाले दर्सो मसाइल का मौजूदा ज़माने के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ इन्तिहाई आसान बयान, नीज़ मुसल्मानों के अ़क़ाइद, दीने इस्लाम के औसाफ़ व ख़ुसूसिय्यात, अहले सुन्नत के नज़रिय्यात व मा'मूलात, इ़बादात, मुआ़मलात, अख़्लाक़िय्यात, बात़िनी अमराज़ और मुआ़शरती बुराइयों से मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआनो ह़दीस अक़्वाले सह़ाबा व ताबेईन और दीगर बुज़ुर्गाने दीन के इर्शादात की रोशनी में एक जामेअ़ तफ़्सीर मअ़ दो तरजमों के

कन्ज़ुल ईमान फ़ी तर्जमतिल क़ुरआन

अज़ : आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

और

कन्ज़ुल इ़रफ़ान फ़ी तर्जमतिल क़ुरआन

मअ़

सिरात़ुल जिनान फ़ी तफ़्सीरिल क़ुरआन

अज़ : शैख़ुल ह़दीस व तफ़्सीर, अबू सालेह़ मुफ़्ती मुह़म्मद क़ासिम क़ादिरी अ़त़्त़ारी مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي

नाशिर

मक्तबतुल मदीना (दावते इस्लामी)

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तफ़्सीर ''सिरातुल जिनान फ़ी तफ़्सीरिल क़ुरआन'' का मुत़ालआ़ करने की निय्यतें

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(المعجم الكبير للطبرانی ٦/١٨٥ حديث: ٥٩٤٢)

दो मदनी फूल

बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार तअ़व्वुज़ व **(2)** तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा **(3)** रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा **(4)** बा वुज़ू और **(5)** क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा **(6)** क़ुरआनी आयात की दुरस्त मख़ारिज के साथ तिलावत करूंगा। **(7)** हर आयत की तिलावत के साथ इस का तरजमा और तफ़्सीर पढ़ कर क़ुरआने करीम समझने की कोशिश करूंगा और दूसरों को इस की ता'लीम दूंगा। **(8)** अपनी त़रफ़ से तफ़्सीर करने के बजाए उ़लमाए ह़क़्क़ा की लिखी गई तफ़ासीर पढ़ कर अपने आप को ''अपनी राय से तफ़्सीर करने'' की वईद से बचाऊंगा। **(9)** जिन कामों के करने का हुक्म है वोह करूंगा और जिन से मन्अ़ किया गया है उन से दूर रहूंगा। **(10)** अपने अ़क़ाइदो आ'माल की इस्लाह़ करूंगा और बद अ़क़ीदगी से ख़ुद भी बचूंगा और दूसरे इस्लामी भाइयों को भी बचाने की कोशिश करूंगा। **(11)** जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इन्आ़म हुवा उन की पैरवी करते हुए रिज़ाए इलाही पाने की कोशिश करता रहूंगा। **(12)** जिन क़ौमों पर इ़ताब हुवा उन से इ़ब्रत लेते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से डरूंगा। **(13)** शाने रिसालत में नाज़िल होने वाली आयात पढ़ कर उस का ख़ूब चरचा कर के आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपनी मह़ब्बतो अ़क़ीदत में मज़ीद इज़ाफ़ा करूंगा। **(14)** जहां जहां ''**अल्लाह**'' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और **(15)** जहां जहां ''सरकार'' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। **(16)** शरई मसाइल सीखूंगा **(17)** अगर कोई बात समझ न आई तो उ़लमाए किराम से पूछ लूंगा। **(18)** दूसरों को येह तफ़्सीर पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। **(19)** इस के मुत़ालए़ का सवाब आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सारी उम्मत को ईसाल करूंगा। **(20)** किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा। (नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

(शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सिरातुल जिनान की पहली जिल्द पर दिये गए तअस्सुरात)

कुछ सिरातुल जिनान के बारे में.....

1422 सि.हि. (2002 ई.) की बात है जब मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलह़ाज मुह़म्मद फ़ारूक़ मदनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِي "चल मदीना" के क़ाफ़िले में हमारे साथ थे और इस सफ़रे ह़ज में मुझे उन को क़रीब से देखने का मौक़अ़ मिला था। बेह़द कम गो, इन्तिहाई सन्जीदा और कसरत से तिलावते क़ुरआन करने वाली इस निहायत परहेज़ गार शख़्सिय्यत की अ़ज़मत मेरे दिल में घर कर गई। मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में हमारा मश्वरा हुवा कि आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के **तरजमए कन्ज़ुल ईमान** की एक आसान सी तफ़्सीर होनी चाहिये जिस से कम पढ़े लिखे अ़वाम भी फ़ाएदा उठा सकें, اَلْحَمْدُ لِلّٰه मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِي इस बा बरकत ख़िदमत के लिये बख़ुशी आमादा हो गए। मुजव्वज़ा तफ़्सीर का नाम **सिरातुल जिनान** (या'नी जन्नतों का रास्ता) तै़ हुवा। तबर्रुकन मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا ही में इस अ़ज़ीम काम का आग़ाज़ कर दिया गया, अफ़्सोस ! मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِي की ज़िन्दगी ने उन का साथ न दिया, 6 पारों पर काम कर के वोह (बरोज़ जुमुआ़ 18 मुह़र्रमुल ह़राम 1427 हि.) पर्दा फ़रमा गए।

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

चूंकि येह काम इन्तिहाई अहम था लिहाज़ा मदनी मर्कज़ की दरख़्वास्त पर शैख़ुल ह़दीसे वत्तफ़्सीर ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज मुफ़्ती अबू सालेह़ **मुह़म्मद क़ासिम**

www.dawateislami.net

क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی ने इस काम का अज़ सरे नौ आग़ाज़ किया। अगर्चे इस नए मवाद में मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी के किये गए काम को शामिल न किया जा सका मगर चूंकि बुन्याद उन्ही ने रखी थी और आग़ाज़ भी मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की पुर बहार फ़ज़ाओं में हुवा था और "**सिरातुल जिनान**" नाम भी वहीं तै किया गया था लिहाज़ा हुसूले बरकत के लिये येही नाम बाक़ी रखा गया है। **कन्ज़ुल ईमान** अगर्चे अपने दौर के ए'तिबार से निहायत फ़सीह् तरजमा है ताहम इस के बे शुमार अल्फ़ाज़ ऐसे हैं जो अब हमारे यहां राइज न रहने के सबब अ़वाम की फ़ह्म से बाला तर हैं लिहाज़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के तरजमए क़ुरआन **कन्ज़ुल ईमान** शरीफ़ को मिनो अ़न बाक़ी रखते हुए इसी से रोशनी ले कर दौरे ह़ाज़िर के तक़ाज़े के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद क़ासिम साह़िब مدظلہ ने مَاشَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ एक और तरजमे का भी इज़ाफ़ा फ़रमाया, इस का नाम **कन्ज़ुल इरफ़ान** रखा है। इस काम में दा'वते इस्लामी की मेरी अ़ज़ीज़ और प्यारी मजलिस, **अल मदीनतुल इल्मिय्या** के **मदनी उ़लमा** ने भी ह़िस्सा लिया बिल ख़ुसूस मौलाना **ज़ुल क़रनैन** मदनी سَلَّمَهُ الْغَنِی ने ख़ूब मुआ़वनत फ़रमाई और इस त़रह़ **सिरातुल जिनान** की **3 पारों** पर मुश्तमिल पहली जिल्द (और दूसरी जिल्द के बा'द अब पारह नम्बर **7**,**8** और **9** पर मब्नी तीसरी जिल्द) आप के हाथों में है। **अल्लाह** तआ़ला अलह़ाज मुफ़्ती मुह़म्मद क़ासिम साह़िब مدظلہ समेत इस **कन्ज़ुल ईमान फ़ी तरजमतिल क़ुरआन व सिरातुल जिनान फ़ी तफ़्सीरिल क़ुरआन** के मुबारक काम में अपना अपना ह़िस्सा मिलाने वालों को दुन्या व आख़िरत की ख़ूब ख़ूब भलाइयां इ़नायत फ़रमाए और तमाम आ़शिक़ाने रसूल के लिये येह तफ़्सीर नफ़्अ़ बख़्श बनाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

त़ालिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व
बे ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
का पड़ोस

9 जुमादल उख़्रा 1434 सि. हि.
20-04-2013

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
निय्यतें	1	बे ज़रूरत सुवालात करने की मज़म्मत	40
कुछ सिरातुल जिनान के बारे में	2	जानवर पर किसी का नाम पुकारने से	
सातवाँ पारह	11	मुतअ़ल्लिक़ अहम मस्अला	41
तिलावते क़ुरआन के 2 फ़ज़ाइल	12	आबाओ अज्दाद की ना जाइज़ रस्में	
तिलावते क़ुरआन के वक़्त रोने की तरग़ीब	12	पूरी करने की मज़म्मत	42
आ'माल में ए'तिदाल का हुक्म	15	नेक लोगों की पैरवी ज़रूरी है	43
ह़लाल चीज़ों को तर्क करने का शर्ई हुक्म	17	नेकी का हुक्म देने और बुराई से	
ह़लाल चीज़ों को ह़राम क़रार देने के बारे में		मन्अ़ करने के बारे में अह़ादीस	44
एक अहम मस्अला	17	झूटी क़सम खाने और	
क़सम की अक़्साम	18	झूटी गवाही देने की मज़म्मत	49
क़सम का कफ़्फ़ारा	19	"वही" का एक मा'ना	52
क़सम के कफ़्फ़ारे के चन्द मसाइल	19	नुज़ूले रह़मत के दिन को ईद बनाना	
शराब पीने की वईदें	21	सालिह़ीन का त़रीक़ा है	54
शराब ह़राम होने का 10 अन्दाज़ में बयान	21	ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वफ़ात से	
शराब नोशी के नताइज	22	मुतअ़ल्लिक़ क़ादियानियों के नज़रिय्ये का रद	58
जूए की मज़म्मत में 2 अह़ादीस	23	उम्मते मर्ह़ूम के ह़क़ में दुआ़	59
जूए के दुन्यवी नुक़्सानात	23	मज़्कूरा बाला ह़दीस से मा'लूम होने वाली बातें	60
काहिनों और नुजूमियों के पास जाने की मज़म्मत	25	सच्चाई की बरकत	61
आयत "فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ" से		**सूरए अन्आ़म**	63
मा'लूम होने वाले मसाइल	26		
ह़ालते एह़राम में शिकार करने के शर्ई मसाइल	30	सूरए अन्आ़म का तआ़रुफ़	63
ह़ालते एह़राम में शिकार के कफ़्फ़ारे की तफ़्सील	31	मक़ामे नुज़ूल	63
ह़राम शिकारों का बयान	32	रुकूअ़ और आयात की ता'दाद	63
दुन्या की मज़म्मत	35	"अन्आ़म" नाम रखने की वज्ह	63
आयत "لَا تَسْئَلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ" और इस की तफ़्सीर में		सूरए अन्आ़म की फ़ज़ीलत	63
मज़्कूर रिवायात से मा'लूम होने वाली अहम बातें	38	सूरए अन्आ़म के मज़ामीन	63

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
सूरए माइदह के साथ मुनासबत	64	नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के	
बुरा काम कर के **अल्लाह** तआ़ला की		इल्मे ग़ैब का इन्कार करने वालों का रद	112
मशिय्यत की त़रफ़ मन्सूब नहीं करना चाहिये	65	क़ियामत के दिन शफ़ाअ़त	114
शिर्क की ता'रीफ़	66	ग़रीबों के साथ सुलूक के ह़वाले से नसीह़त	116
साबिक़ा उम्मतों के अन्जाम से इ़ब्रत ह़ासिल करें	70	आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और एक मग़रूर अमीर	117
कुफ़्फ़ार की दुन्यवी तरक़्क़ी बारगाहे इलाही में		नेक मुसल्मानों का एह़तिराम करना चाहिये	118
मक़्बूलिय्यत की दलील नहीं	71	उ़ख़्रवी काम्याबी तक पहुंचाने वाले रास्ते पर	
निशानियां पूरी होने के बा वुजूद		चलने की तरग़ीब	119
कुफ़्फ़ारे मक्का पर अ़ज़ाब नाज़िल क्यूं न हुवा ?	72	गुनाह करने वाले ग़ौर करें	126
नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का		ह़िसाब होने से पहले	
मज़ाक़ उड़ाने वालों का अन्जाम	75	अपना मुह़ासबा कर लिया जाए	127
अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ और उस की		मुसल्मानों की बाहमी लड़ाई का एक सबब	131
मह़ब्बत पैदा करने का ज़रीआ़	76	गुनाहों पर इसरार न किया जाए	132
सफ़र कर के मज़ाराते औलिया पर जाना जाइज़ है	76	बद मज़्हबों की मह़फ़िलों में जाने और	
अल्लाह तआ़ला की रह़मत देख कर गुनाहों		उन की तक़ारीर सुनने का शर्ई हुक्म	133
पर बेबाक नहीं होना चाहिये	78	गुनाहों पर इसरार ह़ालते कुफ़्र में	
नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की		मौत का सबब बन सकता है	137
गवाही देना सुन्नते ख़ुदा है	83	आज़र ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का	
इस्लाम क़ुबूल करने वाले को क्या करना चाहिये ?	84	चचा था या बाप ?	140
ज़ालिम की वईद में दाख़िल अफ़राद	86	इस्लामी अ़क़ीदा और	
मुसल्मानों के उ़ख़्रवी ख़सारे का सबब	93	ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का वाक़िआ़	143
आख़िरत को भुला देने वाले दुन्यादारों की मिसाल	94	ह़नीफ़ का मा'ना	145
क़ियामत के दिन जानवरों का भी ह़िसाब होगा	101	दीने ह़क़ के इस्तिह़्काम की सूरत	145
अल्लाह तआ़ला की ने'मत पर ख़ुश होने का हुक्म	105	नमाज़ से पहले पढ़ा जाने वाला वज़ीफ़ा	146
कुफ़्र और गुनाहों के बा वुजूद		ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मक़ाम	150
दुन्यवी ख़ुशह़ाली का अस्ली सबब	105	मौत के वक़्त मुसल्मान और काफ़िर के ह़ालात	160
बेदीनों और ज़ालिमों की हलाकत		क़ब्रो ह़श्र की तन्हाई के	
अल्लाह तआ़ला की ने'मत है	107	साथी बनाना अ़क़्ल मन्दी है	162
उ़ख़्रवी नजात के लिये क्या चीज़ ज़रूरी है ?	110	फ़क़्र व मोह़ताजी दूर होने की दुआ़	164

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा
आख़िरत में **अल्लाह** तआ़ला के दीदार से मुतअ़ल्लिक़ अहले सुन्नत का अ़क़ीदा	168
दीदारे इलाही के क़ुरआने पाक से तीन दलाइल	169
दीदारे इलाही के अह़ादीस से 3 दलाइल	169
आयत "لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ" का मफ़्हूम	170
आयत "وَلَا تَسُبُّوا" से मा'लूम होने वाले मसाइल	174
आठवां पारह	176
अल्लाह तआ़ला की मशिय्यत से मुतअ़ल्लिक़ दो अहम मसाइल	177
मुसल्मानों को चाहिये कि इन्सानी शैत़ानों से बचें	179
दिल अपने हम जिन्स की त़रफ़ झुकता है	184
क़ुरआने मजीद की 4 शानें	187
मख़्लूक़ के शर से बचने के लिये 3 वज़ाइफ़	187
इस्लामी लबादे में मल्बूस इस्लाम दुश्मनों से बचा जाए	189
क़ुरआन ह़दीस के मुक़ाबले में आबाओ अज्दाद की पैरवी मुश्रिकों का त़रीक़ा है	189
क़ुरआने मजीद पर ईमान लाने का तक़ाज़ा	191
ह़राम चीज़ों का ज़िक्र तफ़्सील के साथ होता है	192
ह़लाल चीज़ें ह़राम क़रार देने वालों को नसीह़त	193
तौबा करने की अहम्मिय्यत और इस की तरग़ीब	194
इ़ल्म के बिग़ैर दीनी मसाइल में झगड़ना शैत़ानी लोगों का काम है	197
कुफ़्र और जहालत की मिसाल	198
नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत की बरकत	199
पेश्वाओं के बिगड़ने का नुक़्सान और संभलने का फ़ाएदा	200
अ़क़ीदए नुबुव्वत के बारे में चन्द अहम बातें	202
अ़ज़मते मुस्त़फ़ा और अ़ज़मते सह़ाबा	203
सीना खुलने से क्या मुराद है ?	205
सीने की तंगी की अ़लामत	205
ज़ुल्म करने वालों को इ़ब्रत अंगेज़ नसीह़त	209
रसूलों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मुतअ़ल्लिक़ अहम मस्अला	211
मौत से ग़ाफ़िल रहने वालों को नसीह़त	214
अहले अ़रब में शिर्क व बुत परस्ती की इब्तिदा कब हुई ?	219
औलाद के क़ातिलों को नसीह़त	222
हर चीज़ में अस्ल इबाह़त है	223
ज़मीन की हर पैदावार में ज़कात है	225
दलील देना हुरमत का दा'वा करने वाले पर लाज़िम है	227
ह़राम जानवरों के बयान पर मुश्तमिल आयत से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़काम	229
साबिक़ा शरीअ़तों के सख़्त अह़काम हम पर जारी नहीं	231
झूटी गवाही और उस की तस्दीक़ ह़राम है	235
औ़रतों के ह़ुक़ूक़ से मुतअ़ल्लिक़ इस्लाम की ह़सीन ता'लीमात	237
ब ज़ाहिर नेक रहना और छुप कर गुनाह करना तक़्वा नहीं	238
अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से गुनाह छोड़ने के 3 फ़ज़ाइल	239
ज़ाहिरी व बातिनी गुनाहों से महफ़ूज़ रहने की दुआ़	239
नाह़क़ क़त्ल करने या क़त्ल का ह़ुक्म देने की 3 वईदें	240
क़त्ले बरह़क़ की सूरतें और एक अहम तम्बीह	240
नाप तोल में कमी करने की 2 वईदें	241
अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से ह़राम काम छोड़ने की फ़ज़ीलत	243
अह़द शिकनी पर वईद	243
सीधा रास्ता	245

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
उम्मत पर क़ुरआने मजीद का ह़क़	247	शैत़ान से ह़िफ़ाज़त की दुआ़	282
सिर्फ़ अ़क़्ल पर भरोसा नहीं करना चाहिये	249	ह़ज़रते शक़ीक़ बल्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का त़रीक़ा	282
तौबा और नेक आ'माल में सब्क़त करने की तरग़ीब	251	जहन्नम को जिन्नों और इन्सानों से भरा जाएगा	284
फ़िर्क़ा बन्दी का सबब और ह़क़ पर कौन ?	253	ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अ़मल में	
सवाब के दरजात	255	मुसल्मानों के लिये तरबियत	287
ज़ुल्म के मा'ना	256	सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का लिबास	289
अ़ज़मते अम्बिया	257	सफ़ेद लिबास की फ़ज़ीलत	290
सब से पहले मोमिन	259	आ़म और नया लिबास पहनते वक़्त की दुआ़एं	290
सूरةُ اअ़राफ़	263	लिबास की उ़म्दा तश्रीह़	290
सूरए आ'राफ़ का तआ़रुफ़	263	शैत़ान से मुक़ाबला करने और	
मक़ामे नुज़ूल	263	इसे मग़्लूब करने के त़रीक़े	292
रुकूअ़ और आयात की ता'दाद	263	क्या इन्सान जिन्नों को देख सकते हैं ?	293
"आ'राफ़" नाम रखने की वज्ह	263	मख़्लूक़ के लिये वसीअ़ इल्मो क़ुदरत मानना	
सूरए आ'राफ़ की फ़ज़ीलत	263	शिर्क नहीं	294
सूरए आ'राफ़ के मज़ामीन	263	क़िस्त़ के मा'ना	296
सूरए अन्आ़म के साथ मुनासबत	264	इख़्लास की ह़क़ीक़त और अ़मल में	
तकालीफ़ की वज्ह से तब्लीग़े दीन में		इख़्लास के फ़ज़ाइल	296
दिलतंग नहीं होना चाहिये	266	तर्के इख़्लास की मज़म्मत	297
वज़्न और मीज़ान का मा'ना	269	आयत "خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ" से	
क़ियामत के दिन आ'माल के वज़्न की सूरतें	269	मा'लूम होने वाले अह़काम	300
मीज़ान से मुतअ़ल्लिक़ दो अहम बातें	270	आदाबे मस्जिद से मुतअ़ल्लिक़	
मीज़ाने अ़मल को भरने वाले आ'माल	270	3 अह़ादीस	301
शुक्र की ह़क़ीक़त और इस के फ़ज़ाइल	272	क़ीमती लिबास में नमाज़	301
तकब्बुर की मज़म्मत	276	क़ुरआन की आधी आयत में पूरा इल्मे त़िब	302
आ़जिज़ी के फ़ज़ाइल	277	अश्या की ह़िल्लत व ह़ुर्मत का उ़सूल	302
फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की आ़जिज़ी	277	ज़ीनत की दो तफ़ासीर	303
इन्सानों को बहकाने में शैत़ान की कोशिशें	280	आयत "قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللهِ" की रोशनी में	
शैत़ान से पनाह मांगने की तरग़ीब	281	चन्द लोगों को नसीह़त	304

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
ज़ाहिरी व बात़िनी बे ह़याइयों को		एक दुआ़ से ह़ासिल होने वाले फ़वाइद	342
ह़राम क़रार दिये जाने की वज्ह	308	दुआ़ में ह़द से बढ़ने की सूरतें	343
मौत के लिये हर वक़्त तय्यार रहें	309	ख़ौफ़ और उम्मीद की ह़ालत में	
तकब्बुर की बहुत बड़ी क़बाह़त	311	दुआ़ मांगनी चाहिये	344
अल्लाह तआ़ला पर इफ़्तिरा की सूरतें	312	ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मुख़्तसर तआ़रुफ़	347
कुफ़्फ़ार के लिये आस्मान के दरवाज़े		नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की	
न खोले जाने के मा'ना	315	नुबुव्वत की ज़बर दस्त दलील	348
पाकीज़ा दिल होना जन्नतियों का वस्फ़ है	319	नुबुव्वत और गुमराही जम्अ़ नहीं हो सकती	349
बुग़्ज़ो कीना की मज़म्मत	319	मुबल्लिग़ को चाहिये कि मुख़ात़ब की	
मुसल्मानों को आपस में कैसा होना चाहिये ?	320	जहालत पर शफ़्क़त व नरमी का मुज़ाहरा करे	349
अच्छे अ़मल की तौफ़ीक़ मिलने पर		ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और	
अल्लाह तआ़ला की ह़म्द की जाए	321	उन की क़ौम का वाक़िआ़	352
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल	322	सूरए आ'राफ़ की आयत नम्बर 67 और 68	
जन्नत में दाख़िले का सबब	322	से मा'लूम होने वाले मसाइल	353
क़ियामत के दिन जन्नती मुसल्मान		ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम पर	
गुनहगार मुसल्मानों को त़ा'ना न देंगे	324	अ़ज़ाब नाज़िल होने का वाक़िआ़	356
मुसल्मान कहलाने वाले बेदीन लोगों का अन्जाम	325	ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और	
जन्नतियों और जहन्नमियों के बाहमी मुकालमे	325	उन की क़ौम का वाक़िआ़	360
कुफ़्र और बद अ़मली की बड़ी वज्ह	326	लिवात़त की मज़म्मत	362
जन्नतियों और जहन्नमियों की अ़लामात	329	लिवात़त की अ़क़्ली और त़िब्बी ख़बासतें	364
दूर से सुनना शिर्क नहीं	329	अच्छे अ़मल को बुरा और बुरे अ़मल को	
ग़रीबों की ग़ुर्बत का मज़ाक़ उड़ाने से बचा जाए	331	अच्छा समझने की औंधी सोच	367
जन्नती मोमिन को जहन्नमी काफ़िर से		किसी जगह नेक बन्दों का मौजूद होना	
न मह़ब्बत होगी न इसे उस पर रह़म आएगा	332	अम्न का ज़रीआ़ है	368
जन्नतियों और जहन्नमियों के अह़वाल		आयत "وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا" से	
बयान करने का मक़्सद	335	मा'लूम होने वाले मसाइल	369
आस्मान व ज़मीन को 6 दिन में पैदा करने की ह़िक्मत	339	कुफ़्फ़ार भी बा'ज़ अह़काम के मुकल्लफ़ हैं	371
जल्द बाज़ी से मुतअ़ल्लिक़ 2 अह़ादीस	339	नाप तोल पूरा न करने वालों के लिये वईद	371
दुआ़ मांगने के फ़ज़ाइल	341	आग के दो पहाड़	372

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
नवीं पारह	374	नुज़ूले तौरात का वाक़िआ़	423
क़ौम की हलाकत का बाइ़स उस के रहनुमा शैत़ान अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को	374	**अल्लाह** तआ़ला का दीदार ना मुम्किन नहीं हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का	426
गुमराह नहीं कर सकता	377	अपने ज़माने के लोगों पर इन्तिख़ाब हुवा	428
तवक्कुल का ह़क़ीक़ी मफ़्हूम	377	तकब्बुर की ता'रीफ़ और इस की अक़्साम	431
अह़कामे इलाहिय्यह की पाबन्दी में अपनी नाकामी समझने वाले ग़ौर करें	379	तकब्बुर की तीनों अक़्साम का हुक्म	432
अहले मद्यन पर आने वाले अ़ज़ाब की कैफ़िय्यत	379	तकब्बुर का समरा और अन्जाम	432
इक़्तिसादी और मआ़शी बेहतरी		शमातत की मज़म्मत	437
इस्लामी अह़काम पर अ़मल करने में है	381	बिद्अ़त की ता'रीफ़	439
मुर्दे सुनते हैं	382	बिद्अ़त की अक़्साम	440
साबिक़ा उम्मतों के अह़वाल बयान करने से मक़्सूद	382	तौबा के फ़ज़ाइल	440
ना गहानी आफ़त और मुसल्मानों की ह़ालते ज़ार	385	रह़मते इलाही की वुस्अ़त	441
तक़्वा रह़मते इलाही मिलने का ज़रीआ़ है	386	नबी और उम्मी का तरजमा	447
मसाइब की दूरी के लिये नेक आ'माल करने जाइज़ हैं	387	तौरात व इन्जील में मज़्कूर औसाफ़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	448
वुस्अ़ते रिज़्क़ सआ़दत भी है और वबाल भी	388	उ़मूमे रिसालत की दलील	453
नेक आ'माल करने और अ़ज़ाबे इलाही से डरने की तरग़ीब	389	शरई अह़काम बात़िल करने के लिये ह़ीला करने वालों को नसीह़त	460
अल्लाह तआ़ला की ख़ुफ़्या तदबीर से हर वक़्त डरते रहना चाहिये	390	ना फ़रमानियों के बा वुजूद बख़्शिश की तमन्ना रखना कैसा है ?	464
मुसीबत के वक़्त अ़हदो पैमान और बा'द में उस के बर ख़िलाफ़	395	नमाज़ की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत	466
ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मुख़्तसर तआ़रुफ़	397	क़ुरआन के अह़काम पर	
फ़िरऔन का मुख़्तसर तआ़रुफ़	397	अ़मल के मुआ़मले में हमारी ह़ालत	467
अ़साए कलीम अज़्दहाए ग़ज़ब	399	क़ुरआने करीम का आहिस्ता आहिस्ता नुज़ूल	
दस्ते अक़्दस का कमाल	400	**अल्लाह** तआ़ला की ख़ास रह़मत है	468
ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इ़ल्मे ग़ैब की दलील	409	सूरए आ'राफ़ की आयत नम्बर 172 और 173 से मा'लूम होने वाले अह़काम	470
मसाइब ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदारी का सबब भी हैं	411	बल्अ़म बिन बाऊ़रा का वाक़िआ़	472
बद शुगूनी की मज़म्मत	412	लालची और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की	
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के काम उस के मक़्बूल बन्दों की त़रफ़ मन्सूब किये जा सकते हैं	417	पैरवी करने वाले उ़लमा के लिये नसीह़त	475

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दरबारी उ़लमा के लिये इ़ब्रत	476	**सूरۃُ انفال**	516
काफ़िरों को जानवरों से		सूरए अन्फ़ाल का तआ़रुफ़	516
बदतर फ़रमाए जाने की वुजूहात	478	मक़ामे नुज़ूल	516
अस्माए हुस्ना के फ़ज़ाइल	479	रुकूअ़ और आयात की ता'दाद	516
अल्लाह तआ़ला के निनानवे अस्मा	480	"अन्फ़ाल" नाम रखने की वज्ह	516
अस्माए हुस्ना पढ़ कर दुआ़ मांगने का बेहतरीन त़रीक़ा	480	सूरए अन्फ़ाल के मज़ामीन	516
कोई ज़माना अहले ह़क़ से ख़ाली न होगा	481	सूरए आ'राफ़ के साथ मुनासबत	517
गुनाहों के बा वुजूद ने'मतें मिलना कहीं		कामिल ईमान वालों के तीन औसाफ़	519
अल्लाह तआ़ला की ढील न हो	482	ख़ौफ़े ख़ुदा से मुतअ़ल्लिक़ आसार	519
गुनाहों के बा वुजूद उ़म्र लम्बी हो तो		तवक्कुल का ह़क़ीक़ी मा'ना और	
इसे बेहतर न समझा जाए	484	तवक्कुल की फ़ज़ीलत	520
गुनाह पर जल्दी पकड़ न होना अ़ज़ाब है	487	जंगे बद्र में फ़िरिश्तों ने लड़ाई में	
नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को		बा क़ाइदा ह़िस्सा लिया था	529
क़ियामत का इ़ल्म अ़त़ा किया गया है	489	जंगे उ़हुद और जंगे ह़ुनैन में पस्पाई इख़्तियार	
मख़्लूक़ में से किसी को मा'बूद मान कर		करने वाले सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ का ह़ुक्म	532
पुकारना शिर्क है वरना हरगिज़ शिर्क नहीं	498	हर अच्छे काम की निस्बत	
अल्लाह तआ़ला के मक़्बूल बन्दों से मदद चाहना		**अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ की जाए	533
और उन्हें वसीला बनाना तौह़ीद के बर ख़िलाफ़ नहीं	501	ग़ैब की एक ख़बर	535
निगाहे बसीरत से देखना ही ह़क़ीक़ी त़ौर पर		रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब भी बुलाएं	
फ़ाएदे मन्द है	502	तो उन की बारगाह में ह़ाज़िर होना ज़रूरी है	539
अ़फ़्वो दर गुज़र और सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	503	क़ुदरत के बा वुजूद बुराई से मन्अ़ करना	
शैत़ान को मग़्लूब करने के त़रीक़े	505	छोड़ देना अ़ज़ाबे इलाही आने का सबब है	541
शैत़ान के वस्वसे से बचने का एक त़रीक़ा	508	ने'मत की नाशुक्री ने'मत छिन जाने का सबब है	543
मुत्तक़ी मुसल्मान और काफ़िर का ह़ाल	510	मोमिन की फ़िरासत	546
इमाम के पीछे क़ुरआन पढ़ने की मुमानअ़त	512	अ़ज़ाब से अम्न में रहने का ज़रीआ़	552
सज्दए तिलावत के चन्द अह़काम	514	काफ़िर तौबा करे तो उस के साबिक़ा गुनाह	
सज्दए तिलावत की फ़ज़ीलत	515	मुआ़फ़ हो जाते हैं	557
सज्दए तिलावत का त़रीक़ा	515	जिहाद के 2 फ़ज़ाइल	558

www.dawateislami.net

وَاِذَا سَمِعُوْا

7

पारह नम्बर..... 7

وَ اِذَا سَمِعُوْا مَاۤ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰۤى اَعْیُنَهُمْ تَفِیْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّۚ یَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِیْنَ ﴿۸۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब सुनते हैं वोह जो रसूल की त़रफ़ उतरा तो उन की आंखें देखो कि आंसूओं से उबल रही हैं इस लिये कि वोह ह़क़ को पहचान गए कहते हैं ऐ रब हमारे हम ईमान लाए तो हमें ह़क़ के गवाहों में लिख ले।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब येह सुनते हैं वोह जो रसूल की त़रफ़ नाज़िल किया गया तो तुम देखोगे कि उन की आंखें आंसूओं से उबल पड़ती हैं इस लिये कि वोह ह़क़ को पहचान गए। कहते हैं ऐ हमारे रब ! हम ईमान लाए पस तू हमें (ह़क़ के) गवाहों के साथ लिख दे।

وَ اِذَا سَمِعُوْا مَاۤ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ : और जब येह लोग उस को सुनते हैं जो रसूल की त़रफ़ नाज़िल किया गया। जब ह़बशा की त़रफ़ हिजरत करने वाले सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ नजाशी के दरबार में जम्अ़ थे और मुश्रिकीने मक्का का वफ़्द भी वहां मौजूद था तो उस वक़्त नजाशी ने ह़ज़रते जा'फ़रे त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : क्या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की किताब में ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का ज़िक्र है ? ह़ज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : क़ुरआने पाक में एक मुकम्मल सूरत ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की त़रफ़ मन्सूब है, फिर **सूरए मरयम** और **सूरए त़ाहा** की चन्द आयात तिलावत फ़रमाईं तो नजाशी की आंखों से सैले अश्क रवां हो गया। इसी त़रह़ जब फिर ह़बशा का वफ़्द सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा जिस में 70 आदमी थे और ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के सामने सूरए यासीन की तिलावत फ़रमाई तो उसे सुन कर वोह लोग भी ज़ारो क़ित़ार रोने लगे। इस आयत में इन वाक़िआ़त की त़रफ़ इशारा है।[1] इन्ही सब के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया गया कि जब येह लोग उस को सुनते हैं जो रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ नाज़िल किया गया तो तुम देखोगे कि उन की आंखें आंसूओं से उबल पड़ती हैं क्यूं कि वोह ह़क़ को

1 .....مدارك، المائدة، تحت الآية: ٨٣، ص ٢٩٩.

www.dawateislami.net

पहचान गए और वोह कहते हैं : ऐ हमारे रब ! عَزَّوَجَلَّ, हम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाए और हम ने उन के बरहक़ होने की शहादत दी, पस तू हमें हक़ की गवाही देने वालों के साथ लिख दे और हमें उस हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत में दाख़िल फ़रमा जो रोज़े क़ियामत तमाम उम्मतों के गवाह होंगे। (और येह बात उन्हें इन्जील से मा'लूम हो चुकी थी।) इस आयत से मा'लूम हुवा कि ज़िक्रे इलाही के वक़्त इश्क़ो महब्बत में रोना आ'ला इबादत है। इसी तरह अज़ाबे इलाही के ख़ौफ़ और रहमते इलाही की उम्मीद में रोना भी इबादत है। बहुत से **आशिक़ाने कुरआन,** कुरआन की तिलावत करते हुए झूमते हैं, येह कुरआने करीम से लज़्ज़त व सुरूर हासिल होने की वज्ह से होता है। सुब्ह की ख़ुश गवार हवा से नर्म शाख़ें हरकत करती हैं और तिलावत करने वाला रहमते इलाही की नसीम से हिलता है।

तिलावते कुरआन के 2 फ़ज़ाइल

हज़रते अबू मूसा अश्अरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो मोमिन कुरआन पढ़ता है, उस की मिसाल तुरन्ज की सी है कि ख़ुश्बू भी अच्छी है और मज़ा भी अच्छा है और जो मोमिन कुरआन नहीं पढ़ता, वोह खजूर की मिस्ल है कि उस में ख़ुश्बू नहीं मगर मज़ा शीरीं है। और जो मुनाफ़िक़ कुरआन पढ़ता है, वोह फूल की मिस्ल है कि उस में ख़ुश्बू है मगर मज़ा कड़वा और जो मुनाफ़िक़ कुरआन नहीं पढ़ता, वोह इन्दराइन की मिस्ल है कि उस में ख़ुश्बू भी नहीं है और मज़ा कड़वा है।"(1)

हज़रते आइशा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो कुरआन पढ़ने में माहिर है, वोह किरामन कातिबीन के साथ है और जो शख़्स रुक रुक कर कुरआन पढ़ता है और वोह उस पर शाक़ है या'नी उस की ज़बान आसानी से नहीं चलती, तक्लीफ़ के साथ अदा करता है, उस के लिये दो अज्र हैं(2)।"(3)

तिलावते कुरआन के वक़्त रोने की तरग़ीब

तिलावते कुरआन के वक़्त रोना मुस्तहब है और येह **अल्लाह** तआला के जलीलुल क़द्र बन्दों का तरीक़ा है कि बुलन्द मरातिब पर पहुंचने के बा वुजूद भी उन की दिली कैफ़िय्यात येह होती हैं कि जब उन के सामने कलामे इलाही की आयात पढ़ी जाती हैं तो उन्हें सुन कर

1 .....بخاری، کتاب الاطعمة، باب ذکر الطعام، ۳/۵۳۵، الحدیث: ۵۴۲۷.

2 .....مسلم، کتاب صلاة المسافرین وقصرها، باب فضل الماهر بالقرآن والذی یتتعتع فیه، ص ۴۰۰، الحدیث: ۲۴۴(۷۹۸).

3..... तिलावते कुरआन के मज़ीद फ़ज़ाइल जानने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिसाला "तिलावत की फ़ज़ीलत" (मत्बूआ मक्तबतुल मदीना) का मुतालआ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

वोह **अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ से रोने लगते हैं जैसा कि सूरए मरयम की आयत नम्बर 58 में बयान हुवा, इसी त़रह़ उन की एक और कैफ़िय्यत बयान करते हुए **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِیْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِیَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِیْنَ یَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِیْنُ جُلُوْدُهُمْ وَ قُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ[1]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** ने सब से अच्छी किताब उतारी कि सारी एक जैसी है, बार बार दोहराई जाती है। इस से उन लोगों के बदन पर बाल खड़े होते हैं जो अपने रब से डरते हैं फिर उन की खालें और दिल **अल्लाह** की याद की त़रफ़ नर्म पड़ जाते हैं।

ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह क़ुरआन ग़म के साथ नाज़िल हुवा था, जब तुम इसे पढ़ो तो रोव और अगर रो न सको तो रोने की शक्ल बना लो।"[2]

ह़ज़रते बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ुरआन को ग़म के साथ पढ़ो क्यूं कि येह ग़म के साथ नाज़िल हुवा है।"[3]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "जब तुम सूरए सुब्ह़ान में सज्दे की आयत पढ़ो तो सज्दा करने में जल्दी न करो यहां तक कि तुम रोव और अगर तुम में से किसी की आंख न रोए तो दिल को रोना चाहिये (और तकल्लुफ़ के साथ रोने का त़रीक़ा येह है कि दिल में ह़ुज़्नो मलाल को ह़ाज़िर करे क्यूं कि इस से रोना पैदा होता है)।"[4]

इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ग़म ज़ाहिर करने का त़रीक़ा येह है कि क़ुरआन के डराने, वा'दा और अ़ह्दो पैमान को याद करे फिर सोचे कि इस ने उस के अह़कामात और मम्नूआ़त में कितनी कोताही की है तो इस त़रह़ वोह ज़रूर ग़मगीन होगा और रोएगा और अगर ग़म और रोना ज़ाहिर न हो जिस त़रह़ साफ़ दिल वाले लोग रोते हैं तो इस ग़म और रोने के न पाए जाने पर रोए क्यूं कि येह सब से बड़ी मुसीबत है।"[5]

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا جَآءَنَا مِنَ الْحَقِّ ۙ وَ نَطْمَعُ اَنْ یُّدْخِلَنَا

1 .....زمر: ۲۳.
2 .....ابن ماجه، کتاب اقامة الصلاة والسنّة فیها، باب فی حسن الصوت بالقرآن، ۱۲۹/۲، الحدیث: ۱۳۳۷.
3 .....معجم الاوسط، باب الالف، من اسمه ابراهیم، ۱۶۶/۲، الحدیث: ۲۹۰۲.
4 .....تفسیر کبیر، مریم، تحت الآیة: ۵۸، ۵۵۱/۷.
5 .....احیاء علوم الدین، کتاب آداب تلاوة القرآن، الباب الثانی فی ظاهر آداب التلاوة، ۳۶۸/۱.

www.dawateislami.net

رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۸۴﴾ فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِیْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ وَ ذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۸۵﴾
وَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَاۤ اُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِیْمِ ﴿۸۶﴾ ع ۱۱ ۱۶

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हमें क्या हुवा कि हम ईमान न लाएं **अल्लाह** पर और उस ह़क़ पर कि हमारे पास आया और हम त़मअ़ करते हैं कि हमें हमारा रब नेक लोगों के साथ दाख़िल करे। तो **अल्लाह** ने उन के इस कहने के बदले उन्हें बाग़ दिये जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहेंगे येह बदला है नेकों का। और वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाईं वोह हैं दोज़ख़ वाले।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हमें क्या है कि हम **अल्लाह** पर और उस ह़क़ पर ईमान न लाएं जो हमारे पास आया और हम त़मअ़ करते हैं कि हमें हमारा रब नेक लोगों के साथ (जन्नत में) दाख़िल कर दे। तो **अल्लाह** ने उन के इस कहने के बदले उन्हें वोह बाग़ात अ़त़ा फ़रमाए जिन के नीचे नहरें जारी हैं, हमेशा उन में रहेंगे और येह नेक लोगों की जज़ा है। और जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया तो वोह दोज़ख़ वाले हैं।

﴿وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ﴾ **: और हमें क्या है कि हम अल्लाह पर ईमान न लाएं।** ﴾ जब ह़बशा का वफ़्द इस्लाम से मुशर्रफ़ हो कर वापस गया तो यहूदियों ने उन्हें इस पर मलामत की। इस के जवाब में उन्हों ने येह कहा कि जब ह़क़ वाज़ेह़ हो गया तो हम क्यूं ईमान न लाते[1] या'नी ऐसी ह़ालत में ईमान न लाना क़ाबिले मलामत है न कि ईमान लाना क्यूं कि ईमान लाना तो फ़लाहे़ दारैन का सबब है।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَیِّبٰتِ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَ لَا تَعْتَدُوْا ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ الْمُعْتَدِیْنَ ﴿۸۷﴾ وَ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَیِّبًا ۪
وَّ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْۤ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾

1 .....خازن، المائدة، تحت الآیة: ٨٤، ١/ ٥٢٠.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ह़राम न ठहराओ वोह सुथरी चीज़ें कि **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये ह़लाल कीं और ह़द से न बढ़ो बेशक ह़द से बढ़ने वाले **अल्लाह** को ना पसन्द हैं। और खाओ जो कुछ तुम्हें **अल्लाह** ने रोज़ी दी ह़लाल पाकीज़ा और डरो **अल्लाह** से जिस पर तुम्हें ईमान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! उन पाकीज़ा चीज़ों को ह़राम न क़रार दो जिन्हें **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये ह़लाल फ़रमाया है और ह़द से न बढ़ो। बेशक **अल्लाह** ह़द से बढ़ने वालों को ना पसन्द फ़रमाता है। और जो कुछ तुम्हें **अल्लाह** ने ह़लाल पाकीज़ा रिज़्क़ दिया है उस में से खाओ और उस **अल्लाह** से डरो जिस पर तुम ईमान रखने वाले हो।

﴿لَا تُحَرِّمُوْا طَیِّبٰتِ﴾ **: पाकीज़ा चीज़ों को ह़राम न ठहराओ।** इस आयते मुबारका का शाने नुज़ूल येह है कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ की एक जमाअ़त सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वा'ज़ सुन कर एक रोज़ ह़ज़रते उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हां जम्अ़ हुई और उन्हों ने आपस में तर्के दुन्या का अ़ह्द किया और इस पर इत्तिफ़ाक़ किया कि वोह टाट पहनेंगे और हमेशा दिन में रोज़े रखेंगे और सारी रात इ़बादते इलाही में गुज़ारा करेंगे, बिस्तर पर न लैटेंगे और गोश्त और चिक्नाई न खाएंगे और औ़रतों से जुदा रहेंगे नीज़ ख़ुश्बू न लगाएंगे। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें इस इरादे से रोक दिया गया।[1]

आ'माल में ए'तिदाल का ह़ुक्म

अह़ादीसे मुबारका में इस त़रह़ के बहुत से वाक़िआ़त हैं जिन में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ए'तिदाल का ह़ुक्म फ़रमाया और इ़बादत करने में ख़ुद को बहुत ज़ियादा तक्लीफ़ में डालने से मन्अ़ फ़रमाया। इस के लिये दर्जे ज़ैल 3 अह़ादीस मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

(1)..... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के पास तशरीफ़ फ़रमा थे, उस वक़्त ह़ज़रते ह़ौला बिन्ते तुवैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उन के पास से गुज़रीं। ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : येह ह़ौला बिन्ते तुवैत (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) हैं, लोग कहते हैं कि येह रात भर नहीं सोतीं। **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : रात भर नहीं

[1] .....تفسیر قرطبی، المائدۃ، تحت الآیۃ: ۸۷، ۳/۱۵۶، الجزء السادس.

www.dawateislami.net

सोतीं ! इतना अ़मल किया करो जितना आसानी से कर सको, बख़ुदा ! **अल्लाह** तआ़ला नहीं उक्ताएगा लेकिन तुम उक्ता जाओगे ।[1]

(2)..... ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ लाए, उस वक़्त मस्जिद के दो सुतूनों के दरमियान रस्सी तानी हुई थी, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : येह क्या है ? सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने अ़र्ज़ की : येह ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की रस्सी है वोह नमाज़ पढ़ती हैं और जब उन पर थकन या सुस्ती त़ारी होती है तो इस रस्सी को पकड़ लेती हैं । हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इस रस्सी को खोल दो, तुम में से हर शख़्स उस वक़्त तक नमाज़ पढ़े जब तक वोह आसानी से नमाज़ पढ़ सके और जब उस पर थकन या सुस्ती त़ारी हो तो वोह बैठ जाया करे ।''[2]

(3)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, मैं हमेशा रोज़े रखता था और हर रात क़ुरआने मजीद की तिलावत करता था, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने मेरा ज़िक्र किया गया तो आप ने मुझे बुलवाया, मैं ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मुझे येह ख़बर मिली है कि तुम हमेशा रोज़े रखते हो और हर रात क़ुरआने मजीद पढ़ते हो ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं, **या रसूलल्लाह !** लेकिन मैं ने इस इ़बादत से सिर्फ़ ख़ैर का इरादा किया है। सरकारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम्हारे लिये येह काफ़ी है कि तुम महीने में सिर्फ़ तीन दिन रोज़े रख लिया करो ।'' मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, मैं इस से अफ़्ज़ल की त़ाक़त रखता हूं। इर्शाद फ़रमाया : ''तुम्हारी बीवी का तुम पर ह़क़ है, तुम्हारे मेहमान का तुम पर ह़क़ है, तुम्हारे जिस्म का तुम पर ह़क़ है, तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के रोज़े रखो क्यूं कि वोह लोगों में सब से ज़ियादा इ़बादत गुज़ार थे ।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे नबी ! ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام के रोज़े किस त़रह़ थे ? इर्शाद फ़रमाया : ''वोह एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन इफ़्त़ार करते थे ।'' और फ़रमाया : ''हर माह में एक क़ुरआने पाक ख़त्म किया करो ।'' मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, मैं इस से अफ़्ज़ल की त़ाक़त रखता हूं। इर्शाद फ़रमाया : ''फिर बीस दिन में एक क़ुरआने पाक ख़त्म कर लो ।'' मैं ने अ़र्ज़ की : मैं इस से अफ़्ज़ल की त़ाक़त रखता हूं। इर्शाद फ़रमाया : ''फिर दस दिन में एक

1 .....مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب فضيلة العمل الدائم من قيام الليل وغيره، ص ٣٩٤، الحديث: ٢٢٠(٧٨٥).

2 .....مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب فضيلة العمل الدائم من قيام الليل وغيره، ص ٣٩٤، الحديث: ٢١٩(٧٨٤).

www.dawateislami.net

कुरआने पाक ख़त्म कर लो।" मैं ने अ़र्ज़ की : मैं इस से अफ़्ज़ल की ताक़त रखता हूं। इर्शाद फ़रमाया : "फिर सात दिन में कुरआने पाक ख़त्म कर लो और इस से ज़ियादा अपने आप को मशक़्क़त में न डालो क्यूं कि तुम्हारी बीवी का भी तुम पर ह़क़ है, तुम्हारे मेहमान का भी तुम पर ह़क़ है और तुम्हारे जिस्म का भी तुम पर ह़क़ है।"[1]

ह़लाल चीज़ों को तर्क करने का शरई ह़ुक्म

ह़लाल चीज़ों को तर्क करना जाइज़ होता है कि इन का करना कोई फ़र्ज़ व वाजिब नहीं होता लेकिन जिस त़रह़ ह़राम को गुनाह व ना फ़रमानी समझ कर तर्क किया जाता है इस त़रह़ ह़लाल चीज़ों को तर्क करने की इजाज़त नहीं। नीज़ किसी ह़लाल चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ बत़ौरे मुबालग़ा येह कहने की इजाज़त नहीं कि हम ने इस को अपने ऊपर ह़राम कर लिया है। सूफ़ियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم से जो बहुत सी चीज़ों को तर्क करने के वाक़िआ़त मिलते हैं वोह बत़ौरे इ़लाज हैं या'नी जिस त़रह़ बीमार आदमी बहुत सी ग़िज़ाओं को ह़लाल समझने के बा वुजूद अपनी सिह़्ह़त की ख़ातिर परहेज़ करते हुए कई चीज़ों को छोड़ देता है इसी त़रह़ सूफ़ियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم नफ़्स के इ़लाज के लिये बा'ज़ ह़लाल चीज़ों को ह़लाल समझने के बा वुजूद तर्क कर देते हैं, लेकिन इस में इस बात का ख़याल रखना ज़रूरी है कि ह़लाल चीज़ों को तर्क करने की इजाज़त तो है लेकिन येह इजाज़त नहीं कि उन के साथ ह़राम जैसा सुलूक किया जाए।

ह़लाल चीज़ों को ह़राम क़रार देने के बारे में एक अहम मस्अला

इस आयते मुबारका में पाकीज़ा चीज़ों को ह़राम क़रार देने से मन्अ़ फ़रमाया, इस से उन लोगों को भी इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये कि जो मक़्बूलाने बारगाहे इलाही की त़रफ़ मन्सूब हर चीज़ पर ह़राम के फ़तवे देने पर लगे रहते हैं और हर चीज़ में उन्हें शिर्क ही सूझता है।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْۤ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗۤ اِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ؕ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ

[1] .....مسلم، كتاب الصيام، باب النهي عن صوم الدهر... الخ، ص ٥٨٥، الحديث: ١٨٢(١١٥٩).

www.dawateislami.net

اَیَّامٍ ؕ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَیْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ؕ وَاحْفَظُوْۤا اَیْمَانَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ یُبَیِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰیٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۸۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** तुम्हें नहीं पकड़ता तुम्हारी ग़लत फ़हमी की क़समों पर हां उन क़समों पर गिरिफ़्त फ़रमाता है जिन्हें तुम ने मज़बूत किया तो ऐसी क़सम का बदला दस मिस्कीनों को खाना देना अपने घर वालों को जो खिलाते हो उस के औसत में से या उन्हें कपड़े देना या एक बर्दा आज़ाद करना तो जो इन में से कुछ न पाए तो तीन दिन के रोज़े येह बदला है तुम्हारी क़समों का जब क़सम खाओ और अपनी क़समों की हिफ़ाज़त करो इसी तरह **अल्लाह** तुम से अपनी आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम एहसान मानो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** तुम्हें तुम्हारी फ़ुज़ूल क़समों पर नहीं पकड़ेगा अलबत्ता उन क़समों पर गिरिफ़्त फ़रमाएगा जिन्हें तुम मज़बूत कर लो तो ऐसी क़सम का कफ़्फ़ारा दस मिस्कीनों को इस तरह का दरमियाने दरजे का खाना देना है जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो या उन दस को कपड़े देना है या एक मम्लूक (ग़ुलाम या लोंडी) आज़ाद करना है तो जो न पाए तो तीन दिन के रोज़े येह तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा है जब क़सम खाओ और अपनी क़समों की हिफ़ाज़त करो। इसी तरह **अल्लाह** तुम से अपनी आयतें बयान फ़रमाता है ताकि तुम शुक्र गुज़ार हो जाओ।

﴿لَا یُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِیْۤ اَیْمَانِكُمْ﴾ **: अल्लाह तुम्हें तुम्हारी फ़ुज़ूल क़समों पर नहीं पकड़ेगा।** इस से पहली आयत में बयान हुवा कि सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ की एक जमाअत ने खाने पीने की चन्द हलाल चीज़ें और कुछ लिबास अपने ऊपर हराम कर लिये और दुन्या से कनारा कशी इख़्तियार कर ली, मज़ीद येह कि इस पर उन्हों ने क़समें भी खा लीं। जब **अल्लाह** तआला ने उन्हें इस चीज़ से मन्अ किया तो उन्हों ने अर्ज़ की **: या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, अब हम अपनी क़समों का क्या करें ? इस पर **अल्लाह** तआला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई जिस में क़सम के अहकाम बयान किये गए।[1]

क़सम की अक़्साम

क़सम की तीन क़िस्में हैं :

1 .....تفسیر کبیر، المائدۃ، تحت الآیۃ: ۸۹، ۴/۴۱۸-۴۱۹.

www.dawateislami.net

(1)..... **यमीने लग़्व या 'नी ग़लत़ फ़हमी की क़सम,** येह वोह क़सम है कि आदमी किसी वाक़िए़ को अपने ख़याल में सह़ीह़ जान कर क़सम खा ले और ह़क़ीक़त में वोह ऐसा न हो, ऐसी क़सम पर कफ़्फ़ारा नहीं।

(2)..... **यमीने ग़मूस या 'नी झूटी क़सम,** किसी गुज़श्ता वाक़िए़ के मुतअ़ल्लिक़ जान बूझ कर झूटी क़सम खाना, येह ह़राम है।

(3)..... **यमीने मुन्अ़क़िदा,** जो किसी आयिन्दा के मुआ़मले पर उसे पूरा करने या पूरा न करने के लिये खाई जाए, किसी सह़ीह़ मुआ़मले पर खाई गई ऐसी क़सम तोड़ना मन्अ़ भी है और इस पर कफ़्फ़ारा भी लाज़िम है। क़सम की तीसरी सूरत पर ही कफ़्फ़ारा लाज़िम आता है।

क़सम का कफ़्फ़ारा

यहां आयते मुबारका में क़सम का कफ़्फ़ारा बयान किया गया है और क़सम का कफ़्फ़ारा येह है कि अगर कोई क़सम तोड़े तो एक ग़ुलाम आज़ाद करे या दस मिस्कीनों को दो वक़्त पेट भर दरमियाने दरजे का खाना खिलाए या दस मिस्कीनों को कपड़े पहनाए। इन तीनों में से कोई भी त़रीक़ा इख़्तियार करने की इजाज़त है और अगर तीनों में से किसी की भी त़ाक़त न हो तो मुसल्सल तीन रोज़े रखना कफ़्फ़ारा है।

क़सम के कफ़्फ़ारे के चन्द मसाइल

क़सम के कफ़्फ़ारे से मुतअ़ल्लिक़ चन्द मसाइल याद रखें :

(1)..... मिस्कीनों को खाना खिलाने की बजाए उन्हें सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार भी दे सकता है।

(2)..... येह भी जाइज़ है कि एक मिस्कीन को दस रोज़ दे दे या खिला दिया करे।

(3)..... बहुत घटिया क़िस्म का खाना खिलाने की इजाज़त नहीं, दरमियाने दरजे का होना चाहिये।

(4)..... मिस्कीनों को कपड़े पहनाए तो वोह भी दरमियाने दरजे के होने चाहिएं और दरमियाने दरजे के वोह हैं जिन से अक्सर बदन ढक सके और दरमियाने दरजे के लोग पहनते हों या 'नी सूट बहुत घटिया न हो और तीन महीने तक चल सकता हो।

(5)..... रोज़े से कफ़्फ़ारा जब ही अदा हो सकता है जब कि खाना खिलाने, कपड़ा देने और ग़ुलाम आज़ाद करने की क़ुदरत न हो।

(6)..... रोज़े रखने की सूरत में ज़रूरी है कि येह रोज़े मुसल्सल रखे जाएं।

(7)..... कफ़्फ़ारा क़सम तोड़ने से पहले देना दुरुस्त नहीं।

www.dawateislami.net

मश्वरा : क़सम के बारे में कुछ कलाम सूरए बक़रह की आयत नम्बर 224 और 225 के तह़्त तफ़्सीर में गुज़र चुका है वहां से इस का मुत़ालआ़ फ़रमाएं, नीज़ क़सम और इस के कफ़्फ़ारे के बारे में मज़ीद तफ़्सील जानने के लिये बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 9 से "**क़सम का बयान**" मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

﴿وَاحْفَظُوْۤا اَیْمَانَكُمْ﴾ **: और अपनी क़समों की ह़िफ़ाज़त करो।** ﴾ क़सम की ह़िफ़ाज़त का हुक्म है और वोह येह है कि उन्हें पूरा करो अगर उस में शर्अ़न कोई ह़रज न हो और येह भी ह़िफ़ाज़त है कि क़सम खाने की आ़दत तर्क की जाए[1]।[2]

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَ الْمَیْسِرُ وَ الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّیْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۹۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो शराब और जूआ और बुत और पांसे नापाक ही हैं शैत़ानी काम तो इन से बचते रहना कि तुम फ़लाह़ पाओ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! शराब और जूआ और बुत और क़िस्मत मा'लूम करने के तीर नापाक शैत़ानी काम ही हैं तो इन से बचते रहो ताकि तुम फ़लाह़ पाओ।

﴿رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّیْطٰنِ﴾ **: नापाक शैत़ानी काम हैं।** ﴾ इस आयते मुबारका में चार चीज़ों के नजासत व ख़बासत और उन का शैत़ानी काम होने के बारे में बयान फ़रमाया और उन से बचने का हुक्म दिया गया है। वोह चार चीज़ें येह हैं : (1) शराब (2) जूआ (3) अन्साब या'नी बुत (4) अज़्लाम या'नी पांसे डालना। हम यहां बित्तरतीब इन चारों चीज़ों के बारे में तफ़्सील बयान करते हैं।

(1)..... शराब। सदरुश्शरीअ़ह मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : शराब पीना ह़राम है और इस की वज्ह से बहुत से गुनाह पैदा होते हैं, लिहाज़ा अगर इस को मआ़सी (या'नी गुनाहों) और बे ह़याइयों की अस्ल कहा जाए तो बजा है।[3]

ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "शराब हरगिज़ न पियो कि येह हर बदकारी की अस्ल है।"[4]

1 .....تفسیر بغوی، المائدۃ، تحت الآیۃ: ۸۹، ۲/۵۱.

2 ..... क़सम के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये रिसाला "क़सम के बारे में मदनी फूल" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ भी मुफ़ीद है। 3 ..... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए नहुम, शराब पीने की ह़द का बयान, 2/385

4 .....مسند امام احمد، مسند الانصار، حدیث معاذ بن جبل، ۸/۲۴۹، الحدیث: ۲۲۱۳۶.

www.dawateislami.net

शराब पीने की वईदें

अहादीस में शराब पीने की इन्तिहाई सख़्त वईदें बयान की गई हैं, उन में से 3 अहादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)..... हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने शराब के बारे में दस शख़्सों पर ला'नत की : (1) शराब बनाने वाले पर (2) शराब बनवाने वाले पर (3) शराब पीने वाले पर (4) शराब उठाने वाले पर। (5) जिस के पास शराब उठा कर लाई गई उस पर (6) शराब पिलाने वाले पर (7) शराब बेचने वाले पर (8) शराब की क़ीमत खाने वाले पर (9) शराब ख़रीदने वाले पर (10) जिस के लिये शराब ख़रीदी गई उस पर।[1]

(2)..... हज़रते अबू मालिक अश्अरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत के कुछ लोग शराब पियेंगे और उस का नाम बदल कर कुछ और रखेंगे, उन के सरों पर बाजे बजाए जाएंगे और गाने वालियां गाएंगी। **अल्लाह** तआ़ला उन्हें ज़मीन में धंसा देगा और उन में से कुछ लोगों को बन्दर और सुवर बना देगा।"[2]

(3)..... हज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : "क़सम है मेरी इ़ज़्ज़त की ! मेरा जो बन्दा शराब की एक घूंट भी पियेगा मैं उस को उतनी ही पीप पिलाऊंगा और जो बन्दा मेरे ख़ौफ़ से उसे छोड़ेगा मैं उस को हौ़ज़े क़ुद्स से पिलाऊंगा।"[3]

शराब ह़राम होने का 10 अन्दाज़ में बयान

इस आयत और इस से बा'द वाली आयत में शराब के ह़राम होने को **10** मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में बयान किया गया है :

(1)..... शराब को जूए के साथ मिलाया गया है।

(2)..... बुतों के साथ मिलाया गया है।

(3)..... शराब को नापाक क़रार दिया है।

(4)..... शैत़ानी काम क़रार दिया है।

(5)..... इस से बचने का हुक्म दिया है।

1 .....ترمذی، کتاب البیوع، باب النهی ان یتخذ الخمر خلاً، ۳/۴۷، الحدیث: ۱۲۹۹.

2 .....ابن ماجه، کتاب الفتن، باب العقوبات، ۴/۳۶۸، الحدیث: ۴۰۲۰.

3 .....مسند امام احمد، مسند الانصار، حدیث ابی امامة الباهلی، ۸/۲۸۶، الحدیث: ۲۲۲۸۱.

www.dawateislami.net

(6)..... काम्याबी का मदार इस से बचने पर रखा है।

(7)..... शराब को अ़दावत और बुग़्ज़ का सबब क़रार दिया है।

(8, 9)..... शराब को ज़िक्रुल्लाह और नमाज़ से रोकने वाली चीज़ फ़रमाया है।

(10)..... इस से बाज़ रहने का ताकीदी हुक्म दिया है।[1]

शराब नोशी के नताइज

यहां हम शराब नोशी के चन्द वोह नताइज ज़िक्र करते हैं जो पूरी दुन्या में नज़र आ रहे हैं ताकि मुसल्मान इन से इ़ब्रत ह़ासिल करें और जो मुसल्मान शराब नोशी में मुब्तला हैं वोह अपने इस बुरे अ़मल से बाज़ आ जाएं।

(1)..... शराब नोशी की वज्ह से करोड़ों अफ़्राद मुख़्तलिफ़ मोहलिक और ख़त़रनाक अमराज़ का शिकार हो रहे हैं।

(2)..... लाखों अफ़्राद शराब नोशी की वज्ह से हलाक हो रहे हैं।

(3)..... ज़ियादा तर सड़क ह़ादिसात शराब पी कर गाड़ी चलाने की वज्ह से हो रहे हैं।

(4)..... हज़ारों अफ़्राद शराबियों के हाथों बे क़ुसूर क़त्लो ग़ारत गरी का निशाना बन रहे हैं।

(5)..... लाखों औ़रतें शराबी शौहरों के ज़ुल्मो सितम का निशाना बनती हैं।

(6)..... लाखों औ़रतें शराबी मर्दों की त़रफ़ से जिन्सी ह़म्लों का शिकार हो रही हैं।

(7)..... वालिदैन की शराब नोशी की वज्ह से ज़िन्दगी की तुवानाइयों से आ़री और मुख़्तलिफ़ अमराज़ में मुब्तला बच्चे पैदा हो रहे हैं।

(8)..... लाखों बच्चे शराबी वालिदैन की वज्ह से यतीमी और असीरी की ज़िन्दगी बसर करने पर मजबूर हैं।

(9)..... शराबी शख़्स के घर वाले और अहलो इ़याल उस की हमदर्दी और प्यार व मह़ब्बत से मह़रूम हो रहे हैं।

(10)..... इन नुक़्सानात के इ़लावा शराब के इक़्तिसादी नुक़्सानात भी बहुत हैं कि अगर शराब की ख़रीदो फ़रोख़्त और इम्पोर्ट एक्सपोर्ट से ह़ासिल होने वाली रक़म और उन अख़्राजात का मुवाज़ना किया जाए जो शराब के बुरे असरात की रोकथाम पर होते हैं तो सब पर वाज़ेह़ हो जाएगा कि शराब से ह़ासिल होने वाली आमदनी उन अख़्राजात के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं जो इस के बुरे नताइज को दूर करने पर हो रहे हैं, मिसाल के त़ौर पर शराब नोशी की वज्ह से

[1] .....تفسیرات احمدی، المائدۃ، تحت الآیۃ: ۹۰، ص ۳۷۰.

www.dawateislami.net

होने वाली नफ़्सियाती और दीगर बीमारियों के इलाज, नशे की हालत में ड्राइविंग से होने वाले हादिसात, पोलीस की गिरिफ़्तारियां और ज़हमतें, शराबियों की औलाद के लिये परवरिश गाहें और हस्पताल, शराब से मुतअ़ल्लिक़ा जराइम के लिये अ़दालतों की मसरूफ़िय्यात, शराबियों के लिये क़ैदख़ाने वग़ैरा उमूर पर होने वाले अख़्राजात देखे जाएं तो येह शराब से हासिल होने वाली आमदनी से कहीं ज़ियादा नज़र आएंगे और इस के इलावा कुछ नुक़्सानात तो ऐसे हैं कि जिन का मुवाज़ना मालो दौलत से किया ही नहीं जा सकता जैसे पाक नस्लों की तबाही, सुस्ती, बे राहरवी, सक़ाफ़तो तमद्दुन की पसमान्दगी, एह़सासात की मौत, घरों की तबाही, आरज़ूओं की बरबादी और साह़िबाने फ़िक्र अफ़राद की दिमाग़ी सलाह़िय्यतों का नुक़्सान, येह वोह नुक़्सानात हैं जिन की तलाफ़ी रुपै पैसे से किसी सूरत मुम्किन ही नहीं। **अल्लाह** तआ़ला मुसल्मानों को अ़क़्ले सलीम और हिदायत अ़ता फ़रमाए और शराब नोशी की आफ़ते बद से नजात अ़ता फ़रमाए।

(2)..... जूआ। आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जूए का रुपिया क़त्ई ह़राम है।[1]

जूए की मज़म्मत में 2 अह़ादीस

अह़ादीस में जूए की शदीद मज़म्मत बयान की गई है चुनान्चे जूए के एक खेल के बारे में ह़ज़रते बुरैदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने नर्द शेर (जूए का एक खेल) खेला तो गोया उस ने अपना हाथ ख़िन्ज़ीर के गोश्त और ख़ून में डुबो दिया।"[2]

और ह़ज़रते अबू अ़ब्दुर्रह़मान ख़त्मी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स नर्द खेलता है फिर नमाज़ पढ़ने उठता है, उस की मिसाल उस शख़्स की त़रह़ है जो पीप और सुअर के ख़ून से वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ने खड़ा होता है।"[3]

जूए के दुन्यवी नुक़्सानात

दीने इस्लाम ने अपने मानने वालों को हर उस अ़मल और आ़दत से रोका है जिस से

---

1 ..... फ़तावा रज़विय्या, 19/646

2 .....مسلم، كتاب الشعر، باب تحريم اللعب بالنردشير، ص ١٢٤٠، الحديث: ١٠(٢٢٦٠).

3 .....مسند امام احمد، احاديث رجال من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم، ٩/٥٠، الحديث: ٢٣١٩٩.

www.dawateislami.net

उन का माली और जिस्मानी नुक़्सान वाबस्ता हो और वोह उन्हें **अल्लाह** तआ़ला के ज़िक्र से ग़ाफ़िल कर दे। ऐसी बे शुमार चीज़ों में से एक चीज़ जूआबाज़ी है जो कि मुआ़शरती अम्नो सुकून और बाहमी महब्बत व यकानगत के लिये ज़हरे क़ातिल से बढ़ कर है और क़ुरआनो ह़दीस में मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से मुसल्मानों को इस शैत़ानी अ़मल से रोका गया है लेकिन अफ़्सोस कि फ़ी ज़माना मुसल्मानों की एक ता'दाद इस ख़बीस तरीन अ़मल में मुब्तला नज़र आ रही है और येह लोग दुन्या व आख़िरत के लिये ह़क़ीक़ी त़ौर पर मुफ़ीद कामों को छोड़ कर अपने शबो रोज़ को इसी अ़मल में लगाए हुए हैं और उन की इसी रविश का नतीजा है कि उन मुसल्मानों की न तो दुन्यवी पसमान्दगी दूर हो रही है और न ही वोह अपनी उख़्रवी काम्याबी के लिये कुछ कर पा रहे हैं। हम यहां जूएबाज़ी के 3 दुन्यवी नुक़्सानात ज़िक्र करते हैं ताकि मुसल्मान इन्हें पढ़ कर अपनी ह़ालत पर कुछ रह़्म करें और जूए से बाज़ आ जाएं।

(1)..... जूए की वज्ह से जूएबाज़ों में बुग़्ज़, अ़दावत और दुशमनी पैदा हो जाती है और बसा अवक़ात क़त्लो ग़ारत गरी तक नौबत पहुंच जाती है।

(2)..... जूएबाज़ी की वज्ह से मालदार इन्सान लम्ह़ों में ग़ुर्बतो इफ़्लास का शिकार हो जाता है, ख़ुशह़ाल घर बदह़ाली का नज़ारा पेश करने लगते हैं, अच्छा ख़ासा आदमी खाने पीने तक का मोह़्ताज हो कर रह जाता है, मुआ़शरे में उस का बना हुवा वक़ार ख़त्म हो जाता है और समाज में उस की कोई क़द्रो क़ीमत और इ़ज़्ज़त बाक़ी नहीं रहती।

(3)..... जूएबाज़ नफ़्अ़ के लालच में ब कसरत क़र्ज़ लेने और कभी कभी सूदी क़र्ज़ लेने पर भी मजबूर हो जाता है और जब वोह क़र्ज़ अदा नहीं कर पाता या उसे क़र्ज़ नहीं मिलता तो वोह डाकाज़नी और चोरी वग़ैरा में मुब्तला हो जाता है ह़त्ता कि जूएबाज़ चारों जानिब से मुसीबतों में ऐसा घिर जाता है कि बिल आख़िर वोह ख़ुदकुशी करने पर मजबूर हो जाता है। **अल्लाह** तआ़ला मुसल्मानों को हिदायत अ़त़ा फ़रमाए और उन्हें इस शैत़ानी अ़मल से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

(3)..... **अन्साब।** ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि इस से मुराद वोह पथ्थर हैं जिन के पास कुफ़्फ़ार अपने जानवर ज़ब्ह़ करते थे।[1]

इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद नसफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस से मुराद बुत हैं क्यूं कि उन्हें नस्ब कर के उन की पूजा की जाती है।[2]

अ़ल्लामा अबू ह़य्यान मुह़म्मद बिन यूसुफ़ उन्दुलुसी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अगर अन्साब से मुराद वोह पथ्थर हों जिन के पास कुफ़्फ़ार अपने जानवर ज़ब्ह़ या नह़र करते थे

1 .....ابن كثير، المائدة، تحت الآية: ٩٠، ٣/١٦١.
2 .....مدارك، المائدة، تحت الآية: ٩٠، ص٣٠٢.

www.dawateislami.net

तो उन पथ्थरों को नापाक इस लिये कहा गया ताकि कमज़ोर ईमान वाले मुसल्मानों के दिलों में अगर उन की कोई अ़ज़मत बाक़ी है तो वोह भी निकल जाए, और अगर अन्साब से मुराद वोह बुत हों जिन की **अल्लाह** तआ़ला के इ़लावा इ़बादत की जाती है (उन के पास जानवर ज़ब्ह़ किये जाते हों या नहीं) तो उन्हें नापाक इस लिये कहा गया ताकि सब पर अच्छी त़रह़ वाज़ेह़ हो जाए कि जिस त़रह़ अस्नाम से बचना वाजिब है इसी त़रह़ अन्साब से बचना भी वाजिब है।[1]

(4)..... **अज़्लाम** । ज़मानए जाहिलिय्यत में कुफ़्फ़ार ने तीन तीर बनाए हुए थे, उन में से एक पर लिखा था "हां" दूसरे पर लिखा था "नहीं" और तीसरा ख़ाली था। वोह लोग उन तीरों की बहुत ता'ज़ीम करते थे और येह तीर काहिनों के पास होते और का'बए मुअ़ज़्ज़मा में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के पास होते थे (जब उन्हें कोई सफ़र या अहम काम दरपेश होता तो वोह उन तीरों से पांसे डालते और जो उन पर लिखा होता उस के मुत़ाबिक़ अ़मल करते थे)। परिन्दों से और वह़शी जानवरों से बुरा शुगून लेना और किताबों से फ़ाल निकालना वग़ैरा भी इसी में दाख़िल है।[2]

काहिनों और नुजूमियों के पास जाने की मज़म्मत

अह़ादीस में काहिनों और नुजूमियों के पास जाने की शदीद मज़म्मत की गई है, उन में से 3 अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)..... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो किसी नुजूमी या काहिन के पास गया और उस के क़ौल की तस्दीक़ की तो गोया इस ने उस का इन्कार कर दिया जो (ह़ज़रत) मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर नाज़िल किया गया।"[3]

(2)..... ह़ज़रते वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो काहिन के पास आया और उस से किसी चीज़ के बारे में पूछा तो चालीस (40) रातों तक उस की तौबा रोक दी जाती है और अगर उस ने इस की तस्दीक़ की तो कुफ़्र किया।"[4]

(3)..... ह़ज़रते क़बीसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ख़त़ ख़ींचना, फ़ाल निकालना और परिन्दे उड़ा कर शुगून लेना जिब्त (या'नी शैत़ानी कामों) में से है।"[5]

1 .....البحر المحيط، المائدة، تحت الآية: ٩٠، ٤/١٦.
2 .....البحر المحيط، المائدة، تحت الآية: ٩٠، ٤/١٦.
3 .....مستدرك، كتاب الايمان، التشديد فى اتيان الكاهن وتصديقه، ١/١٥٣، الحديث: ١٥
4 .....معجم الكبير، ابوبكر بن بشير عن واثلة، ٢٢/٦٩، الحديث: ١٦٩.
5 .....ابو داؤد، كتاب الطب، باب فى الخط وزجر الطير، ٤/٢٢، الحديث: ٣٩٠٧.

www.dawateislami.net

आयत ''فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ'' से मा'लूम होने वाले मसाइल

इस आयत से दो मस्अले मा'लूम हुए :

(1)..... सिर्फ़ नेक आ'माल करने से काम्याबी ह़ासिल नहीं होती बल्कि बुरे आ'माल से बचना भी ज़रूरी है। येह दोनों तक़्वे के दो पर हैं, परिन्दा एक पर से नहीं उड़ता।

(2)..... नेकियां करना और बुराइयों से बचना दुन्या और दिखलावे के लिये न होना चाहिये बल्कि काम्याबी ह़ासिल करने के लिये होना चाहिये।

اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿۹۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : शैत़ान येही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवावे शराब और जूए में और तुम्हें **अल्लाह** की याद और नमाज़ से रोके तो क्या तुम बाज़ आए।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : शैत़ान तो येही चाहता है कि शराब और जूए के ज़रीए तुम्हारे दरमियान दुश्मनी और बुग़्ज़ो कीना डाल दे और तुम्हें **अल्लाह** की याद से और नमाज़ से रोक दे तो क्या तुम बाज़ आते हो ?

﴿اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ﴾ : **बेशक शैत़ान तो चाहता है।** इस आयत में शराब और जूए के नताइज और वबाल बयान फ़रमाए गए कि शराब ख़ोरी और जूएबाज़ी का ज़ाहिरी दुन्यवी वबाल तो येह है कि इस से आपस में बुग़्ज़ और अ़दावतें पैदा होती हैं जब कि ज़ाहिरी दीनी वबाल येह है कि जो शख़्स इन बुराइयों में मुब्तला हो वोह ज़िक्रे इलाही और नमाज़ के अवक़ात की पाबन्दी से महरूम हो जाता है। इस से मा'लूम हुवा कि जो चीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र और नमाज़ से रोके, वोह बुरी है और छोड़ने के क़ाबिल है, इसी लिये जुमुआ़ की अज़ान के बा'द तिजारत ह़राम है।[1]

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا

---

❶..... बुग़्ज़ के बारे में अहम मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये किताब ''बुग़्ज़ो कीना'' (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِیْنُ ﴿۹۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हुक्म मानो **अल्लाह** का और हुक्म मानो रसूल का और होशियार रहो फिर अगर तुम फिर जाओ तो जान लो कि हमारे रसूल का ज़िम्मा सिर्फ़ वाज़ेह़ तौ़र पर हुक्म पहुंचा देना है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और **अल्लाह** का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो और होशियार रहो फिर अगर तुम फिर जाओ तो जान लो कि हमारे रसूल पर तो सिर्फ़ वाज़ेह़ तौ़र पर तब्लीग़ फ़रमा देना लाज़िम है।

﴿وَ اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوا الرَّسُوْلَ﴾ **: और अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो।** या'नी **अल्लाह** तआ़ला और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिस काम का तुम्हें हुक्म दिया और जिस काम से मन्अ़ किया उस में उन का हुक्म मानो और अह़कामात और मम्नूआ़त में **अल्लाह** तआ़ला और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुख़ालफ़त करने से डरो, फिर अगर तुम उस से मुंह मोड़ लो जिस का तुम्हें हुक्म दिया गया और जिस से मन्अ़ किया गया तो जान लो कि इस से हमारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कोई नुक़्सान नहीं क्यूं कि हमारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर तो सिर्फ़ वाज़ेह़ तौ़र पर तब्लीग़ फ़रमा देना लाज़िम है, बल्कि इस में तुम्हारा अपना नुक़्सान है कि तुम अपने ए'राज़ की वज्ह से **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी और उस के अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़ ठहरोगे।[1]

لَیْسَ عَلَى الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِیْمَا طَعِمُوْۤا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّ اَحْسَنُوْا ؕ وَ اللّٰهُ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۹۳﴾ ع ۱۲ ۲

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जो ईमान लाए और नेक काम किये उन पर कुछ गुनाह नहीं है जो कुछ उन्हों ने चखा जब कि डरें और ईमान रखें और नेकियां करें फिर डरें और ईमान रखें फिर डरें और नेक रहें और **अल्लाह** नेकों को दोस्त रखता है।

1 .....خازن، المائدة، تحت الآية: ۹۲، ۱/۵۲۵، مدارك، المائدة، تحت الآية: ۹۲، ص ۳۰۲، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किये उन पर खाने में कोई गुनाह नहीं जब कि डरें और ईमान रखें और अच्छे अ़मल करें फिर डरें और ईमान रखें फिर डरें और नेकियां करें और **अल्लाह** नेकी करने वालों से मह़ब्बत फ़रमाता है।

﴿لَیْسَ عَلَى الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ﴾ **: जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किये उन पर कोई गुनाह नहीं।﴾** येह आयते मुबारका उन सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ के ह़क़ में नाज़िल हुई जो शराब ह़राम किये जाने से पहले वफ़ात पा चुके थे और चूंकि शराब ह़राम न थी तो वोह पी लिया करते थे। जब उन के बा'द शराब की हुर्मत का हुक्म नाज़िल हुवा तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ को उन की फ़िक्र हुई कि उन से शराब के मुतअ़ल्लिक़ पूछगछ होगी या नहीं ?[1] नीज़ जो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ दीगर शहरों में मौजूद हैं और उन्हें इस बात का इ़ल्म अभी नहीं हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला ने शराब ह़राम क़रार दे दी है, अगर वोह इस ला इ़ल्मी के कुछ अ़र्से में शराब पी लें तो उन के बारे में क्या हुक्म है ? उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि हुर्मत का हुक्म नाज़िल होने से पहले जिन नेक ईमानदारों ने कुछ खाया पिया वोह गुनहगार नहीं, इसी त़रह़ जिन्हें हुर्मत का हुक्म नाज़िल हो जाने का इ़ल्म नहीं उन पर भी हुक्म की मा'लूमात होने से पहले शराब पी लेने की सूरत में कुछ गुनाह नहीं।

इस आयते मुबारका में लफ़्ज़ "اتَّقَوْا" जिस के मा'ना डरने और परहेज़ करने के हैं, तीन मरतबा आया है : पहले से मुराद शिर्क से बचना, दूसरे से मुराद तमाम ह़राम कामों और गुनाहों से बचना और तीसरे से मुराद शुबुहात का तर्क कर देना है।[2]

बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि पहले से मुराद तमाम ह़राम चीज़ों से बचना और दूसरे से उस पर क़ाइम रहना और तीसरे से मुराद वह़ी के नाज़िल होने के ज़माने में या उस के बा'द जो चीज़ें मन्अ़ की जाएं उन को छोड़ देना है।[3]

बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह मा'ना बयान किया कि पहले भी गुनाहों से बचते रहे हों और अब भी बचते रहें और आयिन्दा भी बचते रहें।[4]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗۤ اَيْدِيْكُمْ وَ رِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ

1 ……ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة المائدة، ۵/۳۸، الحدیث: ۳۰۶۲. 2 ……مدارك، المائدة، تحت الآیة: ۹۳، ص۳۰۲.
3 ……خازن، المائدة، تحت الآیة: ۹۳، ۱/۵۲۵، مدارك، المائدة، تحت الآیة: ۹۳، ص۳۰۳، جمل، المائدة، تحت الآیة: ۹۳، ۲/۲۷۳.
4 ……تفسیر کبیر، المائدة، تحت الآیة: ۹۳، ۴۲۷/۴.

www.dawateislami.net

فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۹۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ज़रूर **अल्लाह** तुम्हें आज़्माएगा ऐसे बा'ज़ शिकार से जिस तक तुम्हारे हाथ और नेज़े पहुंचें कि **अल्लाह** पहचान करा दे उन की जो उस से बिन देखे डरते हैं फिर इस के बा'द जो ह़द से बढ़े उस के लिये दर्दनाक सज़ा है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! ज़रूर **अल्लाह** उन शिकारों के ज़रीए़ जिन तक तुम्हारे हाथ और नेज़े पहुंच सकेंगे तुम्हारा इम्तिह़ान करेगा ताकि **अल्लाह** उन लोगों की पहचान करा दे जो उस से बिन देखे डरते हैं फिर इस (मुमानअ़त के बा'द जो ह़द से बढ़े तो उस के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

لَیَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ **: ज़रूर अल्लाह तुम्हें आज़्माएगा ।** 6 हिजरी जिस में हुदैबिया का वाक़िआ़ पेश आया, इस साल मुसल्मान ह़ालते एह़राम में थे। उस ह़ालत में वोह इस आज़्माइश में डाले गए कि शिकार किये जाने वाले जानवर और परिन्दे बड़ी कसरत से आए और उन की सुवारियों पर छा गए। इतनी कसरत थी कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ के लिये उन्हें हथियार से शिकार कर लेना बल्कि हाथ से पकड़ लेना बिल्कुल इख़्तियार में था, इस के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई[1] लेकिन सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ हुक्मे इलाही की पाबन्दी में साबित क़दम रहे और ह़ालते एह़राम में शिकार न किया। इस से सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ की अ़ज़्मत भी ज़ाहिर हुई और येह भी मा'लूम हुवा की किसी गुनाह के अस्बाब व मवाक़ेअ़ जिस क़दर कसरत से मौजूद हों उन से बचने में उतना ही ज़ियादा सवाब है, जैसे नौ जवान को तक़्वा व परहेज़ गारी और पारसाई का सवाब बूढ़े की ब निस्बत ज़ियादा है। यूंही जो बुरे लोगों के दरमियान भी नेक रहे वोह नेकों के दरमियान नेक रहने वाले से बेहतर है। ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और ज़ुलैख़ा का वाक़िआ़ भी इस बात की क़वी दलील है लेकिन यहां येह याद रहे कि इन बातों का येह मत़लब नहीं कि बुरे दोस्तों की सोह़बत में रह कर या गुनाह की जगह जा कर नेक बनने की कोशिश करे ताकि ज़ियादा बड़ा मुत्तक़ी बने बल्कि ह़त्तल इम्कान ऐसी सोह़बत और मक़ाम से बचना ही चाहिये कि ज़ियादा तक़्वे की उम्मीद पर कहीं अस्ल ही से न जाते रहें।

1 .....خازن، المائدة، تحت الآیة: ۹۴، ۱/۵۲۵.

www.dawateislami.net

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ
مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ
هَدْيًۢا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا
لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ؕ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ
مِنْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿۹۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो शिकार न मारो जब तुम एह़राम में हो और तुम में जो उसे क़स्दन क़त्ल करे तो उस का बदला येह है कि वैसा ही जानवर मवेशी से दे तुम में के दो सिक़ा आदमी इस का हुक्म करें येह क़ुरबानी हो का'बे को पहुंचती या कफ़्फ़ारा दे चन्द मिस्कीनों का खाना या इस के बराबर रोज़े कि अपने काम का वबाल चखे **अल्लाह** ने मुआ़फ़ किया जो हो गुज़रा और जो अब करेगा **अल्लाह** उस से बदला लेगा और **अल्लाह** ग़ालिब है बदला लेने वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! ह़ालते एह़राम में शिकार को क़त्ल न करो और तुम में जो उसे क़स्दन क़त्ल करे तो इस का बदला येह है कि मवेशियों में से उसी त़रह़ का वोह जानवर दे दे जिस के शिकार की मिस्ल होने का तुम में से दो मो'तबर आदमी फ़ैसला करें येह का'बे को पहुंचती हुई क़ुरबानी हो या चन्द मिस्कीनों का खाना कफ़्फ़ारे में दे या इस के बराबर रोज़े ताकि वोह अपने काम का वबाल चखे। **अल्लाह** ने पहले जो कुछ गुज़रा उसे मुआ़फ़ फ़रमा दिया और जो दोबारा करेगा तो **अल्लाह** उस से इन्तिक़ाम लेगा और **अल्लाह** ग़ालिब है, बदला लेने वाला है।

﴿لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ﴾ **: ह़ालते एह़राम में शिकार को क़त्ल न करो।** ﴾ इस आयते मुबारका में ह़ालते एह़राम में शिकार करने से मन्अ़ फ़रमाया है। यहां इस के चन्द मसाइल बयान किये जाते हैं।

ह़ालते एह़राम में शिकार करने के शरई मसाइल

(1)..... मोह़रिम या'नी एह़राम वाले पर शिकार या'नी ख़ुश्की के किसी वह़शी जानवर को मारना ह़राम है।

www.dawateislami.net

(2)..... जानवर की त़रफ़ शिकार करने के लिये इशारा करना या किसी त़रह़ बताना भी शिकार में दाख़िल और मम्नूअ़ है।

(3)..... ह़ालते एह़राम में हर वह़शी जानवर का शिकार मम्नूअ़ है ख़्वाह वोह ह़लाल हो या न हो।

(4)..... काटने वाला कुत्ता, कव्वा, बिच्छू, चील, चूहा, भेड़िया और सांप इन जानवरों को अह़ादीस में फ़वासिक़ फ़रमाया गया है और इन के क़त्ल की इजाज़त दी गई है।

(5)..... मच्छर, पिस्सू, च्यूंटी, मख्खी और ह़शरातुल अर्द़ और ह़म्ला आवर दरिन्दों को मारना मुआ़फ़ है।[1]

(6)..... ह़ालते एह़राम में जिन जानवरों का मारना मम्नूअ़ है वोह हर ह़ाल में मम्नूअ़ है जान बूझ कर हो या ग़लती से। जान बूझ कर मारने का हुक्म तो इस आयत में मौजूद है ग़लती से मारने का हुक्म ह़दीस शरीफ़ से साबित है।[2]

ह़ालते एह़राम में शिकार के कफ़्फ़ारे की तफ़्सील

ह़ालते एह़राम में शिकार के कफ़्फ़ारों से मुतअ़ल्लिक़ येह तफ़्सील है :

(1)..... ख़ुश्की का वह़शी जानवर शिकार करना या उस की त़रफ़ शिकार करने को इशारा करना या और किसी त़रह़ बताना येह सब काम ह़राम हैं और सब में कफ़्फ़ारा वाजिब अगर्चे उस के खाने में मजबूर हो या'नी भूक से मरा जाता हो और कफ़्फ़ारा उस की क़ीमत है या'नी दो आ़दिल वहां के ह़िसाब से जो क़ीमत बता दें वोह देनी होगी और अगर वहां उस की कोई क़ीमत न हो तो वहां से क़रीब जगह में जो क़ीमत हो वोह है और अगर एक ही आ़दिल ने बता दिया जब भी काफ़ी है।

(2)..... शिकार की क़ीमत में इख़्तियार है कि उस से भेड़ बकरी वग़ैरा अगर ख़रीद सकता है तो ख़रीद कर ह़रम में ज़ब्ह़ कर के फ़ुक़रा को तक़्सीम कर दे या उस का ग़ल्ला ख़रीद कर मसाकीन पर तसद्दुक़ कर दे, इतनी मिक़्दार दे कि हर मिस्कीन को सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार पहुंच जाए और येह भी हो सकता है कि उस क़ीमत के ग़ल्ले में जितने सदक़े हो सकते हों हर सदक़े के बदले एक रोज़ा रखे और अगर कुछ ग़ल्ला बच जाए जो पूरा सदक़ा नहीं तो इख़्तियार है वोह किसी मिस्कीन को दे दे या उस के इ़वज़ एक रोज़ा रखे और अगर पूरी क़ीमत एक सदक़े के लाइक़ भी नहीं तो भी इख़्तियार है कि उतने का ग़ल्ला ख़रीद कर एक मिस्कीन को दे दे या उस के बदले एक रोज़ा रखे।

(3)..... कफ़्फ़ारे का जानवर ह़रम के बाहर ज़ब्ह़ किया तो कफ़्फ़ारा अदा न होगा और अगर उस में से ख़ुद भी खाया तो उतने का तावान दे।[3]

---

1 .....تفسیر احمدی، المائدۃ، تحت الآیۃ: ۹۵، ص ۳۷۲-۳۷۷.

2 .....مدارک، المائدۃ، تحت الآیۃ: ۹۵، ص ۳۰۳.

3 ..... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए शशुम, जुर्म और उन के कफ़्फ़ारे का बयान, 1/1179, 1180

www.dawateislami.net

اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۹۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ह़लाल है तुम्हारे लिये दरिया का शिकार और उस का खाना तुम्हारे और मुसाफ़िरों के फ़ाएदे को और तुम पर ह़राम है ख़ुश्की का शिकार जब तक तुम एह़राम में हो और **अल्लाह** से डरो जिस की त़रफ़ तुम्हें उठना है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम्हारे और मुसाफ़िरों के फ़ाएदे के लिये तुम्हारे लिये समुन्दर का शिकार और उस का खाना ह़लाल कर दिया गया और जब तक तुम एह़राम की ह़ालत में हो तब तक तुम पर ख़ुश्की का शिकार ह़राम कर दिया गया और **अल्लाह** से डरो जिस की त़रफ़ तुम्हें उठाया जाएगा।

﴿اُحِلَّ لَكُمْ﴾ **: तुम्हारे लिये ह़लाल कर दिया गया ।﴾** इस आयत में येह मस्अला बयान फ़रमाया गया कि मोह़रिम के लिये दरिया का शिकार ह़लाल है और ख़ुश्की का ह़राम। दरिया का शिकार वोह है जिस की पैदाइश दरिया में हो और ख़ुश्की का वोह जिस की पैदाइश ख़ुश्की में हो।[1]

ह़राम शिकारों का बयान

याद रहे कि दो शिकार ह़राम हैं : मोह़रिम का किया हुवा और ह़रम का। ह़रम शरीफ़ में रहने वाले शिकार किये जाने वाले जानवर को न वोह आदमी शिकार कर सकता है जो ह़ालते एह़राम में हो और न बिग़ैर एह़राम वाला, वोह **अल्लाह** तआ़ला की अमान में हैं। यहां एह़राम के शिकार की हुर्मत का ज़िक्र है जो एह़राम ख़त्म होने पर ख़त्म हो जाती है मगर ह़रम का शिकार हमेशा हर शख़्स के लिये ह़राम है ख़्वाह वोह शख़्स एह़राम में हो या एह़राम से फ़ारिग़ बल्कि ह़रम के शिकार को उस की जगह से उठाना भी मन्अ़ है।

جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَ الْهَدْيَ وَالْقَلَآئِدَ ؕ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي

[1] .....بحر الرائق، كتاب الحج، فصل ان قتل محرم صيداً... الخ، ٣/٤٧.

www.dawateislami.net

الْاَرْضِ وَاَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿۹۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** ने अदब वाले घर का'बे को लोगों के क़ियाम का बाइस किया और हुर्मत वाले महीने और ह़रम की क़ुरबानी और गले में अ़लामत आवेज़ां जानवरों को येह इस लिये कि तुम यक़ीन करो कि **अल्लाह** जानता है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और येह कि **अल्लाह** सब कुछ जानता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** ने अदब वाले घर का'बे को और हुर्मत वाले महीने को और ह़रम की त़रफ़ ले जाए जाने वाली क़ुरबानी को और उन जानवरों को जिन के गले में (ह़ज की क़ुरबानी होने की) निशानी लटकाई हुई हो (इन सब को) लोगों के क़ियाम का ज़रीआ़ बना दिया। येह इस लिये हैं ताकि तुम यक़ीन कर लो कि **अल्लाह** जानता है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और यक़ीन कर लो कि **अल्लाह** सब कुछ जानता है।

جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَیْتَ الْحَرَامَ قِیٰمًا لِّلنَّاسِ : **अल्लाह ने अदब वाले घर का'बे को लोगों के क़ियाम का ज़रीआ़ बना दिया।** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़ानए का'बा को लोगों के लिये क़ियाम का बाइस बनाया कि वहां दीनी और दुन्यवी उमूर का क़ियाम होता है, ख़ौफ़ज़दा वहां पनाह लेता है, ज़ईफ़ों को वहां अम्न मिलता है, ताजिर वहां नफ़्अ़ पाते हैं और ह़ज व उ़म्रह करने वाले वहां ह़ाज़िर हो कर मनासिक अदा करते हैं लिहाज़ा येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बड़ी ने'मत है। यूंही ज़िल ह़िज्जा जिस में ह़ज किया जाता है और हदी के जानवर इन सब के साथ भी दीनी और दुन्यावी उमूर वाबस्ता हैं कि इस के गोश्त से ग़रीबों और अमीरों का गुज़ारा होता है और इस से एक रुक्ने इस्लामी अदा होता है।

اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِیْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۹۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जान रखो कि **अल्लाह** का अ़ज़ाब सख़्त है और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जान रखो कि **अल्लाह** सख़्त अ़ज़ाब देने वाला भी है और **अल्लाह** बख़्शने वाला, मेह्रबान भी है।

www.dawateislami.net

﴿اِعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ شَدِیْدُ الْعِقَابِ﴾ **: जान रखो कि अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला भी है ।**﴾ इर्शाद फ़रमाया गया कि जान रखो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सख़्त अ़ज़ाब देने वाला भी है और **अल्लाह** तआ़ला बख़्शने वाला, मेहरबान भी है, तो ह़रम और एह़राम की हुर्मत का लिहाज़ रखो । **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी रह़मतों का ज़िक्र फ़रमाने के बा'द अपनी सिफ़त "شَدِیْدُ الْعِقَابِ" ज़िक्र फ़रमाई ताकि ख़ौफ़ व उम्मीद से ईमान की तक्मील हो, इस के बा'द सिफ़त "غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ" बयान फ़रमा कर अपनी वुस्अ़ते रह़मत का इज़्हार फ़रमाया ।

مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَ اللّٰهُ یَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿۹۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : रसूल पर नहीं मगर हुक्म पहुंचाना और **अल्लाह** जानता है जो तुम ज़ाहिर करते और जो तुम छुपाते हो ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : रसूल पर सिर्फ़ तब्लीग़ लाज़िम है और **अल्लाह** जानता है जो तुम ज़ाहिर करते और जो तुम छुपाते हो ।

﴿مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ﴾ **: रसूल पर सिर्फ़ तब्लीग़ लाज़िम है ।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि मेरे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर सिर्फ़ तब्लीग़ लाज़िम है तो जब मेरे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हुक्म पहुंचा कर फ़ारिग़ हो गए तो तुम पर इत़ाअ़त लाज़िम हो गई और हुज्जत क़ाइम हो गई और तुम्हारे लिये उ़ज़्र की गुन्जाइश बाक़ी न रही । इस में ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बे नियाज़ी भी मज़्कूर है कि वोह तुम्हारे ह़ाजत मन्द नहीं बल्कि तुम उन के मोह़ताज हो । अगर कोई भी उन की इत़ाअ़त न करे तो उन का कुछ न बिगड़ेगा क्यूं कि वोह तब्लीग़ फ़रमा चुके, जैसे सूरज से अगर कोई नूर न ले तो सूरज को कोई नुक़्सान नहीं बल्कि नुक़्सान उसी का है जो सूरज से नूर नहीं ले रहा ।

﴿وَ اللّٰهُ یَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَ مَا تَكْتُمُوْنَ﴾ **: और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते और जो तुम छुपाते हो ।**﴾ या'नी तुम्हारे ज़ाहिरी और बात़िनी अह़वाल में से कोई चीज़ **अल्लाह** तआ़ला से मख़्फ़ी नहीं है लिहाज़ा जैसे तुम्हारे आ'माल होंगे **अल्लाह** तआ़ला वैसी तुम्हें जज़ा देगा ।

قُلْ لَّا یَسْتَوِی الْخَبِیْثُ وَ الطَّیِّبُ وَ لَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِیْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ یٰۤاُولِی الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ ع

ع ۱۲

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमा दो कि सुथरा और गन्दा बराबर नहीं अगर्चे तुझे गन्दे की कसरत भाए तो **अल्लाह** से डरते रहो ऐ अ़क़्ल वालो कि तुम फ़लाह़ पाओ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमा दो कि गन्दा और पाकीज़ा बराबर नहीं हैं अगर्चे गन्दे लोगों की कसरत तुम्हें तअ़ज्जुब में डाले तो ऐ अ़क़्ल वालो ! तुम **अल्लाह** से डरते रहो ताकि तुम फ़लाह़ पाओ।

﴿قُلْ لَّا یَسْتَوِی الْخَبِیْثُ وَ الطَّیِّبُ﴾ **: तुम फ़रमा दो कि गन्दा और पाकीज़ा बराबर नहीं हैं।** इस आयत में फ़रमाया गया कि ह़लाल व ह़राम, नेक व बद, मुस्लिम व काफ़िर और खरा खोटा एक दरजे में नहीं हो सकते बल्कि ह़राम की जगह ह़लाल, बद की जगह नेक, काफ़िर की जगह मुसल्मान और खोटे की जगह खरा ही मक़्बूल है।

﴿وَ لَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِیْثِ﴾ **: अगर्चे गन्दे की कसरत तुम्हें तअ़ज्जुब में डाले।** इस का मा'ना येह है कि दुन्यादारों को मालो दौलत की कसरत और दुन्या की ज़ेबो ज़ीनत भाती है ह़ालां कि जो ने'मतें **अल्लाह** तआ़ला के पास हैं वोह सब से अच्छी और सब से ज़ियादा बाक़ी रहने वाली हैं क्यूं कि दुन्या की ज़ीनतो आराइश और इस की ने'मतें ख़त्म हो जाएंगी जब कि वोह ने'मतें हमेशा बाक़ी रहेंगी जो **अल्लाह** तआ़ला के पास हैं।[1]

दुन्या की मज़म्मत

इस से मा'लूम हुवा कि दुन्या के मालो दौलत की चाहत, इस की ने'मतों और आसाइशों की ख़्वाहिशात और इस की रंगीनियों से लुत्फ़ अन्दोज़ होने की तमन्ना में लगे रहना और अपनी आख़िरत की तय्यारी से ग़ाफ़िल रहना इन्तिहाई मज़्मूम है। **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

زُیِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَ الْبَنِیْنَ وَ الْقَنَاطِیْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَ الْفِضَّةِ وَ الْخَیْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَ الْاَنْعَامِ وَ الْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۚ وَ اللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ[2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : लोगों के लिये उन की ख़्वाहिशात की मह़ब्बत को आरास्ता कर दिया गया या'नी औ़रतों और बेटों और सोने चांदी के जम्अ़ किये हुए ढेरों और निशान लगाए गए घोड़ों और मवेशियों और खेतियों को (उन के लिये आरास्ता कर दिया गया)। येह सब दुन्यवी ज़िन्दगी का साज़ो सामान है और सिर्फ़ **अल्लाह** के पास अच्छा ठिकाना है।

1 .....خازن، المائدة، تحت الآیة: ۱۰۰، ۱/ ۵۳۰.
2 .....ال عمران: ۱٤.

www.dawateislami.net

और इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ؕ وَسَنَجْزِي الشّٰكِرِيْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो शख़्स दुन्या का इन्आ़म चाहता है हम उसे दुन्या का कुछ इन्आ़म दे देंगे और जो आख़िरत का इन्आ़म चाहता है हम उसे आख़िरत का इन्आ़म अ़ता फ़रमाएंगे और अ़न्क़रीब हम शुक्र अदा करने वालों को सिला अ़ता करेंगे।

ह़ज़रते ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स हमेशा दुन्या की फ़िक्र में मुब्तला रहेगा (और दीन की परवाह न करेगा) तो **अल्लाह** तआ़ला उस के तमाम काम परेशान कर देगा और उस की मुफ़्लिसी हमेशा उस के सामने रहेगी और उसे दुन्या इतनी ही मिलेगी जितनी उस की तक़्दीर में लिखी हुई है और जिस की निय्यत आख़िरत की जानिब होगी तो **अल्लाह** तआ़ला उस की दिल जम्ई के लिये उस के तमाम काम दुरुस्त फ़रमा देगा और उस के दिल में दुन्या की बे परवाई डाल देगा और दुन्या उस के पास ख़ुद बख़ुद आएगी।"(2)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "दुन्या उस का घर है जिस का (आख़िरत में) कोई घर नहीं और उस का माल है जिस का दूसरा कोई माल नहीं और दुन्या के लिये वोह आदमी जम्अ़ करता है जिस के पास अ़क़्ल नहीं।"(3)

ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने अपनी दुन्या से मह़ब्बत की उस ने अपनी आख़िरत को नुक़्सान पहुंचाया और जिस ने अपनी आख़िरत से मह़ब्बत की उस ने अपनी दुन्या को नुक़्सान पहुंचाया, पस तुम फ़ना होने वाली (दुन्या) पर बाक़ी रहने वाली (आख़िरत) को तरजीह़ दो।"(4)

अल्लाह तआ़ला तमाम मुसल्मानों को अपनी दुन्यवी बेहतरी के साथ साथ अपनी उख़्वी तय्यारी की त़रफ़ भी तवज्जोह करने और इस के लिये भरपूर कोशिश करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ

1 .....اٰل عمران: ۱۴۵۔ 2 .....ابن ماجه، کتاب الزهد، باب الهم بالدنیا، ۴/۴۲۴، الحدیث: ۴۱۰۵۔
3 .....شعب الایمان، الحادی والسبعون من شعب الایمان ... الخ، فصل فیما یلغنا عن الصحابة... الخ، ۷/۳۷۵، الحدیث: ۱۰۶۳۸۔
4 .....مسند امام احمد، مسند الکوفیین، حدیث ابی موسی الاشعری، ۷/۱۶۵، الحدیث: ۱۹۷۱۷۔

www.dawateislami.net

وَ اِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِیْنَ یُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَ لَكُمْ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِیْمٌ ۝۱۰۱

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ऐसी बातें न पूछो जो तुम पर ज़ाहिर की जाएं तो तुम्हें बुरी लगें और अगर उन्हें उस वक़्त पूछोगे कि क़ुरआन उतर रहा है तो तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएंगी **अल्लाह** उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा चुका है और **अल्लाह** बख़्शने वाला ह़िल्म वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! ऐसी बातें न पूछो जो तुम पर ज़ाहिर की जाएं तो तुम्हें बुरी लगें और अगर तुम उन्हें उस वक़्त पूछोगे जब कि क़ुरआन नाज़िल किया जा रहा है तो तुम पर वोह चीज़ें ज़ाहिर कर दी जाएंगी और **अल्लाह** उन को मुआ़फ़ कर चुका है और **अल्लाह** बख़्शने वाला, ह़िल्म वाला है।

﴿لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْیَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ﴾ **: ऐसी बातें न पूछो जो तुम पर ज़ाहिर की जाएं तो तुम्हें बुरी लगें।** ﴾ इस आयते मुबारका का शाने नुज़ूल येह है कि एक रोज़ सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुत्बा देते हुए फ़रमाया : "जिस को जो दरयाफ़्त करना हो दरयाफ़्त करे।" ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ुज़ाफ़ा सहमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने खड़े हो कर दरयाफ़्त किया कि मेरा बाप कौन है ? इर्शाद फ़रमाया : "ह़ुज़ाफ़ा।" फिर फ़रमाया : "और पूछो।" तो ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने उठ कर ईमान व रिसालत का इक़रार कर के मा'ज़िरत पेश की।[1]

इमाम इब्ने शहाब ज़ोहरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की रिवायत है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ुज़ाफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की वालिदा ने उन से शिकायत की और कहा कि "तू बहुत ना लाइक़ बेटा है, तुझे क्या मा'लूम कि ज़मानए जाहिलिय्यत की औ़रतों का क्या ह़ाल था ? ख़ुदा न ख़्वास्ता तेरी मां से कोई क़ुसूर हुवा होता तो आज वोह कैसी रुस्वा होती।" इस पर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ुज़ाफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने कहा कि अगर सरकारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी ह़बशी ग़ुलाम को मेरा बाप बता देते तो मैं यक़ीन के साथ मान लेता।[2]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में है कि लोग ब त़रीक़े इस्तिह्ज़ा इस क़िस्म के सुवाल किया करते थे, कोई कहता मेरा बाप कौन है ? कोई पूछता कि मेरी ऊंटनी गुम हो गई है, वोह कहां है ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई।[3]

1 .....بخاری، کتاب مواقیت الصلاۃ، باب وقت الظھر عند الزوال، ۱/۲۰۰، الحدیث: ۵۴۰.
2 .....تفسیر بغوی، المائدۃ، تحت الآیۃ: ۱۰۱، ۲/۵۷.
3 .....بخاری، کتاب التفسیر، باب لا تسألوا عن اشیاء ان تبد لکم تسؤکم، ۳/۲۱۸، الحدیث: ۴۶۲۲.

www.dawateislami.net

मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुत्बे में ह़ज फ़र्ज़ होने का बयान फ़रमाया। इस पर एक शख़्स ने कहा, क्या हर साल फ़र्ज़ है ? नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सुकूत फ़रमाया। साइल ने सुवाल की तक्रार की तो इर्शाद फ़रमाया कि : "जो मैं बयान न करूं उस के दर पै न हो, अगर मैं हां कह देता तो हर साल ह़ज करना फ़र्ज़ हो जाता और तुम न कर सकते।"[1]

आयत "لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْیَآءَ" और इस की तफ़्सीर में मज़्कूर रिवायात से मा'लूम होने वाली अहम बातें

इस आयत और इस की तफ़्सीर में जो रिवायात ज़िक्र हुईं उन से चार अहम बातें मा'लूम हुईं :

(1)..... हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इल्मे ग़ैब : इन रिवायात से एक तो येह बात मा'लूम हुई कि ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ैब का इल्म रखते हैं क्यूं कि किसी का ह़क़ीक़ी बाप कौन है ? इस का तअ़ल्लुक़ ग़ैब से है। नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कुल्ली इल्म अ़त़ा फ़रमाया गया वरना हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह न फ़रमाते कि जो चाहो पूछो बल्कि फ़रमाते कि फुलां फुलां शो'बे के मुतअ़ल्लिक़ पूछ लो या फ़रमाते कि सिर्फ़ शरीअ़त के मुतअ़ल्लिक़ जो पूछना चाहो पूछ लो। सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बिग़ैर किसी क़ैद के फ़रमाना कि **जो पूछना है पूछो और पूछने वालों का भी हर त़रह़ की बात पूछ लेना** इस बात की दलील है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब कुछ जानते हैं और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ येही अ़क़ीदा रखते थे।

(2)..... हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इख़्तियारात : आख़िरी रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला ने सरकारे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इख़्तियार दिया है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस चीज़ को फ़र्ज़ फ़रमा दें वोह फ़र्ज़ हो जाए।

(3)..... नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत पर शफ़्क़त : आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत पर निहायत शफ़ीक़ हैं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर एक मरतबा हां फ़रमा देते तो हर साल ह़ज करना फ़र्ज़ हो जाता लेकिन ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मत पर आसानी फ़रमाई और हां नहीं फ़रमाया।

नोट : सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इल्मे ग़ैब के मुतअ़ल्लिक़ फ़तावा रज़विय्या की 29वीं जिल्द में मौजूद आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की दर्जे ज़ैल किताबों का मुत़ालआ़ निहायत मुफ़ीद है :

1 .....مسلم، كتاب الحج.، باب فرض الحج مرة فى العمر، ص ٦٩٨، الحديث: ٤١٢(١٣٣٧).

www.dawateislami.net

(1) خَالِصُ الْاِعْتِقَاد (इल्मे ग़ैब से मुतअ़ल्लिक़ 120 दलाइल पर मुश्तमिल एक अ़ज़ीम किताब) (2) اَنْبَاءُ الْمُصْطَفٰی بِحَالِ سِرٍّ وَاَخْفٰی (हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को مَاكَانَ وَمَايَكُوْنُ का इल्म दिये जाने का सुबूत) (3) اِزَاحَةُ الْعَيْبِ بِسَيْفِ الْغَيْبِ (इल्मे ग़ैब के मस्अले से मुतअ़ल्लिक़ दलाइल और बद मज़्हबों का रद) । और सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के काएनात और शरीअ़त दोनों के मुतअ़ल्लिक़ इख़्तियारात जानने के लिये फ़तावा रज़विय्या की 30वीं जिल्द में मौजूद आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की अ़ज़ीम तस्नीफ़ اَلْاَمْنُ وَالْعُلٰی لِنَاعِتِی الْمُصْطَفٰی بِدَافِعِ الْبَلَاءِ (मुस्त़फ़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दाफ़ेउ़ल बला या'नी बलाएं दूर करने वाला कहने वालों के लिये इन्आ़मात) का मुत़ालआ़ फ़रमाइये ।

(4)..... ह़िल्लत व ह़ुर्मत का अहम उ़सूल : इस आयत से येह भी साबित हुवा कि जिस अम्र की शरीअ़त में मुमानअ़त न आई हो वोह मुबाह़ व जाइज़ है । ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी ह़दीस में है, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि "ह़लाल वोह है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी किताब में ह़लाल फ़रमाया और ह़राम वोह है जिस को उस ने अपनी किताब में ह़राम फ़रमाया और जिस से सुकूत किया तो वोह मुआ़फ़ है ।"[1]

قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ﴿۱۰۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम से अगली एक क़ौम ने उन्हें पूछा फिर उन से मुन्किर हो बैठे ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक तुम से पहले एक क़ौम ने उन अश्या के बारे में सुवाल किया था फिर उस का इन्कार करने वाले हो गए ।

﴿قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ﴾ : बेशक तुम से पहले एक क़ौम ने उन अश्या के बारे में सुवाल किया था ।﴾ मुसल्मानों को एक ह़ुक्म देने के बा'द साबिक़ा उम्मतों के वाक़िआ़त से समझाया कि तुम से पहली क़ौमों ने भी अपने अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से बे ज़रूरत सुवालात किये और जब ह़ज़राते अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अह़काम बयान फ़रमा दिये तो वोह उन अह़काम को बजा न ला सके । तो तुम सुवालात करने ही से बचो क्यूं कि अगर तुम्हें तुम्हारे हर सुवाल का जवाब दे दिया गया तो हो सकता है कि किसी सुवाल का जवाब तुम्हें बुरा लगे ।

[1] .....ترمذی، کتاب اللباس، باب ما جاء فی لبس الفراء، ۳/ ۲۸۰، الحدیث: ۱۷۳۲.

www.dawateislami.net

बे ज़रूरत सुवालात करने की मज़म्मत

अहादीस में बे ज़रूरत सुवालात करने की मज़म्मत बयान की गई है, इस से मुतअ़ल्लिक़ 3 अहादीस दर्जे ज़ैल हैं, चुनान्चे

(1)..... ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुसल्मानों में सब से बड़ा मुजरिम वोह है जिस ने ऐसी चीज़ के बारे में सुवाल किया जो ह़राम नहीं की गई थी लेकिन उस के सुवाल करने के बाइ़स ह़राम कर दी गई।"[1]

(2)..... ह़ज़रते अबू सा'लबा ख़ुशनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला ने कुछ ह़दें मुक़र्रर की हैं तो उन से आगे न बढ़ो, कुछ फ़राइज़ लाज़िम फ़रमाए हैं तो उन्हें ज़ाएअ़ न करो, कुछ चीज़ें ह़राम की हैं तो उन की हुर्मत न तोड़ो और तुम पर रह़मत फ़रमाते हुए कुछ चीज़ों से बिग़ैर भूले सुकूत फ़रमाया है तो उन के बारे में बह़स न करो।"[2]

(3)..... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें जिस काम से रोकूं उस से इज्तिनाब करो और जिस काम का तुम्हें हुक्म दूं उसे अपनी इस्तित़ाअ़त के मुत़ाबिक़ करो क्यूं कि तुम से पहले लोग ब कसरत सुवालात करने और अपने अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से इख़्तिलाफ़ करने की वज्ह से हलाक हो गए।"[3]

مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۰۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** ने मुक़र्रर नहीं किया है कान चिरा हुवा और न बिजार और न वसीला और न ह़ामी हां काफ़िर लोग **अल्लाह** पर झूटा इफ़्तिरा बांधते हैं और उन में अक्सर निरे बे अ़क़्ल हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : **अल्लाह** ने बह़ीरा और साइबा और वसीला और ह़ाम को मुक़र्रर नहीं किया लेकिन काफ़िर लोग **अल्लाह** पर झूटा बोहतान लगाते हैं और उन में अक्सर बे अ़क़्ल हैं।

1 .....بخاری، کتاب الاعتصام بالکتاب والسنّۃ، باب ما یکرہ من کثرۃ السؤال... الخ، ٤/٢٥٠، الحدیث: ٧٢٨٩.
2 .....مستدرک، کتاب الاطعمۃ، شان نزول ما احل اللّٰہ فھو حلال، ٥/١٥٧، الحدیث: ٧١٩٦.
3 .....مسلم، کتاب الحج، باب فرض الحج مرۃ فی العمر، ص٦٩٨، الحدیث: ٤١٢(١٣٣٧).

www.dawateislami.net

مَا جَعَلَ اللّٰهُ : अल्लाह ने मुक़र्रर नहीं किया । ज़मानए जाहिलिय्यत में कुफ़्फ़ार का येह दस्तूर था कि जो ऊंटनी पांच मरतबा बच्चे जनती और आख़िरी मरतबा उस के नर होता तो उस का कान चीर देते फिर न उस पर सुवारी करते और न उस को ज़ब्ह़ करते और न पानी और चारे पर से हंकाते, उस को **बह़ीरा** कहते । और जब सफ़र दरपेश होता या कोई बीमार होता तो येह नज़्र करते कि अगर मैं सफ़र से ब ख़ैरिय्यत वापस आऊं या तन्दुरुस्त हो जाऊं तो मेरी ऊंटनी **साइबा** है और उस ऊंटनी से भी नफ़्अ़ उठाना बह़ीरा की त़रह़ ह़राम जानते और उस को आज़ाद छोड़ देते और बकरी जब सात मरतबा बच्चे जन देती तो अगर सातवां बच्चा नर होता तो उस को मर्द खाते और अगर मादा होता तो बकरियों में छोड़ देते और ऐसे ही अगर नर, मादा दोनों होते तो कहते कि येह अपने भाई से मिल गई, उस को **वसीला** कहते और जब नर ऊंट से दस मरतबा ऊंटनी को गाभन करवा लिया जाता तो उस को छोड़ देते, न उस पर सुवारी करते, न उस से काम लेते और न उस को चारे पानी से रोकते, उस को **अल ह़ामी** कहते ।[1]

बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि बह़ीरा वोह है जिस का दूध बुतों के लिये रोकते थे, कोई उस जानवर का दूध न निकालता और साइबा वोह जिस को अपने बुतों के लिये छोड़ देते थे कोई उन से काम न लेता ।[2]

येह रस्में ज़मानए जाहिलिय्यत से इब्तिदाए अ़हदे इस्लाम तक चली आ रही थीं इस आयत में इन को बात़िल किया गया और फ़रमाया कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुक़र्रर नहीं किये बल्कि कुफ़्फ़ार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर झूट बांधते हैं क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने इन जानवरों को ह़राम नहीं किया उस की त़रफ़ इस की निस्बत ग़लत़ है । येह लोग बे वुक़ूफ़ हैं कि जो अपने सरदारों के कहने से इन चीज़ों को ह़राम समझते हैं और इतना शुऊ़र नहीं रखते कि जो चीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़राम न की उस को कोई ह़राम नहीं कर सकता ।

जानवर पर किसी का नाम पुकारने से मुतअ़ल्लिक़ अहम मस्अला

आयते मुबारका से येह भी मा'लूम हुवा कि जानवर की ज़िन्दगी में उस पर किसी का नाम पुकारना उसे ह़राम नहीं कर देता । हां ज़ब्ह़ के वक़्त ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारना ह़राम कर देगा । नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि जो जानवर ह़लाल हो उसे ख़्वाह म ख़्वाह ह़राम कहना मुश्रिकीन का त़रीक़ा और सरासर जहालत है ।

1 .....مدارك، المائدة، تحت الآية: ١٠٣، ص٣٠٦.

2 .....بخاری، كتاب المناقب، باب قصة خزاعة، ٢ / ٤٨٠، الحديث: ٣٥٢١، مسلم، كتاب الجنة وصفة نعيمها واهلها، باب النار يدخلها الجبارون... الخ، ص١٥٢٨، الحديث: ٥١(٢٨٥٦).

www.dawateislami.net

وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَ اِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَیْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَ لَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ شَیْــٴًـا وَّ لَا یَهْتَدُوْنَ ﴿۱۰۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उन से कहा जाए आओ उस त़रफ़ जो **अल्लाह** ने उतारा और रसूल की त़रफ़ कहें हमें वोह बहुत जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया क्या अगर्चे उन के बाप दादा न कुछ जानें न राह पर हों।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब उन से कहा जाए कि जो **अल्लाह** ने नाज़िल फ़रमाया है उस की त़रफ़ और रसूल की त़रफ़ आओ तो कहते हैं कि हमें वोही काफ़ी है जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया है। क्या अगर्चे उन के बाप दादा न कुछ जानते हों और न उन्हें हिदायत हो।

﴿وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمْ﴾ **: और जब उन्हें कहा जाए।** मुश्रिकों से जब कहा जाता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी करो तो वोह कहते कि हमारे लिये हमारे बाप दादा का दीन काफ़ी है। इस पर फ़रमाया कि बाप दादा की इत्तिबाअ़ तब दुरुस्त होती जब वोह इ़ल्म रखते और सीधी राह पर होते।

आबाओ अज्दाद की ना जाइज़ रस्में पूरी करने की मज़म्मत

अल्लाह तआ़ला और उस के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी की दा'वत मिलने पर कुफ़्फ़ार ने जो जवाब दिया उस से मा'लूम हुवा कि शरीअ़त के मुक़ाबले में जाहिल बाप दादों की रस्म इख़्तियार करना कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा है। इस से उन लोगों को नसीह़त ह़ासिल करनी चाहिये जो ख़ुशी की तक़रीबात में और ग़मी के मवाक़ेअ़ पर ना जाइज़ व ह़राम रस्में करते हैं और उन रस्मों में शामिल न होने वाले को बुरा भला कहते हैं और उन रस्मों से मन्अ़ करने वाले से कहते हैं कि हमारे ख़ानदान में येह रस्में अ़र्सए दराज़ से चली आ रही हैं, हम इन्हें नहीं छोड़ सकते। **अल्लाह** तआ़ला ऐसे मुसल्मानों को हिदायत अ़त़ा फ़रमाए, आमीन।

www.dawateislami.net

नेक लोगों की पैरवी ज़रूरी है

आयत के आख़िरी हिस्से से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला के नेक बन्दों की इत्तिबाअ़ और उन की पैरवी करनी ज़रूरी है।

एक और मक़ाम पर **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो **अल्लाह** से डरो और सच्चों के साथ हो जाओ।

हज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इर्शाद है : ऐसे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करो जिन की सूरत देख कर तुम्हें ख़ुदा याद आए, जिन की गुफ़्तगू तुम्हारे इ़ल्म में इज़ाफ़ा करे और जिन का अ़मल तुम्हें आख़िरत का शौक़ दिलाए।(2)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۰۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो तुम सब की रुजूअ़ **अल्लाह** ही की त़रफ़ है फिर वोह तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! तुम अपनी जानों की फ़िक्र करो जब तुम हिदायत पर हो तो गुमराह होने वाला तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा **अल्लाह** ही की त़रफ़ तुम सब का लौटना है फिर वोह तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे।

عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ﴾ : **तुम अपनी फ़िक्र करो।** ﴿ मुसल्मान कुफ़्फ़ार की इस्लाम से महरूमी पर अफ़्सोस करते थे और उन्हें रन्ज होता था कि कुफ़्फ़ार इ़नाद में मुब्तला हो कर दौलते इस्लाम से महरूम रहे। इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने उन की तसल्ली फ़रमा दी कि इस में तुम्हारा कुछ ज़रर नहीं, अम्र बिल मा'रूफ़ व नह्य अ़निल मुन्कर का फ़र्ज़ अदा कर के तुम बरिय्युज़्ज़िम्मा हो चुके हो, तुम अपनी नेकी की जज़ा पाओगे।

1 .....توبہ:۱۱۹.

2 .....جامع بیان العلم وفضلہ، باب جامع فی آداب العالم والمتعلم، ص۱۷۲.

www.dawateislami.net

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "इस आयत में अम्र बिल मा'रूफ़ व नह्य अ़निल मुन्कर के वुजूब की बहुत ताकीद की है, क्यूं कि अपनी फ़िक्र रखने के मा'ना येह हैं कि "एक दूसरे की ख़बर गीरी करे, नेकियों की रग़बत दिलाए और बदियों से रोके।"(1)

और मुफ़्ती अह़मद यार ख़ां नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कितनी प्यारी बात इर्शाद फ़रमाई जिस का ख़ुलासा है कि तुम अपनी फ़िक्र करो या'नी अ़क़ाइद दुरुस्त कर के, नेक आ'माल कर के अपनी फ़िक्र करो, आ'माल में तब्लीग़ भी शामिल है लिहाज़ा जो क़ुदरत के बा वुजूद तब्लीग़ न करे वोह राह पर ही नहीं।(2)

नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने के बारे में अह़ादीस

यहां नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने का ज़िक्र हुवा, इस की मुनासबत से हम यहां नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने के बारे में 3 अह़ादीस ज़िक्र करते हैं :

(1)..... ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम येह आयत पढ़ते हो "يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ" और मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना है कि जब लोग ज़ालिम को (ज़ुल्म करते) देखें और उसे (ज़ुल्म से) न रोकें तो क़रीब है कि **अल्लाह** तआ़ला उन सब को अ़ज़ाब में मुब्तला कर दे।"(3)

(2)..... और एक मरतबा आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम **अल्लाह** तआ़ला के इस फ़रमान "عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ" को पढ़ कर धोके में मुब्तला न हो जाना कि तुम में से कोई कहने लगे "मैं तो बस अपनी जान की फ़िक्र करूंगा" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम ज़रूर नेकी का हुक्म दोगे और बुराई से मन्अ़ करोगे वरना तुम पर तुम्हारे शरीर लोग हुक्मरान बन जाएंगे जो तुम्हें बड़ी सख़्त तक्लीफ़ें पहुंचाएंगे, फिर तुम्हारे नेक लोग दुआ़ करेंगे भी तो उन की दुआ़ क़बूल न की जाएगी।"(4)

(3)..... ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "ऐ लोगो ! तुम्हें लाज़िमी तौ़र पर नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना होगा वरना **अल्लाह** तआ़ला तुम पर ज़ालिम हुक्मरान मुसल्लत़ कर देगा जो तुम्हारे बड़ों की बुज़ुर्गी का ख़याल नहीं रखेगा और तुम्हारे छोटों पर रह़्म

❷..... नूरुल इरफ़ान, अल माइदह, तह़्तल आयह : 105, स. 198

1 .....خازن، المائدة، تحت الآية: ۱۰۵، ۱/۵۳٤.

3 .....ترمذی، کتاب الفتن، باب ما جاء فی نزول العذاب اذا لم یغیّر المنکر، ٤/٦٩، الحدیث: ۲۱۷۵.

4 .....کنز العمال، کتاب الاخلاق، قسم الافعال، الامر بامعروف والنهی عن المنکر، ۲/۲۷۱، الجزء الثالث، الحدیث: ۸٤٤۲، تفسیر طبری، المائدة، تحت الآية: ۱۰۵، ٥/۹۸-۹۹.

www.dawateislami.net

नहीं करेगा, तुम्हारे नेक लोग उस के ख़िलाफ़ दुआ मांगेंगे लेकिन उन की दुआ क़बूल न होगी और तुम मदद मांगोगे लेकिन तुम्हें मदद न मिलेगी[1] ।''[2]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ ؕ تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْۢ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِيْ بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۙ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللّٰهِ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ﴿۱۰۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो तुम्हारी आपस की गवाही जब तुम में किसी को मौत आए वसिय्यत करते वक़्त तुम में के दो मो'तबर शख़्स हैं या ग़ैरों में के दो जब तुम मुल्क में सफ़र को जाओ फिर तुम्हें मौत का ह़ादिसा पहुंचे उन दोनों को नमाज़ के बा'द रोको वोह **अल्लाह** की क़सम खाएं अगर तुम्हें कुछ शक पड़े हम ह़ल्फ़ के बदले कुछ माल न ख़रीदेंगे अगर्चे क़रीब का रिश्तेदार हो और **अल्लाह** की गवाही न छुपाएंगे ऐसा करें तो हम ज़रूर गुनहगारों में हैं ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! जब तुम में किसी को मौत आने लगे तो वसिय्यत करते वक़्त तुम्हारी आपस की गवाही (देने वाले) तुम में से दो मो'तबर शख़्स हों या अगर तुम ज़मीन में सफ़र कर रहे हो फिर तुम्हें मौत का ह़ादिसा आ पहुंचे तो तुम्हारे ग़ैरों में से दो आदमी (गवाह हों) । तुम उन दोनों गवाहों को नमाज़ के बा'द रोक लो फिर अगर तुम्हें कुछ शक हो तो वोह दोनों **अल्लाह** की क़सम खाएं कि हम क़सम के बदले कोई माल न लेंगे अगर्चे क़रीबी रिश्तेदार हो और हम **अल्लाह** की गवाही न छुपाएंगे । (अगर हम ऐसा करें तो) उस वक़्त हम ज़रूर गुनहगारों में होंगे ।

---

1 .....احیاء علوم الدین، کتاب الامر بالمعروف والنهی عن المنکر، الباب الاول فی وجوب الامر بالمعروف... الخ، ۲/۳۸۳.

2 ..... नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने की तरग़ीब, जज़्बा और मौक़अ़ पाने के लिये दा'वते इस्लामी से वाबस्तगी और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र बहुत मुफ़ीद है ।

www.dawateislami.net

﴿شَهَادَةُ بَیْنِكُمْ﴾ : **तुम्हारी आपस की गवाही** । ﴾ आयते मुबारका का शाने नुज़ूल येह है कि मुहाजिरीन में से एक साहिब जिन का नाम बुदैल था वोह तिजारत के इरादे से दो ईसाइयों के साथ मुल्के शाम की त़रफ़ रवाना हुए। उन ईसाइयों में से एक का नाम तमीम बिन औस दारी था और दूसरे का अ़दी बिन बद्दाअ। शाम पहुंचते ही बुदैल बीमार हो गए और उन्हों ने अपने तमाम सामान की एक फ़ेहरिस्त लिख कर सामान में डाल दी और हमराहियों को इस की इत्तिलाअ़ न दी। जब मरज़ की शिद्दत हुई तो बुदैल ने तमीम और अ़दी दोनों को वसिय्यत की, कि उन का तमाम सरमाया मदीने शरीफ़ पहुंच कर उन के घर वालों के ह़वाले कर दिया जाए। फिर बुदैल की वफ़ात हो गई। इन दोनों ने उन की मौत के बा'द उन का सामान देखा तो उस में एक चांदी का जाम था जिस पर सोने का काम किया हुवा था, उस में तीन सो मिस्क़ाल चांदी थी, बुदैल येह जाम बादशाह को नज़्र करने के क़स्द से लाए थे, उन की वफ़ात के बा'द उन के दोनों साथियों ने उस जाम को ग़ाइब कर दिया और अपने काम से फ़ारिग़ होने के बा'द जब येह लोग मदीनए त़य्यिबा पहुंचे तो इन्हों ने बुदैल का सामान उन के घर वालों के सिपुर्द कर दिया, सामान खोलने पर फ़ेहरिस्त उन के हाथ आ गई जिस में तमाम सामान की तफ़्सील थी। सामान को उस फ़ेहरिस्त के मुत़ाबिक़ किया लेकिन जाम न मिला। अब वोह तमीम और अ़दी के पास पहुंचे और उन्हों ने दरयाफ़्त किया कि क्या बुदैल ने कुछ सामान बेचा भी था ? इन्हों ने कहा : नहीं। घर वालों ने पूछा कि क्या कोई तिजारती मुआ़मला किया था ? इन्हों ने कहा : नहीं। फिर घर वालों ने दरयाफ़्त किया कि क्या बुदैल बहुत अ़र्सा बीमार रहे और उन्हों ने अपने इ़लाज में कुछ ख़र्च किया था ? इन्हों ने कहा : नहीं। वोह तो शह्र पहुंचते ही बीमार हो गए और जल्द ही उन का इन्तिक़ाल हो गया। इस पर उन लोगों ने कहा कि उन के सामान में एक फ़ेहरिस्त मिली है उस में चांदी का एक जाम सोने से मुनक़्क़श किया हुवा जिस में तीन सो मिस्क़ाल चांदी है येह भी लिखा है लेकिन वोह मौजूद नहीं है। तमीम व अ़दी ने कहा : हमें नहीं मा'लूम, हमें तो जो वसिय्यत की थी उस के मुत़ाबिक़ सामान हम ने तुम्हें दे दिया, जाम की हमें ख़बर भी नहीं। येह मुक़द्दमा **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार में पेश हुवा। तमीम व अ़दी वहां भी इन्कार पर जमे रहे और क़सम खा ली इस पर येह आयत नाज़िल हुई।[1]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की रिवायत में है कि फिर वोह जाम मक्कए मुकर्रमा में पकड़ा गया, जिस शख़्स के पास था उस ने कहा कि मैं ने येह जाम तमीम व अ़दी से ख़रीदा है। जाम के मालिक के घर वालों में से दो शख़्सों ने खड़े हो कर क़सम खाई कि हमारी शहादत इन की शहादत से ज़ियादा क़बूल की जाने की मुस्तह़िक़ है, येह जाम हमारे फ़ौत होने वाले शख़्स का है इस बारे में येह आयत नाज़िल हुई।[2]

1 .....خازن، المائدة، تحت الآية: ١٠٦، ١/٥٣٤. 2 .....ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة المائدة، ٤/٥، الحدیث: ٣٠٧١.

www.dawateislami.net

आयत में येह हुक्म फ़रमाया गया कि जब तुम में से किसी की मौत का वक़्त क़रीब आए और ज़िन्दगी की उम्मीद न रहे, मौत के आसार व अ़लामात ज़ाहिर हों तो अपनों में से दो आदमियों को वसिय्यत का गवाह बना लो और सफ़र वग़ैरा में हो और अपने आदमी या'नी मुसल्मान न मिलें तो ग़ैर मुस्लिमों को गवाह बना लो।

﴿تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْۢ بَعْدِ الصَّلٰوةِ﴾ **: तुम उन दोनों गवाहों को नमाज़ के बा'द रोक लो।** इस से पहले वसिय्यत पर गवाह बनाने का त़रीक़ा बताया गया अब क़राइन और अ़लामात की रोशनी में गवाही में झूट का उ़न्सुर नुमायां होता नज़र आए तो इस सूरत में गवाही लेने का त़रीक़ा बताया गया कि जब मय्यित के वुरसा को वसिय्यत की गवाही में शक गुज़रे तो वोह अ़स्र की नमाज़ के बा'द गवाहों से इस त़रह़ गवाही लें : दोनों गवाह येह इक़रार करते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम खाएं कि हम गवाही के बदले किसी से कोई माल न लेंगे अगर्चे वोह क़रीबी रिश्तेदार ही क्यूं न हो और न हम गवाही छुपाएंगे या'नी झूटी क़सम न खाएंगे और न किसी की ख़ातिर ऐसा करेंगे, अगर हम ऐसा करें तो उस वक़्त हम ज़रूर गुनहगारों में से होंगे। आयत में नमाज़ से मुराद अ़स्र की नमाज़ है। सब लोग चाहे उन का तअ़ल्लुक़ किसी भी दीन और मज़हब से हो इस वक़्त की ता'ज़ीम करते थे और इस वक़्त में झूटी क़सम खाने से बचते थे।[1]

فَاِنْ عُثِرَ عَلٰۤى اَنَّهُمَا اسْتَحَقَّاۤ اِثْمًا فَاٰخَرٰنِ يَقُوْمٰنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِيْنَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْاَوْلَيٰنِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ لَشَهَادَتُنَاۤ اَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَاۤ ۖ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۰۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर अगर पता चले कि वोह किसी गुनाह के सज़ावार हुए तो उन की जगह दो और खड़े हों उन में से कि इस गुनाह या'नी झूटी गवाही ने उन का ह़क़ ले कर उन को नुक़्सान पहुंचाया जो मय्यित से ज़ियादा क़रीब हों तो **अल्लाह** की क़सम खाएं कि हमारी गवाही ज़ियादा ठीक है उन दो की गवाही से और हम ह़द से न बढ़े ऐसा हो तो हम ज़ालिमों में हों।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर अगर इस बात पर इत्तिलाअ़ मिले कि वोह दोनों गवाह (गवाही में झूट बोल कर) किसी गुनाह के मुस्तह़िक़ हुए हैं तो उन की जगह उन लोगों में से जिन का ह़क़ दबाया गया मय्यित के ज़ियादा क़रीबी दो (आदमी क़सम खाने के लिये) खड़े हो जाएं फिर वोह

1 .....تفسیر بغوی، المائدۃ، تحت الآیۃ: ۱۰۶، ۲/۶۰-۶۱.

www.dawateislami.net

अल्लाह की क़सम खाएं कि हमारी गवाही (या'नी हमारी क़सम) उन की गवाही से ज़ियादा दुरुस्त है और हम ह़द से नहीं बढ़े (और अगर ऐसा करें तो) उस वक़्त हम ज़ालिमों में होंगे।

﴿فَاِنْ عُثِرَ عَلٰۤى اَنَّهُمَا اسْتَحَقَّاۤ اِثْمًا﴾ : **फिर अगर पता चले कि वोह किसी गुनाह के सज़ावार हुए।** वसिय्यत के गवाहों का झूट साबित हो जाए जैसा कि यहां तमीम और अ़दी का झूट साबित हुवा कि पियाला मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में पकड़ा गया तो इस सूरत में हुक्म येह है कि मय्यित के वारिसों में से दो आदमी क़सम खा कर कहें कि येह दोनों अमीन झूटे हैं, हमारी गवाही या'नी क़सम इन दोनों की गवाही से ज़ियादा दुरुस्त है और हम ह़द से नहीं बढ़े, अगर हम ऐसा करेंगे तो उस वक़्त हम ज़ालिमों में होंगे। चुनान्चे बुदैल के वाक़िए़ में जब उन के दोनों हमराहियों की ख़ियानत ज़ाहिर हुई तो बुदैल के वुरसा में से दो शख़्स खड़े हुए और उन्हों ने क़सम खाई कि येह जाम हमारे मूरिस का है और हमारी गवाही इन दोनों की गवाही से ज़ियादा ठीक है। इस के बा'द पियाले का फ़ैसला उन के ह़क़ में कर दिया गया।

ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ يَّاْتُوْا بِالشَّهَادَةِ عَلٰى وَجْهِهَاۤ اَوْ يَخَافُوْۤا اَنْ تُرَدَّ اَيْمَانٌۢ بَعْدَ اَيْمَانِهِمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۱۰۸﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह क़रीब तर है इस से कि गवाही जैसी चाहिये अदा करें या डरें कि कुछ क़समें रद कर दी जाएं उन की क़समों के बा'द और **अल्लाह** से डरो और हुक्म सुनो और **अल्लाह** बे हुक्मों को राह नहीं देता।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह इस के ज़ियादा क़रीब है कि वोह गवाह सह़ीह़ त़रीक़े से गवाही अदा करें या वोह इस बात से डरें कि उन की क़समों के बा'द क़समों को (वुरसा की त़रफ़) लौटा दिया जाएगा और **अल्लाह** से डरो और हुक्म सुनो और **अल्लाह** ना फ़रमानों को हिदायत नहीं देता।

﴿ذٰلِكَ اَدْنٰۤى﴾ : **येह क़रीब तर है।** अ़दी और तमीम के वाक़िए़ में गवाही और क़सम का जो क़ानून बयान हुवा या'नी जिन के ख़िलाफ़ दा'वा दाइर किया गया क़समें खाने के बा'द उन का झूट साबित हो जाए तो अब मय्यित के वुरसा में से दो शख़्स क़समें खाएं, इस की ह़िक्मत बताई जा रही है कि लोग इस वाक़िए़ से इ़ब्रत पकड़ें और शहादतों में राहे ह़क़ व सवाब न छोड़ें और इस बात से डरते रहें कि झूटी गवाही का अन्जाम शरमिन्दगी व रुस्वाई के सिवा कुछ नहीं।

www.dawateislami.net

झूटी क़सम खाने और झूटी गवाही देने की मज़म्मत

फ़ी ज़माना लोगों की ह़ालत इतनी अब्तर हो चुकी है कि उन के नज़्दीक झूटी क़सम खाना, झूटी गवाही देना, झूटे मुक़द्दमात में फंसवा कर अपने मुसल्मान भाई की इ़ज़्ज़त तार तार कर देना, लोहे की संगीन सलाख़ों के पीछे लाचारगी की ज़िन्दगी गुज़ारने पर मजबूर कर देना, अपने मुसल्मान भाई का नाह़क़ माल हड़प कर जाना गोया कि जराइम की फ़ेहरिस्त में दाख़िल ही नहीं। इस दुन्या की फ़ानी ज़िन्दगी को ह़र्फ़े आख़िर समझ बैठना अ़क़्ल मन्दी नहीं नादानी और बे वुक़ूफ़ी की इन्तिहा है, उन्हें चाहिये कि इन क़ुरआनी आयात और इन अह़ादीस को बग़ौर पढ़ कर इ़ब्रत ह़ासिल करें।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने झूटी क़सम पर ह़ल्फ़ उठाया ताकि उस के ज़रीए अपने मुसल्मान भाई का माल हड़प कर ले तो वोह **अल्लाह** तआ़ला से इस ह़ाल में मिलेगा कि **अल्लाह** तआ़ला उस पर सख़्त नाराज़ होगा।[1]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "झूटे गवाह के क़दम हटने भी न पाएंगे कि **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जहन्नम वाजिब कर देगा।"[2]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने ऐसी गवाही दी जिस से किसी मुसल्मान मर्द का माल हलाक हो जाए या किसी का ख़ून बहाया जाए तो उस ने (अपने ऊपर) जहन्नम को वाजिब कर लिया।"[3]

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ ؕ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿۱۰۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन **अल्लाह** जम्अ़ फ़रमाएगा रसूलों को फिर फ़रमाएगा तुम्हें क्या जवाब मिला अ़र्ज़ करेंगे हमें कुछ इ़ल्म नहीं बेशक तू ही है सब ग़ैबों का ख़ूब जानने वाला।

1 .....بخاری، کتاب الایمان و النذور، باب عهد الله عزّوجل، ٤/٢٩٠، الحدیث: ٦٦٥٩.
2 .....ابن ماجه، کتاب الاحکام، باب شهادة الزور، ٣/١٢٣، الحدیث: ٢٣٧٣.
3 .....معجم الکبیر، عکرمة عن ابن عباس، ١١/١٧٢، الحدیث: ١١٥٤١.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जिस दिन **अल्लाह** रसूलों को जम्अ़ फ़रमाएगा फिर फ़रमाएगा : तुम्हें क्या जवाब दिया गया ? वोह अ़र्ज़ करेंगे, हमें कुछ इ़ल्म नहीं । बेशक तू ही सब ग़ैबों का जानने वाला है ।

﴿يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ﴾ **: जिस दिन अल्लाह रसूलों को जम्अ़ फ़रमाएगा ।** ﴾ यहां से क़ियामत के दिन के कुछ मुआ़मलात को बयान फ़रमाया जा रहा है, इस आयत का ख़ुलासए कलाम येह है कि क़ियामत के दिन तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से सुवाल किया जाएगा कि जब तुम ने अपनी उम्मतों को ईमान की दा'वत दी थी तो उन्हों ने तुम्हें क्या जवाब दिया था ? अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जवाब देंगे : हमें कुछ इ़ल्म नहीं । अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का येह जवाब उन के कमाले अदब की शान ज़ाहिर करता है कि वोह इ़ल्मे इलाही के हुज़ूर अपने इ़ल्म को बिल्कुल नज़र में न लाएंगे और क़ाबिले ज़िक्र क़रार न देंगे और मुआ़मला **अल्लाह** तआ़ला के इ़ल्म व अ़द्ल के सिपुर्द फ़रमा देंगे वरना ह़क़ीक़त में अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام यक़ीनन जानते होंगे क्यूं कि तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी उम्मतों की गवाही देंगे ।

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ
اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَاِذْ عَلَّمْتُكَ
الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ
كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِيْ وَتُبْرِئُ
الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ كَفَفْتُ
بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ
اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۱۰﴾

وقف لازم

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जब **अल्लाह** फ़रमाएगा ऐ मरयम के बेटे ईसा याद कर मेरा एह़सान अपने ऊपर और अपनी मां पर जब मैं ने पाक रूह़ से तेरी मदद की तू लोगों से बातें करता पालने में और पक्की उ़म्र का हो कर और जब मैं ने तुझे सिखाई किताब और ह़िक्मत और तौरैत और इन्जील और जब तू मिट्टी से परिन्द की सी मूरत मेरे हुक्म से बनाता फिर उस में फूंक मारता तो वोह मेरे हुक्म से उड़ने लगती और तू मादर ज़ाद अन्धे और सफ़ेद दाग़ वाले को मेरे हुक्म से शिफ़ा देता और जब तू मुर्दों को मेरे हुक्म से ज़िन्दा निकालता और जब मैं ने बनी इसराईल को तुझ से रोका जब तू उन के पास रोशन निशानियां ले कर आया तो उन में के काफ़िर बोले कि येह तो नहीं मगर खुला जादू।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जब **अल्लाह** फ़रमाएगा **:** ऐ मरयम के बेटे ईसा ! अपने ऊपर और अपनी वालिदा पर मेरा वोह एह़सान याद कर, जब मैं ने पाक रूह़ से तेरी मदद की। तू गहवारे में और बड़ी उ़म्र में लोगों से बातें करता था और जब मैं ने तुझे किताब और ह़िक्मत और तौरैत और इन्जील सिखाई और जब तू मेरे हुक्म से मिट्टी से परिन्दे जैसी सूरत बना कर उस में फूंक मारता था तो वोह मेरे हुक्म से परिन्दा बन जाती और तू मेरे हुक्म से पैदाइशी नाबीना और सफ़ेद दाग़ के मरीज़ को शिफ़ा देता था और जब तू मेरे हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा कर के निकालता और जब मैं ने बनी इसराईल को तुम से रोक दिया। जब तू उन के पास रोशन निशानियां ले कर आया तो उन में से काफ़िरों ने कहा **:** येह तो खुला जादू है।

﴿اِذْ قَالَ اللّٰهُ﴾ **: जब अल्लाह फ़रमाएगा।** इस आयत में भी क़ियामत के दिन का एक मुआ़मला बयान फ़रमाया गया, गोया कि इर्शाद फ़रमाया "आप याद करें जिस दिन **अल्लाह** तआ़ला रसूलों को जम्अ़ फ़रमाएगा और जब **अल्लाह** तआ़ला ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से इस त़रह़ फ़रमाएगा।"[1] याद रहे कि इस आयते मुबारका में जो एह़सानात ज़िक्र किये गए उन की मुफ़स्सल तफ़्सीर सूरए आले इमरान आयत नम्बर 37 ता 49 में गुज़र चुकी है।

وَ اِذْ اَوْحَیْتُ اِلَى الْحَوَارِیّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِیْ وَ بِرَسُوْلِیْۚ قَالُوْۤا اٰمَنَّا وَ اشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۱۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब मैं ने ह़वारियों के दिल में डाला कि मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ बोले हम ईमान लाए और गवाह रह कि हम मुसल्मान हैं।

1 .....قرطبی، المائدۃ، تحت الآیۃ: ۱۱۰، ۳/۲۲٤، الجزء السادس.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब मैं ने ह़वारियों के दिल में येह बात डाली कि मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ तो उन्हों ने कहा : हम ईमान लाए और (ऐ ईसा !) आप गवाह हो जाएं कि हम मुसल्मान हैं ।

﴿وَاِذْ اَوْحَیْتُ اِلَى الْحَوَارِیّٖنَ﴾ **: और जब मैं ने ह़वारियों के दिल में येह बात डाली ।** ﴾ ह़वारी ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मख़्सूस और मुख़्लिस ह़ज़रात को कहा जाता है । उन के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के दिलों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर ईमान लाने की बात डाल दी ।

"वह़ी" का एक मा'ना

याद रहे कि इस आयत में लफ़्ज़ **"वह़ी"** की निस्बत ग़ैरे अम्बिया की त़रफ़ है और जब वह़ी की निस्बत ग़ैरे नबी की त़रफ़ हो तो इस से मुराद दिल में बात डालना होता है जैसे सूरए क़सस की आयत नम्बर 7 में है :

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने मूसा की मां के दिल में बात डाल दी ।

وَاَوْحَیْنَاۤ اِلٰۤى اُمِّ مُوْسٰى

नीज़ सूरए नह़ूल की आयत नम्बर 68 में है :

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तेरे रब ने शह़द की मख्ख़ी के दिल में येह बात डाल दी ।

وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ

اِذْ قَالَ الْحَوَارِیُّوْنَ یٰعِیْسَى ابْنَ مَرْیَمَ هَلْ یَسْتَطِیْعُ رَبُّكَ اَنْ یُّنَزِّلَ عَلَیْنَا مَآىِٕدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ؕ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۱۱۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जब ह़वारियों ने कहा ऐ ईसा बिन मरयम क्या आप का रब ऐसा करेगा कि हम पर आस्मान से एक ख़्वान उतारे कहा **अल्लाह** से डरो अगर ईमान रखते हो ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : याद करो जब ह़वारियों ने कहा : ऐ ईसा बिन मरयम ! क्या आप का रब ऐसा करेगा कि हम पर आस्मान से एक दस्तर ख़्वान उतार दे ? फ़रमाया : **अल्लाह** से डरो, अगर ईमान रखते हो ।

﴿اِذْ قَالَ الْحَوَارِیُّوْنَ﴾ **: जब ह़वारियों ने कहा ।** ﴾ ह़वारियों ने ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से अ़र्ज़ की, कि क्या आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का रब عَزَّوَجَلَّ हम पर आस्मान से ने'मतों से भरपूर दस्तर ख़्वान उतारेगा ? उन की मुराद येह थी कि क्या **अल्लाह** तआ़ला इस बारे में आप की दुआ़ क़बूल

www.dawateislami.net

फ़रमाएगा ? येह मुराद नहीं थी कि क्या आप का रब عَزَّوَجَلَّ ऐसा कर सकता है या नहीं ? क्यूं कि वोह ह़ज़रात **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत पर ईमान रखते थे। ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि अगर ईमान रखते हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और तक़्वा इख़्तियार करो ताकि येह मुराद ह़ासिल हो जाए। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा : इस के मा'ना येह हैं कि तमाम उम्मतों से निराला सुवाल करने में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो या येह मा'ना हैं कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कमाले क़ुदरत पर ईमान रखते हो तो ऐसे सुवाल न करो जिन से तरद्दुद का शुबा गुज़र सकता हो।[1]

قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَىِٕنَّ قُلُوْبُنَا وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿۱۱۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बोले हम चाहते हैं कि उस में से खाएं और हमारे दिल ठहरें और हम आंखों देख लें कि आप ने हम से सच फ़रमाया और हम उस पर गवाह हो जाएं।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : (ह़वारियों ने) कहा : हम येह चाहते हैं कि उस में से खाएं और हमारे दिल मुत्मइन हो जाएं और हम आंखों से देख लें कि आप ने हम से सच फ़रमाया है और हम उस पर गवाह हो जाएं।

﴿قَالُوْا﴾ **: उन्हों ने कहा।** ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने जब उन्हें ख़ुदा ख़ौफ़ी का हुक्म दिया तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि "हम तो सिर्फ़ येह चाहते हैं कि हुसूले बरकत के लिये उस आस्मानी दस्तर ख़्वान से कुछ खाएं और हमारा यक़ीन क़वी हो जाए और जैसे हम ने क़ुदरते इलाही को दलील से जाना है इसी त़रह़ मुशाहदे से भी इस को पुख़्ता कर लें या'नी इल्मुल यक़ीन से तरक़्क़ी कर के ऐ़नुल यक़ीन ह़ासिल करें।" ह़वारियों के जवाब ने वाज़ेह़ कर दिया कि उन्हों ने क़ुदरते इलाही में शको शुबे की वज्ह से साबिक़ा मुत़ालबा नहीं किया था बल्कि इस का मक़्सद कुछ और था। ह़वारियों की इस दरख़्वास्त पर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन्हें तीस रोज़े रखने का हुक्म दिया और फ़रमाया जब तुम इन रोज़ों से फ़ारिग़ हो जाओगे तो **अल्लाह** तआ़ला से जो दुआ़ करोगे क़बूल होगी। उन्हों ने रोज़े रख कर दस्तर ख़्वान उतरने की दुआ़ की। उस वक़्त ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ग़ुस्ल फ़रमाया, मोटा लिबास पहना, दो रक्अ़त नमाज़ अदा की और सरे मुबारक झुकाया और रो कर येह दुआ़ की जिस का अगली आयत में ज़िक्र है।[2]

1 .....تفسیر قرطبی، المائدۃ، تحت الآیۃ: ۱۱۲، ۳/۲۲۶، الجزء السادس،خازن، المائدۃ، تحت الآیۃ: ۱۱۲، ۱/۵۳۹، ملتقطاً.

2 .....خازن، المائدۃ، تحت الآیۃ: ۱۱۲، ۱/۵۳۹.

www.dawateislami.net

قَالَ عِیْسَى ابْنُ مَرْیَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَاۤ اَنْزِلْ عَلَیْنَا مَآىِٕدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِیْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰیَةً مِّنْكَ ۚ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَیْرُ الرّٰزِقِیْنَ ﴿۱۱۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ईसा इब्ने मरयम ने अ़र्ज़ की ऐ **अल्लाह** ऐ रब हमारे हम पर आस्मान से एक ख़्वान उतार कि वोह हमारे लिये ईद हो हमारे अगले पिछलों की और तेरी त़रफ़ से निशानी और हमें रिज़्क़ दे और तू सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ईसा बिन मरयम ने अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** ! ऐ हमारे रब ! हम पर आस्मान से एक दस्तर ख़्वान उतार दे जो हमारे लिये और हमारे बा'द में आने वालों के लिये ईद और तेरी त़रफ़ से एक निशानी हो जाए और हमें रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा और तू सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला है।

﴿قَالَ عِیْسَى ابْنُ مَرْیَمَ﴾ **: ईसा बिन मरयम ने अ़र्ज़ की।** ﴾ ह़वारियों ने जब ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के फ़रमान के मुत़ाबिक़ अ़मल किया तो ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** ! ऐ हमारे रब ! हम पर आस्मान से एक दस्तर ख़्वान उतार दे जो हमारे मौजूदा लोगों के लिये और हमारे बा'द में आने वालों के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत और ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत की दलील हो जाए और सब के लिये ईद हो जाए या'नी हम उस के उतरने के दिन को ईद बनाएं, उस की ता'ज़ीम करें, ख़ुशियां मनाएं, तेरी इ़बादत करें और शुक्र बजा लाएं।

नुज़ूले रह़मत के दिन को ईद बनाना सालिह़ीन का त़रीक़ा है

इस आयत से मा'लूम हुवा कि जिस रोज़ **अल्लाह** तआ़ला की ख़ास रह़मत नाज़िल हो उस दिन को ईद बनाना, ख़ुशियां मनाना, इ़बादतें करना और शुक्रे इलाही बजा लाना सालिह़ीन का त़रीक़ा है और बेशक ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी यक़ीनन क़त़्अ़न ह़त्मन **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़ीम तरीन ने'मत और बुज़ुर्ग तरीन रह़मत है। इस लिये हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते मुबारका के दिन ईद मनाना और मीलाद शरीफ़ पढ़ कर शुक्रे इलाही बजा लाना और फ़रह़तो सुरूर का इज़्हार करना मुस्तह़सन व मह़मूद और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल बन्दों का त़रीक़ा है, चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन

www.dawateislami.net

अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : जब सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरह तशरीफ़ लाए तो देखा कि यहूदी आ़शूरा के दिन रोज़ा रखते हैं। इर्शाद फ़रमाया : "येह क्या है ?" यहूदियों ने अ़र्ज़ की : येह अच्छा दिन है। इस रोज़ **अल्लाह** तआ़ला ने बनी इसराईल को उन के दुश्मन से नजात दी थी तो ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इस का रोज़ा रखा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हारी निस्बत मेरा ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से तअ़ल्लुक़ ज़ियादा है।" चुनान्चे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आ़शूरा का रोज़ा रखा और इस दिन रोज़ा रखने का हुक्म फ़रमाया।[1]

तिरमिज़ी शरीफ़ में है, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने एक यहूदी की मौजूदगी में येह आयत पढ़ी :

اَلْیَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِیْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَیْكُمْ نِعْمَتِیْ وَ رَضِیْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِیْنًا

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : आज मैं ने तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द फ़रमाया।

येह आयत सुन कर उस यहूदी ने कहा : अगर येह आयत हम पर उतरती तो हम इसे ईद बना लेते। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : येह आयत हमारी दो ईदों के दिन में उतरी या'नी जुमुआ़ और अ़रफ़ा के दिन।[2]

इस की शर्ह़ में मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : "इस से मा'लूम हुवा कि जिन तारीख़ों में **अल्लाह** की ने'मत मिले उन्हें ईद बनाना शरअ़न अच्छा है।"[3]

नोट : मीलाद शरीफ़ के बारे में मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये अ़ल्लामा इस्माईल नबहानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की किताब "जवाहिरुल बिह़ार" की तीसरी जिल्द का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

قَالَ اللّٰهُ اِنِّیْ مُنَزِّلُهَا عَلَیْكُمْۚ فَمَنْ یَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّیْۤ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّاۤ اُعَذِّبُهٗۤ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِیْنَ(۱۱۵)ع ۱۵

---

1 .....بخاری، کتاب الصوم، باب صیام یوم عاشوراء، ۱/۶۵۶، الحدیث: ۲۰۰۴.

2 .....ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ المائدۃ، ۵/۳۳، الحدیث: ۳۰۵۵.

3 ..... मिरआतुल मनाजीह़, जुमुआ़ का बाब, तीसरी फ़स्ल, 2/314, तह़तुल ह़दीस : 1288

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** ने फ़रमाया कि मैं इसे तुम पर उतारता हूं फिर अब जो तुम में कुफ़्र करेगा तो बेशक मैं उसे वोह अ़ज़ाब दूंगा कि सारे जहान में किसी पर न करूंगा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** ने फ़रमाया : बेशक मैं वोह तुम पर उतारता हूं फिर इस के बा'द जो तुम में से कुफ़्र करेगा तो बेशक मैं उसे वोह अ़ज़ाब दूंगा कि सारे जहान में किसी को न दूंगा।

قَالَ اللّٰهُ : अल्लाह ने फ़रमाया। हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दरख़्वास्त के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया कि मैं वोह दस्तर ख़्वान उतारता हूं लेकिन उस के नाज़िल होने के बा'द जो कुफ़्र करेगा तो बेशक मैं उसे वोह अ़ज़ाब दूंगा कि सारे जहान में किसी को न दूंगा, चुनान्चे आस्मान से ख़्वान नाज़िल हुवा, इस के बा'द जिन्हों ने उन में से कुफ़्र किया वोह सूरतें मस्ख़ कर के ख़िन्ज़ीर बना दिये गए और तीन रोज़ में सब हलाक हो गए।[1]

وَ اِذْ قَالَ اللّٰهُ یٰعِیْسَى ابْنَ مَرْیَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِیْ وَ
اُمِّیَ اِلٰهَیْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِؕ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا یَكُوْنُ لِیْۤ اَنْ اَقُوْلَ مَا
لَیْسَ لِیْ ۗ بِحَقٍّؕ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗؕ تَعْلَمُ مَا فِیْ نَفْسِیْ وَ لَاۤ
اَعْلَمُ مَا فِیْ نَفْسِكَؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ ﴿۱۱۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब **अल्लाह** फ़रमाएगा ऐ मरयम के बेटे ईसा क्या तू ने लोगों से कह दिया था कि मुझे और मेरी मां को दो ख़ुदा बना लो **अल्लाह** के सिवा अ़र्ज़ करेगा पाकी है तुझे मुझे रवा नहीं कि वोह बात कहूं जो मुझे नहीं पहुंचती अगर मैं ने ऐसा कहा हो तो ज़रूर तुझे मा'लूम होगा तू जानता है जो मेरे जी में है और मैं नहीं जानता जो तेरे इ़ल्म में है बेशक तू ही है सब ग़ैबों का ख़ूब जानने वाला।

1 .....تفسیر بغوی، المائدۃ، تحت الآیۃ: ۱۱۵، ۲/۶۶.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब **अल्लाह** फ़रमाएगा **:** ऐ मरयम के बेटे ईसा ! क्या तुम ने लोगों से कहा था कि **अल्लाह** के सिवा मुझे और मेरी मां को मा'बूद बना लो ? तो वोह अ़र्ज़ करेंगे **:** (ऐ **अल्लाह**!) तू पाक है। मेरे लिये हरगिज़ जाइज़ नहीं कि मैं वोह बात कहूं जिस का मुझे कोई ह़क़ नहीं। अगर मैं ने ऐसी बात कही होती तो तुझे ज़रूर मा'लूम होती। तू जानता है जो मेरे दिल में है और मैं नहीं जानता जो तेरे इ़ल्म में है। बेशक तू ही सब ग़ैबों का ख़ूब जानने वाला है।

﴿وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ﴾ **: और जब अल्लाह फ़रमाएगा ।** येह भी क़ियामत के वाक़िए़ का बयान है कि बरोज़े क़ियामत ईसाइयों की सर्ज़निश के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से फ़रमाएगा कि "ऐ मरयम के बेटे ईसा ! क्या तुम ने लोगों से कहा था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा मुझे और मेरी मां को मा'बूद बना लो ?" इस ख़िता़ब को सुन कर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام कांप जाएंगे और अ़र्ज़ करेंगे **:** ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, तू तमाम नक़ाइस व उ़यूब से पाक है और इस से भी कि कोई तेरा शरीक हो सके। मेरे लिये हरगिज़ जाइज़ नहीं कि मैं वोह बात कहूं जिस का मुझे कोई ह़क़ नहीं या'नी जब कोई तेरा शरीक नहीं हो सकता तो मैं येह लोगों से कैसे कह सकता था ? अगर मैं ने ऐसी बात कही होती तो तुझे ज़रूर मा'लूम होती। तू जानता है जो मेरे दिल में है और मैं नहीं जानता जो तेरे इ़ल्म में है। बेशक तू ही सब ग़ैबों का ख़ूब जानने वाला है। यहां इ़ल्म को **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ निस्बत करना और मुआ़मला उस के सिपुर्द कर देना और अ़ज़मते इलाही के सामने अपनी आ़जिज़ी का इ़ज़्हार करना येह ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शाने अदब है।

مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَاۤ اَمَرْتَنِیْ بِهٖۤ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّیْ وَ رَبَّكُمْۚ وَ كُنْتُ عَلَیْهِمْ شَهِیْدًا مَّا دُمْتُ فِیْهِمْۚ فَلَمَّا تَوَفَّیْتَنِیْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِیْبَ عَلَیْهِمْؕ وَ اَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ شَهِیْدٌ ﴿۱۱۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मैं ने तो उन से न कहा मगर वोही जो मुझे तू ने हुक्म दिया था कि **अल्लाह** को पूजो जो मेरा भी रब और तुम्हारा भी रब और मैं उन पर मुत्त़लअ़ था जब तक मैं उन में रहा फिर जब तू ने मुझे उठा लिया तो तू ही उन पर निगाह रखता था और हर चीज़ तेरे सामने ह़ाज़िर है।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मैं ने तो उन से वोही कहा था जिस का तू ने मुझे हुक्म दिया था कि **अल्लाह** की इबादत करो जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है और मैं उन पर मुत्तलअ़ रहा जब तक उन में रहा, फिर जब तू ने मुझे उठा लिया तो तू ही उन पर निगाह रखता था और तू हर शै पर गवाह है।

﴿مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَاۤ اَمَرْتَنِیْ بِهٖ﴾ **: मैं ने तो उन से वोही कहा था जिस का तू ने मुझे हुक्म दिया था ।** हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पहले तो अ़र्ज़ करेंगे कि **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ, तू सब जानता है, फिर अ़र्ज़ करेंगे कि मैं ने तो उन से वोही कहा था जिस का तू ने मुझे हुक्म दिया था कि **अल्लाह** तआ़ला की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा रब है और मैं उन पर मुत्तलअ़ रहा जब तक उन में रहा, फिर जब तू ने मुझे उठा लिया तो तू ही उन पर निगाह रखता था और तू हर शै पर गवाह है।

हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वफ़ात से मुतअ़ल्लिक़ क़ादियानियों के नज़रिये का रद

आयते मुबारका में "تَوَفَّيْتَنِیْ" के लफ़्ज़ से क़ादियानी हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वफ़ात पर इस्तिद्लाल करते हैं और येह इस्तिद्लाल बिल्कुल ग़लत़ है क्यूं कि अव्वल तो लफ़्ज़ "تَوَفّٰی" मौत के लिये ख़ास नहीं बल्कि किसी शै को पूरे तौ़र पर लेने को कहते हैं ख़्वाह वोह बिग़ैर मौत के हो जैसा कि क़ुरआने करीम में इर्शाद हुवा :

اَللّٰهُ یَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِیْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِیْ لَمْ تَمُتْ فِیْ مَنَامِهَا[1]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** जानों को वफ़ात देता है उन की मौत के वक़्त और जो न मरें उन्हें उन के सोते में।

दूसरा येह कि जब येह सुवाल व जवाब रोज़े क़ियामत का है तो अगर लफ़्ज़ "تَوَفّٰی" मौत के मा'ना में भी फ़र्ज़ कर लिया जाए जब भी हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का आस्मान से ज़मीन पर तशरीफ़ लाने से पहले वफ़ात पाना इस से साबित न हो सकेगा। इस मस्अले के बारे में मज़ीद मा'लूमात हासिल करने के लिये फ़तावा रज़विय्या की 15वीं जिल्द में मौजूद आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की किताब "اَلْجُرَازُ الدَّيَّانِیْ عَلَى الْمُرْتَدِ الْقَادِیَانِیْ (मुरतद क़ादियानी के रद पर रिसाला)" का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

1 .....الزمر ٤٢.

www.dawateislami.net

اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۱۱۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अगर तू उन्हें अ़ज़ाब करे तो वोह तेरे बन्दे हैं और अगर तू उन्हें बख़्श दे तो बेशक तू ही है ग़ालिब हिक्मत वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अगर तू उन्हें अ़ज़ाब दे तो वोह तेरे बन्दे हैं और अगर तू उन्हें बख़्श दे तो बेशक तू ही ग़लबे वाला, हिक्मत वाला है।

﴿اِنْ تُعَذِّبْهُمْ﴾ **: अगर तू उन्हें अ़ज़ाब दे।** ﴾ ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मा'लूम होगा कि क़ौम में बा'ज़ लोग कुफ़्र पर मुसिर रहे, बा'ज़ शरफ़े ईमान से मुशर्रफ़ हुए इस लिये आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में येह अ़र्ज़ है कि उन में से जो कुफ़्र पर क़ाइम रहे उन पर तू अ़ज़ाब फ़रमाए तो बिल्कुल ह़क़ व बजा और अ़द्लो इन्साफ़ है क्यूं कि उन्हों ने ह़ुज्जत तमाम होने के बा'द कुफ़्र इख़्तियार किया और जो ईमान लाए उन्हें तू बख़्शे तो तेरा फ़ज़्लो करम है और तेरा हर काम हिक्मत है।

उम्मते मर्ह़ूम के ह़क़ में दुआ़

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी इस आयते मुबारका को पढ़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपनी उम्मत के लिये दुआ़ फ़रमाई चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ुरआने पाक में से ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इस क़ौल की तिलावत फ़रमाई "رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ...الآیہ" ऐ मेरे रब ! इन बुतों ने बहुत से लोगों को गुमराह कर दिया है, जो शख़्स मेरी पैरवी करेगा वोह मेरे रास्ते पर है।" और वोह आयत पढ़ी जिस में ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का येह क़ौल है "اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ" ऐ **अल्लाह** ! अगर तू इन को अ़ज़ाब दे तो येह तेरे बन्दे हैं और अगर तू इन को बख़्श दे तो तू ग़ालिब हिक्मत वाला है।" फिर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दस्ते दुआ़ बुलन्द कर दिये और रोते हुए अ़र्ज़ करने लगे : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी उम्मत, मेरी

www.dawateislami.net

उम्मत। **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : ऐ जिब्रईल ! मुह़म्मद के पास जाओ और उन से मा'लूम करो (ह़ालां कि **अल्लाह** तआ़ला ख़ूब जानता है) कि उन पर इस क़दर गिर्या क्यूं त़ारी है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ह़ाज़िर हुए और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मा'लूम कर के **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में जवाब अ़र्ज़ कर दिया (ह़ालां कि **अल्लाह** तआ़ला ख़ूब जानता है) **अल्लाह** तआ़ला ने जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया : ऐ जिब्राईल ! मुह़म्मद के पास जाओ और उन से कहो कि आप की उम्मत की बख़्शिश के मुआ़मले में हम आप को राज़ी कर देंगे और आप को रन्जीदा नहीं करेंगे।[1]

मज़्कूरा बाला ह़दीस से मा'लूम होने वाली बातें

इस ह़दीसे पाक से चन्द बातें मा'लूम हुईं :

(1)..... रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत पर कमाल दरजे के शफ़ीक़ व मेह्रबान थे और उम्मत की भलाई और बेहतरी में कोशां रहते थे और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत के लिये किसी शर्त़ और क़ैद के बिग़ैर बख़्शिश की दुआ़ मांगी।

(2)..... इस उम्मते मर्ह़ूम के लिये अ़ज़ीम बिशारत है कि **अल्लाह** तआ़ला इस उम्मत की बख़्शिश के मुआ़मले में अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को राज़ी फ़रमाएगा।

(3)..... **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में उस के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मक़ाम बहुत बुलन्द है कि सब कुछ जानने वाला होने के बा वुजूद ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام को **अल्लाह** तआ़ला ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में भेजा और उस से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़मत और शरफ़ को ज़ाहिर फ़रमाया।

(4)..... नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में मक़्बूलिय्यत के इतने आ'ला मक़ाम पर फ़ाइज़ हैं कि **अल्लाह** तआ़ला आप की अ़ज़मतों को ज़ाहिर फ़रमाता और आप को राज़ी फ़रमाता है।[2]

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करते हैं और उन्ही के अल्फ़ाज़ में हम भी अ़र्ज़ गुज़ार हैं कि :

हम हैं उन के वोह हैं तेरे तो हुए हम तेरे इस से बढ़ कर तेरी सम्त और वसीला क्या है
उन की उम्मत में बनाया उन्हें रह़मत भेजा यूं न फ़रमा कि तेरा रह़म में दा'वा क्या है

1 .....مسلم، كتاب الايمان، باب دعاء النبى صلى الله عليه وسلم لامته... الخ، ص ۱۳۰، الحديث: ۳٤٦(۲۰۲).
2 .....مرقاة المفاتيح، كتاب الفتن، باب الحوض والشفاعة، الفصل الاول، ۹/ ۵۳۰، تحت الحديث: ۵۵۷۷، ملخصاً.

www.dawateislami.net

सदक़ा प्यारे की हया का कि न ले मुझ से हिसाब बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है

قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْؕ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًاؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۱۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** ने फ़रमाया कि येह है वोह दिन जिस में सच्चों को उन का सच काम आएगा उन के लिये बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा हमेशा उन में रहेंगे **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी येह है बड़ी काम्याबी ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** ने फ़रमाया : येह (क़ियामत) वोह दिन है जिस में सच्चों को उन का सच नफ़्अ़ देगा उन के लिये बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें जारी हैं, वोह हमेशा हमेशा उस में रहेंगे, **अल्लाह** उन से राज़ी हुवा और वोह **अल्लाह** से राज़ी हुए । येही बड़ी काम्याबी है ।

﴿هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ﴾ **: येह (क़ियामत) वोह दिन है जिस में सच्चों को उन का सच नफ़्अ़ देगा ।﴾** इस आयत से मुराद येह है कि जिन्हों ने दुन्या में सच बोला था उन का सच क़ियामत के दिन उन्हें काम आएगा और उन्हें नफ़्अ़ देगा क्यूं कि अ़मल का मक़ाम दुन्या है आख़िरत नहीं कि आख़िरत तो जज़ा मिलने का दिन है ।

सच्चाई की बरकत

अ़ल्लामा इस्माईल हक़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''इस आयत से मा'लूम हुवा कि क़ियामत के दिन सच नफ़्अ़ देगा तो झूट और रियाकारी किसी सूरत नफ़्अ़ न देगी लिहाज़ा अ़क़्ल मन्द इन्सान को चाहिये कि सच्चाई के रास्ते पर चलने की ख़ूब कोशिश करे क्यूं कि ईमान के बा'द सच्चाई को इख़्तियार करना बन्दे को नेक आ'माल की त़रफ़ राग़िब करता है ।''[1]

(1) ..... روح البيان، المائدة، تحت الآية: ۱۱۹، ۲/۴۶۷-۴۶۸.

www.dawateislami.net

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सच्चाई को लाज़िम कर लो, क्यूं कि सच्चाई नेकी की त़रफ़ ले जाती है और नेकी जन्नत का रास्ता दिखाती है। आदमी बराबर सच बोलता रहता है और सच बोलने की कोशिश करता रहता है, यहां तक कि वोह **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक़ सिद्दीक़ लिख दिया जाता है और झूट से बचो, क्यूं कि झूट फ़ुजूर की त़रफ़ ले जाता है और फ़ुजूर जहन्नम का रास्ता दिखाता है और आदमी बराबर झूट बोलता रहता है और झूट बोलने की कोशिश करता है, यहां तक कि वोह **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक कज़्ज़ाब लिख दिया जाता है।"[1]

अल्लाह तआ़ला हमें सच बोलने, सच्चाई के रास्ते को इख़्तियार करने और झूट बोलने से बचते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, आमीन।

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ؕ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۱۲۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन और जो कुछ इन में है सब की सल्त़नत और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : आस्मानों और ज़मीन और जो कुछ इन में है सब की सल्त़नत **अल्लाह** ही के लिये है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।

﴿لِلّٰهِ﴾ **: अल्लाह ही के लिये है।** इस आयत में ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ख़ुदा कहने वाले ईसाइयों का रद भी है कि जब आस्मानों और ज़मीन और जो कुछ इन में है सब का मालिक **अल्लाह** तआ़ला है और येह दोनों ह़ज़रात भी **अल्लाह** तआ़ला की मिल्क में और उस के बन्दे हैं तो येह ख़ुदा कैसे हो सकते हैं क्यूं कि जो किसी की मिल्क में और अ़ब्द हो वोह ख़ुदा हरगिज़ नहीं हो सकता।

[1] ..... مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب قبح الکذب وحسن الصدق وفضله، ص ١٤٠٥، الحدیث: ١٠٥(٢٦٠٧).

www.dawateislami.net

سُوْرَةُ الْاَنْعَام

सूरए अन्आ़म का तआ़रुफ़

मक़ामे नुज़ूल

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि पूरी सूरए अन्आ़म एक ही रात में मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुई, और इन्ही से एक रिवायत येह भी है कि सूरए अन्आ़म की 6 आयतें मदीनए मुनव्वरह में नाज़िल हुईं और बाक़ी सूरत एक ही मरतबा मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुई ।[1]

रुकूअ़ और आयात की ता'दाद

इस में **20** रुकूअ़ और **165** आयतें हैं ।

''अन्आ़म'' नाम रखने की वज्ह

अ़रबी में मवेशियों को ''अन्आ़म'' कहते हैं और इस सूरत का नाम ''अन्आ़म'' इस मुनासबत से रखा गया कि इस सूरत की आयत नम्बर 136 और 138 में उन मुश्रिकीन का रद किया गया है जो अपने मवेशियों में बुतों को ह़िस्सेदार ठहराते थे और ख़ुद ही चन्द जानवरों को अपने लिये ह़लाल और चन्द जानवरों को अपने ऊपर ह़राम समझने लगे थे ।

सूरए अन्आ़म की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''सूरए अन्आ़म नाज़िल हुई और इस के साथ बुलन्द आवाज़ से तस्बीह़ करती हुई फ़िरिश्तों की एक जमाअ़त थी जिस से ज़मीन व आस्मान के किनारे भर गए, ज़मीन उन फ़िरिश्तों की वज्ह से हिलने लगी ।'' और **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन मरतबा ''سُبْحَانَ رَبِّیَ الْعَظِیْم'' कहा ।[2]

सूरए अन्आ़म के मज़ामीन

सूरए अन्आ़म क़ुरआने मजीद में मज़्कूर सूरतों की तरतीब के लिह़ाज़ से पहली मक्की

1 .....خازن، تفسیر سورۃ الانعام، ۲/۲ .

2 .....شعب الایمان، التاسع عشر من شعب الایمان... الخ، ذکر سورۃ الانعام، ۲/ ۴۷۰، الحدیث: ۲۴۳۳ .

www.dawateislami.net

सूरत है और इस का मर्कज़ी मज़्मून येह है कि इस में इस्लाम के बुन्यादी अ़क़ाइद, जैसे **अल्लाह** तआ़ला के वुजूद, उस की वह़्दानिय्यत, उस की सिफ़ात और उस की क़ुदरत को इन्सान की अन्दरूनी और बैरूनी शहादतों से साबित किया गया है। वह़ी और रिसालत के सुबूत और मुश्रिकीन के शुबुहात के रद पर अ़क़्ली और ह़िस्सी दलाइल पेश किये गए हैं। मरने के बा'द दोबारा ज़िन्दा किये जाने, क़ियामत के दिन आ'माल का ह़िसाब होने और आ'माल की जज़ा मिलने को दलाइल से साबित किया गया है। इस के इ़लावा इस सूरत में येह मज़ामीन बयान किये गए हैं :

(1)..... ज़मीन में घूम फिर कर साबिक़ा लोगों की उजड़ी बस्तियां, वीरान घर और उन पर किये हुए **अल्लाह** तआ़ला के अ़ज़ाब के आसार देख कर उन के अन्जाम से इ़ब्रत ह़ासिल करने की तरग़ीब दी गई है।

(2)..... जानवर ज़ब्ह़ करने और ज़ब्ह़ शुदा जानवर का गोश्त खाने के अह़काम बयान किये गए और अपनी त़रफ़ से ह़लाल जानवरों को ह़राम क़रार देने का रद किया गया है।

(3)..... वालिदैन के साथ एह़सान करने, ज़ाहिरी और बात़िनी बे ह़याइयों से बचने, तंगदस्ती की वज्ह से औलाद को क़त्ल न करने और किसी को नाह़क़ क़त्ल न करने का ह़ुक्म दिया गया है।

(4)..... ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम का वाक़िआ़ बयान किया गया और आख़िर में क़ुरआन और दीने इस्लाम की फ़ज़ीलत बयान की गई है।

सूरए माइदह के साथ मुनासबत

सूरए अन्आ़म की अपने से मा क़ब्ल सूरत "माइदह" के साथ मुनासबत येह है कि सूरए माइदह की आयत नम्बर 87 में मुसल्मानों को ह़ुक्म दिया गया था कि

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : ऐ ईमान वालो ! उन पाकीज़ा चीज़ों को ह़राम न क़रार दो जिन्हें **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये ह़लाल फ़रमाया है और ह़द से न बढ़ो।

और सूरए अन्आ़म में येह ख़बर दी गई कि मुश्रिकीन ने **अल्लाह** तआ़ला की अ़त़ा कर्दा चन्द (ह़लाल) चीज़ों को (अपनी त़रफ़ से) ह़राम क़रार दे दिया और येह कह दिया कि इसे **अल्लाह** तआ़ला ने ह़राम किया है, और येह ख़बर देने से मक़्सूद मुसल्मानों को इस बात से डराना है कि अगर उन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला की ह़लाल कर्दा चीज़ों को (अपनी त़रफ़ से) ह़राम क़रार दे दिया तो वोह कुफ़्फ़ार के मुशाबेह हो जाएंगे।[1]

1 .....تناسق الدرر، سورة الانعام، ص ٨٥.

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान रह़ूम वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान, रह़मत वाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ جَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَ النُّوْرَؕ ثُمَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ یَعْدِلُوْنَ ۱

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए और अंधेरियां और रोशनी पैदा की इस पर काफ़िर लोग अपने रब के बराबर ठहराते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** के लिये हैं जिस ने आस्मान और ज़मीन पैदा किये और अंधेरों और नूर को पैदा किया फिर (भी) काफ़िर लोग अपने रब के बराबर ठहराते हैं।

﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ : **तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह के लिये हैं।**﴾ इस आयत में बन्दों को **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द की ता'लीम फ़रमाई गई कि वोह जब ह़म्द करने लगें तो "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ" कहें, और आस्मान व ज़मीन की पैदाइश का ज़िक्र इस लिये है कि इन में देखने वालों के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़िक्मतो क़ुदरत के बहुत से अ़जाइबात, इ़ब्रतें और मनाफ़ेअ़ हैं। ह़ज़रते का'ब अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि तौरैत में सब से पहली येही आयत है।[1]

﴿وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ : **और अंधेरों और नूर को पैदा किया।**﴾ या'नी हर अंधेरा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही ने पैदा फ़रमाया है ख़्वाह वोह अंधेरा रात का हो, कुफ़्र का हो, जहालत का हो या जहन्नम का हो। यूंही हर एक रोशनी उसी ने पैदा फ़रमाई ख़्वाह वोह रोशनी दिन की हो, ईमान व हिदायत की हो, इ़ल्म की हो या जन्नत की हो।

बुरा काम कर के अल्लाह तआ़ला की मशिय्यत की त़रफ़ मन्सूब नहीं करना चाहिये

यहां एक बात ज़ेह्न नशीन रखें कि अगर्चे हर अच्छी बुरी चीज़ को पैदा फ़रमाने वाला रब तआ़ला है लेकिन बुरा काम कर के तक़्दीर की त़रफ़ निस्बत करना और मशिय्यते इलाही

[1] .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۱، ۲/۲.

www.dawateislami.net

के ह़वाले करना बुरी बात है, बल्कि हुक्म येह है कि जो अच्छा काम करे उसे **अल्लाह** तआ़ला की जानिब से कहे और जो बुराई सरज़द हो उसे अपने नफ़्स की शामत तसव्वुर करे।

नीज़ इस आयत में ज़ुलुमात या'नी तारीकियों को जम्अ़ और नूर को वाहिद के सीग़े से ज़िक्र फ़रमाने में इस त़रफ़ इशारा है कि बात़िल की राहें बहुत ज़ियादा हैं और राहे ह़क़ सिर्फ़ एक दीने इस्लाम है।

﴿ثُمَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ یَعْدِلُوْنَ﴾ : **फिर (भी) काफ़िर लोग अपने रब के बराबर ठहराते हैं।** कुदरते इलाही के इन दलाइल के बा'द फ़रमाया कि ऐसे दलाइल पर मुत़्लअ़ होने और कुदरत की ऐसी निशानियां देखने के बा वुजूद कुफ़्फ़ार **अल्लाह** तआ़ला के इ़लावा दूसरों को ह़त्ता कि पथ्थरों को पूजते हैं ह़ालां कि कुफ़्फ़ार इस बात का इक़रार करते हैं कि आस्मानों और ज़मीन का पैदा करने वाला **अल्लाह** तआ़ला है। यहां कुफ़्फ़ार के शिर्क का ज़िक्र हुवा इस मुनासबत से शिर्क की ता'रीफ़ दर्जे ज़ैल है।

शिर्क की ता'रीफ़

शिर्क की ता'रीफ़ येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी ग़ैर को वाजिबुल वुजूद या लाइक़े इ़बादत समझा जाए। ह़ज़रते अ़ल्लामा सा'दुद्दीन तफ़्ताज़ानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه शिर्क की ह़क़ीक़त इन अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाते हैं : ''اَلْاِشْتِرَاكُ هُوَاِثْبَاتُ الشَّرِيْكِ فِي الْاُلُوْهِيَّةِبِمَعْنٰى وُجُوْبِ الْوُجُوْدِ كَمَا لِلْمَجُوْسِ اَوْ بِمَعْنٰى اِسْتِحْقَاقِ الْعِبَادَةِ كَمَا لِعَبَدَةِ الْاَصْنَامِ'' या'नी ''शिर्क येह है कि ख़ुदा की उलूहिय्यत (या'नी मा'बूद होने) में किसी को शरीक करना इस त़रह़ कि किसी को वाजिबुल वुजूद मान लेना जैसा कि मजूसियों का अ़क़ीदा है या ख़ुदा के सिवा किसी को इ़बादत का ह़क़दार मान लेना जैसा कि बुत परस्तों का ख़याल है।''(1)

आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इर्शाद फ़रमाते हैं : ''आदमी ह़क़ीक़तन किसी बात से मुश्रिक नहीं होता जब तक ग़ैरे ख़ुदा को मा'बूद या मुस्तक़िल बिज़्ज़ात व वाजिबुल वुजूद न जाने।''(2)

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह मौलाना मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''शिर्क के मा'ना ग़ैरे ख़ुदा को वाजिबुल वुजूद या मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत जानना या'नी उलूहिय्यत में दूसरे को शरीक करना और येह कुफ़्र की सब से बदतर क़िस्म है इस के सिवा कोई बात कैसी ही शदीद कुफ़्र हो ह़क़ीक़तन शिर्क नहीं।''(3)

1 .....شرح عقائد نسفيه، مبحث الافعال كلها بخلق الله تعالى والدليل عليها، ص ۷۸.

2 ..... फ़तावा रज़विय्या, 21/131 3 ..... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए अव्वल, ईमान व कुफ़्र का बयान, 1/183

www.dawateislami.net

هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِیْنٍ ثُمَّ قَضٰۤى اَجَلًا ؕ وَ اَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ۝۲

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोही है जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया फिर एक मीआ़द का हुक्म रखा और एक मुक़र्रर वा'दा उस के यहां है फिर तुम लोग शक करते हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोही है जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया फिर एक मुद्दत का फ़ैसला फ़रमाया और एक मुक़र्ररा मुद्दत उसी के पास है फिर तुम लोग शक करते हो।

﴿هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِیْنٍ﴾ **: वोही है जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया।** इस आयत में उन मुश्रिकीन का रद किया गया है जो कहते थे कि हम जब गल कर मिट्टी हो जाएंगे तो फिर कैसे ज़िन्दा किये जाएंगे ? उन्हें बताया गया कि **अल्लाह** तआ़ला ने ही तुम्हारे बाप ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मिट्टी से पैदा फ़रमाया और उन की नस्ल से लोग पैदा हुए, फिर उस ने एक मुद्दत का फ़ैसला फ़रमाया जिस के पूरा हो जाने पर तुम मर जाओगे और मरने के बा'द उठाने की एक मुक़र्ररा मुद्दत भी उसी के पास है, फिर ऐ काफ़िरो ! तुम मरने के बा'द दोबारा ज़िन्दा किये जाने में शक करते हो ह़ालां कि तुम्हें इ़ल्म है कि तुम्हारी तख़्लीक़ की इब्तिदा करने वाला **अल्लाह** तआ़ला है और जो पहली बार पैदा करने पर क़ादिर है तो वोह दोबारा ज़िन्दा करने पर ब दरजए औला क़ादिर है।[1]

وَ هُوَ اللّٰهُ فِی السَّمٰوٰتِ وَ فِی الْاَرْضِ ؕ یَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَ جَهْرَكُمْ وَ یَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ۝۳

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही **अल्लाह** है आस्मानों का और ज़मीन का उसे तुम्हारा छुपा और ज़ाहिर सब मा'लूम है और तुम्हारे काम जानता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोही **अल्लाह** आस्मानों में और ज़मीन में (लाइके इ़बादत) है। वोह तुम्हारी हर पोशीदा और ज़ाहिर बात को जानता है और वोह तुम्हारे सब काम जानता है।

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۲، ۲/۳، جلالین، الانعام، تحت الآیۃ: ۲، ص ۱۱۲، ملتقطاً۔

www.dawateislami.net

﴿وَهُوَ اللّٰهُ فِی السَّمٰوٰتِ وَفِی الْاَرْضِ﴾ : **और वोही अल्लाह आस्मानों में और ज़मीन में (लाइक़े इबादत) है ।**﴾ इस से पहली आयत में **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरते कामिला का ज़िक्र किया गया और इस आयत से **अल्लाह** तआ़ला के कामिल इ़ल्म का ज़िक्र किया जा रहा है । याद रहे कि इस आयत का येह मत़लब नहीं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आस्मानों और ज़मीनों में रहता है बल्कि येह मुराद है कि हर जगह उस की इ़बादत हो रही है और हर जगह वोही मा'बूदे ह़क़ीक़ी है और हर जगह उसी की सल्त़नत व हुकूमत है, जैसा कि एक और मक़ाम पर **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَهُوَ الَّذِیْ فِی السَّمَآءِ اِلٰهٌ وَّ فِی الْاَرْضِ اِلٰهٌ ؕ وَهُوَ الْحَكِیْمُ الْعَلِیْمُ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और वोही आस्मान वालों का मा'बूद है और ज़मीन वालों का मा'बूद है और वोही ह़िक्मत वाला, इ़ल्म वाला है ।

﴿یَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ﴾ : **वोह तुम्हारी हर पोशीदा और ज़ाहिर बात को जानता है ।**﴾ इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** तआ़ला तमाम मा'लूमात का आ़लिम है, ज़मीन की तह से ले कर आस्मानों की बुलन्दी तक जो कुछ जारी है सब का इह़ाता फ़रमाने वाला है, वोह ऐसा आ़लिम है कि उस के इ़ल्म से ज़मीन व आस्मान का कोई ज़र्रा बाहर नहीं जा सकता बल्कि वोह सख़्त अंधेरी रात में साफ़ चट्टान पर चलने वाली सियाह च्यूंटी के चलने की आवाज़ को भी जानता है, वोह फ़ज़ा में एक ज़र्रे की ह़रकत भी जानता है, वोह पोशीदा उमूर से वाक़िफ़ और दिलों के वस्वसों, ख़यालात और पोशीदा बातों का इ़ल्म रखता है, उस का इ़ल्म क़दीम, अज़ली है और वोह हमेशा हमेशा इस इ़ल्म के साथ मौसूफ़ रहा है, उस का इ़ल्म जदीद नहीं और न ही वोह उस की ज़ात में आने की वज्ह से ह़ासिल हुवा है ।"(2)

وَمَا تَاْتِیْهِمْ مِّنْ اٰیَةٍ مِّنْ اٰیٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِیْنَ ۝۴

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन के पास कोई भी निशानी उन के रब की निशानियों से नहीं आती मगर उस से मुंह फेर लेते हैं ।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और उन के पास उन के रब की निशानियों में से कोई भी निशानी नहीं आती मगर येह उस से मुंह फेर लेते हैं ।

﴿وَمَا تَاْتِیْهِمْ مِّنْ اٰیَةٍ﴾ : **और उन के पास कोई भी निशानी नहीं आती ।**﴾ इस से पहली आयात में मुश्रिकीन के उस कुफ़्र को बयान किया गया जो वोह **अल्लाह** तआ़ला के साथ करते थे और

1 .....زخرف: ٨٤.

2 .....احیاء علوم الدین، کتاب قواعد العقائد، الفصل الاول فی ترجمة عقیدة اهل السنّة فی کلمتی الشهادة... الخ، ١/١٢٦.

www.dawateislami.net

इस आयत से मुश्रिकीन के उस कुफ़्र को बयान किया गया है जो वोह हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ करते थे, चुनान्चे इस आयत का ख़ुलासा येह है कि कुफ़्फ़ारे मक्का का कुफ़्रो सरकशी में ह़ाल येह है कि उन के पास जब भी क़ुरआने मजीद की आयात आती हैं या वोह नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात देखते हैं तो वोह उस से मुंह फेर लेते हैं।[1]

فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝۵

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो बेशक उन्हों ने ह़क़ को झुटलाया जब उन के पास आया तो अब उन्हें ख़बर हुवा चाहती है उस चीज़ की जिस पर हंस रहे थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो बेशक उन्हों ने ह़क़ को झुटलाया जब उन के पास आया तो अ़न्क़रीब उन के पास उस की ख़बरें आने वाली हैं जिस का येह मज़ाक़ उड़ाते थे।

﴿فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ﴾ **: तो बेशक उन्हों ने ह़क़ को झुटलाया।** ﴾ यहां ह़क़ से या क़ुरआने मजीद की आयात मुराद हैं या ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात कि जब भी क़ुरआन की आयतें या नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात कुफ़्फ़ारे मक्का के सामने आते या हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन्हें कुछ समझाते तो वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को झुटलाते। इस पर फ़रमाया कि अ़न्क़रीब उन के पास ख़बरें आने वाली हैं उस चीज़ की जिस का येह मज़ाक़ उड़ाते थे और उन्हें मा'लूम हो जाएगा कि वोह कैसी अ़ज़ीमुश्शान ख़बर है और उस की हंसी बनाने का अन्जाम कैसा ख़ौफ़नाक है।

اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا ۪ وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۝۶

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیة: ٤، ٢/٤، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या उन्हों ने न देखा कि हम ने उन से पहले कितनी संगतें खपा दीं उन्हें हम ने ज़मीन में वोह जमाव दिया जो तुम को न दिया और उन पर मूस्लाधार पानी भेजा और उन के नीचे नहरें बहाईं तो उन्हें हम ने उन के गुनाहों के सबब हलाक किया और उन के बा'द और संगत उठाई।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या उन्हों ने नहीं देखा कि हम ने उन से पहले कितनी क़ौमों को हलाक कर दिया, उन्हें हम ने ज़मीन में वोह क़ुव्वतो ताक़त अ़ता फ़रमाई थी जो तुम्हें नहीं दी और हम ने उन पर मूस्लाधार बारिश भेजी और उन के नीचे नहरें बहा दीं फिर उन के गुनाहों की वज्ह से उन्हें हलाक कर दिया और उन के बा'द दूसरी क़ौमें पैदा कर दीं।

﴿اَلَمْ یَرَوْا : **क्या उन्हों ने न देखा**﴾ इस से पहली आयात में सर्ज़निश और वईद के ज़रीए कुफ़्फ़ारे मक्का को **अल्लाह** तआ़ला की निशानियों से मुंह फेरने, हक़ को झुटलाने और **अल्लाह** तआ़ला की निशानियों का मज़ाक़ उड़ाने से मन्अ़ किया गया और इस आयत में साबिक़ा क़ौमों का इ़ब्रत नाक अन्जाम बयान कर के उन्हें नसीह़त की जा रही है, चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया कि क्या शाम और दीगर मुल्कों की त़रफ़ सफ़र करने के दौरान कुफ़्फ़ारे मक्का ने नहीं देखा कि हम ने उन से पहले कितनी क़ौमों को हलाक कर दिया। ऐ अहले मक्का ! हम ने उन्हें ज़मीन में वोह क़ुव्वतो ताक़त अ़ता फ़रमाई थी जो तुम्हें नहीं दी और जब उन्हें ज़रूरत पेश आई तो हम ने उन पर मूस्लाधार बारिश भेजी जिस से उन की खेतियां शादाब हुईं और उन के दरख़्तों, रिहाइश गाहों और मह़ल्लात के क़रीब नहरें बहा दीं जिस से बाग़ परवरिश पाए, फलों की कसरत हुई और दुन्या की ज़िन्दगानी के लिये ऐ़शो राह़त के अस्बाब बहम पहुंचे लेकिन जब उन्हों ने अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तक्ज़ीब की और उन के अह़कामात को झुटलाया तो फिर हम ने उन के गुनाहों की वज्ह से उन्हें हलाक कर दिया और उन की येह जाहो ह़श्मत और साज़ो सामान उन्हें हलाकत से न बचा सका और उन के बा'द दूसरी क़ौमें पैदा कर दीं और दूसरे लोगों को उन का जा नशीन बना दिया। उन का इ़ब्रत नाक अन्जाम देख कर तुम भी नसीह़त ह़ासिल करो और साबिक़ा कुफ़्फ़ार वाली रविश इख़्तियार न करो वरना तुम पर भी वैसा ही अ़ज़ाब आ सकता है।

साबिक़ा उम्मतों के अन्जाम से इ़ब्रत ह़ासिल करें

इस आयत में गुज़री हुई उम्मतों का जो ह़ाल और अन्जाम बयान किया गया कि वोह लोग क़ुव्वत, दौलत और माल व इ़याल की कसरत के बा वुजूद कुफ़्रो सरकशी और अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अह़काम की मुख़ालफ़त करने की वज्ह से हलाक कर दिये गए, इस में बत़ौरे ख़ास कुफ़्फ़ार और उ़मूमी त़ौर पर हर मुसल्मान के लिये इ़ब्रत और नसीह़त है, इस लिये

www.dawateislami.net

सब को चाहिये कि उन के ह़ाल से इ़ब्रत ह़ासिल कर के ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हों और कुफ़्रो सरकशी और गुनाहों को छोड़ कर ईमान, इत़ाअ़त, इबादत और नेक कामों में मसरूफ़ हो जाएं।

कुफ़्फ़ार की दुन्यवी तरक़्क़ी बारगाहे इलाही में मक़्बूलिय्यत की दलील नहीं

इस आयत से येह बात मा'लूम हुई कि दुन्यवी ख़ुशह़ाली, मालो दौलत और सहूलिय्यात की कसरत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ामन्दी की अ़लामत नहीं वरना क़ारून तो बहुत बड़ा मक़्बूले बारगाहे इलाही होता। यहां से उन लोगों को दर्स ह़ासिल करना चाहिये जो मुसल्मानों के मुक़ाबले में कुफ़्फ़ार की दुन्यवी तरक़्क़ी, साइन्सी महारत, सहूलिय्यात की कसरत, ईजादात की बोहतात, मालो दौलत की फ़रावानी देख कर उन्हें बारगाहे इलाही में मक़्बूल और मुसल्मानों को मरदूद समझते हैं और अख़्लाक़ो किरदार में मुसल्मानों को कुफ़्फ़ार की तक़्लीद का मश्वरा देते हैं। कुफ़्फ़ार की येह दुन्यवी काम्याबी मक़्बूलिय्यत की नहीं बल्कि मोहलत की दलील है क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला का क़ानून येह है कि वोह काफ़िरों की जल्द पकड़ नहीं फ़रमाता बल्कि उन्हें मोहलत देता और आसाइशें अ़त़ा फ़रमाता है, फिर उन्हें अपने अ़ज़ाब में मुब्तला करता है। नीज़ नाम निहाद दानिश्वर, मुसल्मानों को यूरोप की अन्धी तक़्लीद का न ही फ़रमाएं तो बेहतर है और वोह अपनी क़ारूनी सोच अपने पास ही रखें।

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِيْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर हम तुम पर काग़ज़ में कुछ लिखा हुवा उतारते कि वोह उसे अपने हाथों से छूते जब भी काफ़िर कहते कि येह नहीं मगर खुला जादू।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर हम काग़ज़ में कुछ लिखा हुवा आप पर उतार देते फिर येह उसे छू लेते तब भी काफ़िर कह देते कि येह तो खुला जादू है।

﴿وَلَوْ نَزَّلْنَا﴾ **: और अगर हम उतार देते।** ﴾ येह आयत नज़र बिन ह़ारिस, अ़ब्दुल्लाह बिन उमय्या और नौफ़ल बिन ख़ुवैलिद के बारे में नाज़िल हुई जिन्हों ने कहा था कि ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हम तुम पर हरगिज़ ईमान न लाएंगे जब तक तुम हमारे पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से किताब न लाओ जिस के साथ चार फ़िरिश्ते हों, वोह गवाही दें कि येह **अल्लाह** तआ़ला की किताब है और तुम उस के रसूल हो। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल

www.dawateislami.net

हुई[1] और बताया गया कि येह सब ह़ीले बहाने हैं क्यूं कि अगर काग़ज़ पर लिखी हुई किताब भी उतार दी जाती और वोह उसे अपने हाथों से छू कर और टटोल कर देख लेते तो भी येही कहते कि उन की नज़र बन्दी कर दी गई थी और किताब उतरती नज़र तो आई थी लेकिन ह़क़ीक़त में कुछ भी नहीं था जैसे उन्हों ने मो'जिज़ए शक़्क़ुल क़मर या'नी चांद के दो टुकड़े होने के मो'जिज़े को जादू बताया और उस मो'जिज़े को देख कर भी ईमान न लाए, इसी त़रह़ इस पर भी ईमान न लाते क्यूं कि जो लोग इ़नादन इन्कार करते हैं वोह आयात व मो'जिज़ात से नफ़्अ़ नहीं उठा सकते।

وَقَالُوْا لَوْلَاۤ اُنْزِلَ عَلَیْهِ مَلَكٌ ؕ وَ لَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِیَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا یُنْظَرُوْنَ ۝۸

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बोले उन पर कोई फ़िरिश्ता क्यूं न उतारा गया और अगर हम फ़िरिश्ता उतारते तो काम तमाम हो गया होता फिर उन्हें मोहलत न दी जाती।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और (काफ़िरों ने) कहा : उन पर आस्मान से कोई फ़िरिश्ता क्यूं न उतार दिया गया ह़ालां कि अगर हम कोई फ़िरिश्ता उतारते तो फ़ैसला कर दिया जाता फिर उन्हें मोहलत न दी जाती।

﴿وَقَالُوْا : **और उन्हों ने कहा**﴾ या'नी मुश्रिकीन ने मज़ीद येह कहा कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर आस्मान से कोई फ़िरिश्ता क्यूं न उतार दिया गया जिसे वोह देखते। इस पर फ़रमाया गया कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्ता उतार देता और काफ़िर फिर भी ईमान न लाते तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब उन पर लाज़िम हो जाता क्यूं कि येह सुन्नते इलाहिय्यह है कि जब कुफ़्फ़ार इज्तिमाई तौ़र पर कोई निशानी त़लब करें और उस निशानी के ज़ाहिर हो जाने के बा'द भी ईमान न लाएं तो अ़ज़ाब वाजिब हो जाता है और वोह हलाक कर दिये जाते हैं। चुनान्चे अगर काफ़िरों का मुत़ालबा पूरा कर दिया जाता और येह फिर भी ईमान न लाते तो उन्हें एक लम्ह़े की भी मोहलत न मिलती और उन से अ़ज़ाब मुअख़्ख़र न किया जाता।

निशानियां पूरी होने के बा वुजूद कुफ़्फ़ारे मक्का पर अ़ज़ाब नाज़िल क्यूं न हुवा ?

याद रहे कि काफ़िरों ने ऐसे फ़िरिश्ते के उतरने का मुत़ालबा किया था जो उन काफ़िरों

[1] .....تفسیر بغوی، الانعام، تحت الآیۃ: ۷، ۲/ ۷۰.

www.dawateislami.net

को भी नज़र आए और इसी का रद किया गया था वरना हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर एक क्या बहुत से फ़िरिश्ते नाज़िल होते थे और बसा अवक़ात इन्सानी शक्ल में हाज़िर होते थे जिन्हें सहाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا भी देखते थे। उन कुफ़्फ़ार का मुत़ालबा येह था कि फ़िरिश्ता अपनी अस्ली सूरत में आए और हम उसे उसी सूरत में देखें। यहां एक सुवाल है कि कुफ़्फ़ार ने बहुत सी निशानियां त़लब कीं जो पूरी भी हुईं जैसे चांद के दो टुकड़े होना वग़ैरा और इस के बा'द वोह ईमान भी नहीं लाए तो ऐसी सूरत में आयत में बयान कर्दा हुक्म के मुत़ाबिक़ तो सब को हलाक कर दिया जाना चाहिये था लेकिन ऐसा नहीं हुवा तो आयत का मत़लब क्या है या फिर उन मो'जिज़ात के दिखाए जाने का मत़लब क्या हुवा ? इस सुवाल का जवाब येह है कि नुबुव्वत पर दलालत करने वाली निशानी दो त़रह़ की है (1) आ़म निशानी। (2) ख़ास निशानी। आ़म निशानी वोह है कि जिस का तमाम लोग मुत़ालबा करें या सब मुत़ालबा तो न करें लेकिन उस का मुशाहदा सब कर लें। ख़ास निशानी वोह है कि जिस का मुत़ालबा मख़्सूस लोग करें और तमाम अफ़्राद उस का मुशाहदा न कर सकें। गुज़श्ता उम्मतों में निशानी देख लेने के बा'द ईमान न लाने की सूरत में अ़ज़ाब नाज़िल करने में **अल्लाह** तआ़ला का त़रीक़ा येह रहा कि आ़म निशानी या'नी जिस में सब आ़म व ख़ास शरीक हो जाएं उसे पूरा करने के बा'द ईमान न लाने की सूरत में अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाता जब कि ख़ास निशानी के पूरा होने के बा'द ईमान न लाने की सूरत में अ़ज़ाब नाज़िल नहीं फ़रमाता। नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से चांद के दो टुकड़े होने का मुत़ालबा मख़्सूस लोगों ने किया जो पूरा हुवा लेकिन येह आ़म निशानी न थी बल्कि ख़ास थी कि जब चांद दो टुकड़े हुवा उस वक़्त अक्सर लोग सो रहे थे और कई मक़ामात पर इख़्तिलाफ़े मत़ालेअ़ या बादल ह़ाइल होने की वज्ह से चांद दो टुकड़े होता नज़र न आया, इस लिये मुत़ालबा करने वालों पर अ़ज़ाब नाज़िल न हुवा।[1]

मिरक़ातुल मफ़ातीह़ में येही इ़बारत शर्ह़ुस्सुन्नह से मन्क़ूल है। उस की रोशनी में अबू जह्ल या दीगर कुफ़्फ़ार के मुत़ालबात को देखा जाए तो वोह ख़ास मुत़ालबे ख़ास फ़र्द के लिये पूरे हुए थे इस लिये इस पर अ़ज़ाब नाज़िल न हुवा।

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّ لَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ ۝۹

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर हम नबी को फ़िरिश्ता करते जब भी उसे मर्द ही बनाते और उन पर वोही शुबा रखते जिस में अब पड़े हैं।

1 .....شرح السنه للبغوی، کتاب الفضائل، باب علامات النبوة، ۶۶/۷، تحت الحدیث: ۳۶۰۵، ملخصاً.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर हम नबी को फ़िरिश्ता बना देते तो भी उसे मर्द ही बनाते और उन पर वोही शुबा डाल देते जिस में अब पड़े हैं।

﴿وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا﴾ **: और अगर हम नबी को फ़िरिश्ता बना देते ।﴾** येह उन कुफ़्फ़ार का जवाब है जो नबी عَلَيْهِ السَّلَام को कहा करते थे, ''येह हमारी त़रह़ बशर हैं'' और इसी पागल पन में वोह ईमान से मह़रूम रहते थे। उन्हें इन्सानों में से रसूल मब्ऊ़स फ़रमाने की ह़िक्मत बताई जा रही है कि उन से नफ़्अ़ ह़ासिल करने और ता'लीमे नबी से फ़ैज़ उठाने की येही सूरत है कि नबी सूरते बशरी में जल्वा गर हो क्यूं कि फ़िरिश्ते को उस की अस्ली सूरत में देखने की तो येह लोग ताब न ला सकते, देखते ही हैबत से बेहोश हो जाते या मर जाते इस लिये अगर बिलफ़र्ज़ रसूल फ़िरिश्ता ही बनाया जाता तो भी उसे मर्द ही बनाया जाता और सूरते इन्सानी ही में भेजा जाता ताकि येह लोग उस को देख सकें और उस का कलाम सुन सकें और उस से दीन के अह़काम मा'लूम कर सकें लेकिन अगर फ़िरिश्ता सूरते बशरी में आता तो उन्हें फिर वोही कहने का मौक़अ़ रहता कि येह बशर है तो फ़िरिश्ते को नबी बनाने का क्या फ़ाएदा होता ?[1]

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۱۰﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़रूर ऐ मह़बूब तुम से पहले रसूलों के साथ भी ठट्टा किया गया तो वोह जो उन से हंसते थे उन की हंसी उन्हीं को ले बैठी।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ ह़बीब ! बेशक तुम से पहले रसूलों के साथ भी मज़ाक़ किया गया तो वोह जो उन में से (रसूलों का) मज़ाक़ उड़ाते थे उन पर उन का मज़ाक़ ही उतर आया।

﴿وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ﴾ **: और ऐ मह़बूब ! बेशक तुम से पहले रसूलों के साथ भी मज़ाक़ किया गया ।﴾** कुफ़्फ़ार नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मज़ाक़ उड़ाते जिस से हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रन्जीदा होते। इस पर सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़रमाया गया कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पहले रसूलों का भी मज़ाक़ उड़ाया गया तो जो मज़ाक़ उड़ाते थे उन का निहायत भयानक अन्जाम हुवा और वोह मुब्तलाए अ़ज़ाब हुए। इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तसल्ली व तस्कीने ख़ातिर है कि आप

[1] .....خازن، الانعام، تحت الآية: ۹، ۲/۵.

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रन्जीदा व मलूल न हों, कुफ़्फ़ार का पहले अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के साथ भी येही दस्तूर रहा है और इस का वबाल उन कुफ़्फ़ार को उठाना पड़ा है। नीज़ इस में मुश्रिकीन को भी तम्बीह है कि वोह पिछली उम्मतों के हाल से इब्रत हासिल करें और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ अदब का तरीक़ा मल्हूज़ रखें ताकि पहलों की तरह मुब्तलाए अ़ज़ाब न हों।

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मज़ाक़ उड़ाने वालों का अन्जाम

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के पांच सरदार (1) आ़स बिन वाइल सहमी (2) अस्वद बिन मुत्तलिब (3) अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस (4) हारिस बिन क़ैस और इन सब का अफ़्सर (5) वलीद बिन मुग़ीरा मख़्ज़ूमी, येह लोग नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बहुत ईज़ा देते और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मज़ाक़ उड़ाया करते थे, अस्वद बिन मुत्तलिब के ख़िलाफ़ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ की थी कि या रब ! عَزَّوَجَلَّ, इस को अन्धा कर दे। एक रोज़ ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिदे हराम में तशरीफ़ फ़रमा थे कि येह पांचों आए और इन्हों ने हस्बे दस्तूर त़ा'न और मज़ाक़ के कलिमात कहे और त़वाफ़ में मश्ग़ूल हो गए। इसी हाल में हज़रते जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पहुंचे और उन्हों ने वलीद बिन मुग़ीरा की पिंडली की त़रफ़ और आ़स के क़दमों की त़रफ़ और अस्वद बिन मुत्तलिब की आंखों की त़रफ़ और अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस के पेट की त़रफ़ और हारिस बिन क़ैस के सर की त़रफ़ इशारा किया और कहा मैं इन का शर दफ़्अ़ करूंगा। चुनान्चे थोड़े अ़र्से में येह हलाक हो गए, वलीद बिन मुग़ीरा तीर फ़रोश की दुकान के पास से गुज़रा तो उस के तहबन्द में एक तीर की नोक चुभ गई, लेकिन उस ने तकब्बुर की वज्ह से उस को निकालने के लिये सर नीचा न किया, इस से उस की पिंडली में ज़ख़्म आया और इसी में मर गया। आ़स बिन वाइल के पाउं में कांटा लगा और नज़र न आया, इस से पाउं वरम कर गया और येह शख़्स भी मर गया। अस्वद बिन मुत्तलिब की आंखों में ऐसा दर्द हुवा कि दीवार में सर मारता था इसी में मर गया और येह कहता मरा कि मुझ को मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने क़त्ल किया, और अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस को एक बीमारी इस्तिस्क़ा लग गई, कल्बी की रिवायत में है कि उस को लू लगी और उस का मुंह इस क़दर काला हो गया कि घर वालों ने न पहचाना और निकाल दिया इसी हाल में येह कहता मर गया कि मुझ को मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के रब عَزَّوَجَلَّ ने क़त्ल किया और हारिस बिन क़ैस की नाक से ख़ून और पीप जारी हुवा, वोह इसी में हलाक हो गया।[1]

1 .....خازن، الحجر، تحت الآیۃ: ۹۵، ۳/۱۱۱، ملخصاً.

www.dawateislami.net

قُلْ سِیْرُوْا فِی الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۱۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमा दो ज़मीन में सैर करो फिर देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुवा ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमा दो : ज़मीन में सैर करो फिर देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुवा ?

قُلْ سِیْرُوْا فِی الْاَرْضِ : तुम फ़रमा दो : ज़मीन में सैर करो । यहां सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाया गया है कि ऐ ह़बीब ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, अ़ज़ाब का मज़ाक़ उड़ाने वालों से फ़रमा दें कि जाओ और ज़मीन में सैर कर के देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुवा ? और उन्हों ने कुफ़्रो तक्ज़ीब का क्या समरा पाया ? यहां ज़मीन से मुराद वोह ज़मीन है जहां पिछली क़ौमों पर अ़ज़ाब आया और अब तक वहां उन उजड़ी बस्तियों के आसार मौजूद हैं और सैर का येह हुक्म तरग़ीब के लिये है न कि वुजूब के लिये ।

अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ और उस की मह़ब्बत पैदा करने का ज़रीआ़

इस से मा'लूम हुवा कि ख़ौफ़े इलाही पैदा करने के लिये अ़ज़ाब वाली जगह जा कर देखना बेहतर है क्यूं कि ख़बर के मुक़ाबले में मुशाहदाती चीज़ का असर ज़ियादा होता है। नीज़ जैसे अ़ज़ाब की जगह देखने से ख़ौफ़ पैदा होता है इसी त़रह़ रह़मत की जगह देखने से इ़बादत की रग़बत और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत पैदा होती है, लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत देखने के लिये बुज़ुर्गों के आस्ताने जहां **अल्लाह** तआ़ला की रह़मतें बरसती हैं, जा कर सफ़र कर के देखना भी बेहतर है ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त का शौक़ पैदा हो ।

सफ़र कर के मज़ाराते औलिया पर जाना जाइज़ है

इस आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि ईमानी क़ुव्वत ह़ासिल करने के लिये सफ़र करना बाइ़से रह़मत है और इस आयत से उन लोगों का भी रद होता है जो सिर्फ़ तीन मस्जिदों के इ़लावा किसी और त़रफ़ सफ़र को मुत़्लक़न ना जाइज़ कहते हैं और इस की दलील के त़ौर पर येह ह़दीस पेश करते हैं, ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इन तीन मस्जिदों के सिवा किसी की त़रफ़ कजावे न बांधे जाएं (1) मस्जिदे ह़राम (2) **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मस्जिद (3) मस्जिदे अक़्सा ।"[1]

1 ..... بخاری، کتاب فضل الصلاۃ فی مسجد مکۃ والمدینۃ، باب مسجد بیت المقدس، ۱/۴۰۳، الحدیث: ۱۱۹۷.

www.dawateislami.net

इस ह़दीस का मा'ना येह है कि इन मस्जिदों के इ़लावा किसी और मस्जिद की तरफ़ इस लिये सफ़र कर के जाना कि वहां नमाज़ का सवाब ज़ियादा है मम्नूअ़ है क्यूं कि इन के इ़लावा सब मस्जिदों में नमाज़ पढ़ने का सवाब बराबर है। अगर इस ह़दीस के येह मा'ना किये जाएं कि इन तीन मस्जिदों के इ़लावा किसी और मस्जिद की त़रफ़ सफ़र करना ह़राम है या इन तीन मस्जिदों के इ़लावा कहीं और सफ़र करना जाइज़ नहीं तो येह ह़दीस क़ुरआने मजीद की इस आयत और दीगर अह़ादीस के भी ख़िलाफ़ होगी, नीज़ इस मा'ना के ह़िसाब से कहीं का कोई सफ़र किसी मक़्सद के लिये जाइज़ न होगा मसलन जिहाद, त़लबे इ़ल्म, तब्लीगे़ दीन, तिजारत, सियाह़त वग़ैरा किसी काम के लिये सफ़र जाइज़ न होगा और येह उम्मत के इज्माअ़ के ख़िलाफ़ है। इस से साबित हुवा कि सफ़र कर के **अल्लाह** तआ़ला के मह़बूब बन्दों के मज़ारात पर जाना मम्नूअ़ व ह़राम नहीं बल्कि जाइज़ और मुस्तह़सन है।

قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ؕ
لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ
فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ किस का है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है तुम फ़रमाओ **अल्लाह** का है उस ने अपने करम के ज़िम्मे पर रह़मत लिख ली है बेशक ज़रूर तुम्हें क़ियामत के दिन जम्अ़ करेगा इस में कुछ शक नहीं वोह जिन्हों ने अपनी जान नुक़्सान में डाली ईमान नहीं लाते।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ किस का है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है ? फ़रमा दो : **अल्लाह** ही का है उस ने अपने ज़िम्मए करम पर रह़मत लिख ली है। बेशक वोह ज़रूर तुम्हें क़ियामत के दिन जम्अ़ करेगा जिस में कुछ शक नहीं। वोह जिन्हों ने अपनी जानों को नुक़्सान में डाला हुवा है तो वोह ईमान नहीं लाते।

﴿قُلْ : तुम फ़रमाओ।﴾ मजीद फ़रमाया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप उन से पूछें कि जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, उस का मालिक कौन है ? अव्वलन तो वोह ख़ुद ही कहेंगे कि येह सब कुछ **अल्लाह** तआ़ला का है क्यूं कि वोह इस के मो'तक़िद हैं और अगर वोह येह

www.dawateislami.net

न कहें तो तुम ख़ुद येह जवाब दो कि सब का मालिक **अल्लाह** तआ़ला है क्यूं कि इस के सिवा और कोई जवाब हो ही नहीं सकता और वोह इस जवाब की मुख़ालफ़त कर ही नहीं सकते क्यूं कि बुत जिन को येह मुश्रिकीन पूजते हैं वोह बेजान हैं, किसी चीज़ के मालिक होने की सलाहिय्यत नहीं रखते, ख़ुद दूसरों के मम्लूक हैं जब कि आस्मान व ज़मीन का वोही मालिक हो सकता है जो ह़य्य व क़य्यूम, अज़ली व अबदी, क़ादिरे मुत्लक़, हर शै पर मुतसर्रिफ़ और हुक्मरान हो, तमाम चीज़ें उस के पैदा करने से वुजूद में आई हों, ऐसा सिवाए **अल्लाह** तआ़ला के कोई नहीं, इस लिये तमाम आस्मानी व ज़मीनी काएनात का मालिक उस के सिवा कोई नहीं हो सकता।

﴿كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ﴾ **: उस ने अपने ज़िम्मए करम पर रह़मत लिख ली है।** ﴾ या'नी उस ने रह़मत का वा'दा फ़रमा लिया है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वा'दा ख़िलाफ़ी करना और مَعَاذَاللّٰه झूट बोलना मुह़ाल है। उस ने रह़मत का वा'दा फ़रमा लिया और रह़मत आ़म है दीनी हो या दुन्यवी, अपनी मा'रिफ़त और तौह़ीद और इ़ल्म की त़रफ़ हिदायत फ़रमाना भी इसी रह़मत फ़रमाने में दाख़िल है, यूंही कुफ़्फ़ार को मोहलत देना और सज़ा देने में जल्दी न फ़रमाना भी रह़मत में दाख़िल है क्यूं कि इस से उन्हें तौबा और रुजूअ़ का मौक़अ़ मिलता है।[1]

अल्लाह तआ़ला की रह़मत देख कर गुनाहों पर बेबाक नहीं होना चाहिये

इस बात में कोई शक नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला सब से ज़ियादा रह़ीम और सब से बढ़ कर करीम है, उस के रह़मो करम के ख़ज़ानों की कोई इन्तिहा नहीं, वोह चाहे तो उ़म्र भर के गुनाहगार को पल भर में बख़्श दे और उस की सारी ख़त़ाएं मुआ़फ़ फ़रमा दे लेकिन उस की वसीअ़ रह़मत को देख कर ऐसा नहीं होना चाहिये कि बन्दा गुनाहों पर बेबाक हो जाए और उस की ना फ़रमानी की परवाह न करे। इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, जिस का ख़ुलासा है कि गुनाहगार मोमिन इस त़रह़ धोके में मुब्तला हैं कि वोह येह कहते हैं **: अल्लाह** तआ़ला करीम है और मुझे उस के अ़फ़्वो दर गुज़र की उम्मीद है, फिर इस बात पर भरोसा कर के आ'माल से ग़ाफ़िल हो जाते हैं। उन का ख़याल है कि **अल्लाह** तआ़ला की ने'मत वसीअ़ और रह़मतो करम आ़म है, उस की रह़मत के समुन्दर के मुक़ाबले में बन्दों के गुनाहों की क्या हैसिय्यत है, हम तौह़ीद को मानने वाले और मोमिन हैं और ईमान के वसीले से उस की रह़मत के उम्मीद वार हैं। बा'ज़ अवक़ात उन के पास इस उम्मीद की दलील येह होती है कि हमारे बाप दादा नेक लोग थे और उन का दरजा बुलन्द था जैसे कई लोग अपने नसब की वज्ह से धोके का शिकार हैं ह़ालां कि वोह ख़ौफ़े ख़ुदा, तक़्वा और परहेज़ गारी वग़ैरा के सिल्सिले में अपने आबाओ अज्दाद की सीरत के ख़िलाफ़ चलते हैं तो गोया इन का गुमान येह है कि येह लोग **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक अपने बाप दादा से भी ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ हैं क्यूं

[1] .....جمل، الانعام، تحت الآية: ۱۲، ۲/۳۲۲-۳۲۳.

www.dawateislami.net

कि वोह बाप दादा तो इन्तिहाई दरजे के तक़्वे के बा वुजूद ख़ौफ़ज़दा रहते थे और येह लोग इन्तिहाई दरजे के फ़िस्क़ो फ़ुजूर के बा वुजूद बे ख़ौफ़ हैं। येह **अल्लाह** तआ़ला की ज़ात पर बहुत बड़ा धोका है, इसी त़रह़ शैत़ान आ'ला नसब वालों के दिलों में येह बात डालता है कि जो किसी इन्सान से मह़ब्बत करता है वोह उस की औलाद से भी मह़ब्बत करता है और **अल्लाह** तआ़ला ने चूंकि तुम्हारे आबाओ अज्दाद से मह़ब्बत की है लिहाज़ा वोह तुम से भी मह़ब्बत करता है, इस लिये तुम्हें इबादत करने की ज़रूरत नहीं। येह भी **अल्लाह** तआ़ला की ज़ात पर धोका है क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला इत़ाअ़त गुज़ार को पसन्द फ़रमाता और गुनाहगार को ना पसन्द फ़रमाता है तो जिस त़रह़ गुनाहगार बेटे को बुरा जानने की वज्ह से उस के फ़रमां बरदार बाप को बुरा नहीं जानता इसी त़रह़ फ़रमां बरदार बाप की इत़ाअ़त गुज़ारी की वज्ह से उस के गुनाहगार बेटे से मह़ब्बत भी नहीं करता, अगर मह़ब्बत बाप से बेटे की त़रफ़ चली जाती तो क़रीब था कि नफ़रत भी सरायत करती जब कि ह़क़ बात येह है कि कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाता और जिस शख़्स का येह ख़याल हो कि वोह अपने बाप की परहेज़ गारी की वज्ह से नजात पाएगा तो वोह उस आदमी की त़रह़ है जो येह गुमान करता हो कि बाप के खाने से वोह भी सैर हो जाएगा, बाप पिये तो बेटा भी सैराब हो जाएगा, बाप के सीखने से बेटा भी आ़लिम हो जाएगा और बाप का'बा शरीफ़ में पहुंच जाए तो उस के वहां पहुंचने से येह भी वहां पहुंच जाएगा और का'बा शरीफ़ को देख लेगा। (याद रखें कि) तक़्वा व परहेज़ गारी इख़्तियार करना हर एक पर लाज़िम है, इस में वालिद अपने बेटे की त़रफ़ से किफ़ायत नहीं करता और इस के बर अ़क्स भी येही हुक्म है[1]।[2]

وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उसी का है जो कुछ बसता है रात और दिन में और वोही है सुनता जानता।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और सब कुछ उसी का है जो रात और दिन में बसता है और वोही सुनने वाला जानने वाला है।

﴿وَلَهٗ : **और उसी का है।**﴾ इस आयत का ख़ुलासा येह है कि रात और दिन में काएनात में बसने वाली या सुकून ह़ासिल करने वाली हर चीज़ या'नी तमाम मौजूदात उसी की मिल्क है और वोह सब का ख़ालिक़, मालिक और रब है।[3]

1 .....احیاء علوم الدین، کتاب ذم الغرور، بیان ذم الغرور و حقیقته وامثلته، ۳/۴۷۱-۴۷۲، ملخصاً.

2 ..... फ़ी ज़माना अपने दिलों में **अल्लाह** तआ़ला का ख़ौफ़ पैदा करने और गुनाहों पर बेबाकी से बचने के लिये दा'वते इस्लामी के साथ वाबस्तगी बहुत मुफ़ीद है।

3 .....جلالین مع جمل، الانعام، تحت الآیة: ۱۳، ۲/۳۲۳.

www.dawateislami.net

قُلْ اَغَیْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِیًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ یُطْعِمُ وَلَا یُطْعَمُؕ قُلْ اِنِّیْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَ لَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۱۴﴾ قُلْ اِنِّیْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَیْتُ رَبِّیْ عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۵﴾ مَنْ یُّصْرَفْ عَنْهُ یَوْمَىٕذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗؕ وَ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِیْنُ ﴿۱۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ क्या **अल्लाह** के सिवा किसी और को वाली बनाऊं वोह **अल्लाह** जिस ने आस्मान व ज़मीन पैदा किये और वोह खिलाता है और खाने से पाक है तुम फ़रमाओ मुझे हुक्म हुवा है कि सब से पहले गरदन रखूं और हरगिज़ शिर्क वालों में न होना। तुम फ़रमाओ अगर मैं अपने रब की ना फ़रमानी करूं तो मुझे बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है। उस दिन जिस से अ़ज़ाब फेर दिया जाए ज़रूर उस पर **अल्लाह** की मेहर हुई और येही खुली काम्याबी है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ : क्या किसी और को उस **अल्लाह** के सिवा वाली बना लूं जो आस्मानों और ज़मीन का पैदा फ़रमाने वाला है ? और वोह खिलाता है और वोह ख़ुद खाने से पाक है। तुम फ़रमाओ : मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं सब से पहले फ़रमां बरदारी के लिये गरदन झुकाऊं और तू हरगिज़ शिर्क करने वालों में से न होना। तुम फ़रमाओ : अगर मैं अपने रब की ना फ़रमानी करूं तो मुझे बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है। उस दिन जिस से अ़ज़ाब फेर दिया गया तो ज़रूर उस पर **अल्लाह** ने रह़म फ़रमाया और येही खुली काम्याबी है।

﴿قُلْ﴾ **: तुम फ़रमाओ।** कुफ़्फ़ारे अ़रब ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कहा कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने मुल्क वालों के दीन की त़रफ़ आ जाएं और तौह़ीद का ज़िक्र छोड़ दें। इस के जवाब में येह आयते करीमा नाज़िल हुई[1] और फ़रमाया गया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, इन्हें जवाब दो कि क्या मैं उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा किसी और को अपना वाली बना लूं जो आस्मानों और ज़मीन को पैदा फ़रमाने वाला है नीज़ वोह सब को खिलाता है और वोह ख़ुद खाने से पाक है, सारी मख़्लूक़ उस की मोह़ताज है और वोह सब से बे नियाज़ है। लिहाज़ा ऐसे ख़ालिक़ो मालिक, रह़ीमो करीम को मैं हरगिज़ नहीं छोड़ सकता। उस ने तो मुझे

1 .....تفسیر قرطبی، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۴، ۳/۲۴۵، الجزء السادس.

www.dawateislami.net

येह हुक्म दिया है कि मैं सब से पहले फ़रमां बरदारी के लिये गरदन झुकाऊं क्यूं कि नबी अपनी उम्मत से दीन में आगे होते हैं और उस ने येह हुक्म दिया है कि मैं शिर्क से पाक रहूं।

﴿مَنْ یُّصْرَفْ عَنْهُ یَوْمَىٕذٍ : **उस दिन जिस से अ़ज़ाब फेर दिया गया**﴾ इस आयत से मा'लूम हुवा कि क़ियामत के दिन अ़ज़ाब से बचना **अल्लाह** तआ़ला के रह़मो करम से होगा सिर्फ़ अपने आ'माल इस के लिये काफ़ी नहीं क्यूं कि आ'माल सबब हैं।

وَاِنْ یَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ؕ وَاِنْ یَّمْسَسْكَ بِخَیْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۱۷﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْحَكِیْمُ الْخَبِیْرُ ﴿۱۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुझे **अल्लाह** कोई बुराई पहुंचाए तो उस के सिवा उस का कोई दूर करने वाला नहीं और अगर तुझे भलाई पहुंचाए तो वोह सब कुछ कर सकता है। और वोही ग़ालिब है अपने बन्दों पर और वोही है ह़िक्मत वाला ख़बरदार।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर **अल्लाह** तुझे कोई बुराई पहुंचाए तो उस के सिवा उस बुराई को कोई दूर करने वाला नहीं और अगर **अल्लाह** तुझे भलाई पहुंचाए तो वोह हर शै पर क़ादिर है। और वोही अपने बन्दों पर ग़ालिब है और वोही ह़िक्मत वाला ख़बरदार है।

﴿وَاِنْ یَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ : **और अगर अल्लाह तुझे कोई बुराई पहुंचाए**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे कोई बुराई मसलन बीमारी या तंगदस्ती या और कोई बला पहुंचाए तो उस के सिवा उस बुराई को कोई दूर करने वाला नहीं या'नी उस की मरज़ी के ख़िलाफ़ उस का भेजा हुवा अ़ज़ाब कोई नहीं दफ़्अ़ कर सकता। और जहां तक नेक आ'माल और बुज़ुर्गों की दुआ़ से अ़ज़ाब उठ जाने का तअ़ल्लुक़ है तो उसे भी रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ही अपने फ़ज़्लो करम से, इन अस्बाब के वसीले से उठाता है और जैसे बुराई का पहुंचना और दूर होना **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से है, ऐसे ही भलाई जैसे सिह़्ह़तो दौलत वग़ैरा का पहुंचना भी उसी ख़ुदावन्दे करीम की क़ुदरत से है क्यूं कि वोह हर शै पर क़ादिर है, कोई उस की मशिय्यत के ख़िलाफ़ कुछ नहीं कर सकता तो उस के सिवा कोई इबादत का मुस्तह़िक़ कैसे हो सकता है ? क्यूं कि मा'बूद वोह है जो क़ुदरते कामिला रखता हो और किसी का ह़ाजत मन्द न हो और **अल्लाह**

www.dawateislami.net

तआ़ला के इ़लावा ऐसा कोई नहीं, लिहाज़ा सिर्फ़ उसी को रब मानो उसी की इ़बादत करो। येह रद्दे शिर्क की दिल में असर करने वाली दलील है।

قُلْ اَیُّ شَیْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ۫ شَهِیْدٌۢ بَیْنِیْ وَبَیْنَكُمْ ۫ وَاُوْحِیَ
اِلَیَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ؕ اَىِٕنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ
اٰلِهَةً اُخْرٰی ؕ قُلْ لَّاۤ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِیْ بَرِیْٓءٌ
مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿۱۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ सब से बड़ी गवाही किस की तुम फ़रमाओ कि **अल्लाह** गवाह है मुझ में और तुम में और मेरी त़रफ़ इस क़ुरआन की वह़ी हुई है कि मैं इस से तुम्हें डराऊं और जिन जिन को पहुंचे तो क्या तुम येह गवाही देते हो कि **अल्लाह** के साथ और ख़ुदा हैं तुम फ़रमाओ कि मैं येह गवाही नहीं देता तुम फ़रमाओ कि वोह तो एक ही मा'बूद है और मैं बेज़ार हूं उन से जिन को तुम शरीक ठहराते हो।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : तुम फ़रमाओ : सब से बड़ी गवाही किस की है ? फ़रमा दो कि मेरे और तुम्हारे दरमियान **अल्लाह** गवाह है और मेरी त़रफ़ इस क़ुरआन की वह़ी की गई है ताकि मैं इस के ज़रीए तुम्हें और जिन को येह पहुंचे उन्हें डराऊं। क्या तुम येह गवाही देते हो कि **अल्लाह** के साथ दूसरे मा'बूद भी हैं ? तुम फ़रमाओ कि मैं येह गवाही नहीं देता। तुम फ़रमाओ कि वोह तो एक ही मा'बूद है और मैं उन से बेज़ार हूं जिन्हें तुम (**अल्लाह** का) शरीक ठहराते हो।

﴿اَیُّ شَیْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً﴾ : **सब से बड़ी गवाही किस की है ?** इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि अहले मक्का नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कहने लगे कि ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हमें कोई ऐसा दिखाइये जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत की गवाही देता हो। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई जिस में फ़रमाया गया कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरा गवाह है और सब से बड़ा गवाह वोही है"[1]

[1] .....صاوی، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۹، ۲/۵۶۷.

www.dawateislami.net

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गवाही देना सुन्नते ख़ुदा है

अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गवाही कई त़रह़ दी : **एक** येह कि अपने ख़ास बन्दों से गवाही दिलवा दी। **दूसरे** येह कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जो कलाम उतारा उस में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत का ए'लान फ़रमाया। **तीसरे** येह कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बहुत से मो'जिज़ात अ़त़ा फ़रमाए। येह सब रब तआ़ला की गवाहियां हैं। इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की गवाही देना सुन्नते **रसूलुल्लाह** है और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गवाही देना सुन्नते ख़ुदा है, हमारे हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गवाह ख़ुद रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ है और कलिमए शहादत में दोनों गवाहियां जम्अ़ फ़रमा दी गईं, سُبْحٰنَ اللهِ।

﴿وَاُوْحِیَ اِلَیَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ﴾ **: और मेरी त़रफ़ इस कुरआन की वह़ी हुई है।** या'नी **अल्लाह** तआ़ला मेरी नुबुव्वत की गवाही देता है इस लिये कि उस ने मेरी त़रफ़ इस कुरआन की वह़ी फ़रमाई और येह ऐसा अ़ज़ीम मो'जिज़ा है कि तुम फ़सीह़ो बलीग़ और साह़िबे ज़बान होने के बा वुजूद इस का मुक़ाबला करने से आ़जिज़ रहे, इस से साबित हुवा कि कुरआने पाक आ़जिज़ करने वाला है और जब येह आ़जिज़ करने वाला है तो इस किताब का मुझ पर नाज़िल होना **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से मेरे रसूल होने की यक़ीनी शहादत है। **अल्लाह** तआ़ला के इस फ़रमान "لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ" से येही मुराद है या'नी मेरी त़रफ़ इस कुरआन की वह़ी फ़रमाई गई ताकि मैं इस के ज़रीए़ तुम्हें **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म की मुख़ालफ़त करने से डराऊं।[1]

﴿وَمَنْۢ بَلَغَ﴾ **: और जिन तक येह पहुंचे।** या'नी मेरे बा'द क़ियामत तक आने वाले जिन अफ़राद तक येह कुरआने पाक पहुंचे ख़्वाह वोह इन्सान हों या जिन्न उन सब को मैं हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त से डराऊं। ह़दीस शरीफ़ में है कि जिस शख़्स को कुरआने पाक पहुंचा यहां तक कि उस ने कुरआन समझ लिया तो गोया कि उस ने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कलामे मुबारक सुना।[2]

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि जब येह आयत नाज़िल हुई तो सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किस्रा और क़ैसर वग़ैरा सलात़ीन को दा'वते इस्लाम के मक्तूब भेजे।[3]

इस की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि "وَمَنْۢ بَلَغَ" भी फ़ाइल के मा'ना में है और मा'ना येह हैं कि इस कुरआन से मैं तुम्हें डराऊं और वोह डराएं जिन्हें येह कुरआन पहुंचे।[4]

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیة: ۱۹، ۲/۸.
2 .....در منثور، الانعام، تحت الآیة: ۱۹، ۳/۲۵۷.
3 .....خازن، الانعام، تحت الآیة: ۱۹، ۲/۸.
4 .....جمل، الانعام، تحت الآیة: ۱۹، ۲/۳۲۷.

www.dawateislami.net

तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तरो ताज़ा करे उस को जिस ने हमारा कलाम सुना और जैसा सुना वैसा पहुंचाया, बहुत से लोग जिन्हें कलाम पहुंचाया जाए वोह सुनने वाले से ज़ियादा अह्ल होते हैं।[1]

और एक रिवायत में है : सुनने वाले से ज़ियादा अफ़्क़ह होते हैं।[2]

इस से फ़ुक़हा की क़द्रो मन्ज़िलत मा'लूम होती है। नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत और क़ुरआन की हिदायत किसी ज़मान व मकान और किसी क़ौम के साथ ख़ास नहीं।

﴿اَىِٕنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ﴾ **: क्या तुम गवाही देते हो ?** यहां मुश्रिकों से ख़िताब है या'नी ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप इन काफ़िरों से फ़रमाएं कि ऐ मुश्रिको ! क्या तुम येह गवाही देते हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ दूसरे मा'बूद भी हैं ? ऐ ह़बीबे अकरम ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, तुम फ़रमाओ कि मैं येह गवाही नहीं देता बल्कि तुम फ़रमाओ कि वोह तो एक ही मा'बूद है और मैं उन झूटे ख़ुदाओं से बेज़ार हूं जिन्हें तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराते हो।

इस्लाम क़बूल करने वाले को क्या करना चाहिये ?

इस आयत से साबित हुवा कि जो शख़्स इस्लाम लाए उस को चाहिये कि तौह़ीदो रिसालत की शहादत के साथ इस्लाम के हर मुख़ालिफ़ अ़क़ीदे व दीन से बेज़ारी का इज़्हार करे बल्कि तमाम बेदीनों से दूर रहे और कुफ़्रो शिर्क व गुनाह से बेज़ार रहे बल्कि मोमिन को चाहिये कि अपनी सूरत, सीरत, रफ़्तारो गुफ़्तार से अपने ईमान का ए'लान करे।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ؕ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۲۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जिन को हम ने किताब दी इस नबी को पहचानते हैं जैसा अपने बेटों को पहचानते हैं जिन्हों ने अपनी जान नुक़्सान में डाली वोह ईमान नहीं लाते।

وقف لازم ۲ ع ۸

1 .....ترمذی، کتاب العلم، باب ما جاء فی الحث علی تبلیغ السماع، ۲۹۹/٤، الحدیث:۲٦٦٦.

2 .....ترمذی، کتاب العلم، باب ما جاء فی الحث علی تبلیغ السماع، ۲۹۸/٤، الحدیث:۲٦٦٥.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह लोग जिन्हें हम ने किताब अ़ता फ़रमाई वोह इस नबी को ऐसे पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं (लेकिन) जो अपनी जानों को नुक़्सान में डालने वाले हैं तो वोह ईमान नहीं लाते।

﴿اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ﴾ **: जिन्हें हम ने किताब अ़ता फ़रमाई ।** ﴾ या'नी यहूदियों और ईसाइयों के उ़लमा जिन्हों ने तौरैत व इन्जील पाई वोह सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुल्यए मुबारक और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ना'त व सिफ़त से जो उन किताबों में मज़्कूर है ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ऐसे पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं या'नी जैसे औलाद के औलाद होने में शुबा नहीं इसी त़रह़ हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नबी होने में उन्हें शुबा नहीं। चुनान्चे इस का सुबूत इस रिवायत से भी मिलता है कि इस्लाम क़बूल करने के बा'द ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने येही आयत ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के सामने पढ़ कर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पहचानने की सूरत पूछी तो उन्हों ने फ़रमाया : मैं ने जैसे ही **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार किया तो उन्हें पहचान गया बल्कि अपने बेटे के मुक़ाबले में उन्हें ज़ियादा जल्दी पहचान गया, मैं इस बात की गवाही तो दे सकता हूं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सच्चे रसूल हैं लेकिन औ़रतों ने क्या किया वोह मैं नहीं जानता या'नी हो सकता है कि उन्हों ने मेरे पीछे कोई ख़ियानत कर ली हो और येह बेटा मेरा न हो लेकिन **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सच्चे रसूल होने में मुझे किसी क़िस्म का शुबा नहीं हो सकता।

तफ़्सीरे बग़वी में पहचानने की येह सूरत लिखी है जैसे अपने बेटे को दीगर बच्चों के दरमियान पहचान लेते हैं कि आदमी हज़ारों में अपने बेटे को बिला तरद्दुद पहचान लेता है ऐसे ही येह लोग सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पहचानते हैं लेकिन इन में जो अपनी जानों को ख़सारे में डालने वाले हैं तो वोह ईमान नहीं लाते। यहूदियों का ईमान न लाना ह़सद की वज्ह से था। इस से मा'लूम हुवा कि ह़सद के होते हुए किसी की ख़ूबी तस्लीम करना बड़ा मुश्किल होता है। इस आयत से येह अहम मस्अला भी मा'लूम हुवा कि सरकारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जानना पहचानना ईमान नहीं बल्कि इन्हें मानना ईमान है।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰیٰتِهٖؕ اِنَّهٗ

www.dawateislami.net

لَا یُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** पर झूट बांधे या उस की आयतें झुटलाए बेशक ज़ालिम फ़लाह् न पाएंगे ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** पर झूट बांधे या उस की आयतों को झुटलाए । बेशक ज़ालिम फ़लाह् न पाएंगे ।

﴿وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ﴾ **: और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन ?﴾** जो किसी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराए या जो बात उस की शान के लाइक़ न हो उस की त़रफ़ निस्बत करे वोह सब से बड़ा ज़ालिम है क्यूं कि ज़ुल्म कहते हैं किसी शै को उस की अस्ल जगह से हटा कर दूसरी जगह रख देना तो जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के शायाने शान नहीं है उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मन्सूब करना यक़ीनन सब से बड़ा ज़ुल्म होगा ।

ज़ालिम की वईद में दाख़िल अफ़राद

इस वईद में मुश्रिक भी दाख़िल कि वोह तौह़ीद को उस की जगह से हटाते हैं और दीगर कुफ़्फ़ार भी दाख़िल हैं । यूंही इस में फ़िल्मों ड्रामों या किसी भी ज़रीए से कुफ़्रिय्यात सीख कर बोलने या ख़ुशी से सुनने वाले भी दाख़िल हैं कि वोह भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ वोह चीज़ें मन्सूब करते हैं जो उस की शायाने शान नहीं और इस में ज़मानए माज़ी और ख़ुसूसन ज़मानए ह़ाल के वोह स्कॉलर्ज़, दानिश्वर और मुफ़क्किर भी शामिल हैं जो दीदा दानिस्ता क़ुरआन की ग़लत़ तफ़्सीरें करते हैं या ना अह्ल होते हुए क़ुरआन की तफ़्सीर करते हैं क्यूं कि येह भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर झूट बांधते हैं ।

وَیَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِیْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِیْنَ اَشْرَكُوْۤا اَیْنَ شُرَكَآؤُكُمُ
الَّذِیْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۲۲﴾ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا
مَا كُنَّا مُشْرِكِیْنَ ﴿۲۳﴾ اُنْظُرْ كَیْفَ كَذَبُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ وَ ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا

www.dawateislami.net

كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۲۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जिस दिन हम सब को उठाएंगे फिर मुश्रिकों से फ़रमाएंगे कहां हैं तुम्हारे वोह शरीक जिन का तुम दा'वा करते थे। फिर उन की कुछ बनावट न रही मगर येह कि बोले हमें अपने रब **अल्लाह** की क़सम कि हम मुश्रिक न थे। देखो कैसा झूट बांधा ख़ुद अपने ऊपर और गुम गईं उन से जो बातें बनाते थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जिस दिन हम सब को उठाएंगे फिर मुश्रिकों से कहेंगे, तुम्हारे वोह शरीक कहां हैं जिन्हें तुम (ख़ुदा का शरीक) गुमान करते थे ? फिर उन की इस के सिवा कोई मा'ज़िरत न होगी कि कहेंगे, हमें अपने रब **अल्लाह** की क़सम कि हम हरगिज़ मुश्रिक न थे। ऐ ह़बीब ! देखो अपने ऊपर उन्हों ने कैसा झूट बांधा ? और उन से ग़ाइब हो गईं वोह बातें जिन का येह बोहतान बांधते थे।

﴿ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ﴾ **: फिर उन की कोई मा'ज़िरत न होगी ।﴾** क़ियामत के दिन काफ़िरों के पास अपने कुफ़्रो शिर्क से मा'ज़िरत की कोई सूरत न होगी सिवाए इस के कि शिर्क से साफ़ इन्कार कर देंगे कि हम तो मुश्रिक थे ही नहीं। उन के मुतअ़ल्लिक़ अगली आयत में फ़रमाया गया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, देखो अपने ऊपर उन्हों ने कैसा झूट बांधा कि उ़म्र भर के शिर्क ही से मुकर गए। मुश्रिकीन शुरूअ़ में तो अपने जुर्मों का इन्कार करेंगे फिर दूसरे वक़्त इक़्रार करेंगे और फिर एक दूसरे पर इल्ज़ाम तराशी करेंगे कि हमें तो हमारे बड़ों ने गुमराह किया था।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۲۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन में कोई वोह है जो तुम्हारी त़रफ़ कान लगाता है और हम ने उन के दिलों पर ग़िलाफ़ कर दिये हैं कि उसे न समझें और उन के कानों में टेंट और अगर सारी

www.dawateislami.net

निशानियां देखें तो उन पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि जब तुम्हारे हुज़ूर तुम से झगड़ते हाज़िर हों तो काफ़िर कहें येह तो नहीं मगर अगलों की दास्तानें।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन में से कोई वोह है जो तुम्हारी तरफ़ कान लगा कर सुनता है और हम ने उन के दिलों पर ग़िलाफ़ कर दिये हैं कि उस को न समझें और उन के कानों में बोझ डाल दिया है और अगर सारी निशानियां (भी) देख लें तो उन पर ईमान न लाएंगे हत्ता कि जब तुम्हारे पास तुम से झगड़ते हुए आते हैं तो काफ़िर कहते हैं येह तो पहले लोगों की दास्तानें हैं।

﴿وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ﴾ **: और उन में से कोई वोह है जो तुम्हारी तरफ़ कान लगा कर सुनता है।﴾** एक मरतबा अबू सुफ़्यान, वलीद, नज़र और अबू जहल वग़ैरा जम्अ़ हो कर **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तिलावते क़ुरआने पाक सुनने लगे तो नज़र से उस के साथियों ने कहा कि मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) क्या कहते हैं ? कहने लगा : मैं नहीं जानता, ज़बान को हरकत देते हैं और पहलों के क़िस्से कह रहे हैं जैसे मैं तुम्हें सुनाया करता हूं। अबू सुफ़्यान ने कहा कि इन की बातें मुझे हक़ मा'लूम होती हैं। अबू जहल ने कहा कि इस का इक़्रार करने से मर जाना बेहतर है। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई।[1] काफ़िरों के क़ुरआने पाक को पुराने क़िस्से कहने से मक़्सद कलामे पाक का वह्यिे इलाही होने का इन्कार करना है।

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۲۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह उस से रोकते और उस से दूर भागते हैं और हलाक नहीं करते मगर अपनी जानें और उन्हें शुऊ़र नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह (दूसरों को) उस से रोकते और ख़ुद उस से दूर भागते हैं और वोह अपने आप ही को हलाकत में डालते हैं और उन्हें शुऊ़र नहीं।

﴿وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ﴾ **: और वोह (दूसरों को) इस से रोकते हैं।﴾** या'नी मुश्रिकीन लोगों को क़ुरआन शरीफ़ से या रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۲۵، ۲/ ۱۰.

www.dawateislami.net

ईमान लाने और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ करने से दूसरों को रोकते हैं और ख़ुद भी दूर रहते हैं। येह आयत कुफ़्फ़ारे मक्का के बारे में नाज़िल हुई जो लोगों को सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मजलिस में ह़ाज़िर होने और क़ुरआने करीम सुनने से रोकते थे और ख़ुद भी दूर रहते थे कि कहीं कलामे मुबारक उन के दिल में असर न कर जाए।[1]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह आयत ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा अबू त़ालिब के ह़क़ में नाज़िल हुई जो मुश्रिकीन को तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ईज़ा रसानी से रोकते थे और ख़ुद ईमान लाने से बचते थे।[2] लेकिन ब ज़ाहिर पहला क़ौल ही सह़ीह़ है क्यूं कि यहां जम्अ़ का सीग़ा बयान हुवा है।

وَلَوْ تَرٰۤى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا یٰلَیْتَنَا نُرَدُّ وَ لَا نُكَذِّبَ بِاٰیٰتِ رَبِّنَا وَ نَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۲۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और कभी तुम देखो जब वोह आग पर खड़े किये जाएंगे तो कहेंगे काश किसी त़रह़ हम वापस भेजे जाएं और अपने रब की आयतें न झुटलाएं और मुसल्मान हो जाएं।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और अगर आप देखें जब उन्हें आग पर खड़ा किया जाएगा फिर येह कहेंगे ऐ काश कि हमें वापस भेज दिया जाए और हम अपने रब की आयतें न झुटलाएं और मुसल्मान हो जाएं।

﴿وَلَوْ تَرٰى﴾ **: और अगर आप देखें।** इस आयत का ख़ुलासा येह है कि अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم काफ़िरों की ह़ालत देखें जब उन्हें आग पर खड़ा किया जाएगा तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बड़ी ख़ौफ़नाक ह़ालत देखेंगे और उस वक़्त काफ़िर कहेंगे कि ऐ काश कि किसी त़रह़ हमें वापस दुन्या में भेज दिया जाए और हम अपने रब عَزَّوَجَلَّ की आयतें न झुटलाएं और मुसल्मान हो जाएं ताकि इस होलनाक अ़ज़ाब से बच सकें।

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیة: ۲۶، ۲/ ۱۰۱.
2 .....قرطبی، الانعام، تحت الآیة: ۲۶، ۳/ ۲۵۱، الجزء السادس.

www.dawateislami.net

بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۲۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बल्कि उन पर खुल गया जो पहले छुपाते थे और अगर वापस भेजे जाएं तो फिर वोही करें जिस से मन्अ़ किये गए थे और बेशक वोह ज़रूर झूटे हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बल्कि पहले जो येह छुपा रहे थे वोह उन पर खुल गया है और अगर उन्हें लौटा दिया जाए तो फिर वोही करेंगे जिस से उन्हें मन्अ़ किया गया था और बेशक येह ज़रूर झूटे हैं।

بَلْ بَدَا لَهُمْ : **बल्कि उन पर ज़ाहिर हो गया ।** जैसा कि ऊपर इसी रुकूअ़ में मज़्कूर हो चुका कि मुश्रिकीन से जब फ़रमाया जाएगा कि तुम्हारे शरीक कहां हैं तो वोह अपने कुफ़्र को छुपा जाएंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम खा कर कहेंगे कि हम मुश्रिक न थे, इस आयत में बताया गया कि फिर जब उन्हें ज़ाहिर हो जाएगा जो वोह छुपाते थे या'नी उन का कुफ़्र इस त़रह़ ज़ाहिर होगा कि उन के आ'ज़ा व जवारेह़ उन के कुफ़्रो शिर्क की गवाहियां देंगे तब वोह दुन्या में वापस जाने की तमन्ना करेंगे। इसी का फ़रमाया जा रहा है कि काफ़िर अगर्चे दुन्या में लौटाए जाने और ईमान लाने की तमन्ना ज़ाहिर कर रहे हैं लेकिन उन के ईमान लाने की तमन्ना सच्ची नहीं बल्कि अस्ल बात येह है कि पहले जो येह अपना मुशरिक होना छुपा रहे थे वोह इन पर खुल गया है और अगर उन्हें दुन्या में लौटा दिया जाए तो फिर वोही करें जिस से इन्हें मन्अ़ किया गया था और बेशक येह ज़रूर झूटे हैं।

وَقَالُوْٓا اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿۲۹﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ؕ قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۳۰﴾ ع ۳

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बोले वोह तो येही हमारी दुन्या की ज़िन्दगी है और हमें उठना नहीं। और कभी तुम देखो जब अपने रब के हुज़ूर खड़े किये जाएंगे फ़रमाएगा क्या येह हक़ नहीं है कहेंगे क्यूं नहीं हमें अपने रब की क़सम फ़रमाएगा तो अब अ़ज़ाब चखो बदला अपने कुफ़्र का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन्हों ने कहा था कि ज़िन्दगी तो सिर्फ़ दुन्यावी ज़िन्दगी ही है और हमें उठाया नहीं जाएगा। और अगर तुम देखो जब उन्हें उन के रब की बारगाह में खड़ा किया जाएगा तो वोह फ़रमाएगा : क्या येह हक़ नहीं ? तो कहेंगे : क्यूं नहीं, हमें अपने रब की क़सम। फ़रमाएगा तो अब अपने कुफ़्र के बदले में अ़ज़ाब का मज़ा चखो।

﴿وَقَالُوْا﴾ **: और उन्हों ने कहा था।** ﴾ येह उन काफ़िरों का मक़ूला है जो क़ियामत के मुन्किर हैं और इस का वाक़िआ़ येह था कि जब सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुफ़्फ़ार को क़ियामत के अह़वाल और आख़िरत की ज़िन्दगी, ईमानदारों और फ़रमां बरदारों के सवाब, काफ़िरों और ना फ़रमानों पर अ़ज़ाब का ज़िक्र फ़रमाया तो काफ़िर कहने लगे कि ज़िन्दगी तो बस दुन्या ही की है और जब हम मरने के बा'द इस दुन्या से चले जाएंगे तो हमें दोबारा ज़िन्दा नहीं किया जाएगा।[1] काफ़िरों का तो अ़क़ीदा ही येह था कि ज़िन्दगी तो सिर्फ़ दुन्या की ज़िन्दगी है और मरने के बा'द कोई उठाया नहीं जाएगा और इसी ए'तिक़ाद की बिना पर उन की ज़िन्दगी ग़फ़्लत का शिकार थी लेकिन मुसल्मानों पर भी अफ़्सोस है कि इन का तो क़ृई अ़क़ीदा येह है कि मरने के बा'द लोगों को उठाया जाएगा, आ'माल का जवाब देना पड़ेगा लेकिन इस के बा वुजूद वोह ग़फ़्लत में पड़े हैं, येह बड़ी अफ़्सोस नाक सूरत है चुनान्चे इसी मफ़्हूम में बुज़ुर्गों ने बहुत सी बातें इर्शाद फ़रमाई हैं। ह़ज़रते अबू जा'फ़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उस शख़्स पर बड़ी ह़ैरत है जो हमेशगी के घर (जन्नत) की तस्दीक़ तो करता है लेकिन कोशिश धोके के घर (दुन्या को पाने और इसे संवारने) के लिये करता है।"[2]

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया कि "उस शख़्स पर तअ़ज्जुब है जो एह़सान करने वाले की मा'रिफ़त के बा'द उस की ना फ़रमानी करता है और शैत़ाने लईन की सरकशी को जानने के बा'द उस की इत़ाअ़त करता है।"[3]

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیة: ۲۹، ۲/۱۱.
2 .....کتاب الزهد لابن ابی الدنیا، ص۲۸، رقم: ۱٤.
3 .....احیاء علوم الدین، کتاب شرح عجائب القلب، بیان تفصیل مداخل الشیطان الی القلب، ۳/٤۷.

www.dawateislami.net

ह़ज़रते फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मुझे उस शख़्स पर तअ़ज्जुब नहीं होता जो इमारत बना कर छोड़ जाता है बल्कि उस पर तअ़ज्जुब होता है जो उस इमारत को देख कर इ़ब्रत ह़ासिल नहीं करता।"(1)

ह़ज़रते वुहैब मक्की رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "किसी शख़्स के लिये येह बात कैसे मुनासिब है कि वोह दुन्या में हंसे ह़ालां कि वोह जानता है कि उस के सामने क़ियामत के दिन की फ़रियादें, गर्दिशें और ख़ौफ़नाक मनाज़िर हैं, क़रीब है कि सख़्त रो'ब और ख़ौफ़ से उस के जिस्म के जोड़ कट जाएं।"(2)

قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿۳۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हार में रहे वोह जिन्हों ने अपने रब से मिलने का इन्कार किया यहां तक कि जब उन पर क़ियामत अचानक आ गई बोले हाए अफ़्सोस हमारा इस पर कि इस के मानने में तक़्सीर की और वोह अपने बोझ अपनी पीठ पर लादे हुए हैं अरे कितना बुरा बोझ उठाए हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : बेशक उन लोगों ने नुक़्सान उठाया जिन्हों ने अपने रब से मिलने को झुटलाया यहां तक कि जब उन पर अचानक क़ियामत आएगी तो कहेंगे : हाए अफ़्सोस इस पर जो हम ने इस के मानने में कोताही की और वोह अपने गुनाहों के बोझ अपनी पीठ पर लादे हुए होंगे। ख़बरदार ! वोह कितना बुरा बोझ उठाए हुए हैं।

﴿قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ﴾ : **बेशक उन लोगों ने नुक़्सान उठाया जिन्हों ने अपने रब से मिलने को झुटलाया।** ﴾ या'नी जिन काफ़िरों ने मरने के बा'द दोबारा ज़िन्दा किये जाने और क़ियामत के दिन आ'माल के ह़िसाब के लिये **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में ह़ाज़िर होने को झुटलाया तो उन्हों ने अपनी जानों का ही नुक़्सान किया कि वोह ला ज़वाल ने'मतों के घर जन्नत से मह़रूम हो जाएंगे और जहन्नम के दरकात में दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तला होंगे यहां तक कि

1 .....احیاء علوم الدین، کتاب الفقر والزهد، بیان تفصیل الزهد فیما هو من ضروریات الحیاة، ۲۹۲/٤.

2 .....تنبیه المغترین، الباب الثانی فی جملة اخری من الاخلاق، ومن اخلاقهم ظنهم بنفسهم الهلاك... الخ، ص۱۰۹.

www.dawateislami.net

जब क़ियामत के दिन उन मुन्किरों पर अचानक क़ियामत आएगी और येह अपनी ज़िल्लतो रुस्वाई को देखेंगे तो कहेंगे : हाए अफ़्सोस ! हमें इस पर बहुत नदामत है जो हम ने दुन्या में क़ियामत को मानने में कोताही की और इस दिन पर ईमान ला कर इस लिये तय्यारी न की और नेक आ'माल करने से दूर रहे ।[1]

﴿وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ﴾ : **और वोह अपने गुनाहों के बोझ उठाए होंगे ।** ﴾ ह़दीस शरीफ़ में है कि काफ़िर जब अपनी क़ब्र से निकलेगा तो उस के सामने निहायत क़बीह़ भयानक और बहुत बदबूदार सूरत आएगी वोह काफ़िर से कहेगी : तू मुझे पहचानता है ? काफ़िर कहेगा : नहीं । तो वोह काफ़िर से कहेगी : मैं तेरा ख़बीस अ़मल हूं, दुन्या में तू मुझ पर सुवार रहा था और आज मैं तुझ पर सुवार होउंगा और तुझे तमाम मख़्लूक़ में रुस्वा करूंगा फिर वोह उस पर सुवार हो जाएगा ।[2]

मुसल्मान के उख़्वी ख़सारे का सबब

क़ियामत के दिन काफ़िर का तो येह ह़ाल होगा जब कि दुन्या में किये गए बुरे आ'माल मुसल्मान के लिये भी उख़्वी ख़सारे का सबब बन सकते हैं चुनान्चे ह़दीस में है, रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "चार आदमी ऐसे हैं कि वोह जहन्नमियों की तक्लीफ़ में इज़ाफ़े का सबब बनेंगे और वोह खौलते पानी और आग के दरमियान दौड़ते हुए हलाकत व तबाही मांगते होंगे । उन में से एक पर अंगारों का सन्दूक़ लटक रहा होगा, दूसरा अपनी आंतें खींच रहा होगा, तीसरे के मुंह से पीप और ख़ून बह रहे होंगे और चौथा अपना गोश्त खा रहा होगा । सन्दूक़ वाले के बारे में जहन्नमी एक दूसरे से कहेंगे : "इस बद बख़्त को क्या हुवा ? इस ने तो हमारी तक्लीफ़ में और इज़ाफ़ा कर दिया ।" सन्दूक़ वाला येह जवाब देगा : "मैं इस ह़ाल में मरा कि मेरी गरदन पर लोगों के अम्वाल का बोझ (या'नी क़र्ज़) था ।" फिर अपनी अंतड़ियां खींचने वाले के मुतअ़ल्लिक़ कहेंगे : इस बद बख़्त शख़्स का मुआ़मला कैसा है जिस ने हमारी तक्लीफ़ को और बढ़ा दिया ? तो वोह जवाब देगा : "मैं कपड़ों को पेशाब से बचाने की परवाह नहीं करता था ।" फिर जिस के मुंह से ख़ून और पीप बह रही होगी, उस के बारे में कहेंगे : इस बद नसीब का मुआ़मला क्या है जिस ने हमारी तक्लीफ़ को और ज़ियादा कर दिया ? वोह कहेगा : "मैं बद नसीब बुरी बात की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर इस त़रह़ लज़्ज़त उठाता था जैसा कि जिमाअ़ की बातों से ।" फिर जो शख़्स अपना गोश्त खा रहा होगा उस के मुतअ़ल्लिक़ जहन्नमी कहेंगे : इस मरदूद को क्या हुवा जिस ने हमारी तक्लीफ़ में मज़ीद इज़ाफ़ा कर दिया ? तो वोह जवाब देगा : "मैं बद बख़्त ग़ीबत कर के लोगों का

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۳۱، ۲/۱۲، روح البیان، الانعام، تحت الآیۃ: ۳۱، ۳/۲۲، ملتقطاً.

2 .....تفسیر طبری، الانعام، تحت الآیۃ: ۳۱، ۵/۱۷۸، خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۳۱، ۲/۱۲.

www.dawateislami.net

गोश्त खाता और चुग़ली करता था।"[1]

नफ़्स येह क्या ज़ुल्म है जब देखो ताज़ा जुर्म है नातुवां के सर पर इतना बोझ भारी वाह वाह

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَ لَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۳۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और दुन्या की ज़िन्दगी नहीं मगर खेलकूद और बेशक पिछला घर भला उन के लिये जो डरते हैं तो क्या तुम्हें समझ नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और दुन्या की ज़िन्दगी सिर्फ़ खेलकूद है और बेशक आख़िरत वाला घर डरने वालों के लिये बेहतर है तो क्या तुम समझते नहीं ?

﴿وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ﴾ **: और दुन्या की ज़िन्दगी सिर्फ़ खेलकूद है।** इर्शाद फ़रमाया कि दुन्या की ज़िन्दगी सिर्फ़ खेलकूद है जिसे बक़ा नहीं, बहुत जल्द गुज़र जाती है जब कि नेकियां और ताआ़तें अगर्चे मोमिनीन से दुन्या ही में वाक़ेअ़ हों लेकिन वोह उमूरे आख़िरत में से हैं।

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ां नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बड़ी प्यारी बात इर्शाद फ़रमाई, चुनान्चे इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि "दुन्या की ज़िन्दगी वोह है जो नफ़्स की ख़्वाहिशात में गुज़र जाए और जो ज़िन्दगी आख़िरत के लिये तोशा जम्अ़ करने में सर्फ़ हो वोह दुन्या में ज़िन्दगी तो है मगर दुन्या की ज़िन्दगी नहीं लिहाज़ा अम्बिया व सालिह़ीन की ज़िन्दगी दुन्या की नहीं बल्कि दीन की है। ग़रज़े कि ग़ाफ़िल और आ़क़िल की ज़िन्दगियों में बड़ा फ़र्क़ है।"[2]

आख़िरत को भुला देने वाले दुन्यादारों की मिसाल

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस बात को बड़े प्यारे अन्दाज़ में समझाया है चुनान्चे कीमियाए सआ़दत में इर्शाद फ़रमाते हैं : दुन्यादारों का दुन्यवी कारोबार में मश्ग़ूल हो कर आख़िरत को भुला देने की मिसाल ऐसी है जैसे कोई गुरौह किश्ती में सुवार हुवा और वोह किश्ती किसी जज़ीरे पर जा कर रुकी, लोगों ने इस मौक़अ़ को ग़नीमत जाना और ज़रूरी ह़ाजत से फ़ारिग़ होने के लिये जज़ीरे पर उतर गए। मल्लाह़ ने ए'लान किया : यहां ज़ियादा देर नहीं

1 .....رسائل ابن ابی الدنیا، الصمت و آداب اللسان، باب الغیبة و ذمها، ۱۳۲/۷، رقم: ۱۸۷، حلیة الاولیاء، شفی بن ماتع الاصبحی، ۱۹۰/۵، رقم: ٦٧٨٦، الزواجر عن اقتراف الکبائر، الباب الثانی فی الکبائر الظاهرة، الکبیرة الثامنة و التاسعة بعد المائتین، ۱۸/۲-۱۹.

2 ..... نूरुल इरफ़ान, अल अन्आ़म, तह़्तल आयह : 32, स. 208

www.dawateislami.net

रुकेंगे लिहाज़ा वक़्त ज़ाएअ़ किये बिग़ैर सिर्फ़ त़हारत वग़ैरा से फ़ारिग़ हो कर जल्दी वापस पलटें। जज़ीरे में उतरने के बा'द लोग तीन गुरौहों में तक़्सीम हो गए :

(1)..... कुछ लोग जज़ीरे में सैरो सियाह़त और उस के अ़जाइबात देखने में ऐसे मश्ग़ूल हुए कि उन्हें किश्ती में वापस आना याद न रहा ह़त्ता कि वहीं भूक प्यास से एड़ियां रगड़ रगड़ कर मर गए और दरिन्दों की ग़िज़ा बने।

(2)..... अ़क़्ल मन्द लोग अपनी ह़ाजात से जल्दी फ़ारिग़ हो कर किश्ती में अपनी मन पसन्द जगह पर आ कर बैठ गए।

(3)..... कुछ लोग जज़ीरे के अन्वार और अ़जीबो ग़रीब क़िस्म के फूलों, गुन्चों, शगूफ़ों, वहां के परिन्दों के अच्छे नग़मात सुनते और वहां के क़ीमती पथ्थरों को देखते रह गए और उन में से बा'ज़ ऐसे भी थे कि जिन्हों ने सिर्फ़ देखने पर ही इक्तिफ़ा न किया बल्कि वहां से बहुत सी चीज़ें अपने साथ उठा लाए। अब किश्ती में मज़ीद जगह तंग हुई तो अपने साथ लाने वाली अश्या को किश्ती में रखने की जगह न पा सके तो मजबूरन उन्हें सरों पर उठाना पड़ा। अभी दो दिन ही गुज़रे थे कि उन अश्या की रंगत में तब्दीली शुरूअ़ हो गई और ख़ुश्बू की बजाए अब बदबू आने लगी, अब उन्हें कहीं फेंकने की जगह भी न थी नादिमो पशेमान इसी त़रह़ अपने सरों पर उठाने पर मजबूर थे।

पहले गुरौह की मिसाल कुफ़्फ़ारो मुश्रिकीन और बद अ़क़ीदा लोगों की है जिन्हों ने अपने आप को कुल्ली त़ौर पर दुन्या के सिपुर्द कर दिया और इसी के हो कर रह गए, **अल्लाह** तआ़ला और यौमे आख़िरत को फ़रामोश कर दिया, उन्हों ने दुन्या की ज़िन्दगी को आख़िरत के मुक़ाबले में मह़बूब रखा।

दूसरा गुरौह उन अ़क़्ल मन्दों का था जिसे मोमिनीन से ता'बीर किया गया, वोह त़हारत से फ़ारिग़ होते ही किश्ती में सुवार हुए और उ़म्दा सीटों को पा लिया (या'नी जन्नत के मुस्तह़िक़ हुए)।

तीसरे गुरौह की मिसाल ख़त़ाकारों की है कि उन्हों ने ईमान को तो मह़फ़ूज़ रखा मगर दुन्या में मुलव्वस होने से बच न सके।[1]

قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَیَحْزُنُكَ الَّذِیْ یَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا یُكَذِّبُوْنَكَ وَ لٰكِنَّ الظّٰلِمِیْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ یَجْحَدُوْنَ ﴿۳۳﴾

1 .....کیمیائے سعادت، عنوان سوم: معرفت دنیا، فصل چہارم، ۱/۹۵-۹۶، ملخصاً۔

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हमें मा'लूम है कि तुम्हें रन्ज देती है वोह बात जो येह कह रहे हैं तो वोह तुम्हें नहीं झुटलाते बल्कि ज़ालिम **अल्लाह** की आयतों से इन्कार करते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : हम जानते हैं कि इन की बातें तुम्हें रन्जीदा करती हैं तो बेशक येह तुम्हें नहीं झुटलाते बल्कि ज़ालिम **अल्लाह** की आयतों का इन्कार करते हैं।

﴿قَدْ نَعْلَمُ : **हम जानते हैं।**﴾ इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि अख़्नस बिन शरीक़ और अबू जह्ल की आपस में मुलाक़ात हुई तो अख़्नस ने अबू जह्ल से कहा, ऐ अबुल ह़कम ! (कुफ़्फ़ार अबू जह्ल को अबुल ह़कम कहते थे) येह तन्हाई की जगह है और यहां कोई ऐसा नहीं जो मेरी तेरी बात पर मुत्तलअ़ हो सके, अब तू मुझे ठीक ठीक बता कि मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सच्चे हैं या नहीं ? अबू जह्ल ने कहा कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेशक सच्चे हैं, कभी कोई झूटा ह़र्फ़ उन की ज़बान पर नहीं आया मगर बात येह है कि येह क़ुसय (हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आबाओ अज्दाद में से एक बुज़ुर्ग हैं) की औलाद हैं और ह़ज और ख़ानए का'बा के मुतअ़ल्लिक़ तो सारे ए'ज़ाज़ इन्हें ह़ासिल ही हैं, अब नुबुव्वत भी इन्हीं में हो जाए तो बाक़ी क़ुरैशियों के लिये ए'ज़ाज़ क्या रह गया।"[1]

तिरमिज़ी शरीफ़ में ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि अबू जह्ल ने सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कहा, हम आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तक्ज़ीब नहीं करते हम तो उस किताब की तक्ज़ीब करते हैं जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लाए इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई।[2] और **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तसल्ली देते हुए इर्शाद फ़रमाया कि ऐ प्यारे ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, हम जानते हैं कि इन काफ़िरों की बातें आप को रन्जीदा करती हैं लेकिन आप तसल्ली रखें क्यूं कि क़ौम आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सदाक़त का ए'तिक़ाद रखती है इसी लिये पोशीदा तौ़र पर येह लोग आप को नहीं झुटलाते अलबत्ता ह़सद और इ़नाद की वज्ह से येह ज़ालिम लोग अ़लानिया तौ़र पर **अल्लाह** तआ़ला की आयतों का इन्कार करते हैं।[3]

इस आयत के एक मा'ना येह भी होते हैं कि ऐ ह़बीबे अकरम ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप की तक्ज़ीब आयाते इलाहिय्यह की तक्ज़ीब है और तक्ज़ीब करने वाले ज़ालिम हैं या'नी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को झुटलाना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को झुटलाना है।

1 .....تفسیر بغوی، الانعام، تحت الآیۃ: ۳۳، ۲/۷۷.
2 .....ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ الانعام، ۵/۴۵، الحدیث: ۳۰۷۵.
3 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۳۳، ۲/۱۳.

www.dawateislami.net

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰۤى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِی الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۳۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम से पहले रसूल झुटलाए गए तो उन्हों ने सब्र किया उस झुटलाने और ईज़ाएं पाने पर यहां तक कि उन्हें हमारी मदद आई और **अल्लाह** की बातें बदलने वाला कोई नहीं और तुम्हारे पास रसूलों की ख़बरें आ ही चुकी हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और आप से पहले रसूलों को झुटलाया गया तो उन्हों ने झुटलाए जाने और तक्लीफ़ दिये जाने पर सब्र किया यहां तक कि उन के पास हमारी मदद आ गई और कोई **अल्लाह** की बातों को बदलने वाला नहीं और बेशक तुम्हारे पास रसूलों की ख़बरें आ चुकी हैं।

﴿وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ﴾ **: और आप से पहले रसूलों को झुटलाया गया।** रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ल्बे अत्हर की तसल्ली के लिये फ़रमाया गया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप से पहले रसूलों को झुटलाया गया तो उन्हों ने झुटलाए जाने और तक्लीफ़ दिये जाने पर सब्र किया यहां तक कि उन के पास हमारी मदद आ गई और तक्ज़ीब करने वाले हलाक किये गए। लिहाज़ा ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप भी सब्र करें। कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बातों को बदलने वाला नहीं और उस के हुक्म को कोई पलट नहीं सकता। रसूलों की नुसरत और उन की तक्ज़ीब करने वालों का हलाक होना उस ने जिस वक़्त मुक़द्दर फ़रमाया है उस वक़्त ज़रूर होगा। और बेशक तुम्हारे दिल के सुकून के लिये तुम्हारे पास रसूलों की ख़बरें आ चुकी हैं और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जानते हैं कि उन्हें कुफ़्फ़ार से कैसी ईज़ाएं पहुंचीं। येह पेशे नज़र रख कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दिल मुत्मइन रखें। इस आयत में मुबल्लिग़ीन के लिये भी तसल्ली है कि अगर उन्हें राहे तब्लीग़ में मशक़्क़तें पेश आएं तो वोह अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तकालीफ़ को याद कर के सब्र इख़्तियार करें।

www.dawateislami.net

وَ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِیَ نَفَقًا فِی الْاَرْضِ اَوْ سُلَّمًا فِی السَّمَآءِ فَتَاْتِیَهُمْ بِاٰیَةٍ ؕ وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِیْنَ ﴿۳۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर उन का मुंह फेरना तुम पर शाक़ गुज़रा है तो अगर तुम से हो सके तो ज़मीन में कोई सुरंग तलाश कर लो या आस्मान में ज़ीना फिर उन के लिये निशानी ले आओ और **अल्लाह** चाहता तो उन्हें हिदायत पर इकठ्ठा कर देता तो ऐ सुनने वाले तू हरगिज़ नादान न बन।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर उन का मुंह फेरना आप पर शाक़ गुज़रता है तो अगर तुम से हो सके तो ज़मीन में कोई सुरंग या आस्मान में कोई सीढ़ी तलाश कर के उन के पास कोई निशानी ले आओ और अगर **अल्लाह** चाहता तो उन्हें हिदायत पर इकठ्ठा कर देता तो ऐ सुनने वाले ! हरगिज़ बे ख़बर न बन।

﴿وَ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ﴾ : **और अगर तुम पर शाक़ गुज़रता है।** सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बहुत ख़्वाहिश थी कि सब लोग इस्लाम ले आएं। जो इस्लाम से महरूम रहते हैं उन की महरूमी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर बहुत शाक़ रहती थी। इस पर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रन्जो तक्लीफ़ से बचाने के लिये इस अन्दाज़ में फ़रमाया गया कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब लोगों के ईमान लाने की त़रफ़ से उम्मीद मुन्क़त़अ फ़रमा लें और यूं रन्जो ग़म से नजात पाएं, चुनान्चे इस पर जो फ़रमाया गया उस का ख़ुलासा येह है कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, अगर इन काफ़िरों का मुंह फेरना आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बे पनाह रह़मत और शफ़्क़त की वज्ह से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर शाक़ गुज़रता है तो अगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन के ईमान लाने की ख़ातिर ज़मीन में कोई सुरंग या आस्मान में कोई सीढ़ी तलाश कर के इन काफ़िरों के पास इन की कोई मत़लूबा निशानी ला सकते हैं तो ला कर देख लें, येह फिर भी ईमान नहीं लाएंगे। लिहाज़ा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तस्लीमो रिज़ा के मक़ाम पर रह कर इस मुआ़मले को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़वाले कर दें और अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहता तो इन्हें हिदायत पर इकठ्ठा कर देता लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ऐसा नहीं किया।

www.dawateislami.net

وقف مطلق وقف منزل ساس مارسون

اِنَّمَا یَسْتَجِیْبُ الَّذِیْنَ یَسْمَعُوْنَ ؕ وَ الْمَوْتٰى یَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَیْهِ یُرْجَعُوْنَ ﴿۳۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मानते तो वोही हैं जो सुनते हैं और उन मुर्दा दिलों को **अल्लाह** उठाएगा फिर उस की त़रफ़ हांके जाएंगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : सिर्फ़ वोह लोग मानते हैं जो सुनते हैं और **अल्लाह** उन मुर्दा दिलों को उठाएगा फिर उस की त़रफ़ उन्हें लौटाया जाएगा।

﴿اِنَّمَا یَسْتَجِیْبُ الَّذِیْنَ یَسْمَعُوْنَ﴾ **: सिर्फ़ वोह लोग मानते हैं जो सुनते हैं।** इर्शाद फ़रमाया कि सिर्फ़ वोह लोग मानते हैं जो तवज्जोह और ग़ौरो फ़िक्र के साथ दिल लगा कर समझने के लिये सुनते हैं जब कि येह कुफ़्फ़ार तो मुर्दा दिल हैं येह क्या मानेंगे। आख़िरत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन दिल के मुर्दों को उठाएगा और फिर उसी की त़रफ़ इन्हें लौटाया जाएगा और येह अपने आ'माल की जज़ा पाएंगे। वा'ज़ो नसीह़त का असर भी तभी होता है जब आदमी मानने और अ़मल करने के जज़्बे के साथ तवज्जोह के साथ सुने वरना बे तवज्जोही से सुनने का नतीजा आ़म त़ौर पर कुछ भी बरआमद नहीं होता।

وَ قَالُوْا لَوْ لَا نُزِّلَ عَلَیْهِ اٰیَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰۤى اَنْ یُّنَزِّلَ اٰیَةً وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۳۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बोले उन पर कोई निशानी क्यूं न उतरी उन के रब की त़रफ़ से तुम फ़रमाओ कि **अल्लाह** क़ादिर है कि कोई निशानी उतारे लेकिन उन में बहुत निरे जाहिल हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और कहा : उन पर उन के रब की त़रफ़ से कोई निशानी क्यूं नहीं उतरती ? तुम फ़रमा दो कि बेशक **अल्लाह** किसी निशानी के उतारने पर क़ादिर है लेकिन अक्सर लोग बे इ़ल्म हैं।

www.dawateislami.net

﴿وَقَالُوْا﴾ : **और उन्हों ने कहा ।** ﴾ कुफ़्फ़ारे मक्का ने कहा था कि मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर उन के रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ऐसी कोई निशानी क्यूं नहीं उतरती जिस का वोह मुत़ालबा करते हैं । इस पर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाया गया कि उन के जवाब में ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, तुम फ़रमा दो कि बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर क़िस्म की निशानी उतारने पर क़ादिर है लेकिन अक्सर लोग इस बात से बे इ़ल्म हैं कि अगर कोई निशानी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उतार दी तो न मानने की सूरत में फ़ौरी तौ़र पर हलाक कर दिये जाएंगे । कुफ़्फ़ार की गुमराही और उन की सरकशी इस ह़द तक पहुंच गई कि वोह कसीर आयात व मो'जिज़ात जो उन्हों ने सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुशाहदा किये थे उन पर क़नाअ़त न की और सब से मुकर गए और ऐसी निशानी त़लब करने लगे जिस के साथ अ़ज़ाबे इलाही हो जैसा कि उन्हों ने कहा था "اَللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ या रब अगर येह ह़क़ है तेरे पास से तो हम पर आस्मान से पथ्थर बरसा ।"[1] इस पर उन्हें फ़रमाया गया कि येह जाहिल हैं और जानते नहीं कि इस त़रह़ की निशानी का उतरना उन के लिये बला व मुसीबत है कि इन्कार करते ही हलाक कर दिये जाएंगे और अपनी मौत ख़ुद अपने मुंह से मांग रहे हैं । इन मो'जिज़ात का न उतारना भी हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रह़मत की वज्ह से है ।

وَ مَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَ لَا طٰٓىٕرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّاۤ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ﴿۳۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और नहीं कोई ज़मीन में चलने वाला और न कोई परिन्द कि अपने परों उड़ता है मगर तुम जैसी उम्मतें हम ने इस किताब में कुछ उठा न रखा फिर अपने रब की त़रफ़ उठाए जाएंगे ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ज़मीन में चलने वाला कोई जानदार नहीं है और न ही अपने परों के साथ उड़ने वाला कोई परिन्दा है मगर वोह तुम्हारी जैसी उम्मतें हैं । हम ने इस किताब में किसी शै की कोई कमी नहीं छोड़ी । फिर येह अपने रब की त़रफ़ ही उठाए जाएंगे ।

﴿اِلَّاۤ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ﴾ : **मगर वोह तुम्हारी जैसी उम्मतें हैं ।** ﴾ या'नी तमाम जानदार ख़्वाह वोह

1 .....ابو سعود، الانعام، تحت الآية: ٣٧، ٢/١٤٦.

www.dawateislami.net

चौपाए हों या दरिन्दे या परिन्दे, सब तुम्हारी त़रह़ उम्मतें हैं। येह मुमासलत तमाम ए'तिबारात से नहीं बल्कि बा'ज़ ए'तिबार से है और इन वुजूह के बयान में बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि ह़ैवानात तुम्हारी त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पहचानते और उसे वाह़िदो यक्ता जानते, उस की तस्बीह़ पढ़ते और उस की इ़बादत करते हैं। बा'ज़ का क़ौल है कि वोह मख़्लूक़ होने में तुम्हारी मिस्ल हैं। बा'ज़ ने कहा कि वोह इन्सान की त़रह़ बाहमी उल्फ़त रखते और एक दूसरे से समझते समझाते हैं। बा'ज़ का क़ौल है कि रोज़ी त़लब करने, हलाकत से बचने, नर मादा की इम्तियाज़ रखने में तुम्हारी मिस्ल हैं। बा'ज़ ने कहा कि पैदा होने, मरने, मरने के बा'द ह़िसाब के लिये उठने में तुम्हारी मिस्ल हैं।[1]

﴿مَا فَرَّطْنَا فِی الْكِتٰبِ مِنْ شَیْءٍ﴾ **: हम ने इस किताब में किसी शै की कमी नहीं छोड़ी।** ﴾ या'नी जुम्ला उ़लूम और तमाम ''مَا كَانَ وَمَا يَكُوْنُ'' का इस में बयान है और जमीअ़ अश्या का इ़ल्म इस में है। इस किताब से येह क़ुरआने करीम मुराद है या लौह़े मह़फ़ूज़।[2] इस से **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इ़ल्मे कुल्ली साबित हुवा क्यूं कि सारे उ़लूम लौह़े मह़फ़ूज़ या क़ुरआन में हैं और येह किताबें ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़ल्म में हैं।

﴿ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ یُحْشَرُوْنَ﴾ **: फिर येह अपने रब की त़रफ़ उठाए जाएंगे।** ﴾ तमाम इन्सान, जानवर, परिन्दे क़ियामत के दिन उठाए जाएंगे। इन्सान तो जन्नत या जहन्नम में जाएंगे जब कि जानवर और परिन्दों का ह़िसाब होगा इस के बा'द वोह ख़ाक कर दिये जाएंगे।[3]

क़ियामत के दिन जानवरों का भी ह़िसाब होगा

इस से मा'लूम हुवा कि क़ियामत के दिन इन्सानों और जिन्नों के इ़लावा जानवरों और परिन्दों का भी ह़िसाब होगा। बा'ज़ अह़ादीस में भी येह बात बयान की गई है, चुनान्चे

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़ियामत के दिन तुम लोग ज़रूर ह़क़दारों को उन के ह़ुक़ूक़ सिपुर्द करोगे ह़त्ता कि बे सींग बकरी का सींग वाली बकरी से बदला लिया जाएगा।''[4]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : क़ियामत के दिन ज़मीन खिच

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیة: ٣٨، ٢/١٥.
2 .....جمل، الانعام، تحت الآیة: ٣٨، ٢/٣٤٥.
3 .....تفسیر بغوی، الانعام، تحت الآیة: ٣٨، ٢/٧٨.
4 .....مسلم، کتاب البر و الصلة و الآداب، باب تحریم الظلم، ص١٣٩٤، الحدیث: ٦٠(٢٥٨٢).

www.dawateislami.net

कर चमड़े की त़रह़ दराज़ हो जाएगी और **अल्लाह** तआ़ला इन्सानों, जिन्नों, चौपायों और वह़शी जानवरों अल ग़रज़ तमाम मख़्लूक़ को जम्अ़ फ़रमाएगा, उस दिन **अल्लाह** तआ़ला जानवरों के दरमियान भी क़िसास रखेगा यहां तक कि बे सींग वाली बकरी का सींग वाली बकरी से बदला लिया जाएगा, फिर उन्हें कहा जाएगा कि तुम सब मिट्टी हो जाओ। उस वक़्त काफ़िर येह तमन्ना करेगा कि काश मैं भी मिट्टी हो जाता।[1]

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِي الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ؕ وَمَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۳۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं बहरे और गूंगे हैं अंधेरों में **अल्लाह** जिसे चाहे गुमराह करे और जिसे चाहे सीधे रस्ते डाल दे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं वोह बहरे और गूंगे हैं, अंधेरों में (हैं।) **अल्लाह** जिसे चाहे गुमराह करे और जिसे चाहे सीधे रास्ते पर डाल दे।

﴿وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا﴾ **: और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं।** इर्शाद फ़रमाया कि जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं वोह बहरे और गूंगे हैं क्यूं कि ह़क़ मानना और ह़क़ बोलना उन्हें मुयस्सर नहीं और वोह जहालत, ह़ैरत और कुफ़्र के अंधेरों में पड़े हुए हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहे गुमराह करे और जिसे चाहे सीधे रास्ते पर डाल दे और इस्लाम की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۴۰﴾ بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ اِنْ شَآءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ﴿۴۱﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर तुम पर **अल्लाह** का अ़ज़ाब आए या क़ियामत क़ाइम हो क्या **अल्लाह** के सिवा किसी और को पुकारोगे अगर सच्चे हो।

ع ۴ ۱۱ ۱۰

1 .....مستدرك، كتاب الاهوال، جعل الله القصاص بين الدواب، ٥/٧٩٤، الحديث: ٨٧٥٦.

www.dawateislami.net

बल्कि उसी को पुकारोगे तो वोह अगर चाहे जिस पर उसे पुकारते हो उसे उठा ले और शरीकों को भूल जाओगे ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ, भला बताओ कि अगर तुम पर **अल्लाह** का अ़ज़ाब आ जाए या तुम पर क़ियामत आ जाए तो क्या **अल्लाह** के सिवा किसी और को पुकारोगे ? अगर तुम सच्चे हो । बल्कि तुम उसी (**अल्लाह**) को पुकारोगे तो अगर **अल्लाह** चाहे तो वोह मुसीबत हटा दे जिस की त़रफ़ तुम उसे पुकारोगे और तुम शरीकों को भूल जाओगे ।

﴿قُلْ : **तुम फ़रमाओ ।**﴾ इस आयत और इस के बा'द वाली आयत में फ़रमाया गया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप इन मुश्रिकों से फ़रमाएं कि भला बताओ कि अगर तुम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब आ जाए या तुम पर क़ियामत आ जाए तो क्या उस वक़्त भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी और को पुकारोगे ? और जिन को दुन्या में मा'बूद मानते थे उन से ह़ाजत रवाई चाहोगे ? अगर तुम अपने इस दा'वे में कि مَعَاذَاللہ बुत मा'बूद हैं, सच्चे हो तो उस वक़्त उन्हें पुकारो मगर ऐसा न करोगे बल्कि तमाम होलनाकियों और तक्लीफ़ों में तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही को पुकारोगे तो अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे तो तुम से वोह मुसीबत हटा दे जिस को दूर करने की त़रफ़ तुम उसे पुकारोगे और अगर वोह चाहे तो उस मुसीबत को दूर न करे और उस वक़्त तुम उन बुतों को भूल जाओगे जिन्हें तुम ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का शरीक क़रार देते थे और जिन्हें अपने ए'तिक़ादे बात़िल में तुम मा'बूद जानते थे और उन की त़रफ़ इल्तिफ़ात भी न करोगे क्यूं कि तुम्हें मा'लूम है कि वोह तुम्हारे काम नहीं आ सकते ।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿۴۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक हम ने तुम से पहली उम्मतों की त़रफ़ रसूल भेजे तो उन्हें सख़्ती और तक्लीफ़ से पकड़ा कि वोह किसी त़रह़ गिड़गिड़ाएं ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक हम ने तुम से पहली उम्मतों की त़रफ़ रसूल भेजे तो उन्हें सख़्ती और तक्लीफ़ में गिरिफ़्तार कर दिया ताकि वोह किसी त़रह़ गिड़गिड़ाएं ।

www.dawateislami.net

﴿وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا﴾ : **और हम ने रसूल भेजे ।﴾** इर्शाद फ़रमाया कि हम ने तुम से पहली उम्मतों की त़रफ़ रसूल भेजे लेकिन लोग उन पर ईमान नहीं लाए तो हम ने उन्हें सख़्ती और तक्लीफ़ में गिरिफ़्तार कर दिया और फ़क़्रो इफ़्लास और बीमारी वग़ैरा में मुब्तला किया ताकि वोह किसी त़रह़ गिड़गिड़ाएं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ करें और अपने गुनाहों से बाज़ आएं। इस से मा'लूम हुवा कि दुन्या में तकालीफ़ और मुसीबतें बा'ज़ अवक़ात रब عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बन जाती हैं कि बन्दों को रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह करती हैं और सालिह़ीन के दरजात बुलन्द करती हैं।

فَلَوْلَآ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۴۳﴾ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوْا بِمَاۤ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ﴿۴۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्यूं न हुवा कि जब उन पर हमारा अ़ज़ाब आया तो गिड़गिड़ाए होते लेकिन उन के तो दिल सख़्त हो गए और शैत़ान ने उन के काम उन की निगाह में भले कर दिखाए। फिर जब उन्हों ने भुला दिया जो नसीह़तें उन को की गई थीं हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये यहां तक कि जब ख़ुश हुए उस पर जो उन्हें मिला तो हम ने अचानक उन्हें पकड़ लिया अब वोह आस टूटे रह गए।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो क्यूं ऐसा न हुवा कि जब उन पर हमारा अ़ज़ाब आया तो गिड़गिड़ाते लेकिन उन के तो दिल सख़्त हो गए थे और शैत़ान ने उन के आ'माल उन के लिये आरास्ता कर दिये थे। फिर जब उन्हों ने उन नसीह़तों को भुला दिया जो उन्हें की गई थीं तो हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये यहां तक कि जब वोह उस पर ख़ुश हो गए जो उन्हें दी गई तो हम ने अचानक उन्हें पकड़ लिया पस अब वोह मायूस हैं।

﴿فَلَوْلَآ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا﴾ : **तो क्यूं ऐसा न हुवा कि जब उन पर हमारा अ़ज़ाब आया तो गिड़गिड़ाते ।﴾** इस आयत और इस के बा'द वाली आयत में मज्मूई तौ़र पर येह फ़रमाया गया

www.dawateislami.net

कि ऐसा क्यूं न हुवा कि जब उन पर हमारा अ़ज़ाब आया तो वोह गिड़गिड़ाते ताकि हम उन्हें तौबा का मौक़अ़ देते लेकिन उन के तो दिल सख़्त हो गए थे और शैत़ान ने उन के आ'माल उन के लिये आरास्ता कर दिये थे फिर जब उन्हों ने उन नसीह़तों को भुला दिया जो उन्हें की गई थीं और वोह किसी त़रह़ नसीह़त क़बूल करने की त़रफ़ न आए, न तो पेश आने वाली मुसीबतों से और न अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नसीह़तों से, तो हम ने उन पर हर चीज़ या'नी सिह़्ह़तो सलामत और वुस्अ़ते रिज़्क़ व ऐ़श वग़ैरा के दरवाज़े खोल दिये यहां तक कि जब वोह इस ऐ़शो इ़शरत पर ख़ुश हो गए और अपने आप को इस का मुस्तह़िक़ समझने लगे और क़ारून की त़रह़ तकब्बुर करने लगे तो हम ने अचानक उन्हें पकड़ लिया और उन्हें मुब्तलाए अ़ज़ाब कर दिया और अब वोह हर भलाई से मायूस हैं।

अल्लाह तआ़ला की ने'मत पर ख़ुश होने का ह़ुक्म

याद रहे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत पर ख़ुश होना अगर फ़ख़्र, तकब्बुर और शैख़ी के त़ौर पर हो तो बुरा है और कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा है और अगर शुक्र के त़ौर पर हो तो बेहतर है और सालिह़ीन का त़रीक़ा बल्कि ह़ुक्मे इलाही है, जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अपने रब की ने'मत का ख़ूब चरचा करो।

और इर्शाद फ़रमाता है :

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ : **अल्लाह** के फ़ज़्ल और उस की रह़मत पर ही ख़ुशी मनानी चाहिये।

कुफ़्र और गुनाहों के बा वुजूद दुन्यवी ख़ुशह़ाली का अस्ली सबब

इस आयत से मा'लूम हुवा कि कुफ़्र और गुनाहों के बा वुजूद दुन्यावी राह़तें मिलना दर अस्ल **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से ढील और उस का ग़ज़ब व अ़ज़ाब है कि इस से इन्सान और ज़ियादा ग़ाफ़िल हो कर गुनाह पर दिलेर हो जाता है बल्कि कभी ख़याल करता है कि गुनाह अच्छी चीज़ है वरना मुझे येह ने'मतें न मिलतीं और येह कुफ़्र है।

ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :''जब तुम येह देखो कि **अल्लाह** तआ़ला बन्दों को उन के

(1) ..... والضحی: ۱۱. (2) ..... یونس: ۵۸.

www.dawateislami.net

गुनाहों के बा वुजूद उन की पसन्द के मुताबिक़ अ़ता फ़रमा रहा है तो येह उन के लिये सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से इस्तिद्राज और ढील है।" फिर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयत तिलावत फ़रमाई :

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَیْءٍ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوْا بِمَاۤ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर जब उन्हों ने उन नसीह़तों को भुला दिया जो उन्हें की गई थीं तो हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये यहां तक कि जब वोह उस पर ख़ुश हो गए जो उन्हें दी गई तो हम ने अचानक उन्हें पकड़ लिया पस अब वोह मायूस हैं।[1]

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : "ख़ुदा की क़सम जिस शख़्स को **अल्लाह** तआ़ला ने दुन्या में वुस्अ़त अ़ता फ़रमाई और उसे येह ख़ौफ़ न हो कि कहीं इस में उस के लिये **अल्लाह** तआ़ला की कोई ख़ुफ़्या तदबीर न हो तो बेशक उस का अ़मल नाक़िस और उस की फ़िक्र कमज़ोर है और जिस शख़्स से **अल्लाह** तआ़ला ने वुस्अ़त रोक ली और उस ने येह गुमान न किया कि वुस्अ़त रोकने में उस के लिये कोई भलाई होगी तो बेशक उस का अ़मल नाक़िस और उस की फ़िक्र कमज़ोर है।"[2]

इस से उन नाम निहाद दानिश्वरों को भी सबक़ ह़ासिल करना चाहिये जो काफ़िरों की तरक़्क़ी देख कर इस्लाम से ही नाराज़ हो जाते हैं और मुसल्मानों की मईशत का रोना रोते हुए उन्हें कुफ़्फ़ार की अन्धी तक़्लीद का दर्स देते हैं और इस्लामी शर्मो ह़या और तिजारत के शरई क़वानीन को लात मारने का मश्वरा देते हैं।

فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا ؕ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۴۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो जड़ काट दी गई ज़ालिमों की और सब ख़ूबियों सराहा **अल्लाह** रब सारे जहान का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : पस ज़ालिमों की जड़ काट दी गई और तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** के लिये हैं जो तमाम जहानों को पालने वाला है।

﴿فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا﴾ **: तो ज़ालिमों की जड़ काट दी गई।** ﴾ इर्शाद फ़रमाया कि ईमान की बजाए कुफ़्र इख़्तियार करने और इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी करने की बजाए गुनाहों में

1 .....مسند امام احمد، مسند الشاميين، حديث عقبة بن عامر الجهني، ۶/۱۲۲، الحديث: ۱۷۳۱۳.

2 .....تفسير قرطبي، الانعام، تحت الآية: ۴۴، ۳/۲۶۵، الجزء السادس.

www.dawateislami.net

मसरूफ़ होने की वज्ह से ज़ालिमों की जड़ काट दी गई और सब के सब हलाक कर दिये गए, उन में से कोई बाक़ी न छोड़ा गया।

﴿وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾ : **और तमाम ख़ूबियां अल्लाह के लिये हैं जो तमाम जहानों को पालने वाला है।** या'नी **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द है इस पर कि उस ने दुश्मनों को हलाक किया और उन की जड़ काट दी। इस आयत में येह भी ता'लीम है कि लोग ज़ालिमों की हलाकत पर **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द करें और उस का शुक्र बजा लाएं।[1]

बेदीनों और ज़ालिमों की हलाकत अल्लाह तआ़ला की ने'मत है

इस से मा'लूम हुवा कि गुमराहों, बेदीनों और ज़ालिमों की हलाकत **अल्लाह** तआ़ला की बहुत बड़ी ने'मत है इस पर शुक्र करना चाहिये। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ की सीरते मुबारका में इस की कई मिसालें मौजूद हैं चुनान्चे

अबू जह्ल के क़त्ल पर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सज्दए शुक्र अदा किया।[2]

आ़शूरा के दिन नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रोज़ा रखने का हुक्म दिया कि इस दिन फ़िरऔ़न हलाक हुवा।[3]

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने यमामा की फ़त्ह़ और मुसैलमा कज़्ज़ाब के मरने की ख़बर मिलने पर सज्दए शुक्र किया और ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने जब (ख़ारिजिय्यों के दरमियान) ज़ुस्सदिय्यह या'नी दो पिस्तानों वाले मर्द को मुर्दा पाया तो सज्दए शुक्र किया।[4]

लिहाज़ा मोमिन की वफ़ात पर "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ" पढ़िये और मूज़ी काफ़िर की मौत पर "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ" पढ़िये।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿۴۶﴾

1 .....تفسیر سمرقندی، الانعام، تحت الآیۃ: ۴۵، ۱/۴۸۵. 2 .....سیرت حلبیہ، باب غزوۃ بدر الکبری، ۲/۲۳۶.
3 .....مسلم، کتاب الصیام باب صوم یوم عاشوراء، ص۵۷۲، الحدیث: ۱۲۸ (۱۱۳۰).
4 .....فتح القدیر، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، ۱/۴۵۷.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर **अल्लाह** तुम्हारे कान आंख ले ले और तुम्हारे दिलों पर मोहर कर दे तो **अल्लाह** के सिवा कौन ख़ुदा है कि तुम्हें येह चीज़ें ला दे देखो हम किस किस रंग से आयतें बयान करते हैं फिर वोह मुंह फेर लेते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ, (ऐ लोगो !) भला बताओ कि अगर **अल्लाह** तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखें ले ले और तुम्हारे दिलों पर मोहर लगा दे तो **अल्लाह** के सिवा कौन मा'बूद है जो तुम्हें येह चीज़ें ला देगा ? देखो हम कैसे बार बार निशानियां बयान करते हैं फिर (भी) येह लोग मुंह फेरते हैं।

﴿قُلْ اَرَءَيْتُمْ﴾ **: तुम फ़रमाओ, (ऐ लोगो !) भला बताओ ।﴾** यहां तौह़ीदे बारी तआ़ला की दलील पेश की जा रही है और फ़रमाया जा रहा है कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखें ले ले और तुम्हारे दिलों पर मोहर लगा दे और इल्मो मा'रिफ़त का तमाम निज़ाम दरहम बरहम हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कौन मा'बूद है जो तुम्हें येह चीज़ें ला देगा ? इस का जवाब येही है कि कोई नहीं, तो अब तौह़ीद पर क़वी दलील क़ाइम हो गई कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इतनी क़ुदरतो इख़्तियार वाला नहीं तो इबादत का मुस्तह़िक़ सिर्फ़ वोही है और शिर्क बद तरीन ज़ुल्म व जुर्म है।

﴿اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ﴾ **: देखो हम कैसे बार बार निशानियां बयान करते हैं ।﴾** या'नी ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप देखें कि कभी हम उन्हें अपनी ने'मतें याद दिला कर ईमान लाने की तरग़ीब देते हैं, कभी साबिक़ा उम्मतों पर आने वाले अ़ज़ाबात याद दिला कर और कभी इस बात से डराते हैं कि हम चाहें तो इन के कानों, आंखों और दिलों को बेकार कर दें और कभी उन के सामने अपनी उलूहिय्यत, क़ुदरत और वह़दानिय्यत पर दलाइल पेश करते हैं ताकि येह किसी त़रह़ ईमान ले आएं लेकिन इन का ह़ाल येह है कि येह उन निशानियों से मुंह फेर लेते हैं और ईमान नहीं लाते।[1]

قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۴۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर तुम पर **अल्लाह** का अ़ज़ाब

1 .....البحر المحيط، الانعام، تحت الآية: ٤٦، ٤/١٣٥، ملخصاً.

www.dawateislami.net

आए अचानक या ख़ुल्लम ख़ुल्ला तो कौन तबाह होगा सिवा ज़ालिमों के।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ, भला बताओ की अगर तुम पर अचानक या ख़ुल्लम ख़ुल्ला **अल्लाह** का अ़ज़ाब आ जाए तो ज़ालिमों के सिवा कौन तबाह किया जाएगा ?

﴿قُلْ اَرَءَیْتَكُمْ﴾ **: तुम फ़रमाओ, भला बताओ ।﴾** इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला का अ़ज़ाब आने की दो क़िस्में बयान की गई हैं **:**

(1)..... अचानक आने वाला अ़ज़ाब । येह वोह अ़ज़ाब है जो पेशगी अ़लामतों के बिग़ैर आता है और इस के ज़रीए़ कुफ़्फ़ार को तबाहो बरबाद कर दिया जाता है।

(2)..... ख़ुल्लम ख़ुल्ला आने वाला अ़ज़ाब । येह वोह अ़ज़ाब है जिस के आने से पहले उस की अ़लामतें नुमूदार होती हैं ताकि लोग अगर उस अ़ज़ाब से बचना चाहें तो अपने कुफ़्र और सरकशी से तौबा कर के बच सकते हैं और अगर वोह तौबा न करें तो उन्हें अ़ज़ाब में मुब्तला कर के तबाह कर दिया जाता है।

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِیْنَ اِلَّا مُبَشِّرِیْنَ وَمُنْذِرِیْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ
فَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَالَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا یَمَسُّهُمُ
الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا یَفْسُقُوْنَ ﴿۴۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम नहीं भेजते रसूलों को मगर ख़ुशी और डर सुनाते तो जो ईमान लाए और संवरे उन को न कुछ अन्देशा न कुछ ग़म। और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं उन्हें अ़ज़ाब पहुंचेगा बदला उन की बे हुक्मी का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम रसूलों को इसी ह़ाल में भेजते हैं कि वोह ख़ुश ख़बरी देने वाले और डर सुनाने वाले होते हैं तो जो ईमान लाएं और अपनी इस्लाह़ कर लें तो उन पर न कुछ ख़ौफ़ है और न वोह ग़मगीन होंगे। और जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया तो उन्हें उन की मुसल्सल ना फ़रमानी के सबब अ़ज़ाब पहुंचेगा।

﴿وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِیْنَ اِلَّا مُبَشِّرِیْنَ﴾ **: और हम रसूलों को इसी ह़ाल में भेजते हैं कि वोह ख़ुश ख़बरी देने वाले होते हैं ।﴾** इस आयत और इस के बा'द वाली आयत का ख़ुलासा येह है कि

www.dawateislami.net

हम अपने रसूलों को इस लिये नहीं भेजते कि कुफ़्फ़ार उन से अपनी मन मरज़ी के मो'जिज़ात त़लब करते फिरें बल्कि इस लिये भेजते हैं कि वोह अपनी क़ौम को इत़ाअ़त पर सवाब की बिशारत और ना फ़रमानी करने पर अ़ज़ाब की वईद सुनाएं तो जो अपने कुफ़्र को छोड़ कर उन पर ईमान ले आया और उस ने अपने आ'माल की इस्लाह़ कर ली तो उन पर दुन्यवी या उख़्रवी अ़ज़ाब का कोई ख़ौफ़ है और न वोह सवाब ज़ाएअ़ होने के अन्देशे से ग़मगीन होंगे और जिन्हों ने हमारी उन आयतों को झुटलाया जो हमारे रसूलों ने उन के सामने बयान कीं तो उन्हें उन की मुसल्सल ना फ़रमानी के सबब अ़ज़ाब पहुंचेगा।[1]

उख़्रवी नजात के लिये क्या चीज़ ज़रूरी है

इस से मा'लूम हुवा कि उख़्रवी नजात के लिये ईमान और नेक आ'माल दोनों ज़रूरी हैं, ईमान लाने के बा'द ख़ुद को नेक आ'माल से बे नियाज़ समझने वाले और ईमान क़बूल किये बिग़ैर अच्छे आ'माल को अपनी नजात के लिये काफ़ी समझने वाले दोनों अह़मक़ों की दुन्या के बासी हैं अलबत्ता इन दोनों सूरतों में साह़िबे ईमान क़त़्अ़न बे ईमान से बेहतर है।

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब बन्दा ईमान लाता है और उस के बा'द अच्छे आ'माल करता और बुराइयों से बाज़ रहता है नीज़ उम्मीद और ख़ौफ़ के दरमियान इस त़रह़ मुतरद्दिद रहता है कि उसे अ़मल क़बूल न होने का डर होता है और वोह इस बात से डरता है कि वोह हमेशा नेक अ़मल न कर सके और उस का ख़ातिमा अच्छा न हो लेकिन इस के साथ साथ **अल्लाह** तआ़ला से इस बात की उम्मीद भी रखता है कि वोह इसे मज़बूत़ और साबित क़ौल पर साबित क़दम रखेगा, इस के दीन को मौत की सख़्तियों से बचाएगा ह़त्ता कि वोह तौह़ीद पर दुन्या से रुख़्सत हो जाएगा और बाक़ी की ज़िन्दगी इस के दिल को ख़्वाहिशात से मह़फ़ूज़ रखेगा ताकि वोह गुनाह की त़रफ़ माइल न हो तो ऐसा आदमी अ़क़्ल मन्द है लेकिन इस के इ़लावा वोह लोग धोके में हैं और अ़न्क़रीब अ़ज़ाब को देखेंगे तो उन्हें मा'लूम हो जाएगा कि कौन शख़्स सब से ज़ियादा भटका हुवा था और कुछ वक़्त के बा'द इस की ख़बर तुम ज़रूर जान लोगे, उस वक़्त वोह कहेंगे

رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ[2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ हमारे रब ! हम ने देखा और सुना तो हमें वापस भेज दे ताकि नेक काम करें, बेशक हम यक़ीन करने वाले हैं।

या'नी हमें मा'लूम हो गया है कि जिस त़रह़ ज़मीन में बीज डाले और हल चलाए बिग़ैर फ़स्ल पैदा नहीं होती इसी त़रह़ आख़िरत में अज्रो सवाब अच्छे अ़मल के बिग़ैर नहीं

1 .....روح البيان، الانعام، تحت الآية: ٤٨، ٣/٣٢. 2 .....سجدة: ١٢.

www.dawateislami.net

मिलता, ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, तू हमें वापस भेज दे, हम अच्छे अ़मल करेंगे, अब हमें तेरी इस बात की सदाक़त मा'लूम हो गई

وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ﴿۳۹﴾ وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और येह कि इन्सान के लिये वोही होगा जिस की उस ने कोशिश की । और येह कि उस की कोशिश अ़न्क़रीब देखी जाएगी।

(लेकिन उस वक़्त उन की येह बातें उन्हें कोई फ़ाएदा न देंगी और न ही उन्हें वापस भेजा जाएगा) ।(2)

قُلْ لَّاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآىٕنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ؕ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۵۰﴾ ع ۵ ۱۱

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमा दो मैं तुम से नहीं कहता मेरे पास **अल्लाह** के ख़ज़ाने हैं और न येह कहूं कि मैं आप ग़ैब जान लेता हूं और न तुम से येह कहूं कि मैं फ़िरिश्ता हूं मैं तो उसी का ताबेअ़ हूं जो मुझे वही आती है तुम फ़रमाओ क्या बराबर हो जाएंगे अन्धे और अंख्यारे तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (ऐ ह़बीब !) तुम फ़रमा दो : मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास **अल्लाह** के ख़ज़ाने हैं और न येह कहता हूं कि मैं ख़ुद ग़ैब जान लेता हूं और न तुम से येह कहता हूं कि मैं फ़िरिश्ता हूं । मैं तो सिर्फ़ उस वही का पैरौकार हूं जो मेरी त़रफ़ आती है । तुम फ़रमाओ, क्या अन्धा और देखने वाला बराबर हो सकते हैं ? तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते ?

﴿قُلْ﴾ **: तुम फ़रमाओ ।** ﴾ कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा था कि वोह **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से त़रह़ त़रह़ के सुवाल किया करते थे, कभी कहते कि आप रसूल हैं तो हमें बहुत सी दौलत और माल दे दीजिये ताकि हम कभी मोह़ताज न हों और हमारे लिये पहाड़ों को सोना कर दीजिये । कभी कहते कि गुज़श्ता और आयिन्दा की ख़बरें सुनाइये और हमें हमारे मुस्तक़्बिल की ख़बर दीजिये कि क्या क्या पेश आएगा ? ताकि हम मनाफ़ेअ़ ह़ासिल कर लें और नुक़्सानों से बचने के लिये पहले से इन्तिज़ाम कर लें । कभी कहते हमें क़ियामत का वक़्त बता दें कि कब आएगी ? कभी कहते आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कैसे रसूल हैं जो खाते पीते भी हैं और निकाह़

(1) ……نجم:۳۹، ۴۰ . (2) ……احیاء علوم الدین، کتاب ذم الغرور، بیان ذم الغرور وحقیقته وامثلته، ۳/۴۷۲-۴۷۳ .

www.dawateislami.net

भी करते हैं। उन की इन तमाम बातों का इस आयत में जवाब दिया गया कि तुम्हारा येह कलाम निहायत बे महल और जाहिलाना है क्यूं कि जो शख़्स किसी चीज़ का दा'वा करता हो उस से वोही बातें दरयाफ़्त की जा सकती हैं जो उस के दा'वे से तअ़ल्लुक़ रखती हों, ग़ैर मुतअ़ल्लिक़ बातों का दरयाफ़्त करना और उन को उस के दा'वे के ख़िलाफ़ दलील व हुज्जत बनाना इन्तिहा दरजे की जहालत है। इस लिये इर्शाद हुवा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमा दीजिये कि मेरा दा'वा येह तो नहीं कि मेरे पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ज़ाने हैं जो तुम मुझ से मालो दौलत का सुवाल करो और अगर मैं तुम्हारी मरज़ी के मुताबिक़ तुम्हारा दा'वा पूरा न करूं तो तुम रिसालत के मुन्किर हो जाओ और न मेरा दा'वा ज़ाती ग़ैबदानी का है कि अगर मैं तुम्हें गुज़श्ता या आयिन्दा की ख़बरें न बताऊं तो मेरी नुबुव्वत मानने में बहाना कर सको। नीज़ न मैं ने फ़िरिश्ता होने का दा'वा किया है कि खाना पीना और निकाह़ करना क़ाबिले ए'तिराज़ हो तो जिन चीज़ों का दा'वा ही नहीं किया, उन का सुवाल करना ही बे मौक़अ़ महल है और ऐसे सुवाल को पूरा करना भी मुझ पर लाज़िम नहीं। मेरा दा'वा तो नुबुव्वत व रिसालत का है और जब इस पर ज़बर दस्त दलीलें और क़वी बुरहानें क़ाइम हो चुकीं तो ग़ैर मुतअ़ल्लिक़ बातें पेश करना क्या मा'ना रखता है।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इल्मे ग़ैब का इन्कार करने वालों का रद

इस से साफ़ वाज़ेह़ हो गया कि इस आयते करीमा को ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़ैब पर मुत्तलअ़ किये जाने की नफ़ी के लिये सनद बनाना ऐसा ही बे महल है जैसा कुफ़्फ़ार का इन सुवालात को इन्कारे नुबुव्वत की दस्तावेज़ बनाना बे महल था। मज़्कूरा बाला कलाम को पढ़ने के बा'द अब दोबारा आयत का तरजमा पेश किया जाता है, इसे पढ़ें और ग़ौर करें कि क्या वाक़ेई आयत में येही बयान नहीं किया गया, फ़रमाया : **(ऐ ह़बीब !) तुम फ़रमा दो : मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न येह कहता हूं कि मैं ख़ुद ग़ैब जान लेता हूं और न तुम से येह कहता हूं कि मैं फ़िरिश्ता हूं। मैं तो सिर्फ़ उस वह़ी का पैरौकार हूं जो मेरी त़रफ़ आती है।** और येही नबी का काम है लिहाज़ा मैं तुम्हें वोही दूंगा जिस की मुझे इजाज़त होगी और वोही बताऊंगा जिस की इजाज़त होगी और वोही करूंगा जिस का मुझे हुक्म मिला हो। इस आयत से हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इल्मे अ़त़ाई की नफ़ी किसी त़रह़ मुराद ही नहीं हो सकती क्यूं कि इस सूरत में आयतों में तआ़रुज़ का क़ाइल होना पड़ेगा और वोह बिल्कुल बात़िल है।[1]

अ़ल्लामा निज़ामुद्दीन ह़सन बिन मुह़म्मद नैशापूरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इसी आयत की

1 .....خازن، الانعام، تحت الآية: ٥٠، ٢/١٧، مدارك، الانعام، تحت الآية: ٥٠، ص٣٢٢، جمل، الانعام، تحت الآية: ٥٠، ٢/٣٥٣، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : इर्शाद हुवा कि ''ऐ नबी ! फ़रमा दो कि मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास **अल्लाह** तआ़ला के ख़ज़ाने हैं'' यहां येह नहीं फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला के ख़ज़ाने मेरे पास नहीं (बल्कि येह फ़रमाया कि मैं तुम से येह नहीं कहता कि मेरे पास **अल्लाह** तआ़ला के ख़ज़ाने हैं) ताकि मा'लूम हो जाए कि **अल्लाह** तआ़ला के ख़ज़ाने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास हैं मगर हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों से उन की समझ के क़ाबिल बातें फ़रमाते हैं (इस लिये आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से ऐसा फ़रमाया) और वोह ख़ज़ाने ''तमाम अश्या की ह़क़ीक़त व माहियत का इ़ल्म'' हैं, हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसी के मिलने की दुआ़ की और **अल्लाह** तआ़ला ने क़बूल फ़रमाई। फिर फ़रमाया : मैं नहीं जानता या'नी तुम से नहीं कहता कि मुझे ग़ैब का इ़ल्म है, वरना हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो ख़ुद फ़रमाते हैं : मुझे मा का-न व मा यकून का इ़ल्म मिला या'नी जो कुछ हो गुज़रा और जो कुछ क़ियामत तक होने वाला है सब का इ़ल्म मुझे अ़त़ा किया गया।[1]

इस आयत के आख़िर में फ़रमाया कि क्या अन्धा और देखने वाला बराबर हैं ? इस से मुराद येह है कि क्या मोमिन व काफ़िर और आ़लिम व जाहिल बराबर हैं या'नी हरगिज़ बराबर नहीं हैं।

وَ اَنْذِرْ بِهِ الَّذِیْنَ یَخَافُوْنَ اَنْ یُّحْشَرُوْۤا اِلٰى رَبِّهِمْ لَیْسَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِیٌّ وَّ لَا شَفِیْعٌ لَّعَلَّهُمْ یَتَّقُوْنَ ﴿۵۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और इस क़ुरआन से उन्हें डराओ जिन्हें ख़ौफ़ हो कि अपने रब की त़रफ़ यूं उठाए जाएं कि **अल्लाह** के सिवा न उन का कोई ह़िमायती हो न कोई सिफ़ारिशी इस उम्मीद पर कि वोह परहेज़ गार हो जाएं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और इस क़ुरआन से उन लोगों को डराओ जो इस बात से डरते हैं कि उन्हें उन के रब की त़रफ़ यूं उठाया जाएगा कि **अल्लाह** के सिवा न उन का कोई ह़िमायती होगा और न कोई सिफ़ारिशी। (उन्हें) इस उम्मीद पर (डराओ) कि येह परहेज़ गार हो जाएं।

﴿وَ اَنْذِرْ بِهِ الَّذِیْنَ یَخَافُوْنَ﴾ **: और इस क़ुरआन से उन्हें डराओ जिन्हें ख़ौफ़ हो।** इस से पहले येह बयान हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला के रसूलों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मन्सब बिशारत देना और डर सुनाना है और इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़ुक्म दिया कि वोह भी लोगों को डर सुनाएं, चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم,

1 .....تفسیر نیشاپوری، الانعام، تحت الآیۃ: ۵۰، ۳/۸۳.

www.dawateislami.net

आप इस क़ुरआन में ज़िक्र किये गए अ़ज़ाबात से उन लोगों को डराएं जो इस बात से डरते हैं कि उन्हें उन के रब की त़रफ़ यूं उठाया जाएगा कि **अल्लाह** तआ़ला के मुक़ाबले में उन का कोई ह़िमायती और सिफ़ारिशी न होगा। आप लोगों को इस उम्मीद पर डराएं कि येह कुफ़्र और गुनाहों को छोड़ कर परहेज़ गार बन जाएं।[1]

क़ियामत के दिन शफ़ाअ़त

याद रहे कि क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में कोई किसी का ह़िमायती और सिफ़ारिशी न होगा हां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इजाज़त से ह़िमायती व सिफ़ारिशी होंगे जैसे अम्बिया, औलिया, शुहदा, सुलह़ा, उ़लमा और ह़ुज्जाजे किराम वग़ैरहा, येह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़ज़्न और उस की इजाज़त से लोगों की ह़िमायत और सिफ़ारिश करेंगे। अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم की शफ़ाअ़त तो वाज़ेह़ है। तबर्रुकन, दीगर ह़ज़रात की शफ़ाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ 4 अह़ादीस पेश की जाती हैं :

(1)..... ह़ज़रते उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन तीन जमाअ़तें शफ़ाअ़त करेंगी। अम्बिया, फिर उ़लमा फिर शहीद लोग।[2]

(2)..... ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "शहीद के सत्तर अहले ख़ाना के ह़क़ में उस की शफ़ाअ़त क़बूल की जाएगी।"[3]

(3)..... ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : आ़लिम और आ़बिद दोनों को (क़ियामत के दिन) दोबारा ज़िन्दा किया जाएगा, इस के बा'द आ़बिद से कहा जाएगा कि तू जन्नत में दाख़िल हो जा और आ़लिम को ह़ुक्म होगा कि तुम अभी ठहरो और लोगों की शफ़ाअ़त करो।[4]

(4)..... ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि "ह़ाजी की शफ़ाअ़त उस के ख़ानदान के चार सो अफ़राद के ह़क़ में क़बूल की जाएगी।"[5]

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ

1 .....تفسیر کبیر، الانعام، تحت الآیۃ: ۵۱، ۴/۵۳۹، روح البیان، الانعام، تحت الآیۃ: ۵۱، ۳/۳۴-۳۵، ملتقطاً.
2 .....ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب ذکر الشفاعۃ، ۴/۵۲۶، الحدیث: ۴۳۱۳.
3 .....ابو داؤد، کتاب الجھاد، باب فی الشھید یشفع، ۳/۲۲، الحدیث: ۲۵۲۲.
4 .....شعب الایمان، السابع عشر من شعب الایمان ... الخ، فصل فی فضل العلم و شرف مقدارہ، ۲/۲۶۸، الحدیث: ۱۷۱۷.
5 .....مسند البزار، مسند ابی موسی رضی اللہ عنہ، ۸/۱۶۹، الحدیث: ۳۱۹۶.

www.dawateislami.net

مَا عَلَیْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَیْءٍ وَّ مَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَیْهِمْ مِّنْ شَیْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۵۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और दूर न करो उन्हें जो अपने रब को पुकारते हैं सुब्ह और शाम उस की रिज़ा चाहते तुम पर उन के हिसाब से कुछ नहीं और उन पर तुम्हारे हिसाब से कुछ नहीं फिर उन्हें तुम दूर करो तो येह काम इन्साफ़ से बईद है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन लोगों को दूर न करो जो सुब्हो शाम अपने रब को उस की रिज़ा चाहते हुए पुकारते हैं। आप पर उन के हिसाब से कुछ नहीं और उन पर तुम्हारे हिसाब से कुछ नहीं। फिर आप उन्हें दूर करें तो येह काम इन्साफ़ से बईद है।

﴿وَ لَا تَطْرُدِ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَ الْعَشِیِّ﴾ : **और उन लोगों को दूर न करो जो सुब्हो शाम अपने रब को पुकारते हैं।** इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि कुफ़्फ़ार की एक जमाअ़त नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आई, उन्हों ने देखा कि ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इर्द गिर्द ग़रीब सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की एक जमाअ़त ह़ाज़िर है जो अदना दरजे के लिबास पहने हुए हैं। येह देख कर वोह कहने लगे कि हमें इन लोगों के पास बैठते शर्म आती है, अगर आप इन्हें अपनी मजलिस से निकाल दें तो हम आप पर ईमान ले आएं और आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर रहें। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस बात को मन्ज़ूर न फ़रमाया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई।[1] और फ़रमाया गया कि इन मुख़्लिस व ग़रीब सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को अपनी बारगाह से दूर न करो जो सुब्हो शाम अपने रब عَزَّوَجَلَّ को उस की रिज़ा चाहते हुए पुकारते हैं। इन ग़रीब सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का रिज़्क़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर नहीं कि ग़ुर्बत की वज्ह से इन्हें दूर कर दिया जाए और न आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़िम्मेदारी उन पर है। सब का हिसाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर है, वोही तमाम ख़ल्क़ को रोज़ी देने वाला है और उस के सिवा किसी के ज़िम्मे किसी का हिसाब नहीं।

इस आयत का दूसरा मा'ना येह बयान किया गया है कि कुफ़्फ़ार ने ग़रीब सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا पर त़ा'न मुराद लिया था कि येह तो ग़ुर्बत की वज्ह से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास बैठे हुए हैं कि यहां कुछ रोज़ी रोटी का इन्तिज़ाम हो जाता है, येह

1 .....ابن ماجه، كتاب الزهد، باب مجالسة الفقراء، ٤/٤٣٥، الحديث: ٤١٢٧، تفسير بغوى، الانعام، تحت الآية: ٥٢، ٢/٨١.

www.dawateislami.net

मुख़्लिस नहीं हैं । इस पर पहले तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ के इख़्लास का बयान फ़रमाया कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा चाहते हुए दिन रात उस की इबादत करते हैं फिर फ़रमाया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, आप पर इन के अह़वाल की तफ़्तीश लाज़िम नहीं कि येह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मुख़्लिस हैं या नहीं ?[1] बल्कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन को अपने फ़ैज़े सोह़बत से नवाज़ते रहें और ख़ुलासए कलाम येह है कि वोह ज़ईफ़ फ़ुक़रा जिन का ऊपर ज़िक्र हुवा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार में क़ुर्ब पाने के मुस्तह़िक़ हैं इन्हें दूर न करना ही बजा है ।

وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ﴿۵۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और यूंही हम ने उन में एक को दूसरे के लिये फ़ितना बनाया कि मालदार काफ़िर मोह़ताज मुसल्मानों को देख कर कहें क्या येह हैं जिन पर **अल्लाह** ने एह़सान किया हम में से क्या **अल्लाह** ख़ूब नहीं जानता ह़क़ मानने वालों को ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और यूंही हम ने उन में बा'ज़ की दूसरों के ज़रीए आज़्माइश की, कि येह कहें : क्या येह लोग हैं जिन पर हमारे दरमियान में से **अल्लाह** ने एह़सान किया ? क्या **अल्लाह** शुक्र गुज़ारों को ख़ूब नहीं जानता ?

﴿وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ﴾ : **और यूंही हम ने उन में बा'ज़ की दूसरों के ज़रीए आज़्माइश की ।**﴾ पहली आयत के ह़वाले से यहां फ़रमाया गया कि ग़रीबों के ज़रीए अमीरों की आज़्माइश होती रहती है और गुज़श्ता अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के सह़ाबा के साथ भी येह होता था कि मालदार काफ़िर ग़रीब मुसल्मानों को ह़क़ारत की निगाह से देखते और उन का मज़ाक़ उड़ाते और हमेशा से कुफ़्फ़ार का येह दस्तूर रहा है कि मुसल्मानों के फ़क़्र को देख कर इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत का इन्कार करते हैं और कहते हैं कि अगर इस्लाम सच्चा और कुफ़्र झूटा है तो मुसल्मान फ़क़ीर और कुफ़्फ़ार मालदार क्यूं हैं ?

ग़रीबों के साथ सुलूक के ह़वाले से नसीह़त

इस से मा'लूम हुवा कि अमीरी व ग़रीबी को ह़क़ का पैमाना क़रार नहीं दिया जा सकता, नीज़ साबिक़ा आयत के शाने नुज़ूल और इस आयत के दर्स से बहुत से मज़्हबी लोगों

1 .....تفسیر کبیر، الانعام، تحت الآیۃ: ۵۲، ۴/۵۴۲ ملتقطاً.

www.dawateislami.net

और ख़ुद अमीरों को भी दर्स हासिल करना चाहिये क्यूं कि हमारे ज़माने में भी येह रुज्हान मौजूद है कि अगर अमीर आता है तो उस की ता'ज़ीम की जाती है जब कि ग़रीब को हक़ारत की निगाह से देखा जाता है। ग़रीब की दिल शिकनी की जाती है और अमीर के आगे बिछे बिछे जाते हैं और ख़ुद अमीरों की येह तमन्ना होती है कि हमें ज़रा हट कर डील किया जाए और हमारे लिये स्पेश्यल वक़्त निकाला जाए और हमारे आने पर मौलवी आदमी सारी मसरूफ़िय्यत छोड़ कर उस के पीछे फिरता रहे। ग़रीब आदमी पास बैठ जाए तो अमीर अपने स्टेटस के ख़िलाफ़ समझता है, उसे ग़रीब के कपड़ों से बू आती है, ग़रीब का पास बैठना उस की तबीअ़त ख़राब कर देता है, ग़रीब से हाथ मिलाना उस अमीर के हाथ पर जरासीम चढ़ा देता है। अल ग़रज़ येह सब बातें ग़ुरूरो तकब्बुर की हैं, इन से बचना लाज़िम व ज़रूरी है।

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और एक मग़रूर अमीर

एक साहिब आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा करते थे और आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه भी कभी कभी उन के यहां तशरीफ़ ले जाया करते थे। एक मरतबा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उन के यहां तशरीफ़ फ़रमा थे कि उन के मह़ल्ले का एक बेचारा ग़रीब मुसल्मान टूटी हुई पुरानी चारपाई पर जो सेह्न के किनारे पड़ी थी झिजक्ते हुए बैठा ही था कि साहिबे ख़ाना ने निहायत कड़वे तेवरों से उस की त़रफ़ देखना शुरूअ़ किया यहां तक कि वोह नदामत से सर झुकाए उठ कर चला गया। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को साहिबे ख़ाना की इस मग़रूराना रविश से सख़्त तक्लीफ़ पहुंची मगर कुछ फ़रमाया नहीं, कुछ दिनों बा'द वोह साहिब आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के यहां आए तो आप ने उसे अपनी चारपाई पर जगह दी। वोह बैठे ही थे कि इतने में करीम बख़्श ह़ज्जाम आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का ख़त़ बनाने के लिये आए, वोह इस फ़िक्र में थे कि कहां बैठूं ? आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : भाई करीम बख़्श ! क्यूं खड़े हो ? मुसल्मान आपस में भाई भाई हैं और उन साहिब के क़रीब बैठने का इशारा फ़रमाया। करीम बख़्श ह़ज्जाम उन के साथ बैठ गए। अब उन साहिब के ग़ुस्से की येह कैफ़िय्यत थी कि जैसे सांप फुन्कारें मारता हो और फ़ौरन उठ कर चले गए फिर कभी न आए।[1]

अपनी आ़दतों पर ग़ौर कर के एक मरतबा फिर इस आयत का तरजमा देख लें, फ़रमाया : **और यूंही हम ने उन में बा'ज़ की दूसरों के ज़रीए आज़्माइश की ताकि येह (मालदार काफ़िर ग़रीब मुसल्मानों को देख कर) कहें : क्या येह लोग हैं जिन पर हमारे दरमियान में से अल्लाह ने एह़सान किया ? क्या अल्लाह शुक्र गुज़ारों को ख़ूब नहीं जानता ?**

1..... ह़याते आ'ला ह़ज़रत, 1/108 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

وَ اِذَا جَآءَكَ الَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِاٰیٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَیْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْ بَعْدِهٖ وَ اَصْلَحَ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۵۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब तुम्हारे हुज़ूर वोह हाज़िर हों जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो उन से फ़रमाओ तुम पर सलाम तुम्हारे रब ने अपने ज़िम्मए करम पर रह़मत लाज़िम कर ली है कि तुम में जो कोई नादानी से कुछ बुराई कर बैठे फिर इस के बा'द तौबा करे और संवर जाए तो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब आप की बारगाह में वोह लोग हाज़िर हों जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो उन से फ़रमाओ : "तुम पर सलाम" तुम्हारे रब ने अपने ज़िम्मए करम पर रह़मत लाज़िम कर ली है कि तुम में से जो कोई नादानी से कोई बुराई कर ले फिर इस के बा'द तौबा करे और अपनी इस्लाह़ कर ले तो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है।

وَ اِذَا جَآءَكَ الَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِاٰیٰتِنَا : और जब आप की बारगाह में वोह लोग हाज़िर हों जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं। इर्शाद फ़रमाया कि ऐ प्यारे ह़बीब ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, जब आप की बारगाह में वोह लोग हाज़िर हों जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो आप उन की इज़्ज़त अफ़्ज़ाई करते हुए उन के साथ सलाम की इब्तिदा फ़रमाएं और उन्हें येह बिशारत दें कि तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ ने फ़ज़्लो एह़सान करते हुए अपने ज़िम्मए करम पर रह़मत लाज़िम कर ली है कि तुम में से जो कोई नादानी से कोई बुराई कर ले, फिर इस के बा'द तौबा करे और अपनी इस्लाह़ कर ले तो बेशक **अल्लाह** तआ़ला उस के गुनाह बख़्शने वाला और उस पर मेह्रबानी फ़रमाने वाला है।[1]

नेक मुसल्मानों का एह़तिराम करना चाहिये

इस से मा'लूम हुवा कि नेक मुसल्मानों का एह़तिराम और उन की ता'ज़ीम करनी चाहिये और हर ऐसी बात से बचना चाहिये जो उन की नाराज़ी का सबब बने क्यूं कि उन्हें

1 .....مدارك، الانعام، تحت الآية: ٥٤، ص٣٢٣، روح البيان، الانعام، تحت الآية: ٥٤، ٣/٣٨-٣٩، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

नाराज़ करना **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी का सबब है, जैसा कि ह़ज़रते आ़इज़ बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सलमान, ह़ज़रते सुहैब और ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के सामने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन के मिज़ाज के ख़िलाफ़ कोई बात कह दी फिर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर आप को इस की ख़बर दी। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ, शायद तुम ने उन्हें नाराज़ कर दिया, अगर तुम ने उन्हें नाराज़ कर दिया तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ को नाराज़ कर दिया।" फिर ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उन के पास गए और कहा : ऐ मेरे भाइयो ! मैं ने तुम को नाराज़ कर दिया ? उन्हों ने कहा : नहीं ऐ भाई ! **अल्लाह** तआ़ला आप की मग़्फ़िरत फ़रमाए[1]।[2]

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ وَلِتَسْتَبِیْنَ سَبِیْلُ الْمُجْرِمِیْنَ ﴿۵۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और इसी त़रह़ हम आयतों को मुफ़स्सल बयान फ़रमाते हैं और इस लिये कि मुजरिमों का रस्ता ज़ाहिर हो जाए।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और इसी त़रह़ हम आयतों को मुफ़स्सल बयान फ़रमाते हैं और इस लिये कि मुजरिमों का रास्ता वाज़ेह़ हो जाए।

﴿وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ﴾ : **और इसी त़रह़ हम आयतों को मुफ़स्सल बयान फ़रमाते हैं।** या'नी ऐ ह़बीब ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, जिस त़रह़ हम ने आप के सामने इस सूरत में अपनी वह़दानिय्यत के दलाइल तफ़्सील के साथ बयान किये हैं हम इसी त़रह़ अपनी ह़ुज्जतों और दलाइल को मुफ़स्सल बयान फ़रमाते हैं और हम क़ुरआने मजीद में इत़ाअ़त गुज़ारों, गुनाह के बा'द तौबा कर लेने वालों के औसाफ़ और गुनाह पर अड़े रहने वालों की सिफ़ात बयान करते हैं ताकि ह़क़ ज़ाहिर हो जाए और इस पर अ़मल किया जाए और इस लिये येह चीज़ें बयान करते हैं कि मुजरिमों का रास्ता और उन का त़रीक़ा वाज़ेह़ हो जाए ताकि इस से बचा जाए।[3]

उख़्वी काम्याबी तक पहुंचाने वाले रास्ते पर चलने की तरग़ीब

इस से मा'लूम हुवा कि आदमी को चाहिये कि वोह फ़लाह़ो काम्याबी के रास्ते पर चले

1 .....مسلم، کتاب فضائل الصحابة رضی اللّٰہ تعالی عنهم، باب من فضائل سلمان وصهیب وبلال، ص۱۳۵۹، الحدیث: ۱۷۰ (۲۵۰٤).

2 ..... मुसल्मानों के एह़तिराम से मुतअ़ल्लिक़ मुफ़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का रिसाला "एह़तिरामे मुस्लिम" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

3 .....خازن، الانعام، تحت الآیة: ۵۵، ۲/۲۰، روح البیان، الانعام، تحت الآیة: ۵۵، ۳/۳۹، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

और वहां तक पहुंचे जहां नेक लोग पहुंचे और इस का सब से बेहतरीन रास्ता फ़ौरी तौर पर अपने साबिक़ा गुनाहों से तौबा व इस्तिग़फ़ार करना और आयिन्दा के लिये नेक आ'माल करना है। इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ज़िन्दगी की हर घड़ी बल्कि हर सांस एक नफ़ीस जौहर है जिस का कोई बदल नहीं, वोह इस बात की सलाहिय्यत रखता है कि तुझे अबदी सआ़दत तक पहुंचा दे और दाइमी बद बख़्ती से बचा ले इस लिये इस से ज़ियादा नफ़ीस जौहर और क्या हो सकता है, अगर तुम इसे ग़फ़्लत में ज़ाएअ़ कर दोगे तो वाज़ेह़ नुक़्सान उठाओगे और अगर इसे गुनाह में सर्फ़ करोगे तो वाज़ेह़ तौर पर हलाक हो जाओगे। अब अगर तुम इस मुसीबत पर नहीं रोते तो येह तुम्हारी जहालत है और जहालत की मुसीबत तमाम मुसीबतों से बढ़ कर है। (अफ़्सोस) लोग ग़फ़्लत की नींद सोए हुए हैं, जब मौत आएगी तो वोह जाग जाएंगे, उस वक़्त हर मुफ़्लिस को अपने इफ़्लास का और हर मुसीबत ज़दा को अपनी मुसीबत का इ़ल्म हो जाएगा लेकिन उस वक़्त उस का इज़ाला नहीं हो सकेगा।[1]

मज़ीद फ़रमाते हैं : जब तुम इन तीन दहशत नाक बातों पर हमेशगी इख़्तियार करोगे और रात दिन के हर हिस्से में इन की याद ताज़ा करते रहोगे तो तुम्हें गुनाहों से ज़रूर सच्ची और ख़ालिस तौबा नसीब हो जाएगी :

(1)..... गुनाहों की ह़द दरजा बुराई बयान करना।

(2)..... **अल्लाह** तआ़ला की सज़ा की शिद्दत, दर्दनाक अ़ज़ाब, उस की नाराज़ी और उस के ग़ज़बो जलाल का ज़िक्र करना।

(3)..... **अल्लाह** तआ़ला के ग़ज़ब व अ़ज़ाब की सख़्ती को सामने रखते हुए अपनी कमज़ोरी और नातुवानी को याद करना कि जो शख़्स सूरज की तपिश, सिपाही के थप्पड़ और च्यूंटी के डंक को बरदाश्त नहीं कर सकता तो वोह नारे जहन्नम की तपिश, अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों के कोड़ों की मार, लम्बी गरदनों वाले बुख़्ती ऊंटों की त़रह़ लम्बे और ज़हरीले सांपों के डंक और ख़च्चर जैसे बिच्छूओं के डंक कैसे बरदाश्त कर सकेगा।[2]

قُلْ اِنِّیْ نُهِیْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِیْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِؕ قُلْ لَّاۤ اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْۙ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّ مَاۤ اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِیْنَ ﴿۵۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ मुझे मन्अ़ किया गया है कि उन्हें पूजूं जिन को तुम

1 .....احیاء علوم الدین، کتاب التوبة، الرکن الاول فی نفس التوبة، بیان انّ وجوب التوبة عام فی الاشخاص... الخ، ۴/۱۵.

2 .....منهاج العابدین، العقبة الثانیة: عقبة التوبة، ص۳۳.

www.dawateislami.net

अल्लाह के सिवा पूजते हो तुम फ़रमाओ मैं तुम्हारी ख़्वाहिश पर नहीं चलता यूं हो तो मैं बहक जाऊं और राह पर न रहूं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ : मुझे मन्अ़ किया गया है कि मैं उस की इ़बादत करूं जिन की तुम **अल्लाह** के सिवा इ़बादत करते हो। तुम फ़रमाओ, मैं तुम्हारी ख़्वाहिशों पर नहीं चलता। (अगर यूं होता) तो मैं भटक जाता और हिदायत याफ़्ता लोगों से न होता।

﴿قُلْ اِنِّیْ نُهِیْتُ : **तुम फ़रमाओ : मुझे मन्अ़ किया गया है।**﴾ इस से पहली आयत में बयान हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला तफ़्सील के साथ आयतें बयान फ़रमाता है ताकि ह़क़ ज़ाहिर हो जाए और मुजरिमों का रास्ता वाज़ेह़ हो जाए और इस आयत में बयान फ़रमाया गया कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुजरिमों के रास्ते पर चलने से मन्अ़ फ़रमाया है, चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, आप काफ़िरों से फ़रमा दें कि मुझे मन्अ़ किया गया है कि मैं उस की इ़बादत करूं जिन की तुम **अल्लाह** तआ़ला के सिवा इ़बादत करते हो और तुम्हारा उन की इ़बादत करना भी किसी दलील की बिना पर नहीं बल्कि महज़ ख़्वाहिश परस्ती और अपने बाप दादा की अन्धी पैरवी की वज्ह से है क्यूं कि जिन की तुम इ़बादत करते हो वोह जमादात और पथ्थर हैं जिन का मर्तबा इन्सान से इन्तिहाई कम है और आ'ला मर्तबे वाले का कम मर्तबे वाले की इ़बादत करना ऐसा काम है कि अ़क़्ल भी इस का रद करती है। अगर मैं ने तुम्हारी ख़्वाहिशों की पैरवी की होती तो मैं राहे ह़क़ से भटक जाता और हिदायत याफ़्ता लोगों से न होता।[1]

قُلْ اِنِّیْ عَلٰى بَیِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّیْ وَ كَذَّبْتُمْ بِهٖؕ مَا عِنْدِیْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِؕ یَقُصُّ الْحَقَّ وَ هُوَ خَیْرُ الْفٰصِلِیْنَ(۵۷) قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِیْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِیَ الْاَمْرُ بَیْنِیْ وَ بَیْنَكُمْؕ وَ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِیْنَ(۵۸)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ मैं तो अपने रब की त़रफ़ से रोशन दलील पर हूं और

1 .....تفسیر کبیر، الانعام، تحت الآیۃ: ۵۷، ۸/۵.

www.dawateislami.net

तुम उसे झुटलाते हो मेरे पास नहीं जिस की तुम जल्दी मचा रहे हो हुक्म नहीं मगर **अल्लाह** का वोह ह़क़ फ़रमाता है और वोह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला। तुम फ़रमाओ अगर मेरे पास होती वोह चीज़ जिस की तुम जल्दी कर रहे हो तो मुझ में तुम में काम ख़त्म हो चुका होता और **अल्लाह** ख़ूब जानता है सितम गारों को।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ **:** मैं तो अपने रब की त़रफ़ से रोशन दलील पर हूं और तुम ने उसे झुटलाया है। जिस (अ़ज़ाब के आने) की तुम जल्दी मचा रहे हो वोह मेरे पास नहीं, हुक्म सिर्फ़ **अल्लाह** ही का है। वोह ह़क़ बयान फ़रमाता है और वोह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। तुम फ़रमाओ अगर वोह (अ़ज़ाब) मेरे पास होता जिस की तुम जल्दी मचा रहे हो तो मेरे और तुम्हारे दरमियान मुआ़मला ख़त्म हो चुका होता और **अल्लाह** ज़ालिमों को ख़ूब जानता है।

﴿قُلْ : तुम फ़रमाओ।﴾ या'नी ऐ ह़बीब ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, आप फ़रमाएं कि मैं तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से रोशन दलील पर हूं और मुझे उस की मा'रिफ़त ह़ासिल है और मैं जानता हूं कि उस के सिवा कोई मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत नहीं जब कि तुम उस के साथ औरों को शरीक कर के उसे झुटलाते हो। यहां रोशन दलील क़ुरआन शरीफ़, मो'जिज़ात और तौह़ीद के वाज़ेह़ दलाइल सब को शामिल हैं।

﴿مَا عِنْدِیْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ : जिस की तुम जल्दी मचा रहे हो वोह मेरे पास नहीं।﴾ चूंकि कुफ़्फ़ार मज़ाक़ उड़ाने के लिये हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कहा करते थे कि हम पर जल्दी अ़ज़ाब नाज़िल कराइये, इस आयत में उन्हें जवाब दिया गया और ज़ाहिर कर दिया गया कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येह सुवाल करना निहायत ग़लत़ है क्यूं कि अ़ज़ाब नाज़िल करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का काम है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नहीं। हां अगर सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस के लिये दुआ़ कर दें तो बात जुदा है जैसे ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की दुआ़ से क़ौमे नूह़ तबाह हुई और ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की दुआ़ से फ़िरऔ़न और उस की क़ौम तबाह हुई और दीगर अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की दुआ़ओं से उन की क़ौमें तबाह हुईं ऐसे ही ह़बीबे करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ से कुफ़्फ़ारे मक्का भी बरबाद हो जाते। अगली आयत में मज़ीद फ़रमाया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, तुम फ़रमाओ अगर वोह अ़ज़ाब मेरे पास होता जिस की तुम जल्दी मचा रहे हो तो मेरे और तुम्हारे दरमियान मुआ़मला ख़त्म हो चुका होता और मैं तुम्हें एक लम्ह़े की मोहलत न देता और तुम्हें रब عَزَّوَجَلَّ का मुख़ालिफ़ देख कर बे दरेग़ हलाक कर डालता, लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ह़लीम व करीम है वोह सज़ा देने में जल्दी नहीं फ़रमाता तो उस की बारगाह में रुजूअ़ करो, न कि उस के ह़िल्मो करम की वज्ह से जरी हो जाओ।

www.dawateislami.net

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَیْبِ لَا یَعْلَمُهَاۤ اِلَّا هُوَؕ وَ یَعْلَمُ مَا فِی الْبَرِّ وَ الْبَحْرِؕ وَ مَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا یَعْلَمُهَا وَ لَا حَبَّةٍ فِیْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَ لَا رَطْبٍ وَّ لَا یَابِسٍ اِلَّا فِیْ كِتٰبٍ مُّبِیْنٍ ﴿۵۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उसी के पास हैं कुन्जियां ग़ैब की उन्हें वोही जानता है और जानता है जो कुछ ख़ुश्की और तरी में है और जो पत्ता गिरता है वोह उसे जानता है और कोई दाना नहीं ज़मीन की अंधेरियों में और न कोई तर और न ख़ुश्क जो एक रोशन किताब में लिखा न हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ग़ैब की कुन्जियां उसी के पास हैं। उन को सिर्फ़ वोही जानता है और जो कुछ ख़ुश्की और तरी में है वोह सब जानता है और कोई पत्ता नहीं गिरता और न ही ज़मीन की तारीकियों में कोई दाना है मगर वोह उन सब को जानता है। और कोई तर चीज़ नहीं और न ही ख़ुश्क चीज़ मगर वोह एक रोशन किताब में है।

﴿وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَیْبِ﴾ **: और ग़ैब की कुन्जियां उसी के पास हैं।﴾** तफ़्सीरे इनायतुल क़ाज़ी में है : येह जो आयत में फ़रमाया कि "ग़ैब की कुन्जियां **अल्लाह** ही के पास हैं उस के सिवा उन्हें कोई नहीं जानता" इस ख़ुसूसिय्यत के येह मा'ना हैं कि इब्तिदाअन बिग़ैर बताए उन की हक़ीक़त दूसरे पर नहीं खुलती।[1] और तफ़्सीरे सावी में है : येह आयते करीमा इस बात के मुनाफ़ी नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला ने बा'ज़ अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِم को बा'ज़ चीज़ों का इल्मे ग़ैब अ़ता फ़रमाया है। **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

عٰلِمُ الْغَیْبِ فَلَا یُظْهِرُ عَلٰى غَیْبِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ग़ैब का जानने वाला तो अपने ग़ैब पर किसी को मुसल्लत़ नहीं करता सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के।[2]

इल्मे ग़ैब से मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान की किताब "اَلدَّوْلَةُ الْمَكِّيَّه بِالْمَادَّةِ الْغَيْبِيَّه" (इल्मे ग़ैब के मस्अले का दलाइल के साथ तफ़्सीली बयान) और फ़तावा रज़विय्या की 29वीं जिल्द में मौजूद इन रसाइल

1 .....عناية القاضی، الانعام، تحت الآية: ۵۹، ۴/۷۳.
2 .....تفسير صاوی، الانعام، تحت الآية: ۵۹، ۲/۵۸۶.

www.dawateislami.net

का मुत़ालआ़ फ़रमाएं : (1) ''اِزَاحَةُ الْعَيب بِسَيفِ الْغَيب'' (इल्मे ग़ैब के मस्अले से मुतअ़ल्लिक़ दलाइल और बद मज़्हबों का रद) (2) ''خَالِصُ الْاِعْتِقَاد'' (इल्मे ग़ैब से मुतअ़ल्लिक़ 120 दलाइल पर मुश्तमिल एक अ़ज़ीम किताब)

وَهُوَ الَّذِیْ یَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّیْلِ وَ یَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ یَبْعَثُكُمْ فِیْهِ لِیُقْضٰۤى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ اِلَیْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ یُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۶۰﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जो रात को तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ करता है और जानता है जो कुछ दिन में कमाओ फिर तुम्हें दिन में उठाता है कि ठहराई हुई मीआ़द पूरी हो फिर उसी की त़रफ़ फिरना है फिर वोह बता देगा जो कुछ तुम करते थे।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और वोही है जो रात को तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ कर लेता है और जो कुछ तुम दिन में कमाते हो उसे जानता है फिर तुम्हें दिन के वक़्त उठाता है ताकि मुक़र्ररा मुद्दत पूरी हो जाए फिर उसी की त़रफ़ तुम्हारा लौटना है फिर वोह बता देगा जो कुछ तुम करते थे।

﴿وَهُوَ الَّذِیْ یَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّیْلِ﴾ **: और वोही है जो रात को तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ कर लेता है।** इस से पहली आयत में **अल्लाह** तआ़ला के कमाले इ़ल्म का बयान हुवा और इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला की कमाले क़ुदरत का बयान किया जा रहा है, चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया कि वोही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है जो रात के वक़्त तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ कर लेता है और तुम्हारी क़ुव्वते एह़सास ज़ाइल कर के तुम्हें मय्यित की त़रह़ कर देता है जिस से तुम पर नींद मुसल्लत़ हो जाती है और तुम्हारे तसर्रुफ़ात अपने ह़ाल पर बाक़ी नहीं रहते। फिर वोह तुम्हें दिन के वक़्त उठाता है ताकि तुम्हारी ज़िन्दगी की मुक़र्ररा मुद्दत पूरी हो जाए और तुम्हारी उ़म्र अपनी इन्तिहा को पहुंचे, फिर मरने के बा'द आख़िरत में उसी की त़रफ़ तुम्हारा लौटना है फिर वोह तुम्हें उन आ'माल की जज़ा देगा जो कुछ तुम दिन रात किया करते थे।

यहां आयत में पहले नींद मुसल्लत़ करने और इस के बा'द बेदार करने का बयान हुवा, इस में क़ियामत क़ाइम होने और मरने के बा'द दोबारा ज़िन्दा किये जाने पर वाज़ेह़ दलील है कि जो रब عَزَّوَجَلَّ इस चीज़ पर क़ादिर है कि रोज़मर्रा सोने के वक़्त एक त़रह़ की मौत तुम पर वारिद करता है जिस से तुम्हारे ह़वास और उन के ज़ाहिरी अफ़्आ़ल जैसे देखना, सुनना, बोलना, चलना फिरना और पकड़ना वग़ैरा सब मुअ़त्त़ल हो जाते हैं और इस के बा'द फिर

www.dawateislami.net

बेदारी के वक़्त वोही रब عَزَّوَجَلَّ तमाम आ'ज़ा को उन के तसर्रुफ़ात अ़ता फ़रमा देता है और वोह देखना, सुनना, बोलना और चलना फिरना वग़ैरा शुरूअ़ कर देते हैं तो वोह रब عَزَّوَجَلَّ मख़्लूक़ को उन की ह़क़ीक़ी मौत के बा'द ज़िन्दगानी के तसर्रुफ़ात अ़ता करने पर भी क़ादिर है।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿۶۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही ग़ालिब है अपने बन्दों पर और तुम पर निगह्बान भेजता है यहां तक कि जब तुम में किसी को मौत आती है हमारे फ़िरिश्ते उस की रूह़ क़ब्ज़ करते हैं और वोह क़ुसूर नहीं करते।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोही अपने बन्दों पर ग़ालिब है और वोह तुम पर निगह्बान भेजता है यहां तक कि जब तुम में किसी को मौत आती है तो हमारे फ़िरिश्ते उस की रूह़ क़ब्ज़ करते हैं और वोह कोई कोताही नहीं करते।

﴿وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ﴾ : **और वोही अपने बन्दों पर ग़ालिब है।** या'नी **अल्लाह** तआ़ला बन्दों के तमाम उमूर में हर त़रह़ से तसर्रुफ़ करने की क़ुदरत रखता है, वोही अ़त़ा करता और वोही अपनी अ़त़ा रोकता है, वोही मिलाता और वोही तोड़ता है, वोही नफ़्अ़ व नुक़्सान पहुंचाता है, वोही इ़ज़्ज़तो ज़िल्लत देता है, वोही ज़िन्दगी और मौत देता है, उस के फ़ैसले को रद करने वाला कोई नहीं और उस के इ़लावा और कोई जाए पनाह नहीं।[1] एक और मक़ाम पर **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَ اِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ۚ وَ اِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ؕ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۰۷﴾[2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर **अल्लाह** तुझे कोई तक्लीफ़ पहुंचाए तो उस के सिवा कोई तक्लीफ़ को दूर करने वाला नहीं और अगर वोह तेरे साथ भलाई का इरादा फ़रमाए तो उस के फ़ज़्ल को कोई रद करने वाला नहीं। अपने बन्दों में से जिस को चाहता है अपना फ़ज़्ल पहुंचाता है और वोही बख़्शने वाला मेहरबान है।

1 .....صاوی، الانعام، تحت الآیۃ: ٦١، ٢/٥٨٨. 2 .....یونس: ١٠٧.

www.dawateislami.net

﴿وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً﴾ **: और तुम पर निगहबान भेजता है।** ﴾ इन से मुराद वोह फ़िरिश्ते हैं जो बनी आदम की नेकी और बदी लिखते रहते हैं, इन्हें किरामन कातिबीन कहते हैं। हर आदमी के साथ दो फ़िरिश्ते हैं, एक दाईं त़रफ़ और एक बाईं त़रफ़। दाईं त़रफ़ का फ़िरिश्ता नेकियां लिखता है और बाईं त़रफ़ का फ़िरिश्ता बुराइयां लिखता है।

गुनाह करने वाले ग़ौर करें

बन्दों को चाहिये कि ग़ौर करें और बदियों और गुनाहों से बचें क्यूं कि हर एक अ़मल लिखा जाता है और रोज़े क़ियामत वोह नामए आ'माल तमाम मख़्लूक़ के सामने पढ़ा जाएगा तो गुनाह कितनी रुस्वाई का सबब होंगे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पनाह दे। इसी के पेशे नज़र इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ज़बान की हिफ़ाज़त के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया : ह़ज़रते अ़त़ा बिन अबी रबाह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : तुम से पहले लोग फ़ुज़ूल कलाम को ना पसन्द करते थे। वोह लोग किताबुल्लाह, सुन्नते रसूल, नेकी की दा'वत देने, बुराई से मन्अ़ करने और अपनी ऐसी ह़ाजत जिस के सिवा कोई चारा ही न हो के इ़लावा कलाम को फ़ुज़ूल शुमार करते थे। क्या तुम इस बात का इन्कार करते हो कि तुम्हारे दाएं बाएं दो मुह़ाफ़िज़ फ़िरिश्ते किरामन कातिबीन बैठे हैं

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : कोई बात वोह ज़बान से नहीं निकालता कि उस के पास एक मुह़ाफ़िज़ तय्यार न बैठा हो।

क्या तुम्हें इस बात से ह़या नहीं आती कि तुम्हारा नामए आ'माल जब खोला जाएगा जो दिन भर सादिर होने वाली बातों से भरा होगा, और उन में ज़ियादा तर वोह बातें होंगी जिन का न तुम्हारे दीन से कोई तअ़ल्लुक़ होगा न दुन्या से। एक सह़ाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मेरे साथ कोई शख़्स बात करता है, उसे जवाब देना शदीद प्यास के वक़्त ठन्डे पानी से ज़ियादा मेरी ख़्वाहिश होती है लेकिन मैं इस ख़ौफ़ से उसे जवाब नहीं देता कि कहीं येह फ़ुज़ूल कलाम न हो जाए[2]।[3]

﴿تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا﴾ **: हमारे फ़िरिश्ते उस की रूह क़ब्ज़ करते हैं।** ﴾ इन फ़िरिश्तों से मुराद या तो तन्हा ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام हैं, इस सूरत में जम्अ़ का लफ़्ज़ (رُسُل) ता'ज़ीम के लिये है या ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام और वोह फ़िरिश्ते मुराद हैं जो इन के मददगार हैं। जब किसी की मौत का वक़्त आता है तो ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से

1 .....ق:۱۸. 2 .....احیاء علوم الدین، کتاب آفات اللسان، بیان عظیم خطر اللسان وفضیلة الصمت، الآفة الثانیة فضول الکلام، ۳/ ۱۴۱.

3 ..... ज़बान की हिफ़ाज़त से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये किताब "जन्नत की दो चाबियां" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

www.dawateislami.net

अपने मददगारों को उस की रूह़ क़ब्ज़ करने का हुक्म देते हैं, जब रूह़ ह़ल्क़ तक पहुंचती है तो ख़ुद क़ब्ज़ फ़रमाते हैं।[1] और इन सब फ़िरिश्तों की शान में फ़रमाया कि येह कोई कोताही नहीं करते या'नी ता'मीले हुक्म में उन से कोताही वाक़ेअ़ नहीं होती और उन के अ़मल में सुस्ती और ताख़ीर राह नहीं पाती बल्कि वोह अपने फ़राइज़ ठीक वक़्त पर अदा करते हैं।

ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۫ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ﴿۶۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर फेरे जाते हैं अपने सच्चे मौला **अल्लाह** की त़रफ़ सुनता है उसी का हुक्म है और वोह सब से जल्द ह़िसाब करने वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : फिर उन्हें **अल्लाह** की त़रफ़ लौटाया जाएगा जो उन का मालिके ह़क़ीक़ी है। सुन लो, उसी का हुक्म है और वोह सब से जल्द ह़िसाब करने वाला है।

﴿ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ﴾ **: फिर उन्हें अल्लाह की त़रफ़ लौटाया जाएगा।** ﴾ या'नी जब लोग मरने के बा'द दोबारा ज़िन्दा होंगे तो फ़िरिश्ते उन्हें ह़िसाब की जगह में उस **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म और उस की जज़ा की त़रफ़ लौटाएंगे जो उन के तमाम उमूर का ह़क़ीक़ी मालिक है। ऐ लोगो! सुन लो, क़ियामत के दिन बन्दों के दरमियान उसी का फ़ैसला नाफ़िज़ है किसी और का कोई फ़ैसला किसी भी त़रह़ नाफ़िज़ नहीं हो सकता और वोह इन्तिहाई क़लील मुद्दत में तमाम मख़्लूक़ का ह़िसाब करने वाला है।[2]

ह़िसाब होने से पहले अपना मुह़ासबा कर लिया जाए

अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं : जब मरने के बा'द दोबारा ज़िन्दा किया जाना और आ'माल का ह़िसाब होना है और **अल्लाह** तआ़ला ने तमाम मख़्लूक़ से उस के आ'माल का ह़िसाब लेना है तो अ़क़्ल मन्द इन्सान पर लाज़िम है कि वोह ह़िसाब के मुआ़मले में जर्ह होने से पहले ही अपने नफ़्स का मुह़ासबा कर ले क्यूं कि इन्सान राहे आख़िरत में ताजिर है, इस की उ़म्र इस का मालो मताअ़ है, इस का नफ़्अ़ अपनी ज़िन्दगी को इ़बादात और नेक आ'माल में सर्फ़ करना है और इस का नुक़्सान गुनाहों और मआ़सी में ज़िन्दगी बसर करना है और इस का नफ़्स इस तिजारत में इस का शरीक है और नफ़्स अगर्चे

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیة: ٦١، ٢/٢٣. 2 .....روح البیان، الانعام، تحت الآیة: ٦٢، ٣/٤٦.

www.dawateislami.net

नेकी और बुराई दोनों काम करने की सलाहिय्यत रखता है लेकिन येह नेकी के मुक़ाबले में गुनाहों और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की त़रफ़ ज़ियादा माइल और मुतवज्जेह होता है इस लिये इस का मुह़ासबा करना इन्तिहाई ज़रूरी है[1] ।[2]

इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इन्सान को चाहिये कि रात सोते वक़्त एक घड़ी मुक़र्रर करे ताकि वोह अपने नफ़्स से उस दिन का सारा ह़िसाब किताब ले सके और जिस त़रह़ कारोबार में शरीक शख़्स से ह़िसाब करते वक़्त (इन्तिहाई एह़तियात़ और) मुबालग़े से काम लिया जाता है इसी त़रह़ अपने नफ़्स के साथ ह़िसाब करते हुए बहुत सी एह़तियात़ करनी चाहिये क्यूं कि नफ़्स बड़ा मक्कार और ह़ीला साज़ है, वोह अपनी ख़्वाहिश को इन्सान के सामने इत़ाअ़त की शक्ल में पेश करता है ताकि इन्सान उसे भी नफ़्अ़ शुमार करे ह़ालां कि वोह नुक़्सान होता है और इन्सान को चाहिये कि वोह अपने नफ़्स से मुबाह़ात तक का ह़िसाब ले कि येह तू ने क्यूं किया, येह तू ने किस के लिये किया और अगर उस में कोई ऐ़ब देखे तो अपने नफ़्स को उस का ज़िम्मेदार ठहराए (लेकिन अफ़्सोस कि फ़ी ज़माना) इन्सान किस त़रह़ फ़ारिग़ है कि वोह अपने नफ़्स से ह़िसाब नहीं लेता, अगर इन्सान हर गुनाह पर अपने घर में एक पथ्थर भी रखता जाए तो थोड़े दिनों में उस का घर पथ्थरों से भर जाएगा, अगर किरामन कातिबीन उस इन्सान से लिखने की मज़दूरी त़लब करें तो उस के पास कुछ बाक़ी न रहेगा । अगर इन्सान कभी ग़फ़्लत में चन्द बार سُبْحٰنَ اللّٰه पढ़ता है तो तस्बीह़ हाथ में ले कर बैठ जाता है और कहता है मैं ने येह सो मरतबा पढ़ लिया जब कि सारा दिन बेहूदा बक्वासात करता फिरता है उन्हें शुमार नहीं करता और न ही उन्हें शुमार करने के लिये कोई ऐसी चीज़ हाथ में लेता है ताकि उसे मा'लूम हो जाए कि मैं ने सारे दिन में कितने गुनाह किये हैं । इस सूरते ह़ाल के बा वुजूद येह सोचना कि मेरा नेकियों का पलड़ा वज़्नी हो जाए कितनी बे अ़क़्ली है ! इसी लिये ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : इस से पहले कि तुम्हारे आ'माल तोले जाएं तुम अपने आ'माल का ख़ुद जाएज़ा ले लो । और अपना मुह़ासबा करने में आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की कैफ़िय्यत येह थी कि जब रात होती तो अपने पाउं पर दुर्रे लगाते और कहते कि बता तू ने आज क्या किया । ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को एक दीवार के पीछे येह कहते हुए सुना : वाह वाह ! लोग तुझे अमीरुल मुअमिनीन कहते हैं लेकिन ख़ुदा की क़सम ! तू **अल्लाह** तआ़ला से नहीं डरता और उस के अ़ज़ाब में मुब्तला होने को तय्यार रहता है ।[3]

1 .....روح البیان، الانعام، تحت الآیۃ: ۶۲، ۳/۴۶ .

2 ..... आ'माल का मुह़ासबा करने की फ़ज़ीलत, तरग़ीब और इस से मुतअ़ल्लिक़ दीगर मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये किताब "फ़िक्रे मदीना" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं ।

3 .....کیمیائے سعادت، رکن چہارم، اصل ششم در محاسبہ و مراقبہ، مقام سوم در محاسبات، ۲/۸۹۱-۸۹۲ .

www.dawateislami.net

قُلْ مَنْ یُّنَجِّیْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّ خُفْیَةً ۚ لَئِنْ اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِیْنَ ﴿۶۳﴾ قُلِ اللّٰهُ یُنَجِّیْكُمْ مِّنْهَا وَ مِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿۶۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ वोह कौन है जो तुम्हें नजात देता है जंगल और दरिया की आफ़तों से जिसे पुकारते हो गिड़गिड़ा कर और आहिस्ता कि अगर वोह हमें इस से बचावे तो हम ज़रूर एहसान मानेंगे। तुम फ़रमाओ **अल्लाह** तुम्हें नजात देता है इस से और हर बेचैनी से फिर तुम शरीक ठहराते हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ, वोह कौन है जो तुम्हें ख़ुश्की और समुन्दर की होलनाकियों से नजात देता है? तुम उसे गिड़गिड़ा कर और पोशीदा तौर पर पुकारते हो (और तुम कहते हो कि) अगर वोह हमें इस से नजात दे दे तो हम ज़रूर शुक्र गुज़ारों में से हो जाएंगे। तुम फ़रमाओ, **अल्लाह** तुम्हें इन होलनाकियों से और हर बेचैनी से नजात देता है फिर भी तुम शिर्क करते हो।

﴿قُلْ : **तुम फ़रमाओ**﴾ इस आयत में कुफ़्फ़ार को उन के शिर्क पर तम्बीह की गई है क्यूं कि ख़ुश्की और तरी के सफ़रों में जब वोह मुब्तलाए आफ़ात हो कर परेशान होते हैं और उन्हें ऐसी शिद्दतों और होलनाकियों से वासिता पड़ता है जिन से दिल कांप जाते हैं और ख़तरात क़ुलूब को मुज़्तरिब और बेचैन कर देते हैं उस वक़्त बुत परस्त भी बुतों को भूल जाता है और **अल्लाह** तआ़ला ही से दुआ़ करता है और उसी की जनाब में तज़र्रोअ़ व ज़ारी करता है और कहता है कि इस मुसीबत से अगर तू ने नजात दी तो मैं शुक्र गुज़ार होउंगा और तेरा ह़क़्क़े ने'मत बजा लाऊंगा लेकिन होता क्या है इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अगली आयत में बयान फ़रमाया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, इन्हें बताओ कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें इन होलनाकियों से और इस के इ़लावा ज़िन्दगी की हर बेचैनी से नजात देता है लेकिन फिर भी तुम लोग शिर्क करते हो और बजाए शुक्र गुज़ारी के ऐसी बड़ी नाशुक्री करते हो और येह जानते हुए कि बुत निकम्मे हैं, किसी काम के नहीं फिर उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक करते हो, येह कितनी बड़ी गुमराही है। इस आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि दुन्या में कुफ़्फ़ार की बा'ज़ दुआ़एं क़बूल हो जाती हैं कि कुफ़्फ़ार जो मुसीबत में फंस कर नजात की दुआ़ करते थे, रब عَزَّوَجَلَّ उन्हें नजात दे देता था,

www.dawateislami.net

शैत़ान ने अपनी दराज़िये उ़म्र की दुआ़ की जो क़बूल हुई ।

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰۤى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿۶۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ वोह क़ादिर है कि तुम पर अ़ज़ाब भेजे तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पाउं के तले से या तुम्हें भिड़ा दे मुख़्तलिफ़ गुरौह कर के और एक को दूसरे की सख़्ती चखाए देखो हम क्यूंकर त़रह़ त़रह़ से आयतें बयान करते हैं कि कहीं उन को समझ हो ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ वोही इस पर क़ादिर है कि तुम पर तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे क़दमों के नीचे से अ़ज़ाब भेजे या मुख़्तलिफ़ गुरौह बना कर आपस में लड़ा दे और तुम्हारे एक को दूसरे की लड़ाई का मज़ा चखा दे । देखो हम किस त़रह़ बार बार आयतें बयान करते हैं ताकि वोह लोग समझ जाएं ।

﴿هُوَ الْقَادِرُ﴾ **: वोही क़ादिर है ।** इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला की वह़दानिय्यत की एक और दलील बयान की गई है, चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया गया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप इन काफ़िरों से फ़रमा दें कि **अल्लाह** तआ़ला इस पर क़ादिर है कि तुम्हारे शिर्क की वज्ह से तुम पर तुम्हारे ऊपर से अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमा दे जैसे ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम, ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम और अस्ह़ाबे फ़ील या'नी अब्रहा के लश्कर के साथ किया गया, या तुम्हारे क़दमों के नीचे से अ़ज़ाब भेजे जैसे फ़िरऔ़न को ग़र्क़ किया गया और क़ारून को ज़मीन में धंसा दिया गया, या मुख़्तलिफ़ गुरौहों और फ़िर्क़ों में तक़्सीम कर के आपस में लड़ा दे और तुम्हें एक दूसरे की लड़ाई का मज़ा चखा दे । ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप देखें कि हम किस त़रह़ क़ुरआने मजीद में बार बार मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से वा'दा और वईद की आयतें बयान करते हैं ताकि वोह लोग समझ जाएं और अपनी सरकशी व इ़नाद से बाज़ आ जाएं ।[1]

1 .....تفسیر کبیر، الانعام، تحت الآیۃ: ۶۵، ۵/ ۲۰۰، روح البیان، الانعام، تحت الآیۃ: ۶۵، ۳/ ۴۷، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

मुसल्मानों की बाहमी लड़ाई का एक सबब

याद रहे कि येह **अल्लाह** तआ़ला की सुन्नते जारिया है कि वोह (अपनी ना फ़रमानी करने की सज़ा में) मुसल्मानों को काफ़िरों से और काफ़िरों को मुसल्मानों से लड़वा देता है इसी त़रह़ काफ़िरों को काफ़िरों से और मुसल्मानों को मुसल्मानों से लड़वा देता है जैसा कि हमारे ज़माने में इस की मिसालें देखी जा सकती हैं। सह़ीह़ बुख़ारी की ह़दीस में है कि जब आयत का येह ह़िस्सा नाज़िल हुवा कि "वोह क़ादिर है तुम पर अ़ज़ाब भेजे तुम्हारे ऊपर से" तो सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तेरी ही पनाह मांगता हूं।" और जब येह ह़िस्सा नाज़िल हुवा कि "या तुम्हारे पाउं के नीचे से" तो फ़रमाया : "मैं तेरी ही पनाह मांगता हूं।" और जब येह ह़िस्सा नाज़िल हुवा "या तुम्हें लड़वा दे मुख़्तलिफ़ गुरौह कर के और एक को दूसरे की सख़्ती चखाए" तो फ़रमाया : "येह आसान है।"[1]

और सह़ीह़ मुस्लिम की ह़दीस शरीफ़ में है कि एक रोज़ रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मस्जिदे बनी मुआ़विया में दो रक्अ़त नमाज़ अदा फ़रमाई और इस के बा'द त़वील दुआ़ की फिर सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : मैं ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से तीन सुवाल किये उन में से सिर्फ़ दो क़बूल फ़रमाए गए। **एक** सुवाल तो येह था कि "मेरी उम्मत को क़ह़त़े आ़म से हलाक न फ़रमाए" येह क़बूल हुवा। **दूसरा** येह था कि "इन्हें ग़र्क़ कर के अ़ज़ाब न दे" येह भी क़बूल हुवा। **तीसरा** सुवाल येह था कि "इन में बाहम जंगो जिदाल न हो" येह क़बूल नहीं हुवा।[2]

وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿۶۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उसे झुटलाया तुम्हारी क़ौम ने और येही ह़क़ है तुम फ़रमाओ मैं तुम पर कुछ कड़ोड़ा नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम्हारी क़ौम ने उस को झुटलाया ह़ालां कि येही ह़क़ है। तुम फ़रमाओ, मैं तुम पर निगह़बान नहीं हूं।

﴿وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ﴾ **: और तुम्हारी क़ौम ने उस को झुटलाया।** इर्शाद फ़रमाया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप की क़ौम के सरकश लोगों ने उसे या'नी कुरआन शरीफ़ को या

1 .....بخاری، کتاب التفسیر، باب قل هو القادر علی ان یبعث علیکم... الخ، ۳/۲۲۱، الحدیث: ۴۶۲۸.
2 .....مسلم، کتاب الفتن و اشراط الساعة، باب هلاك هذه الامة بعضهم ببعض، ص ۱۵۴۴، الحدیث: ۲۰(۲۸۹۰).

www.dawateislami.net

नुज़ूले अ़ज़ाब को झुटलाया ह़ालां कि वोह ह़क़ है। तो ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम इन से फ़रमा दो कि मैं तुम पर कोई निगह्बान नहीं हूं बल्कि मेरा काम रहनुमाई करना है जो मैं ने अह्सन त़रीक़े से सर अन्जाम दे दिया है जब कि दिलों की ज़िम्मेदारी मुझ पर नहीं कि अगर तुम हिदायत न पाओ तो मुझ से बाज़पुर्स हो।

لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ۚ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हर ख़बर का एक वक़्त मुक़र्रर है और अ़न्क़रीब जान जाओगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : हर ख़बर के लिये एक वक़्त मुक़र्रर है और अ़न्क़रीब तुम जान जाओगे।

﴿لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ﴾ **: हर ख़बर के लिये एक वक़्त मुक़र्रर है।** ﴾ या'नी **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में जो ख़बरें दीं उन के लिये वक़्त मुअ़य्यन हैं, उन का वुक़ूअ़ किसी ताख़ीर के बिग़ैर ठीक उसी वक़्त होगा और अ़न्क़रीब तुम दुन्या व आख़िरत में उन ख़बरों के दुरुस्त होने को जान लोगे।[1]

गुनाहों पर इसरार न किया जाए

इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में काफ़िरों और गुनाहगारों के लिये अ़ज़ाबात की जो ख़बरें दी हैं उन का अपने वक़्त पर वाक़ेअ़ होना यक़ीनी है, येह ए'लान सुनने के बा'द भी कुफ़्र पर अड़े रहना और गुनाहों में मश्ग़ूल रहना ह़द दरजे की ह़माक़त है लिहाज़ा हर इन्सान को चाहिये कि वोह अ़क़्ल मन्दी का मुज़ाहरा करते हुए कुफ़्र और गुनाहों पर इसरार करना छोड़ दे और **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में सच्ची तौबा कर के अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी मांग कर ख़ुद को हलाकत से बचा ले। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "(गुनाहों पर) इसरार करने वाले उन लोगों के लिये हलाकत है जो अपने गुनाहों पर क़ाइम हैं (और इस के बा वुजूद वोह तौबा व इस्तिग़फ़ार नहीं करते) ह़ालां कि वोह जानते हैं (कि उन का फ़े'ल गुनाह है)।"[2] [3]

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیة: ٦٧، ٢/٢٥.

2 .....شعب الایمان، السابع والاربعون من شعب الایمان... الخ، فصل فی الطبع علی القلب، ٥/٤٤٩، الحدیث: ٧٢٣٦.

3 ..... गुनाहों से बचने और नेकियों का जज़्बा पाने के लिये दा'वते इस्लामी के साथ वाबस्तगी बहुत फ़ाएदे मन्द है।

www.dawateislami.net

وَاِذَا رَاَیْتَ الَّذِیْنَ یَخُوْضُوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى یَخُوْضُوْا فِیْ حَدِیْثٍ غَیْرِهٖؕ وَ اِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۶۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ सुनने वाले जब तू उन्हें देखे जो हमारी आयतों में पड़ते हैं तो उन से मुंह फेर ले जब तक और बात में पड़ें और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ सुनने वाले ! जब तू उन्हें देखे जो हमारी आयतों में बेहूदा गुफ़्तगू करते हैं तो उन से मुंह फेर ले जब तक वोह किसी और बात में मश्ग़ूल न हो जाएं और अगर शैतान तुम्हें भुला दे तो याद आने के बा'द ज़ालिमों के पास न बैठ।

﴿اَلَّذِیْنَ یَخُوْضُوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِنَا﴾ **: जो हमारी आयतों में बेहूदा गुफ़्तगू करते हैं।﴾** इस आयते मुबारका में काफ़िरों, बेदीनों की सोहबत में बैठने से मन्अ़ किया गया और फ़रमाया कि इन के पास न बैठो और अगर भूल कर बैठ जाओ तो याद आने पर उठ जाओ।

बद मज़्हबों की महफ़िलों में जाने और उन की तक़ारीर सुनने का शरई हुक्म

इस आयत से मा'लूम हुवा कि बेदीनों की जिस मजलिस में दीन का एहतिराम न किया जाता हो मुसल्मान को वहां बैठना जाइज़ नहीं। इस से येह भी साबित हो गया कि कुफ़्फ़ार और बेदीनों के जल्से जिन में वोह दीन के ख़िलाफ़ तक़रीरें करते हैं, उन में जाना, शिर्कत करना जाइज़ नहीं। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आख़िरी ज़माने में झूटे दज्जाल होंगे जो तुम्हारे पास वोह अह़ादीस लाएंगे जो न तुम ने सुनीं, न तुम्हारे बाप दादाओं ने, उन को अपने और अपने को उन से दूर रखो, वोह तुम्हें गुमराह न कर दें, फ़ितने में न डाल दें।"[1]

अलबत्ता उ़लमा जो उन बद मज़्हबों का रद करने के लिये जाते हैं वोह इस हुक्म में दाख़िल नहीं।

1 .....مسلم، باب النهي عن الرواية عن الضعفاء والاحتياط في تحمّلها، ص۹، الحديث: ۷(۷).

www.dawateislami.net

याद रहे कि बद मज़्हबों की महफ़िल में जाना और उन की तक़रीर सुनना ना जाइज़ व ह़राम और अपने आप को बद मज़्हबी व गुमराही पर पेश करने वाला काम है। उन की तक़ारीर आयते क़ुरआनिया पर मुश्तमिल हों ख़्वाह अह़ादीसे मुबारका पर, अच्छी बातें चुनने का ज़ो'म रख कर भी उन्हें सुनना हरगिज़ जाइज़ नहीं। ऐन मुम्किन बल्कि अक्सर तौ़र पर वाक़ेअ़ है कि गुमराह शख़्स अपनी तक़रीर में क़ुरआन व ह़दीस की शर्ह़ व वज़ाह़त की आड़ में ज़रूर कुछ बातें अपनी बद मज़्हबी की भी मिला दिया करते हैं, और क़वी ख़दशा बल्कि वुक़ूअ़ का मुशाहदा है कि वोह बातें तक़रीर सुनने वाले के ज़ेह्न में रासिख़ हो कर दिल में घर कर जाती हैं। येही वज्ह है कि गुमराह व बेदीन की तक़रीर व गुफ़्तगू सुनने वाला उ़मूमन ख़ुद भी गुमराह हो जाता है। हमारे अस्लाफ़ अपने ईमान के बारे में बेह़द मोह़तात़ हुवा करते थे, लिहाज़ा बा वुजूद येह कि वोह अ़क़ीदे में इन्तिहाई मुतसल्लिब व पुख़्ता होते फिर भी वोह किसी बद मज़्हब की बात सुनना हरगिज़ गवारा न फ़रमाते थे अगर्चे वोह सो बार यक़ीन दिहानी कराता कि मैं सिर्फ़ क़ुरआन व ह़दीस बयान करूंगा। चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस बारे में अस्लाफ़ का अ़मल नक़्ल करते हुए फ़रमाते हैं : सय्यिदुना सईद बिन जुबैर शागिर्दे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को रास्ते में एक बद मज़्हब मिला। कहा, कुछ अ़र्ज़ करना चाहता हूं। फ़रमाया, मैं सुनना नहीं चाहता। अ़र्ज़ की एक कलिमा। अपना अंगूठा छुंगल्या के सिरे पर रख कर फ़रमाया, ''وَلَا نِصْفَ كَلِمَةٍ'' आधा लफ़्ज़ भी नहीं। लोगों ने अ़र्ज़ की इस का क्या सबब है ? फ़रमाया : येह उन में से है या'नी गुमराहों में से है।

इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन शागिर्दे अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के पास दो बद मज़्हब आए। अ़र्ज़ की, कुछ आयते कलामुल्लाह आप को सुनाएं ! फ़रमाया, मैं सुनना नहीं चाहता। अ़र्ज़ की, कुछ अह़ादीसे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनाएं ! फ़रमाया, मैं सुनना नहीं चाहता। उन्हों ने इसरार किया। फ़रमाया, तुम दोनों उठ जाओ या मैं उठा जाता हूं। आख़िर वोह ख़ाइबो ख़ासिर चले गए। लोगों ने अ़र्ज़ की : ऐ इमाम ! आप का क्या ह़रज था अगर वोह कुछ आयतें या ह़दीसें सुनाते ? फ़रमाया, मैं ने ख़ौफ़ किया कि वोह आयात व अह़ादीस के साथ अपनी कुछ तावील लगाएं और वोह मेरे दिल में रह जाए तो हलाक हो जाऊं।

फिर फ़रमाया : अइम्मा को तो येह ख़ौफ़ और अब अ़वाम को येह जुर्अत है, وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ। देखो ! अमान की राह वोही है जो तुम्हें तुम्हारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बताई, ''اِيَّاكُمْ وَاِيَّاهُمْ لَا يُضِلُّوْنَكُمْ وَلَا يَفْتِنُوْنَكُمْ'' उन (बद मज़्हबों) से दूर रहो और उन्हें अपने से दूर करो, कहीं वोह तुम्हें गुमराह न कर दें, कहीं वोह तुम्हें फ़ितने में न डाल दें। देखो नजात की राह वोही है जो तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ ने बताई :

www.dawateislami.net

याद आए पर पास न बैठ ज़ालिमों के। فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ [1]

भूले से उन में से किसी के पास बैठ गए हो तो याद आने पर फ़ौरन खड़े हो जाओ।[2]

وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٦٩﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और परहेज़ गारों पर उन के हिसाब से कुछ नहीं हां नसीहत देना शायद वोह बाज़ आएं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और परहेज़ गारों पर गुमराहों के हिसाब से कुछ नहीं लेकिन नसीहत करना है ताकि वोह बचें।

﴿وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ﴾ : **और परहेज़ गारों पर उन के हिसाब से कुछ नहीं।** इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि मुसल्मानों ने कहा था कि हमें अन्देशा है कि अगर हम उन गुमराहों को छोड़ देंगे और मन्अ न करेंगे तो हम गुनाहगार हो जाएंगे। इस पर येह आयत नाज़िल हुई।[3] और फ़रमाया गया कि परहेज़ गारों पर उन मज़ाक़ उड़ाने वालों के हिसाब से कुछ भी लाज़िम नहीं बल्कि त़ा'न व इस्तिह्ज़ा करने वालों के गुनाह उन्हीं पर हैं और उन्हीं से इस का हिसाब होगा, परहेज़ गारों पर कोई वबाल नहीं। हां परहेज़ गारों पर येह लाज़िम है कि उन्हें नसीहत करते रहें ताकि वोह अपनी ह़रकतों से बाज़ आएं। इस आयत से मा'लूम हुवा कि वा'ज़ो नसीहत और इज़्हारे ह़क़ के लिये उन के पास बैठना जाइज़ है लेकिन येह उ़लमा का काम है अ़वाम का नहीं।

وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهٖۤ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

1 .....انعام: ٦٨.

2 ..... फ़तावा रज़विय्या, 15/106, 107 मुलख़्ख़सन

3 .....تفسیر بغوی، الانعام، تحت الآیۃ: ٦٩، ٢/٨٧.

www.dawateislami.net

وَلِیٌّ وَّ لَا شَفِیْعٌ ۚ وَ اِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا یُؤْخَذْ مِنْهَا ؕ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِیْمٍ وَّ عَذَابٌ اَلِیْمٌۢ بِمَا كَانُوْا یَكْفُرُوْنَ ۠ ﴿۷۰﴾

ع ۱۰

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और छोड़ दे उन को जिन्हों ने अपना दीन हंसी खेल बना लिया और उन्हें दुन्या की ज़िन्दगी ने फ़रेब दिया और क़ुरआन से नसीहत दो कि कहीं कोई जान अपने किये पर पकड़ी न जाए **अल्लाह** के सिवा न उस का कोई हिमायती हो न सिफ़ारिशी और अगर अपने इवज़ सारे बदले दे तो उस से न लिये जाएं येह हैं वोह जो अपने किये पर पकड़े गए उन्हें पीने को खौलता पानी और दर्दनाक अ़ज़ाब बदला उन के कुफ़्र का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन लोगों को छोड़ दो जिन्हों ने अपना दीन हंसी मज़ाक़ और खेल बना लिया और जिन्हें दुन्या की ज़िन्दगी ने धोके में डाल दिया और क़ुरआन के ज़रीए नसीहत करो ताकि कोई जान अपने आ'माल की वज्ह से हलाकत के सिपुर्द न कर दी जाए, **अल्लाह** के सिवा न उस का कोई मददगार होगा और न ही सिफ़ारिशी और अगर वोह अपने बदले में सारे मुआ़वज़े दे दे तो उस से न लिये जाएंगे। येही वोह लोग हैं जिन्हें उन के आ'माल की वज्ह से हलाकत के सिपुर्द कर दिया गया। उन के लिये उन के कुफ़्र के सबब खौलते हुए पानी का मश्रूब और दर्दनाक अ़ज़ाब है।

وَذَرِ الَّذِیْنَ اتَّخَذُوْا دِیْنَهُمْ لَعِبًا وَّ لَهْوًا ﴿ : **और उन लोगों को छोड़ दो जिन्हों ने अपना दीन हंसी मज़ाक़ और खेल बना लिया।** ﴾ इर्शाद फ़रमाया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, आप उन लोगों से मुआ़शरती तअ़ल्लुक़ात और मेलजोल छोड़ दें जिन्हों ने अपने दीन को हंसी मज़ाक़ और खेल बना लिया और इस की वज्ह येह है कि उन्हें दुन्या की ज़िन्दगी ने धोके में डाल दिया और इस की मह़ब्बत उन के दिलों पर ग़ालिब आ गई और ऐ ह़बीब ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, आप क़ुरआन के ज़रीए उन्हें नसीह़त करें ताकि कोई जान अपने दुन्यवी बुरे आ'माल की वज्ह से आख़िरत में सवाब से मह़रूम और हलाकत के सिपुर्द न कर दी जाए, क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला के सिवा न उस हलाक होने वाले का कोई मददगार होगा और न ही सिफ़ारिशी

www.dawateislami.net

और अगर वोह पकड़े जाने वाला शख़्स अपने अ़ज़ाब से छुटकारे के बदले में सारे मुआ़वज़े दे दे तो वोह उस से न लिये जाएंगे। येही वोह लोग हैं जिन्हें उन के आ'माल की वज्ह से हलाकत के सिपुर्द कर दिया गया और उन के लिये उन के कुफ़्र के सबब खौलते हुए पानी का मश्रूब और दर्दनाक अ़ज़ाब है।[1]

गुनाहों पर इसरार ह़ालते कुफ़्र में मौत का सबब बन सकता है

अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं : याद रखें कि जिस त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला की आयतों का इन्कार करना और इन का मज़ाक़ उड़ाना कुफ़्र है और कुफ़्र की सज़ा जहन्नम का दाइमी दर्दनाक अ़ज़ाब है इसी त़रह़ किसी मुसल्मान का गुनाहों पर इसरार करना भी ऐसा अ़मल है जिस से उस की मौत कुफ़्र की ह़ालत में हो सकती है। ह़ज़रते अबू इस्ह़ाक़ फ़ज़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक शख़्स अक्सर हमारे पास बैठा करता और अपना आधा चेहरा ढांप कर रखता था, एक दिन मैं ने उस से कहा कि तुम हमारे पास ब कसरत बैठते हो और अपना आधा चेहरा ढांप कर रखते हो, मुझे इस की वज्ह बताओ। उस ने कहा : मैं कफ़न चोर था, एक दिन एक औ़रत को दफ़्न किया गया तो मैं उस की क़ब्र पर आया, जब मैं ने उस की क़ब्र खोद कर उस के कफ़न को खींचा तो उस ने हाथ उठा कर मेरे चेहरे पर थप्पड़ मार दिया। फिर उस शख़्स ने अपना चेहरा दिखाया तो उस पर पांच उंग्लियों के निशान थे। मैं ने उस से कहा : इस के बा'द क्या हुवा ? उस ने कहा : फिर मैं ने उस का कफ़न छोड़ दिया और क़ब्र बन्द कर के उस पर मिट्टी डाल दी और मैं ने दिल में पुख़्ता इरादा कर लिया कि जब तक ज़िन्दा रहूंगा किसी की क़ब्र नहीं खोदूंगा। ह़ज़रते अबू इस्ह़ाक़ फ़ज़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने येह वाक़िआ़ इमाम औ़ज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को लिख कर भेजा तो उन्हों ने मुझे लिखा कि उस से पूछो : जिन मुसल्मानों का इन्तिक़ाल हुवा क्या उन का चेहरा क़िब्ले की त़रफ़ था ? मैं ने इस के बारे में उस कफ़न चोर से पूछा तो उस ने जवाब दिया : उन में से ज़ियादा तर लोगों का चेहरा क़िब्ले से फिरा हुवा था। मैं ने उस का जवाब इमाम औ़ज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को लिख कर भेजा तो उन्हों ने मुझे तह़रीर भेजी जिस पर तीन मरतबा "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْن" लिखा हुवा था और साथ में येह तह़रीर था : जिस का चेहरा क़िब्ले से फिरा हुवा था उस की मौत दीने इस्लाम पर नहीं हुई, तुम **अल्लाह** तआ़ला से उस के अ़फ़्व, मग़्फ़िरत और उस की रिज़ा त़लब करो।[2]

1 .....خازن، الانعام، تحت الآية: ۷۰، ۲/۲۵-۲۶.
2 .....روح البيان، الانعام، تحت الآية: ۷۰، ۳/۵۱.

www.dawateislami.net

قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰۤى اَعْقَابِنَا
بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِى اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِى الْاَرْضِ
حَيْرَانَ ۖ لَهٗۤ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗۤ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى
اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۷۱﴾ وَاَنْ اَقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ؕ وَهُوَ الَّذِىْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۷۲﴾ وَهُوَ الَّذِىْ
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۘ
قَوْلُهُ الْحَقُّ ؕ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ ؕ عٰلِمُ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿۷۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ क्या हम **अल्लाह** के सिवा उस को पूजें जो हमारा न भला करे न बुरा और उलटे पाउं पलटा दिये जाएं बा'द इस के कि **अल्लाह** ने हमें राह दिखाई उस की त़रह़ जिसे शैत़ानों ने ज़मीन में राह भुला दी ह़ैरान है उस के रफ़ीक़ उसे राह की त़रफ़ बुला रहे हैं कि इधर आ तुम फ़रमाओ कि **अल्लाह** ही की हिदायत हिदायत है और हमें हुक्म है कि हम उस के लिये गरदन रख दें जो रब है सारे जहान का। और येह कि नमाज़ क़ाइम रखो और उस से डरो और वोही है जिस की त़रफ़ तुम्हें उठना है। और वोही है जिस ने आस्मान व ज़मीन ठीक बनाए और जिस दिन फ़ना हुई हर चीज़ को कहेगा हो जा वोह फ़ौरन हो जाएगी। उस की बात सच ही है और उसी की सल्त़नत है जिस दिन सूर फूंका जाएगा हर छुपे और ज़ाहिर का जानने वाला और वोही है ह़िक्मत वाला ख़बरदार।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ क्या हम **अल्लाह** के सिवा उस की इबादत करें जो न

www.dawateislami.net

हमें नफ़्अ़ दे सकता है और न हमें नुक़्सान पहुंचा सकता है ? और क्या इस के बा'द हम उलटे पाउं फिर जाएं जब कि हमें **अल्लाह** ने हिदायत दी है उस शख़्स की त़रह़ (उलटे पाउं फिर जाएं) जिसे शैत़ानों ने ज़मीन में रास्ता भुला दिया हो वोह ह़ैरान है, उस के साथी उसे रास्ते की त़रफ़ बुला रहे हैं कि इधर आओ। तुम फ़रमाओ कि **अल्लाह** की हिदायत ही हिदायत है और हमें हुक्म है कि हम उस के लिये गरदन रख दें जो सारे जहानों का पालने वाला है। और येह कि नमाज़ क़ाइम रखो और उस से डरो और वोही है जिस की त़रफ़ तुम्हें उठाया जाएगा। और वोही है जिस ने ह़क़ के साथ आस्मान व ज़मीन बनाए और जिस दिन फ़ना की हुई हर चीज़ को वोह फ़रमाएगा : "हो जा" तो वोह फ़ौरन हो जाएगी। उस की बात सच्ची है जिस दिन सूर में फूंका जाएगा उस दिन उसी की सल्त़नत है (वोह) हर छुपे और ज़ाहिर को जानने वाला है और वोही ह़िक्मत वाला, ख़बरदार है।

﴿قُلْ : तुम फ़रमाओ।﴾ इस आयत का ख़ुलासा येह है कि ऐ मुस्त़फ़ा करीम ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, जो अपने बाप दादा के दीन की दा'वत देते हैं उन मुश्रिकीन से फ़रमाओ कि क्या हम **अल्लाह** तआ़ला के सिवा उस की इ़बादत करें जो न हमें नफ़्अ़ दे सकता है और न हमें नुक़्सान पहुंचा सकता है और उस में कोई क़ुदरत नहीं और क्या इस के बा'द हम उलटे पाउं फिर जाएं जब कि हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हिदायत दी है और इस्लाम और तौह़ीद की ने'मत अ़त़ा फ़रमाई है और बुत परस्ती के बद तरीन वबाल से बचाया है।

﴿وَنُرَدُّ عَلٰۤى اَعْقَابِنَا : और क्या हम उलटे पाउं फिर जाएं।﴾ इस आयत में ह़क़ और बात़िल की दा'वत देने वालों की एक तम्सील बयान फ़रमाई गई कि जिस त़रह़ मुसाफ़िर अपने रफ़ीक़ों के साथ था, जंगल में भूतों और शैत़ानों ने उस को रास्ता बहका दिया और कहा मन्ज़िले मक़्सूद की येही राह है और उस के रफ़ीक़ उस को राहे रास्त की त़रफ़ बुलाने लगे, वोह ह़ैरान रह गया कि किधर जाए। उस का अन्जाम येही होगा कि अगर वोह भूतों की राह पर चल पड़ा तो हलाक हो जाएगा और रफ़ीक़ों का कहा माना तो सलामत रहेगा और मन्ज़िल पर पहुंच जाएगा। येही ह़ाल उस शख़्स का है जो त़रीक़ए इस्लाम से बहका और शैत़ान की राह चला, मुसल्मान उस को राहे रास्त की त़रफ़ बुलाते हैं अगर उन की बात मानेगा राह पाएगा वरना हलाक हो जाएगा।[1]

﴿اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى : अल्लाह की हिदायत ही हिदायत है।﴾ इर्शाद फ़रमाया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, तुम फ़रमाओ कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हिदायत ही हिदायत है। जो त़रीक़ा **अल्लाह** तआ़ला ने अपने बन्दों के लिये वाज़ेह़ फ़रमाया और जो दीने इस्लाम उन के लिये मुक़र्रर किया वोही हिदायत व नूर है और जो इस के सिवा है वोह दीने बात़िल है और हमें हुक्म है कि हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये गरदन रख दें और उसी की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी करें और ख़ास उसी की इ़बादत करें।

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۷۱، ۲/۲۶-۲۷.

www.dawateislami.net

وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهِیْمُ لِاَبِیْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّیْۤ اَرٰىكَ وَ قَوْمَكَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۷۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से कहा क्या तुम बुतों को ख़ुदा बनाते हो बेशक मैं तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में पाता हूं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से फ़रमाया, क्या तुम बुतों को (अपना) मा'बूद बनाते हो ? बेशक मैं तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में देख रहा हूं।

﴿وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهِیْمُ لِاَبِیْهِ﴾ **: और याद करो जब इब्राहीम ने अपने बाप से फ़रमाया ।** ﴾ येह आयत मुश्रिकीने अ़रब पर हुज्जत है जो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को क़ाबिले ता'ज़ीम जानते थे और उन की फ़ज़ीलत के मो'तरिफ़ थे उन्हें दिखाया जाता है कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बुत परस्ती को कितना बड़ा ऐ़ब और गुमराही बताते हैं और अपने चचा आज़र से फ़रमा रहे हैं कि क्या तुम बुतों को अपना मा'बूद बनाते हो ? बेशक मैं तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में देख रहा हूं। तो जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बुतों से इस क़दर नफ़रत करते हैं तो ऐ अहले मक्का ! अगर तुम इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मानते हो तो तुम भी बुत परस्ती छोड़ दो।

आज़र ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का चचा था या बाप ?

यहां आयत में आज़र के लिये "اَبٌ" का लफ़्ज़ ज़िक्र किया गया है। इस का एक मा'ना है "बाप" और दूसरा मा'ना है "चचा" और यहां इस से मुराद चचा है, जैसा कि क़ामूस में है : आज़र ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के चचा का नाम है।[1]

और इमाम जलालुद्दीन सुयूती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने "मसालिकुल ह़ुनफ़ा" में भी ऐसा ही लिखा है। नीज़ चचा को बाप कहना तमाम ममालिक में मा'मूल है बिल ख़ुसूस अ़रब में और क़ुरआन व ह़दीस में भी चचा को बाप कहने की मिसालें मौजूद हैं, जैसा कि क़ुरआने करीम में है :

1 .....القاموس المحيط، باب الراء، فصل الهمزة، ۱/ ۴۹۱، تحت اللفظ: الازر.

www.dawateislami.net

نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَآىِٕكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِیْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا[1]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : हम आप के मा'बूद और आप के आबाओ अज्दाद इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ के मा'बूद की इबादत करेंगे जो एक मा'बूद है।

इस में हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हज़रते या'कूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के आबा में ज़िक्र किया गया है हालां कि आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हज़रते या'कूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के चचा हैं। और हदीस शरीफ़ में है, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''رُدُّوْا عَلَیَّ اَبِیْ'' मेरे बाप को मेरे पास लौटा दो।[2] यहां ''اَبِی'' से हज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मुराद हैं जो कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा हैं।

وَكَذٰلِكَ نُرِیْۤ اِبْرٰهِیْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَلِیَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِیْنَ ﴿۷۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और इसी त़रह़ हम इब्राहीम को दिखाते हैं सारी बादशाही आस्मानों और ज़मीन की और इस लिये कि वोह ऐनुल यक़ीन वालों में हो जाए।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और इसी त़रह़ हम इब्राहीम को आस्मानों और ज़मीन की अ़ज़ीम सल्त़नत दिखाते हैं और इस लिये कि वोह ऐनुल यक़ीन वालों में से हो जाए।

﴿وَكَذٰلِكَ نُرِیْۤ اِبْرٰهِیْمَ﴾ : **और इसी त़रह़ हम इब्राहीम को दिखाते हैं।** इर्शाद फ़रमाया कि जिस त़रह़ हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को दीन में बीनाई अ़त़ा फ़रमाई ऐसे ही हम उन्हें आस्मानों और ज़मीन के मुल्क दिखाते हैं। हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि इस से आस्मानों और ज़मीन की मख़्लूक़ मुराद है। हज़रते मुजाहिद और हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه कहते हैं कि इस से आस्मानों और ज़मीन की निशानियां मुराद हैं और वोह इस त़रह़ कि हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को बैतुल मुक़द्दस के सख़्रा पर खड़ा किया गया और आप के लिये तमाम आस्मानों का मुशाहदा खोल दिया गया यहां तक कि आप ने अ़र्शो कुरसी और आस्मानों के तमाम अ़जाइब और जन्नत में अपने मक़ाम को मुआ़यना फ़रमाया फिर आप के लिये ज़मीन का मुशाहदा खोल दिया गया यहां तक कि आप ने सब से

1 .....بقرہ:۱۳۳. 2 .....مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب المغازی، حدیث فتح مکۃ، ۸/ ۵۳۰، الحدیث:۳.

www.dawateislami.net

नीचे की ज़मीन तक नज़र की और ज़मीनों के तमाम अ़जाइबात देखे। मुफ़स्सिरीन का इस में इख़्तिलाफ़ है कि येह रूयत बातिनी निगाह के साथ थी या सर की आंखों से।[1]

फिर इस मे'राजे इब्राहीमी का मक़्सद बयान फ़रमाया कि हम ने येह निशानियां उन्हें इस लिये दिखाईं कि वोह देख कर यक़ीन करने वालों में से हो जाएं क्यूं कि हर ज़ाहिर व मख़्फ़ी चीज़ उन के सामने कर दी गई और मख़्लूक़ के आ'माल में से कुछ भी उन से न छुपा रहा। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अ़ज़ीम मे'राज हुई मगर हमारे आक़ा, हुज़ूर सय्यिदुल आ़लमीन, मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस से बहुत बढ़ कर मे'राज हुई ह़त्ता कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم "دَنَا فَتَدَلّٰى ۙ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى" के मक़ाम पर फ़ाइज़ हो गए।

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَاۤ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿۷۶﴾ فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ ﴿۷۷﴾ فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَاۤ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿۷۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब उन पर रात का अंधेरा आया एक तारा देखा बोले इसे मेरा रब ठहराते हो फिर जब वोह डूब गया बोले मुझे ख़ुश नहीं आते डूबने वाले। फिर जब चांद चमक्ता देखा बोले इसे मेरा रब बताते हो फिर जब वोह डूब गया कहा अगर मुझे मेरा रब हिदायत न करता तो मैं भी इन्हीं गुमराहों में होता। फिर जब सूरज जगमगाता देखा बोले इसे मेरा रब कहते हो येह तो उन सब से बड़ा है फिर जब वोह डूब गया कहा ऐ क़ौम मैं बेज़ार हूं उन चीज़ों से जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : फिर जब उन पर रात का अंधेरा छाया तो एक तारा देखा, फ़रमाया : क्या इसे मेरा रब ठहराते हो ? फिर जब वोह डूब गया तो फ़रमाया : मैं डूबने वालों को पसन्द नहीं करता। फिर जब चांद चमक्ता देखा तो फ़रमाया : क्या इसे मेरा रब कहते हो ? फिर जब वोह

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۷۵، ۲/۲۸.

www.dawateislami.net

डूब गया तो फ़रमाया : अगर मुझे मेरे रब ने हिदायत न दी होती तो मैं भी गुमराह लोगों में से होता। फिर जब सूरज को चमकता देखा तो फ़रमाया : क्या इसे मेरा रब कहते हो ? येह तो उन सब से बड़ा है फिर जब वोह डूब गया तो फ़रमाया : ऐ मेरी क़ौम ! मैं उन चीज़ों से बेज़ार हूं जिन्हें तुम (**अल्लाह** का) शरीक ठहराते हो।

﴿فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ : **तो जब उन पर रात का अंधेरा छाया।**﴾ मुफ़स्सिरीन और मुअर्रिख़ीन का बयान है कि नमरूद बिन कन्आ़न बड़ा जाबिर बादशाह था, सब से पहले उसी ने ताज सर पर रखा। येह बादशाह लोगों से अपनी पूजा करवाता था, काहिन और नुजूमी बड़ी कसरत से इस के दरबार में हाज़िर रहते थे। नमरूद ने ख़्वाब देखा कि एक सितारा तुलूअ़ हुवा है और उस की रोशनी के सामने आफ़्ताब व माहताब बिल्कुल बे नूर हो गए। इस से वोह बहुत ख़ौफ़ज़दा हुवा और उस ने काहिनों से इस ख़्वाब की ता'बीर दरयाफ़्त की। उन्हों ने कहा कि इस साल तेरी सल्त़नत में एक फ़रज़न्द पैदा होगा जो तेरे मुल्क के ज़वाल का बाइस होगा और तेरे दीन वाले उस के हाथ से हलाक होंगे। येह ख़बर सुन कर वोह परेशान हुवा और उस ने हुक्म दिया कि जो बच्चा पैदा हो क़त्ल कर डाला जाए और मर्द औ़रतों से अ़लाहदा रहें और इस की निगहबानी के लिये एक महकमा क़ाइम कर दिया गया मगर तक़्दीराते इलाहिय्यह को कौन टाल सकता है। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वालिदए माजिदा ह़ामिला हुईं और काहिनों ने नमरूद को इस की भी ख़बर दी कि वोह बच्चा ह़म्ल में आ गया लेकिन चूंकि ह़ज़रत की वालिदा साह़िबा की उ़म्र काफ़ी कम थी उन का ह़म्ल किसी त़रह़ पहचाना ही न गया। जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की विलादत का वक़्त क़रीब आया तो आप की वालिदा उस तहख़ाने में चली गईं जो आप के वालिद ने शह़र से दूर खोद कर तय्यार किया था, वहां आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की विलादत हुई और वहीं आप रहे। पथ्थरों से उस तहख़ाने का दरवाज़ा बन्द कर दिया जाता था, रोज़ाना वालिदा साह़िबा दूध पिला आती थीं और जब वहां पहुंचती थीं तो देखती थीं कि आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी उंगली का किनारा चूस रहे हैं और उस से दूध बरआमद होता है। आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बहुत जल्द बढ़ते थे। इस में इख़्तिलाफ़ है कि आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तहख़ाने में कितना अ़र्सा रहे, बा'ज़ कहते हैं सात बरस और बा'ज़ ने कहा कि तेरह बरस और बा'ज़ ने कहा कि सतरह बरस रहे।[1]

इस्लामी अ़क़ीदा और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का वाक़िआ़

येह मस्अला यक़ीनी है कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हर ह़ाल में मा'सूम होते

1 .....خازن، الانعام، تحت الآية: ٧٦، ٢/٢٩-٣٠.

www.dawateislami.net

हैं और वोह शुरूअ़ ही से हर वक़्त मा'रिफ़ते इलाही से शनासा होते हैं। इस अ़क़ीदे को ज़ेह्न नशीन रखते हुए इस आयत और इस के बा'द वाली दो आयात की तफ़्सीर समझने के लिये क़ुरआने पाक में बयान कर्दा वाक़िए़ को ज़ैल में ज़रा तफ़्सील से पढ़िये। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इब्तिदा ही से तौह़ीद की ह़िमायत और कुफ़्रिय्या अ़क़ाइद का रद करना शुरूअ़ फ़रमा दिया और फिर जब एक सूराख़ से रात के वक़्त आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ज़ोहरा या मुश्तरी सितारे को देखा तो लोगों के सामने तौह़ीदे बारी तआ़ला की दलील बयान करना शुरूअ़ कर दी क्यूं कि उस ज़माने के लोग बुत और सितारों की परस्तिश करते थे तो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने एक निहायत नफ़ीस और दिलनशीं पैराए में उन्हें ग़ौरो फ़िक्र की त़रफ़ रहनुमाई की जिस से वोह इस नतीजे पर पहुंचे कि तमाम जहान अ़दम से वुजूद में आने वाला है और फिर ख़त्म होने वाला है तो येह मा'बूद नहीं हो सकता बल्कि तमाम जहान बज़ाते ख़ुद किसी वुजूद में लाने वाली ज़ात का मोह़ताज है जिस के क़ुदरतो इख़्तियार से इस में तब्दीलियां होती रहती हैं। चुनान्चे पहले आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने सितारे को देखा तो फ़रमाया कि "क्या इसे मेरा रब कहते हो ?" फिर जब वोह डूब गया तो फ़रमाया कि "मैं डूबने वालों को पसन्द नहीं करता।" या'नी जिस में ऐसे तग़य्युरात हो रहे हैं वोह ख़ुदा नहीं हो सकता। फिर इस के बा'द आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने चांद को चमक्ते हुए देखा तो फ़रमाया : क्या इसे मेरा रब कहते हो ? फिर जब वोह डूब गया तो फ़रमाया : अगर मुझे मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने हिदायत न दी होती तो मैं भी गुमराह लोगों में से हो जाता। इस में उस क़ौम को तम्बीह है कि जो चांद को मा'बूद मानते थे, उन्हें आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने गुमराह क़रार दिया और ख़ुद को हिदायत पर। इस से भी मा'लूम हुवा कि आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की येह बातें उन का रद करने के लिये ही थीं। चांद के मा'बूद न होने पर भी आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येही दलील बयान फ़रमाई कि इस का एक ह़ाल से दूसरे ह़ाल की त़रफ़ मुन्तक़िल होना क़ाबिले फ़ना होने की दलील है। फिर इस के बा'द आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने सूरज को जगमगाते हुए देखा तो फ़रमाया कि क्या इसे मेरा रब कहते हो ? येह तो उन सब से बड़ा है, फिर जब वोह भी डूब गया तो फ़रमाया : ऐ मेरी क़ौम ! मैं उन चीज़ों से बेज़ार हूं जिन्हें तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराते हो। यूं ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने साबित कर दिया कि सितारों में छोटे से बड़े तक कोई भी रब होने की सलाह़िय्यत नहीं रखता, इन का मा'बूद होना बात़िल है और क़ौम जिस शिर्क में मुब्तला है आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस से बेज़ारी का इज़्हार कर दिया और इस के बा'द दीने ह़क़ का बयान फ़रमाया जो अगली आयतों में आ रहा है। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सितारे, चांद और सूरज के बारे में फ़रामीन लोगों को समझाने के लिये थे और مَعَاذَاللّٰه अपने बारे में न थे इस की बहुत वाज़ेह़ दलील येह भी है कि जब आप عَلَيْهِ السَّلَام

www.dawateislami.net

ने सितारे, चांद और सूरज के बारे में येह फ़रमाया तो क्या आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इस से पहले दिन रात के फ़र्क़ को और सूरज चांद के ग़ुरूब होने को कभी नहीं देखा था, ऐसा तो हरगिज़ नहीं हो सकता। तो मा'लूम हुवा कि सूरज चांद सितारे के ह़वाले से आप का कलाम सिर्फ़ क़ौम को समझाने के लिये था और इस चीज़ का इस से भी ज़ियादा सराह़त के साथ बयान ख़ुद नीचे आयत नम्बर 83 में मौजूद है।

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِیْفًا وَّمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۷۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मैं ने अपना मुंह उस की त़रफ़ किया जिस ने आस्मान व ज़मीन बनाए एक उसी का हो कर और मैं मुश्रिकों में नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मैं ने हर बात़िल से जुदा हो कर अपना मुंह उस की त़रफ़ किया जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूं।

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ : मैं ने अपना मुंह उस की त़रफ़ किया। ﴾ ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने झूटे मा'बूदों से बेज़ारी ज़ाहिर करने के बा'द अपना अ़क़ीदा और दीने ह़क़ का ए'लान फ़रमा दिया चुनान्चे फ़रमाया कि "मैं ने हर बात़िल से जुदा हो कर अपना मुंह उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह की त़रफ़ किया जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूं।" या'नी इस्लाम के सिवा बाक़ी तमाम अद्यान से जुदा रह कर मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सामने झुकने वाला हूं।

ह़नीफ़ के मा'ना

इस आयत में ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ख़ुद को ह़नीफ़ फ़रमाया। ह़नीफ़ के मा'ना हैं "तमाम झूटे दीनों से साफ़ और हर बात़िल से जुदा।"

दीने ह़क़ के इस्तिह़्काम की सूरत

इस से मा'लूम हुवा कि दीने ह़क़ का क़ियाम व इस्तिह़्काम जब ही हो सकता है जब कि तमाम बात़िल दीनों से बेज़ारी और दीने ह़क़ पर पुख़्तगी हो। दीन के मुआ़मले में पिलपिले

www.dawateislami.net

पन का मुज़ाहरा करने, सब को अपनी अपनी जगह दुरुस्त मानने और सब मज़ाहिब में इत्तिफ़ाक़ और इत्तिहाद पैदा करने की कोशिशें करने से दीने हक़ का इस्तिह्कामम मुम्किन नहीं।

नमाज़ से पहले पढ़ा जाने वाला वज़ीफ़ा

हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ शुरूअ करने से पहले एक वज़ीफ़ा पढ़ा करते थे, इस के बारे में हज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब नमाज़ शुरूअ करने के लिये खड़े होते तो येह पढ़ा करते थे : وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَمَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ " मैं ने हर बातिल से जुदा हो कर अपना मुंह उस की तरफ़ किया जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूं। बेशक मेरी नमाज़ और मेरी क़ुरबानियां और मेरा जीना और मेरा मरना सब **अल्लाह** के लिये है जो सारे जहानों का रब है। उस का कोई शरीक नहीं, इसी का मुझे हुक्म दिया गया है और मैं मुसल्मान हूं।[1]

وَحَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ؕ قَالَ اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ فِي اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ؕ وَلَآ اَخَافُ مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ رَبِّيْ شَيْـًٔا ؕ وَسِعَ رَبِّيْ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝۸۰

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन की क़ौम उन से झगड़ने लगी कहा क्या **अल्लाह** के बारे में मुझ से झगड़ते हो वोह तो मुझे राह बता चुका और मुझे उन का डर नहीं जिन्हें तुम शरीक बताते हो हां जो मेरा ही रब कोई बात चाहे मेरे रब का इल्म हर चीज़ को मुहीत है तो क्या तुम नसीहत नहीं मानते।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन की क़ौम उन से झगड़ने लगी (इब्राहीम ने) फ़रमाया : क्या तुम **अल्लाह** के बारे में मुझ से झगड़ते हो हालां कि वोह तो मुझे हिदायत अ़ता फ़रमा चुका और मुझे उन का (कोई) डर नहीं जिन्हें तुम शरीक बताते हो अलबत्ता येह कि मेरा रब कोई बात चाहे। मेरे रब का इल्म हर चीज़ को मुहीत है तो क्या तुम नसीहत नहीं मानते ?

1 .....مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب الدعاء في صلاة الليل وقيامه، ص ۳۹۰، الحديث: ۲۰۱ (۷۷۱).

www.dawateislami.net

﴿وَحَآجَّهٗ قَوْمُهٗ﴾ : **और उन की क़ौम उन से झगड़ने लगी ।** ﴾ जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ए'लाने ह़क़ फ़रमाया, झूटे मा'बूदों का रद किया और तौह़ीदे बारी तआ़ला को बयान फ़रमाना शुरूअ़ किया तो क़ौम आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से झगड़ने लगी और कहने लगी कि "ऐ इब्राहीम ! बुतों से डरो, उन्हें बुरा कहने से ख़ौफ़ खाओ, कहीं आप को कुछ नुक़्सान न पहुंच जाए ।" उन के जवाब में ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : क्या तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बारे में मुझ से झगड़ते हो ? ह़ालां कि वोह तो मुझे अपनी तौह़ीद व मा'रिफ़त की हिदायत अ़त़ा फ़रमा चुका और मुझे उन बुतों का कोई डर नहीं जिन्हें तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक बताते हो, क्यूं कि वोह बुत बेजान हैं, न नुक़्सान दे सकते हैं और न नफ़्अ़ पहुंचा सकते हैं, उन से क्या डरना । मुझे कोई नुक़्सान नहीं पहुंच सकता सिवाए उस के कि मेरा रब عَزَّوَجَلَّ कोई बात चाहे तो वोह हो सकती है, क्यूं कि मेरा रब عَزَّوَجَلَّ क़ादिरे मुत़्लक़ है न येह कि तुम्हारे बुतों के चाहने से कुछ हो ।[1]

سُبْحٰنَ اللّٰه ! ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ऐसे ख़त़रनाक मौक़ए़ पर भी ईमान न छुपाया बल्कि अपने ईमान का ए'लान फ़रमा दिया । इस से येह भी मा'लूम हुवा कि पैग़म्बर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दिल में मख़्लूक़ की ऐसी हैबत नहीं आ सकती जो उन्हें फ़राइज़ की अदाएगी से रोक दे ।

وَكَيْفَ اَخَافُ مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ؕ فَاَیُّ الْفَرِیْقَیْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं तुम्हारे शरीकों से क्यूंकर डरूं और तुम नहीं डरते कि तुम ने **अल्लाह** का शरीक उस को ठहराया जिस की तुम पर उस ने कोई सनद न उतारी तो दोनों गुरौहों में अमान का ज़ियादा सज़ावार कौन है अगर तुम जानते हो ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मैं तुम्हारे शरीकों से क्यूं डरूं ? और तुम इस बात से नहीं डरते कि तुम ने **अल्लाह** का शरीक उस को ठहराया जिस की कोई दलील **अल्लाह** ने तुम पर नहीं

وقف لازم

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۸۰، ۲/۳۱-۳۲، مدارک، الانعام، تحت الآیۃ: ۸۰، ص ۳۳۰، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

उतारी तो दोनों गुरौहों में अमान का ज़ियादा ह़क़दार कौन है ? अगर तुम जानते हो ।

﴿وَكَيْفَ اَخَافُ مَاۤ اَشْرَكْتُمْ﴾ : **और मैं तुम्हारे शरीकों से क्यूं डरूं ?** ﴾ ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने मज़ीद फ़रमाया कि मैं तुम्हारे शरीकों से क्यूं डरूं जो बेजान, जमादात और बिल्कुल आ़जिज़ो बेबस हैं और मुझे डराने की बजाए तो तुम्हें डरना चाहिये क्यूं कि तुम ने उन बुतों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराया जिन के शरीक होने की तुम्हारे पास कोई दलील नहीं । इस बात को सामने रख कर ग़ौर करो कि अम्न का मुस्तह़िक़ कौन है वोह मोमिन जिस के पास अपने अ़क़ीदे की ह़क़्क़ानिय्यत के दलाइल हैं या वोह मुश्रिक अम्न का मुस्तह़िक़ है जिस के पास उस के अ़क़ीदे की कोई मा'क़ूल व क़ाबिले क़बूल दलील नहीं है ।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْۤا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓىِٕكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۸۲﴾ ع ۱۵

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो ईमान लाए और अपने ईमान में किसी नाह़क़ की आमेज़िश न की उन्हीं के लिये अमान है और वोही राह पर हैं ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह जो ईमान लाए और अपने ईमान में शिर्क को न मिलाया तो उन्हीं के लिये अमान है और येही हिदायत याफ़्ता हैं ।

﴿اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا﴾ : **वोह जो ईमान लाए ।** ﴾ इस आयत में ईमान से मुराद है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को मानना और ज़ुल्म से मुराद शिर्क है । अलबत्ता मो'तज़िला इस आयत में "ज़ुल्म" से मुराद गुनाह लेते हैं, येह सह़ीह़ अह़ादीस के ख़िलाफ़ है इस लिये इस का ए'तिबार नहीं । ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब येह आयते करीमा नाज़िल हुई तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ बहुत परेशान हुए और उन्हों ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : "हम में से ऐसा कौन है जो अपनी जान पर ज़ुल्म नहीं करता ?" रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इस से येह मुराद नहीं बल्कि इस से मुराद शिर्क है । क्या तुम ने वोह बात नहीं सुनी जो ह़ज़रते लुक़्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बेटे को नसीह़त करते हुए कही कि "ऐ मेरे बेटे ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का किसी को शरीक न करना, बेशक शिर्क बड़ा ज़ुल्म है ।"[1]

(1) .....بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب قول اللّٰہ تعالی: ولقد آتینا لقمان الحکمۃ... الخ، ۲/۴۵۱، الحدیث: ۳۴۲۹.

www.dawateislami.net

وَ تِلْكَ حُجَّتُنَاۤ اٰتَیْنٰهَاۤ اِبْرٰهِیْمَ عَلٰى قَوْمِهٖؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِیْمٌ عَلِیْمٌ ﴿۸۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और येह हमारी दलील है कि हम ने इब्राहीम को उस की क़ौम पर अ़ता फ़रमाई हम जिसे चाहें दरजों बुलन्द करें बेशक तुम्हारा रब इ़ल्मो हिक्मत वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और येह हमारी मज़बूत़ दलील है जो हम ने इब्राहीम को उस की क़ौम के मुक़ाबले में अ़ता फ़रमाई। हम जिस के चाहते हैं दरजात बुलन्द कर देते हैं। बेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला, इ़ल्म वाला है।

﴿وَتِلْكَ حُجَّتُنَا﴾ **: और येह हमारी मज़बूत़ दलील है।** इस रुकूअ़ में ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शान और दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की अ़ज़मत का बयान है और इस सारे बयान का मक़्सद सब अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के आक़ा, इमामुल अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तस्कीनो ता'लीम और तरबियत है, जैसा कि रुकूअ़ के आख़िर में है। इस से मा'लूम हुवा कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का कसरत से तज़्किरा करना और मह़फ़िलों, मजलिसों को उन के ज़िक्रे पाक से आरास्ता करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को निहायत मह़बूब है और ईमान की त़ाक़त और अ़क़ीदए तौह़ीद को मज़बूत़ करने का बेहतरीन ज़रीआ़ है। इस आयत का ख़ुलासा येह है कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम के सामने सूरज, चांद, सितारों के ज़रीए़ और दीगर जो दलाइल बयान फ़रमाए वोह सब दलाइल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अ़ता फ़रमाए थे। इस से येह भी मा'लूम हुवा कि आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का सूरज, चांद वग़ैरहा को रब कहना مَعَاذَ الله बत़ौरे शिर्क नहीं बल्कि क़ौम के सामने बत़ौर दलील था क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया कि येह बातें तो हम ने उन्हें बत़ौर दलील के अ़ता फ़रमाई थीं।

﴿نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ﴾ **: हम दरजात बुलन्द करते हैं।** इर्शाद फ़रमाया कि हम जिस के चाहते हैं इ़ल्म, अ़क़्ल, फ़ह्म और फ़ज़ीलत के साथ दरजात बुलन्द कर देते हैं जैसा कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दुन्या में इ़ल्मो हिक्मत और नुबुव्वत के साथ और आख़िरत में क़ुर्बो सवाब के साथ दरजे बुलन्द फ़रमाए।

www.dawateislami.net

وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَ یَعْقُوْبَ ؕ كُلًّا هَدَیْنَا ۚ وَ نُوْحًا هَدَیْنَا مِنْ قَبْلُ وَ مِنْ ذُرِّیَّتِهٖ دَاوٗدَ وَ سُلَیْمٰنَ وَ اَیُّوْبَ وَ یُوْسُفَ وَ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ؕ وَ كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ ۙ﴿۸۴﴾ وَ زَكَرِیَّا وَ یَحْیٰى وَ عِیْسٰى وَ اِلْیَاسَ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِیْنَ ۙ﴿۸۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने उन्हें इस्हाक़ और या'क़ूब अ़ता किये उन सब को हम ने राह दिखाई और उन से पहले नूह़ को राह दिखाई और उस की औलाद में से दावूद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून को और हम ऐसा ही बदला देते हैं नेकोकारों को। और ज़करिय्या और यह़या और ईसा और इल्यास को येह सब हमारे क़ुर्ब के लाइक़ हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने उन्हें इस्हाक़ और या'क़ूब अ़ता किये। उन सब को हम ने हिदायत दी और उन से पहले नूह़ को हिदायत दी और उस की औलाद में से दावूद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून को (हिदायत अ़ता फ़रमाई) और ऐसा ही हम नेक लोगों को बदला देते हैं। और ज़करिय्या और यह़या और ईसा और इल्यास को (हिदायत याफ़्ता बनाया) येह सब हमारे ख़ास बन्दों में से हैं।

﴿وَوَهَبْنَا لَهٗۤ : **और हम ने उन्हें अ़ता फ़रमाए।**﴾ ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से पहले ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की हिदायत का तज़्किरा किया गया और इस के साथ ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की औलादे मुबारक का तज़्किरा किया। जिन के अस्माए करीमा आयत में बयान हुए येह सब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की औलाद में से हैं और येह सारे नबी हुए।

ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का मक़ाम

ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को **अल्लाह** तआ़ला ने येह मक़ाम और मर्तबा अ़ता फ़रमाया कि आप के बा'द जितने भी अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मब्ऊ़स हुए सब आप ही की औलाद से थे, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

وَجَعَلْنَا فِیْ ذُرِّیَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ[1]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने उस की औलाद में नुबुव्वत और किताब रखी।

तफ़्सीरे बग़वी और तफ़्सीरे ख़ाज़िन में है : ''یُقَالُ اِنَّ اللّٰهَ لَمْ یَبْعَثْ نَبِیًّا بَعْدَ اِبْرَاهِیْمَ اِلَّا مِنْ نَسْلِهٖ'' कहा जाता है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द जो नबी मब्ऊ़स फ़रमाया वोह उन की नस्ल से था।[2]

तफ़्सीरे कुरतुबी में है : ''لَمْ یَبْعَثِ اللّٰهُ نَبِیًّا مِنْ بَعْدِ اِبْرَاهِیْمَ اِلَّا مِنْ صُلْبِهٖ'' **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द तमाम अम्बिया उन के सुल्ब से मब्ऊ़स फ़रमाए।[3]

तफ़्सीरे जलालैन में है : ''فَكُلُّ الْاَنْبِیَاءِ بَعْدَ اِبْرَاهِیْمَ مِنْ ذُرِّیَّتِهٖ'' पस ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द तमाम अम्बिया उन की औलाद में से थे।[4]

याद रहे कि सूरए ह़दीद की आयत नम्बर 26 में जो मज़्कूर है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते नूह़ और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام दोनों की औलाद में नुबुव्वत रखी, इस की तफ़्सीर में अबू ह़य्यान मुह़म्मद बिन यूसुफ़ उन्दुलुसी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام चूंकि ह़ज़रते नूह़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद में से हैं इस लिये शरफ़े नुबुव्वत इन दोनों की औलाद में होना सादिक़ आया।''[5] इस से येह भी मा'लूम हुवा कि क़ादियानी नबी हरगिज़ नहीं क्यूं कि अगर क़ादियानी नबी होता तो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद में होता।

وَاِسْمٰعِیْلَ وَالْیَسَعَ وَیُوْنُسَ وَلُوْطًا ؕ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِیْنَ ۙ﴿۸۶﴾
وَمِنْ اٰبَآىِٕهِمْ وَذُرِّیّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَیْنٰهُمْ وَهَدَیْنٰهُمْ اِلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿۸۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और इस्माईल और यसअ़ और यूनुस और लूत़ को और हम ने हर एक को उस के वक़्त में सब पर फ़ज़ीलत दी। और कुछ उन के बाप दादा और औलाद और भाइयों में से बा'ज़ को और हम ने उन्हें चुन लिया और सीधी राह दिखाई।

1 .....عنکبوت:۲۷.
2 .....بغوی، العنکبوت، تحت الآیۃ: ۲۷، ۳/۳۹۹-۴۰۰، خازن، العنکبوت، تحت الآیۃ: ۲۷، ۳/۴۴۹.
3 .....قرطبی، العنکبوت، تحت الآیۃ: ۲۷، ۷/۲۵۵، الجزء الثالث عشر.
4 .....جلالین مع صاوی، العنکبوت، تحت الآیۃ: ۲۷، ۴/۱۵۶۱. 5 .....البحر المحیط، الحدید، تحت الآیۃ: ۲۶، ۸/۲۲۶.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और इस्माईल और यसअ़ और यूनुस और लूत़ को (हिदायत दी) और हम ने सब को तमाम जहान वालों पर फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई। और उन के बाप दादा और उन की औलाद और उन के भाइयों में से (भी) बा'ज़ को (हिदायत दी) और हम ने उन्हें चुन लिया और हम ने उन्हें सीधे रास्ते की त़रफ़ हिदायत दी।

وَاِسْمٰعِیْلَ وَالْیَسَعَ : और इस्माईल और यसअ़। इस आयत और इस से ऊपर वाली दो आयात में **अल्लाह** तआ़ला ने अठ्ठारह अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का ज़िक्र फ़रमाया और इन के ज़िक्र में जो तरतीब आयत में मौजूद है वोह न तो ज़माने के ए'तिबार से है और न फ़ज़ीलत के ए'तिबार से लेकिन जिस शान से अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अस्मा ज़िक्र फ़रमाए गए इस में एक अ़जीब लत़ीफ़ा है वोह येह कि **अल्लाह** तआ़ला ने अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की हर एक जमाअ़त को एक ख़ास त़रह़ की करामत व फ़ज़ीलत के साथ मुमताज़ फ़रमाया, जैसे ह़ज़रते नूह़, इब्राहीम, इस्ह़ाक़ और या'क़ूब عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का पहले ज़िक्र किया क्यूं कि येह अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के उसूल हैं या'नी इन की औलाद में ब कसरत अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हुए जिन के नसब इन्हीं की त़रफ़ रुजूअ़ करते हैं। फिर नुबुव्वत के बा'द अ़ज़ीम मक़ामात व मरातिब में से मुल्क व इख़्तियार और सल्त़नत व इक़्तिदार है **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते दावूद और सुलैमान عَلَیْہِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इस का बहुत बड़ा ह़िस्सा अ़ता फ़रमाया और इस शो'बे का ज़ियादा तर तअ़ल्लुक़ मक़ामे शुक्र से है। फिर इस के बा'द ह़ज़रते अय्यूब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का तज़्किरा है क्यूं कि मरातिबे रफ़ीआ़ (बुलन्द मरातिब) में से मुसीबतो बला पर साबिर रहना भी है और **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते अय्यूब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इस मर्तबे के साथ मुमताज़ फ़रमाया फिर मुल्क और सब्र के दोनों मर्तबे ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इ़नायत किये कि आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने शिद्दतो बला पर मुद्दतों सब्र फ़रमाया, फिर **अल्लाह** तआ़ला ने नुबुव्वत के साथ मुल्के मिस्र अ़ता किया। फिर ह़ज़रते मूसा और ह़ज़रते हारून عَلَیْہِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का तज़्किरा है क्यूं कि मो'जिज़ात की कसरत और दलाइलो बराहीन की क़ुव्वत भी मरातिबे मो'तबरा में से हैं और **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा और ह़ज़रते हारून عَلَیْہِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इस के साथ मुशर्रफ़ किया। फिर ज़ोह्द और तर्के दुन्या भी मरातिबे मो'तबरा में से है और ह़ज़रते ज़करिय्या, ह़ज़रते यह़या, ह़ज़रते ईसा और ह़ज़रते इल्यास عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इस के साथ मख़्सूस फ़रमाया फिर इन ह़ज़रात के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने उन अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का ज़िक्र फ़रमाया कि जिन के न पैरौकार बाक़ी रहे और न उन की शरीअ़त

www.dawateislami.net

जैसे ह़ज़रते इस्माईल, ह़ज़रते यसअ़, ह़ज़रते यूनुस और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ।[1]

इस शान से अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़िक्र फ़रमाने में उन की करामतों और ख़ुसूसिय्यतों की एक अ़जीब बारीकी नज़र आती है ।

﴿وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ﴾ : **और हम ने सब को तमाम जहान वालों पर फ़ज़ीलत अ़त़ा फ़रमाई ।**﴾ इस आयत में इस बात की दलील है कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल हैं क्यूं कि आ़लम या'नी जहान में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा तमाम मौजूदात दाख़िल हैं तो फ़िरिश्ते भी इस में दाख़िल हैं और जब तमाम जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी तो फ़िरिश्तों पर भी फ़ज़ीलत साबित हो गई ।[2]

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۸۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह **अल्लाह** की हिदायत है कि अपने बन्दों में जिसे चाहे दे और अगर वोह शिर्क करते तो ज़रूर उन का किया अकारत जाता ।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : येह **अल्लाह** की हिदायत है वोह अपने बन्दों में जिसे चाहता है हिदायत देता है और अगर वोह (भी बिलफ़र्ज़) शिर्क करते तो ज़रूर उन के तमाम आ'माल ज़ाएअ़ हो जाते ।

﴿ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ﴾ : **येह अल्लाह की हिदायत है ।**﴾ यहां हिदायत से मुराद उस चीज़ की मा'रिफ़त है कि **अल्लाह** तआ़ला वाह़िदो यक्ता है और उस का कोई शरीक नहीं और इस मा'रिफ़त के ज़रीए़ **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दों में से जिसे चाहता है अपने दीन, अपनी त़ाअ़त और लोगों की त़रफ़ से ठहराए गए **अल्लाह** तआ़ला के शरीकों से बेज़ारी का इज़्हार करने की हिदायत देता है ।[3]

﴿وَلَوْ اَشْرَكُوْا﴾ : **और अगर वोह (भी बिलफ़र्ज़) शिर्क करते ।**﴾ इस आयत में अ़वाम व ख़वास सब लोगों को डराया गया है कि वोह **अल्लाह** तआ़ला की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ न हों क्यूं कि जब फ़ज़ीलत और बुलन्द मक़ाम रखने वाले अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बारे में **अल्लाह** तआ़ला ने येह फ़रमा दिया है कि अगर वोह (भी बिलफ़र्ज़) शिर्क करते तो ज़रूर

1 .....خازن، الانعام، تحت الآية: ٨٦، ٢/٣٣.

2 .....خازن، الانعام، تحت الآية: ٨٦، ٢/٣٣. 3 .....خازن، الانعام، تحت الآية: ٨٨، ٢/٣٤.

www.dawateislami.net

उन के तमाम आ'माल ज़ाएअ़ हो जाते तो उन के मुक़ाबले में और लोगों का ह़ाल क्या होगा।[1]

اُولٰٓىِٕكَ الَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحُكْمَ وَ النُّبُوَّةَۚ-فَاِنْ یَّكْفُرْ بِهَا هٰۤؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّیْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِیْنَ(۸۹)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह हैं जिन को हम ने किताब और हुक्म और नुबुव्वत अ़त़ा की तो अगर येह लोग इस से मुन्किर हों तो हम ने इस के लिये एक ऐसी क़ौम लगा रखी है जो इन्कार वाली नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येही वोह हस्तियां हैं जिन्हें हम ने किताब और ह़िक्मत और नुबुव्वत अ़त़ा की तो अगर कुफ़्फ़ार इन चीज़ों का इन्कार करते हैं तो हम ने इस के लिये ऐसी क़ौम मुक़र्रर कर रखी है जो इन चीज़ों का इन्कार करने वाली नहीं।

﴿اُولٰٓىِٕكَ : येही वोह हस्तियां हैं।﴾ इर्शाद फ़रमाया कि जिन अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़िक्र किया गया येही वोह हस्तियां हैं जिन्हें हम ने किताब, ह़िक्मत और नुबुव्वत अ़त़ा की है तो अगर येह कुफ़्फ़ारे मक्का किताब, ह़िक्मत और नुबुव्वत का इन्कार करते हैं तो हम ने इन तमाम चीज़ों के ह़ुक़ूक़ अदा करने के लिये ऐसी क़ौम मुक़र्रर कर रखी है जो इन चीज़ों का इन्कार करने वाली नहीं। इस क़ौम से या अन्सार मुराद हैं या मुहाजिरीन या तमाम सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا या ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने वाले वोह तमाम मुसल्मान जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ख़िदमते दीन की तौफ़ीक़ बख़्शे जैसे मुबल्लिग़ीन, उ़लमा, औलिया, सलात़ीन वग़ैरहा। इस आयत में दलील है कि **अल्लाह** तआ़ला अपने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुसरत फ़रमाएगा और आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीन को क़ुव्वत देगा और इस को तमाम अद्यान पर ग़ालिब करेगा चुनान्चे ऐसा ही हुवा और येह ग़ैबी ख़बर वाक़ेअ़ हो गई।[2]

اُولٰٓىِٕكَ الَّذِیْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْؕ-قُلْ لَّاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ اَجْرًاؕ-اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِیْنَ(۹۰)ع

१०

1 ……روح البیان، الانعام، تحت الآیۃ: ۸۸، ۳/۶۲. 2 ……خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۸۹، ۲/۳۴.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह हैं जिन को **अल्लाह** ने हिदायत की तो तुम उन्हीं की राह चलो तुम फ़रमाओ मैं क़ुरआन पर तुम से कोई उजरत नहीं मांगता वोह तो नहीं मगर नसीह़त सारे जहान को।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येही वोह (मुक़द्दस) हस्तियां हैं जिन्हें **अल्लाह** ने हिदायत की तो तुम उन की हिदायत की पैरवी करो। तुम फ़रमाओ : मैं इस पर तुम से कोई उजरत नहीं मांगता। येह सिर्फ़ सारे जहान वालों के लिये नसीह़त है।

﴿فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ﴾ **: तो तुम उन की हिदायत की पैरवी करो।** ﴾ जलीलुल क़द्र अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के तज़्किरे के बा'द फ़रमाया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप उन की इस हिदायत की इक़्तिदा करें। उ़लमाए दीन ने इस आयत से येह मस्अला साबित किया है कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अफ़्ज़ल हैं क्यूं कि जो शरफ़ो कमाल और ख़ुसूसिय्यातो औसाफ़ जुदा जुदा अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अ़त़ा फ़रमाए गए थे ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये सब को जम्अ़ फ़रमा दिया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हुक्म दिया "فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ" तो जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के औसाफ़े कमालिया के जामेअ़ हैं तो बेशक सब से अफ़्ज़ल हुए।[1]

﴿ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ﴾ **: सारे जहान वालों के लिये नसीह़त** ﴾ इस आयत से साबित हुवा कि हमारे आक़ा व मौला صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम मख़्लूक़ की त़रफ़ मब्ऊ़स हैं और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दा'वत तमाम मख़्लूक़ को आ़म है और कुल जहान आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत है।[2]

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖۤ اِذْ قَالُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَیْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِیْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّ هُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِیْسَ تُبْدُوْنَهَا وَ تُخْفُوْنَ كَثِیْرًا ۚ وَ عُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنْتُمْ وَ لَاۤ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِیْ خَوْضِهِمْ یَلْعَبُوْنَ ﴿۹۱﴾

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۹۰، ۲/۳۴. 2 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۹۰، ۲/۳۵.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और यहूद ने **अल्लाह** की क़द्र न जानी जैसी चाहिये थी जब बोले **अल्लाह** ने किसी आदमी पर कुछ नहीं उतारा तुम फ़रमाओ किस ने उतारी वोह किताब जो मूसा लाए थे रोशनी और लोगों के लिये हिदायत जिस के तुम ने अलग अलग काग़ज़ बना लिये ज़ाहिर करते हो और बहुत सा छुपा लेते हो और तुम्हें वोह सिखाया जाता है जो न तुम को मा'लूम था न तुम्हारे बाप दादा को **अल्लाह** कहो फिर उन्हें छोड़ दो उन की बेहूदगी में खेलता।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और यहूदियों ने **अल्लाह** की क़द्र न की जैसा उस की क़द्र करने का हक़ था जब उन्हों ने कहा : **अल्लाह** ने किसी इन्सान पर कोई चीज़ नहीं नाज़िल की। तुम फ़रमाओ : वोह किताब किस ने उतारी थी जिसे मूसा ले कर आए थे ? नूर और लोगों के लिये हिदायत थी, जिस के तुम ने अलग अलग काग़ज़ बना लिये थे, कुछ ज़ाहिर करते हो और बहुत कुछ छुपा लेते हो और तुम्हें वोह सिखाया जाता है जो न तुम को मा'लूम था और न तुम्हारे बाप दादा को। तुम कहो : "**अल्लाह**" फिर उन्हें उन की बेहूदगी में खेलते हुए छोड़ दो।

﴿وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖۤ﴾ **: और यहूदियों ने अल्लाह की क़द्र न की जैसा उस की क़द्र करने का हक़ था।** इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि यहूदियों की एक जमाअ़त अपने हिबरुल अह़बार या'नी सब से बड़े आ़लिम मालिक इब्ने सैफ़ को ले कर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बह़स करने आई। ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया : मैं तुझे उस परवर्दगार की क़सम देता हूं जिस ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर तौरैत नाज़िल फ़रमाई, क्या तौरैत में तू ने येह देखा है ? "اِنَّ اللّٰهَ يُبْغِضُ الْحِبْرَ السَّمِيْنَ" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को मोटा आ़लिम ना पसन्द है। वोह कहने लगा : "हां, येह तौरैत में है।" हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तू मोटा आ़लिम ही तो है।" इस पर वोह ग़ज़ब नाक हो कर कहने लगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी आदमी पर कुछ नहीं उतारा। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इस में फ़रमाया गया : वोह किताब किस ने उतारी जो मूसा लाए थे ? तो वोह ला जवाब हो गया और यहूदी उस पर बरहम हो गए और उस को झिड़कने लगे और उस को उस के ओ़हदे से मा'ज़ूल कर दिया।[1]

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ख़याल रहे कि मोटे पादरी से मुराद वोह पादरी थे जो ह़राम ख़ोरी कर के ख़ूब मोटे ताज़े हो जाते थे।

1 .....تفسیر بغوی، الانعام، تحت الآیۃ: ۹۱، ۲/۹٤، مدارك، الانعام، تحت الآیۃ: ۹۱، ص۳۳۱-۳۳۲، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

इस आयत का ख़ुलासा येह है कि यहूदियों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वैसी क़द्र न की जैसा उस की क़द्र करने का ह़क़ था और उस की मा'रिफ़त से मह़रूम रहे और बन्दों पर **अल्लाह** तआ़ला के रह़मो करम को न जाना। उन्हों ने कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी इन्सान पर कोई चीज़ नहीं नाज़िल की। ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, तुम इन्हें जवाब दो कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कोई किताब नहीं उतारी तो वोह किताब किस ने उतारी थी जिसे ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ले कर आए थे ? जो सरापा नूर और लोगों के लिये हिदायत थी और जिस के तुम ने अलग अलग काग़ज़ बना लिये थे और उन में से कुछ को ज़ाहिर करते हो जिस का इज़्हार अपनी ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ समझते हो जब कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और इन के दीन के बारे में बहुत कुछ छुपा लेते हो और ऐ यहूदियो ! तुम्हें मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'लीम और क़ुरआने करीम के ज़रीए वोह कुछ सिखाया जाता है जो न तुम को मा'लूम था और न तुम्हारे बाप दादा को। मज़ीद फ़रमाया कि फिर यहूदी अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सुवाल का जवाब न दे सकें तो तुम ख़ुद जवाब दे देना कि तौरात को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नाज़िल किया था और जैसे तौरात को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नाज़िल फ़रमाया था ऐसे ही क़ुरआन को भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ही नाज़िल फ़रमाया है और येह जवाब देने के बा'द इन्हें इन की बेहूदगी में खेलते हुए छोड़ दो क्यूं कि जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ुज्जत क़ाइम कर दी और वा'ज़ो नसीह़त का ह़क़ अदा कर दिया और उन के लिये किसी उ़ज़्र और बहाने की गुन्जाइश न छोड़ी और इस पर भी वोह बाज़ न आएं तो उन्हें उन की बेहूदगी में छोड़ दें। येह कुफ़्फ़ार के ह़क़ में वईद व तहदीद है।

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِیْ بَیْنَ یَدَیْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ
الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ یُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى
صَلَاتِهِمْ یُحَافِظُوْنَ ﴿۹۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और येह है बरकत वाली किताब कि हम ने उतारी तस्दीक़ फ़रमाती उन किताबों की जो आगे थीं और इस लिये कि तुम डर सुनाओ सब बस्तियों के सरदार को और जो कोई सारे जहान में इस के गिर्द हैं और वोह जो आख़िरत पर ईमान लाते हैं इस किताब पर ईमान लाते हैं और अपनी नमाज़ की ह़िफ़ाज़त करते हैं।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और येह बरकत वाली किताब है जिसे हम ने नाज़िल फ़रमाया है, पहली किताबों की तस्दीक़ करने वाली है और इस लिये (उतरी) ताकि तुम इस के ज़रीए मर्कज़ी शह्र और इस के इर्द गिर्द वालों को डर सुनाओ और जो आख़िरत पर ईमान लाते हैं वोही इस किताब पर ईमान लाते हैं और वोह अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं।

﴿وَهٰذَا كِتٰبٌ﴾ **: और येह किताब है।** यहां क़ुरआने पाक के बारे में फ़रमाया कि येह क़ुरआने पाक बरकत वाली किताब है जिसे हम ने नाज़िल फ़रमाया है। येह पहली किताबों की तस्दीक़ करने वाला है और हम ने इसे इस लिये नाज़िल फ़रमाया कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस के ज़रीए मर्कज़ी शह्र मक्कए मुकर्रमा और इस के इर्द गिर्द वालों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब की ख़बरें दो।

﴿وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ﴾ **: और जो आख़िरत पर ईमान लाते हैं।** इर्शाद फ़रमाया कि जो लोग आख़िरत और उस में मौजूद अन्वाओ अक़्साम के अ़ज़ाबात पर ईमान लाते हैं वोही इस किताब पर ईमान लाते हैं क्यूं कि वोह बुरे अन्जाम से डरते हैं और येही ख़ौफ़ उन्हें ग़ौरो फ़िक्र करने पर उभारता रहता है यहां तक कि वोह इस पर ईमान ले आते हैं और क़ुरआने मजीद पर ईमान लाने वाले अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं।[1]

यहां नमाज़ को बतौरे ख़ास इस लिये ज़िक्र किया गया कि येह ईमान के बा'द सब से आ'ला इबादत है और जब बन्दा तमाम अरकान व शराइत़ के साथ इस की पाबन्दी करता है तो दीगर इबादात और त़ाआ़त की पाबन्दी करना भी शुरूअ़ कर देता है। इस से मा'लूम हुवा कि क़ुरआने मजीद पर ईमान लाने का एक तक़ाज़ा येह है कि पांचों नमाज़ें उन के तमाम अरकान व शराइत़ के साथ पाबन्दी से अदा की जाएं और इन की अदाएगी में किसी त़रह़ की सुस्ती और काहिली से काम न लिया जाए। **अल्लाह** तआ़ला सब मुसल्मानों को इस तक़ाज़े पर पूरा उतरने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।[2]

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْۤا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْيَوْمَ

1 .....روح البیان، الانعام، تحت الآیۃ: ۹۲، ۳/۶۴.

2 ..... नमाज़ के अरकान व शराइत़ और इस से मुतअ़ल्लिक़ दीगर मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब "नमाज़ के अह़काम" और "इस्लामी बहनों की नमाज़" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۹۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** पर झूट बांधे या कहे मुझे वही हुई और उसे कुछ वही न हुई और जो कहे अभी मैं उतारता हूं ऐसा जैसा ख़ुदा ने उतारा और कभी तुम देखो जिस वक़्त ज़ालिम मौत की सख़्तियों में हैं और फ़िरिश्ते हाथ फैलाए हुए हैं कि निकालो अपनी जानें आज तुम्हें ख़्वारी का अ़ज़ाब दिया जाएगा बदला उस का कि **अल्लाह** पर झूट लगाते थे और उस की आयतों से तकब्बुर करते।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन ? जो **अल्लाह** पर झूट बांधे या कहे : मेरी त़रफ़ वही की गई ह़ालां कि उस की त़रफ़ किसी शै की वही नहीं भेजी गई और जो कहे : मैं भी अभी ऐसा उतार दूंगा जैसा **अल्लाह** ने उतारा है। और अगर तुम देखो जब ज़ालिम मौत की सख़्तियों में होते हैं और फ़िरिश्ते हाथ फैलाते हुए कहते हैं कि अपनी जानें निकालो। आज तुम्हें ज़िल्लत का अ़ज़ाब दिया जाएगा उस के बदले में जो तुम **अल्लाह** पर नाह़क़ बातें कहते थे और उस की आयतों से तकब्बुर करते थे।

﴿وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا﴾ : **और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन ? जो अल्लाह पर झूट बांधे।** येह आयत मुसैलमा कज़्ज़ाब के बारे में नाज़िल हुई जिस ने यमन के अ़लाक़े यमामा में नुबुव्वत का झूटा दा'वा किया था। क़बीलए बनी ह़नीफ़ा के चन्द लोग उस के फ़रेब में आ गए थे। येह कज़्ज़ाब, सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़मानए ख़िलाफ़त में ह़ज़रते वह़शी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ से क़त्ल हुवा।[1] इस के बारे में फ़रमाया कि उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन ? जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर झूट बांधे या नुबुव्वत का झूटा दा'वा करे और कहे कि मेरी त़रफ़ वही की गई ह़ालां कि उस की त़रफ़ किसी शै की वही नहीं भेजी गई। येह आयत सराह़त के साथ मिरज़ा क़ादियानी का भी रद करती है क्यूं कि वोह भी इस का मुद्दई था कि मेरी त़रफ़ वही नाज़िल की जाती है। आज कल क़ादियानी लोगों को मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से धोका देते हैं। कुछ येह कहते हैं कि मिरज़ा ग़ुलाम अह़मद ने नुबुव्वत का नहीं बल्कि मुजद्दिद होने का दा'वा किया था और हम उसे सिर्फ़ मुजद्दिद मानते हैं जब कि बा'ज़ कहते हैं कि मिरज़ा ने मुत़्लक़ नुबुव्वत व रिसालत का दा'वा नहीं किया था बल्कि एक ख़ास क़िस्म की नुबुव्वत का दा'वा किया था ह़ालां कि मिरज़ा क़ादियानी की किताबों में बीसियों जगह मुत़्लक़ नुबुव्वत व

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۹۳، ۲/۳۷۔

www.dawateislami.net

रिसालत का दा'वा मौजूद है और जो ज़िल्ली व बरोज़ी नुबुव्वत का दा'वा है वोह भी नुबुव्वत ही का दा'वा है और वोह भी क़त्अन कुफ़्र है, नीज़ मिरज़ा के मुन्किरों को काफ़िर और मानने वालों को सह़ाबी और बीवियों को अज़्वाजे मुत़ह्हरात कहना इन की किताबों में आ़म है लिहाज़ा किसी भी मुसल्मान को इन के धोके में नहीं आना चाहिये।

﴿وَمَنْ قَالَ﴾ **: और जिस ने कहा।** आयत का येह हिस्सा अ़ब्दुल्लाह बिन अबी सरह़ के बारे में नाज़िल हुवा जो कातिबे वह़ी था। जब आयत "وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ" नाज़िल हुई, इस ने इस को लिखा और आख़िर तक पहुंचते पहुंचते इन्सानी पैदाइश की तफ़्सील पर मुत्त़लअ़ हो कर मुतअ़ज्जिब हुवा और इस ह़ालत में आयत का आख़िरी हिस्सा "فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ" बे इख़्तियार इस की ज़बान पर जारी हो गया। इस पर इस को येह घमन्ड हुवा कि मुझ पर वह़ी आने लगी और मुरतद हो गया, येह न समझा कि नूरे वह़ी और क़ुव्वतो हुस्ने कलाम की वज्ह से आयत का आख़िरी कलिमा ख़ुद ज़बान पर आ गया है और इस में उस की क़ाबिलिय्यत का कोई दख़्ल न था। ज़ोरे कलाम बा'ज़ अवक़ात ख़ुद अपना आख़िर बता दिया करता है जैसे कभी कोई शाइ़र नफ़ीस मज़मून पढ़े वोह मज़मून ख़ुद क़ाफ़िया बता देता है और सुनने वाले शाइ़र से पहले क़ाफ़िया पढ़ देते हैं उन में ऐसे लोग भी होते हैं जो हरगिज़ वैसा शे'र कहने पर क़ादिर नहीं तो क़ाफ़िया बताना उन की क़ाबिलिय्यत नहीं, कलाम की क़ुव्वत है और यहां तो नूरे वह़ी और नूरे नबी से सीने में रोशनी आती थी चुनान्चे मजलिस शरीफ़ से जुदा होने और मुरतद हो जाने के बा'द फिर वोह एक जुम्ला भी ऐसा बनाने पर क़ादिर न हुवा जो नज़्मे क़ुरआनी से मिलता जुलता हो। आख़िर कार ज़मानए अक़्दस ही में फ़त्ह़े मक्का से पहले फिर इस्लाम से मुशर्रफ़ हो गया।[1] इस के बारे में फ़रमाया कि उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन ? जो कहे : अ़न्क़रीब मैं भी ऐसी ही किताब उतार दूंगा जैसी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नाज़िल की है।

﴿وَلَوْ تَرٰۤى﴾ **: और अगर तुम देखो।** यहां से काफ़िरों की मौत के वक़्त के ह़ालात बयान हुए हैं, फ़रमाया कि अगर तुम काफ़िरों की ह़ालत देखो तो बड़ी ख़ौफ़नाक ह़ालत देखोगे जब ज़ालिम मौत की सख़्तियों में होते हैं और फ़िरिश्ते अरवाह़ क़ब्ज़ करने के लिये झिड़क्ते जाते हैं और कहते जाते हैं कि अपनी जानें निकालो। आज तुम्हें उस के बदले में ज़िल्लत का अ़ज़ाब दिया जाएगा जो तुम नुबुव्वत और वह़ी के झूटे दा'वे कर के और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये शरीक और बीवी बच्चे बता कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर नाह़क़ बातें कहते थे।

मौत के वक़्त मुसल्मान और काफ़िर के ह़ालात

इस आयत में मौत के वक़्त काफ़िर के ह़ालात बयान हुए और ह़दीसे पाक में मुसल्मान और काफ़िर दोनों की मौत के ह़ालात बयान किये गए हैं, चुनान्चे ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

1 .....تفسیر قرطبی، الانعام، تحت الآیۃ: ۹۳، ۴/ ۳۰، الجزء السابع.

www.dawateislami.net

से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब मुसल्मान की मौत क़रीब होती है तो रह़मत के फ़िरिश्ते सफ़ेद रेश्मी कपड़े ले कर आते हैं और कहते हैं : ऐ रूह़ ! तू राज़ी ख़ुशी ह़ालत में और इस ह़ाल में निकल कि **अल्लाह** तआ़ला तुम से राज़ी है, तू **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत और उस के रिज़्क़ से अपने परवर्दगार की त़रफ़ निकल जो नाराज़ नहीं है। फिर रूह़ उ़म्दा ख़ुश्बूदार मुश्क की त़रह़ ख़ारिज होती है और फ़िरिश्ते उसे उसी वक़्त उठा कर आस्मान के दरवाज़े पर ले जाते हैं और कहते हैं : येह कितनी अच्छी ख़ुश्बू है जो ज़मीन से आई है। इस के बा'द उसे मुसल्मानों की रूह़ों के पास ले कर आते हैं। वोह रूह़ें उस शख़्स से भी ज़ियादा ख़ुश होती हैं जो किसी गए हुए शख़्स के वापस आने पर ख़ुश होता है और वोह रूह़ें उस से दरयाफ़्त करती हैं : दुन्या में पीछे रहने वाला फ़ुलां शख़्स कैसे काम करता है ? फिर रूह़ें कहती हैं : अभी ठहरो और इसे छोड़ दो, येह दुन्या के ग़म में है। येह रूह़ कहती है : क्या वोह शख़्स तुम्हारे पास नहीं था ? (या'नी दुन्या से तो वोह आ चुका तो क्या तुम्हारे पास नहीं है ?) रूह़ें कहती हैं : (अगर वोह दुन्या से आ चुका और हमारे पास नहीं है तो फिर) वोह जहन्नम में गया होगा। और जब काफ़िर की मौत आती है तो अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते बोरिये का एक टुकड़ा डाले आ कर कहते हैं : ऐ रूह़ ! तू **अल्लाह** तआ़ला के अ़ज़ाब की त़रफ़ निकल क्यूं कि तू **अल्लाह** तआ़ला से नाराज़ है और **अल्लाह** तआ़ला तुझ से नाराज़ है, इस के बा'द वोह जले हुए बदबूदार मुर्दार की त़रह़ निकलती है ह़त्ता कि फ़िरिश्ते उसे ज़मीन के दरवाज़े पर लाते हैं तो फ़िरिश्ते पूछते हैं : येह क्या बदबू है, यहां तक कि उसे काफ़िरों की रूह़ों में ले जाते हैं।"[1]

وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ؕ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۹۴﴾ ع ۱۱

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक तुम हमारे पास अकेले आए जैसा हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था और पीठ पीछे छोड़ आए जो माल मताअ़ हम ने तुम्हें दिया था और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को नहीं देखते जिन का तुम अपने में साझा बताते थे बेशक तुम्हारे आपस की डोर कट गई और तुम से गए जो दा'वे करते थे।

1 .....سنن نسائي، كتاب الجنائز، باب ما يلقى به المؤمن من الكرامة... الخ، ص٣١٣، الحديث: ١٨٣٠.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक तुम हमारे पास अकेले आए जैसा हम ने तुम्हें पहली मरतबा पैदा किया था और तुम अपने पीछे वोह सब मालो मताअ़ छोड़ आए जो हम ने तुम्हें दिया था और (आज) हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को नहीं देखते जिन्हें तुम गुमान करते थे कि वोह तुम में (हमारे) शरीक हैं। बेशक तुम्हारे दरमियान जुदाई हो गई और तुम से वोह ग़ाइब हो गए जिन (के मा'बूद होने) का तुम दा'वा करते थे।

﴿وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى﴾ **: और तुम हमारे पास अकेले आए।** ﴾ गुज़श्ता आयत में काफ़िरों की मौत के अह़वाल बयान हुए थे और इस आयत में क़ियामत के अह़वाल का बयान है चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन उन काफ़िरों से कहा जाएगा : बेशक तुम हमारे पास ह़िसाब व जज़ा के लिये ऐसे अकेले आए जैसे हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, न तुम्हारे साथ माल है, न जाह, न औलाद जिन की मह़ब्बत में तुम उ़म्र भर गिरिफ़्तार रहे और न बुत जिन्हें पूजते रहे। आज उन में से कोई तुम्हारे काम न आया बल्कि तुम वोह सब मालो मताअ़ अपने पीछे छोड़ आए जो हम ने तुम्हें दिया था और आज हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को नहीं देखते जिन्हें तुम गुमान करते थे कि वोह तुम्हारे इ़बादत करने में हमारे शरीक हैं। बेशक तुम्हारे दरमियान जुदाई हो गई और तुम से वोह बुत ग़ाइब हो गए जिन के मा'बूद होने का तुम दा'वा करते थे।

क़ब्रो ह़श्र की तन्हाई के साथी बनाना अ़क़्ल मन्दी है

याद रहे कि मरने के बा'द इन्सान क़ब्र में अकेला होगा और दुन्या के मालो मताअ़, अहलो इ़याल, अ़ज़ीज़ रिश्तेदार और दोस्त अह़बाब में से कोई भी उस के साथ क़ब्र में न जाएगा बल्कि येह सब उसे क़ब्र के तारीक गढ़े में तन्हा और अकेला छोड़ कर चले जाएंगे, इसी त़रह़ मैदाने ह़श्र में भी इन्सान इस त़रह़ अकेला होगा कि उस वक़्त उस का साथ देने की बजाए हर एक उस से बे नियाज़ हो कर अपने अन्जाम की फ़िक्र में मुब्तला होगा, यूंही बारगाहे इलाही में अपने आ'माल का ह़िसाब देने भी येह तन्हा ह़ाज़िर होगा लिहाज़ा दानाई येही है कि दुन्या की ज़िन्दगी में रहते हुए अपने ऐसे साथी बना लिये जाएं जो क़ब्र की वह़शत अंगेज़ तन्हाई में उन्सिय्यत और ग़म ख़्वारी का बाइ़स हों और क़ियामत के दिन नफ़्सी नफ़्सी के होलनाक आ़लम में तस्कीन का सबब बनें और येह साथी नेक आ'माल हैं जैसा कि ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मय्यित के साथ तीन चीज़ें जाती हैं, दो वापस लौट आती हैं और एक उस के साथ बाक़ी रहती है, उस के अहलो इ़याल, उस का माल और उस का अ़मल उस के साथ जाते हैं और उस के अहलो इ़याल और उस का माल वापस लौट आते हैं और उस का अ़मल बाक़ी रहता है[1]।''[2]

1 .....بخاری، کتاب الرقاق، باب سکرات الموت، ٤/ ٢٥٠، الحدیث: ٦٥١٤.

2 ..... क़ब्र के साथी बनाने की अहम्मिय्यत और तरग़ीब से मुतअ़ल्लिक़ किताब ''क़ब्र में आने वाला दोस्त'' (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

www.dawateislami.net

اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ؕ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿۹۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** दाने और गुठली को चीरने वाला है ज़िन्दा को मुर्दा से निकाले और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालने वाला येह है **अल्लाह** तुम कहां औंधे जाते हो ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक **अल्लाह** दाने और गुठली को चीरने वाला है, ज़िन्दा को मुर्दा से निकालने और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालने वाला है, येह **अल्लाह** है तो तुम कहां फिरे जाते हो ?

﴿فَالِقُ الْحَبِّ : **दाने को चीरने वाला ।**﴾ तौहीद व नुबुव्वत के बयान के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने अपने कमाले क़ुदरत, इ़ल्म और हि़क्मत के दलाइल ज़िक्र फ़रमाए क्यूं कि मक़्सूदे आ'ज़म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस की तमाम सिफ़ात व अफ़्आ़ल की मा'रिफ़त है और येह जानना है कि वोही तमाम चीज़ों का पैदा करने वाला है और जो ऐसा हो वोही मुस्तहि़क़्क़े इ़बादत हो सकता है न कि वोह बुत जिन्हें मुश्रिकीन पूजते हैं। ख़ुश्क दाने और गुठली को चीर कर उन से सब्ज़ा और दरख़्त पैदा करना और ऐसी संगलाख़ ज़मीनों में उन के नर्म रेशों को जारी कर देना जहां आहनी मीख़ भी काम न कर सके उस की क़ुदरत के कैसे अ़जाइबात हैं। वोही **अल्लाह** करीम दाने और गुठली को चीर कर सब्ज़ा और दरख़्त बना देता है और ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है जैसे जानदार सब्ज़े को बेजान दाने और गुठली से और इन्सान व हैवान को नुत्फ़े से और परिन्दे को अन्डे से। यूंही वोही रब्बे अ़ज़ीम عَزَّوَجَلَّ मुर्दा को ज़िन्दा से निकालने वाला है जैसे जानदार दरख़्त से बेजान गुठली और दाने को और इन्सान व हैवान से नुत्फ़े को और परिन्दे से अन्डे को। येह सब उस के अ़जाइबे क़ुदरतो हि़क्मत हैं तो ऐ काफ़िरो ! येह है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तो तुम कहां औंधे जाते हो ? और ऐसे दलाइल व बराहीन क़ाइम होने के बा'द क्यूं ईमान नहीं लाते और मौत के बा'द उठने का यक़ीन नहीं करते ? और ग़ौर करो कि जो बेजान नुत्फ़े से जानदार हैवान को पैदा करता है उस की क़ुदरत से मुर्दा को ज़िन्दा करना क्या बई़द है।

فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ؕ ذٰلِكَ

www.dawateislami.net

تَقْدِیْرُ الْعَزِیْزِ الْعَلِیْمِ ﴿۹۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तारीकी चाक कर के सुब्ह़ निकालने वाला और उस ने रात को चैन बनाया और सूरज और चांद को ह़िसाब येह साधा है ज़बर दस्त जानने वाले का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (वोह) तारीकी को चाक कर के सुब्ह़ निकालने वाला (है) और उस ने रात को आराम (का ज़रीआ़) बनाया और उस ने सूरज और चांद को (अवक़ात के) ह़िसाब (का ज़रीआ़ बनाया) येह ज़बर दस्त, इ़ल्म वाले का मुक़र्रर किया हुवा अन्दाज़ा है।

﴿فَالِقُ الْاِصْبَاحِ﴾ **: तारीकी को चाक कर के सुब्ह़ निकालने वाला।** ﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी मज़ीद अ़ज़मतें बयान फ़रमाता है चुनान्चे फ़रमाया कि वोह तारीकी को चाक कर के सुब्ह़ निकालने वाला है चुनान्चे सुब्ह़ के वक़्त मशरिक़ की त़रफ़ रोशनी धागे की त़रह़ नुमूदार होती है और ऐसा मा'लूम होता है कि इस ख़त़ ने तारीकी चाक कर दी, येह भी उस की क़ुदरत है। नीज़ उस ने रात को आराम का ज़रीआ़ बनाया कि मख़्लूक़ इस में चैन पाती है और दिन की थकावट और मांदगी को इस्तिराह़त से दूर करती है और शब बेदार ज़ाहिद तन्हाई में अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत से चैन पाते हैं। नीज़ उस ने सूरज और चांद को अवक़ात के ह़िसाब का ज़रीआ़ बनाया कि उन के दौरे और सैर से इ़बादात व मुआ़मलात के अवक़ात मा'लूम होते हैं मसलन चांद से क़मरी महीने और सूरज से शम्सी महीने बनते हैं। चांद से इस्लामी इ़बादात और सूरज से मौसिमों और नमाज़ों का ह़िसाब लगता है ग़रज़े कि इन में अ़जीब क़ुदरत के करिश्मे हैं। येह सब ज़बर दस्त, इ़ल्म वाले का मुक़र्रर किया हुवा अन्दाज़ा है। आयत से मा'लूम हुवा कि इ़ल्मे रियाज़ी, इ़ल्मे नबातात, इ़ल्मे फ़लकिय्यात और इ़ल्मुल ह़ैवानात भी बहुत आ'ला उ़लूम हैं कि इन से रब तआ़ला की क़ुदरते कामिला ज़ाहिर होती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आस्मानी और ज़मीनी चीज़ों को अपनी क़ुदरत का नमूना बनाया है।

फ़क़्रो मोह़ताजी दूर होने की दुआ़

ह़ज़रते मुस्लिम बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह दुआ़ मांगा करते थे : "اَللّٰهُمَّ فَالِقَ الْاِصْبَاحِ وَجَاعِلَ اللَّيْلِ سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا، اِقْضِ عَنِّي الدَّيْنَ وَاَغْنِنِي مِنَ الْفَقْرِ وَمَتِّعْنِي بِسَمْعِي وَبَصَرِي وَقُوَّتِي فِي سَبِيْلِكَ" ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, (ऐ) तारीकी को चाक कर के सुब्ह़ निकालने वाले और रात को आराम (का ज़रीआ़) बनाने वाले और सूरज व चांद को

www.dawateislami.net

(अवक़ात के) हिसाब (का ज़रीआ़ बनाने वाले) मेरे क़र्ज़ को पूरा फ़रमा दे और मोहताजी से मुझे ग़ना अ़ता फ़रमा और मुझे मेरी समाअ़त, बसारत और क़ुव्वत से अपनी राह में फ़ाएदा उठाने वाला बना।[1]

وَهُوَ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِیْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَ الْبَحْرِؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّعْلَمُوْنَ ﴿۹۷﴾ وَ هُوَ الَّذِیْۤ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّ مُسْتَوْدَعٌؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّفْقَهُوْنَ ﴿۹۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जिस ने तुम्हारे लिये तारे बनाए कि इन से राह पाओ ख़ुश्की और तरी के अंधेरों में हम ने निशानियां मुफ़स्सल बयान कर दीं इ़ल्म वालों के लिये। और वोही है जिस ने तुम को एक जान से पैदा किया फिर कहीं तुम्हें ठहरना है और कहीं अमानत रहना बेशक हम ने मुफ़स्सल आयतें बयान कर दीं समझ वाले के लिये।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोही है जिस ने तुम्हारे लिये सितारे बनाए ताकि तुम इन के ज़रीए ख़ुश्की और समुन्दर की तारीकियों में रास्ता पाओ। बेशक हम ने इ़ल्म वालों के लिये तफ़्सील से निशानियां बयान कर दीं। और वोही है जिस ने तुम को एक जान से पैदा किया फिर कहीं ठिकाना है और कहीं अमानत रखे जाने की जगह है। बेशक हम ने समझने वालों के लिये निशानियां तफ़्सील से बयान कर दीं।

وَهُوَ الَّذِیْۤ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ : **और वोही है जिस ने तुम को एक जान से पैदा किया।** इस आयत का ख़ुलासा येह है कि वोही है जिस ने तुम को एक जान या'नी ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से पैदा किया फिर मां के रेह्म में या ज़मीन के ऊपर तुम्हारा ठिकाना बनाया और बाप की पीठ या ज़मीन के अन्दर तुम्हारे लिये अमानत रखे जाने की जगह बनाई है। बेशक हम ने समझने वालों के लिये अपनी क़ुदरत की निशानियां तफ़्सील से बयान कर दीं।

وَهُوَ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَیْءٍ

[1] .....مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الدعاء، من کان یدعو بالغنی، ۲۷/۷، الحدیث: ۳.

www.dawateislami.net

فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ اُنْظُرُوْۤا اِلٰى ثَمَرِهٖۤ اِذَاۤ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۹۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जिस ने आस्मान से पानी उतारा तो हम ने उस से हर उगने वाली चीज़ निकाली तो हम ने उस से निकाली सब्ज़ी जिस में से दाने निकालते हैं एक दूसरे पर चढ़े हुए और खजूर के गाभे से पास पास गुच्छे और अंगूर के बाग़ और ज़ैतून और अनार किसी बात में मिलते और किसी बात में अलग उस का फल देखो जब फले और उस का पकना बेशक इस में निशानियां हैं ईमान वालों के लिये।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोही है जिस ने आस्मान से पानी उतारा फिर हम ने उस के ज़रीए हर उगने वाली चीज़ निकाली तो हम ने उस से सर सब्ज़ खेती निकाली जिस में से हम एक दूसरे पर चढ़े हुए दाने निकालते हैं और खजूर के इब्तिदाई कच्चे शिगूफ़ों से (खजूर के) ख़ोशे (निकलते हैं जो फलों की कसरत से) लटके हुए होते हैं। और अंगूर के बाग़ और ज़ैतून और अनार (निकालते हैं जो) किसी वस्फ़ में एक दूसरे से मिलते होते हैं और किसी वस्फ़ में जुदा होते हैं। तुम दरख़्त के फल और उस के पकने की तरफ़ देखो जब वोह फल दे। बेशक इस में ईमान वालों के लिये निशानियां हैं।

وَهُوَ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً : और वोही है जिस ने आस्मान से पानी उतारा। سُبْحٰنَ اللّٰہ ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी क़ुदरत की कैसी अ़ज़ीम दलील बयान फ़रमाई कि देखो पानी एक है और जिस ज़मीन से सब कुछ उग रहा है वोह एक है लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस से जो चीज़ें उगाईं वोह क़िस्म क़िस्म और रंगारंग की हैं तो जो रब्बे अ़ज़ीम عَزَّوَجَلَّ एक पानी से इतनी क़िस्म की सब्ज़ियां पैदा फ़रमाने पर क़ादिर है तो वोह एक सूर की फूंक से सारे आ़लम को मारने और ज़िन्दा करने पर भी क़ादिर है लिहाज़ा क़ियामत बरहक़ है।

www.dawateislami.net

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ ع

ع ۱۲

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** का शरीक ठहराया जिन्नों को ह़ालां कि उसी ने इन को बनाया और उस के लिये बेटे और बेटियां गढ़ लीं जहालत से पाकी और बरतरी है उस को उन की बातों से ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और लोगों ने जिन्नों को **अल्लाह** का शरीक बना लिया ह़ालां कि **अल्लाह** ने तो इन जिन्नों को पैदा किया है और लोगों ने **अल्लाह** के लिये जहालत से बेटे और बेटियां गढ़ लीं ह़ालां कि **अल्लाह** उन की बयान की हुई चीज़ों से पाक और बुलन्द है ।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ : **और लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का शरीक गढ़ लिया ।** इर्शाद फ़रमाया कि साबिक़ा आयात में बयान कर्दा दलाइले क़ुदरत और अ़जाइबे ह़िक्मत और इस इन्आ़मो इक्राम और इन ने'मतों के पैदा करने और अ़त़ा फ़रमाने का तक़ाज़ा येह था कि उस करीम कारसाज़ पर ईमान लाते लेकिन इस की बजाए बुत परस्तों ने येह सितम किया कि जिन्नों को ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का शरीक क़रार दिया कि उन की इत़ाअ़त कर के बुत परस्त हो गए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये مَعَاذَاللّٰه बेटे और बेटियां घड़ लीं ह़ालां कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की बयान की हुई चीज़ों से पाक और बुलन्द है और येह चीज़ें उस की शान के लाइक़ ही नहीं ।

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ؕ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۰۱﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿۱۰۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बे किसी नमूने के आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला उस के बच्चा कहां से हो ह़ालां कि उस की औ़रत नहीं और उस ने हर चीज़ पैदा की और वोह सब कुछ जानता है । येह है **अल्लाह** तुम्हारा रब उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं हर चीज़ का बनाने वाला तो उसे पूजो और वोह हर चीज़ पर निगह्बान है ।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह बिग़ैर किसी नमूने के आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला है। उस के लिये औलाद कैसे हो सकती है ? ह़ालां कि उस की बीवी (ही) नहीं है और उस ने हर शै को पैदा किया है और वोह हर शै को जानने वाला है। येह **अल्लाह** तुम्हारा रब है, उस के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, हर शै को पैदा फ़रमाने वाला है तो तुम उस की इ़बादत करो और वोह हर चीज़ पर निगह्बान है।

﴿بَدِیْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ﴾ **: वोह बिग़ैर किसी नमूने के आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला है।** ﴾ इस आयत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़मतो शान और उस की पाकी का बयान है चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शान येह है कि वोह बिग़ैर किसी नमूने और मिसाल के आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला है। उस की दूसरी शान येह है कि वोह औलाद से पाक है क्यूं कि उस की औलाद कैसे हो सकती है ? ह़ालां कि उस की बीवी ही नहीं है और औ़रत के बिग़ैर औलाद नहीं होती और ज़ौजा उस की शान के लाइक़ नहीं क्यूं कि कोई शै उस की मिस्ल नहीं और औलाद न होने की एक दलील येह है कि उस ने हर शै को पैदा किया है तो जो कुछ है वोह सब उस की मख़्लूक़ है और मख़्लूक़ औलाद नहीं हो सकती तो किसी मख़्लूक़ को औलाद बताना बात़िल है और फिर अगली आयत में फ़रमाया कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारा रब है जिस की सिफ़ात ज़िक्र की गई और जिस की येह सिफ़ात हों वोही मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत है लिहाज़ा तुम सिर्फ़ उसी की इ़बादत करो।

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۫ وَهُوَ یُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِیْفُ الْخَبِیْرُ ﴿۱۰۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : आंखें उसे इह़ाता नहीं करतीं और सब आंखें उस के इह़ाते में हैं और वोही है निहायत बात़िन पूरा ख़बरदार।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : आंखें उस का इह़ाता नहीं कर सकतीं और वोह तमाम आंखों का इह़ाता किये हुए है और वोही हर बारीक चीज़ को जानने वाला, बड़ा ख़बरदार है।

﴿لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ﴾ **: आंखें उस का इह़ाता नहीं कर सकतीं।** ﴾ इस आयत का मफ़्हूम समझना निहायत ज़रूरी है क्यूं कि अ़क़ाइद के मुतअ़ल्लिक़ बहुत से मसाइल का दारो मदार इसी पर है।

आख़िरत में अल्लाह तआ़ला के दीदार से मुतअ़ल्लिक़ अहले सुन्नत का अ़क़ीदा

याद रखें कि अहले सुन्नत का अ़क़ीदा येह है कि मोमिनों को आख़िरत में **अल्लाह** तआ़ला का दीदार होगा। अहले सुन्नत का येह अ़क़ीदा क़ुरआनो ह़दीस, इज्माए़ सह़ाबा और अकाबिर बुज़ुर्गाने दीन के कसीर दलाइल से साबित है।

www.dawateislami.net

दीदारे इलाही के क़ुरआने पाक से तीन दलाइल

(1)..... इर्शादे बारी तआ़ला है :

وُجُوْهٌ يَّوْمَىٕذٍ نَّاضِرَةٌ ۙ(۲۲) اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۚ(۲۳)[1]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : कुछ चेहरे उस दिन तरो ताज़ा होंगे, अपने रब को देखते होंगे।

(2)..... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ[2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : भलाई वालों के लिये भलाई है और इस से भी ज़ाइद।

सिह़ाह़े सित्ता की बहुत ह़दीसें येह साबित करती हैं कि इस आयत में ज़ियादत से दीदारे इलाही मुराद है।

(3)..... ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की "رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ" ऐ मेरे रब मुझे अपना दीदार दिखा कि मैं तुझे देखूं। इस पर उन्हें जवाब मिला "لَنْ تَرٰىنِيْ" तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा।[3] इस आयते मुबारका में **अल्लाह** तआ़ला ने येह नहीं फ़रमाया कि मेरा दीदार ना मुम्किन है क्यूं कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आ़रिफ़ बिल्लाह हैं, अगर दीदारे इलाही मुम्किन न होता तो आप हरगिज़ सुवाल न फ़रमाते, इस से साबित हुवा की दीदारे इलाही मुम्किन है।

दीदारे इलाही के अह़ादीस से 3 दलाइल

अह़ादीस भी इस बारे में ब कसरत हैं, उन में से 3 अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)..... मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि जन्नतियों के जन्नत में दाख़िल होने के बा'द **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : "क्या तुम चाहते हो कि तुम पर और ज़ियादा इ़नायत करूं ?" वोह अ़र्ज़ करेंगे : या रब ! عَزَّوَجَلَّ, क्या तू ने हमारे चेहरे सफ़ेद नहीं किये ? क्या तू ने हमें जन्नत में दाख़िल नहीं फ़रमाया ? क्या तू ने हमें दोज़ख़ से नजात नहीं दी ? **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "फिर पर्दा उठा दिया जाएगा तो दीदारे इलाही उन्हें हर ने'मत से ज़ियादा प्यारा होगा।"[4]

(2)..... ह़ज़रते जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : हम सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर थे कि रात के वक़्त आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

1 .....القیامہ:۲۲،۲۳. 2 .....یونس:۲۶. 3 .....اعراف:۱۴۳.
4 .....مسلم، کتاب الایمان، باب اثبات رؤیۃ المؤمنین فی الآخرۃ ربھم سبحانہ وتعالی، ص۱۱۰، الحدیث:۲۹۷(۱۸۱).

www.dawateislami.net

चांद की त़रफ़ देख कर फ़रमाया : "अ़न्क़रीब तुम अपने रब عَزَّوَجَلَّ को देखोगे जैसे इस चांद को देखते हो और उसे देखने में कोई दिक़्क़त महसूस न करोगे।"(1)

(3)..... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, क्या हम क़ियामत के दिन अपने रब عَزَّوَجَلَّ को देखेंगे ? इर्शाद फ़रमाया : क्या दो पहर के वक़्त जब बादल न हों तो सूरज को देखने में तुम्हें कोई तक्लीफ़ होती है? अ़र्ज़ की : नहीं। इर्शाद फ़रमाया : चौदहवीं रात को जब बादल न हों तो क्या तुम्हें चांद देखने से कोई तक्लीफ़ होती है ? सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने अ़र्ज़ की : नहीं। इर्शाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, तुम्हें अपने रब عَزَّوَجَلَّ को देखने में सिर्फ़ इतनी तक्लीफ़ होगी जितनी तक्लीफ़ तुम को सूरज या चांद देखने से होती है।(2)

इन दलाइल से साबित हो गया कि आख़िरत में मोमिनीन के लिये दीदारे इलाही शर्अ़ में साबित है और इस का इन्कार गुमराही। गुमराह लोग इस आयत के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीदार का इन्कार करते हैं, हम यहां आयत का मफ़्हूम बयान करते हैं इस से सारा मुआ़मला वाज़ेह़ हो जाएगा। आयत के मफ़्हूम को काफ़ी आसान किया है लेकिन फिर भी इसे मुकम्मल त़ौर पर उ़लमा ही समझ सकते हैं लिहाज़ा अ़वाम की ख़िदमत में येही अ़र्ज़ है कि ऊपर तक जो बयान हुवा वोही उन के लिये काफ़ी है और नीचे की बह़स पर ज़ियादा दिमाग़ न लड़ाएं और अगर ज़रूर ही समझना है तो किसी सह़ीहुल अ़क़ीदा, माहिर सुन्नी आ़लिम से समझें।

आयत "لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ" का मफ़्हूम

इदराक के मा'ना हैं कि देखी जाने वाली चीज़ की तमाम त़रफ़ों और ह़दों पर वाक़िफ़ होना कि येह चीज़ फ़ुलां जगह से शुरूअ़ हो कर फ़ुलां जगह ख़त्म हो गई जैसे इन्सान को हम कहें कि सर से शुरूअ़ हो कर पाउं पर ख़त्म हो गया, इसी को इह़ाता़ (घेराव) कहते हैं। इदराक की येही तफ़्सीर ह़ज़रते सईद बिन मुसय्यब और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मन्क़ूल है और जुम्हूर मुफ़स्सिरीन इदराक की तफ़्सीर इह़ाते से फ़रमाते हैं और इह़ाता़ उसी चीज़ का हो सकता है जिस की ह़दें और जिहतें हों। **अल्लाह** तआ़ला के लिये ह़द और जिहत मुह़ाल है तो उस का इदराक व इह़ाता़ भी ना मुम्किन। येही अहले सुन्नत का मज़हब है। ख़ारिजी और मो'तज़िला वग़ैरा गुमराह फ़िर्क़े इदराक और रूयत में फ़र्क़ नहीं करते, इस लिये वोह इस गुमराही में मुब्तला हो गए कि उन्हों ने दीदारे इलाही को मुह़ाले अ़क़्ली क़रार दे दिया, ह़ालां

1 .....بخاری، کتاب مواقیت الصلاۃ، باب فضل صلاۃ العصر، ۱/۲۰۳، الحدیث: ۵۵۴.

2 .....مسلم، کتاب الزھد والرقائق، ص۱۵۸۷، الحدیث: ۱۶(۲۹۶۸).

www.dawateislami.net

कि अगर येह कहा जाए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को देखा नहीं जा सकता तो इस से येह लाज़िम आता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को जाना भी नहीं जा सकता और जैसे काएनात में मौजूद तमाम चीज़ों के बर ख़िलाफ़ कैफ़िय्यत व जिहत के बिग़ैर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को जाना जा सकता है ऐसे ही देखा भी जा सकता है क्यूं कि अगर दूसरी मौजूदात बिग़ैर कैफ़िय्यत व जिहत के देखी नहीं जा सकतीं तो जानी भी नहीं जा सकतीं। इस कलाम की बुन्याद येह है कि देखने के मा'ना येह हैं कि बसर (देखने की क़ुव्वत) किसी शै को जैसी वोह हो वैसा जाने तो जो शै जिहत वाली होगी, उस का देखा जाना जिहत में होगा और जिस के लिये जिहत न होगी उस का देखा जाना बिग़ैर जिहत के होगा।

قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآىِٕرُ مِنْ رَّبِّكُمْۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖۚ وَمَنْ عَمِیَ فَعَلَیْهَاؕ وَمَاۤ اَنَا عَلَیْكُمْ بِحَفِیْظٍ ۱۰۴

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हारे पास आंखें खोलने वाली दलीलें आईं तुम्हारे रब की त़रफ़ से तो जिस ने देखा तो अपने भले को और जो अन्धा हुवा तो अपने बुरे को और मैं तुम पर निगह्बान नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से आंखें खोलने वाली दलीलें आ गईं तो जिस ने (उन्हें) देख लिया तो अपने फ़ाएदे के लिये ही (किया) और जो (देखने से) अन्धा रहा तो येह भी उसी पर है और मैं तुम पर निगह्बान नहीं।

﴿قَدْ جَآءَكُمْ﴾ **: बेशक तुम्हारे पास आ गईं।** ﴾ या'नी ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप लोगों से फ़रमा दें कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से तौह़ीद, नुबुव्वत, मरने के बा'द दोबारा ज़िन्दा किये जाने और ह़िसाब व जज़ा से मुतअ़ल्लिक़ दिल की आंखें खोल देने वाली दलीलें आ गईं तो जिस ने दिल की आंख से ह़क़ को देखा और उस पर ईमान ले आया तो इस में उस का अपना फ़ाएदा है और जो ह़क़ ज़ाहिर होने के बा वुजूद उसे देखने से अन्धा रहा और उस पर ईमान न लाया तो इस में नुक़्सान भी उस का अपना है और मैं तुम पर निगह्बान नहीं कि तुम्हारे आ'माल और अफ़्आ़ल की निगह्बानी करता फिरूं बल्कि मैं तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं ताकि उस का पैग़ाम तुम तक पहुंचा दूं जब कि **अल्लाह** तआ़ला तुम पर निगह्बान है, उस से तुम्हारे आ'माल और अह़वाल में से कुछ भी छुपा हुवा नहीं है और वोही तुम्हें तुम्हारे आ'माल की जज़ा देगा।[1]

(1) ……روح البیان، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۰۴، ۳/۸۱، خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۰۴، ۲/۴۴، ملتقطاً۔

www.dawateislami.net

وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰیٰتِ وَلِیَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَیِّنَهٗ لِقَوْمٍ یَّعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम इसी त़रह़ आयतें त़रह़ त़रह़ से बयान करते हैं और इस लिये कि काफ़िर बोल उठें कि तुम तो पढ़े हो और इस लिये कि उसे इ़ल्म वालों पर वाज़ेह़ कर दें।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम इसी त़रह़ बार बार आयतें बयान करते हैं और इस लिये ताकि काफ़िर बोल उठें कि तुम ने पढ़ लिया है और इस लिये ताकि हम उसे इ़ल्म वालों के लिये वाज़ेह़ कर दें।

﴿وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰیٰتِ﴾ : **और हम इसी त़रह़ बार बार आयतें बयान करते हैं।﴾** आयत का मफ़्हूम येह है कि हम बार बार अपनी आयतें बयान करते हैं ताकि लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें नीज़ उन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हुज्जत क़ाइम हो जाए लेकिन काफ़िरों की ह़ालत येह है कि वोह इस से इ़ब्रत ह़ासिल नहीं करते बल्कि इन आयात के नाज़िल होने का नतीजा काफ़िरों के ह़क़ में येह निकलता है कि वोह बोल उठते कि ऐ मुह़म्मद ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, तुम ने गुज़श्ता किताबों को पढ़ लिया है और वोही पढ़ कर हमें बता रहे हो।

اِتَّبِعْ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَ اَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۱۰۶﴾ وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَاۤ اَشْرَكُوْا ؕ وَ مَا جَعَلْنٰكَ عَلَیْهِمْ حَفِیْظًا ۚ وَ مَاۤ اَنْتَ عَلَیْهِمْ بِوَكِیْلٍ ﴿۱۰۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उस पर चलो जो तुम्हें तुम्हारे रब की त़रफ़ से वह़ी होती है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुश्रिकों से मुंह फेर लो। और **अल्लाह** चाहता तो वोह शरीक नहीं करते और हम ने तुम्हें उन पर निगह्बान नहीं किया और तुम उन पर कड़ोड़े नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम उस वह़ी की पैरवी करो जो तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब की त़रफ़ से भेजी गई है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुश्रिकों से मुंह फेर लो। और अगर **अल्लाह** चाहता तो वोह शिर्क न करते और हम ने तुम्हें उन पर निगह्बान नहीं बनाया और न आप उन पर निगरान हैं।

www.dawateislami.net

﴿اِتَّبِعْ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیْكَ﴾ **: तुम उस वह्यी की पैरवी करो जो तुम्हारी त़रफ़ भेजी गई है ।** ﴾ सुल्त़ाने दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से फ़रमाया गया कि "तुम उस वह्यी की पैरवी करो जो तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से भेजी गई है और कुफ़्फ़ार की बेहूदा गोइयों की त़रफ़ इल्तिफ़ात न करो ।" इस में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ात़िर है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कुफ़्फ़ार की यावा गोइयों से रन्जीदा न हों । येह उन की बद नसीबी है कि वोह ऐसी वाज़ेह़ दलीलों से फ़ाएदा न उठाएं ।

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَیَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًۢا بِغَیْرِ عِلْمٍ ؕ كَذٰلِكَ زَیَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۪ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَیُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۰۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हें गाली न दो जिन को वोह **अल्लाह** के सिवा पूजते हैं कि वोह **अल्लाह** की शान में बे अदबी करेंगे ज़ियादती और जहालत से यूंही हम ने हर उम्मत की निगाह में उस के अ़मल भले कर दिये हैं फिर उन्हें अपने रब की त़रफ़ फिरना है और वोह उन्हें बता देगा जो करते थे ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन्हें बुरा भला न कहो जिन्हें वोह **अल्लाह** के सिवा पूजते हैं कि वोह ज़ियादती करते हुए जहालत की वज्ह से **अल्लाह** की शान में बे अदबी करेंगे यूंही हम ने हर उम्मत की निगाह में उस के अ़मल को आरास्ता कर दिया फिर उन्हें अपने रब की त़रफ़ फिरना है तो वोह उन्हें बता देगा जो वोह करते थे ।

﴿وَلَا تَسُبُّوا﴾ **: और बुरा न कहो ।** ﴾ ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि मुसल्मान कुफ़्फ़ार के बुतों की बुराई किया करते थे ताकि कुफ़्फ़ार को नसीह़त हो और वोह बुत परस्ती के ऐब से बा ख़बर हों मगर उन ना ख़ुदा शनास जाहिलों ने बजाए नसीह़त ह़ासिल करने के शाने इलाही में बे अदबी के साथ ज़बान खोलनी शुरूअ़ की । इस पर येह आयत नाज़िल हुई[1] कि अगर्चे बुतों को बुरा कहना और इन की ह़क़ीक़त का इज़्हार त़ाअ़त व सवाब है लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान में कुफ़्फ़ार की बद गोइयों को रोकने के लिये

1 .....تفسیر بغوی، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۰۸، ۲/۱۰۰.

www.dawateislami.net

इस को मन्अ़ फ़रमाया गया। इब्ने अम्बारी का क़ौल है कि येह हुक्म अव्वल ज़माने में था जब मुसल्मानों में त़ाक़त आ गई कि कुफ़्फ़ार को रब عَزَّوَجَلَّ की शान में गुस्ताख़ी से रोक सकें तो उन्हें इस की इजाज़त मिल गई।[1] वरना तो ख़ुद क़ुरआने करीम में शैत़ान और बुतों और सरदाराने क़ुरैश की बुराइयां ब कसरत बयान की गई हैं।

आयत ''وَلَا تَسُبُّوْا'' से मा'लूम होने वाले मसाइल

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ां नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि इस आयत से चन्द मस्अले मा'लूम हुए **एक** येह कि अगर ग़ैर ज़रूरी इबादत ऐसे फ़साद का ज़रीआ़ बन जाए जो हम से मिट न सके तो उस को छोड़ दिया जाए। **दूसरे** येह कि वाइ़ज़ व आ़लिम इस त़रीक़े से वा'ज़ न करे जिस से लोगों में ज़िद पैदा हो जाए और फ़साद और मारपीट तक नौबत पहुंचे। **तीसरे** येह कि अगर किसी के मुतअ़ल्लिक़ येह क़वी अन्देशा हो कि उसे नसीह़त करना और ज़ियादा ख़राबी का बाइ़स होगा तो न करे। **चौथे** येह कि कभी ज़िद से इन्सान अपना दीन भी खो बैठता है क्यूं कि कुफ़्फ़ारे मक्का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को मानते थे फिर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़िद में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शान में भी बे अदबी करते थे।[2]

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَىِٕنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَاۤ اِذَا جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۰۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हों ने **अल्लाह** की क़सम खाई अपने ह़ल्फ़ में पूरी कोशिश से कि अगर उन के पास कोई निशानी आई तो ज़रूर उस पर ईमान लाएंगे। तुम फ़रमा दो कि निशानियां तो **अल्लाह** के पास हैं और तुम्हें क्या ख़बर कि जब वोह आएं तो येह ईमान न लाएंगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन्हों ने बड़ी ताकीद से **अल्लाह** की क़सम खाई कि अगर उन के पास कोई निशानी आई तो ज़रूर उस पर ईमान लाएंगे। तुम फ़रमा दो कि निशानियां तो **अल्लाह** के पास हैं और तुम्हें क्या ख़बर कि जब वोह (निशानियां) आएंगी तो (भी) येह ईमान नहीं लाएंगे।

1 ..... خازن، الانعام، تحت الآية: ١٠٨، ٢/٤٦.

2 ..... नूरुल इरफ़ान, अल अन्आ़म, तह़्तल आयह : 108, स. 224

www.dawateislami.net

﴿وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَیْمَانِهِمْ﴾ : **और उन्हों ने बड़ी ताकीद से अल्लाह की क़सम खाई ।** ﴾ कुफ़्फ़ारे मक्का ने ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते मूसा और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात बयान फ़रमाते हैं। अगर हम को हमारी मुंह मांगी निशानियां दिखा दें तो हम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान ले आएंगे। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम क्या चाहते हो ?" उन्हों ने कहा : सफ़ा पहाड़ सोने का हो जाए या हमारे बा'ज़ मुर्दे जी कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गवाही दे दें या फ़िरिश्ते हमारे सामने आ जाएं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर इन में से कुछ दिखा दूं तो ईमान ले आओगे ?" वोह क़समें खा कर बोले कि "ज़रूर।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरादा फ़रमाया कि दुआ करें। ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने आ कर अ़र्ज़ किया कि "ऐ मह़बूब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप जो दुआ करेंगे क़बूल होगी। लेकिन अगर येह लोग ईमान न लाए तो अभी हलाक कर दिये जाएंगे और अगर ज़िन्दा रहे तो शायद इन में कोई ईमान ले आए।" तब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ का इरादा छोड़ दिया। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई।[1]

وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِیْ طُغْیَانِهِمْ یَعْمَهُوْنَ ﴿۱۱۰﴾ ع ۱۶

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम फेर देते हैं उन के दिलों और आंखों को जैसा वोह पहली बार उस पर ईमान न लाए थे और उन्हें छोड़ देते कि अपनी सरकशी में भटका करें।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम उन के दिलों और उन की आंखों को फेर देंगे जैसा कि येह पहली बार उस पर ईमान न लाए थे और उन्हें उन की सरकशी में भटकते हुए छोड़ देंगे।

﴿وَنُقَلِّبُ﴾ : **और हम फेर देंगे ।** ﴾ इर्शाद फ़रमाया कि जिस त़रह़ पहले उन लोगों के सामने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानियां ज़ाहिर हुई थीं जैसे चांद का दो टुकड़े हो जाना और इसी त़रह़ के दीगर अ़ज़ीम मो'जिज़ात लेकिन येह उन पर ईमान नहीं लाए थे इसी त़रह़ येह अब भी ईमान नहीं लाएंगे और इन के ईमान लाने के सब वा'दे झूटे हैं।

1 .....تفسیر بغوی، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۰۹، ۲/۱۰۰-۱۰۱.

www.dawateislami.net

وَلَوْ اَنَّنَا

8

www.dawateislami.net

पारह नम्बर.....8

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ﴿۱۱۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर हम उन की त़रफ़ फ़िरिश्ते उतारते और उन से मुर्दे बातें करते और हम हर चीज़ उन के सामने उठा लाते जब भी वोह ईमान लाने वाले न थे मगर येह कि ख़ुदा चाहता व लेकिन उन में बहुत निरे जाहिल हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर हम उन की त़रफ़ फ़िरिश्ते उतार देते और मुर्दे उन से बातें करते और हम हर चीज़ उन के सामने जम्अ़ कर देते जब भी वोह ईमान लाने वाले न थे मगर येह कि ख़ुदा चाहता लेकिन उन में अक्सर लोग जाहिल हैं।

﴿وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ﴾ **: और अगर हम उन की त़रफ़ फ़िरिश्ते उतार देते ।** ﴾ पिछली आयत में इज्माली त़ौर पर बयान हुवा था कि निशानियां त़लब करने वाले कुफ़्फ़ार के मुत़ालबात पूरे कर दिये जाएं तो भी वोह ईमान न लाएंगे और इस आयते मुबारका में इस इज्माल की तफ़्सील बयान हुई है। **शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे मक्का ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मज़ाक़ के त़ौर पर कहा करते कि अगर आप सच्चे हैं तो हमारे मुर्दों को ज़िन्दा कर दीजिये ताकि हम उन से पूछें कि मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो फ़रमाते हैं वोह ह़क़ है या नहीं और आप हमें फ़िरिश्ते दिखाइये जो हमारे सामने आप के रसूल होने की गवाही दें या **अल्लाह** और फ़िरिश्तों को हमारे सामने लाइये। उन के जवाब में येह आयते करीमा नाज़िल हुई।[1]

और फ़रमाया गया कि ऐ महबूब ! अगर हम कुफ़्फ़ार के मुत़ालबे के मुत़ाबिक़ उन की त़रफ़ फ़िरिश्ते उतार दें जिन्हें वोह उन की अस्ली शक्ल में देख लें और वोह उन से आप की रिसालत की गवाही सुन लें। यूंही अगर हम उन के मत़लूबा या आ़म मुर्दे ज़िन्दा कर के उन के सामने खड़े कर दें ताकि येह उन से मा'लूम कर लें कि आप जो पैग़ाम लाए हैं वोह ह़क़ है या नहीं तब भी येह ईमान नहीं लाएंगे, बल्कि अगर हम उन के मुत़ालबात से ज़ाइद मख़्लूक़ात में से हर ख़ुश्को तर, शजरो ह़जर, नबातात व ह़ैवानात इन के सामने जम्अ़ कर दें तब भी येह

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۱۱، ۲/۴۷.

www.dawateislami.net

लोग न ईमान लाएंगे और न आप की तस्दीक़ करेंगे और न ही आप की पैरवी करेंगे अलबत्ता जिन की क़िस्मत में ईमान लिखा होगा और **अल्लाह** तआ़ला की मरज़ी जिन के ईमान के मुतअ़ल्लिक़ होगी वोह ईमान लाएंगे ।[1]

अल्लाह तआ़ला की मशिय्यत से मुतअ़ल्लिक़ दो अहम मसाइल

इस मक़ाम पर दो अहम मसाइल ज़ेहन नशीन रखें :

(1)..... **अल्लाह** तआ़ला ने इस काएनात को पैदा फ़रमाया और जैसा होने वाला था और जैसा कोई करने वाला था वोह सब **अल्लाह** तआ़ला के इ़ल्मे अज़ली में था और उस ने वोही लिख दिया, तो येह नहीं कि जैसा उस ने लिख दिया वैसा हम को करना पड़ता है बल्कि जैसा हम करने वाले थे वैसा उस ने लिख दिया, ज़ैद के ज़िम्मे बुराई लिखी इस लिये कि ज़ैद बुराई करने वाला था अगर ज़ैद भलाई करने वाला होता तो वोह उस के लिये भलाई लिखता तो **अल्लाह** तआ़ला के इ़ल्म या उस के लिख देने ने किसी को मजबूर नहीं कर दिया ।

(2)..... येह दुरुस्त है कि बन्दों के तमाम अफ़्आ़ल **अल्लाह** तआ़ला के इरादे, उस की मशिय्यत और उस की क़ज़ा से वुजूद पज़ीर होते हैं लेकिन क़ादिर व क़दीर रब عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान को पथ्थर और दीगर जमादात की त़रह़ बेबस, मजबूर और बिल्कुल बे इख़्तियार नहीं बनाया बल्कि इसे एक क़िस्म का इख़्तियार दिया है कि कोई काम चाहे तो करे, चाहे न करे और इस के साथ अ़क़्ल भी दी है कि अपना बुरा भला, नफ़्अ़ व नुक़्सान पहचान सके, फिर नेकी या बदी, अच्छाई या बुराई में से जिस काम को इख़्तियार करता है **अल्लाह** तआ़ला उस की क़ुव्वत उस इन्सान में पैदा फ़रमा देता है और इसी इख़्तियार के ए'तिबार से वोह जज़ा व सज़ा का मुस्तह़िक़ क़रार पाता है । अगर इन्सान नेकी या बदी, अच्छाई या बुराई पर कोई इख़्तियार ही नहीं रखता तो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हिदायत के लिये मब्ऊ़स फ़रमाना, इन्सान को अह़काम का मुकल्लफ़ करना और इसे इस के आ'माल की जज़ा व सज़ा देना सब बे मा'ना और अ़बस हो जाएगा और **अल्लाह** तआ़ला का कोई काम अ़बस नहीं है । ख़ुलासा येह है कि ईमान वोही लाएंगे जिन के ईमान का **अल्लाह** तआ़ला इरादा फ़रमाएगा और कुफ़्र वोही करेंगे जिन के कुफ़्र का **अल्लाह** तआ़ला इरादा फ़रमाएगा और **अल्लाह** तआ़ला उन के कुफ़्र का इस लिये इरादा फ़रमाता है कि वोह कुफ़्र को इख़्तियार करते हैं ।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ
بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ؕ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ

1 .....تفسیر طبری، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۱۱، ۵/۳۱۱.

www.dawateislami.net

فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۱۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और इसी त़रह़ हम ने हर नबी के दुश्मन किये हैं आदमियों और जिन्नों में के शैत़ान कि उन में एक दूसरे पर ख़ुफ़्या डालता है बनावट की बात धोके को और तुम्हारा रब चाहता तो वोह ऐसा न करते तो उन्हें उन की बनावटों पर छोड़ दो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और इसी त़रह़ हम ने हर नबी का दुश्मन बनाया इन्सानों और जिन्नों के शैत़ानों को उन में एक दूसरे को धोका देने के लिये बनावटी बातों के वस्वसे डालता है और अगर तुम्हारा रब चाहता तो वोह ऐसा न करते तो तुम उन्हें और उन की बनावटी बातों को छोड़ दो।

﴿وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا﴾ **: और इसी त़रह़ हम ने हर नबी के दुश्मन किये हैं।** कुफ़्फ़ारे मक्का की मुख़ालफ़त और ईज़ा रसानियों की वज्ह से सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बहुत रन्जीदा थे, इस पर **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तसल्ली देते हुए फ़रमा रहा है कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, जिस त़रह़ येह कुफ़्फ़ार आप की मुख़ालफ़त और दुश्मनी में सरगर्म हैं इसी त़रह़ आप से पहले जितने अम्बिया और रुसुल عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام गुज़रे हैं सब की क़ौम के काफ़िर चाहे इन्सान हों या जिन्न उन के दुश्मन थे। कुफ़्फ़ार की अम्बिया व रुसुल عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अ़दावत और मुख़ालफ़त हमारी त़रफ़ से एक आज़्माइश है ताकि अम्बिया व मुरसलीन عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इस पर सब्र कर के अज्रे अ़ज़ीम ह़ासिल करें लिहाज़ा आप अपनी क़ौम की मुख़ालफ़त और अ़दावत से रन्जीदा ख़ात़िर न हों, येह एक दूसरे को धोके में रखने के लिये नित नई बातें घड़ते हैं, चालें चलते हैं, फ़रेब कारियां करते हैं और वस्वसे डालते हैं ताकि दूसरों को गुमराह करें और जो गुमराह हैं वोह गुमराही से निकल न सकें। नीज़ यहां भी मल्ह़ूज़े ख़ात़िर रहे कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहता तो वोह ऐसा न करते लेकिन **अल्लाह** तआ़ला अपनी ह़िक्मत से निज़ामे काएनात चला रहा है और कुफ़्रो ईमान, ख़ैरो शर दोनों के मद्दे मुक़ाबिल रहने में उस की ह़िक्मतें हैं लिहाज़ा आप उन्हें और उन की धोके और फ़रेब की ख़ुश्नुमा बातों को छोड़ दें और सब्र करें, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें बदला देगा, रुस्वा करेगा और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मदद फ़रमाएगा। आयते मुबारका से येह भी मा'लूम हुवा कि तमाम नबियों के दुश्मन ज़रूर हुए हैं ऐसे ही उ़लमा और औलिया के दुश्मन भी ज़रूर ही होते हैं।

﴿شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ﴾ **: इन्सानों और जिन्नों के शैत़ान।** इस की तफ़्सीर में उ़लमा के दो क़ौल हैं (1) जिन्नों में भी शैत़ान होते हैं और इन्सानों में भी क्यूं कि शैत़ान हर सरकश व ना फ़रमान

www.dawateislami.net

को कहते हैं चाहे वोह इन्सान हो या जिन्न। (2) जिन्नों और इन्सानों के शैत़ान से मुराद इब्लीस की औलाद है। इब्लीस ने अपनी औलाद को दो हिस्सों में तक़्सीम कर दिया एक गुरौह इन्सानों को वस्वसा डालता है और एक गुरौह जिन्नों को वस्वसा डालता है।[1] ख़ुफ़्या बात से मुराद वस्वसे और फ़रेब की बातें हैं।

मुसल्मानों को चाहिये कि इन्सानी शैत़ानों से बचें

इस आयते मुबारका से मा'लूम हुवा कि जो गुमराह कुन शख़्स किसी को शरीअ़त के ख़िलाफ़ काम की तरग़ीब दे वोह इन्सानी शैत़ान है अगर्चे वोह अपने अ़ज़ीज़ों में से हो या आ़लिम के लिबास में हो, नीज़ इस में वोह तमाम लोग दाख़िल हैं जो आज़ाद ख़याली या रोशन ख़याली के नाम पर शर्ई कामों के ख़िलाफ़ प्लानिंग करते और मन्सूबे बनाते और इस के लिये तन्ज़ीमें बनाते हैं। सब मुसल्मानों पर लाज़िम है कि वोह ऐसे इन्सानी शैत़ानों से ख़ुद भी बचें और दूसरों को भी बचाएं। यहां एक निहायत अहम चीज़ के बारे में अ़र्ज़ करनी है कि हमारे दौर में येह वबा आ़म होती जा रही है कि भाई हर एक की सुनो और तह़क़ीक़ करो ख़्वाह कहने वाला क़ुरआन के ख़िलाफ़ कहे या ह़दीस के या इस्लाम के। गोया مَعَاذَاللہ, तह़क़ीक़, मुत़ालआ़ के नाम पर हर गुमराही सुनने, पढ़ने की तरग़ीब दी जा रही है और इस चीज़ को बाहमी रवादारी, एक दूसरे को समझने की कोशिश, एक दूसरे के नुक्तए नज़र पर मुत्त़लअ़ होना, अपने अपने ख़यालात दूसरों से शेयर करना वग़ैरा वग़ैरा के बड़े दिलचस्प नाम दिये जाते हैं लेकिन क्या क़ुरआन, ह़दीस, दीन, ईमान, इस्लाम में भी इस चीज़ की गुन्जाइश है या नहीं, इस की त़रफ़ कोई नहीं देखता। लिहाज़ा यहां पर हम क़ुरआनो ह़दीस की रोशनी में ऐसी बात़िल तह़क़ीक़ व मुत़ालए़ का हुक्मे शर्ई बयान करते हैं और हमें उन जाहिलों की कोई परवाह नहीं जो क़ुरआनो ह़दीस के इन अह़काम को अपनी जहालत व कोताह नज़र से तंग नज़री और न जाने क्या क्या नाम देंगे। चुनान्चे कुफ़्फ़ार व इस्लाम दुश्मन लोगों के लेक्चर्ज़ सुनने के ह़वाले से आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से सुवाल हुवा तो आप ने बड़े अह़सन अन्दाज़ में जवाब इर्शाद फ़रमाया जिस का ख़ुलासा येह है कि आज कल हमारे अ़वाम भाइयों की सख़्त जहालत येह है कि किसी आर्या ने इश्तिहार दिया कि इस्लाम के फ़ुलां मज़मून के रद में फ़ुलां वक़्त लेक्चर दिया जाएगा, येह सुनने के लिये दौड़े जाते हैं। किसी पादरी ने ए'लान किया कि नसरानिय्यत के फ़ुलां मज़मून के सुबूत में फ़ुलां वक़्त निदा होगी, येह सुनने के लिये दौड़े जाते हैं। भाइयो! तुम अपने नफ़्अ़ नुक़्सान को ज़ियादा जानते हो या तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ और तुम्हारे नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, उन का हुक्म तो येह है कि शैत़ान तुम्हारे पास वस्वसा डालने आए तो सीधा जवाब येह दे दो कि तू झूटा है न येह कि तुम आप दौड़ दौड़ के उन के पास

[1] .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۱۲، ۲/۴۸.

www.dawateislami.net

जाओ और अपने रब عَزَّوَجَلَّ,अपने क़ुरआन और अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में मल्ऊ़न कलिमात सुनो। तुम क़ुरआने मजीद की इसी आयत का आख़िरी हिस्सा और इस के मुत्तसिल की आयाते करीमा तिलावत करते जाओ और देखो कि क़ुरआने अ़ज़ीम तुम्हारी इस ह़रकत की कैसी कैसी शनाअ़तें बताता और उन नापाक लेक्चरों निदाओं की निस्बत तुम्हें क्या क्या हिदायत फ़रमाता है, चुनान्चे इस आयत के आख़िर में इर्शाद होता है :

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ (1)

और तेरा रब चाहता तो वोह येह धोके बनावट की बातें न बनाते फिरते तो तू उन्हें और उन के बोहतानों को यक लख़्त छोड़ दे।

देखो! इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें और उन की बातों को छोड़ने का हुक्म फ़रमाया या उन के पास सुनने के लिये दौड़ने का। और सुनिये, इस के बा'द की आयत में फ़रमाता है :

وَلِتَصْغٰۤى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ (2)

और इस लिये कि ऐसे लोगों के दिल उस की त़रफ़ कान लगाएं जिन्हें आख़िरत पर ईमान नहीं और उसे पसन्द करें और जो कुछ ना पाकियां वोह कर रहे हैं येह भी करने लगें।

देखो उन (कुफ़्फ़ार व ना फ़रमान लोगों) की बातों की त़रफ़ कान लगाना उन (लोगों) का काम बताया जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते और इस का नतीजा येह फ़रमाया कि वोह मल्ऊ़न बातें उन पर असर कर जाएं और येह भी उन जैसे हो जाएं। लोग अपनी जहालत से गुमान करते हैं कि हम अपने दिल से मुसल्मान हैं हम पर उन का क्या असर होगा ह़ालां कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं "जो दज्जाल की ख़बर सुने उस पर वाजिब है कि उस से दूर भागे कि ख़ुदा की क़सम आदमी उस के पास जाएगा और येह ख़याल करेगा कि मैं तो मुसल्मान हूं या'नी मुझे उस से क्या नुक़्सान पहुंचेगा वहां उस के धोकों में पड़ कर उस का पैरव हो जाएगा।"(3)

क्या दज्जाल एक उसी अख़्बस दज्जाल को समझते हो जो आने वाला है, ऐसा हरगिज़ नहीं है बल्कि तमाम गुमराहों के दाई मुनादी सब दज्जाल हैं और सब से दूर भागने ही का हुक्म फ़रमाया और उस में येही अन्देशा बताया है। **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "आख़िर ज़माने में दज्जाल कज़्ज़ाब लोग होंगे कि वोह बातें तुम्हारे पास लाएंगे जो न तुम ने सुनीं न तुम्हारे बाप दादा ने, तो उन से दूर रहो और उन्हें अपने से दूर रखो कहीं वोह तुम्हें गुमराह न कर दें कहीं तुम्हें फ़ितने में न डाल दें।"(4)

1 .....الانعام:۱۱۲. 2 .....الانعام:۱۱۳. 3 .....ابو داؤد، اول کتاب الملاحم، باب ذکر خروج الدجال، ۴/۱۵۷، الحدیث: ۴۳۱۹.
4 .....مسلم، باب النهی عن الروایة عن الضعفاء... الخ، ص۹، الحدیث: ۷(۷).

www.dawateislami.net

और सुनिये, इस के बा'द की आयात में फ़रमाता है :

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ؕ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۱۵﴾ وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿۱۱۶﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿۱۱۷﴾ (1)

तो क्या **अल्लाह** के सिवा कोई और फ़ैसला करने वाला ढूंडूं हालां कि उस ने मुफ़स्सल किताब तुम्हारी त़रफ़ उतारी और अहले किताब ख़ूब जानते हैं कि वोह तेरे रब के पास से ह़क़ के साथ उतरी तो ख़बरदार तो शक न करना और तेरे रब की बात सच और इन्साफ़ में कामिल है कोई उस की बातों का बदलने वाला नहीं और वोह शिनवा व दाना है और ज़मीन वालों में ज़ियादा वोह हैं कि तू उन की पैरवी करे तो वोह तुझे ख़ुदा की राह से बहका दें वोह तो गुमान के पैरव हैं और निरी अट्कलें दौड़ाते हैं बेशक तेरा रब ख़ूब जानता है कि कौन उस की राह से बहकेगा और वोह ख़ूब जानता है हिदायत पाने वालों को।

येह तमाम आयाते करीमा इन्हीं मत़ालिब के सिल्सिलए बयान में हैं गोया इर्शाद होता है तुम जो उन शैत़ान आदमियों की बातें सुनने जाओ क्या तुम्हें येह तलाश है कि देखें इस मज़्हबी इख़्तिलाफ़ में येह लेक्चरार या येह मुनादी क्या फ़ैसला करता है, अरे ख़ुदा से बेहतर फ़ैसला किस का ! उस ने मुफ़स्सल किताब क़ुरआने अ़ज़ीम तुम्हें अ़त़ा फ़रमा दी उस के बा'द तुम को किसी लेक्चर, निदा की क्या ह़ाजत है लेक्चर वाले जो किसी दीनी किताब का नाम नहीं लेते किस गिनती शुमार में हैं ! येह किताब वाले दिल में ख़ूब जानते हैं कि क़ुरआन ह़क़ है (मगर) तअ़स्सुब की पट्टी (उन की) आंखों पर बंधी है कि हटधर्मी से मुकरे जाते हैं तो तुझे क्यूं शक पैदा हो कि उन की सुनना चाहे, तेरे रब का कलाम सिद्क़ो अ़द्ल में भरपूर है कल तक जो उस पर तुझे कामिल यक़ीन था आज क्या उस में फ़र्क़ आया कि उस पर ए'तिराज़ सुनना चाहता है क्या ख़ुदा की बातें कोई बदल सकता है, येह न समझना कि मेरा कोई मक़ाल (या'नी क़ौल), कोई ख़याल ख़ुदा से छुप रहेगा, वोह सुनता जानता है, देख अगर तू ने उन की सुनी तो वोह तुझे ख़ुदा की राह से बहका देंगे, (ऐ नादान ! तू) क्या येह ख़याल करता है कि उन (गुमराह लोगों) का इल्म देखूं (कि) कहां तक है, येह क्या कहते हैं अरे उन के पास इल्म कहां वोह तो अपने अवहाम के पीछे लगे हुए और निरी अट्कलें दौड़ाते हैं जिन का थल न बेड़ा, जब **अल्लाह** वाह़िदे क़ह्हार की गवाही है कि उन के पास निरी मोहमल अट्कलों के सिवा कुछ नहीं तो उन को सुनने के क्या मा'ना ? सुनने से पहले वोही कह दे जो तेरे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ता'लीम फ़रमाया

1 .....الانعام:١١٤-١١٧.

www.dawateislami.net

कि ''शैत़ान तू झूटा है'' और इस घमन्ड में न रहना कि मुझ को क्या गुमराह करेंगे मैं तो राह पर हूं तेरा रब ख़ूब जानता है कि कौन उस की राह से बहकेगा और कौन राह पर है, (अगर) तू पूरा राह पर होता है तो बे राहों की सुनने ही क्यूं जाता ह़ालां कि तेरा रब फ़रमा चुका ''छोड़ दे उन्हें और उन के बोहतानों का।'' तेरे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमा चुके ''उन से दूर रहो और उन को अपने से दूर करो कहीं वोह तुम को बहका न दें कहीं वोह तुम को फ़ितने में न डाल दें।''[1]

भाइयो ! एक सह्ल बात है इस पर ग़ौर फ़रमा लो। तुम अपने रब عَزَّوَجَلَّ, अपने क़ुरआन और अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर सच्चा ईमान रखते हो या مَعَاذَاللہ इस में कुछ शक है ! और जिसे शक हो उसे इस्लाम से क्या इ़लाक़ा (या'नी तअ़ल्लुक़) वोह नाह़क़ अपने आप को मुसल्मान कह कर मुसल्मानों को क्यूं बदनाम करे और अगर सच्चा ईमान है तो अब येह फ़रमाइये कि उन के लेक्चरों निदाओं में आप के रब عَزَّوَجَلَّ, क़ुरआन, नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ईमान की ता'रीफ़ होगी या मज़म्मत। ज़ाहिर है कि दूसरी ही सूरत होगी और इसी लिये तुम को बुलाते हैं कि तुम्हारे मुंह पर तुम्हारे ख़ुदा, नबी, क़ुरआन और दीन की तौहीन व तक्ज़ीब करें। अब ज़रा ग़ौर कर लीजिये कि एक शरीर ने ज़ैद के नाम इश्तिहार दिया कि फ़ुलां वक़्त फ़ुलां मक़ाम पर मैं बयान करूंगा कि तेरा बाप ह़रामी बच्चा और तेरी मां ज़ानिया थी, ख़ुदा के लिये इन्साफ़, क्या कोई ग़ैरत वाला, ह़मिय्यत वाला और इन्सानिय्यत वाला जब कि उसे उस बयान से रोक देने, बाज़ रखने पर क़ादिर न हो उसे सुनने जाएगा। ख़ुदा की क़सम ! हरगिज़ नहीं, किसी भंगी चमार से भी येह न हो सकेगा फिर ईमान के दिल पर हाथ रख कर देखो कि **अल्लाह**, रसूल और क़ुरआने अ़ज़ीम की तौहीन, तक्ज़ीब और मज़म्मत सख़्त तर है या मां बाप की गाली। ईमान रखते हो तो उसे इस से कुछ निस्बत न जानोगे। फिर कौन से कलेजे से उन जिगर शिगाफ़, नापाक, मल्ऊ़न बोहतानों, इफ़्तिराओं, शैत़ानी अट्कलों और ढकोसलों को सुनने जाते हो, बल्कि ह़क़ीक़त और इन्साफ़ की बात तो येह है कि वोह जो कुछ बकते और **अल्लाह**, रसूल और क़ुरआने अ़ज़ीम की तह़क़ीर करते हैं उन सब का बाइ़स येह सुनने वाले हैं, अगर मुसल्मान अपना ईमान संभालें, अपने रब, क़ुरआन और रसूल की इ़ज़्ज़त अ़ज़मत पेशे नज़र रखें और एका कर लें कि वोह ख़बीस लेक्चर, गन्दी निदाएं सुनने कोई न जाएगा जो वहां मौजूद हो वोह भी फ़ौरन वोही मुबारक इर्शाद का कलिमा कह कर कि ''तू झूटा है'' चला जाएगा तो क्या वोह दीवारों पत्थरों से अपना सर फोड़ेंगे ? तो तुम सुन सुन कर कहलवाते हो, न तुम सुनो न वोह कहें, फिर इन्साफ़ कीजिये कि उस कहने का वबाल किस पर हुवा। उ़लमा फ़रमाते हैं ''हट्टे कट्टे जवान तन्दुरुस्त जो भीक मांगने के आ़दी होते और इसी को अपना पेशा बना लेते हैं उन्हें देना ना जाइज़ है कि इस में गुनाह पर शह देनी है, लोग न दें तो झक मारें और मेह़नत मज़दूरी करें।'' भाइयो ! जब इस में गुनाह की इमदाद है तो उस में तो कुफ़्र की मदद है। क़ुरआने अ़ज़ीम की नस्से क़त़ई ने ऐसी जगह से फ़ौरन हट जाना फ़र्ज़ कर दिया और

[1] .....مسلم، باب النهي عن الرواية عن الضعفاء... الخ، ص٩، الحديث: ٧(٧).

www.dawateislami.net

वहां ठहरना फ़क़त़ ह़राम ही न फ़रमाया बल्कि सुनो तो क्या इर्शाद किया। रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَ يُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖۤ ۚ اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ الْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعًا[1]

या'नी बेशक **अल्लाह** तुम पर कुरआन में हुक्म उतार चुका कि जब तुम सुनो कि ख़ुदा की आयतों से इन्कार होता और उन की हंसी की जाती है तो उन लोगों के पास न बैठो जब तक वोह और बातों में मश्ग़ूल न हों और तुम ने न माना और जिस वक़्त वोह **अल्लाह** की आयात पर ए'तिराज़ कर रहे हैं वहां बैठे तो जब तुम भी उन्हीं जैसे हो, बेशक **अल्लाह** तआ़ला मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों सब को जहन्नम में इकठ्ठा करेगा।

देखो कुरआन फ़रमाता है, हां तुम्हारा रब रह़मान फ़रमाता है जो ऐसे जल्सों में जाए ऐसी जगह खड़ा हो वोह भी उन्हीं काफ़िरों आर्यों पादरियों की मिस्ल है।

आह आह ह़राम तो हर गुनाह है यहां तो **अल्लाह** वाह़िदे क़ह्हार येह फ़रमा रहा है कि वहां ठहरे तो तुम भी उन्हीं जैसे हो। मुसल्मानो ! क्या कुरआने अ़ज़ीम की येह आयात तुम ने मन्सूख़ कर दीं या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इस सख़्त वईद को सच्चा न समझे या काफ़िरों जैसा होना क़बूल कर लिया। और जब कुछ नहीं तो उन जम्घटों के क्या मा'ना हैं जो आर्यों पादरियों के लेक्चरों निदाओं पर होते हैं उन जल्सों में शिर्कत क्यूं है जो ख़ुदा, रसूल और कुरआन पर ए'तिराज़ों के लिये किये जाते हैं। भाइयो ! मैं नहीं कहता कुरआन फ़रमाता है कि "اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ" तुम भी उन ही जैसे हो। उन लेक्चरों पर जमघट वाले उन जल्सों में शिर्कत वाले सब उन्हीं काफ़िरों के मिस्ल हैं, वोह अ़लानिया बक कर काफ़िर हुए येह ज़बान से कलिमा पढ़ें और दिल में ख़ुदा, रसूल और कुरआन की इतनी इ़ज़्ज़त नहीं कि जहां उन की तौहीन होती हो वहां से बचें तो येह मुनाफ़िक़ हुए जब तो फ़रमाया कि **अल्लाह** उन्हें और इन्हें सब को जहन्नम में इकठ्ठा करेगा कि यहां तुम लेक्चर दो और तुम सुनो।

मुसल्मान अगर कुरआने अ़ज़ीम की इस नसीह़त पर अ़मल करें तो अभी अभी देखें कि **अल्लाह** तआ़ला के दुश्मनों के सब बाज़ार ठन्डे हुए जाते हैं, मुल्क में उन के शोरो शर का निशान न रहेगा, जहन्नम के कुन्दे शैत़ान के बन्दे आपस ही में टकरा टकरा कर सर फोड़ेंगे, **अल्लाह**, रसूल और कुरआने अ़ज़ीम की तौहीनों से मुसल्मानों का कलेजा पकाना छोड़ेंगे, और अपने घर बैठ कर बके भी तो मुसल्मानों के कान तो ठन्डे रहेंगे।[2]

---

1 ..... النساء: ١٤٠.

2 ..... फ़तावा रज़विय्या, 1/781, 785 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

وَلِتَصْغٰۤى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿۱۱۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और इस लिये कि उस की त़रफ़ उन के दिल झुकें जिन्हें आख़िरत पर ईमान नहीं और उसे पसन्द करें और गुनाह कमाएं जो उन्हें गुनाह कमाना है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ताकि आख़िरत पर ईमान न लाने वालों के दिल उन बनावटी बातों की त़रफ़ माइल हो जाएं और ताकि वोह उन बातों को पसन्द कर लें और वोह उसी गुनाह का इरतिकाब करें जिस के येह ख़ुद मुरतकिब हैं।

﴿وَلِتَصْغٰۤى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ﴾ **: और इस लिये कि उस की त़रफ़ दिल झुकें** ﴾ इस से पहली आयत में बयान हुवा कि इन्सानों और जिन्नों में से जो मरदूद हैं वोह एक दूसरे को धोका देने के लिये बनावटी बातों के वस्वसे डालते हैं, अब इस की मज़ीद वुजूहात बयान फ़रमाई जा रही हैं कि वोह एक दूसरे को बनावटी बातों के वस्वसे इस लिये डालते हैं ताकि आख़िरत पर ईमान न लाने वालों के दिल उन बनावटी बातों की त़रफ़ माइल हो जाएं, वोह उन की बनावटी बातों को पसन्द कर लें और उसी गुनाह का इरतिकाब करें जिस के येह ख़ुद मुरतकिब हुए हैं।

दिल अपने हम जिन्स की त़रफ़ झुकता है

इस से मा'लूम हुवा कि हर एक का दिल अपने हम जिन्स की त़रफ़ झुकता है, लिहाज़ा अगर किसी आदमी का दिल गुनाहगारों, गुमराहों की त़रफ़ ज़ियादा झुकता है तो उसे ग़ौर करना चाहिये कि कहीं ऐसा तो नहीं कि उस के दिल में भी गुमराही और बुराई की महब्बत बैठी हुई है।

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ؕ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿۱۱۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या **अल्लाह** के सिवा मैं किसी और का फ़ैसला चाहूं और वोही

www.dawateislami.net

है जिस ने तुम्हारी त़रफ़ मुफ़स्सल किताब उतारी और जिन को हम ने किताब दी वोह जानते हैं कि येह तेरे रब की त़रफ़ से सच उतरा है तो ऐ सुनने वाले तू हरगिज़ शक वालों में न हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो क्या मैं **अल्लाह** के सिवा किसी को ह़ाकिम बना लूं ? ह़ालां कि वोही है जिस ने तुम्हारी त़रफ़ मुफ़स्सल किताब उतारी और जिन लोगों को हम ने किताब दी वोह जानते हैं कि येह तेरे रब की त़रफ़ से ह़क़ के साथ नाज़िल शुदा है तो ऐ सुनने वाले तू हरगिज़ शक वालों में न हो।

﴿اَفَغَیْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِیْ حَكَمًا﴾ **: तो क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी को ह़ाकिम बना लूं ?﴾ शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे मक्का ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया था कि यहूदो नसारा के पोप पादरियों को हम और आप पन्च बना लें जो येह फ़ैसला करें कि हम ह़क़ पर हैं या आप। तब येह आयते करीमा नाज़िल हुई।[1]

इस आयते मुबारका का ख़ुलासा येह है कि इस से पहले कुफ़्फ़ार के बारे में बयान हुवा कि उन्हों ने क़समें खा कर कहा कि अगर उन की मत़लूबा निशानियां उन्हें दिखा दी जाएं तो वोह ईमान ले आएंगे, इस पर उन्हें जवाब दिया गया कि उन निशानियों को ज़ाहिर करने का कोई फ़ाएदा नहीं क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला अगर उन की मत़लूबा निशानियां ज़ाहिर कर दे तो भी वोह लोग अपने कुफ़्र पर क़ाइम ही रहेंगे। अब इस आयते मुबारका में बयान फ़रमाया जा रहा है कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत पर दलालत करने वाली निशानियां तो मुकम्मल त़ौर पर ज़ाहिर हो चुकी हैं, एक निशानी तो येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मुफ़स्सल किताब उतारी जिस में अम्र व नही, वा'दा व वईद और ह़क़्क़ो बात़िल का फ़ैसला और ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सिद्क़ की शहादत और कुफ़्फ़ार के इफ़्तिरा का बयान है और दूसरी निशानी येह है कि तौरात व इन्जील में रसूले अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रसूले बरह़क़ होने और क़ुरआने पाक के **अल्लाह** तआ़ला की किताब होने पर दलालत करने वाली निशानियां मौजूद हैं। **अल्लाह** तआ़ला ने जिन्हें आस्मानी किताब की सच्ची समझ नसीब की जैसे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه वग़ैरा नीज़ आ़म उ़लमाए अहले किताब उन दलाइल की वज्ह से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ जानते हैं अगर्चे किसी दुन्यावी वज्ह से इस का इक़रार न करें। लिहाज़ा ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, तुम उन मुश्रिकीन से फ़रमा दो कि क्या मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी और को ह़ाकिम व क़ाज़ी बना लूं जो मेरे और तुम्हारे दरमियान फ़ैसला

1 .....روح البیان، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۱٤، ۳/۹۰.

www.dawateislami.net

करे ? हालां कि **अल्लाह** तआ़ला ने मेरी नुबुव्वत के ह़क़ होने का फ़ैसला फ़रमा दिया है कि जब उस ने आ़जिज़ कर देने वाली किताब या'नी क़ुरआने पाक मुझ पर नाज़िल फ़रमा दिया तो मेरी नुबुव्वत के दुरुस्त होने का फ़ैसला भी हो गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ैसले से बढ़ कर और किसी का फ़ैसला नहीं, लिहाज़ा अब मेरी नुबुव्वत का इक़्रार करना ज़रूरी है ।[1]

﴿فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ﴾ **: तो ऐ सुनने वाले तू हरगिज़ शक वालों में न हो ।** ﴾ एक क़ौल येह है कि यहां ख़िताब नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से है, इस सूरत में मा'ना येह हुवा कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप इस बात पर शक करने वालों में न होना कि अहले किताब के उ़लमा जानते हैं कि येह क़ुरआन ह़क़ है और **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से नाज़िल हुवा है । दूसरा मा'ना येह है कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप इस बात पर शक करने वालों में न होना कि हम ने आप को जो बयान किया है वोह ह़क़ है या नहीं । याद रहे कि इस का तअ़ल्लुक़ उन बातों से है जो किसी को उभारने के लिये की जाती हैं वरना हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो शक कर ही नहीं सकते । दूसरा क़ौल येह है कि ब ज़ाहिर अगर्चे ख़िताब सरकारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से है लेकिन मुराद इन का ग़ैर है । अब मा'ना येह हुवा कि "ऐ क़ुरआने पाक को सुनने वाले इन्सान ! तू इस बात में शक न करना कि येह **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से नाज़िल हुवा है क्यूं कि येह ऐसा आ़जिज़ कर देने वाला कलाम है कि **अल्लाह** तआ़ला के इ़लावा कोई और इस जैसा कलाम पेश करने पर क़ादिर ही नहीं ।"[2]

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۱۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और पूरी है तेरे रब की बात सच और इन्साफ़ में उस की बातों का कोई बदलने वाला नहीं और वोही है सुनता जानता ।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और सच और इन्साफ़ के ए'तिबार से तेरे रब के कलिमात कामिल हैं । उस के कलिमात को कोई बदलने वाला नहीं और वोही सुनने वाला, जानने वाला है ।

﴿وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ﴾ **: और पूरी है तेरे रब की बात ।** ﴾ रब की बात से मुराद वोह फ़ैसलए इलाही

1 .....تفسیر کبیر، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۱٤، ٥/۱۲۳-۱۲٤.

2 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۱٤، ۲/٤۹.

www.dawateislami.net

है जो कुफ़्फ़ार व मोमिन के मुतअ़ल्लिक़ हो चुका या इस से तमाम आस्मानी किताबें मुराद हैं या क़ुरआन शरीफ़, अल ग़रज़ जो कुछ भी मुराद हो मक़्सूद बिल्कुल ज़ाहिर है।

क़ुरआने मजीद की 4 शानें

इस आयते करीमा में क़ुरआने पाक की चार शानें बयान की गई हैं :

(1)..... क़ुरआने पाक मुकम्मल है इस का कोई पहलू ना तमाम नहीं।

(2)..... क़ुरआने पाक में बताई गई तमाम बातें ह़क़ और सच्चाई पर मब्नी हैं।

(3)..... जो शर्ई अह़काम क़ुरआने पाक में हैं वोह हर ए'तिबार से अ़द्लो इन्साफ़ पर मुश्तमिल हैं।

(4)..... क़ुरआने पाक हमेशा के लिये हर त़रह़ की तब्दीली और तह़रीफ़ से मह़फ़ूज़ है।

मख़्लूक़ के शर से बचने के लिये 3 वज़ाइफ़

इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला के मुकम्मल कलिमात का ज़िक्र हुवा, इस की मुनासबत से हम यहां मख़्लूक़ के शर से बचने के तीन वोह वज़ाइफ़ ज़िक्र करते हैं जिन में **अल्लाह** तआ़ला के मुकम्मल कलिमात का ज़िक्र है।

(1)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते ह़सन और ह़ज़रते ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا पर चन्द कलिमात पढ़ कर फूंका करते और फ़रमाते : "तुम्हारे जद्दे अमजद भी ह़ज़रते इस्माईल और ह़ज़रते इस्ह़ाक़ (عَلَیْہِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) पर इन्हें पढ़ कर दम किया करते थे। (वोह कलिमात येह हैं) "اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَّهَامَّةٍ ، وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَامَّةٍ"।[1]

शैत़ान के शर और नज़रे बद से मह़फ़ूज़ रहने के लिये येह वज़ीफ़ा इन्तिहाई मुफ़ीद है।

(2)..... ह़ज़रते ख़ौला बिन्ते ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स (सफ़र के दौरान) किसी जगह उतरे और येह कलिमात कहे "اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ" तो उस मक़ाम से कूच करने तक उसे कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचाएगी।[2]

(3)..... ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : रसूले करीम

1 .....بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، ۱۱-باب، ۲/۴۲۹، الحدیث: ۳۳۷۱.

2 .....ترمذی، کتاب الدعوات، باب ما جاء مایقول اذا نزل منزلاً، ۵/۲۷۵، الحدیث: ۳۴۴۸.

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सोने से पहले येह कहा करते थे : ''اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِوَجْهِكَ الْكَرِيْمِ وَكَلِمَاتِكَ التَّامَّةِ مِنْ شَرِّ مَا اَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهٖ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ تَكْشِفُ الْمَغْرَمَ وَالْمَاْثَمَ اَللّٰهُمَّ لَا يُهْزَمُ جُنْدُكَ وَلَا يُخْلَفُ وَعْدُكَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ سُبْحَانَكَ وَبِحَمْدِكَ'' ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, मैं तेरी बुज़ुर्ग ज़ात और तेरे मुकम्मल कलिमात की पनाह पकड़ता हूं उस के शर से जिसे तू पेशानी से पकड़ने वाला है । ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, तू ही क़र्ज़ अदा करवाता और गुनाहों को मुआफ़ करता है । ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, तेरे लश्कर को शिकस्त नहीं होगी और तेरा वा'दा ग़लत नहीं होगा, तेरे सामने किसी ज़ोर आवर का ज़ोर नहीं चलता । तू पाक है सब ता'रीफ़ें तेरे लिये हैं ।[1]

وَ اِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِی الْاَرْضِ یُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِؕ اِنْ یَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَ اِنْ هُمْ اِلَّا یَخْرُصُوْنَ(۱۱۶)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ सुनने वाले ज़मीन में अक्सर वोह हैं कि तू उन के कहे पर चले तो तुझे **अल्लाह** की राह से बहका दें वोह सिर्फ़ गुमान के पीछे हैं और निरी अट्कलें दौड़ाते हैं ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ सुनने वाले ज़मीन में अक्सर वोह हैं कि तू उन के कहे पर चले तो तुझे **अल्लाह** की राह से बहका दें येह सिर्फ़ गुमान की पैरवी करते हैं और येह सिर्फ़ अन्दाज़े लगा रहे हैं ।

﴿وَ اِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِی الْاَرْضِ﴾ : **अगर तू ज़मीन में मौजूद अक्सर लोगों की इताअ़त करे ।** ﴾ इस से पहली आयात में **अल्लाह** तआ़ला ने कुफ़्फ़ार के शुबुहात का जवाब दिया फिर **अल्लाह** तआ़ला ने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत के दुरुस्त होने को दलाइल के साथ बयान किया और अब बयान फ़रमाया जा रहा है कि जब शुबुहात ज़ाइल हो गए और दलाइल भी वाज़ेह् हो चुके तो अब किसी अ़क़्ल मन्द के लिये जाइज़ नहीं कि वोह जाहिलों की गुफ़्तगू की त़रफ़ तवज्जोह करे और न ही उन के फ़ासिद कलिमात की वज्ह से तश्वीश में मुब्तला हो, लिहाज़ा ऐ सुनने वाले ! अगर तू ज़मीन में मौजूद अक्सर लोगों या'नी काफ़िरों की ग़लत़ बातों या'नी ह़क़ को बात़िल और बात़िल को ह़क़ समझने में उन की पैरवी करेगा तो येह तुझे **अल्लाह**

1 .....ابو داؤد، کتاب الادب، باب مایقول عند النوم، ٤/٦، ٤٠، الحدیث: ٥٠٥٢.

www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ के रास्ते से भटका देंगे ।[1]

एक क़ौल येह है कि इस से जाहिल और नफ़्सानी ख़्वाहिशात के पीछे चलने वाले लोगों की पैरवी मुराद है ।[2]

इस्लामी लबादे में मल्बूस इस्लाम दुश्मनों से बचा जाए

इस आयत में येह पहलू भी दाख़िल है कि अ़वाम ऐसे लोगों से भी मोह़तात़ रहें जो इस्लाम का लबादा ओढ़ कर, इस्लामी ता'लीमात की इशाअ़त को अपनी ढाल बना कर इस्लाम ही की बुन्यादें खोखली करने में मसरूफ़ हैं उन के बारे में उ़लमाए ह़क़ से मा'लूमात ह़ासिल कर के उन से बचने की कोशिश करें, दीन के मुसल्लमा उमूर में उन की क़ियास आराइयां, ह़क़ को बात़िल और बात़िल को ह़क़ ज़ाहिर करने में उन की सर्फ़ की हुई तुवानाइयां किसी काम की नहीं, उन की पैरवी दुन्या व आख़िरत के अ़ज़ीम ख़सारे का सबब बन सकती है । मुसल्मानों को चाहिये कि दीनी उमूर में सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी करें, उन के मुक़ाबले में किसी की भी पैरवी न करें । अहले ह़क़ उ़लमा और मुज्तहिदीन की पैरवी दर ह़क़ीक़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ही पैरवी है कि येह ह़ज़रात उन ही के अह़काम सुनाते हैं ।

﴿اِنْ یَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ﴾ **: येह सिर्फ़ गुमान की पैरवी करते हैं ।** या'नी येह कुफ़्फ़ार जो आप से आप के दीन और मज़्हब के बारे में झगड़ रहे हैं उन्हें तो अपने मज़्हब के दुरुस्त होने का भी यक़ीन नहीं । अपने मज़्हब को दुरुस्त साबित करने के लिये उन के पास दलील सिर्फ़ अपने जाहिल और गुमराह बाप दादा की तक़्लीद करना है, येह लोग बसीरत व ह़क़ शनासी से मह़रूम हैं और दीन के बारे में ग़लत़ अन्दाज़े लगा रहे हैं कि येह ह़लाल है येह ह़राम । अट्कल से कोई चीज़ ह़लाल या ह़राम नहीं होती जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़लाल किया वोह ह़लाल है और जिसे ह़राम किया वोह ह़राम है । अक्सर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक इस आयत में "ज़न" से मुराद कुफ़्फ़ार का अपने मज़्हब को साबित करने में अपने अस्लाफ़ की तक़्लीद करना है, मुज्तहिद के क़ियास से इस का कोई तअ़ल्लुक़ नहीं ।[3]

क़ुरआनो ह़दीस के मुक़ाबले में आबाओ अज्दाद की पैरवी मुश्रिकों का त़रीक़ा है

इस से मा'लूम हुवा कि क़ुरआनो ह़दीस के मुक़ाबिल अपने बाप दादों की पैरवी करना मुश्रिकों का त़रीक़ा है । फ़ी ज़माना ह़ालत भी कुछ ऐसी ही है कि अगर कोई किसी ग़लत़ बात

1 .....تفسیر کبیر، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۱۶، ۵/۱۲۶. 2 .....بیضاوی، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۱۶، ۲/۴۴۶. 3 .....تفسیر کبیر، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۱۶، ۵/۱۲۷.

www.dawateislami.net

पर अ़मल पैरा हो और उसे समझाया जाए तो जवाब येही मिलता है कि हम तो अ़र्सए दराज़ से यूंही करते चले आ रहे हैं, हम ने तो आज तक किसी को इस बारे में कोई कलाम करते नहीं सुना, हमारे बड़े बूढ़े भी तो येही करते आए हैं तुम ने दो लफ़्ज़ क्या पढ़ लिये अब हमें भी समझाने लग गए, ऐसे ह़ज़रात को चाहिये कि इस आयते करीमा को सामने रख कर ख़ुद ग़ौर कर लें कि वोह किन की रविश इख़्तियार किये हुए हैं।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿۱۱۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तेरा रब ख़ूब जानता है कि कौन बहका उस की राह से और वोह ख़ूब जानता है हिदायत वालों को।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक तेरा रब ख़ूब जानता है कि कौन उस की राह से भटका हुवा है और वोह हिदायत वालों को (भी) ख़ूब जानता है।

﴿اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ **: बेशक तेरा रब ख़ूब जानता है।**﴾ या'नी कुफ़्फ़ार जो दूसरों से फ़ैसला करवाने की बात करते हैं येह इन्तिहाई नादान हैं क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला बेहतर जानता है कि लोगों में से गुमराह कौन है और ह़क़ पर कौन है और येह भी वोही बेहतर जानता है कि कुफ़्फ़ार और मोमिनीन में से गुमराही और हिदायत पर कौन है और वोही उन में से हर एक को वोह जज़ा देगा जिस का वोह मुस्तह़िक़ है।[1] या'नी मोमिन ह़क़ व हिदायत पर हैं और कुफ़्फ़ार बात़िल व ज़लालत पर।

فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो खाओ उस में से जिस पर **अल्लाह** का नाम लिया गया अगर तुम उस की आयतें मानते हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो उस में से खाओ जिस पर **अल्लाह** का नाम लिया गया अगर तुम उस की आयतों पर ईमान रखते हो।

﴿فَكُلُوْا **: तो खाओ।**﴾ या'नी जो जानवर **अल्लाह** तआ़ला के नाम पर ज़ब्ह़ किया गया उसे खाओ और जो अपनी मौत मरा या बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ किया गया वोह ह़राम है। जानवर

1 .....بغوی، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۱۷، ۲/۱۰۳، روح البیان، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۱۷، ۳/۹۲ ملتقطاً۔

www.dawateislami.net

के ह़लाल होने का तअ़ल्लुक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम पर ज़ब्ह़ होने से है। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन मुसल्मानों पर ए'तिराज़ करते थे कि तुम अपना क़त्ल किया हुवा तो खाते हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मारा हुवा या'नी जो अपनी मौत मरे उस को ह़राम जानते हो। इस के जवाब में येह आयत उतरी[1] जिस में फ़रमाया गया कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम पर ज़ब्ह़ किया गया वोह ह़लाल है और जो उस के नाम पर ज़ब्ह़ न हुवा वोह ह़राम है। और काफ़िरों का ए'तिराज़ कि ज़बीह़ा को हम मारते हैं और जो ख़ुद मरे उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मारता है तो जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मारा हुवा हो वोह ह़राम क्यूं ? इस ए'तिराज़ की बुन्याद ही ग़लत़ है क्यूं कि जिस जानवर को कोई शख़्स मारे और जो जानवर ख़ुद मरे बहर ह़ाल दोनों को मौत देने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही है लिहाज़ा दोनों सूरतों में यूं फ़र्क़ करना ही बात़िल है कि एक को हम ने मारा और दूसरे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने। अब रहा येह कि एक ह़लाल और दूसरा ह़राम क्यूं तो येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हुक्म है और वोह ख़ालिक़ व मालिक है जो चाहे हुक्म फ़रमाए और येह उस के नाम की ता'ज़ीम की एक सूरत है कि उस के नाम पर ज़ब्ह़ कर्दा जानवर ह़लाल है और इस के इ़लावा ह़राम है।

क़ुरआने मजीद पर ईमान लाने का तक़ाज़ा

इस से मा'लूम हुवा कि क़ुरआने मजीद की आयात पर ईमान लाना इस बात का तक़ाज़ा करता है कि जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने ह़लाल फ़रमाया उसे ह़लाल समझा जाए और उस पर अ़मल किया जाए और जिसे ह़राम फ़रमाया उसे ह़राम माना जाए और उस से बचा जाए और **अल्लाह** तआ़ला के ह़लाल किये हुए को ह़राम क़रार देना या ह़राम किये हुए को ह़लाल समझना दोनों क़ुरआन पर ईमान के मुनाफ़ी हैं। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ुरआने करीम (इज्माली त़ौर पर कलाम की) पांच क़िस्मों पर उतरा : ह़लाल, ह़राम, मोह़कम, मुतशाबह और मिसालें लिहाज़ा ह़लाल को ह़लाल जानो, ह़राम को ह़राम मानो, मोह़कम पर अ़मल करो, मुतशाबह पर ईमान लाओ और मिसालों से इ़ब्रत पकड़ो।"[2]

ह़ज़रते सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उस शख़्स का क़ुरआन पर ईमान नहीं जो इस की ह़राम की हुई चीज़ों को ह़लाल समझे।"[3]

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۱۸، ۲/۵۰.
2 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، الفصل الثانی، ۱/۵۶، الحدیث: ۱۸۲.
3 .....ترمذی، کتاب فضائل القرآن، ۲۰-باب، ۴/۴۲۱، الحدیث: ۲۹۲۷.

www.dawateislami.net

عَلَيْكُمْ اِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ اِلَيْهِ ؕ وَ اِنَّ كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ بِاَهْوَآئِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِيْنَ ﴿۱۱۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हें क्या हुवा कि उस में से न खाओ जिस पर **अल्लाह** का नाम लिया गया वोह तो तुम से मुफ़स्सल बयान कर चुका जो कुछ तुम पर ह़राम हुवा मगर जब तुम्हें उस से मजबूरी हो और बेशक बहुतेरे अपनी ख़्वाहिशों से गुमराह करते हैं बे जाने बेशक तेरा रब ह़द से बढ़ने वालों को ख़ूब जानता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम्हें क्या है कि तुम उस में से न खाओ जिस पर **अल्लाह** का नाम लिया गया है ह़ालां कि वोह तुम्हारे लिये वोह चीज़ें तफ़्सील से बयान कर चुका है जो उस ने तुम पर ह़राम की हैं सिवाए उन चीज़ों के जिन की त़रफ़ तुम मजबूर हो जाओ और बेशक बहुत से लोग ला इ़ल्मी में अपनी ख़्वाहिशात की वज्ह से गुमराह करते हैं। बेशक तेरा रब ह़द से बढ़ने वालों को ख़ूब जानता है।

﴿وَمَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا﴾ : **और तुम्हें क्या है कि तुम न खाओ ।﴾** या'नी उस जानवर को खाने से क्या चीज़ तुम्हें रोक रही है जिसे **अल्लाह** तआ़ला के नाम पर ज़ब्ह़ किया गया है ह़ालां कि जो चीज़ें ह़राम थीं वोह **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हें तफ़्सील से बयान फ़रमा दी हैं और जिस चीज़ को **अल्लाह** तआ़ला ने ह़राम नहीं फ़रमाया उसे ह़राम समझना कैसी ह़माक़त है।

ह़राम चीज़ों का ज़िक्र तफ़्सील के साथ होता है

इस से मा'लूम हुवा कि क़ानून येह है कि ह़राम चीज़ों का मुफ़स्सल ज़िक्र होता है और जिस चीज़ को ह़राम न फ़रमाया गया हो वोह ह़लाल है। ह़राम चीज़ों का तफ़्सीली बयान मुतअ़द्दद सूरतों में और सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन में मौजूद है। यूंही मजबूरी की ह़ालत में ह़राम चीज़ खाने का बयान क़ुरआने पाक में कई जगह मौजूद है।

﴿وَ اِنَّ كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ﴾ : **और बेशक बहुत से लोग गुमराह करते हैं ।﴾** कुफ़्फ़ार बह़ीरा और साइबा बुतों पर छूटे हुए जानवरों को तो ह़राम जानते हैं और जो जानवर ग़ैरे ख़ुदा के नाम पर ज़ब्ह़ हों या ख़ुद मर जाएं उन्हें ह़लाल जानते हैं ह़ालां कि मुआ़मला इस के बिल्कुल बर अ़क्स है लिहाज़ा इन जाहिलों की बात न मानो।

www.dawateislami.net

ह़लाल चीज़ें ह़राम क़रार देने वालों को नसीह़त

इस आयते करीमा को पढ़ कर वोह लोग ग़ौर करें जो अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात की वज्ह से चीज़ों को ह़राम या ह़लाल क़रार दे कर गुमराह करते हैं, शरीअ़त से उन का कोई तअ़ल्लुक़ नहीं होता इसी त़रह़ उन ह़ज़रात को भी ग़ौर करने की ह़ाजत है जो उस जानवर को ह़राम की सफ़ में दाख़िल कर देते हैं कि जिसे ज़ब्ह़ करते वक़्त **अल्लाह** तआ़ला का नाम ले कर ज़ब्ह़ किया गया और उस से मक़्सूद किसी वली या बुज़ुर्ग को सवाब पहुंचाना था।

﴿اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِيْنَ﴾ : **बेशक तेरा रब ह़द से बढ़ने वालों को ख़ूब जानता है।** ﴾ या'नी ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप का रब عَزَّوَجَلَّ उन लोगों को ख़ूब जानता है जिन्हों ने उस चीज़ को ह़राम क़रार दे दिया जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़लाल किया और जिसे उस ने ह़राम किया उसे ह़लाल कह दिया, **अल्लाह** तआ़ला उन्हें उन की ह़रकतों की सज़ा देगा।[1]

इस आयते मुबारका से उन लोगों को भी डरना चाहिये जो बिग़ैर इ़ल्म महज़ अपनी राय से ह़राम व ह़लाल का ग़लत़ फ़तवा देते हैं।

وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ﴿۱۲۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और छोड़ दो खुला और छुपा गुनाह वोह जो गुनाह कमाते हैं अ़न्क़रीब अपनी कमाई की सज़ा पाएंगे।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और ज़ाहिरी और बात़िनी सब गुनाह छोड़ दो बेशक जो लोग गुनाह कमाते हैं उन्हें अ़न्क़रीब उन गुनाहों का बदला दिया जाएगा जिन का वोह इरतिकाब करते थे।

﴿وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ﴾ : **और ज़ाहिरी और बात़िनी सब गुनाह छोड़ दो।** ﴾ ज़ाहिरी और बात़िनी गुनाह की तफ़्सीर में दो क़ौल हैं : (1) ज़ाहिरी गुनाह से मुराद वोह गुनाह हैं कि जिन का इरतिकाब ए'लानिया और मज्मए़ आ़म में हो और बात़िनी गुनाह से मुराद वोह गुनाह हैं जो छुप कर किये जाएं। (2) ज़ाहिरी गुनाह से मुराद वोह गुनाह हैं जो ज़ाहिरी आ'ज़ा से किये जाएं और बात़िनी गुनाह से मुराद वोह गुनाह हैं जो दिल से किये जाएं जैसे ह़सद, तकब्बुर,

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۱۹، ۲/ ۵۰-۵۱.

www.dawateislami.net

रियाकारी, बुग़्ज़ो कीना, बद गुमानी और बुरे कामों को पसन्द करना वग़ैरा ।[1] इस के इलावा भी कई अक़्वाल हैं ।

ख़ुलासा येह है कि इस आयते मुबारका में हर त़रह़ के गुनाहों से बाज़ रहने का हुक्म दिया गया है चाहे गुनाह का तअ़ल्लुक़ जिस्म से हो या दिल से या निय्यत व इरादा से, अ़लानिया गुनाह हो या छुप कर ।[2]

اِنَّ الَّذِیْنَ یَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ : **बेशक जो लोग गुनाह कमाते हैं ।** या'नी वोह लोग जो **अल्लाह** तआ़ला के मन्अ़ किये हुए काम करते हैं और उन गुनाहों का इरतिकाब करते हैं जो **अल्लाह** तआ़ला ने ह़राम किये हैं तो उन्हें अ़न्क़रीब आख़िरत में दुन्या में किये हुए गुनाहों की सज़ा दी जाएगी ।[3]

तौबा करने की अहम्मिय्यत और इस की तरग़ीब

याद रहे कि जिस मुसल्मान ने मरने से पहले पहले अपने गुनाहों से सच्ची तौबा कर ली तो उसे आख़िरत में सज़ा न होगी अलबत्ता जिस मुसल्मान ने अपने गुनाहों से तौबा न की तो उस का मुआ़मला **अल्लाह** तआ़ला की मशिय्यत पर मौक़ूफ़ है, वोह चाहे तो उसे उस के गुनाहों की सज़ा दे दे और चाहे तो अपने फ़ज़्लो करम से उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दे लेकिन **अल्लाह** तआ़ला का फ़ज़्लो करम होने की उम्मीद बांध कर गुनाहों में मसरूफ़ रहना इन्तिहाई नादानी है क्यूं कि गुनाहगारों की एक ता'दाद ज़रूर जहन्नम में जाएगी और कोई गुनाहगार येह नहीं जानता कि क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला उस के गुनाहों को यक़ीनी तौ़र पर मुआ़फ़ कर देगा । अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "बेशक सब गुनाहगार मशिय्यत के ख़त़रे में हैं बल्कि इत़ाअ़त गुज़ार भी नहीं जानते कि उन का ख़ातिमा कैसा होगा तो ऐ गुनाहगारो ! तुम धोके में मत रहना क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला की इनायत हर गुनाहगार को ह़ासिल न होगी और न ही तुम्हें येह मा'लूम है कि तुम उन लोगों में से हो जिन्हें मुआ़फ़ करने का **अल्लाह** तआ़ला ने इरादा फ़रमाया है ।"[4]

इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "जो इन्सान येह आस लगाए बैठा है कि मैं मोमिन हूं और **अल्लाह** तआ़ला मोमिनों के गुनाह मुआ़फ़ कर देगा तो उसे येह तसव्वुर करना चाहिये कि शायद **अल्लाह** तआ़ला उस के गुनाहों को मुआ़फ़ न करे और येह भी मुम्किन है कि जब इन्सान इत़ाअ़त न करे तो उस का ईमानी दरख़्त कमज़ोर व नातुवां हो जाए और नज़्अ़ के वक़्त मौत की सख़्तियों के तुन्द झोंकों से उखड़ जाए क्यूं कि ईमान एक ऐसा दरख़्त है जिस

1 .....صاوی، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۲۰، ۲/۶۲۳.

2 .....ज़ाहिरी और बात़िनी गुनाहों से बचने की तरग़ीब, जज़्बा और मौक़अ़ पाने के लिये दा'वते इस्लामी के साथ वाबस्तगी बहुत मुफ़ीद है।

3 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۲۰، ۲/۵۱. 4 .....روح البیان، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۲۰، ۳/۹۴.

www.dawateislami.net

की परवरिश इबादत के पानी से होती है और जब इसे येह पानी न मिला और इस ने कुव्वत न पकड़ी तो इस के उखड़ जाने के ख़तरात हर वक़्त इस पर मंडलाते रहेंगे। अगर वोह अपना ईमान सलामत ले गया तो येह भी इम्कान है कि **अल्लाह** तआ़ला उसे बख़्श दे और येह भी मुम्किन है कि उसे अ़ज़ाब में मुब्तला कर दे, लिहाज़ा इस आसरे में बैठे रहना कि **अल्लाह** तआ़ला मुझे बख़्श देगा बहुत बड़ी ह़माक़त है और इस शख़्स की मिसाल उस आदमी की त़रह़ है जो अपने मालो अस्बाब को तबाह कर के और बाल बच्चों को भूका छोड़ कर येह ख़याल करे कि शायद वीराने में ख़ज़ाना मिल जाए या इस शख़्स की मिसाल उस आदमी की त़रह़ है जो किसी ऐसे शह्र में रह रहा हो जिसे लूटा जा रहा हो और वोह अपने ख़ज़ाने इस उम्मीद पर न छुपाए कि हो सकता है जब लूटने वाला हमारे घर में आए तो वोह आते ही मर जाएगा या अन्धा हो जाएगा या वोह मेरे घर को देख न सकेगा, येह सब बातें अगर्चे मुम्किन हैं लेकिन इन पर ए'तिमाद करना और एह़तियात़ से हाथ उठा लेना ह़माक़त है।"[1]

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एह़याउल उ़लूम में फ़रमाते हैं : गुनाह ईमान के लिये इस त़रह़ (नुक़्सान देह) हैं जैसे मुज़िर्रे सिह्ह़त खाने जिस्म को नुक़्सान पहुंचाते हैं, वोह मे'दे में जम्अ़ होते रहते हैं ह़त्ता कि अख़्लात़ (या'नी सफ़्रा, बल्ग़म वग़ैरा) मिज़ाज को बदल देते हैं और उस को पता भी नहीं चलता यहां तक कि उस का मिज़ाज बिगड़ जाता है और वोह अचानक बीमार हो जाता है और फिर अचानक मर जाता है तो गुनाहों का मुआ़मला भी येही है, चुनान्चे नतीजा येह हुवा कि जब इस फ़ानी दुन्या में हलाकत के ख़ौफ़ से वोह ज़ह्र से बचता है और उन खानों से फ़ौरी त़ौर पर भी और हर ह़ाल में बचता है जो नुक़्सान देह होते हैं तो अबदी हलाकत से डरने वाले पर ब दरजए औला गुनाहों से इज्तिनाब ज़रूरी है और जब ज़ह्र खाने वाले पर लाज़िम है कि जूं ही नादिम हो क़ै करे और उस खाने से रुजूअ़ करे और उसे मे'दे से निकाल दे और येह अ़मल फ़ौरी त़ौर पर करे ताकि उस का जिस्म हलाकत से बच जाए ह़ालां कि इस का नुक़्सान सिर्फ़ दुन्यवी है जब कि दीन के मुआ़मले में गुनाहों की सूरत में ज़ह्र खाना ब दरजए औला नुक़्सान देह है तो उसे इस से रुजूअ़ करना चाहिये और जिस क़दर मुम्किन हो तदारुक करे जब तक उस के लिये मोहलत है और वोह इस की ज़िन्दगी है क्यूं कि जिस को इस ज़ह्र का ख़ौफ़ इस लिये है कि बाक़ी रहने वाली आख़िरत से मह़रूम हो जाएगा जिस में हमेशा की ने'मतें और बहुत बड़ी सल्त़नत है और उस के फ़ौत होने से जहन्नम की आग और हमेशा के अ़ज़ाब का सामना होगा और दुन्यवी ज़िन्दगी उस के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं क्यूं कि उस की कोई इन्तिहा नहीं तो उस के लिये गुनाहों से तौबा करने में जल्दी करना ज़रूरी है ताकि गुनाहों का ज़ह्र रूहे ईमान पर असर अन्दाज़ न हो और (अगर येह रूहे ईमान पर असर अन्दाज़ हो गया तो) येह ऐसा असर होगा जिस का डॉक्टरों के पास भी कोई इलाज नहीं और

1 ..... کیمیائے سعادت، رکن چہارم: منجیات، اصل اول در توبہ، ۲/۷۷۳-۷۷۴.

www.dawateislami.net

न ही इस के बा'द कोई परहेज़ असर करेगी, इस के बा'द नसीह़त करने वालों की नसीह़त और वाइ़ज़ीन का वा'ज़ भी फ़ाएदा नहीं देगा और उस पर येह बात साबित हो जाएगी कि वोह हलाक होने वालों में से है[1] ।[2]

وَلَا تَاْكُلُوْا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ ؕ وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰۤى اَوْلِيٰٓـئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَاِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ﴿۱۲۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उसे न खाओ जिस पर **अल्लाह** का नाम न लिया गया और वोह बेशक हुक्म उ़दूली है और बेशक शैत़ान अपने दोस्तों के दिलों में डालते हैं कि तुम से झगड़ें और अगर तुम उन का कहना मानो तो उस वक़्त तुम मुश्रिक हो ।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और जिस पर **अल्लाह** का नाम न लिया गया हो उसे न खाओ और बेशक येह ना फ़रमानी है और बेशक शैत़ान अपने दोस्तों के दिलों में वस्वसे डालते हैं ताकि वोह तुम से झगड़ें और अगर तुम उन का कहना मानोगे तो उस वक़्त तुम भी यक़ीनन मुश्रिक होगे ।

﴿وَلَا تَاْكُلُوْا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ﴾ : **और जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो उसे न खाओ ।** ﴾ जिस जानवर पर ज़ब्ह़ के वक़्त **अल्लाह** तआ़ला का नाम लिया गया उस का खाना ह़लाल है, येह बयान फ़रमाने के बा'द अब उस जानवर को खाने से मन्अ़ किया जा रहा है कि जिसे ज़ब्ह़ करते वक़्त जान बूझ कर उस पर **अल्लाह** तआ़ला का नाम ज़िक्र नहीं किया गया । लिहाज़ा हुक्म येह है कि जिस जानवर पर मुसल्मान या किताबी ने जान बूझ कर **अल्लाह** तआ़ला का नाम ज़िक्र न किया वोह ह़राम है और अगर भूल कर नाम लेना रह गया तो ह़लाल है और मुसल्मान व किताबी के इ़लावा किसी दूसरे का ज़ब्ह़ किया हुवा मुत़्लक़न ह़राम है । याद रहे कि यहां किताबी से मुराद वोह अहले किताब हैं जो अपने नबी और किताब पर ईमान रखते हैं । मह़्ज़ नाम के ईसाई और ह़क़ीक़त में दह़रिया मुराद नहीं हैं ।

1 .....احیاء علوم الدین ، کتاب التوبة، بیان انّ وجوب التوبة علی الفور، ٤/ ١٠-١١.

2 ..... तौबा की अहम्मिय्यत, फ़ज़ाइल और शराइत़ वग़ैरा से मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये किताब "तौबा की रिवायात व ह़िकायात" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं ।

www.dawateislami.net

﴿وَ اِنَّ الشَّیٰطِیْنَ لَیُوْحُوْنَ اِلٰۤى اَوْلِیٰٓـٕهِمْ﴾ : **और बेशक शैत़ान अपने दोस्तों के दिलों में वस्वसे डालते हैं ।** ﴾ इस आयते मुबारका की तफ़्सीर का ख़ुलासा येह है कि शैत़ान अपने दोस्तों या'नी मुश्रिकों के दिलों में वस्वसे डालते हैं ताकि वोह मुर्दार खाने के मुआ़मले में तुम से झगड़ा करें जैसा कि ऊपर काफ़िरों का एक ए'तिराज़ नक़्ल किया गया है । मज़ीद फ़रमाया गया कि ऐ मुसल्मानो ! अगर तुम ने **अल्लाह** तआ़ला के ह़राम कर्दा को ह़लाल कहने में उन काफ़िरों की बात मानी तो उस वक़्त तुम भी यक़ीनन मुश्रिक होगे क्यूं कि दीन में हुक्मे इलाही को छोड़ना और दूसरे के हुक्म को मानना और **अल्लाह** तआ़ला के सिवा और को ह़ाकिम क़रार देना शिर्क है ।

इल्म के बिग़ैर दीनी मसाइल में झगड़ना शैत़ानी लोगों का काम है

इस आयत से मा'लूम हुवा कि बिग़ैर इल्म दीनी मसाइल में झगड़ना या महज़ झगड़े की निय्यत से मुनाज़रा करना शैत़ानी लोगों का काम है लेकिन तह़क़ीक़े ह़क़ के लिये मुनाज़रा करना इ़बादत है ।

اَوَ مَنْ كَانَ مَیْتًا فَاَحْیَیْنٰهُ وَ جَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا یَّمْشِیْ بِهٖ فِی النَّاسِ كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِی الظُّلُمٰتِ لَیْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ زُیِّنَ لِلْكٰفِرِیْنَ مَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और क्या वोह कि मुर्दा था तो हम ने उसे ज़िन्दा किया और उस के लिये एक नूर कर दिया जिस से लोगों में चलता है वोह उस जैसा हो जाएगा जो अंधेरियों में है उन से निकलने वाला नहीं यूंही काफ़िरों की आंख में उन के आ'माल भले कर दिये गए हैं ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और क्या वोह जो मुर्दा था फिर हम ने उसे ज़िन्दा कर दिया और हम ने उस के लिये एक नूर बना दिया जिस के साथ वोह लोगों में चलता है (क्या) वोह उस जैसा हो जाएगा जो अंधेरों में (पड़ा हुवा) है (और) उन से निकलने वाला भी नहीं । यूंही काफ़िरों के लिये उन के आ'माल आरास्ता कर दिये गए ।

﴿اَوَ مَنْ كَانَ مَیْتًا﴾ : **और क्या वोह जो मुर्दा था ।** ﴾ इस आयत में मुर्दा से काफ़िर और ज़िन्दा से मोमिन मुराद है क्यूं कि कुफ़्र दिलों के लिये मौत जब कि ईमान ज़िन्दगी है और **नूर** से ईमान मुराद है जिस की बदौलत आदमी कुफ़्र की तारीकियों से नजात पाता है । ह़ज़रते क़तादा

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि नूर से किताबुल्लाह या'नी कुरआन मुराद है।[1]

कुफ़्र और जहालत की मिसाल

इस आयते करीमा में कुफ़्र और जहालत की मिसाल बयान फ़रमाई गई है कि मोमिन और काफ़िर का ह़ाल येह है कि हिदायत पाने वाला मोमिन उस मुर्दा की त़रह़ है जिस ने ज़िन्दगी पाई और उस को नूर मिला जिस से वोह मक़्सूद की त़रफ़ राह पाता है और काफ़िर उस की मिस्ल है जो त़रह़ त़रह़ की अंधेरियों में गिरिफ़्तार हुवा और उन से निकल न सके, हमेशा ह़ैरत में ही मुब्तला रहे। येह दोनों मिसालें हर मोमिन व काफ़िर के लिये आ़म हैं अगर्चे इस के शाने नुज़ूल के बारे में रिवायतें मुख़्तलिफ़ हैं, उन में से तीन रिवायतें दर्जे ज़ैल हैं :

(1)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के क़ौल के मुत़ाबिक़ इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि अबू जह्ल ने एक रोज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कोई नजिस चीज़ फेंकी। उस दिन ह़ज़रते अमीर ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शिकार को गए हुए थे, जिस वक़्त वोह हाथ में कमान लिये हुए शिकार से वापस आए तो उन्हें इस वाक़िए़ की ख़बर दी गई, गो अभी तक वोह दौलते ईमान से मुशर्रफ़ न हुए थे लेकिन येह ख़बर सुनते ही त़ैश में आ गए और अबू जह्ल के पास पहुंच कर उसे कमान से मारने लगे। अबू जह्ल आ़जिज़ी और ख़ुशामद करते हुए कहने लगा : ऐ अबू या'ला ! क्या आप ने नहीं देखा कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) कैसा दीन लाए और उन्हों ने हमारे मा'बूदों को बुरा कहा और हमारे बाप दादा की मुख़ालफ़त की और हमें बद अ़क़्ल बताया है। इस पर ह़ज़रते अमीर ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : तुम जैसा बद अ़क़्ल कौन है कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को छोड़ कर पथ्थरों को पूजते फिर रहे हो। मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं। उसी वक़्त ह़ज़रते अमीर ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम ले आए इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई।

(2)..... ह़ज़रते ज़ह़्ह़ाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : येह आयत ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और अबू जह्ल के बारे में नाज़िल हुई।

(3)..... ह़ज़रते इ़क्रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : येह आयत ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और अबू जह्ल के बारे में नाज़िल हुई।[2]

तो ह़ज़रते अमीर ह़म्ज़ा या ह़ज़रते उ़मर या ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और यूंही हर ईमान लाने वाले का ह़ाल इस के मुशाबेह है जो मुर्दा था ईमान न रखता था,

1 .....تفسیر بغوی، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۲۲، ۲/۱۰۵. 2 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۲۲، ۲/۵۲.

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला ने उस को रूहे ईमान अ़ता फ़रमा कर ज़िन्दा कर दिया और बातिनी नूर अ़ता फ़रमाया कि जिस की रोशनी में वोह लोगों के दरमियान चलता है और अबू जहल और इस जैसों की ह़ालत येही है कि वोह कुफ़्रो जहल की तारीकियों में गिरिफ़्तार है और वोह इन तारीकियों से निकलने वाला भी नहीं। इस से मा'लूम हुवा कि गुनहगार मोमिन अपने गुनाह को अच्छा नहीं समझता इस लिये वोह मोमिन रहता है लेकिन काफ़िर अपनी बद किरदारियों को अच्छा जानता है और उन पर नाज़ करता है इस लिये वोह लाइक़े मग़्फ़िरत नहीं।

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत की बरकत

ह़ज़रते अमीर ह़म्ज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه वाले वाक़िए़ से पता चलता है कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत और ताईदो नुसरत बहुत ख़ैरो ख़ूबी का ज़रीआ़ बनती है जैसे यहां उन के लिये ईमान की दौलत ह़ासिल करने का ज़रीआ़ बन गई। इसी त़रह़ ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : किसी आदमी ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : क़ियामत कब आएगी ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम ने इस के लिये क्या तय्यार कर रखा है ?" उस ने अ़र्ज़ की : मेरे पास तो कोई अ़मल नहीं सिवाए इस के कि मैं **अल्लाह** तआ़ला से और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत रखता हूं। इर्शाद फ़रमाया : "तुम उन के साथ हो जिन से महब्बत रखते हो।" ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : हमें इतना किसी चीज़ ने ख़ुश नहीं किया जितना हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान ने किया कि **तुम उस के साथ होगे जिस से महब्बत करते हो**। मैं नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से और ह़ज़रते अबू बक्र, ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से महब्बत करता हूं लिहाज़ा मैं उम्मीद वार हूं कि इन की महब्बत के बाइ़स मैं इन के साथ रहूंगा अगर्चे मेरे आ'माल इन जैसे नहीं।[1]

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ؕ وَمَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और इसी त़रह़ हम ने हर बस्ती में उस के मुजरिमों के सरग़ने किये कि उस में दाउं खेलें और दाउं नहीं खेलते मगर अपनी जानों पर और उन्हें शुऊ़र नहीं।

1 .....بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم، باب مناقب عمر بن الخطاب... الخ، ۲/۵۲۷، الحدیث: ۳۶۸۸.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वैसे ही हम ने हर बस्ती में उस के मुजरिमों को (उन का) सरदार बना दिया ताकि उस में वोह अपनी साज़िशें करें और वोह सिर्फ़ अपने ख़िलाफ़ साज़िशें कर रहे हैं और उन्हें शुऊ़र नहीं।

﴿وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا﴾ **: और इसी त़रह़ हम ने बना दिये ।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि जैसे कुफ़्फ़ारे मक्का दीगर काफ़िरों के सरदार हैं वैसे ही हम ने हर बस्ती में उस बस्ती के मुजरिमों को उन का सरदार बना दिया ताकि उस बस्ती में वोह अपनी साज़िशें करें और त़रह़ त़रह़ के ह़ीलों, फ़रेबों और मक्कारियों से लोगों को बहकाने और बात़िल को रवाज देने की कोशिश करें। उन से येह अफ़्आ़ल इस लिये सरज़द हुए कि येह रईस थे और **अल्लाह** तआ़ला का त़रीक़ा येह रहा है कि उस ने हर बस्ती में ग़रीब लोगों को रसूलों की पैरवी करने वाला और ना फ़रमानों को बस्ती का सरदार बनाया।[1]

पेश्वाओं के बिगड़ने का नुक़्सान और संभलने का फ़ाएदा

इस से मा'लूम हुवा कि क़ौम के सरदारों का बिगड़ना क़ौम को हलाक करता है। **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَ اِذَاۤ اَرَدْنَاۤ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْیَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِیْهَا فَفَسَقُوْا فِیْهَا فَحَقَّ عَلَیْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِیْرًا[2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब हम किसी बस्ती को हलाक करना चाहते हैं तो हम उस के ख़ुशह़ाल लोगों को (अपने रसूलों के ज़रीए अपनी इत़ाअ़त का) हुक्म देते हैं फिर वोह लोग उस बस्ती में ना फ़रमानी करते हैं तो उस बस्ती पर (अ़ज़ाबे इलाही की) बात पक्की हो जाती है तो हम उसे तबाहो बरबाद कर देते हैं।

इसी त़रह़ पेश्वाओं का संभल जाना क़ौम को संभाला देना है।

﴿لِیَمْكُرُوْا فِیْهَا﴾ **: ताकि उस में वोह अपनी साज़िशें करें ।**﴾ मक्कए मुकर्रमा आने वाले हर रास्ते पर कुफ़्फ़ारे मक्का ने चार चार अफ़राद बिठा दिये ताकि वोह लोगों को नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने से रोकें, चुनान्चे जो शख़्स भी मक्के में ह़ाज़िर होता येह लोग उस से कहते कि "तुम इस शख़्स से बचना येह काहिन, साह़िर और कज़्ज़ाब है।" उन के बारे में फ़रमाया गया कि दर ह़क़ीक़त येह सिर्फ़ अपने ख़िलाफ़ साज़िशें कर रहे हैं, इन साज़िशों का वबाल इन्ही पर पड़ेगा और इन्हें इस का शुऊ़र नहीं।[3]

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۲۳، ۲/۵۳. 2 .....بنی اسرائیل: ۱۶. 3 .....بغوی، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۲۳، ۲/۱۰۶.

www.dawateislami.net

इस आयत में सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तसल्ली दी गई है कि आप सरदाराने मक्का की दुश्मनी से परेशान न हों, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पहले जो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام गुज़रे वोह जिस शहर में मब्ऊस हुए वहां के सरदारों ने उन की इसी तरह मुख़ालफ़त की थी।[1]

وَاِذَا جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ رُسُلُ اللّٰهِ ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسٰلَتَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا صَغَارٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ ﴿۱۲۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उन के पास कोई निशानी आए कहते हैं हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे जब तक हमें भी वैसा ही न मिले जैसा **अल्लाह** के रसूलों को मिला **अल्लाह** ख़ूब जानता है जहां अपनी रिसालत रखे अ़न्क़रीब मुजरिमों को **अल्लाह** के यहां ज़िल्लत पहुंचेगी और सख़्त अ़ज़ाब बदला उन के मक्र का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब उन के पास कोई निशानी आए तो कहते हैं कि हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे जब तक हमें भी वैसा ही न मिले जैसा **अल्लाह** के रसूलों को दिया गया। **अल्लाह** इसे ख़ूब जानता है जहां वोह अपनी रिसालत रखे। अ़न्क़रीब मुजरिमों को उन के मक्रो फ़रेब के बदले में **अल्लाह** के हां ज़िल्लत और शदीद अ़ज़ाब पहुंचेगा।

﴿وَاِذَا جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ : और जब उन के पास कोई निशानी आए﴾ **शाने नुज़ूल :** वलीद बिन मुग़ीरा ने रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कहा : "अगर नुबुव्वत हक़ है तो मैं आप से ज़ियादा इस का मुस्तहिक़ हूं क्यूं कि मैं उ़म्र में बड़ा हूं और आप से ज़ियादा मालदार हूं।" इस पर येह आयत नाज़िल हुई। एक क़ौल येह है कि येह आयत अबू जहल के बारे में नाज़िल हुई, अबू जहल ने कहा कि हम ने अ़ब्दे मनाफ़ की औलाद से सरदारी में मुज़ाहमत की। और अब वोह कहते हैं कि हम में एक नबी है जिस की तरफ़ वही नाज़िल होती है। **अल्लाह** की क़सम ! हम न उस पर ईमान लाएंगे न कभी उस की पैरवी करेंगे यहां तक कि हमारे पास भी वैसे ही वही आए जैसे उस के पास आती है।[2]

1 .....البحر المحيط، الانعام، تحت الآية: ١٢٣، ٤/٢١٧. 2 .....تفسير بغوى، الانعام، تحت الآية: ١٢٤، ٢/١٠٦.

www.dawateislami.net

अ़क़ीदए नुबुव्वत के बारे में चन्द अहम बातें

इस से मा'लूम हुवा कि नुबुव्वत का चुनाव **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से होता है। आ'माल, क़ौमिय्यत या माल की वज्ह से नुबुव्वत नहीं मिलती। अ़क़ीदए नुबुव्वत से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अहम बातें याद रखने की हैं :

(1)..... नुबुव्वत कस्बी नहीं कि आदमी इबादतो रियाज़त के ज़रीए कोशिश कर के इसे ह़ासिल कर सके बल्कि महज़ **अल्लाह** तआ़ला की अ़त़ा है कि जिसे चाहता है उसे अपने फ़ज़्ल से नुबुव्वत अ़त़ा फ़रमाता है, हां देता उसी को है जिसे इस अ़ज़ीम मन्सब के क़ाबिल बनाता है, जो नुबुव्वत का मन्सब मिलने से पहले हर त़रह़ के बुरे और मज़्मूम अख़्लाक़ से पाक और अच्छे और क़ाबिले ता'रीफ़ तमाम अख़्लाक़ से मुज़य्यन हो कर विलायत के जुम्ला मदारिज त़ै कर चुकता है, और अपने नसब व जिस्म, क़ौल व फ़े'ल, ह़रकातो सकनात में हर ऐसी बात से पाको साफ़ होता है जो बाइ़से नफ़रत हो, उसे अ़क़्ले कामिल अ़त़ा की जाती है, जो औरों की अ़क़्ल से ब दरजहा ज़ाइद है, किसी ह़कीम और किसी फ़ल्सफ़ी की अ़क़्ल उस के लाखवें ह़िस्से तक नहीं पहुंच सकती। और जो इसे कस्बी माने कि आदमी अपने कस्बो रियाज़त से मन्सबे नुबुव्वत तक पहुंच सकता है, काफ़िर है।

(2)..... जो शख़्स नबी से नुबुव्वत का ज़वाल मुम्किन माने वोह काफ़िर है।

(3)..... नबी का मा'सूम होना ज़रूरी है और येह इ़स्मत नबी और फ़िरिश्ते का ख़ास्सा है कि नबी और फ़िरिश्ते के सिवा कोई मा'सूम नहीं। इमामों को अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रह़ मा'सूम समझना गुमराही व बद दीनी है। इ़स्मते अम्बिया के येह मा'ना हैं कि उन के लिये **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से ह़िफ़ाज़त का वा'दा हो चुका, जिस के सबब उन से गुनाह का सादिर होना शर्अ़न मुह़ाल है, जब कि अइम्मा व अकाबिर औलिया के लिये **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से ह़िफ़ाज़त का कोई वा'दा नहीं, हां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें महफ़ूज़ रखता है कि उन से गुनाह होता नहीं और अगर हो तो शर्अ़न मुह़ाल भी नहीं।

(4)..... अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام शिर्क व कुफ़्र और हर ऐसे काम से जो लोगों के लिये बाइ़से नफ़रत हो, जैसे झूट, ख़ियानत और जह्ल वग़ैरा मज़्मूम सिफ़ात से, नीज़ ऐसे अफ़्आ़ल से जो वजाहत और मुरव्वत के ख़िलाफ़ हैं, नुबुव्वत से पहले और नुबुव्वत के बा'द बिल इज्माअ़ मा'सूम हैं और कबीरा गुनाहों से भी मुत़्लक़न मा'सूम हैं और ह़क़ येह है कि जान बूझ कर सग़ीरा गुनाह करने से भी नुबुव्वत से पहले और नुबुव्वत के बा'द मा'सूम हैं।[1]

नोट : मज़ीद तफ़्सील के लिये बहारे शरीअ़त जिल्द **1** के पहले ह़िस्से का मुत़ालआ़ कीजिये।

1..... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए अव्वल, अ़क़ाइद मुतअ़ल्लिक़ए नुबुव्वत, 1/36, 39 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

﴿اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَیْثُ یَجْعَلُ رِسٰلَتَهٗ﴾ **: अल्लाह ख़ूब जानता है जहां अपनी रिसालत रखे ।** ﴾ या'नी **अल्लाह** तआ़ला बेहतर जानता है कि रिसालत का मुस्तह़िक़ कौन है कि उसे येह शरफ़े अ़ज़ीम अ़त़ा फ़रमाए और उसे भी ख़ूब जानता है जो इस का मुस्तह़िक़ नहीं, और ऐ कुफ़्फ़ारे मक्का ! तुम इस लाइक़ ही नहीं कि तुम्हें नुबुव्वत जैसे अ़ज़ीम मर्तबे से नवाज़ा जाए और न ही नुबुव्वत मुत़ालबा करने पर मिलती है ख़ुसूसन वोह शख़्स कि जो ह़सद, धोका, बद अ़हदी वग़ैरा बुरे अफ़्आ़ल और घटिया औसाफ़ में मुब्तला हो, नुबुव्वत जैसे मन्सबे आ़ली के लाइक़ कैसे हो सकता है ।[1]

अ़ज़्मते मुस्त़फ़ा और अ़ज़्मते सह़ाबा

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं **: अल्लाह** तआ़ला ने बन्दों के दिलों में नज़र फ़रमाई तो सब के दिलों से बेहतर मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दिल को पाया तो इन्हें अपने लिये चुन लिया और अपनी रिसालत के साथ इन्हें मब्ऊ़स फ़रमाया । मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दिल के बा'द बन्दों के दिलों में नज़र फ़रमाई तो इन के सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के दिलों को दीगर लोगों के दिलों से बेहतर पाया तो इन्हें अपने नबी का वज़ीर बना दिया, येह लोग इन के दीन की ह़िमायत में जंग करते हैं । पस जिस चीज़ को मुसल्मान अच्छा समझें तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक भी अच्छी है और जिसे मुसल्मान बुरा समझें तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक भी बुरी है ।[2]

فَمَنْ یُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ یَّهْدِیَهٗ یَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِۚ-وَ مَنْ یُّرِدْ اَنْ یُّضِلَّهٗ یَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَیِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا یَصَّعَّدُ فِی السَّمَآءِؕ-كَذٰلِكَ یَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जिसे **अल्लाह** राह दिखाना चाहे उस का सीना इस्लाम के लिये खोल देता है और जिसे गुमराह करना चाहे उस का सीना तंग ख़ूब रुका हुवा कर देता है गोया किसी की ज़बर दस्ती से आस्मान पर चढ़ रहा है । **अल्लाह** यूंही अ़ज़ाब डालता है ईमान न लाने वालों को ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जिसे **अल्लाह** हिदायत देना चाहता है तो उस का सीना इस्लाम के लिये खोल देता है और जिसे गुमराह करना चाहता है उस का सीना तंग, बहुत ही तंग

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۲۵، ۲/۵۳.

2 .....مسند امام احمد، مسند عبد اللّٰہ بن مسعود رضی اللّٰہ تعالی عنہ، ۲/۱۶، الحدیث: ۳۶۰۰.

www.dawateislami.net

कर देता है गोया कि वोह ज़बर दस्ती आस्मान पर चढ़ रहा है। इसी त़रह़ **अल्लाह** ईमान न लाने वालों पर अ़ज़ाब मुसल्लत़ कर देता है।

﴿فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ﴾ **: और जिसे अल्लाह हिदायत देना चाहता है ।** ﴾ **अल्लाह** तआ़ला ने अज़ल से ही अपनी मख़्लूक़ की दो क़िस्में बनाईं (1) शक़ी (2) सईद, और हर एक के लिये निशानी बनाई कि जिस से उस की पहचान हो। सआ़दत की निशानी इस्लाम के लिये सीना खुलना और ईमान क़बूल करना जब कि शक़ावत की निशानी सीने की तंगी और इस्लाम क़बूल न करना है। और हर गुरौह के लिये आख़िरत में एक घर बनाया जिस में वोह लोग रहेंगे। सआ़दत मन्द जन्नत और उस की ने'मतों में रहेंगे और शक़ावत वालों को जहन्नम की आग में रहना और उस का अ़ज़ाब सहना पड़ेगा। ह़दीस में है : "**अल्लाह** तआ़ला ने एक मख़्लूक़ को पैदा फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया : येह जन्नत के लिये हैं और मुझे कोई परवाह नहीं, और एक मख़्लूक़ को पैदा फ़रमाया और फ़रमाया : येह जहन्नम के लिये हैं और मुझे कुछ परवाह नहीं।" इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने हर क़िस्म की मख़्लूक़ की निशानी बयान फ़रमाई है, लिहाज़ा जब **अल्लाह** तआ़ला बन्दे को शर्ह़े सद्र की तौफ़ीक़ दे और उसे ह़लावते ईमान से भर दे तो वोह जान ले कि **अल्लाह** तआ़ला ने उसे अ़ज़ीम ने'मत अ़त़ा फ़रमाई है।[1]

इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जिसे जन्नत के लिये पैदा किया गया उस के लिये इ़बादत के अस्बाब आसान कर दिये जाते हैं और जिसे जहन्नम के लिये पैदा किया गया उस के लिये गुनाह के अस्बाब आसान कर दिये जाते हैं और उस के दिल में शैत़ान का हुक्म मुसल्लत़ किया जाता है क्यूं कि वोह त़रह़ त़रह़ की बातों से बे वुक़ूफ़ लोगों को धोका देता है वोह कहता है कि **अल्लाह** तआ़ला रह़मत वाला है लिहाज़ा तुम्हें कोई परवाह नहीं करनी चाहिये, तमाम लोग **अल्लाह** तआ़ला से नहीं डरते लिहाज़ा तुम उन की मुख़ालफ़त न करो, ज़िन्दगी बहुत त़वील है लिहाज़ा इन्तिज़ार करो कल तौबा कर लेना, जैसा कि **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيْهِمْ ؕ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا[2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : शैत़ान उन्हें वा'दे देता है और आरज़ूएं दिलाता है और शैत़ान उन्हें सिर्फ़ फ़रेब के वा'दे देता है।

या'नी वोह उन को तौबा का वा'दा देता और मग़्फ़िरत की तमन्ना दिलाता है और इन ह़ीलों से इ़ज़्ने ख़ुदावन्दी से उन को हलाक कर देता है, उस के दिल को धोके की क़बूलिय्यत के लिये कुशादा और क़बूले ह़क़ से तंग कर देता है और येह सब कुछ **अल्लाह** तआ़ला की क़ज़ा और तक़्दीर से होता है। हिदायत व गुमराही का मालिक **अल्लाह** तआ़ला ही है, वोह जो चाहे करता है और जो इरादा फ़रमाए हुक्म देता है उस के हुक्म को कोई रद नहीं कर सकता

1 .....صاوی، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۲۵، ۲/۶۲۷. 2 .....نساء: ۱۲۰.

www.dawateislami.net

और न कोई उस के फ़ैसले को मुअख़्ख़र कर सकता है उस ने जन्नत और अहले जन्नत को पैदा किया और उन को इबादत पर लगाया नीज़ जहन्नम और अहले जहन्नम को पैदा किया और उन को गुनाहों पर लगा दिया।[1]

सीना खुलने से क्या मुराद है ?

शर्ह का अस्ली मा'ना है "वसीअ करना" जब कि यहां इस से मुराद येह है कि **अल्लाह** तआ़ला बन्दे के दिल में रोशनी पैदा फ़रमाता है यहां तक कि उस का हर अ़मल **अल्लाह** तआ़ला की मरज़ी के मुताबिक़ हो जाता है।[2]

जैसा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयत तिलावत फ़रमाई तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने अ़र्ज़ की : इस खोलने से क्या मुराद है ? इर्शाद फ़रमाया : "इस से मुराद वोह नूर है जो मोमिन के दिल में डाला जाता है जिस से उस का दिल खुल जाता है।" अ़र्ज़ की गई : क्या इस की कोई निशानी है जिस से इस की पहचान हो सके ? इर्शाद फ़रमाया : "हां, (इस की तीन अ़लामतें हैं) (1) आख़िरत की त़रफ़ रग़बत (2) दुन्या से नफ़रत, और (3) मौत से पहले इस की तय्यारी।"[3]

﴿وَمَنْ یُّرِدْ اَنْ یُّضِلَّهٗ﴾ : **और जिसे गुमराह करना चाहता है।** जिसे **अल्लाह** तआ़ला गुमराह करना चाहता है तो उस का सीना तंग, बहुत ही तंग कर देता है कि उस में इ़ल्म और दलाइले तौह़ीद व ईमान की गुन्जाइश न रहे, तो उस की ऐसी ह़ालत होती है कि जब उस को ईमान की दा'वत दी जाती है और इस्लाम की त़रफ़ बुलाया जाता है तो वोह उस पर निहायत शाक़ होता है और उस को बहुत दुश्वार मा'लूम होता है गोया कि वोह ज़बर दस्ती आस्मान पर चढ़ रहा है।

सीने की तंगी की अ़लामत

इस से मा'लूम हुवा कि दीनी काम भारी मा'लूम होना और दुन्यावी काम आसान मह़सूस होना, सीने की तंगी की अ़लामत है और सीने की तंगी येह है कि अस्बाबे कुफ़्र जम्अ़ हो जाएं और इस्लाम के अस्बाब न मुहय्या हो सकें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस से मह़फ़ूज़ फ़रमाए। बा'ज़ पर ईमान भारी होता है, बा'ज़ पर नेक आ'माल भारी और बा'ज़ पर इ़श्क़ और विज्दान भारी है। ख़याल रहे कि इस से येह लाज़िम नहीं आता कि बन्दा कुफ़्र करने पर मजबूर है बल्कि वोह जो कुफ़्रो सरकशी करता है वोह अपने इख़्तियार से करता है और आदमी की बद किरदारियों से दिल में येह ह़ाल पैदा होता है जैसे लोहा ज़ंग लग कर बेकार हो जाता है इसी

1 .....احیاء علوم الدین، کتاب شرح عجائب القلب، بیان سرعة تقلب القلب... الخ، ۳/۵۹.
2 .....صاوی، الانعام، تحت الآیة: ۱۲۵، ۲/۶۲۷.
3 .....مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الزهد، ما ذکر عن نبینا صلی الله علیه وسلم فی الزهد، ۸/۱۲۶، الحدیث: ۱۴.

www.dawateislami.net

त़रह़ गुनाहों की वज्ह से दिल ज़ंग आलूद हो कर ह़क़ क़बूल करने से मह़रूम हो जाता है।

وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۲۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और येह तुम्हारे रब की सीधी राह है हम ने आयतें मुफ़स्सल बयान कर दीं नसीह़त मानने वालों के लिये।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और येह तुम्हारे रब की सीधी राह है बेशक हम ने नसीह़त मानने वालों के लिये तफ़्सील से आयतें बयान कर दीं।

﴿وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا﴾ **: और येह तुम्हारे रब की सीधी राह है।** ﴾ या'नी क़ुरआने करीम या हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'लीम वोह रास्ता है जो बिला तकल्लुफ़ रब عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचा देता है जैसे सीधा रास्ता मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंचाता है इस लिये इसे "शरीअ़त" कहते हैं या'नी वसीअ़ और सीधा रास्ता जिस पर हर शख़्स आसानी से चल सके। त़रीक़त भी रब عَزَّوَجَلَّ का रास्ता है मगर वोह ऐसा तंग और पेचदार है जिस पर सिर्फ़ वाक़िफ़ आदमी ही चल सकता है।

لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उन के लिये सलामती का घर है अपने रब के यहां और वोह उन का मौला है येह उन के कामों का फल है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उन के लिये उन के आ'माल के बदले में उन के रब के हुज़ूर सलामती का घर है और वोह उन का मददगार है।

﴿لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ﴾ **: उन के लिये सलामती का घर है।** ﴾ दारुस्सलाम के दो मा'ना हैं (1) सलाम **अल्लाह** तआ़ला का नाम है, तो "दारुस्सलाम" का मा'ना हुवा वोह घर जिस की इज़ाफ़त **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ है और येह इज़ाफ़त तशरीफ़ और इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई के लिये है जैसे बैतुल्लाह और नाक़तुल्लाह में है। (2) इस का दूसरा मा'ना येह है कि "सलाम" दार की सिफ़त है या'नी येह सलामती का घर है और जन्नत को "दारुस्सलाम" इस लिये फ़रमाया है कि जन्नत में हर क़िस्म के उ़यूब, तक्लीफ़ों और मशक़्क़तों से सलामती है।[1] जन्नत को

[1] .....تفسیر کبیر، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۲۷، ۵/۱۴۶.

www.dawateislami.net

दारुस्सलाम कहने की तीसरी वज्ह येह है कि जन्नतियों को जन्नत में दुख़ूल के वक़्त सलाम किया जाएगा, **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से, फ़िरिश्तों की त़रफ़ से और अहले आ'राफ़ की त़रफ़ से उन को सलाम पेश किया जाएगा और जन्नती भी एक दूसरे को सलाम करेंगे ।[1]

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ اَوْلِيٰٓـؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ؕ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۲۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जिस दिन उन सब को उठाएगा और फ़रमाएगा ऐ जिन्न के गुरौह तुम ने बहुत आदमी घेर लिये और उन के दोस्त आदमी अ़र्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब हम में एक ने दूसरे से फ़ाएदा उठाया और हम अपनी उस मीआ़द को पहुंच गए जो तू ने हमारे लिये मुक़र्रर फ़रमाई थी फ़रमाएगा आग तुम्हारा ठिकाना है हमेशा इस में रहो मगर जिसे ख़ुदा चाहे ऐ महबूब बेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला इ़ल्म वाला है ।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और (याद करो) वोह दिन जब वोह उन सब को उठाएगा (और फ़रमाएगा) ऐ जिन्नों के गुरौह ! तुम ने बहुत से लोगों को अपना ताबेअ़ बना लिया और इन्सानों में से जो उन के दोस्त होंगे वोह कहेंगे : ऐ हमारे रब ! हम ने एक दूसरे से फ़ाएदा उठाया और हम अपनी उस मुद्दत को पहुंच गए जो तू ने हमारे लिये मुक़र्रर फ़रमाई थी । **अल्लाह** फ़रमाएगा : आग तुम्हारा ठिकाना है, तुम हमेशा इस में रहोगे मगर जिसे ख़ुदा चाहे । बेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला, इ़ल्म वाला है ।

﴿وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ﴾ : **और जिस दिन वोह उन सब को उठाएगा और फ़रमाएगा ऐ जिन्नों के गुरौह !﴾** क़ियामत में अव्वलन सब इकठ्ठे होंगे इस लिये इसे "ह़श्र" कहते हैं, बा'द में अच्छे बुरों की छांट हो जाएगी इस लिये इसे "यौमुल फ़स्ल" कहा जाता है । सब को उठाने से मुराद या येह है कि मोमिन व काफ़िर को इकठ्ठा उठाएगा या इन्सान व जिन्न को इकठ्ठा

1 .....بغوی، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۲۷، ۲/۱۰۷.

www.dawateislami.net

उठाएगा या सईद व शक़ी को इकठ्ठा उठाएगा। इस आयत में उन सरकश जिन्नात से ख़िताब है जिन्हों ने बहुत से इन्सानों को बहकाया जब कि मोमिन जिन्नात तो **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत में होंगे।

﴿وَقَالَ اَوْلِیٰٓـؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ﴾ **: और इन्सानों में से उन के दोस्त कहेंगे।** ﴾ इन्सानों में से जो जिन्नात के दोस्त होंगे और दोनों ने एक दूसरे से फ़ाएदा उठाया होगा इस त़रह़ कि जिन्नात ने इन्सानों को बुरे रास्ते दिखाए और बद अ़मलियों को उन के लिये आसान किया और जिन्नात ने इन्सानों से इस त़रह़ फ़ाएदा उठाया कि इन्सानों ने उन की पूजा की और उन के मुत़ीओ़ फ़रमां बरदार बने। वोह ह़सरत से कहेंगे : ऐ हमारे रब ! हम ने एक दूसरे से फ़ाएदा उठाया और अफ़्सोस कि आज हम अपनी उस मुद्दत को पहुंच गए जो तू ने हमारे लिये मुक़र्रर फ़रमाई थी। हाए वक़्त गुज़र गया और क़ियामत का दिन आ गया अब सिर्फ़ ह़स्रतो नदामत ही बाक़ी रह गई है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों की ज़बानी उन से फ़रमाएगा : आग तुम्हारा ठिकाना है, तुम हमेशा इस में रहोगे।

﴿اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ﴾ **: मगर जिसे ख़ुदा चाहे।** ﴾ इस इस्तिस्ना के दो मा'ना हैं (1) वोह हमेशा जहन्नम में रहेंगे लेकिन क़ब्र से ह़श्र तक के ज़माने और मैदाने ह़श्र में ह़िसाब किताब से ले कर जहन्नम में दाख़िल होने तक जहन्नम में न रहेंगे। (2) इस से मुराद वोह अवक़ात हैं जिन में उन्हें एक अ़ज़ाब से दूसरे अ़ज़ाब में मुन्तक़िल किया जाएगा, जहन्नमी जब दोज़ख़ की आग की शिद्दत से फ़रियाद करेंगे तो उन्हें ज़म्हरीर या'नी सख़्त ठन्डे और बर्फ़ानी त़बक़े में डाल दिया जाएगा और जब ज़म्हरीर की ठन्डक से घबरा कर फ़रियाद करेंगे तो उन्हें फिर नारे जहन्नम में डाल दिया जाएगा। जुम्हूर मुफ़स्सिरीन ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से एक रिवायत येह भी नक़्ल की है कि इस से मुराद वोह लोग हैं जिन के बारे में रब तआ़ला के इ़ल्म में है कि उन्हों ने इस्लाम क़बूल किया और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ की, तो उन्हें आग से निकाल लिया जाएगा।[1]

وَكَذٰلِكَ نُوَلِّیْ بَعْضَ الظّٰلِمِیْنَ بَعْضًۢا بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿۱۲۹﴾ ع ۱۶

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और यूंही हम ज़ालिमों में एक को दूसरे पर मुसल्लत़ करते हैं बदला उन के किये का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और यूंही हम ज़ालिमों में एक को दूसरे पर उन के आ'माल के सबब मुसल्लत़ कर देते हैं।

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۲۸، ۲/۵۶.

www.dawateislami.net

﴿وَكَذٰلِكَ نُوَلِّیْ بَعْضَ الظّٰلِمِیْنَ بَعْضًا﴾ : **और यूंही हम ज़ालिमों में एक को दूसरे पर मुसल्लत़ करते हैं ।** या'नी जिस त़रह़ हम ने जिन्नों और इन्सानों को रुस्वा किया यहां तक कि उन्हों ने एक दूसरे से फ़ाएदा उठाया इसी त़रह़ हम ज़ालिमों में से एक को दूसरे पर उन के आ'माल की वज्ह से मुसल्लत़ कर देते हैं और ज़ालिम की ज़ालिम के ज़रीए पकड़ फ़रमाते हैं ।[1]

ज़ुल्म करने वालों को इब्रत अंगेज़ नसीह़त

इस आयते मुबारका में ज़ुल्म करने वालों के लिये बड़ी नसीह़त है, चुनान्चे ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अह़मद क़ुरत़ुबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस आयत में ज़ुल्म करने वालों को तम्बीह की जा रही है कि अगर वोह अपने ज़ुल्म से बाज़ न आए तो **अल्लाह** तआ़ला उन पर दूसरा ज़ालिम मुसल्लत़ कर देगा जो उन्हें ज़लीलो ख़्वार और तबाहो बरबाद कर देगा । इस आयत में हर क़िस्म के ज़ालिम दाख़िल हैं, वोह शख़्स जो गुनाह कर के अपनी जान पर ज़ुल्म करता है, जो ह़ाकिम या अफ़्सर अपनी रिआ़या और मा तह़त लोगों पर ज़ुल्म करता है, जो ताजिर जा'ली अश्या और मिलावट वाली चीज़ें फ़रोख़्त कर के ख़रीदारों पर ज़ुल्म करता है, इसी त़रह़ जो चोर और डाकू मुसाफ़िरों और शहरियों से लूटमार कर के उन पर ज़ुल्म करते हैं येह सब ज़ालिम की सफ़ में शामिल हैं, इन तमाम पर **अल्लाह** तआ़ला कोई उन से बड़ा ज़ालिम मुसल्लत़ कर देता है ।[2]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब किसी क़ौम की भलाई चाहता है तो अच्छों को उन पर मुक़र्रर करता है और किसी से बुराई का इरादा फ़रमाता है तो बुरों को उन पर मुक़र्रर फ़रमाता है । इस से येह नतीजा बरआमद होता है कि जो क़ौम ज़ालिम होती है उस पर ज़ालिम बादशाह मुक़र्रर किया जाता है तो जो उस ज़ालिम के पन्जए ज़ुल्म से रिहाई चाहें उन्हें चाहिये कि ज़ुल्म छोड़ दें ।[3]

लिहाज़ा ऐसे ह़ज़रात को चाहिये कि दर्जे ज़ैल रिवायात और एक क़ौल का बग़ौर मुत़ालआ़ कर के इ़ब्रत ह़ासिल करें और **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन की बारगाह में अपने ज़ुल्म से सच्ची तौबा कर के मज़्लूमों से मुआ़फ़ी की कोई सूरत बनाएं ।

(1)..... ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो, ख़ुदा की क़सम ! जो मोमिन दूसरे मोमिन पर ज़ुल्म करेगा तो क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस ज़ालिम से इन्तिक़ाम लेगा ।"[4]

1 .....روح البيان، الانعام، تحت الآية: ١٢٩، ٣/١٠٤.
2 .....قرطبي، الانعام، تحت الآية: ١٢٩، ٤/٦٢، الجزء السابع. 3 .....خازن، الانعام، تحت الآية: ١٢٩، ٢/٥٦.
4 .....كنز العمال، كتاب الاخلاق، قسم الاقوال، الظلم و الغضب، ٢/٢٠٢، الحديث: ٧٦٢١، الجزء الثالث.

www.dawateislami.net

(2)..... ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने किसी ज़ालिम की उस के जुल्म पर मदद की वोह क़ियामत के दिन इस ह़ाल में आएगा कि उस की पेशानी पर लिखा होगा येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस है।"[1]

(3)..... ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है, सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मज़्लूम की बद दुआ से बचो क्यूं कि वोह **अल्लाह** तआ़ला से अपना ह़क़ मांगता है और **अल्लाह** तआ़ला किसी ह़क़दार को उस के ह़क़ से मन्अ़ नहीं करता।"[2]

(4)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो ज़ालिम की मदद करेगा **अल्लाह** तआ़ला उसी ज़ालिम को उस पर मुसल्लत़ कर देगा।[3]

(5)..... ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब तू एक ज़ालिम को दूसरे ज़ालिम से इन्तिक़ाम लेता हुवा देखे तो फिर ठहर जा और तअ़ज्जुब से येह तमाशा देख[4]।[5]

یٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ یَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ یَقُصُّوْنَ عَلَیْكُمْ اٰیٰتِیْ وَیُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ یَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰۤى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا وَشَهِدُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِیْنَ ﴿۱۳۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ जिन्नों और आदमियों के गुरौह क्या तुम्हारे पास तुम में के रसूल न आए थे तुम पर मेरी आयतें पढ़ते और तुम्हें येह दिन देखने से डराते कहेंगे हम ने अपनी जानों पर गवाही दी और उन्हें दुन्या की ज़िन्दगी ने फ़रेब दिया और ख़ुद अपनी जानों पर गवाही देंगे कि वोह काफ़िर थे।

1 .....مسند الفردوس، باب الميم، ٣/٥٨٣، الحديث: ٥٨٢٣.
2 .....كنز العمال، كتاب الاخلاق، قسم الاقوال، الظلم والغضب، ٢/٢٠٠، الحديث: ٧٥٩٤، الجزء الثالث.
3 .....ابن عساكر، حرف الباء، ذكر من اسمه عبد الباقي، ٣٤/٤.
4 .....قرطبي، الانعام، تحت الآية: ١٢٩، ٦٢/٤، الجزء السابع.

5..... जुल्म से मुतअ़ल्लिक़ नसीह़त अंगेज़ मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का रिसाला "जुल्म का अन्जाम" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ करना बहुत मुफ़ीद है।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ जिन्नों और आदमियों के गुरौह ! क्या तुम्हारे पास तुम में से वोह रसूल न आए थे जो तुम पर मेरी आयतें पढ़ते थे और तुम्हें तुम्हारे आज के इस दिन की हाज़िरी से डराते थे ? वोह कहेंगे : हम अपनी जानों के ख़िलाफ़ गवाही देते हैं और उन्हें दुन्या की ज़िन्दगी ने धोके में डाल दिया और वोह ख़ुद अपनी जानों के ख़िलाफ़ गवाही देंगे कि वोह काफ़िर थे।

﴿يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ﴾ **: ऐ जिन्नों और आदमियों के गुरौह !﴾** इस आयते मुबारका में जिन्नात और इन्सान दोनों से ख़िताब हुवा कि ऐ जिन्नों और आदमियों के गुरौह ! क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से वोह रसूल न आए थे जो तुम्हें मेरी आयतें पढ़ पढ़ कर सुनाते थे और तुम्हें इस दिन या'नी रोज़े क़ियामत की हाज़िरी और अ़ज़ाबे इलाही से डराते थे ? काफ़िर जिन्न और इन्सान इक़रार करेंगे कि रसूल उन के पास तशरीफ़ लाए और उन्हों ने ज़बानी पयाम पहुंचाया और इस दिन के पेश आने वाले हालात का ख़ौफ़ दिलाया लेकिन काफ़िरों ने उन की तक्ज़ीब की और उन पर ईमान न लाए, उन्हें दर अस्ल दुन्या की ज़िन्दगी ने धोके में डाल दिया। कुफ़्फ़ार का येह इक़रार उस वक़्त होगा जब कि उन के आ'ज़ा व जवारेह़ उन के शिर्क व कुफ़्र की गवाही देंगे।

रसूलों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मुतअ़ल्लिक़ अहम मस्अला

रसूल सिर्फ़ इन्सानों में से होते हैं जिन्नात से नहीं। चूंकि यहां जिन्नो इन्स दोनों से ख़िताब है इस लिये तग़्लीबन या'नी जिन्नों को इन्सानों के मा तहूत शुमार करते हुए مِنْكُمْ फ़रमाया गया। बहर ह़ाल इस से येह साबित नहीं होता कि जिन्नात में नबी आए, हां जिन्नात के लिये नबी आए मगर वोह इन्सान थे।

﴿وَشَهِدُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ﴾ **: और वोह ख़ुद अपनी जानों के ख़िलाफ़ गवाही देंगे।﴾** क़ियामत का दिन बहुत त़वील होगा और उस में ह़ालात बहुत मुख़्तलिफ़ पेश आएंगे जब कुफ़्फ़ार मोमिनीन के इन्आ़मो इक्राम और इ़ज़्ज़तो मन्ज़िलत को देखेंगे तो अपने कुफ़्रो शिर्क से इन्कार कर देंगे और इस ख़याल से कि शायद मुकर जाने से कुछ काम बन जाए, येह कहेंगे ''وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ'' या'नी ख़ुदा की क़सम ! हम मुश्रिक न थे। उस वक़्त उन के मूंहों पर मोहरें लगा दी जाएंगी और उन के आ'ज़ा उन के कुफ़्रो शिर्क की गवाही देंगे, इसी की निस्बत इस आयत में इर्शाद हुवा : ''وَشَهِدُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ''।[1]

ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّ اَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ﴿۱۳۱﴾

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۳۰، ۲/۵۷.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह इस लिये कि तेरा रब बस्तियों को ज़ुल्म से तबाह नहीं करता कि उन के लोग बे ख़बर हों।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह इस लिये है कि तेरा रब बस्तियों को ज़ुल्म से तबाह नहीं करता जब कि उन के लोग बे ख़बर हों।

﴿ذٰلِكَ : येह﴾ तफ़्सीरे ख़ाज़िन, बग़वी, तफ़्सीरे कबीर, बैज़ावी, अल बहरुल मुहीत़, तफ़्सीरे त़बरी, मदारिक, जलालैन, रूहुल बयान, रूहुल मआ़नी वग़ैरा कुतुबे तफ़्सीर में "ذٰلِكَ" का मुशारुन इलैह "रसूलों का भेजना और उन का कुफ़्फ़ार को अ़ज़ाबे इलाही से डराना" मज़्कूर है। तफ़्सीरे ख़ाज़िन में इसे जुम्हूर मुफ़स्सिरीन का क़ौल क़रार दिया गया और इसे ही असह़्ह़ कहा गया। तफ़्सीरे अल बहरुल मुहीत़ में इस के इलावा दो क़ौल और मज़्कूर हैं (1) मुशारुन इलैह पिछली आयत में मज़्कूर सुवाल है। (2) कुफ़्फ़ार का झुटलाना और गुनाहों में मुब्तला होना। इन दोनों अक़्वाल को साहिबे तफ़्सीर अल बहरुल मुहीत़ ने दुरुस्त क़रार नहीं दिया अलबत्ता तफ़्सीरे अबू सऊ़द में इस का मुशारुन इलैह कुफ़्फ़ार का एतिराफ़ो इक़रार मज़कूर है और साहिबे रूहुल मआ़नी ने पहले जुम्हूर मुफ़स्सिरीन वाला क़ौल ज़िक्र किया इस के बा'द क़ील कह के कुफ़्फ़ार के ए'तिराफ़ वाला क़ौल ज़िक्र किया है, तफ़्सीरे समर क़न्दी में भी येह क़ौल मज़्कूर है। ﴿ذٰلِكَ : येह﴾ या'नी येह इस लिये है कि रब तआ़ला बस्तियों को उन की मा'सियत और ज़ुल्म की वज्ह से तबाह नहीं करता जब कि उन के लोग बे ख़बर हों बल्कि अ़ज़ाब से पहले रसूल भेजे जाते हैं जो उन्हें हिदायत फ़रमाते और उन पर हुज्जत क़ाइम करते हैं, इस पर भी वोह सरकशी करें तो हलाक कर दिये जाते हैं। लिहाज़ा क़ियामत में हिसाब किताब, सुवाल जवाब रब तआ़ला की बे इ़ल्मी की वज्ह से नहीं बल्कि इस लिये है कि जैसे दुन्या में बे ख़बरों पर अ़ज़ाब नहीं ऐसे ही आख़िरत में भी नहीं, वहां मुजरिमों को बता कर, आ'माल नामा दिखा कर अ़ज़ाब दिया जाएगा। इस आयत से दो मस्अले मा'लूम हुए **एक** येह कि **अल्लाह** तआ़ला बद अ़मली के बिग़ैर अ़ज़ाब नहीं भेजता। **दूसरा** येह कि नबी की तब्लीग़ पहुंचे बिग़ैर किसी को बद अ़मलियों की सज़ा नहीं मिल सकती।

وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हर एक के लिये उन के कामों से दरजे हैं और तेरा रब उन के आ'माल से बे ख़बर नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हर एक के लिये उन के आ'माल से दरजात हैं और तेरा रब उन के आ'माल से बे ख़बर नहीं।

www.dawateislami.net

﴿وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ﴾ **: और हर एक के लिये दरजे हैं ।** ﴾ हर एक के लिये चाहे वोह नेक हो या गुनहगार उस के अच्छे और बुरे आ'माल के ए'तिबार से दरजे हैं और उन्ही के मुताबिक़ सवाब और अ़ज़ाब होगा । जन्नतियों को जन्नत में उन के नेक आ'माल के मुताबिक़ दरजे दिये जाएंगे, ऐसे ही जहन्नमियों को जहन्नम में उन के बुरे आ'माल के मुताबिक़ मुख़्तलिफ़ दरजों में सज़ा दी जाएगी या येह मत़लब है कि नेक आ'माल के दरजे मुख़्तलिफ़ हैं । एक ही अ़मल एक शख़्स के लिये ज़ियादा सवाब का बाइ़स है और दूसरे के लिये कम सवाब का । ह़दीस शरीफ़ में है कि ''क़ियामत में आ'माल का बदला अ़क़्ल के ब क़दर मिलेगा ।''[1]

लिहाज़ा इस आयत से हज़ारहा मसाइल मुस्तम्बत़ हो सकते हैं । अ़मल का सिला, जगह, वक़्त, मौक़अ़ा और ज़रूरत के लिहाज़ से मुख़्तलिफ़ होता है, जैसे जहां मस्जिदें बहुत ज़ियादा हों और कूंएं कम हों वहां मस्जिद की बजाए कूंवां बनवाना ज़ियादा अच्छा है । इस आयत से उ़लमा ने येह भी इस्तिद्लाल किया है कि जिन्नात भी जन्नत में जाएंगे क्यूं कि यहां सब के लिये ''دَرَجٰتٌ'' फ़रमाया गया है और ''كُلٍّ'' में जिन्नात भी दाख़िल हैं ।[2]

وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿۱۳۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ महबूब तुम्हारा रब बे परवा है रह़मत वाला ऐ लोगो वोह चाहे तो तुम्हें ले जाए और जिसे चाहे तुम्हारी जगह लाए जैसे तुम्हें औरों की औलाद से पैदा किया ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ ह़बीब ! तुम्हारा रब बे परवा है, रह़मत वाला है । ऐ लोगो ! अगर वोह चाहे तो तुम्हें ले जाए और जिसे चाहे तुम्हारी जगह ले आए जैसे उस ने तुम्हें दूसरे लोगों की औलाद से पैदा किया ।

﴿وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ﴾ **: और ऐ ह़बीब ! तुम्हारा रब बे परवा है, रह़मत वाला है ।** ﴾ इस आयत से येह दर्स भी हो सकता है कि ऐ लोगो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें जो ईमान और आ'माले सालिह़ा की दा'वत देता है और कुफ़्रो शिर्क और बद आ'मालियों से मन्अ़ फ़रमाता है तो येह न समझो कि इस में उस का कोई फ़ाएदा है बल्कि वोह तो ग़नी है, उसे किसी की कोई ह़ाजत नहीं

1 .....معجم الاوسط، باب الباء، من اسمه بشر، ٢/٢١٥، الحديث: ٣٠٥٧.
2 .....تفسير قرطبي، الانعام، تحت الآية: ١٣١، ٤/٦٣، الجزء السابع.

www.dawateislami.net

अलबत्ता चूंकि वोह रह़मत वाला है इस लिये वोह तुम्हें नसीह़त फ़रमाता है और तुम्हें तुम्हारे भले की बातें बताता है वरना अगर वोह चाहे तो तुम सब को फ़ना कर दे और तुम्हारी जगह दूसरे लोगों को ले आए जैसे बहुत सी क़ौमों को उस ने फ़ना कर दिया या जैसे तुम दूसरों के बा'द इस दुन्या में आए इसी त़रह़ तुम्हारे बा'द दूसरे आ जाएंगे तो इस दुन्यवी ज़िन्दगी और मालो मताअ़ पर ग़ुरूर न करो।

اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّ مَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿۱۳۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जिस का तुम्हें वा'दा दिया जाता है ज़रूर आने वाली है और तुम थका नहीं सकते।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक जिस का तुम से वा'दा किया जाता है वोह ज़रूर आने वाली है और तुम (**अल्लाह** को) आ़जिज़ नहीं कर सकते।

﴿اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ﴾ **: बेशक जिस का तुम्हें वा'दा दिया जाता है।** इर्शाद फ़रमाया कि वोह चीज़ जिस का तुम से वा'दा किया जाता है चाहे वोह क़ियामत हो या मरने के बा'द उठना या ह़िसाब या सवाब व अ़ज़ाब। येह सब चीज़ें ज़रूर आएंगी मगर अपने वक़्त पर, तुम देर से धोका मत खाओ बल्कि इस से बचने के अस्बाब जम्अ़ करो क्यूं कि न हम मजबूर हैं न झूटी ख़बर देने वाले और न तुम त़ाक़त वर कि हम से मुक़ाबला कर के बच सको लिहाज़ा मुक़ाबला न करो बल्कि ख़ौफ़ करो।

मौत से ग़ाफ़िल रहने वालों को नसीह़त

इस आयते करीमा में मौत से ग़ाफ़िल रहने वालों के लिये भी बहुत इ़ब्रत है क्यूं कि हर इन्सान से मौत का वा'दा भी किया गया है और येह बहर सूरत आ कर ही रहेगी। ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا और दीगर बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم मौत को ब कसरत याद किया करते और लोगों को इस की याद दिलाया करते थे, चुनान्चे

ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब मैं अपनी आंखें झपक्ता हूं तो मुझे येह गुमान होता है कि मेरी पलकें मिलने से पहले मेरी रूह़ क़ब्ज़ कर ली जाएगी। मैं जब नज़र उठाता हूं तो मुझे लगता है कि नज़र नीची करने से पहले मेरा विसाल हो जाएगा, मैं जब कोई लुक़्मा मुंह में डालता हूं तो मुझे मह़सूस होता है कि येह लुक़्मा गले से उतरते वक़्त मेरे लिये मौत का सबब बन जाएगा। ऐ आदम की औलाद ! अगर तुम अ़क़्ल रखते हो तो अपने आप को मुर्दों में शुमार करो। उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए

www.dawateislami.net

कुदरत में मेरी जान है "اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِیْنَ" बेशक जिस का तुम से वा'दा किया जाता है वोह ज़रूर आने वाली है और तुम (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) को आ़जिज़ नहीं कर सकते।[1]

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने ख़ुत्बे में इर्शाद फ़रमाते थे : कहां गए वोह लोग जिन के चेहरे ख़ूब सूरत थे और चमक्ते थे और वोह अपनी जवानियों पर फ़ख़्र करते थे ? कहां हैं वोह बादशाह जिन्हों ने शह्र ता'मीर किये और उन के गिर्द दीवारें बना कर उन को मह़फ़ूज़ किया ? कहां हैं वोह जो लड़ाई के मैदान में ग़ालिब आते थे ? ज़माने ने उन्हें कमज़ोर और ज़लील कर दिया और वोह क़ब्रों की तारीकियों में चले गए, जल्दी जल्दी करो और नजात तलाश करो, नजात तलाश करो।[2]

ह़ज़रते सुमैत़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ऐ अपनी त़वील सिह़्ह़त पर धोके में मुब्तला शख़्स ! क्या तू ने किसी को बीमारी के बिग़ैर मरते हुए नहीं देखा ? ऐ वोह शख़्स ! जो त़वील मोहलत की वज्ह से धोके में है ! क्या तू ने किसी को सामान के बिग़ैर गिरिफ़्तार नहीं देखा ? अगर तू अपनी उ़म्र की त़वालत के बारे में सोचे तो साबिक़ा लज़्ज़तें भूल जाए, तुम लोग सिह़्ह़त के धोके में हो या आ़फ़ियत के धोके में, ज़ियादा दिन गुज़ारने पर अकड़ते हो या मौत से बे ख़ौफ़ हो या मौत के फ़िरिश्ते पर तुम्हें जुर्अत है, बेशक जब मौत का फ़िरिश्ता आएगा तो तुम्हारी माली सरवत और तुम्हारी जमाअ़त तुम्हें नहीं बचा सकेगी, क्या तुम नहीं जानते कि मौत की घड़ी सख़्तियों और नदामत की घड़ी है। **अल्लाह** तआ़ला उस बन्दे पर रह़्म फ़रमाए जो मौत के बा'द के लिये अ़मल करता है। **अल्लाह** तआ़ला उस बन्दे पर रह़्म फ़रमाए जो मौत के आने से पहले अपने नफ़्स को तर्स की निगाह से देखे।[3]

अल्लाह तआ़ला हर मुसल्मान को येह तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए कि वोह अपनी मौत को याद रखे और मौत के बा'द के लिये तय्यारी करता रहे। आमीन[4]

قُلْ یٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّیْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا یُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۱۳۵﴾

1 .....در منثور، الانعام، تحت الآیة: ۱۳۵، ۳/۳۶۱-۳۶۲، شعب الایمان، الحادی والسبعون من شعب الایمان... الخ، ۷/۳۵۵، الحدیث: ۱۰۵۶۴.

2 .....احیاءعلوم الدین، کتاب ذکر الموت وما بعده، الباب الثانی فی طول الامل وفضیلة قصر الامل... الخ، ۵/۲۰۱.

3 .....احیاءعلوم الدین، کتاب ذکر الموت وما بعده، الباب الثانی فی طول الامل وفضیلة قصر الامل... الخ، ۵/۱۹۹.

4 .....अपने दिल में मौत की याद मज़बूत़ करने के लिये किताब "मौत का तसव्वुर" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ करना फ़ाएदे मन्द है।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ ऐ मेरी क़ौम तुम अपनी जगह पर काम किये जाओ मैं अपना काम करता हूं तो अब जानना चाहते हो किस का रहता है आख़िरत का घर बेशक ज़ालिम फ़लाह़ नहीं पाते।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ, ऐ मेरी क़ौम ! तुम अपनी जगह पर अ़मल करते रहो, मैं अपना काम करता हूं तो अ़न्क़रीब तुम जान लोगे कि आख़िरत के घर का (अच्छा) अन्जाम किस के लिये है ? बेशक ज़ालिम फ़लाह़ नहीं पाते।

﴿اِعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ﴾ : **तुम अपनी जगह पर अ़मल करते रहो ।﴾** या'नी ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप कुफ़्फ़ारे मक्का से फ़रमा दें कि तुम अपनी मरज़ी से वोही आ'माल करते रहो जो कर रहे हो और अपने कुफ़्रो सरकशी पर क़ाइम रहो जब कि मैं तुम्हारी त़रफ़ से पहुंचने वाली अज़िय्यतों पर सब्र कर के, इस्लाम पर क़ाइम रह कर और नेक आ'माल पर हमेशगी इख़्तियार कर के अपना काम करता हूं तो अ़न्क़रीब तुम्हें मा'लूम हो जाएगा कि आख़िरत के घर का अच्छा अन्जाम किस के लिये है। बेशक **अल्लाह** तआ़ला के साथ कुफ़्रो शिर्क करने वाले फ़लाह़ नहीं पाते।[1]

याद रहे कि इस आयत में जो फ़रमाया गया कि "तुम अपनी जगह पर अ़मल करते रहो" इस में कुफ़्र या गुनाह की इजाज़त नहीं बल्कि इ़ज़्हारे ग़ज़ब के लिये इस त़रह़ फ़रमाया गया, जैसे एक और मक़ाम पर **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे कुफ़्र करे।

और येह जो फ़रमाया गया कि "अ़न्क़रीब तुम जान लोगे कि आख़िरत के घर का अच्छा अन्जाम किस के लिये है ?" इस से मुराद येह है कि अगर्चे आज भी फ़ैसला हो चुका कि मोमिन जन्नती है और काफ़िर दोज़ख़ी लेकिन चश्म दीद फ़ैसला क़ियामत में होगा या अ़ज़ाब आते वक़्त होगा।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿۱۳۶﴾

1 .....روح البیان، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۳۵، ۳/۱۰۸. 2 .....الکھف: ۲۹.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** ने जो खेती और मवेशी पैदा किये उन में उसे एक हिस्सेदार ठहराया तो बोले येह **अल्लाह** का है उन के ख़याल में और येह हमारे शरीकों का तो वोह जो उन के शरीकों का है वोह तो ख़ुदा को नहीं पहुंचता और जो ख़ुदा का है वोह उन के शरीकों को पहुंचता है क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और **अल्लाह** ने जो खेती और मवेशी पैदा किये हैं येह मुश्रिक उन में से एक हिस्सा **अल्लाह** के लिये क़रार देते हैं फिर अपने गुमान से कहते हैं कि येह हिस्सा तो **अल्लाह** के लिये है और येह हमारे शरीकों के लिये है तो जो उन के शरीकों के लिये है वोह तो **अल्लाह** तक नहीं पहुंचता और जो **अल्लाह** के लिये है वोह उन के शरीकों को पहुंच जाता है। कितना बुरा येह फ़ैसला करते हैं।

﴿وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ﴾ **: और अल्लाह के लिये क़रार देते हैं।** ﴾ कुफ़्फ़ारे अ़रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को बड़ा मा'बूद और बुतों को छोटा मा'बूद समझ कर दोनों की बदनी और माली पूजा किया करते थे। यहां उन की माली पूजा का ज़िक्र हो रहा है चुनान्चे ज़मानए जाहिलिय्यत में मुश्रिकीन का त़रीक़ा येह था कि वोह अपनी खेतियों और दरख़्तों के फलों और चौपायों और तमाम मालों में से एक हिस्सा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रर करते थे और एक हिस्सा बुतों का, तो जो हिस्सा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मुक़र्रर करते उसे मेहमानों और मिस्कीनों पर सर्फ़ कर देते थे और जो बुतों के लिये मुक़र्रर करते थे वोह ख़ास बुतों पर और उन के ख़ादिमों पर सर्फ़ करते और जो हिस्सा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मुक़र्रर करते उस में से अगर कुछ बुतों वाले हिस्से में मिल जाता तो उसे छोड़ देते और अगर बुतों वाले हिस्से में से कुछ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मुक़र्रर कर्दा हिस्से में मिलता तो उस को निकाल कर फिर बुतों ही के हिस्से में शामिल कर देते। इस आयत में उन की इस जहालत और बद अ़क़्ली का ज़िक्र फ़रमा कर इस पर तम्बीह फ़रमाई गई।

﴿سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ﴾ **: कितना बुरा येह फ़ैसला करते हैं।** ﴾ या'नी कुफ़्फ़ार इन्तिहा दरजे की जहालत में गिरिफ़्तार हैं कि ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी और मुन्इमे ह़क़ीक़ी के इ़ज़्ज़तो जलाल की उन्हें ज़रा भी मा'रिफ़त नहीं जब कि उन की अ़क़्ल का फ़साद इस ह़द तक पहुंच चुका है कि उन्हों ने बेजान बुतों और पथ्थरों की तस्वीरों को कारसाज़े आ़लम के बराबर कर दिया और जैसा उस ख़ालिक़ व मालिक عَزَّوَجَلَّ के लिये हिस्सा मुक़र्रर किया ऐसा ही बुतों के लिये भी किया। बेशक येह बहुत ही बुरा फ़े'ल और इन्तिहा का जहल और अ़ज़ीम ख़त़ा व ज़लाल है। अगली आयत में उन के जहल और ज़लालत की एक और ह़ालत ज़िक्र फ़रमाई गई है।

www.dawateislami.net

وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۳۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और यूं ही बहुत मुश्रिकों की निगाह में उन के शरीकों ने औलाद का क़त्ल भला कर दिखाया है कि उन्हें हलाक करें। और उन का दीन उन पर मुश्तबह कर दें और **अल्लाह** चाहता तो ऐसा न करते तो तुम उन्हें छोड़ दो वोह हैं और उन के इफ़्तिरा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और यूं ही बहुत से मुश्रिकों की निगाह में उन के शरीकों ने औलाद का क़त्ल उ़म्दा कर दिखाया है ताकि वोह उन्हें हलाक करें और उन का दीन उन पर मुश्तबह कर दें और अगर **अल्लाह** चाहता तो वोह ऐसा न करते तो तुम उन्हें और उन के बोहतानों को छोड़ दो।

﴿وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ﴾ **: यूं ही उ़म्दा कर दिखाया।** ﴾ इस आयत में कुफ़्फ़ार की दूसरी जहालत बयान हुई चुनान्चे फ़रमाया कि यूं ही बहुत से मुश्रिकों की निगाह में उन के शरीकों ने औलाद का क़त्ल उ़म्दा कर दिखाया है। यहां शरीकों से मुराद वोह शयातीन हैं जिन की इताअ़त के शौक़ में मुश्रिकीन **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी और उस की मा'सियत गवारा करते थे और ऐसे क़बीह़ और जाहिलाना अफ़्आ़ल के मुरतकिब होते थे कि जिन को अ़क़्ले सह़ीह़ कभी गवारा न कर सके और जिन की क़बाह़त में अदना समझ के आदमी को भी तरद्दुद न हो। बुत परस्ती की शामत से वोह ऐसे फ़सादे अ़क़्ल में मुब्तला हुए कि ह़ैवानों से बदतर हो गए और औलाद जिस के साथ हर जानदार को फ़ित्रतन मह़ब्बत होती है शयातीन के इत्तिबाअ़ में उस का बे गुनाह ख़ून करना उन्हों ने गवारा किया और इस को अच्छा समझने लगे। ख़ुलासा येह कि उन्हों ने औलाद में भी ऐसी ही तक़्सीम कर रखी थी कि लड़के को ज़िन्दा रखते और लड़की को क़त्ल कर देते। शैतानों ने येह सब इस लिये किया ताकि वोह उन्हें हलाक करें और उन का दीन उन पर मुश्तबह कर दें। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि येह लोग पहले ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दीन पर थे शयातीन ने उन को इग़्वा कर के इन गुमराहियों में डाला ता कि उन्हें दीने इस्माईली से मुन्ह़रिफ़ करें।[1]

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۳۷، ۲/ ۶۰.

www.dawateislami.net

अहले अ़रब में शिर्क व बुत परस्ती की इब्तिदा कब हुई ?

अ़ल्लामा बुरहानुद्दीन ह़लबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''अहले अ़रब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़माने से ले कर अ़म्र बिन लुह़य के ज़माने तक आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अ़क़ाइद पर ही साबित क़दम रहे, येह वोह पहला शख़्स है जिस ने दीने इब्राहीम को तब्दील किया और अहले अ़रब के लिये त़रह़ त़रह़ की गुमराहियां शुरूअ़ कीं ।''[1]

शिर्क के बानी अ़म्र बिन लुह़य ने अहले अ़रब में शिर्क इस त़रह़ फैलाया कि मक़ामे बलक़ाअ से बुत ला कर मक्का में नस्ब किये और लोगों को उन की पूजा और ता'ज़ीम करने की दा'वत दी । क़बीलए सक़ीफ़ का एक शख़्स ''लात'' जब मर गया तो अ़म्र ने उस के क़बीले वालों से कहा : येह मरा नहीं बल्कि इस पथ्थर में चला गया है फिर उन्हें उस पथ्थर की पूजा करने की दा'वत दी ।[2]

इसी अ़म्र ने साइबा और बह़ीरा की बिद्अ़त ईजाद की और तल्बिया में **अल्लाह** तआ़ला के साथ बुतों को भी शरीक किया ।[3]

येह शख़्स दीन में जिस नई बात का आग़ाज़ करता लोग उसे दीन समझ लेते थे । इस की वज्ह येह थी कि वोह मौसिमे ह़ज में लोगों को खाना खिलाया करता और उन्हें लिबास पहनाया करता था और बसा अवक़ात वोह मौसिमे ह़ज में दस हज़ार ऊंट ज़ब्ह़ करता और दस हज़ार नादारों को लिबास पहनाता ।[4]

मरने के बा'द इस का अन्जाम बहुत दर्दनाक हुवा, ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मैं ने अ़म्र बिन आ़मिर बिन लुह़य ख़ज़ाई को देखा कि वोह जहन्नम में अपनी आंतें खींच रहा है ।[5]

وَلَوْشَآءَاللّٰه : और अगर अल्लाह चाहता । यहां चाहना, ब मा'ना इरादा करना है न कि ब मा'ना पसन्द करना । पसन्द करने को रिज़ा कहा जाता है । ख़याल रहे कि दुन्या में जो कुछ हो रहा है **अल्लाह** के इरादे से हो रहा है या'नी जो कुछ बन्दा अपने इख़्तियार से करना चाहता है तो **अल्लाह** तआ़ला उस फ़े'ल को पैदा फ़रमा देता है तो यूं फ़े'ल आदमी के इख़्तियार से होता है लेकिन येह याद रहे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सिर्फ़ नेकियों से राज़ी होता है न कि बुराइयों से लिहाज़ा आयत पर कोई ए'तिराज़ नहीं ।

1 .....سیرت حلبیہ، باب نسبہ الشریف صلی اللہ علیہ وسلم، ۱/۱۸ .
2 .....عمدۃ القاری، کتاب المناقب، باب قصۃ خزاعۃ، ۱۱/۲۶۹-۲۷۰، تحت الحدیث: ۳۵۲۱ .
3 .....سیرت حلبیہ، باب نسبہ الشریف صلی اللہ علیہ وسلم، ۱/۱۸ .
4 .....الروض الانف، اول ما کانت عبادۃ الحجر، اصل عبادۃ الاوثان، ۱/۱۶۶ .
5 .....بخاری، کتاب المناقب، باب قصۃ خزاعۃ، ۲/۴۸۰، الحدیث: ۳۵۲۱ .

www.dawateislami.net

وَقَالُوْا هٰذِهٖۤ اَنْعَامٌ وَّ حَرْثٌ حِجْرٌ ۖۗ لَّا یَطْعَمُهَاۤ اِلَّا مَنْ نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَ اَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَ اَنْعَامٌ لَّا یَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَیْهَا افْتِرَآءً عَلَیْهِ ؕ سَیَجْزِیْهِمْ بِمَا كَانُوْا یَفْتَرُوْنَ ﴿۱۳۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बोले येह मवेशी और खेती रोकी हुई है इसे वोही खाए जिसे हम चाहें अपने झूटे ख़याल से और कुछ मवेशी हैं जिन पर चढ़ना ह़राम ठहराया और कुछ मवेशी के ज़ब्ह़ पर **अल्लाह** का नाम नहीं लेते येह सब **अल्लाह** पर झूट बांधना है अ़न्क़रीब वोह उन्हें बदला देगा उन के इफ़्तिराओं का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मुश्रिक अपने ख़याल से कहते हैं : येह मवेशी और खेती मम्नूअ़ है, इसे वोही खाए जिसे हम चाहें और कुछ मवेशी ऐसे हैं जिन की पीठों (पर सुवारी) को ह़राम कर दिया गया और कुछ मवेशी वोह हैं जिन के ज़ब्ह़ पर **अल्लाह** का नाम नहीं लेते, (येह बातें) **अल्लाह** पर झूट बांधते हुए (कहते हैं) अ़न्क़रीब वोह उन्हें उन के बोहतानों का बदला देगा।

﴿وَقَالُوْا : **और मुश्रिक कहते हैं।**﴾ मुश्रिकीन अपने बा'ज़ मवेशियों और खेतियों को अपने बात़िल मा'बूदों के साथ नामज़द कर के अपने ज़ो'म में कहने लगे कि इन मवेशियों और खेतियों से फ़ाएदा उठाना मम्नूअ़ है इसे वोही खाएगा जिसे हम चाहेंगे चुनान्चे वोह बुतों के नाम पर छोड़ी हुई पैदावार और अपने बात़िल मा'बूदों के साथ नामज़द किये हुए जानवरों में से बुतख़ानों के पुजारियों और बुतों के ख़ुद्दाम को देते थे।

﴿وَ اَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا : **और कुछ मवेशी ऐसे हैं जिन पर चढ़ना ह़राम ठहराया।**﴾ इस आयत में कुफ़्फ़ार की चन्द बद अ़मलियों का ज़िक्र है। **एक** तो अपने बा'ज़ खेतों को बुतों के नाम पर यूं वक़्फ़ करना कि उस की पैदावार सिर्फ़ मर्द खाएं औ़रतें न खाएं और वोह आमदनी सिर्फ़ वोह खाएं जो उन बुतों के ख़ुद्दाम हैं। **दूसरी** येह कि बुतों के नाम पर जानवर छोड़ देना जैसे बह़ीरा, साइबा वग़ैरा जिन से कोई काम न लिया जाए न किसी खेत से उन्हें हटाया जाए येह दोनों काम तो शिर्क हैं मगर इन चीज़ों का खाना ह़राम नहीं। इस लिये जिहाद में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ इन तमाम चीज़ों पर क़ब्ज़ा कर के इस्ति'माल फ़रमाते थे। **तीसरी** येह कि बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ करना। येह काम भी शिर्क है और इस का खाना भी ह़राम है और येह

www.dawateislami.net

"مَآ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ" में दाख़िल है।

وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰۤى اَزْوَاجِنَا ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۳۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बोले जो उन मवेशी के पेट में है वोह निरा हमारे मर्दों का है और हमारी औ़रतों पर ह़राम है और मरा हुवा निकले तो वोह सब उस में शरीक हैं क़रीब है कि **अल्लाह** उन्हें उन की बातों का बदला देगा बेशक वोह इ़ल्म, ह़िक्मत वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और कहते हैं : उन मवेशियों के पेट में जो है वोह ख़ालिस हमारे मर्दों के लिये है और हमारी औ़रतों पर ह़राम है और अगर वोह मरा हुवा हो तो फिर सब उस में शरीक हैं। अ़न्क़रीब **अल्लाह** उन्हें उन की बातों का बदला देगा। बेशक वोह ह़िक्मत वाला, इ़ल्म वाला है।

﴿وَقَالُوْا﴾ **: और कहते हैं।** कुफ़्फ़ारे अ़रब का अ़क़ीदा था कि बह़ीरा, साइबा, ऊंटनी का बच्चा अगर ज़िन्दा पैदा हो तो सिर्फ़ मर्द खा सकते हैं और औ़रतें नहीं खा सकतीं और अगर मुर्दा पैदा हो तो औ़रत मर्द सब खा सकते हैं। इस आयत में उन के इस अ़क़ीदे का ज़िक्र है और इस पर सख़्त वईद है।

قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْۤا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًۢا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ؕ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿۱۴۰﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तबाह हुए वोह जो अपनी औलाद को क़त्ल करते हैं अह़मक़ाना जहालत से और ह़राम ठहराते हैं वोह जो **अल्लाह** ने उन्हें रोज़ी दी **अल्लाह** पर झूट बांधने को बेशक वोह बहके और राह न पाई।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग तबाह हो गए जो अपनी औलाद को जहालत से बे

www.dawateislami.net

वुकूफ़ी करते हुए क़त्ल करते हैं और **अल्लाह** ने जो रिज़्क़ उन्हें अ़ता फ़रमाया है उसे **अल्लाह** पर झूट बांधते हुए ह़राम क़रार देते हैं। बेशक येह लोग गुमराह हुए और येह हिदायत वाले नहीं हैं।

قَدْ خَسِرَ الَّذِیْنَ قَتَلُوْۤا اَوْلَادَهُمْ : बेशक वोह लोग तबाह हो गए जो अपनी औलाद को क़त्ल करते हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत ज़मानए जाहिलिय्यत के उन लोगों के बारे में नाज़िल हुई जो अपनी लड़कियों को निहायत संगदिली और बे रह़मी के साथ ज़िन्दा दरगोर कर दिया करते थे। क़बीलए रबीआ़ और मुज़र वग़ैरा क़बाइल में इस का बहुत रवाज था और जाहिलिय्यत के बा'ज़ लोग लड़कों को भी क़त्ल करते थे और बे रह़मी का येह आ़लम था कि कुत्तों की परवरिश करते और औलाद को क़त्ल करते थे। उन की निस्बत येह इर्शाद हुवा कि "वोह तबाह हुए" इस में शक नहीं कि औलाद **अल्लाह** तआ़ला की ने'मत है और इस की हलाकत से अपनी ता'दाद कम होती है, अपनी नस्ल मिटती है, येह दुन्या का ख़सारा है, घर की तबाही है और आख़िरत में इस पर अ़ज़ाबे अ़ज़ीम है, तो येह अ़मल दुन्या और आख़िरत में तबाही का बाइ़स हुवा और अपनी दुन्या और आख़िरत दोनों को तबाह कर लेना और औलाद जैसी अ़ज़ीज़ और प्यारी चीज़ के साथ इस क़िस्म की सफ़्फ़ाकी और बेदर्दी गवारा करना इन्तिहा दरजे की ह़माक़त और जहालत है।

औलाद के क़ातिलों को नसीह़त

दौरे जाहिलिय्यत में औलाद को क़त्ल करने के बुन्यादी अस्बाब में से एक सबब येह भी था कि उन्हें तंगदस्ती का ख़ौफ़ लाह़िक़ होता और वोह इस डर से अपनी औलाद को क़त्ल कर देते थे कि इन्हें खिलाएंगे पिलाएंगे कहां से और इन के लिबास और दीगर ज़रूरिय्यात का इन्तिज़ाम कैसे करेंगे। चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें इस ह़रकत से मन्अ़ करते हुए इर्शाद फ़रमाया :

وَ لَا تَقْتُلُوْۤا اَوْلَادَكُمْ خَشْیَةَ اِمْلَاقٍؕ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَ اِیَّاكُمْؕ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً كَبِیْرًا (1)

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और ग़ुर्बत के डर से अपनी औलाद को क़त्ल न करो, हम उन्हें भी रिज़्क़ देंगे और तुम्हें भी, बेशक इन्हें क़त्ल करना कबीरा गुनाह है।

अफ़्सोस ! फ़ी ज़माना बहुत से मुसल्मान भी दौरे जाहिलिय्यत के कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा इख़्तियार किये हुए हैं और वोह भी इस डर से दुन्या में आते ही या मां के पेट में ही बच्चे को क़त्ल करवा देते हैं कि इन की परवरिश और ता'लीमो तरबियत के अख़्राजात कहां से पूरे करेंगे

1 .....بنی اسرائیل: ۳۱.

www.dawateislami.net

और येह अ़मल ख़ास तौ़र पर उस वक़्त करते हैं जब उन्हें मा'लूम हो जाता है कि मां के पेट में पलने वाली जान बच्ची है। अफ़्सोस कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को राज़िक़ मानने वाले भी इस फ़े'ले क़बीह़ का इरतिकाब कर रहे हैं।

यहां एक मस्अला याद रहे कि "जब ह़म्ल में जान पड़ जाए जिस की मुद्दत उ़लमा ने चार महीने बयान की है तो ह़म्ल गिराना ह़राम है कि येह भी औलाद का क़त्ल है और इस से पहले अगर शर्ई ज़रूरत हो तो इस्क़ाते ह़म्ल जाइज़ है।"[1]

﴿وَحَرَّمُوْا﴾ **: ह़राम क़रार देते हैं।** ﴾ या'नी मुश्रिकीने अ़रब बह़ीरा, साइबा और ह़ामी वग़ैरा जिन जानवरों का ऊपर ज़िक्र हुवा उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर झूट बांधते हुए ह़राम क़रार देते हैं क्यूं कि वोह येह गुमान करते हैं कि ऐसे मज़्मूम अफ़्आ़ल का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया है उन का येह ख़याल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर इफ़्तिरा है।

हर चीज़ में अस्ल इबाह़त है

इस से मा'लूम हुवा कि हर चीज़ में अस्ल इबाह़त है, क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हर चीज़ हमारे रिज़्क़ के लिये पैदा फ़रमाई, उन में से जिसे ह़राम फ़रमा दिया वोह ह़राम है और जिसे ह़लाल फ़रमाया या जिस से सुकूत फ़रमाया वोह ह़लाल है। क़ुरआने पाक में है :

هُوَ الَّذِیْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا[2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उस ने जो कुछ ज़मीन में है सब तुम्हारे लिये बनाया।

ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ह़लाल वोह है जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी किताब में ह़लाल किया और ह़राम वोह है जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी किताब में ह़राम किया और जिस से ख़ामोशी फ़रमाई तो वोह उस में से है जिस से मुआ़फ़ी दी।"[3] ह़ज़रते अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि अश्या में अस्ल इबाह़त है। (या'नी जिस चीज़ की ह़िल्लत व ह़ुर्मत से मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआन व ह़दीस में ख़ामोशी हो वोह ह़लाल है।)[4]

وَهُوَ الَّذِیْۤ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّ غَیْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّ النَّخْلَ

---

1 ..... फ़तावा रज़विय्या, 24/201, 207

2 ..... बक़रह:२९۔ 3 ..... तिर्मिज़ी، کتاب اللباس، باب ما جاء فی لبس الفراء، ۳/۲۸۰، الحدیث: ۱۷۳۲.

4 ..... مرقاۃ المفاتیح، کتاب الاطعمۃ، الفصل الثانی، ۸/۵۷، تحت الحدیث: ۴۲۲۸.

www.dawateislami.net

وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖۤ اِذَاۤ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ۖ وَلَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۙ﴿۱۴۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जिस ने पैदा किये बाग़ कुछ ज़मीन पर छए हुए और कुछ बे छए और खजूर और खेती जिस में रंग रंग के खाने और ज़ैतून और अनार किसी बात में मिलते और किसी में अलग खाओ उस का फल जब फल लाए और उस का हक़ दो जिस दिन कटे और बे जा न ख़र्चो बेशक बे जा ख़रच्ने वाले उसे पसन्द नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोही है जिस ने कुछ बाग़ात ज़मीन पर फैले हुए और कुछ न फैले हुए (तनों वाले) और खजूर और खेती को पैदा किया जिन के खाने मुख़्तलिफ़ हैं और ज़ैतून और अनार (को पैदा किया, येह सब) किसी बात में आपस में मिलते हैं और किसी में नहीं मिलते। जब वोह दरख़्त फल लाए तो उस के फल से खाओ और उस की कटाई के दिन उस का हक़ दो और फ़ुज़ूल ख़र्ची न करो बेशक वोह फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वालों को पसन्द नहीं फ़रमाता।

﴿وَهُوَ الَّذِیْۤ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ﴾ **: और वोही है जिस ने बाग़ पैदा किये।** **अल्लाह** तआ़ला ने कुछ बाग़ात ऐसे पैदा फ़रमाए जो ज़मीन पर फैले हुए हैं जैसे ख़रबूज़ा, तरबूज़ और दीगर बेल बूटे वग़ैरा और कुछ ऐसे पैदा फ़रमाए जो ज़मीन पर फैले हुए नहीं बल्कि तने वाले हैं जैसे आम, अमरूद और माल्टा वग़ैरा के बाग़ात, इसी त़रह़ खजूर और खेती, अनार और ज़ैतून को पैदा फ़रमाया और इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़जीब क़ुदरत है कि इन फलों में तासीर और ज़ाएक़े के ए'तिबार से तो फ़र्क़ होता है लेकिन रंग और पत्तों के ए'तिबार से बहुत मुशाबहत होती है।

﴿وَاٰتُوْا حَقَّهٗ یَوْمَ حَصَادِهٖ﴾ **: और उस की कटाई के दिन उस का हक़ दो।** यहां फ़स्लों का हक़ अदा करने का हुक्म है, इस में सब से अव्वल तो उ़श्र या'नी पैदावार का दसवां हि़स्सा या निस्फ़ उ़श्र या'नी पैदावार का बीसवां हि़स्सा दाख़िल है और इस के इ़लावा मसाकीन को कुछ फल वग़ैरा देना भी पैदावार के हुक़ूक़ में आता है।

www.dawateislami.net

ज़मीन की हर पैदावार में ज़कात है

इस आयत में इस बात की दलील भी है कि हर पैदावार में ज़कात है, चाहे पैदावार कम हो या ज़ियादा, उस के फल साल तक रहें या न रहें क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने इस आयत में किसी क़ैद के बिग़ैर फ़रमाया ''وَاٰتُوْا حَقَّهٗ یَوْمَ حَصَادِهٖ'' और उस की कटाई के दिन उस का हक़ दो । और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो ज़मीन बारिश, नहर और चश्मों से सैराब हो उस में उ़श्र है और जो पानी खींच कर सैराब की जाए उस में निस्फ़ उ़श्र है ।''(1)

﴿وَلَا تُسْرِفُوْا﴾ **: और फ़ुज़ूल ख़र्ची न करो ।**﴾ मुफ़स्सिरीन ने फ़ुज़ूल ख़र्ची के मुख़्तलिफ़ महमल बयान फ़रमाए हैं, चुनान्चे मुफ़स्सिर सुद्दी का क़ौल है कि अगर कुल माल ख़र्च कर डाला और अपने घर वालों को कुछ न दिया और ख़ुद फ़क़ीर बन बैठा तो येह ख़र्च बे जा है और अगर सदक़ा देने ही से हाथ रोक लिया तो येह भी बे जा और दाख़िले इसराफ़ है । हज़रते सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का भी ऐसा ही क़ौल है । हज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इताअ़त के सिवा और काम में जो माल ख़र्च किया जाए वोह क़लील भी हो तो इसराफ़ है ।'' इमाम ज़ोहरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि इस के मा'ना येह हैं कि मा'सियत में ख़र्च न करो । इमाम मुजाहिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कहा कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हक़ में कोताही करना इसराफ़ है और अगर अबू क़ुबैस पहाड़ सोना हो और उस तमाम को राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दो तो इसराफ़ न होगा और एक दिरहम मा'सियत में ख़र्च करो तो वोह इसराफ़ है ।''(2)

وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّ فَرْشًا ؕ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَ لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّیْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِیْنٌ ۙ﴿۱۴۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और मवेशी में से कुछ बोझ उठाने वाले और कुछ ज़मीन पर बिछे खाओ उस में से जो **अल्लाह** ने तुम्हें रोज़ी दी और शैतान के क़दमों पर न चलो बेशक वोह तुम्हारा सरीह़ दुश्मन है ।

1 .....ابن ماجه، كتاب الزكاة، باب صدقة الزروع والثمار، ٢/٣٨٩، الحديث: ١٨١٧.
2 .....خازن، الانعام، تحت الآية: ١٤١، ٢/٦٢-٦٣.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मवेशियों में से कुछ बोझ उठाने वाले और कुछ ज़मीन पर बिछे हुए जानवर (पैदा किये)। **अल्लाह** ने तुम्हें जो रिज़्क़ अ़ता फ़रमाया है उस में से खाओ और शैतान के रास्तों पर न चलो। बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

﴿وَمِنَ الْاَنْعَامِ﴾ **: और मवेशी में से कुछ।** चौपाए दो त़रह़ के होते हैं कुछ बड़े जो बोझ लादने और बार बरदारी के काम में आते हैं जैसे ऊंट, ख़च्चर और घोड़े वग़ैरा और कुछ छोटे जैसे बकरी वग़ैरा कि जो इस क़ाबिल नहीं। इन में से जो **अल्लाह** तआ़ला ने ह़लाल किये उन्हें खाओ और अहले जाहिलिय्यत की त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़लाल फ़रमाई हुई चीज़ों को ह़राम न ठहराओ।

ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ نَبِّـُٔوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۴۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : आठ नर और मादा एक जोड़ा भेड़ का और एक जोड़ा बकरी का तुम फ़रमाओ क्या उस ने दोनों नर ह़राम किये या दोनों मादा या वोह जिसे दोनों मादा पेट में लिये हैं किसी इ़ल्म से बताओ अगर तुम सच्चे हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (**अल्लाह** ने) आठ नर व मादा जोड़े (पैदा किये।) एक जोड़ा भेड़ से और एक जोड़ा बकरी से। तुम फ़रमाओ, क्या उस ने दोनों नर ह़राम किये या दोनों मादा या वोह जिसे दोनों मादा जानवर पेटों में लिये हुए हैं ? अगर तुम सच्चे हो तो इ़ल्म के साथ बताओ।

﴿ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ﴾ **: आठ नर व मादा।** इस आयत में जानवरों के आठ जोड़े बयान किये गए या'नी नर व मादा ऊंट, गाय, भेड़, बकरी के जोड़े। जानवर तो इस के इ़लावा भी हैं लेकिन चूंकि अहले अ़रब के सामने ज़ियादा तर येही जानवर होते थे और ह़राम व ह़लाल के जो उन्हों ने क़ाइ़दे बनाए थे वोह भी इन्ही जानवरों के बारे में थे इस लिये बत़ौरे ख़ास इन्ही जोड़ों का बयान किया गया चुनान्चे फ़रमाया कि क्या इन जानवरों के सिर्फ़ नर ह़राम हैं या सिर्फ़ मादे या नर व मादा दोनों ? **अल्लाह** तआ़ला ने न तो भेड़ बकरी के नर ह़राम किये और न उन की मादाएं ह़राम कीं और न उन की औलाद। तुम्हारा येह फ़े'ल कि कभी नर ह़राम ठहराओ कभी मादा

www.dawateislami.net

कभी उन के बच्चे येह सब तुम्हारी अपनी इख़्तिराअ़ है जिस की कोई बुन्याद नहीं।
﴿نَبِّـُٔوْنِیْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ﴾ **: अगर तुम सच्चे हो तो इल्म के साथ बताओ।** ﴾ या'नी इन जानवरों को तुम ह़राम मानते हो, अगर इस में तुम सच्चे हो तो इस हुर्मत की क़त्ई यक़ीनी दलील लाओ।

दलील देना हुर्मत का दा'वा करने वाले पर लाज़िम है

इस से मा'लूम हुवा कि ह़िल्लत का दा'वा करने वाले से दलील न मांगी जाएगी बल्कि हुर्मत का दा'वा करने वाले पर दलील लाना लाज़िम है। आज कल बद मज़्हब हम से हर चीज़ की ह़िल्लत पर दलील मांगते हैं और ख़ुद हुर्मत की दलील नहीं पेश करते। येह उसूल क़ुरआन के सरीह़ ख़िलाफ़ है। ख़ुद ग़ौर कर लें कि **अल्लाह** तआ़ला ने इन जानवरों के ह़राम मानने वालों से दलील त़लब फ़रमाई है या ह़लाल समझने वालों से।

وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَیْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَیْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَیْنِ حَرَّمَ اَمِ
الْاُنْثَیَیْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَیْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَیَیْنِ ؕ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ
وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّیُضِلَّ
النَّاسَ بِغَیْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۴۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और एक जोड़ा ऊंट का और एक जोड़ा गाय का तुम फ़रमाओ क्या उस ने दोनों नर ह़राम किये या दोनों मादा या वोह जिसे दोनों मादा पेट में लिये हैं क्या तुम मौजूद थे जब **अल्लाह** ने तुम्हें येह हुक्म दिया तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** पर झूट बांधे कि लोगों को अपनी जहालत से गुमराह करे बेशक **अल्लाह** ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और (**अल्लाह** ने नर और मादा का) एक जोड़ा ऊंट से और एक जोड़ा गाय से (पैदा फ़रमाया।) तुम फ़रमाओ, क्या उस ने दोनों नर ह़राम किये या दोनों मादा या वोह जिसे दोनों मादा जानवर अपने पेटों में लिये हुए हैं ? क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे जब **अल्लाह** ने तुम्हें येह हुक्म दिया ? तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** पर झूट बांधे ? ताकि लोगों को अपनी जहालत से गुमराह करे। बेशक **अल्लाह** ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता।

www.dawateislami.net

﴿وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَیْنِ﴾ **: और एक जोड़ा ऊंट का ।**﴾ इस आयते करीमा में दौरे जाहिलिय्यत के उन लोगों का रद है जो अपनी त़रफ़ से ह़लाल चीज़ों को ह़राम ठहरा लिया करते थे जिन का ज़िक्र ऊपर की आयात में आ चुका है । **शाने नुज़ूल :** जब इस्लाम में अह़काम का बयान हुवा तो उन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से झगडा़ किया और उन का ख़त़ीब मालिक बिन औ़फ़ ह़शमी सय्यिदे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर कहने लगा कि ''या मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) हम ने सुना है आप उन चीज़ों को ह़राम करते हैं जो हमारे बाप दादा करते चले आए हैं ।'' ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''तुम ने बिग़ैर किसी अस्ल के चौपायों की चन्द क़िस्में ह़राम कर लीं जब कि **अल्लाह** तआ़ला ने आठ नर व मादा अपने बन्दों के खाने और उन के नफ़्अ़ उठाने के लिये पैदा किये । तुम ने कहां से उन्हें ह़राम किया ? उन में हुर्मत नर की त़रफ़ से आई या मादा की त़रफ़ से ?'' मालिक बिन औ़फ़ येह सुन कर साकित और मुतह़य्यर रह गया और कुछ न बोल सका । नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''बोलते क्यूं नहीं ?'' कहने लगा : आप फ़रमाइये मैं सुनूंगा । سُبْحٰنَ اللّٰہ ! क़ुरआने पाक की दलील की क़ुव्वत और ज़ोर ने अहले जाहिलिय्यत के ख़त़ीब को साकित व ह़ैरान कर दिया और वोह बोल ही क्या सकता था ? अगर कहता कि नर की त़रफ़ से हुर्मत आई तो लाज़िम होता कि तमाम नर ह़राम हों, अगर कहता कि मादा की त़रफ़ से तो ज़रूरी होता कि हर एक मादा ह़राम हो और अगर कहता जो पेट में है वोह ह़राम है तो फिर सब ही ह़राम हो जाते क्यूं कि जो पेट में रहता है वोह नर होता है या मादा । वोह जो तख़्सीस क़ाइम करते थे और बा'ज़ को ह़लाल और बा'ज़ को ह़राम क़रार देते थे इस हुज्जत ने उन के इस दा'वए तह़रीम को बात़िल कर दिया ।

﴿اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ﴾ **: क्या तुम मौजूद थे ।**﴾ या'नी **अल्लाह** तआ़ला ने तुम से बराहे रास्त तो बयान फ़रमाया नहीं और नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़रीए इन जानवरों की हुर्मत आई नहीं तो अब इन जानवरों के ह़राम होने की क्या सूरत बाक़ी रही । लिहाज़ा जब येह बात नहीं है तो हुर्मत के इन अह़काम को **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ मन्सूब करना झूट, बात़िल और ख़ालिस बोहतान है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर बोहतान बांधे वोह सब से बड़ा ज़ालिम है, लोगों को गुमराह करता है और बेशक **अल्लाह** तआ़ला ज़ालिमों को जब तक वोह अपने ज़ुल्म पर क़ाइम रहें हिदायत नहीं देता ।

قُلْ لَّاۤ اَجِدُ فِیْ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیَّ مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ یَّطْعَمُهٗۤ اِلَّاۤ اَنْ یَّكُوْنَ

www.dawateislami.net

مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ मैं नहीं पाता उस में जो मेरी त़रफ़ वह़ी हुई किसी खाने वाले पर कोई खाना ह़राम मगर येह कि मुर्दार हो या रगों का बहता ख़ून या बद जानवर का गोश्त कि वोह नजासत है या वोह बे हुक्मी का जानवर जिस के ज़ब्ह़ में ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया तो जो नाचार हुवा न यूं कि आप ख़्वाहिश करे और न यूं कि ज़रूरत से बढ़े तो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ, जो मेरी त़रफ़ वह़ी की जाती है, उस में किसी खाने वाले पर मैं कोई खाना ह़राम नहीं पाता मगर येह कि मुर्दार हो या रगों में बहने वाला ख़ून हो या सुवर का गोश्त हो क्यूं कि वोह नापाक है या वोह ना फ़रमानी का जानवर हो जिस के ज़ब्ह़ में ग़ैरुल्लाह का नाम पुकारा गया हो तो जो मजबूर हो जाए (और इस ह़ाल में खाए कि) न ख़्वाहिश (से खाने) वाला हो और न ज़रूरत से बढ़ने वाला तो बेशक आप का रब बख़्शने वाला मेहरबान है।

﴿قُلْ لَّاۤ اَجِدُ﴾ **: तुम फ़रमाओ मैं नहीं पाता ।**﴾ या'नी ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप उन जाहिल मुश्रिकों से जो ह़लाल चीज़ों को अपनी मन मरज़ी से ह़राम कर लेते हैं फ़रमा दो कि जो मेरी त़रफ़ वह़ी की जाती है मैं उस में किसी खाने वाले पर कोई खाना ह़राम नहीं पाता सिवाए इन चार के (1) मुर्दार (2) रगों में बहने वाला ख़ून (3) सुवर का गोश्त और (4) ना फ़रमानी का जानवर या'नी जिस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा किसी और के नाम पर ज़ब्ह़ किया गया हो। लिहाज़ा तुम्हारा उन दीगर चीज़ों को ह़राम कहना बात़िल है जिन की हुर्मत **अल्लाह** की त़रफ़ से न आई।

﴿فَمَنِ اضْطُرَّ﴾ **: तो जो मजबूर हो जाए ।**﴾ या'नी मज़्कूरा बाला चीज़ें खाना ह़राम है लेकिन अगर कोई मजबूर हो और ज़रूरत उसे उन चीज़ों में से किसी के खाने पर मजबूर कर दे और वोह इस ह़ाल में खाए कि न ख़्वाहिश से खाने वाला हो और न ज़रूरत से बढ़ने वाला तो बेशक रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ बख़्शने वाला, मेहरबान है और वोह इस पर कोई मुआख़ज़ा न फ़रमाएगा।

ह़राम जानवरों के बयान पर मुश्तमिल आयत से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़काम

मज्मूई त़ौर पर इस आयत के मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़काम हैं :

www.dawateislami.net

(1)..... हुर्मत शरीअ़त की जानिब से साबित होती है न कि हवाए नफ़्स से।

(2)..... जमा हुवा ख़ून या'नी तिल्ली कलेजी ह़लाल है क्यूं कि येह बहता हुवा ख़ून नहीं लेकिन बहता हुवा ख़ून निकल कर जम जाए वोह भी ह़राम है कि वोह बहता हुवा ही है अगर्चे आ़रिज़ी त़ौर पर जम गया।

(3)..... हर नजिस चीज़ ह़राम है मगर हर ह़राम चीज़ नजिस नहीं।

(4)..... सुवर की हर चीज़ खाल वग़ैरा सब ह़राम है क्यूं कि वोह नजिसुल ऐ़न है।

(5)..... सुवर की कोई चीज़ ज़ब्ह़ करने या पकाने से पाक नहीं हो सकती।

(6)..... जानवर की ज़िन्दगी में उस पर किसी के नाम पुकारने का ए'तिबार नहीं, ज़ब्ह़ के वक़्त का ए'तिबार है।

(7)..... बुतों के नाम पर जानवर ज़ब्ह़ करना फ़िस्क़े ए'तिक़ादी या'नी कुफ़्र है इस लिये यहां فِسْقًا इर्शाद हुवा।

(8)..... मजबूरी की ह़ालत में मुर्दार वग़ैरा चीज़ें ब क़दरे ज़रूरत ह़लाल होंगी और मजबूरी से मुराद जान जाने या उ़ज़्व ज़ाएअ़ हो जाने का ज़न्ने ग़ालिब होना है।

(9)..... अगर अन्दाज़े में ग़लती कर के ज़रूरत से ज़ियादा एकआध लुक़्मा खा लिया तो पकड़ न होगी।

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِيْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَآ اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَآ اَوِ الْحَوَايَآ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ؕ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۫ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۱۴۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और यहूदियों पर हम ने ह़राम किया हर नाख़ुन वाला जानवर और गाय और बकरी की चरबी उन पर ह़राम की मगर जो उन की पीठ में लगी हो या आंत में या हड्डी से मिली हो हम ने येह उन की सरकशी का बदला दिया और बेशक हम ज़रूर सच्चे हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने यहूदियों पर हर नाख़ुन वाला जानवर ह़राम कर दिया और हम ने उन पर गाय और बकरी की चरबी ह़राम कर दी सिवाए उस चरबी के जो उन की पीठ के साथ या अंतड़ियों से लगी हो या जो चरबी हड्डी से मिली हुई हो। हम ने येह उन की सरकशी का बदला दिया और बेशक हम ज़रूर सच्चे हैं।

www.dawateislami.net

﴿وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا﴾ **: और यहूदियों पर हम ने ह़राम किया ।**﴾ यहूदी अपनी सरकशी के बाइ़स इन चीज़ों से महरूम किये गए :

(1)..... हर नाख़ुन वाला जानवर । यहां नाख़ुन से मुराद उंगली है ख़्वाह उंग्लियां बीच से फटी हों जैसे कुत्ता और दरिन्दे या न फटी हों बल्कि खुर की सूरत में हों जैसे ऊंट, शुतर मुर्ग़ और बत़ख़ वग़ैरा । बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यहां बत़ौरे ख़ास शुतर मुर्ग़, बत़ख़ और ऊंट मुराद हैं ।

(2)..... गाय और बकरी की चरबी । यहूदियों पर गाय, बकरी का गोश्त वग़ैरा ह़लाल था लेकिन इन की चरबी ह़राम थी अलबत्ता जो चरबी गाय बकरी की पीठ में लगी हो या आंत या हड्डी से मिली हो वोह उन के लिये ह़लाल थी । यहूदी चूंकि अपनी सरकशी के बाइ़स इन चीज़ों से महरूम किये गए थे लिहाज़ा येह चीज़ें उन पर ह़राम रहीं और हमारी शरीअ़त में गाय बकरी की चरबी और ऊंट, बत़ख़ और शुतर मुर्ग़ ह़लाल हैं, इसी पर सह़ाबए किराम और ताबिईन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ का इज्माअ़ है ।[1]

साबिक़ा शरीअ़तों के सख़्त अह़काम हम पर जारी नहीं

इस से मा'लूम हुवा कि गुज़श्ता शरीअ़तों के वोह अह़काम जो बत़ौरे सज़ा जारी किये गए थे वोह हमारे लिये लाइक़े अ़मल नहीं अगर्चे नस्स में मज़्कूर हो जाएं क्यूं कि येह उम्मते मर्हूमा है, पिछली उम्मतों के सख़्त अह़काम हम पर जारी नहीं ।

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۴۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर अगर वोह तुम्हें झुटलाएं तो तुम फ़रमाओ कि तुम्हारा रब वसीअ़ रह़मत वाला है और उस का अ़ज़ाब मुजरिमों पर से नहीं टाला जाता ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर अगर वोह तुम्हें झुटलाएं तो तुम फ़रमाओ कि तुम्हारा रब वसीअ़ रह़मत वाला है और उस का अ़ज़ाब मुजरिमों पर से नहीं टाला जाता ।

﴿فَاِنْ كَذَّبُوْكَ **: फिर अगर वोह तुम्हें झुटलाएं ।**﴾ या'नी ऐ मह़बूब ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, हम ने

1 .....تفسیرات احمدیہ، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۴۶، ص ۴۰۴-۴۰۵.

www.dawateislami.net

यहूदियों पर जिन चीज़ों के ह़लाल व ह़राम होने की तुम्हें ख़बर दी, अगर यहूदी उसे झुटलाएं तो आप फ़रमा दो कि तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ वसीअ़ रह़मत वाला है इसी लिये वोह झुटलाने वालों को मोहलत देता है और अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता ताकि उन्हें ईमान लाने का मौक़अ़ मिले वरना बहर ह़ाल जिन पर अ़ज़ाबे इलाही का फ़ैसला हो जाता है तो उन से टाला नहीं जाता और फिर अ़ज़ाब अपने वक़्त पर आ ही जाता है।

سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَاۤ اَشْرَكْنَا وَلَاۤ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى ذَاقُوْا بَاْسَنَا ؕ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا ؕ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ ﴿۱۴۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अब कहेंगे मुश्रिक कि **अल्लाह** चाहता तो न हम शिर्क करते न हमारे बाप दादा न हम कुछ ह़राम ठहराते ऐसा ही इन से अगलों ने झुटलाया था यहां तक कि हमारा अ़ज़ाब चखा तुम फ़रमाओ क्या तुम्हारे पास कोई इ़ल्म है कि उसे हमारे लिये निकालो तुम तो निरे गुमान के पीछे हो और तुम यूंही तख़्मीने करते हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अब मुश्रिक कहेंगे कि अगर **अल्लाह** चाहता तो न हम शिर्क करते और न हमारे बाप दादा और न ही हम किसी चीज़ को ह़राम क़रार देते। इन से पहले लोगों ने भी ऐसे ही झुटलाया था यहां तक कि हमारा अ़ज़ाब चखा। तुम फ़रमाओ, क्या तुम्हारे पास कोई इ़ल्म है तो उसे हमारे लिये निकालो। तुम तो सिर्फ़ झूटे ख़याल के पैरौकार हो और तुम यूंही ग़लत अन्दाज़े लगा रहे हो।

﴿سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا﴾ **: अब मुश्रिक कहेंगे।** ﴾ इस में ग़ैबी ख़बर है कि मुश्रिक जो आयिन्दा कहने वाले थे, उस से पहले ही ख़बरदार कर दिया। मुश्रिकीन पर जब हुज्जत तमाम हो गई और उन से कोई दलील न बन पड़ी तो कहने लगे : अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहता तो न हम शिर्क करते और न हमारे बाप दादा और न ही हम किसी चीज़ बह़ीरा व साइबा वग़ैरा को ह़राम क़रार देते। हम ने जो कुछ किया और करते हैं येह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मरज़ी से हुवा येह इस की

www.dawateislami.net

दलील है कि वोह इस से राज़ी है। **अल्लाह** तआ़ला ने इस का रद इस त़रह़ फ़रमाया कि अगर तुम्हारी येह बात दुरुस्त होती कि तुम्हारा शिर्क और ह़लाल को ह़राम और ह़राम को ह़लाल कहने का येह रवाज सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुशी से है तो होना यूं चाहिये था कि ऐसे लोगों पर **अल्लाह** तआ़ला का लुत्फ़ो इनायत और बड़ी करम नवाज़ियां होतीं ह़ालां कि तुम से पहले जिन लोगों ने इस गुमराही को अपनाया तो उन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ग़ज़ब नाज़िल हुवा और उन्हें बा'द वालों के लिये निशाने इ़ब्रत बना दिया गया, अब तुम ख़ुद ग़ौर करो कि ऐसी संगीन सज़ा मुजरिम और ना फ़रमान लोगों को दी जाती है या इत़ाअ़त गुज़ार और फ़रमां बरदार अफ़्राद को।

قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ فَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۴۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ तो **अल्लाह** ही की ह़ुज्जत पूरी है तो वोह चाहता तो तुम सब को हिदायत फ़रमाता।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ तो कामिल दलील **अल्लाह** ही की है तो अगर वोह चाहता तो तुम सब को हिदायत दे देता।

﴿قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ﴾ **: तुम फ़रमाओ तो अल्लाह ही की ह़ुज्जत पूरी है।** इस आयत का मा'ना येह है कि ऐसी दलील जो तमाम तर शुकूको शुबुहात को जड़ से उखाड़ दे वोह सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला ही के पास है, इस आयत में येह तम्बीह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वाह़िद है उस ने रसूलों को दलाइल और मो'जिज़ात दे कर भेजा और हर मुकल्लफ़ पर अपने अह़काम को लाज़िम किया है और उन को मुकल्लफ़ करने के लिये येह काफ़ी है कि **अल्लाह** तआ़ला ने इन को काम करने या न करने का इख़्तियार दिया है या'नी इन्हें बा इख़्तियार बनाया है।[1]

और **अल्लाह** तआ़ला की ह़िक्मत येही है कि बन्दे अपने इख़्तियार से ईमान लाएं और उस के अह़काम की ता'मील करें वरना अगर वोह चाहता तो जब्रन सब इन्सानों को मोमिन बना देता लेकिन येह **अल्लाह** तआ़ला की ह़िक्मत में नहीं है इस लिये उन का येह कहना बिल्कुल लग़्व है कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहता तो न हम शिर्क करते न हमारे बाप दादा, न वोह बह़ीरा वग़ैरा को ह़राम क़रार देते क्यूं कि इस क़िस्म का जब्री ईमान **अल्लाह** तआ़ला का मत़लूब नहीं है। **अल्लाह** तआ़ला येह चाहता है कि लोग अपनी अ़क़्ल से काम लें, ह़क़ और बात़िल को जांचें, खरे खोटे को परखें, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ता'लीमात और शैत़ान के

1 .....قرطبی، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۴۹، ۴/۹۳-۹۴، الجزء السابع.

www.dawateislami.net

वस्वसों में फ़र्क़ महसूस करें और अपने इख़्तियार से बुरे कामों और बुरी बातों को तर्क करें और शैत़ान का इन्कार कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाने को इख़्तियार करें, वोह जिस चीज़ को इख़्तियार करेंगे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसी चीज़ को पैदा कर देगा, इन आयतों में येह दलील भी है कि **अल्लाह** तआ़ला ने इन्सान को मजबूरे महज़ नहीं बनाया, मुख़्तार बनाया है और इस में जब्रिया का भी रद है।

قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ﴿۱۵۰﴾ ع ۱۸

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ लाओ अपने वोह गवाह जो गवाही दें कि **अल्लाह** ने इसे ह़राम किया फिर अगर वोह गवाही दे बैठें तो ऐ सुनने वाले उन के साथ गवाही न देना और उन की ख़्वाहिशों के पीछे न चलना जो हमारी आयतें झुटलाते हैं और जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और अपने रब का बराबर वाला ठहराते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ, अपने वोह गवाह ले आओ जो गवाही दें कि **अल्लाह** ने इस चीज़ को ह़राम किया है (जिसे तुम ह़राम कहते हो) फिर अगर वोह गवाही दे बैठें तो ऐ सुनने वाले ! तू उन के साथ गवाही न देना और उन लोगों की ख़्वाहिशों के पीछे न चलना जो हमारी आयतों को झुटलाते हैं और जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और वोह अपने रब के बराबर ठहराते हैं।

﴿قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ : **तुम फ़रमाओ, अपने गवाह ले आओ।**﴾ जब **अल्लाह** तआ़ला ने कुफ़्फ़ार की तमाम हुज्जतें बात़िल फ़रमा दीं तो अब बयान फ़रमाया कि उन के पास अपनी बात पर कोई गवाह भी नहीं चुनान्चे फ़रमाया : ऐ महबूब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप उन से फ़रमा दीजिये कि अपने वोह गवाह ले आओ जो इस बात की गवाही दें कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे ह़राम किया जिसे तुम अपने लिये ह़राम क़रार देते हो और कहते हो कि **अल्लाह** तआ़ला ने हमें इस का हुक्म दिया है। येह गवाही इस लिये त़लब की गई कि ज़ाहिर हो जाए कि कुफ़्फ़ार के पास कोई शाहिद नहीं है और जो वोह कहते हैं वोह उन की अपनी तराशीदा बातें हैं।

www.dawateislami.net

﴿فَاِنْ شَهِدُوْا﴾ **: फिर अगर वोह गवाही दे बैठें ।** ﴾ या'नी मुश्रिकीन अगर अपनी झूटी बात पर कोई गवाह ले ही आएं तो ऐ सुनने वाले ! तू उन के साथ गवाही न देना और उन लोगों की ख़्वाहिशों के पीछे न चलना जो हमारी आयतों को झुटलाते हैं और जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और वोह बुतों को अपने रब عَزَّوَجَلَّ के बराबर ठहराते हैं या'नी बुतों को मा'बूद मानते हैं और शिर्क में गिरिफ़्तार हैं। इस में तम्बीह है कि अगर कोई ऐसी शहादत दे भी दे तो वोह महज़ ख़्वाहिश की इत्तिबाअ़ और किज़्बो बातिल होगी ।

झूटी गवाही और उस की तस्दीक़ ह़राम है

इस से मा'लूम हुवा कि झूटी गवाही भी ह़राम है और उस की तस्दीक़ो ताईद भी और झूटे आदमी की वकालत भी क्यूं कि गुनाह के काम में मदद करना भी गुनाह है और अह़ादीस में इस की सख़्त वईदें भी बयान हुई हैं, चुनान्चे

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने किसी ज़ालिम के बातिल काम पर उस की मदद की ताकि वोह उस के बातिल काम के इरतिकाब की वज्ह से ह़क़ को बातिल कर दे तो वोह **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़िम्मे से बरी है ।"[1]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने किसी झगड़े पर नाह़क़ मदद की तो वोह तब तक **अल्लाह** तआ़ला के शदीद ग़ज़ब में रहेगा जब तक (उस मदद को) छोड़ नहीं देता ।"[2]

قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ
اِحْسَانًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ
وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ
الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۵۱﴾

1 ……معجم الاوسط، من اسمه ابراهيم، ٢/١٨٠، الحديث: ٢٩٤٤.
2 ……مستدرك، كتاب الاحكام، لا تجوز شهادة بدوى على صاحب قرية، ٥/١٣٥، الحديث: ٧١٣٣.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ आओ मैं तुम्हें पढ़ सुनाऊं जो तुम पर तुम्हारे रब ने ह़राम किया येह कि उस का कोई शरीक न करो और मां बाप के साथ भलाई और अपनी औलाद क़त्ल न करो मुफ़्लिसी के बाइ़स हम तुम्हें और उन्हें सब को रिज़्क़ देंगे और बे ह़याइयों के पास न जाओ जो इन में ख़ुली हैं और जो छुपी और जिस जान की **अल्लाह** ने हुर्मत रखी उसे नाह़क़ न मारो येह तुम्हें हुक्म फ़रमाया है कि तुम्हें अ़क़्ल हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ, आओ मैं तुम्हें पढ़ कर सुनाऊं जो तुम पर तुम्हारे रब ने ह़राम किया वोह येह कि उस के साथ किसी को शरीक न ठहराओ और मां बाप के साथ भलाई करो और मुफ़्लिसी के बाइ़स अपनी औलाद क़त्ल न करो, हम तुम्हें और उन्हें सब को रिज़्क़ देंगे और ज़ाहिरी व बात़िनी बे ह़याइयों के पास न जाओ और जिस जान (के क़त्ल) को **अल्लाह** ने ह़राम किया है उसे नाह़क़ न मारो। तुम्हें येह हुक्म फ़रमाया है ताकि तुम समझ जाओ।

﴿قُلْ تَعَالَوْا﴾ **: तुम फ़रमाओ आओ।** ﴾ यहां से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वोह ह़क़ीक़ी ह़िल्लतो हुर्मत के मुतअ़द्दद अह़काम बयान फ़रमाए हैं जो ख़ुद उस ख़ालिक़े काएनात ने अ़त़ा फ़रमाए हैं। इस आयत और इस से अगली आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने 9 चीज़ों की हुर्मत बयान फ़रमाई है (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक ठहराना (2) मां बाप के साथ भलाई न करना (3) मुफ़्लिसी के बाइ़स अपनी औलाद क़त्ल करना (4) बे ह़याई के काम करना चाहे ज़ाहिरी हों या बात़िनी (5) नाह़क़ क़त्ल करना (6) यतीम के माल में बे जा तसर्रुफ़ करना (7) नाप तोल में कमी करना (8) नाह़क़ बात कहना (9) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से किये हुए अ़ह्द को पूरा न करना। इस का बयान येह है कि **उस के साथ किसी को शरीक न ठहराओ** क्यूं कि येह काएनात का बद तरीन झूट और सरीह़ नाशुक्री व एह़सान फ़रामोशी है। **मां बाप के साथ भलाई करो** क्यूं कि तुम पर उन के बहुत से हुक़ूक़ हैं, उन्हों ने तुम्हारी परवरिश की, तुम्हारे साथ शफ़्क़त और मेह्रबानी का सुलूक किया, तुम्हारी हर ख़त़रे से निगह्बानी की, उन के हुक़ूक़ का लिह़ाज़ न करना और उन के साथ हुस्ने सुलूक का तर्क करना ह़राम है। मा'लूम हुवा कि मां बाप अगर्चे काफ़िर हों उन के मां बाप होने की हैसिय्यत से जो हुक़ूक़ हैं उन्हें अदा करना ज़रूरी है। इस एह़सान में वालिदैन के साथ तमाम क़िस्म के अच्छे सुलूक दाख़िल हैं। उन का अदब, लिह़ाज़, उन पर ज़रूरत के वक़्त माल ख़र्च करना, मुसल्मान होने की सूरत में बा'दे वफ़ात उन के लिये ईसाले सवाब सब दाख़िल हैं।

﴿وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَوْلَادَكُمْ﴾ **: अपनी औलाद क़त्ल न करो।** ﴾ इस में औलाद को ज़िन्दा दरगोर करने और मार डालने की हुर्मत बयान फ़रमाई गई जिस का अहले जाहिलिय्यत में दस्तूर था कि वोह

www.dawateislami.net

बारहा फ़क़्रो तंगदस्ती के अन्देशे से औलाद को मार डालते थे, उन्हें बताया गया कि रोज़ी देने वाला तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है जो तुम्हें और उन्हें सब को रोज़ी देगा तो फिर तुम क्यूं क़त्ल जैसे शदीद जुर्म का इरतिकाब करते हो।

औरतों के हुक़ूक़ से मुतअ़ल्लिक़ इस्लाम की ह़सीन ता'लीमात

इस आयत में उन लोगों से ख़िताब है जो ग़रीबी की वज्ह से लड़के लड़कियों को क़त्ल कर डालते थे और जो मालदार शर्मो आ़र की वज्ह से अपनी लड़कियों को क़त्ल करते थे उन का ज़िक्र दूसरी आयात में है। उन के मुक़ाबले में इस्लाम की ता'लीमात किस क़दर ह़सीन हैं और इस्लाम ने बच्चियों और औ़रतों को कैसे हुक़ूक़ अ़ता फ़रमाए इस के लिये सिर्फ़ दर्जे ज़ैल 3 ह़दीसों का मुत़ालआ़ फ़रमा लें।

(1)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस शख़्स की बेटी हो तो वोह उसे ज़िन्दा दरगोर न करे, उसे ज़लील न समझे और अपने बेटे को उस पर तरजीह़ न दे तो **अल्लाह** तआ़ला उसे जन्नत में दाख़िल करेगा।"[1]

(2)..... ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस की तीन बेटियां या तीन बहनें हों, या दो बेटियां या दो बहनें हों और वोह उन के साथ अच्छा सुलूक करे और उन के मुआ़मले में **अल्लाह** तआ़ला से डरे तो उस के लिय जन्नत है।"[2]

(3)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स तीन बेटियों या बहनों की इस त़रह़ परवरिश करे कि उन को अदब सिखाए और उन से मेह़रबानी का बरताव करे यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें बे नियाज़ कर दे (मसलन उन का निकाह़ हो जाए) तो **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जन्नत वाजिब फ़रमा देता है।" येह इर्शादे नबवी सुन कर एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "अगर कोई शख़्स दो लड़कियों की परवरिश करे ?" तो इर्शाद फ़रमाया : "उस के लिये भी येही अज्रो सवाब है।" (रावी फ़रमाते हैं) यहां तक कि अगर लोग एक का ज़िक्र करते तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बारे में भी येही फ़रमाते।[3]

1 .....ابو داؤد، کتاب الادب، باب فی فضل من عال یتیماً، ٤/٤٣٥، الحدیث: ٥١٤٦.
2 .....ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی النفقة علی البنات والاخوات، ٣/٣٦٧، الحدیث: ١٩٢٣.
3 .....شرح السنه، کتاب البر والصلة، باب ثواب کافل الیتیم، ٦/٤٥٢، الحدیث: ٣٣٥١.

www.dawateislami.net

﴿وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ﴾ **: और बे ह़याइयों के पास न जाओ ।** इस आयत में ज़ाहिरी व बात़िनी बे ह़याइयों के पास जाने से मन्अ़ किया गया क्यूं कि इन्सान जब खुले और ज़ाहिरी गुनाहों से बचे और पोशीदा गुनाहों से परहेज़ न करे तो उस का ज़ाहिरी गुनाहों से बचना भी लिल्लाहिय्यत से नहीं बल्कि लोगों के दिखाने और उन की बदगोई से बचने के लिये है जब कि गुनाहों से बचने का अस्ल सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़गी का डर होना चाहिये नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व सवाब का मुस्तह़िक़ होता भी वोही है जो उस के ख़ौफ़ से गुनाह तर्क करे ।

ब ज़ाहिर नेक रहना और छुप कर गुनाह करना तक़्वा नहीं

इस से मा'लूम हुवा कि ज़ाहिर में नेक रहना और छुप कर गुनाह करना तक़्वा नहीं बल्कि रियाकारी है । तक़्वा येह है कि ज़ाहिरो बात़िन हर ह़ाल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ दामन गीर हो । लोगों के सामने नेक आ'माल करते नज़र आने वालों और तन्हाई में गुनाहों पर बेबाक होने वालों का ह़श्र में बहुत बुरा ह़ाल होगा, चुनान्चे ह़ज़रते अ़दी बिन ह़ातिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन कुछ लोगों को जन्नत की त़रफ़ ले जाने का हुक्म होगा, यहां तक कि जब वोह जन्नत के क़रीब पहुंच कर उस की ख़ुश्बू सूंघेंगे, उस के महल्लात और उस में अहले जन्नत के लिये **अल्लाह** तआ़ला की तय्यार कर्दा ने'मतें देख लेंगे, तो निदा दी जाएगी : इन्हें जन्नत से लौटा दो क्यूं कि इन का जन्नत में कोई ह़िस्सा नहीं । (येह निदा सुन कर) वोह ऐसी ह़सरत के साथ लौटेंगे कि इस जैसी ह़सरत के साथ उन से पहले लोग न लौटे होंगे, फिर वोह अ़र्ज़ करेंगे : या रब ! عَزَّوَجَلَّ, अगर तू अपना सवाब और अपने औलिया के लिये तय्यार कर्दा ने'मतें दिखाने से पहले ही हमें जहन्नम में दाख़िल कर देता तो येह हम पर ज़ियादा आसान होता । **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाएगा : मैं ने इरादतन तुम्हारे साथ ऐसा किया है (और इस की वज्ह येह है कि) जब तुम तन्हाई में होते तो बड़े बड़े गुनाह कर के मेरे साथ ए'लाने जंग करते और जब लोगों से मिलते तो आ़जिज़ी व इन्किसारी के साथ मिलते थे, तुम लोगों को अपनी वोह ह़ालत दिखाते थे जो तुम्हारे दिलों में मेरे लिये नहीं होती थी, तुम लोगों से डरते और मुझ से नहीं डरते थे, तुम लोगों की इ़ज़्ज़त करते और मेरी इ़ज़्ज़त न करते थे, तुम लोगों की वज्ह से बुरा काम करना छोड़ देते लेकिन मेरी वज्ह से बुराई न छोड़ते थे, आज मैं तुम्हें अपने सवाब से महरूम करने के साथ साथ अपने अ़ज़ाब का मज़ा भी चखाऊंगा ।"[1]

[1] ……معجم الاوسط، باب المیم، من اسمہ محمد، ٤/١٣٥، الحدیث: ٥٤٧٨.

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से गुनाह छोड़ने के 3 फ़ज़ाइल

(1)..... ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स किसी ह़राम काम पर क़ादिर हो फिर उसे सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ की वज्ह से छोड़ दे तो **अल्लाह** तआ़ला आख़िरत से पहले दुन्या ही में जल्द उस का ऐसा बदल अ़त़ा फ़रमाता है जो उस ह़राम काम से बेहतर हो।"[1]

(2)..... ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस शख़्स को किसी औ़रत ने बुराई की दा'वत दी और वोह महज़ **अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़** की वज्ह से इस से बाज़ रहा तो क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला उसे **अ़र्श के साए** में जगह अ़त़ा फ़रमाएगा।"[2]

(3)..... ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से मरवी है : "जिस ने **अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ से और उस की रिज़ा ह़ासिल करने की ख़ातिर गुनाह छोड़ दिया तो **अल्लाह** तआ़ला उसे राज़ी फ़रमाएगा।"[3]

ज़ाहिरी व बातिनी गुनाहों से महफ़ूज़ रहने की दुआ़

ह़दीसे पाक में ज़ाहिरी व बातिनी गुनाहों से बचने के लिये एक बेहतरीन दुआ़ ता'लीम फ़रमाई गई है, हर मुसल्मान को चाहिये कि वोह इस दुआ़ को अपने मा'मूलात में शामिल कर ले और ब कसरत येह दुआ़ मांगा करे, चुनान्चे ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, मुझे **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह दुआ़ सिखाई, इर्शाद फ़रमाया : "कहो اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ سَرِیْرَتِیْ خَیْرًا مِنْ عَلَانِیَتِیْ، وَاجْعَلْ عَلَانِیَتِیْ صَالِحَةً، اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ مِنْ صَالِحِ مَا تُؤْتِی النَّاسَ مِنَ الْمَالِ وَالْاَھْلِ، وَالْوَلَدِ غَیْرِ الضَّالِّ وَلَا الْمُضِلِّ" ऐ **अल्लाह**! मेरा बातिन मेरे ज़ाहिर से अच्छा कर दे और मेरे ज़ाहिर को नेक व सालेह़ बना दे, ऐ **अल्लाह**! मैं तुझ से लोगों को अ़त़ा की जाने वाली बेहतरीन चीज़ें या'नी माल, अच्छा घरबार और वोह औलाद मांगता हूं जो न गुमराह हो और न गुमराह गर हो[4]।"[5]

1 .....جامع الاحادیث، ۹/۴۳، الحدیث: ۲۷۰۵۲. 2 .....معجم الکبیر، بشر بن نمیر عن القاسم، ۸/۲۴۰، الحدیث: ۷۹۳۵.
3 .....کنز العمال، کتاب الاخلاق، قسم الاقوال، ۲/۶۳، الحدیث: ۵۹۱۱، الجزء الثالث.
4 .....ترمذی، احادیث شتی، ۱۲۳-باب، ۵/۳۳۹، الحدیث: ۳۵۹۷.

5..... ज़ाहिरी और बातिनी गुनाहों से बचने और गुनाहों से मुतअ़ल्लिक़ अपने दिल में **अल्लाह** तआ़ला का ख़ौफ़ पैदा करने के लिये दा'वते इस्लामी के साथ वाबस्तगी बहुत मुफ़ीद है।

www.dawateislami.net

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِیْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ : और जिस जान की अल्लाह ने हुर्मत रखी उसे नाहक़ न मारो इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने किसी को नाहक़ क़त्ल करने की हुर्मत बयान फ़रमाई है।

नाहक़ क़त्ल करने या क़त्ल का हुक्म देने की 3 वईदें

नाहक़ क़त्ल करने वाले या क़त्ल का हुक्म देने वाले के बारे में अहादीस में सख़्त वईदें बयान की गई हैं, उन में से 3 वईदें दर्जे ज़ैल हैं :

(1)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन मक़्तूल क़ातिल को ले कर इस ह़ाल में आएगा कि उस की पेशानी और सर उस के हाथ में होंगे और गरदन की रगों से ख़ून बह रहा होगा। अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! इस ने मुझे क़त्ल किया था, ह़त्ता कि क़ातिल को अ़र्श के क़रीब खड़ा कर देगा।"[1]

(2)..... नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आग को सत्तर ह़िस्सों में तक़्सीम किया गया है 69 ह़िस्से क़त्ल का हुक्म देने वाले के लिये और एक ह़िस्सा क़ातिल के लिये है।"[2]

(3)..... ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "क़ियामत के दिन मक़्तूल बैठा होगा, जब उस का क़ातिल गुज़रेगा तो वोह उसे पकड़ कर **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! عَزَّوَجَلَّ, तू इस से पूछ कि इस ने मुझे क्यूं क़त्ल किया ? **अल्लाह** तआ़ला क़ातिल से फ़रमाएगा : तू ने इसे क्यूं क़त्ल किया : क़ातिल अ़र्ज़ करेगा : मुझे फ़ुलां शख़्स ने हुक्म दिया था, चुनान्चे क़ातिल और क़त्ल का हुक्म देने वाले दोनों को अ़ज़ाब दिया जाएगा।"[3]

क़त्ले बरह़क़ की सूरतें और एक अहम तम्बीह

चन्द सूरतें ऐसी हैं कि जिन में ह़ाकिमे इस्लाम के लिये मुजरिम को क़त्ल करने की इजाज़त है जैसे क़ातिल को क़िसास में, शादी शुदा ज़ानी को रज्म में और मुरतद को सज़ा के तौ़र पर क़त्ल करना अलबत्ता येह याद रहे कि क़त्ले बरह़क़ की जो सूरतें बयान हुईं उन पर आ़म लोग अ़मल नहीं कर सकते बल्कि इस की इजाज़त सिर्फ़ ह़ाकिमे इस्लाम को है।

1 .....ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ النساء، ۲۳/۵، الحدیث: ۳۰۴۰.
2 .....شعب الایمان، السادس والثلاثون من شعب الایمان، ۳۴۹/۴، الحدیث: ۵۳۶۰.
3 .....شعب الایمان، السادس والثلاثون من شعب الایمان، ۳۴۱/۴، الحدیث: ۵۳۲۹.

www.dawateislami.net

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَ اَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَ اِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ وَ بِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۙ﴿۱۵۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और यतीम के माल के पास न जाओ मगर बहुत अच्छे त़रीक़े से जब तक वोह अपनी जवानी को पहुंचे और नाप और तोल इन्साफ़ के साथ पूरी करो हम किसी जान पर बोझ नहीं डालते मगर उस के मक़्दूर भर और जब बात कहो तो इन्साफ़ की कहो अगर्चे तुम्हारे रिश्तेदार का मुआ़मला हो और **अल्लाह** ही का अ़ह्द पूरा करो येह तुम्हें ताकीद फ़रमाई कि कहीं तुम नसीह़त मानो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और यतीमों के माल के पास न जाओ मगर बहुत अच्छे त़रीक़े से ह़त्ता कि वोह अपनी जवानी (की उ़म्र) को पहुंच जाए और नाप और तोल इन्साफ़ के साथ पूरा करो। हम किसी जान पर उस की त़ाक़त के बराबर ही बोझ डालते हैं और जब बात करो तो अ़द्ल करो अगर्चे तुम्हारे रिश्तेदार का मुआ़मला हो और **अल्लाह** ही का अ़ह्द पूरा करो। (**अल्लाह** ने) तुम्हें येह ताकीद फ़रमाई है ताकि नसीह़त ह़ासिल करो।

﴿وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ﴾ **: और यतीमों के माल के पास न जाओ।** ﴾ या'नी यतीम के माल के पास उस त़रीक़े से जाओ जिस से उस का फ़ाएदा हो और जब वोह अपनी जवानी की उ़म्र को पहुंच जाए उस वक़्त उस का माल उस के सिपुर्द कर दो। इस हुक्म की तफ़्सील और यतीमों से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद अह़काम सूरए निसाअ की इब्तिदाई चन्द आयात में गुज़र चुके हैं।

﴿وَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ﴾ **: और नाप और तोल इन्साफ़ के साथ पूरा करो।** ﴾ या'नी नाप तोल में कमी न करो क्यूं कि येह ह़राम है।

नाप तोल में कमी करने की 2 वईदें

नाप तोल में कमी करने पर अह़ादीस में सख़्त वईदें बयान की गई हैं, उन में से 2 वईदें दर्जे ज़ैल हैं :

www.dawateislami.net

(1)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ ताजिरों के गुरौह ! दो ऐसे काम तुम्हारे सिपुर्द किये गए हैं कि जिन की वज्ह से तुम से पहले लोग हलाक हुए, येह नापना और तोलना है।''(1)

(2)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ मुहाजिरीन के गुरौह ! जब तुम पांच बातों में मुब्तला कर दिये जाओ (तो उस वक़्त तुम्हारी क्या ह़ालत होगी) और मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से पनाह त़लब करता हूं कि तुम उन्हें पाओ।

(1)..... जब किसी क़ौम में ए'लानिया फ़ह़्शाशी आ़म हो जाएगी तो उन में त़ाऊ़न और ऐसी बीमारियां ज़ाहिर हो जाएंगी जो उन से पहलों में कभी ज़ाहिर न हुई थीं (जैसे आज कल एड्ज़, Aids वग़ैरा)

(2)..... जब लोग नाप तोल में कमी करने लग जाएंगे तो क़ह़त़ साली, शदीद तंगी और बादशाह के ज़ुल्म का शिकार हो जाएंगे।

(3)..... जब ज़कात की अदाएगी छोड़ देंगे तो आस्मान से बारिश रोक दी जाएगी और अगर चौपाए न होते तो उन पर कभी बारिश न बरस्ती।

(4)..... जब लोग **अल्लाह** और उस के रसूल का अ़ह्द तोड़ने लगेंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन पर दुश्मन मुसल्लत़ कर देगा जो उन का माल वग़ैरा सब कुछ छीन लेगा।

(5)..... जब ह़ुक्मरान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ानून को छोड़ कर दूसरा क़ानून और **अल्लाह** तआ़ला के अह़काम में से कुछ लेने और कुछ छोड़ने लग जाएंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के दरमियान लड़ाई झगड़ा डाल देगा।''(2)

इस रिवायत को सामने रखते हुए हमें चाहिये कि हम अपने मौजूदा ह़ालात पर ग़ौर करें कि आज हम में ख़त़रनाक और जानलेवा बीमारियों का फैलाव, क़ह़त़ साली, शदीद तंगी और ह़ुक्मरानों के ज़ुल्म का सामना, दुश्मन का तसल्लुत़ और मालो अस्बाब का लुट जाना, तअ़स्सुब और हमारे लिसानी, क़ौमी इख़्तिलाफ़ात येह सब हमारे किन आ'माल का नतीजा हैं।

जो कुछ भी है सब अपने ही हाथों के हैं करतूत — शिक्वा है ज़माने का न क़िस्मत से गिला है
देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़्लत की बदौलत — सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

1 .....شعب الایمان، الخامس والثلاثون من شعب الایمان، ٤/٣٢٨، الحدیث: ٥٢٨٨.
2 .....ابن ماجه، کتاب الفتن، باب العقوبات، ٤/ ٣٦٧، الحدیث: ٤٠١٩ .

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से ह़राम काम छोड़ने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स ह़राम पर क़ादिर हो फिर उसे **अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ से छोड़ दे तो **अल्लाह** तआ़ला आख़िरत से पहले दुन्या में ही बहुत जल्द उस का ऐसा बदल अ़ता फ़रमाता है जो ह़राम से कहीं बेहतर हो।"[1]

﴿وَ اِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا﴾ : **और जब बात कहो तो इन्साफ़ की कहो।** ﴾ या'नी ख़्वाह गवाही दो या फ़तवा दो या ह़ाकिम बन कर फ़ैसला करो कुछ भी हो इन्साफ़ से हो इस में क़राबत या वजाहत का लिह़ाज़ न हो क्यूं कि इस से मक़्सूद शर्ई हुक्म की पैरवी और **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा त़लब करना होता है और इस में अजनबी और क़राबत दार के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं।[2]

﴿وَ بِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا﴾ : **और अल्लाह ही का अ़ह्द पूरा करो।** ﴾ या'नी सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ह्द पूरे करो और **अल्लाह** तआ़ला के मुक़ाबले में किसी के अ़ह्द पूरे न करो, अगर तुम ने ग़लती से किसी से ना जाइज़ अ़ह्द कर लिया तो फ़ौरन तोड़ दो, मसलन अगर किसी से वा'दा किया बल्कि क़सम खाई कि उस के साथ शराब पियेंगे या चोरी करेंगे तो येह वा'दा तोड़ दो और क़सम का कफ़्फ़ारा दे दो। आयत में "عَهْدِ اللّٰه" से मुराद वोह अ़ह्द है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दों पर लाज़िम फ़रमाया या'नी वोह अह़काम जो नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़रीए़ मिले या वोह अ़ह्द मुराद है जो इन्सान अपने ऊपर लाज़िम कर ले जैसे मन्नत वग़ैरा, इन सब को पूरा करने का हुक्म है।[3]

अ़ह्द शिकनी पर वईद

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन जब **अल्लाह** तआ़ला अव्वलीन व आख़िरीन को जम्अ़ फ़रमाएगा तो अ़ह्द तोड़ने वाले हर शख़्स के लिये एक झन्डा बुलन्द किया जाएगा और कहा जाएगा कि येह फ़ुलां बिन फ़ुलां की अ़ह्द शिकनी का झन्डा है।"[4]

बन्दों के साथ किये गए जाइज़ अ़ह्दों को पूरा करने का भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया है लिहाज़ा इन का पूरा करना भी अ़ह्दे इलाही को पूरा करने में दाख़िल होगा।

1 .....تفسیر طبری، الاسراء، تحت الآیۃ: ۳۵، ۸/۷۹.
2 .....روح البیان، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۵۲، ۳/۱۱۹. 3 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۵۲، ۲/۶۹.
4 .....بخاری، کتاب الادب، باب ما یدعی الناس بآبائھم، ۴/۱۴۹، الحدیث: ۶۱۷۷، مسلم کتاب الجھاد والسیر، باب تحریم الغدر، ص۹۵۵، الحدیث: ۹(۱۷۳۵).

www.dawateislami.net

وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِیْ مُسْتَقِیْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِیْلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۵۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और येह कि येह है मेरा सीधा रास्ता तो इस पर चलो और और राहें न चलो कि तुम्हें इस की राह से जुदा कर देंगी येह तुम्हें हुक्म फ़रमाया कि कहीं तुम्हें परहेज़ गारी मिले।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और येह कि येह मेरा सीधा रास्ता है तो इस पर चलो और दूसरी राहों पर न चलो वरना वोह राहें तुम्हें इस के रास्ते से जुदा कर देंगी। तुम्हें येह हुक्म फ़रमाया है ताकि तुम परहेज़ गार हो जाओ।

﴿وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِیْ مُسْتَقِیْمًا﴾ **: और येह कि येह मेरा सीधा रास्ता है।** ﴾ या'नी यहां मज़्कूर आयतों में जो अह़काम तुम्हें बयान किये गए हैं येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सीधा रास्ता है तो इस पर चलो। अह़ादीस में एक मिसाल के ज़रीए सीधे रास्ते के बारे में समझाया गया है, चुनान्चे

ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : हम हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे, आप ने एक ख़त़ खींचा, दो उस के दाईं और दो बाईं जानिब खींचे, फिर अपना हाथ दरमियाने ख़त़ पर रख कर फ़रमाया : येह **अल्लाह** तआ़ला का रास्ता है। फिर आप ने येह आयत तिलावत फ़रमाई

وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِیْ مُسْتَقِیْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِیْلِهٖ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और येह कि येह मेरा सीधा रास्ता है तो इस पर चलो और दूसरी राहों पर न चलो वरना वोह राहें तुम्हें इस के रास्ते से जुदा कर देंगी।[1]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : एक दिन नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमारे सामने एक ख़त़ खींचा, फिर फ़रमाया : "येह **अल्लाह** का रास्ता है।" फिर उस के दाएं बाएं कुछ लकीरें खींचीं और फ़रमाया : "येह मुख़्तलिफ़ रास्ते हैं जिन में से हर रास्ते पर शैत़ान है जो उधर बुला रहा है।" फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह

1 .....ابن ماجه، كتاب السنّة، باب اتباع سنّة رسول الله صلى الله عليه وسلم، ١/١٥، الحديث: ١١.

www.dawateislami.net

आयत तिलावत फ़रमाई

وَ اَنَّ هٰذَا صِرَاطِیْ مُسْتَقِیْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَ لَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِیْلِهٖ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और येह कि येह मेरा सीधा रास्ता है तो इस पर चलो और दूसरी राहों पर न चलो वरना वोह राहें तुम्हें इस के रास्ते से जुदा कर देंगी ।[1]

सीधा रास्ता

इस से मा'लूम हुवा कि अ़क़ाइद की दुरुस्ती, इबादत की अदाएगी, मुआ़मलात की सफ़ाई और हुक़ूक़ का अदा करना सीधा रास्ता है। जो इन में से किसी में कोताही करता है वोह सीधे रास्ते पर नहीं । अ़क़ाइद, इबादात और मुआ़मलात जिस्म और दो बाज़ूओं की त़रह़ हैं जिन में से एक के बिग़ैर उड़ना ना मुम्किन है। उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि ''दफ़्तर तीन क़िस्म के हैं। एक दफ़्तर वोह है कि जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न बख़्शेगा। वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराना है, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

اِنَّ اللّٰهَ لَا یَغْفِرُ اَنْ یُّشْرَكَ بِهٖ[2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** न बख़्शेगा कि उस का शरीक ठहराया जाए ।

और एक दफ़्तर वोह है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ छोड़ेगा नहीं, वोह बन्दों के आपस के ज़ुल्म हैं ह़त्ता कि उन के बा'ज़ का बा'ज़ से बदला लेगा और एक दफ़्तर वोह है जिस की **अल्लाह** तआ़ला परवा नहीं करता, वोह बन्दों का अपने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरमियान ह़क़ तलफ़ी है, तो येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द है, अगर चाहे उसे सज़ा दे और अगर चाहे तो उस से दर गुज़र फ़रमाए ।''[3]

﴿وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ﴾ **: और दूसरी राहों पर न चलो ।** ﴾ यहां दूसरे रास्तों से मुराद वोह रास्ते हैं जो इस्लाम के ख़िलाफ़ हों यहूदिय्यत हो या नसरानिय्यत या और कोई मिल्लत । लिहाज़ा अगर तुम इस्लाम के ख़िलाफ़ रास्ते पर चले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रास्ते से अलग हो जाओगे । सूफ़ियाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم फ़रमाते हैं कि मुआ़मलात की ख़राबी इबादात की ख़राबी तक पहुंचा देती है और इबादात की ख़राबी कभी अ़क़ाइद की ख़राबी का ज़रीआ़ बन जाती है। तर्के मुस्तह़ब तर्के सुन्नत का और तर्के सुन्नत तर्के फ़र्ज़ का ज़रीआ़ है चोर को पहले दरवाज़े पर ही रोको ।

ثُمَّ اٰتَیْنَا مُوْسَی الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَی الَّذِیْۤ اَحْسَنَ وَ تَفْصِیْلًا لِّكُلِّ شَیْءٍ

1 .....سنن دارمی، باب فی کراھیۃ اخذ الرأی، ۱/۷۸، الحدیث: ۲۰۲ . 2 .....النساء: ۴۸ .
3 .....شعب الایمان، التاسع والاربعون من شعب الایمان... الخ، ۶/۵۲، الحدیث: ۷۴۷۳ .

www.dawateislami.net

وَّهُدًى وَّرَحْمَةٌ لَّعَلَّهُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۵۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर हम ने मूसा को किताब अ़ता फ़रमाई पूरा एह़सान करने को उस पर जो निकोकार है और हर चीज़ की तफ़्सील और हिदायत और रह़मत कि कहीं वोह अपने रब से मिलने पर ईमान लाएं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर हम ने मूसा को किताब अ़ता फ़रमाई ताकि नेक आदमी पर एह़सान पूरा हो और हर शै की तफ़्सील हो और हिदायत व रह़मत हो कि कहीं वोह अपने रब से मिलने पर ईमान लाएं।

﴿ثُمَّ اٰتَیْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ﴾ **: फिर हम ने मूसा को किताब अ़ता फ़रमाई ।﴾** यहां किताब से मुराद तौरैत शरीफ़ है। सब से पहले किताबे इलाही ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ही अ़ता हुई। इस से पहले पैग़म्बरों को सह़ीफ़े मिलते थे। और येह जो फ़रमाया कि "ताकि नेक आदमी पर एह़सान पूरा हो" ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : बनी इसराईल में मोह़सिन (या'नी नेक) और ग़ैर मोह़सिन भी थे तो **अल्लाह** तआ़ला ने मोह़सिनीन या'नी नेक लोगों पर अपनी ने'मत पूरी करने के लिये येह किताब नाज़िल फ़रमाई। इस की दूसरी तफ़्सीर येह है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **अल्लाह** तआ़ला के दिये हुए इ़ल्म के मुत़ाबिक़ नेक काम करते थे इस लिये **अल्लाह** तआ़ला ने इन पर ने'मत पूरी करने के लिये इन को किताब (या'नी तौरात) दी।[1]

फिर **अल्लाह** तआ़ला ने बयान फ़रमाया कि उस ने तौरात में दीन की क्या ने'मतें रखी हैं ? चुनान्चे फ़रमाया कि "इस में हर चीज़ की तफ़्सील है" इस से मुराद येह है कि इस में दीन के तमाम अह़काम अ़क़ाइद और मसाइल की तफ़्सील है, लिहाज़ा इस में हमारे नबी सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत और रिसालत का बयान और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत के तमाम दलाइल हैं और येह हिदायत और रह़मत है ताकि येह लोग **अल्लाह** तआ़ला से क़ियामत के दिन की मुलाक़ात पर ईमान ले आएं।[2]

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۱۵۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और येह बरकत वाली किताब हम ने उतारी तो इस की पैरवी करो और परहेज़ गारी करो कि तुम पर रह़्म हो।

1 .....قرطبی، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۵۴، ۴/۱۰۴، الجزء السابع. 2 .....تفسیر کبیر، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۵۴، ۵/۱۸۶.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और येह बरकत वाली किताब है जिसे हम ने नाज़िल किया है, तो तुम इस की पैरवी करो और परहेज़ गार बनो ताकि तुम पर रह़्म किया जाए।

﴿وَهٰذَا كِتٰبٌ : और येह किताब ।﴾ या'नी कुरआन शरीफ़ जो कसीर ख़ैर वाला, कसीर नफ़्अ़ वाला और कसीर बरकत वाला है और क़ियामत तक रहेगा और तह़रीफ़ो तब्दील व नस्ख़ से मह़फ़ूज़ रहेगा। कुरआन इस लिये मुबारक है कि मुबारक फ़िरिश्ता इसे लाया, मुबारक महीने रमज़ान में लाया, मुबारक ज़ात पर उतरा, ख़ालिक़ व मख़्लूक़ के दरमियान वसीला है, जिस काम पर इस की आयात पढ़ दी जाएं उस में बरकत हो जाए और सब से बढ़ कर इस की ता'लीमात और हिदायत बरकत वाली हैं।

﴿فَاتَّبِعُوْهُ : तो तुम इस की पैरवी करो ।﴾ या'नी कुरआने करीम में मज़्कूर अह़कामात पर अ़मल करो, मम्नूआ़त से बाज़ आ जाओ और इस की मुख़ालफ़त करने से बचो ताकि इस इत्तिबाअ़ और अ़मल की बरकत से तुम पर रह़्म किया जाए।

उम्मत पर कुरआने मजीद का ह़क़

इस से मा'लूम हुवा कि उम्मत पर कुरआने मजीद का एक ह़क़ येह है कि वोह इस मुबारक किताब की पैरवी करें और इस के अह़काम की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने से बचें। अफ़्सोस ! फ़ी ज़माना कुरआने करीम पर अ़मल के ए'तिबार से मुसल्मानों का ह़ाल इन्तिहाई ना गुफ़्ता बेह है, आज मुसल्मानों ने इस किताब की रोज़ाना तिलावत करने की बजाए इसे घरों में जुज़्दान व ग़िलाफ़ की ज़ीनत बना कर और दुकानों पर कारोबार में बरकत के लिये रखा हुवा है और तिलावत करने वाले भी सह़ीह़ त़रीक़े से तिलावत करते हैं और न येह समझने की कोशिश करते हैं कि उन के रब عَزَّوَجَلَّ ने इस किताब में उन के लिये क्या फ़रमाया है। तारीख़ गवाह है कि जब तक मुसल्मानों ने इस मुक़द्दस किताब को सीने से लगा कर ह़िर्ज़े जां बनाए रखा और इस के दस्तूर व क़वानीन और अह़कामात पर सख़्ती से अ़मल पैरा रहे तब तक दुन्या भर में इन की शौकत का डंका बजता रहा और ग़ैरों के दिल मुसल्मानों का नाम सुन कर दहल्ते रहे और जब से मुसल्मानों ने कुरआने अ़ज़ीम के अह़काम पर अ़मल छोड़ रखा है तब से वोह दुन्या भर में ज़लीलो ख़्वार हो रहे और अग़्यार के दस्त निगर बन कर रह गए हैं।

वोह ज़माने में मुअ़ज़्ज़ज़ थे मुसल्मां हो कर और हम ख़्वार हुए तारिके कुरआं हो कर

कुरआने करीम के अह़काम पर अ़मल न करने का दुन्यवी नुक़्सान तो अपनी जगह, उख़्रवी नुक़्सान भी इन्तिहाई शदीद है, चुनान्चे

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये करीम

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ुरआन शफ़ाअ़त करने वाला है और इस की शफ़ाअ़त मक़्बूल है, जिस ने (इस के अह़्कामात पर अ़मल कर के) इसे अपने सामने रखा तो येह उसे पकड़ कर जन्नत की त़रफ़ ले जाएगा और जिस ने (इस के अह़्कामात की ख़िलाफ़ वर्ज़ी कर के) इसे अपने पीछे रखा तो येह उसे हांक कर जहन्नम की त़रफ़ ले जाएगा।"(1)

اَنْ تَقُوْلُوْۤا اِنَّمَاۤ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى طَآىِٕفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۪ وَ اِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ۙ(۱۵۶)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : कभी कहो कि किताब तो हम से पहले दो गुरौहों पर उतरी थी और हमें उन के पढ़ने पढ़ाने की कुछ ख़बर न थी।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (इस लिये उतरा) ताकि तुम येह (न) कहो कि किताब तो हम से पहले दो गुरौहों पर उतरी थी और हमें उन के पढ़ने पढ़ाने की कुछ ख़बर न थी।

﴿اَنْ تَقُوْلُوْا : कभी कहो।﴾ या'नी येह क़ुरआन इस लिये नाज़िल किया है ताकि तुम्हें येह कहने की गुन्जाइश बाक़ी न रहे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताबें जैसे तौरात व इन्जील तो हम से पहले के दो गुरौहों पर या'नी यहूदियों और ईसाइयों पर उतरी थीं, हमारी अ़रब की सर ज़मीन में तो न कोई रसूल आया और न कोई किताब। फिर जो किताबें तौरैत व इन्जील आईं वोह हमारी ज़बान में न थीं और न ही हमें किसी ने उन के मा'ना बताए फिर हम हिदायत पर कैसे आते। **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआने करीम नाज़िल फ़रमा कर बता दिया कि अब तुम्हारा कोई उ़ज़्र बाक़ी न रहा और तुम यहूदो नसारा के मोह़्ताज न रहे।

اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّاۤ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّاۤ اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ صَدَفَ عَنْهَا ؕ سَنَجْزِي الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا

(1) .....معجم الكبير، ومن مسند عبد الله بن مسعود رضی الله عنه، ١٠/١٩٨، الحديث: ١٠٤٥٠، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ﴿۱۵۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : या कहो कि अगर हम पर किताब उतरती तो हम उन से ज़ियादा ठीक राह पर होते तो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की रोशन दलील और हिदायत और रह़मत आई तो उस से ज़ियादा ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** की आयतों को झुटलाए और उन से मुंह फेरे अ़न्क़रीब वोह जो हमारी आयतों से मुंह फेरते हैं हम उन्हें बुरे अ़ज़ाब की सज़ा देंगे बदला उन के मुंह फेरने का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : या (ताकि तुम येह न) कहो कि अगर हम पर किताब उतरती तो हम उन से ज़ियादा हिदायत याफ़्ता होते तो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की रोशन दलील और हिदायत और रह़मत आ गई है तो उस से ज़ियादा ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** की आयतों को झुटलाए और उन से मुंह फेरे। अ़न्क़रीब वोह लोग जो हमारी आयतों से मुंह फेरते हैं हम उन्हें उन के मुंह फेरने की वज्ह से बुरे अ़ज़ाब की सज़ा देंगे।

﴿اَوْ تَقُوْلُوْا﴾ **: या कहो।** ﴿ **शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे अ़रब की एक जमाअ़त ने कहा था कि यहूदो नसारा पर तौरैत व इन्जील नाज़िल हुई मगर वोह बे अ़क़्ल उन किताबों से हिदायत ह़ासिल न कर सके हम उन की त़रह़ ख़फ़ीफ़ुल अ़क़्ल और नादान नहीं हैं हमारी अ़क़्लें सह़ीह़ हैं और हमारी अ़क़्लो ज़िहानत और फ़ह्मो फ़िरासत तो ऐसी है कि अगर हम पर किताब उतरती तो हम उन से ज़ियादा सीधे राह पर होते। उन के जवाब में येह आयते करीमा नाज़िल हुई। और इस त़रह़ उन का येह उ़ज़्र भी ख़त्म फ़रमा दिया गया।[1]

सिर्फ़ अ़क़्ल पर भरोसा नहीं करना चाहिये

इस से मा'लूम हुवा कि सिर्फ़ अपनी अ़क़्ल पर ए'तिमाद न करना चाहिये बल्कि रब तआ़ला के फ़ज़्ल पर भरोसा करना ज़रूरी है क्यूं कि येह शैख़ी मारने वाले भी काफ़िर ही रहे ईमान न लाए इस लिये कि इन्हों ने अ़क़्ल पर भरोसा किया।

﴿فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ﴾ **: तो उस से ज़ियादा ज़ालिम कौन जो।** ﴿ या'नी जो नबी के मो'जिज़ात और उन की किताबों का इन्कार करता है वोह सब से बड़ा ज़ालिम है क्यूं कि वोह अपनी जान पर ज़ुल्म करता है कि उसे दाइमी अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ बनाता है।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِيَ بَعْضُ

1 .....خازن، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۵۷، ۲/۷۱.

www.dawateislami.net

اٰیٰتِ رَبِّكَ ؕ یَوْمَ یَاْتِیْ بَعْضُ اٰیٰتِ رَبِّكَ لَا یَنْفَعُ نَفْسًا اِیْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِیْۤ اِیْمَانِهَا خَیْرًا ؕ قُلِ انْتَظِرُوْۤا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿۱۵۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : काहे के इन्तिज़ार में हैं मगर येह कि आएं उन के पास फ़िरिश्ते या तुम्हारे रब का अ़ज़ाब आए या तुम्हारे रब की एक निशानी आए जिस दिन तुम्हारे रब की वोह एक निशानी आएगी किसी जान को ईमान लाना काम न देगा जो पहले ईमान न लाई थी या अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई थी तुम फ़रमाओ रस्ता देखो हम भी देखते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह सिर्फ़ इसी चीज़ का इन्तिज़ार कर रहे हैं कि उन के पास फ़िरिश्ते आ जाएं या तुम्हारे रब का अ़ज़ाब आ जाए या तुम्हारे रब की कुछ निशानियां आ जाएं। जिस दिन तेरे रब की बा'ज़ निशानियां आ जाएंगी उस दिन किसी शख़्स को उस का ईमान क़बूल करना नफ़्अ़ न देगा जो उस से पहले ईमान न लाया होगा या जिस ने अपने ईमान में कोई भलाई न ह़ासिल की होगी। तुम फ़रमा दो : तुम भी इन्तिज़ार करो और हम भी मुन्तज़िर हैं।

﴿هَلْ یَنْظُرُوْنَ﴾ **: किस के इन्तिज़ार में हैं।﴾** या'नी जब **अल्लाह** तआ़ला की वह़दानिय्यत और रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत पर दलाइल क़ाइम कर दिये गए और कुफ़्रिय्या और गुमराह कुन अ़क़ाइद का बातिल होना भी ज़ाहिर कर दिया गया तो अब ईमान लाने में क्या इन्तिज़ार बाक़ी है ? अब तो येही है कि वोह कुफ़्फ़ार इस चीज़ का इन्तिज़ार कर रहे हैं कि उन के पास उन की रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये मौत के फ़िरिश्ते आ जाएं या तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब आ जाए या तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की क़ियामत की ख़बर देने वाली एक निशानी आ जाए और यूं मुशाहदे के तौ़र पर हर चीज़ उन के लिये ज़ाहिर हो जाए, लेकिन उन लोगों को येह मा'लूम नहीं कि जिस दिन ग़ैब के मुआ़मलात ज़ाहिर हो जाएंगे या अ़ज़ाब आंखों के सामने आ चुका होगा तो उस दिन काफ़िर को ईमान लाना नफ़्अ़ न देगा। जुम्हूर मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि आयत में जो फ़रमाया गया कि **"जिस दिन तेरे रब की एक निशानी आएगी"** इस निशानी से मुराद **आफ़्ताब का मग़रिब से तुलूअ़ होना** है चुनान्चे बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि क़ियामत क़ाइम न होगी जब तक सूरज मग़रिब से तुलूअ़ न हो और जब वोह मग़रिब से

www.dawateislami.net

तुलूअ़ होगा और उसे लोग देखेंगे तो सब ईमान लाएंगे और येह ईमान नफ़्अ़ न देगा ।[1]

﴿اَوْ كَسَبَتْ فِيْۤ اِيْمَانِهَا خَيْرًا﴾ : **या जिस ने अपने ईमान में कोई भलाई (न) ह़ासिल की होगी ।** इस के मा'ना येह हैं कि मग़रिब की जानिब से सूरज तुलूअ़ होने से पहले जिस गुनहगार मोमिन ने तौबा न की तो अब उस की तौबा मक़्बूल नहीं ।[2]

इमाम ज़ह़्ह़ाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस निशानी के ज़ाहिर होने से पहले जो मोमिन नेक आ'माल करता था निशानी ज़ाहिर होने के बा'द भी इसी त़रह़ उस के नेक आ'माल **अल्लाह** तआ़ला क़बूल फ़रमाएगा अलबत्ता जब येह निशानी ज़ाहिर हुई तो उस वक़्त न काफ़िर का ईमान मक़्बूल है न गुनहगार की तौबा क्यूं कि येह ऐसी ह़ालत है जिस ने उन्हें ईमान लाने और गुनाहों से तौबा करने पर मजबूर कर दिया लिहाज़ा जिस त़रह़ अ़ज़ाबे इलाही देख कर कुफ़्फ़ार का ईमान लाना बे फ़ाएदा है इसी त़रह़ क़ुर्बे क़ियामत के होलनाक मनाज़िर देख कर भी ईमान और तौबा क़बूल नहीं ।[3]

तौबा और नेक आ'माल में सब्क़त करने की तरग़ीब

इस आयत में हर मुसल्मान के लिये नसीह़त है कि वोह जल्द से जल्द अपने गुनाहों से सच्ची चौबा कर के नेक आ'माल में मसरूफ़ हो जाए । नेक आ'माल में सब्क़त करने की तरग़ीब ह़दीसे पाक में भी दी गई है, चुनान्चे ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "छे चीज़ों के ज़ाहिर होने से पहले नेक अ़मल करने में सब्क़त करो, सूरज के मग़रिब से तुलूअ़ होने, धूएं, दज्जाल, दाब्बतुल अर्द़, तुम में से किसी एक की मौत या सब की मौत (या'नी क़ियामत) से पहले ।"[4]

और इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : तौबा में ताख़ीर करना सख़्त नुक़्सान देह है, क्यूं कि गुनाह से इब्तिदाअन क़सावते क़ल्बी पैदा होती है, फिर रफ़्ता रफ़्ता गुनाह का अन्जाम येह होता है कि इन्सान कुफ़्रो गुमराही और बद बख़्ती में मुब्तला हो जाता है, क्या तुम इब्लीस और बल्अ़म बिन बाऊ़रा का वाक़िआ़ भूल गए, इन से इब्तिदा में एक ही गुनाह सादिर हुवा था, आख़िर नतीजा येह हुवा कि वोह कुफ़्र में मुब्तला हो गए और हमेशा के लिये तबाह ह़ाल लोगों में शामिल हो गए । उन के अन्जाम को मद्दे नज़र रखते हुए तुम डरते रहो और तुम पर लाज़िम है कि तौबा के बारे में अपने अन्दर बेदारी और जां फ़िशानी पैदा करो, (अगर

1 .....بخاری، کتاب التفسیر، باب لا ینفع نفساً ایمانها... الخ، ۳/۲۲۳، الحدیث: ٤٦٣٥، مسلم، کتاب الایمان، باب بیان زمن الذی لا یقبل فیه الایمان، ص ۹۲، الحدیث: ۲٤۸(۱۵۷).

2 .....تفسیر طبری، الانعام، تحت الآیة: ۱۵۸، ۵/۷، ٤، ملخصاً. 3 .....خازن، الانعام، تحت الآیة: ۱۵۸، ۲/۷۳.

4 .....مسلم، کتاب الفتن و اشراط الساعة، باب فی بقیة من احادیث الدجال، ص ۱۵۷۹، الحدیث: ۱۲۸(۲۹٤۷).

www.dawateislami.net

तुम ने जल्द तौबा कर ली) तो अ़न्क़रीब तुम्हारे दिल से गुनाहों के इसरार की बीमारी का क़ल्अ़ क़म्अ़ हो जाएगा और गुनाहों के बोझ से तुम्हारी गरदन आज़ाद हो जाएगी और गुनाहों की वज्ह से दिल में जो क़सावत और सख़्ती पैदा होती है उस से हरगिज़ बे ख़ौफ़ न हो बल्कि हर वक़्त अपने ह़ाल पर नज़र रखो, अपने नफ़्स को गुनाहों पर टोकते रहो और इस का मुह़ासबा करते रहो और तौबा व इस्तिग़फ़ार की त़रफ़ सब्क़त व जल्दी करो और इस में किसी क़िस्म की सुस्ती और कोताही न करो क्यूं कि मौत का वक़्त किसी को मा'लूम नहीं और दुन्या की ज़िन्दगी महज़ धोका और फ़रेब है ।[1]

﴿قُلِ انْتَظِرُوْا﴾ **: तुम फ़रमा दो : तुम इन्तिज़ार करो ।** ﴾ या'नी ऐ काफ़िरो ! तुम मौत के फ़िरिश्तों की आमद या अ़ज़ाब या निशानी, इन में से किसी एक के आने का इन्तिज़ार करो और हम भी तुम पर अ़ज़ाब आने का इन्तिज़ार कर रहे हैं । अ़न्क़रीब मा'लूम हो जाएगा कि किस का इन्तिज़ार दुरुस्त था चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से काफ़िर हलाक और मग़लूब हुए जब कि मुसल्मानों को ग़लबा अ़त़ा हुवा और क़ियामत के दिन भी कुफ़्फ़ार हलाक होंगे और मोमिन काम्याबो कामरान हो कर सुर्ख़रू होंगे ।

اِنَّ الَّذِیْنَ فَرَّقُوْا دِیْنَهُمْ وَ كَانُوْا شِیَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِیْ شَیْءٍؕ اِنَّمَاۤ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ یُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا یَفْعَلُوْنَ(۱۵۹)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जिन्हों ने अपने दीन में जुदा जुदा राहें निकालीं और कई गुरौह हो गए ऐ मह़बूब तुम्हें उन से कुछ अ़लाक़ा नहीं उन का मुआ़मला **अल्लाह** ही के ह़वाले है फिर वोह उन्हें बता देगा जो कुछ वोह करते थे ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जिन्हों ने अपने दीन के टुकड़े टुकड़े कर दिये और ख़ुद मुख़्तलिफ़ गुरौह बन गए ऐ ह़बीब ! आप का उन से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं । उन का मुआ़मला सिर्फ़ **अल्लाह** के ह़वाले है फिर वोह उन्हें बता देगा जो कुछ वोह किया करते थे ।

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ فَرَّقُوْا دِیْنَهُمْ﴾ **: बेशक वोह लोग जिन्हों ने अपने दीन के टुकड़े टुकड़े कर दिये ।** ﴾ अपना दीन टुकड़े टुकड़े करने वालों से कौन लोग मुराद हैं, इस बारे में मुफ़स्सिरीन के मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं, उन में से दो क़ौल दर्जे ज़ैल हैं :

(1)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : इन लोगों से मुराद यहूदी

[1] .....منهاج العابدين، العقبة الثانية، ص ٣٥-٣٦.

www.dawateislami.net

और ईसाई हैं । **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बि'सत से पहले वोह एक दूसरे से इख़्तिलाफ़ करते थे और बा'द में मुख़्तलिफ़ फ़िर्क़ों में तक़्सीम हो गए ।[1]

(2)..... ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इन से तमाम मुश्रिकीन मुराद हैं क्यूं कि इन में से बा'ज़ ने बुतों की पूजा की और कहा कि येह **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में हमारी सिफ़ारिश करेंगे । बा'ज़ ने फ़िरिश्तों की इबादत की और कहा कि फ़िरिश्ते **अल्लाह** तआ़ला की बेटियां हैं और बा'ज़ ने सितारों की परस्तिश की, तो येह उन की दीन में तफ़रीक़ है ।[2]

फ़िर्क़ा बन्दी का सबब और ह़क़ पर कौन ?

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने मुसल्मानों को जमाअ़त के साथ वाबस्ता रहने का हुक्म दिया है और उन्हें इख़्तिलाफ़ और फ़िर्क़ा बन्दी से मन्अ़ फ़रमाया है और येह ख़बर दी है कि उन से पहले लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीन में झगड़ने की वज्ह से हलाक हो गए ।[3]

ख़ुलासा येह कि इस आयत में मुसल्मानों को एक नज़रिय्ये पर मुत्तफ़िक़ होने, दीन में फ़िर्क़ा बन्दी और बिदआ़त इख़्तियार करने से बचने की ता'लीम दी गई है । फ़ी ज़माना बा'ज़ लोग येह सुवाल करते हैं कि इस्लाम में फ़िर्क़ा बन्दी क्यूं है और इन में ह़क़ पर कौन है ? इस सिल्सिले में चन्द बातें ज़ेह्न नशीन कर लीजिये, اِنْ شَآءَ اللهُ आप पर ख़ुद ही वाज़ेह़ हो जाएगा कि फ़िर्क़ा बन्दी का अस्ल सबब क्या है और मुख़्तलिफ़ फ़िर्क़ों में से ह़क़ पर कौन सा फ़िर्क़ा है ।

पहली बात : येह उम्मत कभी गुमराही पर जम्अ़ न होगी । ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''اِنَّ اُمَّتِیْ لَا تَجْتَمِعُ عَلٰی ضَلَالَةٍ فَاِذَا رَاَیْتُمُ اخْتِلَافًا فَعَلَیْكُمْ بِالسَّوَادِ الْاَعْظَمِ'' मेरी उम्मत गुमराही पर जम्अ़ न होगी, जब तुम इख़्तिलाफ़ देखो तो सब से बड़ी जमाअ़त को लाज़िम पकड़ लो ।[4]

दूसरी बात : ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **ने सदियों पहले ही इस इख़्तिलाफ़ और फ़िर्क़ा बन्दी के बारे में पेशीन गोई फ़रमा दी थी,** चुनान्चे ह़ज़रते औ़फ़ बिन मालिक से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''وَالَّذِیْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِیَدِهٖ لَتَفْتَرِقَنَّ اُمَّتِیْ عَلٰی ثَلَاثٍ وَسَبْعِیْنَ فِرْقَةً، وَاحِدَةٌ فِی الْجَنَّةِ وَثِنْتَانِ وَسَبْعُوْنَ فِی النَّارِ، قِیْلَ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَنْ هُمْ قَالَ الْجَمَاعَةُ'' उस ज़ात की क़सम ! जिस के दस्ते क़ुदरत में मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की जान है, मेरी उम्मत **73**

1 .....تفسیر ابن ابی حاتم، الانعام، تحت الآیة: ۱۵۹، ۵/۱۴۳۰ .
2 .....خازن، الانعام، تحت الآیة: ۱۵۹، ۲/۷۲. 3 .....تفسیر ابن ابی حاتم، الانعام، تحت الآیة: ۱۵۹، ۵/۱۴۳۰ .
4 .....ابن ماجه، کتاب الفتن، باب السواد الاعظم، ۴/۳۲۷، الحدیث: ۳۹۵۰.

www.dawateislami.net

फ़िर्क़ों में तक़्सीम हो जाएगी (उन में से) एक जन्नत में जाएगा और **72** जहन्नम में जाएंगे। अ़र्ज़ की गई **: या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, वोह जन्नती कौन होंगे ? इर्शाद फ़रमाया **:** वोह जमाअ़त है।[1]

वाक़िआ़त ने साबित कर दिया है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इख़्तिलाफ़े उम्मत के बारे में जो कुछ फ़रमाया वोह ऐ़न ह़क़ और सवाब पर मब्नी था।

तीसरी बात : येह बात इन्तिहाई क़ाबिले ग़ौर है कि इस दौरे इख़्तिलाफ़ में ह़क़ पसन्द और नजात पाने वाले गुरौह का पता कैसे चलेगा, किस त़रह़ मा'लूम होगा कि मौजूदा फ़िर्क़ों में ह़क़ पर कौन है ? इस की रहनुमाई भी ह़दीसे पाक में कर दी गई है कि ''اِذَا رَاَيْتُمُ اخْتِلَافًا فَعَلَيْكُمْ بِالسَّوَادِ الْاَعْظَمِ'' जब तुम इख़्तिलाफ़ देखो तो सब से बड़ी जमाअ़त को लाज़िम पकड़ लो।[2]

इस रिवायत में इख़्तिलाफ़ से मुराद उसूली इख़्तिलाफ़ हैं जिस में ''कुफ़्र व ईमान'' और ''हिदायत व ज़लालत'' का फ़र्क़ पाया जाए, फ़ुरूई इख़्तिलाफ़ हरगिज़ मुराद नहीं क्यूं कि वोह तो रह़मत है जैसा कि ह़दीसे पाक में है ''اِخْتِلَافُ اُمَّتِیْ رَحْمَةٌ'' मेरी उम्मत का (फ़ुरूई) इख़्तिलाफ़ रह़मत है।[3]

इस तफ़्सील को ज़ेह्न में रख कर मौजूदा इस्लामी फ़िर्क़ों में उस बड़े फ़िर्क़े को तलाश कीजिये जो बाहम उसूलों में मुख़्तलिफ़ न हों और जिस क़दर इस्लामी फ़िर्क़े उस के साथ उसूली इख़्तिलाफ़ रखते हों वोह उन सब में बड़ा हो। आप को अहले सुन्नत व जमाअ़त के सिवा कोई न मिलेगा जिस में ह़नफ़ी, शाफ़ेई, मालिकी, ह़म्बली, क़ादिरी, चिश्ती, सोह़रवर्दी, नक़्शबन्दी, अश्अ़री, मातुरीदी सब शामिल हैं येह सब अहले सुन्नत हैं और इन के माबैन कोई ऐसा उसूली इख़्तिलाफ़ नहीं जिस में कुफ़्र व ईमान या हिदायत व ज़लाल का फ़र्क़ पाया जाए लिहाज़ा इस पुर फ़ितन दौर में ह़दीसे मज़्कूर की रू से सवादे आ'ज़म अहले सुन्नत व जमाअ़त है और इस का ह़क़ पर होना भी साबित हुवा।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰۤى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۶۰﴾

1 .....ابن ماجه، كتاب الفتن، باب افتراق الامم، ٤/٣٥٢، الحديث: ٣٩٩٢.
2 .....ابن ماجه، كتاب الفتن، باب السواد الاعظم، ٤/٣٢٧، الحديث: ٣٩٥٠.
3 .....كنز العمال، كتاب العلم، قسم الاقوال، ٥/٥٩، الحديث: ٢٨٦٨٢، الجزء العاشر.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जो एक नेकी लाए तो उस के लिये उस जैसी दस हैं और जो बुराई लाए तो उसे बदला न मिलेगा मगर उस के बराबर और उन पर जुल्म न होगा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जो एक नेकी लाए तो उस के लिये उस जैसी दस नेकियां हैं और जो कोई बुराई लाए तो उसे सिर्फ़ इतना ही बदला दिया जाएगा और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा।

﴿مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ﴾ **: जो एक नेकी लाए।** ﴾ या'नी एक नेकी करने वाले को दस नेकियों की जज़ा और येह कोई इन्तिहाई मिक़्दार नहीं बल्कि येह तो फ़ज़्ले इलाही की इब्तिदा है। **अल्लाह** तआ़ला जिस के लिये जितना चाहे उस की नेकियों को बढ़ाए एक के सात सो करे या बे हिसाब अ़ता फ़रमाए।

सवाब के दरजात

इस आयत से मुतअ़ल्लिक़ अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस आयत में जिस इज़ाफ़े का वा'दा किया है येह उस का कम अज़ कम हिस्सा है।[1]

एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाते हैं : आयत से मुराद कि "**जो एक नेकी लाए**" के मुक़ाबले में सवाब के मरातिब में से अक़ल मर्तबे का बयान है और इस के अक्सर मर्तबे की कोई इन्तिहा नहीं।[2]

ह़ज़रते मुल्ला अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ज़ाहिर येह है कि येह अक़ल (या'नी कम अज़ कम) इज़ाफ़ा है।[3]

एक और मक़ाम पर फ़रमाया : और वोह ज़ियादती का क़लील मर्तबा है जिस का वा'दा **अल्लाह** तआ़ला के इस फ़रमान में किया गया है "مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا" जो एक नेकी लाए तो उस के लिये उस जैसी दस हैं।[4]

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान बिन शहाबुद्दीन बग़्दादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "नेकी का दस गुना इज़ाफ़ा तमाम नेकियों के लिये लाज़िम है, इस की दलील **अल्लाह** तआ़ला का येह फ़रमाने आ़लीशान है "مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا" जो एक नेकी लाए तो उस के लिये उस जैसी दस हैं।"[5]

1 ……فیض القدیر، حرف الهمزة، ۲/۳۱۳، تحت الحدیث: ۱۷۶۳.
2 ……فیض القدیر، حرف المیم، ۶/۱۸۸، تحت الحدیث: ۸۷۳۱.
3 ……مرقاة المفاتیح، کتاب الصلاة، باب صلاة علی النبی صلی الله علیه وسلم وفضلها، الفصل الاول، ۳/۱۰، تحت الحدیث: ۹۲۱.
4 ……مرقاة المفاتیح، کتاب فضائل القرآن، الفصل الثانی، ۴/۶۴۷، تحت الحدیث: ۲۱۳۷.
5 ……جامع العلوم والحکم، الحدیث السابع والثلاثون، ص۴۳۶.

www.dawateislami.net

अ़ल्लामा अह़मद सावी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस आयत में जो जज़ा बयान हुई येह उस के लिये है जो नेकी या गुनाह करे अलबत्ता जिस ने नेकी का इरादा किया और उसे कर न सका तो उस के लिये एक नेकी लिखी जाएगी और जिस ने गुनाह का इरादा किया लेकिन गुनाह किया नहीं, अब अगर उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ की वज्ह से गुनाह छोड़ा होगा तो उस के नामए आ'माल में एक नेकी लिखी जाएगी वरना कुछ न लिखा जाएगा ।[1]

याद रहे कि सवाब के अक्सर दरजात की कोई ह़द नहीं, क़ुरआने पाक में सात सो गुना का ज़िक्र फ़रमाने के बा'द फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के लिये चाहे इस से भी ज़ियादा बढ़ा दे और क़ुरआने पाक में सब्र पर बे ह़िसाब अज्र का वा'दा है और ह़दीस में मक्का से पैदल ह़ज करने पर हर क़दम पर सात करोड़ नेकियों की बिशारत है ।

﴿وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ﴾ : **और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा** ।﴾ इर्शाद फ़रमाया कि उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा ख़्वाह इस त़रह़ कि इत़ाअ़त गुज़ार और नेक आ'माल करने वाले के सवाब में कमी कर दी जाए और ना फ़रमान और गुनहगार को उस के जुर्म से ज़ियादा सज़ा दे दी जाए या इस त़रह़ कि उन्हें जुर्म किये बिग़ैर अ़ज़ाब दिया जाए । इस से मा'लूम हुवा कि कुफ़्फ़ार के छोटे बच्चे जो बचपन में फ़ौत हो जाएं वोह दोज़ख़ी नहीं क्यूं कि उन्हों ने कोई गुनाह नहीं किया ।

ज़ुल्म के मा'ना

ज़ुल्म के दो मा'ना हैं :

(1)..... किसी ग़ैर की चीज़ में बिला इजाज़त तसर्रुफ़ करना ।[2]

(2)..... बे क़ुसूर को सज़ा दे देना या काम ले कर उस की उजरत न देना ।[3]

इन जैसी आयात में ज़ुल्म के दूसरे मा'ना मुराद हैं और ह़दीसे पाक कि अगर ख़ुदा तमाम दुन्या को दोज़ख़ में भेज दे तो ज़ालिम नहीं । इस की वज्ह येही है कि हर चीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मिल्किय्यत है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी मिल्किय्यत में जैसे चाहे तसर्रुफ़ फ़रमाए ।

قُلْ اِنَّنِیْ هَدٰىنِیْ رَبِّیْۤ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍۚ دِیْنًا قِیَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ

1 .....تفسیر صاوی، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۶۰، ۲/۶۵۲. 2 .....صاوی، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۶۰، ۲/۶۵۲.
3 .....جامع العلوم والحکم، الحدیث الرابع والعشرون، ص ۲۸۱، التیسیر شرح جامع صغیر، حرف العین، ۲/۱۳۵.

www.dawateislami.net

حَنِیْفًا ؕ وَ مَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۱۶۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ बेशक मुझे मेरे रब ने सीधी राह दिखाई ठीक दीन इब्राहीम की मिल्लत जो हर बातिल से जुदा थे और मुश्रिक न थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ, बेशक मुझे मेरे रब ने सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत फ़रमाई, (येह) मज़बूत दीन है जो हर बातिल से जुदा इब्राहीम की मिल्लत है और वोह मुश्रिकों में से नहीं थे।

﴿قُلْ اِنَّنِیْ هَدٰىنِیْ رَبِّیْۤ﴾ **: तुम फ़रमाओ, बेशक मुझे मेरे रब ने हिदायत फ़रमाई ।**﴾ इस से दो मस्अले मा'लूम हुए एक येह कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बिला वासिता रब तआ़ला ने अ़क़ाइद, आ'माल हर क़िस्म की हिदायत दी। दूसरे येह कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अव्वल से हिदायत पर थे एक आन के लिये इस से दूर न हुए। जो एक आन के लिये भी हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हिदायत से अ़लाहदा माने वोह इस आयत का मुन्किर है। हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरे रब ने मुझे अदब सिखाया और बहुत अच्छा अदब सिखाया।"[1]

﴿وَ مَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ﴾ **: और (इब्राहीम) मुश्रिकों में से न थे ।**﴾ इस में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश का रद है जो गुमान करते थे कि वोह दीने इब्राहीमी पर हैं **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया कि हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मुश्रिक व बुत परस्त न थे तो बुत परस्ती करने वाले मुश्रिकीन का येह दा'वा कि वोह इब्राहीमी मिल्लत पर हैं बातिल है।

अ़ज़मते अम्बिया

इस से मा'लूम हुवा कि पैग़म्बरों से कुफ़्फ़ार के इल्ज़ाम उठाना सुन्नते इलाहिय्यह है, जो इन की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत पर अपनी जानो माल, तह़रीर, तक़रीर सर्फ़ करता है वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मक़्बूल है। रब तआ़ला ने हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से कुफ़्फ़ार का येह इल्ज़ाम कि "आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, مَعَاذَ الله मुश्रिक थे" दफ़्अ़ फ़रमाया।

1 .....جامع صغير، حرف الهمزة، ص ٢٥، الحديث: ٣١٠.

www.dawateislami.net

قُلْ اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُكِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۙ﴿۱۶۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ बेशक मेरी नमाज़ और मेरी क़ुरबानियां और मेरा जीना और मेरा मरना सब **अल्लाह** के लिये है जो रब सारे जहान का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ, बेशक मेरी नमाज़ और मेरी क़ुरबानियां और मेरा जीना और मेरा मरना सब **अल्लाह** के लिये है जो सारे जहानों का रब है।

﴿وَمَحْیَایَ : **और मेरा जीना।**﴾ यहां जो फ़रमाया गया वोह ह़क़ीक़तन एक मोमिन ज़िन्दगी की अ़क्कासी है कि मुसल्मान का जीना, मरना और इ़बादतो रियाज़त सब कुछ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये होना चाहिये। ज़िन्दगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के कामों में और जीने का मक़्सद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीन की सर बुलन्दी हो। यूंही मरना ह़ालते ईमान में हो और हो सके तो कलिमए ह़क़ बुलन्द करने के लिये हो। यूंही इ़बादत का शिर्के जली से पाक होना तो बहर ह़ाल ईमानिय्यात में दाख़िल है, इ़बादत शिर्के ख़फ़ी या'नी रियाकारी से भी पाक हो और ख़ालिसतन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुशनूदी के लिये हो।

لَا شَرِیْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۱۶۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उस का कोई शरीक नहीं मुझे येही हुक्म हुवा है और मैं सब से पहला मुसल्मान हूं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उस का कोई शरीक नहीं, इसी का मुझे हुक्म दिया गया है और मैं सब से पहला मुसल्मान हूं।

﴿وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِیْنَ : **और मैं सब से पहला मुसल्मान हूं।**﴾ अव्वलिय्यत या तो इस ए'तिबार से है कि अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इस्लाम उन की उम्मत पर मुक़द्दम होता है[1] या इस ए'तिबार से कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अव्वले मख़्लूक़ात हैं तो ज़रूर अव्वलुल मुस्लिमीन हुए।[2]

1 .....بیضاوی، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۶۳، ۲/۴۷۲.

2 .....قرطبی، الانعام، تحت الآیۃ: ۱۶۳، ۴/۱۱۳، الجزء السابع.

www.dawateislami.net

सब से पहले मोमिन

इस से मा'लूम हुवा कि सारी मख़्लूक़ में सब से पहले मोमिन हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं। हज़रते जिब्रील और मीकाईल عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से पहले भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आबिद बल्कि नबी थे। اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ (**तरजमा :** क्या मैं तुम्हारा रब नहीं ?) के जवाब में सब से पहले हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने بَلٰى (**तरजमा :** क्यूं नहीं) फ़रमाया था,[1] फिर और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने, फिर दूसरे लोगों ने।

قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِیْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَیْءٍ ؕ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا عَلَیْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰی ۚ ثُمَّ اِلٰی رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَیُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِیْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۶۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ क्या **अल्लाह** के सिवा और रब चाहो हालां कि वोह हर चीज़ का रब है और जो कोई कुछ कमाए वोह उसी के ज़िम्मे है और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी फिर तुम्हें अपने रब की तरफ़ फिरना है वोह तुम्हें बता देगा जिस में इख़्तिलाफ़ करते थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ, क्या **अल्लाह** के सिवा और रब तलब करूं हालां कि वोह हर चीज़ का रब है और हर शख़्स जो अमल करेगा वोह उसी के ज़िम्मे है और कोई बोझ उठाने वाला आदमी किसी दूसरे आदमी का बोझ नहीं उठाएगा फिर तुम्हें अपने रब की तरफ़ लौटना है तो वोह तुम्हें बता देगा जिस में इख़्तिलाफ़ करते थे।

﴿قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِیْ رَبًّا﴾ : **तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के सिवा और रब चाहूं।** ﴿ **शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ार ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कहा था कि आप हमारे दीन में दाख़िल हो जाएं और हमारे मा'बूदों की इबादत करें। हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि वलीद बिन मुग़ीरा कहता था कि मेरा रास्ता इख़्तियार करो, इस में अगर कुछ गुनाह है तो मेरी गरदन पर, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि वोह

1 .....فیض القدیر، حرف الکاف، ٥/٦٩، تحت الحدیث: ٦٤٢٤.

www.dawateislami.net

रास्ता बातिल है, खुदा शनास किस त़रह़ गवारा कर सकता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी और को खुदा माने, नीज़ येह बात भी बातिल है कि किसी का गुनाह दूसरा उठा सके बल्कि हर शख़्स जो अ़मल करेगा वोह उसी पर है।

﴿وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى﴾ : **और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी।** या'नी मुजरिम गुनाह से बिल्कुल बरी हो जाए और किसी दूसरे पर उस के गुनाह डाल दिये जाएं येह नहीं हो सकता और यूंही एक आदमी के गुनाह दूसरे पर बिग़ैर किसी सबब के डाल दिये जाएं येह भी नहीं हो सकता अलबत्ता जो आदमी गुनाह का त़रीक़ा ईजाद करे या दूसरे को गुमराह करे या गुनाह के रास्ते पर लगाए तो येह अपने उन अफ़्आ़ल की वज्ह से पकड़ में आएगा और येह इस के गुनाह की शिद्दत होगी कि इस की वज्ह से जितने लोगों ने जितने गुनाह किये उन सब के वोह गुनाह इस पहले आदमी पर डाल दिये जाएं। ह़क़ीक़त में येह इस आदमी के अपने ही आ'माल का अन्जाम है न येह कि बिला वज्ह दूसरों के गुनाह इस पर डाल दिये गए और येह बात क़ुरआनो ह़दीस से साबित है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ [1]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह अपने बोझ उठाएंगे और अपने बोझों के साथ और बोझ उठाएंगे।

सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने हिदायत की त़रफ़ बुलाया और लोगों ने उस की पैरवी करते हुए उन बातों पर अ़मल किया तो बुलाने वाले को पैरवी करने वालों के सवाब के बराबर सवाब मिलेगा और उन के अज्र में भी कोई कमी न होगी और जिस ने गुमराही की दा'वत दी और लोगों ने उस की पैरवी करते हुए उन बातों पर अ़मल किया तो दा'वत देने वाले को पैरवी करने वालों के गुनाह के बराबर गुनाह मिलेगा और उन के गुनाहों में भी कोई कमी न होगी।[2]

وَهُوَ الَّذِیْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓىِٕفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّیَبْلُوَكُمْ فِیْ مَاۤ اٰتٰىكُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ سَرِیْعُ الْعِقَابِ ۖۗ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۶۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जिस ने ज़मीन में तुम्हें नाइब किया और तुम में एक को दूसरे पर दरजों बुलन्दी दी कि तुम्हें आज़्माए उस चीज़ में जो तुम्हें अ़त़ा की बेशक तुम्हारे रब को

الانعام ٧ ع

1 .....عنکبوت: ١٣. 2 .....در منثور، العنکبوت، تحت الآیة: ١٣، ٦/٤٥٤.

www.dawateislami.net

अ़ज़ाब करते देर नहीं लगती और बेशक वोह ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोही है जिस ने ज़मीन में तुम्हें नाइब बनाया और तुम में एक को दूसरे पर कई दरजे बुलन्दी अ़ता फ़रमाई ताकि वोह तुम्हें उस चीज़ में आज़माए जो उस ने तुम्हें अ़ता फ़रमाई है बेशक तुम्हारा रब बहुत जल्द अ़ज़ाब देने वाला है और बेशक वोह ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है।

﴿وَهُوَ الَّذِیْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓىٕفَ الْاَرْضِ﴾ **: और वोही है जिस ने ज़मीन में तुम्हें नाइब बनाया।** क्यूं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं आप के बा'द कोई नबी नहीं और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत सब उम्मतों में आख़िरी उम्मत है, इस लिये इन को ज़मीन में पहलों का ख़लीफ़ा किया कि इस के मालिक हों और इस में तसर्रुफ़ करें। और फ़रमाया : **''और तुम में एक को दूसरे पर दरजों बुलन्दी दी''** या'नी शक्लो सूरत में, हुस्नो जमाल में, रिज़्क़ो माल में, इ़ल्मो अ़क़्ल में और क़ुव्वतो कमाल में एक को दूसरे पर बुलन्दी दी और इस का मक़्सद तुम्हारी आज़्माइश करना है कि कौन ने'मतों के मिलने पर शुक्र अदा करता है और कौन ज़ुल्मो ज़ियादती की राह पर चलता है ? कौन इम्तिहान में काम्याब होता है और कौन नाकाम होता है ?

क़ुरआने करीम की और आयात में भी इस चीज़ को बयान किया गया है, चुनान्चे एक और मक़ाम पर इर्शादे बारी तआ़ला है :

اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ یُّتْرَكُوْۤا اَنْ یَّقُوْلُوْۤا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا یُفْتَنُوْنَ(1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या लोगों ने येह समझ रखा है कि उन्हें सिर्फ़ इतनी बात पर छोड़ दिया जाएगा कि वोह कहते हैं हम ''ईमान लाए'' और उन्हें आज़्माया नहीं जाएगा ?

और इर्शाद फ़रमाया :

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَیْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ(2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ज़रूर तुम्हें कुछ डर और भूक से और कुछ मालों और जानों और फलों की कमी से आज़्माएंगे और सब्र करने वालों को ख़ुश ख़बरी सुना दो।

1 .....عنکبوت:۲. 2 .....بقرہ:۱۵۵.

www.dawateislami.net

और फ़रमाया :

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَنَبْلُوْكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ؕ وَ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : हर जान मौत का मज़ा चखने वाली है और हम बुराई और भलाई के ज़रीए तुम्हें आज़माते हैं और हमारी ही त़रफ़ तुम लौटाए जाओगे।

इर्शाद फ़रमाया :

فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ۫ ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ ؕ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर जब आदमी को कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो हमें पुकारता है फिर जब उसे हम अपने पास से कोई ने'मत अ़त़ा फ़रमाएं तो कहता है येह तो मुझे एक इ़ल्म की बदौलत मिली है (ह़ालां कि ऐसा नहीं है) बल्कि वोह तो एक आज़्माइश है मगर उन में अक्सर लोग जानते नहीं।

एक और मक़ाम पर फ़रमाया :

اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक हम ने ज़मीन पर मौजूद चीज़ों को इस के लिये ज़ीनत बनाया ताकि हम उन्हें आज़्माएं कि उन में अ़मल के ए'तिबार से कौन अच्छा है ?

﴿اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ﴾ : **बेशक तुम्हारा रब बहुत जल्द अ़ज़ाब देने वाला है।** ﴾ या'नी **अल्लाह** तआ़ला फ़ासिक़ो फ़ाजिर और गुनहगार को बहुत जल्द सज़ा देने वाला है। इस मक़ाम पर एक ए'तिराज़ येह होता है कि **अल्लाह** तआ़ला के ह़लीम होने में कोई शक नहीं है, वोह अपने ना फ़रमान को जल्दी सज़ा नहीं देता फिर किस त़रह़ फ़रमाया कि "बेशक तुम्हारा रब बहुत जल्द अ़ज़ाब देने वाला है।" इस का जवाब देते हुए अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अह़मद अन्सारी क़ुरतुबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हर वोह काम जो यक़ीनन होने वाला है वोह क़रीब ही है।(4)

तफ़्सीरे सावी में है कि "سَرِيْعُ الْعِقَابِ" का मा'ना है जब अ़ज़ाब का वक़्त आ जाए तो उस वक़्त **अल्लाह** तआ़ला अ़ज़ाब नाज़िल करने में देर नहीं फ़रमाता।(5)

1 .....الانبیاء:۳۵. 2 .....الزمر:۴۹. 3 .....کهف:۷.
4 .....قرطبی، الانعام، تحت الآیة: ۱۶۵، ۴/۱۱۶، الجزء السابع. 5 .....صاوی، الانعام، تحت الآیة: ۱۶۵، ۲/۶۵۳.

www.dawateislami.net

سُوْرَةُ الْاَعْرَاف

सूरए आ'राफ़ का तआ़रुफ़

मक़ामे नुज़ूल

येह सूरत मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुई है और एक रिवायत के मुत़ाबिक़ पांच आयतों के इ़लावा येह सूरत मक्किय्या है, उन पांच आयात में से पहली आयत ''وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْیَةِ الَّتِیْ'' है।[1]

रुकूअ़ और आयात की ता'दाद

इस सूरत में **24** रुकूअ़ और **206** आयतें हैं।

''आ'राफ़'' नाम रखने की वज्ह

आ'राफ़ का मा'ना है बुलन्द जगह, इस सूरत की आयत नम्बर **46** में जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान एक जगह आ'राफ़ का ज़िक्र है जो कि बहुत बुलन्द है, इस मुनासबत से इस सूरत का नाम ''सूरए आ'राफ़'' रखा गया।

सूरए आ'राफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने क़ुरआने पाक की पहली **7** बड़ी सूरतों को ह़िफ़्ज़ किया और उन की तिलावत करता रहा तो येह उस के लिये कसीर सवाब का बाइ़स है।''[2] उन सात सूरतों में से एक सूरत आ'राफ़ भी है।

सूरए आ'राफ़ के मज़ामीन

येह मक्की सूरतों में सब से बड़ी सूरत है और इस सूरत का मर्कज़ी मज़्मून येह है कि इस में अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ह़ालात और उन्हें झुटलाने वाली क़ौमों के अन्जाम के वाक़िआ़त बयान कर के इस उम्मत के लोगों को उन क़ौमों जैसा अ़ज़ाब नाज़िल होने से डराना, ईमान और नेक आ'माल की तरग़ीब देना है। नीज़ इस सूरत में इस्लाम के बुन्यादी

1 .....خازن، الاعراف، ۲/۷۶.

2 .....مستدرك، كتاب فضائل القرآن، من اخذ السبع الاول من القرآن فهو خير، ۲/۲۷۰، الحديث: ۲۱۱۴.

www.dawateislami.net

अ़क़ाइद जैसे : **अल्लाह** तआ़ला की वह़दानिय्यत, उस के वुजूद, वह़ी और रिसालत, मरने के बा'द दोबारा ज़िन्दा किये जाने और आ'माल की जज़ा मिलने को तफ़्सील के साथ बयान किया गया है। इस के इ़लावा इस सूरत में येह मज़ामीन बयान किये गए हैं :

(1)..... क़ुरआन **अल्लाह** तआ़ला का कलाम और उस की ने'मत है और क़ुरआने पाक की ता'लीमात की पैरवी ज़रूरी है।

(2)..... क़ियामत के दिन आ'माल का वज़्न ज़रूर किया जाएगा।

(3)..... दोबारा ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और इब्लीस का वाक़िआ़ बयान किया गया, इस में ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तख़्लीक़, फ़िरिश्तों का इन्हें सज्दा करना, शैत़ान का सज्दा करने से तकब्बुर करना, शैत़ान का मरदूद होना, ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ इस की दुश्मनी और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की जन्नत से ज़मीन की त़रफ़ आमद का बयान है।

(4)..... कुफ़्फ़ारो मुश्रिकीन के उख़्रवी अन्जाम को बयान किया गया है।

(5)..... क़ियामत के दिन ईमान वालों के ह़ालात, जहन्नमियों और आ'राफ़ वालों से होने वाली गुफ़्तगू और अहले जहन्नम की आपस में की जाने वाली गुफ़्तगू का बयान है।

(6)..... **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी अ़त़ा कर्दा ने'मतों से अपने वुजूद और अपनी वह़दानिय्यत पर इस्तिद्लाल फ़रमाया है।

(7)..... इस सूरत में ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वाक़िए़ के इ़लावा मज़ीद येह 7 वाक़िआ़त बयान किये गए : (1) ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम का वाक़िआ़ (2) ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम का वाक़िआ़ (3) ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम का वाक़िआ़ (4) ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम का वाक़िआ़ (5) ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम का वाक़िआ़ (6) ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और फ़िरऔ़न का वाक़िआ़ (7) ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और बल्अ़म बिन बाऊ़र का वाक़िआ़।

(8)..... इस सूरत के आख़िर में शिर्क का तफ़्सीली रद, मकारिमे अख़्लाक़ की ता'लीम, वह़ी की पैरवी करने और **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ रुजूअ़ करने का बयान है।

सूरए अन्आ़म के साथ मुनासबत

सूरए आ'राफ़ की अपने से मा क़ब्ल सूरत ''अन्आ़म'' के साथ मुनासबत येह है कि सूरए अन्आ़म में ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तख़्लीक़, साबिक़ा उम्मतों की हलाकत और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़िक्र इज्माली त़ौर पर किया गया था जब कि सूरए आ'राफ़ में इन तीनों उमूर को तफ़्सील के साथ बयान किया गया है।[1]

1 .....تناسق الدرر، سورة الاعراف، ۸۷.

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह़्म वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान, रह़मत वाला है।

الٓمّٓصٓ ﴿۱﴾ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ
بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲﴾ اِتَّبِعُوْا مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا
تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मह़बूब एक किताब तुम्हारी त़रफ़ उतारी गई तो तुम्हारा जी इस से न रुके इस लिये कि तुम इस से डर सुनाओ और मुसल्मानों को नसीह़त। ऐ लोगो उस पर चलो जो तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा और उसे छोड़ कर और ह़ाकिमों के पीछे न जाओ बहुत ही कम समझते हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : الٓمّٓصٓ। ऐ ह़बीब ! (येह) एक किताब है जो आप की त़रफ़ नाज़िल की गई है ताकि आप इस के ज़रीए़ डर सुनाएं और मोमिनों के लिये नसीह़त है पस आप के दिल में इस की त़रफ़ से कोई तंगी न हो। ऐ लोगो ! तुम्हारे रब की जानिब से तुम्हारी त़रफ़ जो नाज़िल किया गया है उस की पैरवी करो और उसे छोड़ कर और ह़ाकिमों के पीछे न जाओ। तुम बहुत ही कम समझते हो।

﴿الٓمّٓصٓ :﴾ येह हुरूफ़े मुक़त्त़आ़त हैं, इन की मुराद **अल्लाह** तआ़ला ही बेहतर जानता है। ﴿كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ : **ऐ मह़बूब ! एक किताब तुम्हारी त़रफ़ उतारी गई**।﴾ या'नी ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, येह किताब या'नी क़ुरआने पाक आप की त़रफ़ इस लिये नाज़िल किया गया ताकि आप इस के ज़रीए़ लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से डराएं। पस आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दिल में लोगों के साबिक़ा त़र्ज़े अ़मल की वज्ह से और इस ख़याल से कि लोग न मानेंगे और इस पर ए'तिराज़ करेंगे और इसे झुटलाने लगेंगे इस की तब्लीग़ फ़रमाने से कोई तंगी न आए, आप इन कुफ़्फ़ार की मुख़ालफ़त की ज़र्रा भर परवा न करें।

www.dawateislami.net

तकालीफ़ की वज्ह से तब्लीग़े दीन में दिलतंग नहीं होना चाहिये

इस आयत में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तस्कीन व तसल्ली और हौसला अफ़्ज़ाई है और इस के ज़रीए उम्मत के तमाम मुबल्लिग़ीन को दर्स और सबक़ है कि लोगों के न मानने या तक्लीफ़ें देने की वज्ह से तब्लीग़े दीन में दिलतंग नहीं होना चाहिये। नेकी की दा'वत का काम ही ऐसा है कि इस में तकालीफ़ ज़रूर आती हैं। इसी लिये तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बे पनाह तक्लीफ़ें उठाईं और उन के वाक़िआ़त क़ुरआने पाक में ब कसरत मौजूद हैं। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का आग में डाला जाना, अपने मुल्क से हिजरत करना, लोगों का आप को तंग करना यूंही ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का हिजरत करना, फ़िरऔ़न का आप के मुक़ाबले में आना, आप को जादूगर क़रार देना, आप को गिरिफ़्तार करने के मन्सूबे बनाना यूंही सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बे पनाह तक्लीफ़ें उठाना, लोगों का आप पर مَعَاذَاللّٰه कूड़ा फेंकना, रास्ते में कांटे बिछाना, आप को शहीद करने के मन्सूबे बनाना, आप को अपना वत़न छोड़ने पर मजबूर करना, आप को जादूगर, काहिन, शाइ़र कहना, आप से जंग करना वग़ैरा येह सारी चीज़ें इस बात की दलील हैं कि राहे तब्लीग़ में तकालीफ़ आना एक मा'मूल की चीज़ है और इन्हें बरदाश्त करना अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सुन्नत है। आयत में फ़रमाया गया कि येह **क़ुरआन मोमिनों के लिये नसीह़त है,** अब यहां आज के मोमिनीन व मुस्लिमीन से भी अ़र्ज़ है कि ज़रा अपने अह़वाल व आ'माल पर ग़ौर करें कि क्या येह क़ुरआन से नसीह़त ह़ासिल कर रहे हैं ? या इन्हें क़ुरआन खोलने, पढ़ने, समझने और इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ ही नहीं होती ?

وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْهُمْ قَآئِلُوْنَ ۝۴

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और कितनी ही बस्तियां हम ने हलाक कीं तो उन पर हमारा अ़ज़ाब रात में आया या जब वोह दोपहर को सोते थे।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और कितनी ही ऐसी बस्तियां हैं जिन्हें हम ने हलाक कर दिया तो उन पर हमारा अ़ज़ाब रात के वक़्त आया, या (जब) वोह दोपहर को सो रहे थे।

﴿وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا﴾ **: और कितनी ही बस्तियां हम ने हलाक कीं।﴾ अल्लाह** तआ़ला ने इस से पहली आयात में अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को डर सुनाने और तब्लीग़ जारी रखने

www.dawateislami.net

का हुक्म फ़रमाया और उम्मत को क़ुरआने पाक की पैरवी का हुक्म दिया, अब हुक्मे इलाही की पैरवी छोड़ देने और इस से ए'राज़ करने के नताइज पिछली क़ौमों के अन्जाम की सूरत में बताए जा रहे हैं। चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया कि और कितनी ही ऐसी बस्तियां हैं जिन्हें हम ने हलाक कर दिया तो उन पर हमारा अ़ज़ाब रात के वक़्त आया या जब वोह दोपहर को सो रहे थे। इस के मा'ना येह हैं कि हमारा अ़ज़ाब ऐसे वक़्त आया जब कि उन्हें ख़याल भी न था या तो रात का वक़्त था और वोह आराम की नींद सोते थे या दिन में क़ैलूला का वक़्त था और वोह मसरूफ़े राहत थे। न अ़ज़ाब के नुज़ूल की कोई निशानी थी और न कोई क़रीना कि पहले से आगाह होते बल्कि अचानक आ गया और वोह भागने की कोशिश भी न कर सके। इस से कुफ़्फ़ार को मुतनब्बेह किया जा रहा है कि वोह अस्बाबे अम्नो राहत पर मग़रूर न हों अ़ज़ाबे इलाही जब आता है तो दफ़्अ़तन आ जाता है।

فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَاۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝۵

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन के मुंह से कुछ न निकला जब हमारा अ़ज़ाब उन पर आया मगर येही बोले कि हम ज़ालिम थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो जब उन पर हमारा अ़ज़ाब आया तो उन की पुकार इस के सिवा और कुछ न थी कि बेशक हम (ही) ज़ालिम थे।

﴿فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ﴾ **: तो उन के मुंह से कुछ न निकला।** ﴾ या'नी बस्ती वालों पर जब **अल्लाह** तआ़ला का अ़ज़ाब अचानक आया तो उस वक़्त उन की पुकार इस के सिवा और कुछ न थी कि बेशक हम ही ज़ालिम थे और वोह लोग अपने ऊपर आने वाले अ़ज़ाब को दूर न कर सके, ख़ुलासा येह है कि अ़ज़ाब आने पर उन्हों ने अपने जुर्म का ए'तिराफ़ किया लेकिन उस वक़्त ए'तिराफ़ भी फ़ाएदा नहीं देता। इस से मा'लूम हुवा कि अ़ज़ाब देख कर तौबा करना या ईमान लाना क़बूल नहीं होता। ईमाने यास क़बूल नहीं।

فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ۝۶

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो बेशक ज़रूर हमें पूछना है उन से जिन के पास रसूल गए और बेशक ज़रूर हमें पूछना है रसूलों से।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो बेशक हम ज़रूर उन लोगों से सुवाल करेंगे जिन की त़रफ़ (रसूल) भेजे गए और बेशक हम ज़रूर रसूलों से सुवाल करेंगे।

﴿فَلَنَسْـَٔلَنَّ **: तो बेशक ज़रूर हमें पूछना है।**﴾ या'नी उन उम्मतों से पूछा जाएगा जिन की त़रफ़ रसूल भेजे गए कि तुम्हें तुम्हारे रसूलों ने तब्लीग़ की या नहीं और तुम ने रसूलों की दा'वत का क्या जवाब दिया और उन के हुक्म की क्या ता'मील की। और रसूलों से दरयाफ़्त किया जाएगा कि क्या आप ने अपनी उम्मतों को हमारे पैग़ाम पहुंचाए और तुम्हारी क़ौम ने तुम्हें क्या जवाब दिया था। यहां उ़लमा ने फ़रमाया है कि येह सुवाल व जवाब हमारे हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ न होगा। **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا تُسْـَٔلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और आप से जहन्नमियों के बारे में सुवाल नहीं किया जाएगा।

और न कोई बद बातिन काफ़िर येह कह सकेगा कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तब्लीग़ नहीं फ़रमाई।

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ ۝٧

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो ज़रूर हम उन को बता देंगे अपने इ़ल्म से और हम कुछ ग़ाइब न थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो ज़रूर हम उन को अपने इ़ल्म से बता देंगे और हम ग़ाइब न थे।

﴿فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ **: तो ज़रूर हम उन को बता देंगे।**﴾ या'नी क़ियामत में हमारा कुफ़्फ़ार से और उन के अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से पूछगछ फ़रमाना क़ानूनी कार रवाई के लिये होगा न कि इस लिये कि हमें अस्ल वाक़िए़ की ख़बर नहीं। इस से मा'लूम हुवा कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا के वाक़िआ़ए तोहमत में लोगों से दरयाफ़्त फ़रमाना उम्मत की ता'लीम के लिये क़ानूनी कार रवाई थी।

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ِالْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٨

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उस दिन तोल ज़रूर होनी है तो जिन के पल्ले भारी हुए वोही मुराद को पहुंचे।

1 .....البقرہ:۱۱۹.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उस दिन वज़्न करना ज़रूर बरह़क़ है तो जिन के पलड़े भारी होंगे तो वोही लोग फ़लाह़ पाने वाले होंगे।

﴿وَالْوَزْنُ يَوْمَىٕذِ الْحَقُّ﴾ **: और उस दिन वज़्न करना ज़रूर बरह़क़ है।** इस से पहली आयत में क़ियामत के दिन का एक ह़ाल बयान हुवा कि इस दिन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की उम्मतों से सुवाल किया जाएगा, और इस आयत में क़ियामत के दिन का दूसरा ह़ाल या'नी मीज़ान पर अक़्वाल और आ'माल का वज़्न होना बयान फ़रमाया गया है।

वज़्न और मीज़ान का मा'ना

वज़्न का मा'ना है किसी चीज़ की मिक़्दार की मा'रिफ़त ह़ासिल करना और उ़र्फ़े आ़म में तराज़ू से किसी चीज़ के तोलने को वज़्न करना कहते हैं।[1] और जिस आले के साथ चीज़ों का वज़्न किया जाए उसे मीज़ान कहते हैं।[2]

जुम्हूर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक इस आयत में "वज़्न" से "मीज़ान के ज़रीए आ'माल का वज़्न करना" मुराद है।[3]

क़ियामत के दिन आ'माल के वज़्न की सूरतें

क़ियामत के दिन आ'माल के वज़्न की सूरत क्या होगी इस बारे में मुफ़स्सिरीन ने तीन मुम्किना सूरतें बयान फ़रमाई हैं, एक येह है कि आ'माल आ'राज़ की क़िस्म हैं मुम्किन है **अल्लाह** तआ़ला इन आ'राज़ के मुक़ाबले में अज्साम पैदा फ़रमा दे और उन अज्साम का वज़्न किया जाए। दूसरी सूरत येह कि नेक आ'माल ह़सीन जिस्मों की सूरत में कर दिये जाएंगे और बुरे आ'माल क़बीह़ जिस्मों में बदल दिये जाएंगे और उन का वज़्न किया जाएगा। तीसरी सूरत येह हो सकती है कि नफ़्से आ'माल का वज़्न नहीं किया जाएगा बल्कि आ'माल के सह़ाइफ़ का वज़्न किया जाएगा।[4]

ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन मीज़ान रखा जाएगा अगर उस में आस्मानों और ज़मीनों को रखा जाए तो वोह इस की भी गुन्जाइश रखता है। फ़िरिश्ते कहेंगे : **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ, इस में किस को वज़्न किया जाएगा ? **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाएगा : मैं अपनी मख़्लूक़ में से जिस को चाहूंगा। फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करेंगे : तू पाक है, हम तेरी इस त़रह़ इबादत नहीं कर सके जो तेरी इबादत का ह़क़ है।"[5]

1 .....مفردات امام راغب، کتاب الواو، ص۸۶۸.
2 .....تاج العروس، باب النون، فصل الواو، ۹/۳۶۱. 3 .....خازن، الاعراف، تحت الآیة: ۸، ۲/۷۸.
4 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیة: ۸، ۵/۲۰۲، خازن، الاعراف، تحت الآیة: ۸، ۲/۷۸، ملتقطاً.
5 .....مستدرك، کتاب الاهوال، ذکر وسعة المیزان، ۵/۸۰۷، الحدیث: ۸۷۷۸.

www.dawateislami.net

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : नेकियों और बुराइयों का मीज़ान में वज़्न किया जाएगा, उस मीज़ान की एक डन्डी और दो पलड़े हैं। मोमिन का अ़मल ह़सीन सूरत में आएगा और उस को मीज़ान के एक पलड़े में रखा जाएगा तो उस की नेकियों का पलड़ा बुराइयों के पलड़े के मुक़ाबले में भारी होगा।[1]

मीज़ान से मुतअ़ल्लिक़ दो अहम बातें

यहां मीज़ान के बारे में दो अहम बातें ज़ेह्न नशीन रखें :

(1)..... सह़ीह़ और मुतवातिर अह़ादीस से येह साबित है कि क़ियामत के दिन एक मीज़ान ला कर रखी जाएगी जिस में दो पलड़े और एक डन्डी होगी। इस पर ईमान लाना और इसे ह़क़ समझना ज़रूरी है, रही येह बात कि उस मीज़ान के दोनों पलड़ों की नौइ़य्यत और कैफ़िय्यत क्या होगी और उस से वज़्न मा'लूम करने का त़रीक़ा क्या होगा ? येह सब हमारी अ़क़्ल और फ़ह्म के दाएरे से बाहर है और न हम इसे जानने के मुकल्लफ़ हैं, हम पर ग़ैब की चीज़ों पर ईमान लाना फ़र्ज़ है, उन की नौइ़य्यत और कैफ़िय्यत **अल्लाह** तआ़ला और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं।

(2)..... मीज़ान को इस मा'रूफ़ तराज़ू में मुन्ह़सर समझ लेना दुरुस्त नहीं, इस दुन्या में ही देख लें कि मुख़्तलिफ़ पेशों से वाबस्ता अफ़्राद के तराज़ू जुदा जुदा हैं, जब इस दुन्या में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के तराज़ू हैं जिन से नज़र आने वाली और न नज़र आने वाली चीज़ों का वज़्न और दरजे का फ़र्क़ मा'लूम हो जाता है तो **अल्लाह** तआ़ला क़ादिरे मुत्लक़ है, उस के लिये क्या मुश्किल है कि वोह क़ियामत के दिन एक ऐसा ह़िस्सी और मिक़्दारी मीज़ान क़ाइम फ़रमा दे जिस से बन्दों के आ'माल का वज़्न, दरजात और मरातिब का फ़र्क़ ज़ाहिर हो जाए।

मीज़ाने अ़मल को भरने वाले आ'माल

इस आयत में क़ियामत के दिन मीज़ान में आ'माल तोले जाने का ज़िक्र हुवा, इस मुनासबत से हम यहां चन्द ऐसे आ'माल ज़िक्र करते हैं जो मीज़ाने अ़मल को भर देते हैं, चुनान्चे

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''दो लफ़्ज़ ज़बान पर आसान हैं, मीज़ान में भारी हैं और रह़मान को मह़बूब हैं (वोह दो लफ़्ज़ येह हैं) سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ।''[2]

1 .....شعب الايمان، الثامن من شعب الايمان ... الخ، ١/٢٦٠، الحديث: ٢٨١.

2 .....بخاری، کتاب الدعوات، باب فضل التسبیح، ٤/٢٢٠، الحدیث: ٦٤٠٦.

www.dawateislami.net

हज़रते अबू मालिक अश्अरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "पाकीज़गी निस्फ़ ईमान है और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ मीज़ान को भर देता है।"(1)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, तमाम आस्मानों और ज़मीनों और जो कुछ इन में और इन के दरमियान और इन के नीचे है, येह सब अगर तुम ले कर आओ और इसे मीज़ान के एक पलड़े में रख दो और कलिमए शहादत को दूसरे पलड़े में तो वोह पहले पलड़े से भारी होगा।"(2)

हज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अच्छे अख़्लाक़ से ज़ियादा मीज़ान में कोई चीज़ भारी नहीं है।"(3)

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِیْنُهٗ فَاُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰیٰتِنَا یَظْلِمُوْنَ ۝۹

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जिन के पल्ले हलके हुए तो वोही हैं जिन्हों ने अपनी जान घाटे में डाली उन ज़ियादतियों का बदला जो हमारी आयतों पर करते थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जिन के पलड़े हलके होंगे तो वोही लोग हैं जिन्हों ने अपनी जानों को ख़सारे में डाला इस वज्ह से कि वोह हमारी आयतों पर ज़ुल्म किया करते थे।

﴿وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِیْنُهٗ : **और जिन के पलड़े हलके होंगे।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि जिन के नेकियों के पलड़े हलके होंगे और उन में कोई नेकी न होगी तो येह वोही लोग हैं जिन्हों ने अपनी जानों को ख़सारे में डाला। बा'ज़ उ़लमा के नज़्दीक क़ियामत के दिन सिर्फ़ मुसल्मानों के आ'माल का वज़्न किया जाएगा और काफ़िरों के आ'माल का वज़्न न होगा लेकिन इस बारे में तह़क़ीक़ येह है कि जिन काफ़िरों को **अल्लाह** तआ़ला जल्द दोज़ख़ में डालना चाहेगा उन्हें आ'माल के वज़्न के बिग़ैर दोज़ख़ में डाल देगा और बक़िय्या काफ़िरों के आ'माल का वज़्न किया जाएगा इसी

1 ……مسلم، کتاب الطهارة، باب فضل الوضوء، ص ۱۴۰، الحدیث: ۱(۲۲۳).
2 ……معجم الکبیر، ۱۲/۱۹۶، الحدیث: ۱۳۰۲۴.
3 ……ابو داؤد، کتاب الادب، باب فی حسن الخلق، ۴/۳۳۲، الحدیث: ۴۷۹۹.

www.dawateislami.net

तरह़ बा'ज़ मुसल्मानों को **अल्लाह** तआ़ला आ'माल का वज़्न किये बिग़ैर बे ह़िसाब जन्नत में दाख़िल कर देगा।

وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۰﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक हम ने तुम्हें ज़मीन में जमाव दिया और तुम्हारे लिये इस में ज़िन्दगी के अस्बाब बनाए बहुत ही कम शुक्र करते हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक हम ने तुम्हें ज़मीन में ठिकाना दिया और तुम्हारे लिये इस में ज़िन्दगी गुज़ारने के अस्बाब बनाए, तुम बहुत ही कम शुक्र अदा करते हो।

﴿وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ﴾ **: और बेशक हम ने तुम्हें ज़मीन में ठिकाना दिया।** यहां से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी अ़ज़ीम ने'मतों को याद दिलाया कि जिन की वज्ह से ने'मतें अ़त़ा फ़रमाने वाले का शुक्र अदा करना लाज़िम होता है चुनान्चे इर्शाद हुवा : हम ने तुम्हें ज़मीन में ठिकाना दिया और तुम्हारे लिये इस में ज़िन्दगी गुज़ारने के अस्बाब बनाए और अपने फ़ज़्ल से तुम्हें राह़तें मुहय्या कीं, ग़िज़ा, पानी, हवा, सूरज की रोशनी सब यहां ही भेजी कि तुम्हें इन के लिये आस्मान पर या समुन्दर में जाने की ह़ाजत नहीं। ज़मीन में रहने का ठिकाना देना और ज़िन्दगी गुज़ारने के अस्बाब मुहय्या फ़रमाना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़ीम तरीन ने'मतों में से है क्यूं कि इस ने'मत में ज़िन्दगी की तमाम तर ने'मतें आ गईं, खाने पीने, पहनने, रहने वग़ैरा के लिये तमाम मत़लूबा चीज़ें इस में दाख़िल हैं लेकिन इस के बा वुजूद लोगों में नाशुक्री ग़ालिब है। लोगों की कम ता'दाद शुक्र अदा करती है और जो शुक्र करते हैं वोह भी कमा ह़क़्क़ुहू अदा नहीं करते।

शुक्र की ह़क़ीक़त और इस के फ़ज़ाइल

शुक्र की ह़क़ीक़त येह है कि आदमी ने'मत को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मन्सूब करे और ने'मत का इज़्हार करे जब कि नाशुक्री येह है कि आदमी ने'मत को भूल जाए और उसे छुपाए। क़ुरआनो ह़दीस में शुक्र का ह़ुक्म और इस के फ़ज़ाइल ब कसरत बयान किये गए हैं, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मेरा शुक्र अदा करो और मेरी नाशुक्री न करो।

और इर्शाद फ़रमाता है :

مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर तुम शुक्र गुज़ार बन जाओ और ईमान लाओ तो **अल्लाह** तुम्हें अ़ज़ाब दे कर क्या करेगा और **अल्लाह** क़द्र करने वाला, जानने वाला है।

नीज़ इर्शाद फ़रमाया :

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अगर तुम मेरा शुक्र अदा करोगे तो मैं तुम्हें और ज़ियादा अ़ता करूंगा और अगर तुम नाशुक्री करोगे तो मेरा अ़ज़ाब सख़्त है।

ह़ज़रते सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुझे मोमिन के ह़ाल पर तअ़ज्जुब होता है, उस के हर ह़ाल में भलाई है अगर उस को राह़त पहुंचे तो वोह शुक्र अदा करता है और येह उस की काम्याबी है और अगर उस को ज़रर पहुंचे तो सब्र करता है और येह भी उस की काम्याबी है।"(4)

इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : दिल का शुक्र येह है कि ने'मत के साथ ख़ैर और नेकी का इरादा किया जाए और ज़बान का शुक्र येह है कि इस ने'मत पर **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्दो सना की जाए और बाक़ी आ'ज़ा का शुक्र येह है कि **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों को **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत में ख़र्च किया जाए और इन ने'मतों को **अल्लाह** तआ़ला की मा'सियत में सर्फ़ होने से बचाया जाए ह़त्ता कि आंखों का शुक्र येह है कि किसी मुसल्मान का ऐ़ब देखे तो उस पर पर्दा डाले(5)।(6)

وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿۱۱﴾

1 .....بقرہ:۱۵۲. 2 .....النساء:۱۴۷. 3 .....ابراھیم:۷.

4 .....مسلم، کتاب الزھد والرقائق، باب المؤمن امرہ کلہ خیر، ص۱۵۹۸، الحدیث: ۶۴(۲۹۹۹).

5 .....احیاء علوم الدین، کتاب الصبر والشکر، الرکن الاول فی نفس الشکر، بیان فضیلۃ الشکر، ۴/۱۰۳-۱۰۴.

6..... शुक्र के मज़ीद फ़ज़ाइल जानने के लिये किताब "शुक्र के फ़ज़ाइल" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक हम ने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हारे नक़्शे बनाए फिर हम ने मलाएका से फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो तो वोह सब सज्दे में गिरे मगर इब्लीस येह सज्दा वालों में न हुवा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक हम ने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हारी सूरतें बनाईं फिर हम ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो तो इब्लीस के सिवा सब ने सज्दा किया, वोह सज्दा करने वालों में से न हुवा।

﴿وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ﴾ : **और बेशक हम ने तुम्हें पैदा किया।﴾** यहां से एक और अ़ज़ीम ने'मत याद दिलाई जा रही है जो **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और इन की तमाम औलाद पर फ़रमाई और येह ने'मत ऐसी है कि सिर्फ़ येही ने'मत अदाए शुक्र के लाज़िम होने के लिये काफ़ी है चुनान्चे इर्शाद हुवा कि बेशक हम ने तुम्हें पैदा किया। यहां या तो येह मुराद है कि हम ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को पैदा किया और इन की पुश्त में इन की औलाद की सूरत बनाई या यहां ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ही का तज़्किरा है कि हम ने आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को पैदा किया, इन की सूरत बनाई और फिर फ़िरिश्तों को हुक्म दिया कि इन्हें सज्दा करें। बक़िय्या तफ़्सीली वाक़िआ़ आयते मुबारका में भी मौजूद है और तख़्लीक़े आदम व सज्दए आदम का वाक़िआ़ सूरए बक़रह आयत 34 में भी मज़्कूर हो चुका है। यहां इस क़िस्से के बयान का मक़्सद एक मरतबा फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़ीम ने'मत को याद दिलाना है। शरफ़े इन्सानिय्यत को बयान करना है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दोस्त और दुश्मन की रविश को दिखाना है कि देखो दोस्त भूल कर भी ख़ता करता है तो किस त़रह़ गिर्या व ज़ारी करता है और मह़बूबे ह़क़ीक़ी को मनाने की कोशिश करता है और दुश्मने ख़ुदा क़स्दन तकब्बुर से हुक्मे इलाही की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करता है और तौबा व मुआ़फ़ी त़लब करने की बजाए ग़ुरूरो तकब्बुर और ह़ीला व तावील की राह अपनाता है और अपना क़ुसूर मानने को तय्यार ही नहीं होता बल्कि उलटा तक़्दीर का बहाना बना कर ख़ुद को क़ुसूर वार क़रार देने की बजाए कहता है कि **या अल्लाह !** येह मेरा नहीं बल्कि तेरा क़ुसूर है क्यूं कि तू ने ही मुझे गुमराह किया है। येह मज़्मून चन्द आयात के बा'द मौजूद है। गोया इस क़िस्से के ज़रीए फ़रमां बरदार और ना फ़रमान का रास्ता बिल्कुल वाज़ेह़ हो जाता है।

قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ؕ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿۱۲﴾

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फ़रमाया किस चीज़ ने तुझे रोका कि तू ने सज्दा न किया जब मैं ने तुझे हुक्म दिया था बोला मैं इस से बेहतर हूं तू ने मुझे आग से बनाया और इसे मिट्टी से बनाया।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** ने फ़रमाया : जब मैं ने तुझे हुक्म दिया था तो तुझे सज्दा करने से किस चीज़ ने रोका ? इब्लीस ने कहा : मैं इस से बेहतर हूं। तू ने मुझे आग से बनाया और इसे मिट्टी से बनाया।

﴿خَلَقْتَنِیْ مِنْ نَّارٍ﴾ **: तू ने मुझे आग से बनाया।** ﴾ इस से इब्लीस की मुराद येह थी कि आग मिट्टी से अफ़्ज़ल और आ'ला है तो जिस की अस्ल आग होगी वोह उस से अफ़्ज़ल होगा जिस की अस्ल मिट्टी हो और इस ख़बीस का येह ख़याल ग़लत़ व बातिल था क्यूं कि अफ़्ज़ल वोह है जिसे मालिको मौला फ़ज़ीलत दे, फ़ज़ीलत का मदार अस्ल और जौहर पर नहीं बल्कि मालिक की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी पर है नीज़ आग का मिट्टी से अफ़्ज़ल होना भी सह़ीह़ नहीं क्यूं कि आग में त़ैश और तेज़ी और बुलन्दी चाहना है और येह चीज़ें तकब्बुर का सबब बनती है जब कि मिट्टी से वक़ार, ह़िल्म और सब्र ह़ासिल होते हैं। यूंही मिट्टी से मुल्क आबाद होते हैं जब कि आग से हलाक होते हैं। नीज़ मिट्टी अमानत दार है जो चीज़ इस में रखी जाए मिट्टी उसे मह़फ़ूज़ रखती है जब कि जो चीज़ आग में डाली जाए, आग उसे फ़ना कर देती है। नीज़ मिट्टी आग को बुझा देती है और आग मिट्टी को फ़ना नहीं कर सकती। नीज़ यहां एक और बात येह है कि शैत़ान परले दरजे का अह़मक़ व बद बख़्त था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का सरीह़ हुक्म मौजूद होते हुए उस के मुक़ाबले में क़ियास किया और जो क़ियास नस्स के ख़िलाफ़ हो वोह ज़रूर मरदूद। इस आयत से साबित होता है कि अम्र (हुक्म) वुजूब के लिये होता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो शैत़ान से सज्दा न करने का सबब दरयाफ़्त फ़रमाया तो येह उस की डांट फटकार के लिये था और इस लिये कि शैत़ान की ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से दुश्मनी और उस का कुफ़्र व तकब्बुर ज़ाहिर हो जाए नीज़ अपनी अस्ल या'नी आग पर मग़रूर होना और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की अस्ल या'नी मिट्टी की तह़क़ीर करना ज़ाहिर हो जाए।

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿۱۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फ़रमाया तो यहां से उतर जा तुझे नहीं पहुंचता कि यहां रह कर ग़ुरूर करे निकल तू है ज़िल्लत वालों में।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** ने फ़रमाया : तो यहां से उतर जा, पस तेरे लिये जाइज़ नहीं कि तू इस मक़ाम में तकब्बुर करे, निकल जा, बेशक तू ज़िल्लत वालों में से है।

﴿قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا﴾ **: फ़रमाया तो यहां से उतर जा।﴾** या'नी जन्नत से उतर जा कि येह जगह इताअ़त व तवाज़ोअ़ करने वालों की है मुन्किरो सरकश की नहीं। इस से मा'लूम हुवा कि जन्नत पहले से मौजूद है। येह भी मा'लूम हुवा कि जन्नत ऊपर है, ज़मीन के नीचे नहीं क्यूं कि उतरना ऊपर से होता है।

﴿اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ﴾ **: बेशक तू ज़िल्लत वालों में से है।﴾** कि इन्सान तेरी मज़म्मत करेगा और हर ज़बान तुझ पर ला'नत करेगी और येही तकब्बुर वाले का अन्जाम है।

तकब्बुर की मज़म्मत

इस से मा'लूम हुवा कि तकब्बुर ऐसा मज़्मूम वस्फ़ है कि हज़ारों बरस का इबादत गुज़ार और फ़िरिश्तों का उस्ताद कहलाने वाला इब्लीस भी इस की वज्ह से बारगाहे इलाही में मरदूद ठहरा और क़ियामत तक के लिये ज़िल्लतो रुस्वाई का शिकार हो गया। ज़ैल में हम तकब्बुर की मज़म्मत पर मुश्तमिल 4 अहादीस और आजिज़ी के फ़ज़ाइल के बयान में 4 अहादीस और एक हिकायत ज़िक्र कर रहे हैं ताकि मुसल्मान इब्लीस के अन्जाम को सामने रखते हुए इन अहादीस को भी पढ़ें और तकब्बुर छोड़ कर आजिज़ी इख़्तियार करने की कोशिश करें, चुनान्चे

(1)..... हज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें **अल्लाह** तआ़ला के बद तरीन बन्दे के बारे में न बताऊं ? वोह बद अख़्लाक़ और मुतकब्बिर है।"[1]

(2)..... हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो तकब्बुर की वज्ह से अपना तहबन्द लटकाएगा तो क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की त़रफ़ रह़मत की नज़र न फ़रमाएगा।"[2]

(3)..... हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन तकब्बुर करने वाले च्यूंटियों की त़रह़ आदमियों की सूरत में उठाए जाएंगे, हर त़रफ़ से ज़िल्लत उन्हें ढांप लेगी, उन्हें जहन्नम के क़ैदख़ाने की त़रफ़ ले जाया जाएगा जिस का नाम "बौलस" है, आग उन पर छा जाएगी और उन्हें "त़ीनतुल ख़बाल" या'नी जहन्नमियों की पीप और ख़ून पिलाया जाएगा।"[3]

1 .....مسند امام احمد، مسند الانصار، حديث حذيفة بن اليمان عن النبي صلى الله عليه وسلم، ٩/١٢٠، الحديث: ٢٣٥١٧.
2 .....بخاری، كتاب اللباس، باب من جرّ ثوبه من الخيلاء، ٤/٤٦، الحديث: ٥٧٨٨.
3 .....ترمذی، كتاب صفة القيامة، ٤٧-باب، ٤/٢٢١، الحديث: ٢٥٠٠.

www.dawateislami.net

(4)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस के दिल में राई के दाने जितना भी तकब्बुर होगा वोह जन्नत में दाख़िल न होगा।"(1)

आ़जिज़ी के फ़ज़ाइल

(1)..... ह़ज़रते इ़याज़ बिन ह़िमार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरकारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी त़रफ़ येह वह़ी फ़रमाई है कि तुम लोग आ़जिज़ी इख़्तियार करो और तुम में से कोई दूसरे पर फ़ख़्र न करे।"(2)

(2)..... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! आ़जिज़ी अपनाओ कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आ़जिज़ी करने वालों से मह़ब्बत, और तकब्बुर करने वालों को ना पसन्द फ़रमाता है।"(3)

(3)..... ह़ज़रते अनस जुहनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने क़ुदरत के बा वुजूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आ'ला लिबास तर्क कर दिया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे लोगों के सामने बुला कर इख़्तियार देगा कि ईमान का जो जोड़ा चाहे पहन ले।"(4)

(4)..... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो अपने मुसल्मान भाई के लिये तवाज़ोअ़ इख़्तियार करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है और जो मुसल्मान भाई पर बुलन्दी चाहता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे पस्ती में डाल देता है।"(5)

फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़जिज़ी

जब ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शाम की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी उन के साथ थे यहां तक कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक ऐसे मक़ाम पर पहुंचे जहां घुटनों तक पानी था, आप अपनी ऊंटनी पर सुवार थे, आप ऊंटनी से

1 .....مسلم، كتاب الايمان، باب تحريم الكبر وبيانه، ص ٦٠، الحديث: ١٤٧(٩١).
2 .....ابن ماجه، كتاب الزهد، باب البراءة من الكبر والتواضع، ٤/٤٥٩، الحديث: ٤١٧٩.
3 .....كنز العمال، كتاب الاخلاق، قسم الاقوال، ٢/٥٠، الحديث: ٥٧٣١، الجزء الثالث.
4 .....ترمذى، كتاب صفة القيامة، ٣٩-باب، ٤/٢١٧، الحديث: ٢٤٨٩.
5 .....معجم الاوسط، من اسمه محمد، ٥/٣٩٠، الحديث: ٧٧١١.

www.dawateislami.net

उतरे और अपने मोज़े उतार कर अपने कन्धे पर रख लिये, फिर ऊंटनी की लगाम थाम कर पानी में दाख़िल हो गए तो ह़ज़रते अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, आप येह काम कर रहे हैं मुझे येह पसन्द नहीं कि यहां के बाशिन्दे आप को नज़र उठा कर देखें। ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : अफ़्सोस ! ऐ अबू उ़बैदा ! अगर येह बात तुम्हारे इ़लावा कोई और कहता तो मैं उसे उम्मते मुह़म्मदी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये इ़ब्रत बना देता, हम एक बे सरो सामान क़ौम थे, फिर **अल्लाह** तआ़ला ने हमें इस्लाम के ज़रीए इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाई, जब भी हम **अल्लाह** तआ़ला की अ़त़ा कर्दा इ़ज़्ज़त के इ़लावा से इ़ज़्ज़त ह़ासिल करना चाहेंगे तो **अल्लाह** तआ़ला हमें रुस्वा कर देगा[1] ।[2]

قَالَ اَنْظِرْنِیْۤ اِلٰى یَوْمِ یُبْعَثُوْنَ ﴿۱۴﴾ قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِیْنَ ﴿۱۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बोला मुझे फ़ुरसत दे उस दिन तक कि लोग उठाए जाएं। फ़रमाया तुझे मोहलत है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : शैत़ान ने कहा : तू मुझे उस दिन तक मोहलत दे दे जिस में लोग उठाए जाएंगे। **अल्लाह** ने फ़रमाया : तुझे मोहलत है।

قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِیْنَ ﴿۱۵﴾ **: फ़रमाया तुझे मोहलत है।** ﴾ या'नी पहले नफ़्ख़े (सूर फूंकने) तक तुझे मोहलत है। इस मोहलत की मुद्दत सूरए ह़िज्र की इन आयात में बयान फ़रमाई गई :

قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِیْنَ ﴿۳۷﴾ اِلٰى یَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ[3]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** ने फ़रमाया : पस बेशक तू उन में से है जिन को मुअ़य्यन वक़्त के दिन तक मोहलत दी गई है।

और येह नफ़्ख़ए ऊला का वक़्त है जब सब लोग मर जाएंगे। शैत़ान मरदूद ने दूसरे नफ़्ख़े (सूर फूंकने) तक या'नी मुर्दों के दोबारा ज़िन्दा होने के वक़्त तक की मोहलत चाही थी और इस से उस का मत़लब येह था कि मौत की सख़्ती से बच जाए मगर येह दरख़्वास्त क़बूल न हुई और इसे पहले नफ़्ख़े तक की मोहलत दी गई कि जब पहली बार सूर फूंका जाएगा तो सब के साथ वोह भी हलाक हो जाएगा।

1 .....الزواجر عن اقتراف الکبائر، الباب الاول فی الکبائر الباطنة... الخ، ۱/۱۶۱.

2 ..... तकब्बुर की मज़म्मत और आ़जिज़ी के फ़ज़ाइल वग़ैरा से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये किताब "तकब्बुर" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

3 .....حجر: ۳۷، ۳۸.

www.dawateislami.net

قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ﴿۱۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बोला तो क़सम इस की, कि तू ने मुझे गुमराह किया मैं ज़रूर तेरे सीधे रास्ते पर उन की ताक में बैठूंगा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : शैत़ान ने कहा : मुझे इस की क़सम कि तू ने मुझे गुमराह किया, मैं ज़रूर तेरे सीधे रास्ते पर लोगों की ताक में बैठूंगा।

﴿قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ﴾ **: शैत़ान ने कहा : मुझे इस की क़सम कि तू ने मुझे गुमराह किया ।﴾** शैत़ान ने यहां गुमराह करने की निस्बत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ की, इस में या तो शैत़ान ने ख़ुद को मजबूरे महज़ मान कर जब्रिया फ़िर्क़े की त़रह़ येह बात की जो येह कहते हैं कि इन्सान मजबूरे महज़ है, वोह जो कुछ करता है उस में अपने इख़्तियार से नहीं करता और या फिर **अल्लाह** तआ़ला की बे अदबी के त़ौर पर कहा क्यूं कि हर शै **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत व तख़्लीक़ से होती है लेकिन चूंकि बन्दे के कस्ब व फ़े'ल का भी दख़्ल होता है इस लिये हुक्म है कि बुराई को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मन्सूब करने की बजाए अपने नफ़्स की त़रफ़ मन्सूब करना चाहिये लेकिन शैत़ान जो ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का गुस्ताख़ हो चुका था तो अब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का भी गुस्ताख़ बन गया। मा'लूम हुवा कि नबी का गुस्ताख़ बिल आख़िर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का भी खुल्लम खुल्ला गुस्ताख़ बन जाता है।

﴿لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ﴾ **: मैं ज़रूर तेरे सीधे रास्ते पर लोगों की ताक में बैठूंगा ।﴾** या'नी बाप का बदला औलाद से लूंगा। बनी आदम के दिल में वस्वसे डालूंगा और उन्हें बात़िल की त़रफ़ माइल करूंगा, गुनाहों की रग़बत दिलाऊंगा, तेरी इत़ाअ़त और इबादत से रोकूंगा और गुमराही में डालूंगा। बा'ज़ को काफ़िरो मुश्रिक बना दूंगा ताकि दोज़ख़ में अकेला न जाऊं बल्कि जमाअ़त के साथ जाऊं।

ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ﴿۱۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर ज़रूर मैं उन के पास आऊंगा उन के आगे और पीछे और दाहने और बाएं से और तू उन में अक्सर को शुक्र गुज़ार न पाएगा।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर ज़रूर मैं उन के आगे और उन के पीछे और उन के दाएं और उन के बाएं से उन के पास आऊंगा और तू उन में से अक्सर को शुक्र गुज़ार न पाएगा।

﴿ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ﴾ **: फिर ज़रूर मैं उन के पास आऊंगा।** ﴾ शैत़ान ने अपने अ़ज़्म का इज़्हार करते हुए कहा कि फिर मैं ज़रूर बनी आदम के आगे, पीछे और उन के दाएं, बाएं या'नी चारों त़रफ़ से उन के पास आऊंगा और उन्हें घेर कर राहे रास्त से रोकूंगा ताकि वोह तेरे रास्ते पर न चलें और तू उन में से अक्सर को शुक्र गुज़ार न पाएगा। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "सामने से मुराद येह है कि मैं उन की दुन्या के मुतअ़ल्लिक़ वस्वसे डालूंगा और पीछे से मुराद येह है कि उन की आख़िरत के मुतअ़ल्लिक़ वस्वसे डालूंगा और दाएं से मुराद येह है कि उन के दीन में शुबुहात डालूंगा और बाएं से मुराद येह है कि उन को गुनाहों की त़रफ़ राग़िब करूंगा।"[1] चूंकि शैत़ान बनी आदम को गुमराह करने, शह्वतों और क़बीह़ अफ़्आ़ल में मुब्तला करने में अपनी इन्तिहाई सई ख़र्च करने का अ़ज़्म कर चुका था या वोह इन्सान की अच्छी बुरी सिफ़ात से वाक़िफ़ था या उस ने फ़िरिश्तों से सुन रखा था, इस लिये उसे गुमान था कि वोह बनी आदम को बहका लेगा और उन्हें फ़रेब दे कर ख़ुदावन्दे आ़लम की ने'मतों के शुक्र और उस की त़ाअ़तो फ़रमां बरदारी से रोक देगा।

इन्सानों को बहकाने में शैत़ान की कोशिशें

ह़ज़रते सबरह बिन अबू फ़ाकह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "शैत़ान, इब्ने आदम के तमाम रास्तों में बैठ जाता है और उस को इस्लाम के रास्ते से बहकाने की कोशिश करता है और कहता है कि "क्या तुम इस्लाम क़बूल करोगे और अपने बाप दादा के दीन को छोड़ दोगे ?" लेकिन वोह शख़्स शैत़ान की बात नहीं मानता और इस्लाम क़बूल कर लेता है तो फिर उस को हिजरत करने के रास्ते से वर्ग़लाने की कोशिश करता है और कहता है कि "क्या तुम हिजरत करोगे और अपने वत़न की ज़मीन और आस्मान छोड़ दोगे ? ह़ालां कि मुहाजिर की मिसाल तो खूंटे से बंधे हुए उस घोड़े की त़रह़ है जो इधर से उधर भाग रहा हो और उस खूंटे की हुदूद से निकल न सकता हो।" (मुराद येह कि शैत़ान मुहाजिर को एक बेकस व बेबस की शक्ल में पेश कर के आदमी को बहकाता है लेकिन अगर) वोह शख़्स उस की बात नहीं मानता और हिजरत कर लेता है तो शैत़ान उस के जिहाद के रास्ते में बैठ जाता है, वोह उस शख़्स से कहता है कि "क्या तुम जिहाद करोगे और येह अपनी जान और माल को आज़्माइश में डालना है और अगर तुम

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۷، ۲/۸۱.

www.dawateislami.net

जिहाद के दौरान मारे गए तो तुम्हारी बीवी किसी और शख़्स से निकाह़ कर लेगी और तुम्हारा माल तक़्सीम कर दिया जाएगा।" लेकिन वोह शख़्स फिर भी शैत़ान की बात नहीं मानता और जिहाद करने चला जाता है।" **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : सो जिस शख़्स ने ऐसा किया तो **अल्लाह** तआ़ला के ज़िम्मए करम पर येह ह़क़ है कि वोह उस को जन्नत में दाख़िल कर दे और जो मुसल्मान क़त्ल किया गया तो **अल्लाह** तआ़ला के ज़िम्मए करम पर उस को जन्नत में दाख़िल करना है और जो मुसल्मान ग़र्क़ हो गया तो उसे जन्नत में दाख़िल करना **अल्लाह** तआ़ला के ज़िम्मए करम पर है और जिस मुसल्मान को उस की सुवारी ने हलाक कर दिया उस को जन्नत में दाख़िल करना **अल्लाह** तआ़ला के ज़िम्मए करम पर है।[1]

शैत़ान से पनाह मांगने की तरग़ीब

हर मुसल्मान को चाहिये कि वोह शैत़ान मरदूद से **अल्लाह** तआ़ला की पनाह मांगता रहे और इस में किसी त़रह़ सुस्ती और ग़फ़्लत का मुज़ाहरा न करे। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "शैत़ान से पनाह मांगने में ग़फ़्लत न करो क्यूं कि तुम अगर्चे उसे देख नहीं रहे लेकिन वोह तुम से ग़ाफ़िल नहीं।"[2]

इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : शैत़ान के शर से अपने आप को ह़त्तल इम्कान बचाओ और इस सिल्सिले में तुम्हारे लिये सब से बड़ी येही दलील काफ़ी है जो **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़रमाया :

وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿۹۷﴾ وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ[3]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम अ़र्ज़ करो : ऐ मेरे रब ! मैं शैत़ानों के वस्वसों से तेरी पनाह मांगता हूं। और ऐ मेरे रब ! मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस से कि वोह शैत़ान मेरे पास आएं।

तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो सारे जहान से बेहतर, सब से ज़ियादा मा'रिफ़त रखने वाले, सब से ज़ियादा अ़क़्ल मन्द और **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में सब से ज़ियादा रुत्बा और फ़ज़ीलत रखने वाले हैं, उन्हें इस बात की ज़रूरत है कि शैत़ान से **अल्लाह** तआ़ला की पनाह मांगें तो तुम्हारी हैसिय्यत ही क्या है ! ह़ालां कि तुम जाहिल, ऐ़ब व नक़्स वाले और ग़फ़्लत में डूबे हुए हो (तो क्या तुम शैत़ान से **अल्लाह** तआ़ला की पनाह लेने के मोह़ताज

1 .....نسائي، كتاب الجهاد، ما لمن اسلم وهاجر وجاهد، ص٥٠٩، الحديث: ٣١٣١.
2 .....مسند الفردوس، باب لام الف، ٥/٤٧، الحديث: ٧٤١٧. 3 .....مومنون: ٩٧، ٩٨.

www.dawateislami.net

नहीं हो ? यक़ीनन मोहताज हो और बहुत ज़ियादा मोहताज हो) ।[1]

शैतान से हिफ़ाज़त की दुआ

हज़रते जुन्दुब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरकारे दो आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम में से जो शख़्स रात के वक़्त अपने बिस्तर पर जाए तो येह कह लिया करे ''بِسْمِ اللّٰهِ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ'' ।[2]

हज़रते शक़ीक़ बल्ख़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का त़रीक़ा

हज़रते शक़ीक़ बल्ख़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : रोज़ाना सुब्ह के वक़्त शैत़ान मेरे पास आगे पीछे, दाएं बाएं से आता है, मेरे सामने आ कर कहता है ''तुम ख़ौफ़ न करो बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बड़ा ग़फ़ूरो रह़ीम है ।'' येह सुन कर मैं येह आयत पढ़ता हूं :

وَ اِنِّیْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى[3]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक मैं उस आदमी को बहुत बख़्शने वाला हूं जिस ने तौबा की और ईमान लाया और नेक अ़मल किया फिर हिदायत पर रहा ।

(मुराद येह कि **अल्लाह** तआ़ला बख़्शने वाला तो है लेकिन इस आयत के मुत़ाबिक़ उन लोगों को बख़्शने वाला है जो तौबा व ईमान व आ'माले सालिह़ा वाले हैं लिहाज़ा मैं अ़मल से बे परवाह नहीं हो सकता) और शैत़ान मेरे पीछे से मुझे येह ख़ौफ़ दिलाता है कि मेरी औलाद मोहताज हो जाएगी । तब मैं येह आयत पढ़ता हूं :

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِی الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا[4]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ज़मीन पर चलने वाला कोई जानदार ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़ **अल्लाह** के ज़िम्मए करम पर न हो ।

(मुराद येह कि मुझे रिज़्क़ की फ़िक्र डाल कर **अल्लाह** से ग़ाफ़िल न कर क्यूं कि रिज़्क़ तो उसी के ज़िम्मए करम पर है ।) फिर शैत़ान मेरी दाईं त़रफ़ से आ कर मेरी ता'रीफ़ करता है, उस वक़्त मैं येह आयत पढ़ता हूं :

وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ[5]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अच्छा अन्जाम परहेज़ गारों के लिये ही है ।

1 ……منهاج العابدين، العقبة الثالثة، العائق الرابع، فصل فی معالجة الدنيا والخلق والشيطان والنفس، ص ۱۰۲ .
2 ……معجم الكبير، جندب بن عبد الله البجلی... الخ، ۱۷۶/۲، الحديث: ۱۷۲۲ .
3 ……طٰہٰ: ۸۲ . 4 ……ھود: ٦ . 5 ……اعراف: ۱۲۸ .

www.dawateislami.net

(या'नी मुझे अच्छा कहने का कोई फ़ाएदा नहीं। मैं अच्छा तब होउंगा जब मेरा अन्जाम अच्छा होगा और अन्जाम तब अच्छा होगा जब मैं मुत्तक़ी बनूंगा) फिर शैत़ान मेरी बाईं त़रफ़ से नफ़्सानी ख़्वाहिशात में से कुछ ले कर आता है तो मैं येह आयत पढ़ता हूं :

وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُوْنَ[1]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन के दरमियान और उन की चाहत के दरमियान रुकावट डाल दी गई।

(मुराद येह कि नफ़्सानी ख़्वाहिशात से दूर रहने में ही काम्याबी है।) [2]

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फ़रमाया यहां से निकल जा रद किया गया रांदा हुवा ज़रूर जो उन में से तेरे कहे पर चला मैं तुम सब से जहन्नम भर दूंगा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** ने फ़रमाया : तू यहां से ज़लील व मरदूद हो कर निकल जा। बेशक उन में से जो तेरी पैरवी करेगा तो मैं ज़रूर तुम सब से जहन्नम भर दूंगा।

﴿قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا﴾ **: (अल्लाह ने) फ़रमाया : तू यहां से निकल जा।﴾** फ़रमाया कि तू यहां से ज़लील व मरदूद हो कर निकल जा आज फ़िरिश्तों में ज़लील और आयिन्दा हर जगह ज़लीलो ख़्वार हो कि ला'नत की मार तुझ पर पड़ती रहे। मा'लूम हुवा कि पैग़म्बर की दुश्मनी तमाम कुफ़्रों से बढ़ कर है, शैत़ान आ़लिमो ज़ाहिद होने के बा वुजूद नबी की ता'ज़ीम से इन्कार पर ऐसा ज़लील हुवा।

﴿لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ﴾ **: मैं ज़रूर तुम सब से जहन्नम भर दूंगा।﴾** या'नी ऐ शैत़ान ! तुझ को भी और तेरी औलाद को भी और तेरी इत़ाअ़त करने वाले आदमियों को भी सब को जहन्नम में दाख़िल किया जाएगा।

1 .....سبا: ٥٤. 2 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ١٧، ٢/٨٢.

www.dawateislami.net

जहन्नम को जिन्नों और इन्सानों से भरा जाएगा

इस से मा'लूम हुवा कि दोज़ख़ में शैत़ान, जिन्नात और इन्सान सब ही जाएंगे और **अल्लाह** तआ़ला उन से जहन्नम को भर देगा। इसी चीज़ को बयान करते हुए एक और मक़ाम पर **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَ تَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ اَجْمَعِیْنَ(1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम्हारे रब की बात पूरी हो चुकी कि बेशक मैं ज़रूर जहन्नम को जिन्नों और इन्सानों से मिला कर भर दूंगा।

और ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जहन्नम और जन्नत में मुबाह़सा हुवा तो जहन्नम ने कहा : मुझ में जब्बार और मुतकब्बिर लोग दाख़िल होंगे। जन्नत ने कहा : मुझ में कमज़ोर और मिस्कीन लोग दाख़िल होंगे। **अल्लाह** तआ़ला ने जहन्नम से फ़रमाया : "तुम मेरा अ़ज़ाब हो, मैं जिस को चाहूंगा तुम्हारे ज़रीए़ अ़ज़ाब दूंगा।" जन्नत से फ़रमाया : "तुम मेरी रह़मत हो, मैं तुम्हारे ज़रीए़ जिस पर चाहूंगा रह़म करूंगा और तुम में से हर एक को पुर होना है।"(2)

وَیٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَ زَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَیْثُ شِئْتُمَا ۪ وَ لَا تَقْرَبَا
هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۹﴾ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّیْطٰنُ
لِیُبْدِیَ لَهُمَا مَا وٗرِیَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَ قَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ
هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَیْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِیْنَ ﴿۲۰﴾
وَ قَاسَمَهُمَاۤ اِنِّیْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِیْنَ ﴿۲۱﴾ فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا

1 .....هود:۱۱۹.
2 .....مسلم، کتاب الجنة وصفة نعیمها واهلها، باب النار یدخلها الجبارون ... الخ، ص ۱۵۲۴، الحدیث: ۳۴(۲۸۴۶).

www.dawateislami.net

الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ؕ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۲۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ आदम तू और तेरा जोड़ा जन्नत में रहो तो उस में से जहां चाहो खाओ और उस पेड़ के पास न जाना कि ह़द से बढ़ने वालों में होगे। फिर शैत़ान ने उन के जी में ख़त़रा डाला कि उन पर खोल दे उन की शर्म की चीज़ें जो उन से छुपी थीं और बोला तुम्हें तुम्हारे रब ने इस पेड़ से इसी लिये मन्अ़ फ़रमाया है कि कहीं तुम दो फ़िरिश्ते हो जाओ या हमेशा जीने वाले। और उन से क़सम खाई कि मैं तुम दोनों का ख़ैर ख़्वाह हूं। तो उतार लाया उन्हें फ़रेब से फिर जब उन्हों ने वोह पेड़ चखा उन पर उन की शर्म की चीज़ें खुल गईं और अपने बदन पर जन्नत के पत्ते चिपटाने लगे और उन्हें उन के रब ने फ़रमाया क्या मैं ने तुम्हें उस पेड़ से मन्अ़ न किया और न फ़रमाया था कि शैत़ान तुम्हारा खुला दुश्मन है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ आदम ! तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो फिर उस में से जहां चाहो खाओ और उस दरख़्त के पास न जाना वरना ह़द से बढ़ने वालों में से हो जाओगे। फिर शैत़ान ने उन्हें वस्वसा डाला ताकि उन पर उन की छुपी हुई शर्म की चीज़ें खोल दे और कहने लगा तुम्हें तुम्हारे रब ने इस दरख़्त से इसी लिये मन्अ़ फ़रमाया है कि कहीं तुम फ़िरिश्ते न बन जाओ या तुम हमेशा ज़िन्दा रहने वाले न बन जाओ। और उन दोनों से क़सम खा कर कहा कि बेशक मैं तुम दोनों का ख़ैर ख़्वाह हूं। तो वोह धोका दे कर उन दोनों को उतार लाया फिर जब उन्हों ने उस दरख़्त का फल खाया तो उन की शर्म के मक़ाम उन पर खुल गए और वोह जन्नत के पत्ते उन पर डालने लगे और उन्हें उन के रब ने फ़रमाया : क्या मैं ने तुम्हें उस दरख़्त से मन्अ़ नहीं किया था ? और मैं ने तुम से येह न फ़रमाया था कि शैत़ान तुम्हारा खुला दुश्मन है ?

﴿وَيٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ﴾ **: और ऐ आदम ! तुम रहो ।** इस आयत और बा'द वाली चन्द आयात में जो वाक़िआ़ बयान हुवा उस का ख़ुलासा येह है कि शैत़ान को ज़लीलो रुस्वा कर के जन्नत से निकाल देने के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से फ़रमाया कि आप

www.dawateislami.net

और आप की बीवी ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जन्नत में रहो और जन्नती फलों में से जहां चाहो खाओ लेकिन उस दरख़्त के क़रीब न जाना। वोह दरख़्त गन्दुम था या कोई और (जो भी रब तआ़ला के इ़ल्म में है।) शैत़ान ने ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को वस्वसा डाला चुनान्चे इब्लीस मल्ऊ़न ने **अल्लाह** तआ़ला की झूटी क़सम खाते हुए ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से कहा : इस दरख़्त में येह तासीर है कि इस का फल खाने वाला फ़िरिश्ता बन जाता है या हमेशा की ज़िन्दगी ह़ासिल कर लेता है और इस के साथ मुमानअ़त की कुछ तावीलें कर करा के दोनों को उस दरख़्त से खाने की त़रफ़ ले आया। ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दिल में चूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम की अ़ज़मत इन्तिहा दरजे की थी इस लिये आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को गुमान भी न था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम खा कर कोई झूट भी बोल सकता है नीज़ जन्नत क़ुर्बे इलाही का मक़ाम था और ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को भी उस मक़ामे क़ुर्ब में रहने का इश्तियाक़ था और फ़िरिश्ता बनने या दाइमी बनने से येह मक़ाम ह़ासिल हो सकता है लिहाज़ा आप ने शैत़ान की क़सम का ए'तिबार कर लिया और मुमानअ़त को महज़ तन्ज़ीही समझते हुए या ख़ास दरख़्त की मुमानअ़त समझते हुए उसी जिन्स के दूसरे दरख़्त से खा लिया। उस के खाते ही जन्नती लिबास जिस्म से जुदा हो गए और पोशीदा आ'ज़ा ज़ाहिर हो गए। जब बे सत्री हुई तो इन बुज़ुर्गों ने इन्जीर के पत्ते अपने जिस्म शरीफ़ पर डालने शुरूअ़ कर दिये। **अल्लाह** तआ़ला ने इन से फ़रमाया : "क्या मैं ने तुम्हें उस दरख़्त से मन्अ़ नहीं किया था ? और मैं ने तुम से येह न फ़रमाया था कि शैत़ान तुम्हारा खुला दुश्मन है ?" दोनों ने अ़र्ज़ की : ऐ हमारे रब ! عَزَّوَجَلَّ, हम ने अपनी जानों पर ज़ियादती की और अगर तू ने हमारी मग़्फ़िरत न फ़रमाई और हम पर रह़म न फ़रमाया तो ज़रूर हम नुक़्सान वालों में से हो जाएंगे। **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ आदम व ह़व्वा ! तुम अपनी ज़ुर्रिय्यत के साथ जो तुम्हारी पीठ में है जन्नत से उतर जाओ, तुम में एक दूसरे का दुश्मन है और तुम्हारे लिये ज़मीन में एक वक़्त तक ठहरना और दुन्यावी ज़िन्दगी से नफ़्अ़ उठाना है।

﴿وَطَفِقَا یَخْصِفٰنِ﴾ **: और वोह दोनों चिपटाने लगे।** ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के लिबास जुदा होते ही दोनों का पत्तों के साथ अपने बदन को छुपाना शुरूअ़ कर देना इस बात की दलील है कि पोशीदा आ'ज़ा का छुपाना इन्सानी फ़ित़रत में दाख़िल है। लिहाज़ा जो शख़्स नंगे होने को फ़ित़रत समझता है जैसे मग़रिबी ममालिक में एक त़बक़े का रुज्ह़ान है तो वोह उन लोगों में से है जिन की फ़ित़रतें मस्ख़ हो चुकी हैं।

www.dawateislami.net

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَاۤ اَنْفُسَنَا ۫ وَ اِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَ تَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۲۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : दोनों ने अ़र्ज़ की ऐ रब हमारे हम ने अपना आप बुरा किया तो अगर तू हमें न बख़्शे और हम पर रह़्म न करे तो हम ज़रूर नुक़्सान वालों में हुए।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : दोनों ने अ़र्ज़ की : ऐ हमारे रब ! हम ने अपनी जानों पर ज़ियादती की और अगर तू ने हमारी मग़्फ़िरत न फ़रमाई और हम पर रह़्म न फ़रमाया तो ज़रूर हम नुक़्सान वालों में से हो जाएंगे।

﴿ظَلَمْنَاۤ اَنْفُسَنَا : **हम ने अपनी जानों पर ज़ियादती की ।**﴾ अपनी जानों पर ज़ियादती करने से मुराद इस आयत में गुनाह करना नहीं है बल्कि अपना नुक़्सान करना है और वोह इस त़रह़ कि जन्नत की बजाए ज़मीन पर आना पड़ा और वहां की आराम की ज़िन्दगी की जगह यहां मशक़्क़त की ज़िन्दगी इख़्तियार करना पड़ी।

ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अ़मल में मुसल्मानों के लिये तरबियत

ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपनी लग़्ज़िश के बा'द जिस त़रह़ दुआ फ़रमाई उस में मुसल्मानों के लिये येह तरबियत है कि उन से जब कोई गुनाह सरज़द हो जाए तो वोह **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में अपने गुनाह पर नदामत का इज़्हार करते हुए उस का ए'तिराफ़ करें और **अल्लाह** तआ़ला से मग़्फ़िरत व रह़मत का इन्तिहाई लजाजत के साथ सुवाल करें ताकि **अल्लाह** तआ़ला उन का गुनाह बख़्श दे और उन पर अपना रह़्म फ़रमाए। ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मोमिन बन्दे से जब कोई गुनाह सरज़द होता है तो वोह अपने रब से ह़या करता है, फिर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! वोह येह जानने की कोशिश करता है कि उस से निकलने की राह क्या है तो वोह जान लेता है कि इस से निकलने की राह इस्तिग़्फ़ार और तौबा करना है, लिहाज़ा तौबा करने से कोई आदमी भी शर्म मह़सूस न करे क्यूं कि अगर तौबा न हो तो **अल्लाह** तआ़ला के बन्दों में से कोई भी ख़लासी और नजात न पा सके, तुम्हारे जद्दे आ'ला (ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) से जब लग़्ज़िश सादिर हुई तो तौबा के ज़रीए ही **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें मुआ़फ़ फ़रमाया।[1]

1 .....در منثور، الاعراف، تحت الآیۃ: ۲۳، ۳/۴۳۳.

www.dawateislami.net

قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ
اِلٰى حِيْنٍ ﴿۲۴﴾ قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿۲۵﴾ ع ۲ ۱۵ ۹

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फ़रमाया उतरो तुम में एक दूसरे का दुश्मन और तुम्हें ज़मीन में एक वक़्त तक ठहरना और बरत्ना है। फ़रमाया उसी में जियोगे और उसी में मरोगे और उसी में से उठाए जाओगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** ने फ़रमाया : तुम उतर जाओ, तुम में एक दूसरे का दुश्मन है और तुम्हारे लिये ज़मीन में एक वक़्त तक ठहरना और नफ़्अ़ उठाना है। (**अल्लाह** ने) फ़रमाया : तुम उसी में ज़िन्दगी बसर करोगे और उसी में मरोगे और उसी से उठाए जाओगे।

قَالَ اهْبِطُوْا : फ़रमाया उतरो ﴾ दोनों ह़ज़रात को जन्नत से उतर जाने का हुक्म हुवा क्यूं कि ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तख़्लीक़ का अस्ल मक़्सद तो इन्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाना था जैसा कि **अल्लाह** तआ़ला ने तख़्लीक़े आदम से पहले ही फ़िरिश्तों के सामने बयान फ़रमा दिया था और सूरए बक़रह में सराह़त से मज़्कूर है। दूसरी बात येह है कि औलादे आदम ने आपस में अ़दावत व दुश्मनी भी करना थी और जन्नत जैसी मुक़द्दस जगह इन चीज़ों के लाइक़ नहीं लिहाज़ा मक़्सदे तख़्लीक़े आदम की तक्मील के लिये और इस के माबा'द रूनुमा होने वाले वाक़िआ़त के लिये ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ज़मीन पर उतारा गया।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ؕ وَلِبَاسُ
التَّقْوٰى ۙ ذٰلِكَ خَيْرٌ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۲۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ आदम की औलाद बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़ एक लिबास वोह उतारा कि तुम्हारी शर्म की चीज़ें छुपाए और एक वोह कि तुम्हारी आराइश हो और परहेज़ गारी का लिबास वोह सब से भला येह **अल्लाह** की निशानियों में से है कि कहीं वोह नसीह़त मानें।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ आदम की औलाद ! बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़ एक लिबास वोह उतारा जो तुम्हारी शर्म की चीज़ें छुपाता है और (एक लिबास वोह जो) ज़ेबो ज़ीनत है और परहेज़ गारी का लिबास सब से बेहतर है। येह **अल्लाह** की निशानियों में से है ताकि वोह नसीह़त ह़ासिल करें।

www.dawateislami.net

﴿يٰبَنِیْۤ اٰدَمَ﴾ : **ऐ आदम की औलाद !** ﴾ गुज़श्ता आयात में ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिबास व त़आ़म का ज़िक्र हुवा अब यहां से इन की औलाद के लिबास व त़आ़म की अहम्मिय्यत और इस के मुतअ़ल्लिक़ा अह़काम का बयान है और चूंकि गुज़श्ता आयात में तख़्लीक़े आदम का बयान हुवा तो यहां से बार बार **ऐ औलादे आदम !** के अल्फ़ाज़ से ख़ित़ाब किया जा रहा है। पस जब **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को जन्नत से ज़मीन पर उतरने का हुक्म दिया और ज़मीन को इन के ठहरने की जगह बनाया तो वोह तमाम चीज़ें भी इन पर नाज़िल फ़रमाईं जिन की दीन या दुन्या के ए'तिबार से इन्हें ह़ाजत थी। उन में से एक चीज़ लिबास भी है जिस की त़रफ़ दीन और दुन्या दोनों के ए'तिबार से ह़ाजत है। दीन के ए'तिबार से तो यूं कि लिबास से सत्र ढांपने का काम लिया जाता है क्यूं कि सत्रे औ़रत नमाज़ में शर्त़ है और दुन्या के ए'तिबार से यूं कि लिबास गर्मी और सर्दी रोकने के काम आता है। येह **अल्लाह** तआ़ला का बहुत बड़ा एह़सान है जिस का ज़िक्र इस आयत में फ़रमाया। आयत का ख़ुलासा येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने तीन त़रह़ के लिबास उतारे दो जिस्मानी और एक रूह़ानी। जिस्मानी लिबास बा'ज़ तो सत्रे औ़रत के लिये और बा'ज़ ज़ीनत के लिये हैं, येह दोनों अच्छे हैं और रूह़ानी लिबास ईमान, तक़्वा, ह़या और नेक ख़स्लतें हैं। येह तमाम लिबास आस्मान से उतरे हैं क्यूं कि बारिश से रूई ऊन और रेशम पैदा होती है, येह बारिश आस्मान से आती है और वह़ी से तक़्वा नसीब होता है और वह़ी भी आस्मान से आती है। इस से मा'लूम हुवा कि लिबास सिर्फ़ इन्सानों के लिये बनाया गया इसी लिये जानवर बे लिबास ही होते हैं। सत्रे औ़रत छुपाने के क़ाबिल लिबास पहनना फ़र्ज़ है और लिबासे ज़ीनत पहनना मुस्तह़ब है। लिबास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बहुत बड़ी ने'मत है इस लिये इस के पहनने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करना चाहिये।

सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का लिबास

हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ियादा तर सूती लिबास पहनते थे ऊन और रूई का लिबास भी कभी कभी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्ति'माल फ़रमाया। लिबास के बारे में किसी ख़ास पोशाक या इम्तियाज़ी लिबास की पाबन्दी नहीं फ़रमाते थे। जुब्बा, क़बा, पैरहन, तहबन्द, हुल्ला, चादर, इमामा, टोपी, मोज़ा इन सब को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ज़ेबे तन फ़रमाया है। पाएजामा को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पसन्द फ़रमाया और मिना के बाज़ार में एक पाएजामा ख़रीदा भी था लेकिन येह साबित नहीं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पाएजामा पहना हो।[1]

1..... सीरते मुस्त़फ़ा, शमाइल व ख़साइल, स. 581

www.dawateislami.net

सफ़ेद लिबास की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते समुरह बिन जुन्दुब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सफ़ेद कपड़े पहनो कि वोह ज़ियादा पाक और सुथरे हैं और इन्हीं में अपने मुर्दे कफ़्नाओ।"[1]

आ़म और नया लिबास पहनते वक़्त की दुआ़एं

(1)..... ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स कपड़ा पहने और येह पढ़े "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ هٰذَا وَرَزَقَنِیْهِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّةٍ" (**तरजमा :** तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** तआ़ला के लिये हैं जिस ने मुझे येह (लिबास) पहनाया और मेरी ताक़तो क़ुव्वत के बिग़ैर मुझे येह अ़त़ा फ़रमाया) तो उस के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।"[2]

(2)..... ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब नया कपड़ा पहनते तो उस का नाम लेते इ़मामा या क़मीस या चादर, फिर येह दुआ़ पढ़ते : "اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كَمَا كَسَوْتَنِیْهِ اَسْاَلُكَ خَیْرَهٗ وَخَیْرَ مَا صُنِعَ لَهٗ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهٖ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهٗ" (**तरजमा :** ऐ **अल्लाह** तेरा शुक्र है जैसे तू ने मुझे येह (कपड़ा) पहनाया वैसे ही मैं तुझ से इस की भलाई और जिस मक़्सद के लिये येह बनाया गया है उस की भलाई का सुवाल करता हूं और इस के शर और जिस मक़्सद के लिये येह बनाया गया है उस के शर से तेरी पनाह चाहता हूं)[3]

लिबास की उ़म्दा तश्रीह़

इमाम राग़िब अस्फ़हानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने लिबास के लुग़वी मा'ना बयान करते हुए बड़ी उ़म्दा तश्रीह़ फ़रमाई है चुनान्चे लिखते हैं कि हर वोह चीज़ जो इन्सान की बुरी और ना पसन्दीदा चीज़ को छुपा ले उसे लिबास कहते हैं शौहर अपनी बीवी और बीवी अपने शौहर को बुरी चीज़ों से छुपा लेती है, वोह एक दूसरे की पारसाई की हिफ़ाज़त करते हैं और पारसाई के ख़िलाफ़ चीज़ों से एक दूसरे के लिये रुकावट होते हैं इस लिये इन्हें एक दूसरे का लिबास फ़रमाया है :

1 .....ترمذی، کتاب الادب، باب ما جاء فی لبس البیاض، ٤/٣٧٠، الحدیث: ٢٨١٩.
2 .....مستدرك، کتاب اللباس، الدعاء عند فراغ الطعام، ٥/٢٧٠، الحدیث: ٧٤٨٦.
3 .....شرح السنة للبغوی، کتاب اللباس، باب ما یقول اذا لبس ثوباً جدیداً، ٦/١٧٢، الحدیث: ٣٠٠٥.

www.dawateislami.net

هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह तुम्हारे लिये लिबास हैं और तुम उन के लिये लिबास हो।

लिबास से इन्सान की ज़ीनत होती है, इसी ए'तिबार से फ़रमाया है "لِبَاسُ التَّقْوٰى" (तक़्वा का मा'ना है बुरे अ़क़ाइद और बुरे आ'माल को तर्क कर देना और पाकीज़ा सीरत अपनाना, जिस त़रह़ कपड़ों का लिबास इन्सान को सर्दी, गर्मी और बरसात के मौसिमों की शिद्दत से महफ़ूज़ रखता है इसी त़रह़ तक़्वा का लिबास इन्सान को उख़्रवी अ़ज़ाब से बचाता है।)(2)

يٰبَنِيْۤ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَاۤ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ؕ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۲۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ आदम की औलाद ख़बरदार तुम्हें शैत़ान फ़ितने में न डाले जैसा तुम्हारे मां बाप को बिहिश्त से निकाला उतरवा दिये उन के लिबास कि उन की शर्म की चीज़ें उन्हें नज़र पड़ीं बेशक वोह और उस का कुम्बा तुम्हें वहां से देखते हैं कि तुम उन्हें नहीं देखते बेशक हम ने शैत़ानों को उन का दोस्त किया है जो ईमान नहीं लाते।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ आदम की औलाद ! तुम्हें शैत़ान फ़ितने में न डाले जैसे उस ने तुम्हारे मां बाप को जन्नत से निकाल दिया, उन दोनों से उन के लिबास उतरवा दिये ताकि उन्हें उन की शर्म की चीज़ें दिखा दे। बेशक वोह ख़ुद और उस का क़बीला तुम्हें वहां से देखते हैं जहां से तुम उन्हें नहीं देखते। बेशक हम ने शैत़ानों को ईमान न लाने वालों का दोस्त बना दिया है।

﴿يٰبَنِيْۤ اٰدَمَ﴾ **: ऐ आदम की औलाद !** शैत़ान की फ़रेब कारी और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ इस की दुश्मनी व अ़दावत का बयान फ़रमा कर बनी आदम को मुतनब्बेह और होशियार किया जा रहा है कि वोह शैत़ान के वस्वसे, इग़्वा और इस की मक्कारियों से बचते रहें। जो ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ ऐसी फ़रेब कारी कर चुका है वोह उन की औलाद के साथ कब दर गुज़र करने वाला है। इस में मोमिन, काफ़िर, वली, आ़लिम, परहेज़ गार सब से ख़ित़ाब है, कोई अपने आप को इब्लीस से महफ़ूज़ न जाने चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है : ऐ आदम की औलाद ! तुम्हें शैत़ान फ़ितने में न डाले जैसे उस ने तुम्हारे मां बाप

(1) ..... البقرة: ۱۸۷. (2) ..... مفردات امام راغب، كتاب اللام، ص ۷۳٤-۷۳۵ ملخصاً.

www.dawateislami.net

को जन्नत से निकाल दिया, उन दोनों से उन के लिबास उतरवा दिये ताकि उन्हें उन की शर्म की चीज़ें दिखा दे।

﴿اِنَّهٗ یَرٰىكُمْ هُوَ﴾ **: बेशक वोह ख़ुद तुम्हें देखता है ।﴾** या'नी शैत़ान और उस की ज़ुर्रिय्यत सारे जहान के लोगों को देखते हैं जब कि लोग उन्हें नहीं देखते। जहां किसी ने किसी जगह अच्छे काम का इरादा किया, उसे उस की निय्यत की ख़बर हो गई और फ़ौरन बहका दिया।

शैत़ान से मुक़ाबला करने और इसे मग़्लूब करने के त़रीक़े

याद रहे कि जो दुश्मन तुम्हें देख रहा है और तुम उसे नहीं देख रहे उस से **अल्लाह** तआ़ला के बचाए बिग़ैर ख़लासी नहीं हो सकती जैसा कि ह़ज़रते ज़ुन्नून رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "शैत़ान ऐसा है कि वोह तुम्हें देखता है और तुम उसे नहीं देख सकते लेकिन **अल्लाह** तआ़ला तो उसे देखता है और वोह **अल्लाह** तआ़ला को नहीं देख सकता तो तुम उस के मुक़ाबले में **अल्लाह** तआ़ला से मदद चाहो।"(1)

लिहाज़ा हर मुसल्मान को चाहिये कि वोह अपनी अ़क़्ल से काम लेते हुए इस के नुक़्सान से बहुत ज़ियादा डरे और हर वक़्त इस से मुक़ाबले के लिये तय्यार रहे।

इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : सूफ़ियाए किराम के नज़्दीक शैत़ान से जंग करने और उसे मग़्लूब करने के दो त़रीक़े हैं :

(1)..... शैत़ान के मक्रो फ़रेब से बचने के लिये सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला की पनाह ली जाए, इस के इलावा और कोई रास्ता नहीं क्यूं कि शैत़ान एक ऐसा कुत्ता है जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने तुम पर मुसल्लत़ फ़रमा दिया है, अगर तुम उस से मुक़ाबला व जंग करने और उसे (ख़ुद से) दूर करने में मश्ग़ूल हो गए तो तुम तंग आ जाओगे और तुम्हारा क़ीमती वक़्त ज़ाएअ़ हो जाएगा और बिल आख़िर वोह तुम पर ग़ालिब आ जाएगा और तुम्हें ज़ख़्मी व नाकारा बना देगा इस लिये उस के मालिक ही की त़रफ़ मुतवज्जेह होना पड़ेगा और उसी की पनाह लेनी होगी ताकि वोह शैत़ान को तुम से दूर कर दे और येह तुम्हारे लिये शैत़ान के साथ जंग और मुक़ाबला करने से बेहतर है।

(2)..... शैत़ान से मुक़ाबला करने, उसे दफ़्अ़ व दूर करने और उस की तरदीद व मुख़ालफ़त करने के लिये हर वक़्त तय्यार रहना चाहिये।

मैं (इमाम ग़ज़ाली) कहता हूं : मेरे नज़्दीक इस का जामेअ़ और बेहतरीन त़रीक़ा येह है कि मज़्कूरा बाला दोनों त़रीक़ों को बरूए कार लाया जाए लिहाज़ा सब से पहले शैत़ान मरदूद की शरारतों से **अल्लाह** तआ़ला की पनाह ली जाए जैसा कि **अल्लاह** तआ़ला ने हमें इस का हुक्म फ़रमाया है और **अल्लाह** तआ़ला हमें शैत़ाने लईन से महफ़ूज़ रखने के लिये काफ़ी है।

(1) .....روح البيان، الاعراف، تحت الآية: ٢٧، ٣/ ١٥٠.

www.dawateislami.net

इस के बा'द भी अगर तुम येह महसूस करो कि **अल्लाह** तआ़ला की पनाह लेने के बा वुजूद शैत़ान तुम पर ग़ालिब आने की कोशिश कर रहा है और तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ रहा तो तुम्हें समझ लेना चाहिये कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारा इम्तिह़ान लेना चाहता है ताकि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे मुजाहदे और इ़बादत में तुम्हारी क़ुव्वत की सच्चाई व सफ़ाई देखे और तुम्हारे सब्र की जांच फ़रमाए। जैसा कि काफ़िरों को हम पर मुसल्लत़ फ़रमाया ह़ालां कि **अल्लाह** तआ़ला कुफ़्फ़ार के अ़ज़ाइम और उन की शर अंगेज़ियों को हमारे जिहाद किये बिग़ैर मल्या मेट कर देने पर क़ादिर है लेकिन वोह उन्हें सफ़ह़ए हस्ती से ख़त्म नहीं फ़रमाता बल्कि हमें उन के ख़िलाफ़ जिहाद करने का हुक्म देता है ताकि जिहाद, सब्र, गुनाहों से छुटकारा और शहादत से हमें भी कुछ ह़िस्सा मिल जाए और हम इस इम्तिह़ान में काम्याबो कामरान हो जाएं तो इसी त़रह़ हमें शैत़ान से भी इन्तिहाई जां फ़िशानी के साथ मुक़ाबला और जंग करने का हुक्म दिया गया है, फिर हमारे उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं कि शैत़ान से मुक़ाबला करने और उस पर ग़लबा ह़ासिल करने के तीन त़रीक़े हैं :

(1)..... तुम शैत़ान के मक्रो फ़रेब और उस की ह़ीला साज़ियों से होशियार हो जाओ क्यूं कि जब तुम्हें उस की ह़ीला साज़ियों का इ़ल्म होगा तो वोह तुम्हें नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेगा, जिस त़रह़ चोर को जब मा'लूम हो जाता है कि मालिके मकान को मेरे आने का इ़ल्म हो गया है तो वोह भाग जाता है।

(2)..... जब शैत़ान तुम्हें गुमराहियों की त़रफ़ बुलाए तो तुम उसे रद कर दो और तुम्हारा दिल क़त़्अ़न उस की त़रफ़ मुतवज्जेह न हो और न तुम उस की पैरवी करो क्यूं कि शैत़ाने लईन एक भोंकने वाले कुत्ते की त़रह़ है, अगर तुम उसे छेड़ोगे तो वोह तुम्हारी त़रफ़ तेज़ी के साथ लपकेगा और तुम्हें ज़ख़्मी कर देगा और अगर तुम उस से कनारा कशी इख़्तियार कर लोगे तो वोह ख़ामोश रहेगा।

(3)..... **अल्लाह** तआ़ला का हमेशा ज़िक्र करते रहो और हमा वक़्त ख़ुद को **अल्लाह** तआ़ला की याद में मसरूफ़ रखो[1]।[2]

क्या इन्सान जिन्नों को देख सकते हैं ?

अल्लाह तआ़ला ने जिन्नों को ऐसा इ़ल्मो इदराक दिया है कि वोह इन्सानों को देखते हैं और इन्सानों को ऐसा इदराक नहीं मिला कि वोह हर वक़्त जिन्नों को देख सकें अलबत्ता

1 .....منهاج العابدين، العقبة الثالثة، العائق الثالث: الشيطان، ص ٥٥-٥٦.

2 ..... शैत़ान के मक्रो फ़रेब और इस के हथियारों के बारे में जानने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब "शैत़ान के बा'ज़ हथियार" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

बा'ज़ अवक़ात इन्सान भी जिन्नात को देख लेते हैं।

मख़्लूक़ के लिये वसीअ़ इल्मो क़ुदरत मानना शिर्क नहीं

इस आयते मुबारका से येह भी मा'लूम हुवा कि शैत़ान का इ़ल्म और उस की क़ुदरत बहुत वसीअ़ है कि हर ज़बान में हर जगह, हर आदमी को वस्वसे डालने की त़ाक़त रखता है, इस से मा'लूम हुवा कि इस क़दर वसीअ़ इ़ल्मो क़ुदरत मानना शिर्क नहीं बल्कि क़ुरआन से साबित है लेकिन उन लोगों पर अफ़्सोस है जो शैत़ान की वुस्अ़ते इ़ल्म को तो फ़ौरन मान लेते हैं लेकिन हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये ऐसा वसीअ़ इ़ल्म मानने को शिर्क क़रार देते हैं।

﴿اِنَّا جَعَلْنَا الشَّیٰطِیْنَ اَوْلِیَآءَ لِلَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ﴾ **: बेशक हम ने शैत़ानों को ईमान न लाने वालों का दोस्त बना दिया है।** या'नी शैत़ान ब ज़ाहिर कुफ़्फ़ार का दोस्त है और कुफ़्फ़ार दिल से शैत़ान के दोस्त हैं वरना शैत़ान दर ह़क़ीक़त कुफ़्फ़ार का भी दोस्त नहीं वोह तो हर इन्सान का दुश्मन है कि सब को अपने साथ जहन्नम में ले जाने की कोशिश करना इस का मत़्लूबो मुराद है।

وَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَیْهَاۤ اٰبَآءَنَا وَ اللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا یَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब कोई बे ह़याई करें तो कहते हैं हम ने इस पर अपने बाप दादा को पाया और **अल्लाह** ने हमें इस का हुक्म दिया तो फ़रमाओ बेशक **अल्लाह** बे ह़याई का हुक्म नहीं देता क्या **अल्लाह** पर वोह बात लगाते हो जिस की तुम्हें ख़बर नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब कोई बे ह़याई करते हैं तो कहते हैं कि हम ने अपने बाप दादा को इसी पर पाया था और **अल्लाह** ने (भी) हमें इसी का हुक्म दिया है। (ऐ ह़बीब !) तुम फ़रमाओ : बेशक **अल्लाह** बे ह़याई का हुक्म नहीं देता। क्या तुम **अल्लाह** पर वोह बात कहते हो जिस की तुम्हें ख़बर नहीं ?

﴿وَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً﴾ **: और जब कोई बे ह़याई करें।** "فَاحِشَةً" या'नी बे ह़याई की तफ़्सीर में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास और ह़ज़रते मुजाहिद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : इस से मुराद ज़मानए जाहिलिय्यत के मर्द व औ़रत का नंगे हो कर का'बए मुअ़ज़्ज़मा का त़वाफ़ करना है। ह़ज़रते अ़त़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है कि बे ह़याई से मुराद

www.dawateislami.net

शिर्क है और ह़क़ीक़त येह है कि हर क़बीह़ फ़े'ल और तमाम सग़ीरा कबीरा गुनाह इस में दाख़िल हैं अगर्चे येह आयत ख़ास नंगे हो कर त़वाफ़ करने के बारे में आई है। जब कुफ़्फ़ार की ऐसी बे ह़याई के कामों पर उन की मज़म्मत की गई तो इस पर उन्हों ने अपने क़बीह़ अफ़्आ़ल के दो उ़ज़्र बयान किये, एक तो येह कि उन्हों ने अपने बाप दादा को येही फ़े'ल करते पाया लिहाज़ा उन की इत्तिबाअ़ में येह भी करते हैं। इस उ़ज़्र का बार बार क़ुरआन में रद कर दिया गया कि येह इत्तिबाअ़ तो जाहिल व बदकार की इत्तिबाअ़ हुई और येह किसी साह़िबे अ़क़्ल के नज़्दीक जाइज़ नहीं। इत्तिबाअ़ तो अहले इ़ल्मो तक़्वा की की जाती है न कि जाहिल गुमराह की। उन का दूसरा उ़ज़्र येह था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें इन अफ़्आ़ल का हुक्म दिया है। येह महज़ इफ़्तिरा व बोहतान था चुनान्चे **अल्लाह** तबारक व तआ़ला इस का रद फ़रमाता है कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, तुम जवाब में फ़रमाओ : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बे ह़याई का हुक्म नहीं देता। क्या तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर वोह बात कहते हो जिस की तुम्हें ख़बर नहीं ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बे ह़याई का नहीं बल्कि उन चीज़ों का हुक्म दिया है जो बा'द वाली आयत में मज़्कूर हैं।

قُلْ اَمَرَ رَبِّیْ بِالْقِسْطِ ۫ وَ اَقِیْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّ ادْعُوْهُ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ ؕ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ﴿۲۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ मेरे रब ने इन्साफ़ का हुक्म दिया है और अपने मुंह सीधे करो हर नमाज़ के वक़्त और उस की इबादत करो निरे उस के बन्दे हो कर जैसे उस ने तुम्हारा आग़ाज़ किया वैसे ही पलटोगे।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : तुम फ़रमाओ : मेरे रब ने अ़द्ल का हुक्म दिया है और (येह कि) हर नमाज़ के वक़्त तुम अपने मुंह सीधे करो और इबादत को उसी के लिये ख़ालिस कर के उस की बन्दगी करो। उस ने जैसे तुम्हें पैदा किया है वैसे ही तुम पलटोगे।

﴿قُلْ اَمَرَ رَبِّیْ بِالْقِسْطِ﴾ **: तुम फ़रमाओ : मेरे रब ने अ़द्ल का हुक्म दिया है।** ﴾ इस से पहली आयात में उन बुरी बातों का ज़िक्र था जिन से **अल्लाह** तआ़ला ने मन्अ़ फ़रमाया है और इस आयत में उन आ'माल का ज़िक्र किया गया है जिन का **अल्लाह** तआ़ला ने हुक्म दिया और जिन से वोह राज़ी है ताकि बन्दे पहली क़िस्म के कामों से बचें और दूसरी क़िस्म के काम करें।[1]

1..... तफ़्सीरे नईमी, अल आ'राफ़, तह़्तल आयह : 29, 8/382

www.dawateislami.net

क़िस्त के मा'ना

क़िस्त के कई मा'ना हैं (1) हिस्सा। (2) अ़द्लो इन्साफ़। (3) ज़ुल्म। (4) दरमियानी चीज़ या'नी जिस में इफ़्रात़ो तफ़्रीत़ या'नी कमी ज़ियादती न हो। अक्सर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक यहां आयत में "क़िस्त" अ़द्लो इन्साफ़ के मा'ना में है। येह लफ़्ज़ बहुत सी चीज़ों को शामिल है, अ़क़ाइद में अ़द्लो इन्साफ़ करना, इबादात में अ़द्ल करना, मुआ़मलात में अ़द्ल करना, बादशाह का अ़द्ल करना, फ़क़ीर का इन्साफ़ करना, अपनी औलाद, रिश्तेदारों और अपने नफ़्स के मुआ़मले में अ़द्ल करना वग़ैरा येह सब इस में दाख़िल है।[1]

﴿وَاَقِیْمُوْا وُجُوْهَكُمْ﴾ **: और तुम अपने मुंह सीधे करो।** मुफ़स्सिरीन ने इस आयत के मुख़्तलिफ़ मा'ना बयान फ़रमाए हैं, इमाम मुजाहिद और मुफ़स्सिर सुद्दी का क़ौल है कि इस आयत का मा'ना येह है कि तुम जहां भी हो नमाज़ के वक़्त अपने चेहरे का'बे की त़रफ़ सीधे कर लो। इमाम ज़ह़्हाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : इस का मा'ना येह है कि जब नमाज़ का वक़्त आए और तुम मस्जिद के पास हो तो मस्जिद में नमाज़ अदा करो और तुम में से कोई येह न कहे कि मैं अपनी मस्जिद में या अपनी क़ौम की मस्जिद में नमाज़ अदा करूंगा। और एक क़ौल येह है कि इस का मा'ना येह है कि तुम अपने सज्दे ख़ालिस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये कर लो।[2]

﴿مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ﴾ **: ख़ालिस उस के बन्दे हो कर।** **अल्लाह** तआ़ला की इबादत में इख़्लास का मा'ना येह है कि **अल्लाह** की इबादत सिर्फ़ उस की रिज़ा ह़ासिल करने या उस के हुक्म की बजा आवरी की निय्यत से की जाए, उस में किसी को दिखाने या सुनाने की निय्यत हो, न उस में किसी और को शरीक किया जाए।[3]

इख़्लास की ह़क़ीक़त और अ़मल में इख़्लास के फ़ज़ाइल

इमाम राग़िब अस्फ़हानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : इख़्लास की ह़क़ीक़त येह है कि बन्दा **अल्लाह** तआ़ला की इबादत (और उस की रिज़ाजूई) के इलावा हर एक की इबादत (और उस की रिज़ाजूई) से बरी हो जाए।[4] कसीर अह़ादीस में इख़्लास के साथ अ़मल करने के फ़ज़ाइल बयान हुए हैं, उन में से 3 अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस मुसल्मान में येह तीन औसाफ़ हों उस के दिल में

1 .....بیضاوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۲۹، ۳/۱٦، روح المعانی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۲۹، ٤/٤٨٤.
2 .....بغوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۲۹، ۲/۱۳۰، خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۲۹، ۲/۸۷، ملتقطاً.
3 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۲۹، ۲/۸۷، ملتقطاً. 4 .....مفردات امام راغب، کتاب الخاء، ص۲۹۳.

www.dawateislami.net

कभी खोट न होगा : (1) उस का अ़मल ख़ालिस **अल्लाह** तआ़ला के लिये हो। (2) वोह आइम्मए मुस्लिमीन के लिये ख़ैर ख़्वाही करे। (3) और मुसल्मानों की जमाअ़त को लाज़िम पकड़ ले।''[1]

(2)..... ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** तआ़ला इस उम्मत के कमज़ोर लोगों की दुआ़ओं, उन की नमाज़ों और उन के इख़्लास की वज्ह से इस उम्मत की मदद फ़रमाता है।''[2]

(3)..... ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यमन की त़रफ़ भेजा तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** मुझे कोई वसिय्यत कीजिये। **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अपने दीन में इख़्लास रखो, तुम्हारा थोड़ा अ़मल भी काफ़ी होगा।[3]

तर्के इख़्लास की मज़म्मत

जिस त़रह़ अह़ादीस में इख़्लास के फ़ज़ाइल बयान हुए हैं इसी त़रह़ तर्के इख़्लास की भी ब कसरत मज़म्मत की गई है, चुनान्चे उन में से 3 अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)..... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''**अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है : मैं शरीक से बे नियाज़ हूं, जिस शख़्स ने किसी अ़मल में मेरे साथ मेरे ग़ैर को शरीक किया मैं उसे और उस के शिर्क को छोड़ देता हूं।''[4]

(2)..... ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़ियामत के दिन मोह़र लगे हुए नामए आ'माल लाए जाएंगे। **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाएगा : इस आ'माल नामे को क़बूल कर लो और इस आ'माल नामे को छोड़ दो। फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करेंगे : तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! हम ने वोही लिखा है जो इस ने अ़मल किया। **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाएगा : तुम ने सच कहा, (मगर) इस का अ़मल मेरी ज़ात के लिये न था, आज मैं सिर्फ़ उसी अ़मल को क़बूल करूंगा जो मेरी ज़ात के लिये किया गया होगा।''[5]

(3)..... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन सब से पहले एक शहीद का फ़ैसला होगा, जब उसे लाया जाएगा तो **अल्लाह** तआ़ला उसे अपनी ने'मतें याद दिलाएगा। वोह उन ने'मतों का इक़रार करेगा,

1 .....ترمذی، کتاب العلم، باب ما جاء فی الحث علی تبلیغ السماع، ٤/٢٩٩، الحدیث: ٢٦٦٧.
2 .....نسائی، کتاب الجهاد، الاستنصار بالضعیف، ص٥١٨، الحدیث: ٣١٧٥.
3 .....مستدرك، کتاب الرقاق، ٥/٤٣٥، الحدیث: ٧٩١٤.
4 .....مسلم، کتاب الزهد والرقائق، باب من اشرك فی عمله غیر الله، ص١٥٩٤، الحدیث: ٤٦(٢٩٨٥).
5 .....معجم الاوسط، باب المیم، من اسمه محمد، ٤/٣٢٨، الحدیث: ٦١٣٣.

www.dawateislami.net

फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : तू ने इन ने'मतों के बदले में क्या अ़मल किया ? वोह अ़र्ज़ करेगा : मैं ने तेरी राह में जिहाद किया यहां तक कि शहीद हो गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : तू झूटा है, तू ने जिहाद इस लिये किया था कि तुझे बहादुर कहा जाए और वोह तुझे कह लिया गया। फिर उस के बारे में जहन्नम में जाने का हुक्म देगा तो उसे मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा। फिर उस शख़्स को लाया जाएगा जिस ने इ़ल्म सीखा, सिखाया और क़ुरआने पाक पढ़ा, वोह आएगा तो **अल्लाह** तआ़ला उसे भी अपनी ने'मतें याद दिलाएगा, वोह भी उन ने'मतों का इक़रार करेगा। फिर **अल्लाह** तआ़ला उस से दरयाफ़्त फ़रमाएगा : तू ने इन ने'मतों के बदले में क्या किया ? वोह अ़र्ज़ करेगा : मैं ने इ़ल्म सीखा और सिखाया और तेरे लिये क़ुरआने करीम पढ़ा। **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाएगा : तू झूटा है, तू ने इस लिये इ़ल्म सीखा ताकि तुझे आ़लिम कहा जाए और क़ुरआने पाक इस लिये पढ़ा कि तुझे क़ारी कहा जाए और वोह तुझे कह लिया गया। फिर उसे भी जहन्नम में डालने का हुक्म होगा तो उसे मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा। फिर एक मालदार शख़्स को लाया जाएगा जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने हर त़रह़ का माल अ़त़ा फ़रमाया था, उसे ला कर ने'मतें याद दिलाई जाएंगी तो वोह भी उन ने'मतों का इक़रार करेगा। **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाएगा : तू ने इन ने'मतों के बदले क्या किया ? वोह अ़र्ज़ करेगा : मैं ने तेरी राह में जहां ज़रूरत पड़ी वहां ख़र्च किया। **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाएगा : तू झूटा है, तू ने येह सख़ावत इस लिये की थी कि तुझे सख़ी कहा जाए और वोह कह लिया गया। फिर उस के बारे में जहन्नम का हुक्म होगा तो उसे भी मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।[1]

﴿كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ﴾ **: उस ने जैसे तुम्हें पैदा किया है वैसे ही तुम पलटोगे।** ﴾ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला ने इब्तिदा ही से बनी आदम में से बा'ज़ को मोमिन और बा'ज़ को काफ़िर पैदा फ़रमाया, फिर क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला उन्हें वैसे ही लौटाएगा जैसे इब्तिदा में पैदा फ़रमाया था, मोमिन मोमिन बन कर और काफ़िर काफ़िर बन कर।[2]

इस आयत की तफ़्सीर में ह़ज़रते मुह़म्मद बिन का'ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने इब्तिदा ही से शक़ी और बद बख़्त लोगों में से पैदा किया है वोह क़ियामत के दिन अहले शक़ावत से उठेगा चाहे वोह पहले नेक काम करता हो जैसे इब्लीसे लईन, इसे **अल्लाह** तआ़ला ने बद बख़्तों में से पैदा किया था, येह पहले नेक आ'माल करता था बिल आख़िर कुफ़्र की त़रफ़ लौट गया और जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने इब्तिदा ही से सआ़दत मन्द

1 .....مسلم، کتاب الامارۃ، باب من قاتل للریاء والسمعۃ استحق النار، ص ۱۰۵۵، الحدیث: ۱۵۲ (۱۹۰۵).

2 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۲۹، ۲/۸۷.

www.dawateislami.net

लोगों में से पैदा किया वोह क़ियामत के दिन सआ़दत मन्दों में से उठेगा अगर्चे पहले वोह बुरे काम करता रहा हो, जैसे ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़माने के जादूगर, येह पहले फ़िरऔ़न के ताबेअ़ थे लेकिन बा'द में फ़िरऔ़न को छोड़ कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान ले आए।[1] और इस आयत की एक तफ़्सीर येह की गई है कि जिस त़रह़ इन्सान मां के पेट से नंगे पाउं, नंगे बदन और ख़तना के बिग़ैर पैदा हुवा था क़ियामत के दिन भी इसी त़रह़ नंगे पाउं, नंगे बदन और ख़तना के बिग़ैर उठेगा।[2]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम क़ियामत में नंगे पाउं, नंगे बदन और ख़तना के बिग़ैर उठाए जाओगे।"[3]

فَرِيْقًا هَدٰى وَ فَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ؕ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۳۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : एक फ़िर्क़े को राह दिखाई और एक फ़िर्क़े की गुमराही साबित हुई उन्हों ने **अल्लाह** को छोड़ कर शैत़ानों को वाली बनाया और समझते येह हैं कि वोह राह पर हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : एक गुरौह को हिदायत दी और एक फ़िर्क़े पर गुमराही साबित हो गई, उन्हों ने **अल्लाह** को छोड़ कर शैत़ानों को दोस्त बना लिया है और समझते येह हैं कि येह हिदायत याफ़्ता हैं।

﴿فَرِيْقًا هَدٰى﴾ **: एक गुरौह को हिदायत दी।** या'नी तमाम लोग ईमान न लाएंगे। कुछ ऐसे हैं जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने ईमान व मा'रिफ़त की हिदायत दी और उन्हें त़ाअ़तो इबादत की तौफ़ीक़ दी। इन के बिल मुक़ाबिल कुछ लोग ऐसे हैं जो गुमराह हुए और येह कुफ़्फ़ार हैं, उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को छोड़ कर शैत़ानों को दोस्त बना लिया है। शैत़ानों को दोस्त बनाने का मत़लब येह है कि उन की इत़ाअ़त की, उन के कहे पर चले, उन के हुक्म से कुफ़्रो मआ़सी को इख़्तियार किया और इस के बा वुजूद येह समझते हैं कि हम हिदायत याफ़्ता हैं। उ़मूमी गुमराही से बदतर गुमराही येह होती है कि आदमी गुमराह होने के बा वुजूद ख़ुद को हिदायत याफ़्ता समझे।

1 .....بغوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۲۹، ۲/ ۱۳۰. 2 .....تفسیرات احمدیہ، الاعراف، تحت الآیۃ: ۲۹، ص ۴۱۴.
3 .....بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب قول اللّٰہ تعالی: واتخذ اللّٰہ ابراھیم خلیلاً، ۲/ ۴۲۰، الحدیث: ۳۳۴۹.

www.dawateislami.net

يٰبَنِيْۤ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّ كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا وَ لَا تُسْرِفُوْاۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۳۱﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ आदम की औलाद अपनी ज़ीनत लो जब मस्जिद में जाओ और खाओ और पियो और ह़द से न बढ़ो बेशक ह़द से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ आदम की औलाद ! हर नमाज़ के वक़्त अपनी ज़ीनत ले लो और खाओ और पियो और ह़द से न बढ़ो बेशक वोह ह़द से बढ़ने वालों को पसन्द नहीं फ़रमाता।

﴿خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ﴾ **: अपनी ज़ीनत ले लो ।﴾** या'नी नमाज़ के वक़्त सिर्फ़ सत्रे औ़रत के लिये किफ़ायत करने वाला लिबास ही न पहनो बल्कि इस के साथ वोह लिबास ज़ीनत वाला भी हो या'नी उ़म्दा लिबास में अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर ह़ाज़िरी दो। और एक क़ौल येह है कि ख़ुश्बू लगाना ज़ीनत में दाख़िल है या'नी नमाज़ के लिये इन चीज़ों का भी एहतिमाम रखो। सुन्नत येह है कि आदमी बेहतर हैअत के साथ नमाज़ के लिये ह़ाज़िर हो क्यूं कि नमाज़ में रब عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात है तो इस के लिये ज़ीनत करना और इ़त्र लगाना मुस्तह़ब है जैसा कि सत्रे औ़रत और त़हारत वाजिब है। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : पहले औ़रत बैतुल्लाह का बरह्ना हो कर त़वाफ़ करती थी और येह कहती थी कि कोई मुझे एक कपड़ा देगा जिसे मैं अपनी शर्मगाह पर डाल लूं, आज बा'ज़ या कुल खुल जाएगा और जो खुल जाएगा मैं उसे कभी ह़लाल नहीं करूंगी, तब येह आयत नाज़िल हुई।[1]

आयत ''خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ'' से मा'लूम होने वाले अह़काम

इस आयत में सत्र छुपाने और कपड़े पहनने का हुक्म दिया गया और इस में दलील है कि सत्रे औ़रत नमाज़, त़वाफ़ बल्कि हर ह़ाल में वाजिब है। और येह भी मा'लूम हुवा कि नमाज़ जहां तक हो सके अच्छे लिबास में पढ़े और मस्जिद में अच्छी ह़ालत में आए। बदबूदार कपड़े, बदबूदार मुंह ले कर मस्जिद में न आए। ऐसे ही नंगा मस्जिद में दाख़िल न हो।

1 ..... مسلم، کتاب التفسیر، باب فی قوله تعالی: خذوا زینتکم عند کل مسجد، ص١٦١٤، الحدیث: ٢٥(٣٠٢٨).

www.dawateislami.net

आदाबे मस्जिद से मुतअ़ल्लिक़ 3 अह़ादीस

(1)..... ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो मस्जिद से अज़िय्यत की चीज़ निकाले, **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा।"[1]

(2)..... ह़ज़रते वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मसाजिद को बच्चों और पागलों, ख़रीदो फ़रोख़्त और झगड़े, आवाज़ बुलन्द करने, ह़ुदूद क़ाइम करने और तल्वार खींचने से बचाओ।"[2]

(3)..... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो किसी को मस्जिद में ब आवाज़े बुलन्द गुमशुदा चीज़ ढूंडते सुने तो कहे "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वोह गुमशुदा शै तुझे न मिलाए" क्यूं कि मस्जिदें इस काम के लिये नहीं बनाई गई[3]।"[4]

क़ीमती लिबास में नमाज़

इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा ह़ज़रते नो'मान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़े तहज्जुद के लिये बेश क़ीमत क़मीस, पाजामा, इमामा और चादर पहनते थे जिस की क़ीमत डेढ़ हज़ार दिरहम थी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हर रात तहज्जुद ऐसे लिबास में पढ़ते थे और फ़रमाते थे कि "जब हम लोगों से अच्छे लिबास में मिलते हैं तो **अल्लाह** तआ़ला से आ'ला लिबास में मुलाक़ात क्यूं न करें।"[5]

﴿وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا﴾ **: और खाओ और पियो।** ﴾ **शाने नुज़ूल :** कल्बी का क़ौल है कि बनी आ़मिर ज़मानए ह़ज में अपनी ख़ूराक बहुत ही कम कर देते थे और गोश्त और चिक्नाई तो बिल्कुल खाते ही न थे और इस को ह़ज की ता'ज़ीम जानते थे। मुसल्मानों ने उन्हें देख कर अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, हमें ऐसा करने का ज़ियादा ह़क़ है। इस पर येह नाज़िल हुवा[6] कि खाओ और पियो, गोश्त हो ख़्वाह चिक्नाई हो और इसराफ़ न करो और वोह (या'नी

---

1 .....ابن ماجه، كتاب المساجد والجماعات، باب تطهير المساجد وتطييبها، ١/٤١٩، الحديث: ٧٥٧.

2 .....ابن ماجه، كتاب المساجد والجماعات، باب ما يكره في المساجد، ١/٤١٥، الحديث: ٧٥٠.

3 .....مسلم، كتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب النهي عن نشد الضالة في المسجد... الخ، ص ٢٨٤، الحديث: ٨٩(٥٦٨).

4 ..... मस्जिदें पाक साफ़ और ख़ुश्बूदार रखने से मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिसाला "मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये" (मत्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

5 .....روح البيان، الاعراف، تحت الآية: ٣١، ٣/١٥٤ ملخصاً. 6 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ٣١، ٢/٨٨.

www.dawateislami.net

इसराफ़) येह है कि सेर हो चुकने के बा'द भी खाते रहो या ह़राम की परवाह न करो और येह भी इसराफ़ है कि जो चीज़ **अल्लाह** तआ़ला ने ह़राम नहीं की उस को ह़राम कर लो। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : "खाओ जो चाहो और पहनो जो चाहो और इसराफ़ और तकब्बुर से बचते रहो।"[1] इस से मा'लूम हुवा कि मह़्ज़ तर्के दुन्या इ़बादत नहीं तर्के गुनाह इ़बादत है।

क़ुरआन की आधी आयत में पूरा इ़ल्मे त़िब

ख़लीफ़ा हारून रशीद का एक ईसाई त़बीब इ़ल्मे त़िब में बहुत माहिर था, उस ने एक मरतबा ह़ज़रते अ़ली बिन हुसैन वाक़िद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कहा, इ़ल्म दो त़रह़ का है (1) इ़ल्मे अद्यान (2) इ़ल्मे अबदान। और तुम मुसल्मानों की किताब क़ुरआने पाक में इ़ल्मे त़िब से मुतअ़ल्लिक़ कुछ भी मज़्कूर नहीं। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस ईसाई त़बीब को जवाब दिया : **अल्लाह** तआ़ला ने हमारी किताब की आधी आयत में पूरी त़िब को जम्अ़ फ़रमा दिया है। ईसाई त़बीब ने ह़ैरान हो कर पूछा : वोह कौन सी आयत है ? आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : वोह **अल्लाह** तआ़ला का येह फ़रमान है : "وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا" खाओ और पियो और ह़द से न बढ़ो।[2]

अश्या की ह़िल्लत व ह़ुर्मत का उसूल

आयत में इस बात की दलील है कि खाने और पीने की तमाम चीज़ें ह़लाल हैं सिवाए उन के जिन पर शरीअ़त में दलीले ह़ुर्मत क़ाइम हो क्यूं कि येह क़ाइदा मुक़र्ररा मुसल्लमा है कि तमाम अश्या में अस्ल इबाह़त है मगर जिस पर शारेअ़ ने मुमानअ़त फ़रमाई हो और उस की ह़ुर्मत दलीले मुस्तक़िल से साबित हो।

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ؕ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۳۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ किस ने ह़राम की **अल्लाह** की वोह ज़ीनत जो उस ने

1 ……بغوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۳۱، ۲/۱۳۱. 2 ……تفسیر قرطبی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۳۱، ۴/۱۳۹، الجزء السابع.

www.dawateislami.net

अपने बन्दों के लिये निकाली और पाक रिज़्क़ तुम फ़रमाओ कि वोह ईमान वालों के लिये है दुन्या में और क़ियामत में तो ख़ास उन्हीं की है हम यूंही मुफ़स्सल आयतें बयान करते हैं इल्म वालों के लिये।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ : **अल्लाह** की उस ज़ीनत को किस ने ह़राम किया जो उस ने अपने बन्दों के लिये पैदा फ़रमाई है ? और पाकीज़ा रिज़्क़ को (किस ने ह़राम किया ?) तुम फ़रमाओ : येह दुन्या में ईमान वालों के लिये है, क़ियामत में तो ख़ास उन्ही के लिये होगा। हम इसी त़रह़ इल्म वालों के लिये तफ़्सील से आयात बयान करते हैं।

﴿قُلْ مَنْ حَرَّمَ﴾ **: तुम फ़रमाओ किस ने ह़राम किया ।** ﴾ या'नी ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप उन जाहिलों से फ़रमा दीजिये जो का'बए मुअ़ज़्ज़मा का नंगे हो कर त़वाफ़ करते हैं कि तुम पर **अल्लाह** तआ़ला की उस ज़ीनत को किस ने ह़राम किया जो उस ने अपने बन्दों के लिये इसी लिये पैदा फ़रमाई कि वोह उस से ज़ीनत ह़ासिल करें और नमाज़ व त़वाफ़ और दीगर अवक़ात में उसे पहनें।

ज़ीनत की दो तफ़ासीर

ज़ीनत की तफ़्सीर में दो क़ौल हैं :

(1) जुम्हूर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक यहां ज़ीनत से मुराद वोह लिबास है जो सत्रपोशी के काम आए।[1]

(2)..... इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि आयत में लफ़्ज़ "ज़ीनत" ज़ीनत की तमाम अक़्साम को शामिल है इसी में लिबास और सोना चांदी भी दाख़िल है।[2]

इस आयत से मा'लूम हुवा कि जिस चीज़ को शरीअ़त ह़राम न करे वोह ह़लाल है। ह़ुर्मत के लिये दलील की ज़रूरत है जब कि ह़िल्लत के लिये कोई दलीले ख़ास ज़रूरी नहीं। ﴿وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ﴾ **: और पाकीज़ा रिज़्क़ ।** ﴾ या'नी उस पाकीज़ा रिज़्क़ और खाने पीने की लज़ीज़ चीज़ों को किस ने ह़राम किया जो **अल्लाह** तआ़ला ने अपने बन्दों के लिये निकालीं। **मस्अला :** आयत अपने उ़मूम पर है और खाने की हर चीज़ इस में दाख़िल है कि जिस की ह़ुर्मत पर नस्स वारिद न हुई हो।[3]

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ٣٢، ٢/٨٩. 2 .....تفسير كبير، الاعراف، تحت الآية: ٣٢، ٥/٢٣٠.
3 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ٣٢، ٢/٨٩.

www.dawateislami.net

आयत ''قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ'' की रोशनी में चन्द लोगों को नसीहत

इस आयते मुबारका की रोशनी में बहुत से लोगों को अपनी इस्लाह़ की ज़रूरत है। **(1)**..... पहले नम्बर पर वोह लोग जो अपने ज़ोह्दो तक़्वा के घमन्ड में लोगों की ह़लाल अश्या में भी तह़क़ीक़ कर के उन की दिल आज़ारी करते हैं। येह सख़्त ना जाइज़ और सरासर तक़्वा के ख़िलाफ़ है। चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : शर्ए मुत़ह्हर में मस्लह़त की तह़सील से मफ़्सदा का इज़ाला मुक़द्दम तर है मसलन मुसल्मान ने दा'वत की (और) येह उस के माल व त़आ़म की तह़क़ीक़ात कर रहे हैं ''कहां से लाया ? क्यूंकर पैदा किया ? ह़लाल है या ह़राम ? कोई नजासत तो इस में नहीं मिली है'' कि बेशक येह बातें वह़शत देने वाली हैं और मुसल्मान पर बद गुमानी कर के ऐसी तह़क़ीक़ात में उसे ईज़ा देना है ख़ुसूसन अगर वोह शख़्स शरअ़न मुअ़ज़्ज़मो मोह़तरम हो, जैसे आ़लिमे दीन या सच्चा मुर्शिद या मां बाप या उस्ताज़ या ज़ी इ़ज़्ज़त मुसल्मान सरदारे क़ौम तो इस ने (तह़क़ीक़ात कर के) और बे जा किया, एक तो बद गुमानी दूसरे मुवह़्ह़श (या'नी वह़शत में डालने वाली) बातें, तीसरे बुज़ुर्गों का तर्के अदब। और (येह ख़्वाह म ख़्वाह का मुत्तक़ी बनने वाला) येह गुमान न करे कि ख़ुफ़्या तह़क़ीक़ात कर लूंगा, ह़ाशा व कल्ला ! अगर उसे ख़बर पहुंची और न पहुंचना तअ़ज्जुब है कि आज कल बहुत लोग परचा नवीस (या'नी बातें फैलाने वाले) हैं तो इस में तन्हा बर रू (या'नी अकेले में उस से) पूछने से ज़ियादा रन्ज की सूरत है كَمَاهُوَ مُجَرَّبٌ مَعْلُوْمٌ (जैसा कि तजरिबे से मा'लूम है। ت) न येह ख़याल करे कि अह़बाब के साथ ऐसा बरताव बरतूंगा ''हैहात'' अह़िब्बा (दोस्तों) को रन्ज देना कब रवा है ? और येह गुमान कि शायद ईज़ा न पाए, हम कहते हैं ''शायद ईज़ा पाए'' अगर ऐसा ही शायद पर अ़मल है तो उस के माल व त़आ़म की ह़िल्लत व त़हारत में शायद पर क्यूं नहीं अ़मल करता। मअ़ हाज़ा अगर ईज़ा न भी हुई और उस ने बराहे बे तकल्लुफ़ी बता दिया तो एक मुसल्मान की पर्दा दरी हुई कि शरअ़न ना जाइज़। ग़रज़ ऐसे मक़ामात में वरअ़ व एह़तियात़ की दो ही सूरतें हैं या तो इस त़ौर पर बच जाए कि उसे (या'नी मेहमान नवाज़ को) इज्तिनाब व दामन कुशी पर इत्तिलाअ़ न हो या सुवाल व तह़क़ीक़ करे तो उन उमूर में जिन की तफ़्तीश मूजिबे ईज़ा नहीं होती मसलन किसी का जूता पहने है वुज़ू कर के उस में पाउं रखना चाहता है दरयाफ़्त कर ले कि पाउं तर हैं यूं ही पहन लूं عَلٰى هٰذَا الْقِيَاس या कोई फ़ासिक़े बेबाक मुजाहिरे मो'लिन इस दरजे वक़ाह़त व बे ह़याई को पहुंचा हुवा हो कि उसे न बता देने में बाक हो, न दरयाफ़्त से सदमा गुज़रे, न उस से कोई फ़ितना मुतवक़्क़ेअ़ हो न इज़्हारे ज़ाहिर में पर्दा दरी हो तो इन्दत्तह़क़ीक़ उस से तफ़्तीश में भी ह़रज नहीं, वरना हरगिज़ बनामे वरअ़ व एह़तियात़ मुसल्मानों की नफ़रतो वह़शत या उन की रुस्वाई व फ़ज़ीह़त या तजस्सुसे उ़यूबो मा'सियत का बाइस न हो कि येह सब उमूर ना जाइज़ हैं और शुकूको शुबुहात में वरअ़ न बरत्ना

www.dawateislami.net

ना जाइज़ नहीं। अ़जब कि अम्रे जाइज़ से बचने के लिये चन्द ना रवा बातों का इरतिकाब करे येह भी शैत़ान का एक धोका है कि उसे मोह़तात़ बनने के पर्दे में मह्ज़ ग़ैर मोह़तात़ कर दिया। ऐ अ़ज़ीज़ ! मदारात े ख़ल्क़ व उल्फ़तो मुवानसत अहम उमूर से है।[1]

(2)..... दूसरे नम्बर पर उन लोगों को सबक़ ह़ासिल करना चाहिये जो ख़ुद तो अपने नफ़्स पर सख़्ती करने की ख़ात़िर लज़ीज़ ग़िज़ाओं को तर्क करते हैं लेकिन दूसरा शख़्स अगर उन ग़िज़ाओं को इस्ति'माल करता है तो उसे निहायत नफ़रतो ह़क़ारत की निगाह से देखते हैं। येह भी सरासर ह़राम है, चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : बचना चाहे (तो) बेहतर व अफ़्ज़ल और निहायत मह़मूद अ़मल मगर इस के वरअ़ का ह़ुक्म सिर्फ़ उसी के नफ़्स पर है न कि इस के सबब अस्ले शै को मम्नूअ़ कहने लगे या जो मुसल्मान उसे इस्ति'माल करते हों उन पर त़ा'न व ए'तिराज़ करे, उन्हें अपनी नज़र में ह़क़ीर समझे, इस से तो इस वरअ़ का तर्क हज़ार दरजे बेहतर था कि शर्अ़ पर इफ़्तिरा और मुसल्मानों की तश्नीओ़ तह़क़ीर से तो मह़फ़ूज़ रहता।[2]

एक और मक़ाम पर फ़रमाया : फ़क़ीर غَفَرَ اللهُ تَعَالٰى لَهٗ ने आज तक उस शकर की सूरत देखी, न कभी अपने यहां मंगाई, न आगे मंगाए जाने का क़स्द, मगर ब ईं हमा हरगिज़ मुमानअ़त नहीं मानता, न जो मुसल्मान इस्ति'माल करें उन्हें आसिम ख़्वाह बेबाक जानता है, न तो वरअ़ व एह़तियात़ का नाम बदनाम कर के अ़वामे मोमिनीन पर त़ा'न करे, न अपने नफ़्से ज़लील महीन रज़ील के लिये उन पर तरफ़्फ़ोअ़ व तअ़ल्ली रवा रखे।[3]

(3)..... **तीसरे** नम्बर पर वोह लोग जो ग्यारहवीं, मीलाद शरीफ़, बुज़ुर्गों की फ़ातिह़ा, उ़र्स, मजालिसे शहादत वग़ैरा की शीरीनी और सबील वग़ैरा के शरबत को मम्नूअ़ व ह़राम कहते हैं वोह भी इस आयत के सरीह़ ख़िलाफ़ कर के गुनाहगार होते हैं क्यूं कि येह चीज़ें ह़लाल हैं और इन्हें मम्नूअ़ कहना अपनी राय को दीन में दाख़िल करना है और येही बिद्अ़तो ज़लालत है। इस से मा'लूम हुवा कि तक़्वा येह नहीं कि इन्सान लज़ीज़ ह़लाल चीज़ें छोड़ दे बल्कि ह़राम से बचना तक़्वा है। ह़लाल ने'मतें ख़ूब खाओ पियो, मुह़र्रमात से बचो। नीज़ येह भी याद रखना चाहिये कि लज़्ज़ात को तर्क करने के मुआ़मले में ए'तिदाल को पेशे नज़र रखना चाहिये चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुल्लाह ! मुझे बताया गया है कि तुम दिन को रोज़े रखते और रात को क़ियाम करते हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم,

---

1..... फ़तावा रज़विय्या, 4/526, 527 2..... फ़तावा रज़विय्या, 4/549

3..... फ़तावा रज़विय्या, 4/551, 552

www.dawateislami.net

क्यूं नहीं ? इर्शाद फ़रमाया : "ऐसा न करो, बल्कि रोज़े रखो और छोड़ भी दिया करो, क़ियाम करो और सोया भी करो क्यूं कि तुम्हारे जिस्म का तुम पर हक़ है, तुम्हारी आंख का तुम पर हक़ है, तुम्हारी बीवी का तुम पर हक़ है और तुम्हारे मेहमान का तुम पर हक़ है। तुम्हारे लिये येही काफ़ी है कि तुम हर महीने में तीन रोज़े रख लिया करो क्यूं कि हर नेकी का अज्र दस गुना है तो येह हमेशा रोज़े रखने की त़रह़ हो जाएगा।" मैं ने इसरार किया तो मुझे ज़ियादा की इजाज़त दी गई। मैं ने फिर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, अपने में ज़ियादा त़ाक़त पाता हूं। इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام वाले रोज़े रख लो और इन से ज़ियादा न रखना। मैं ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के रोज़े किस त़रह़ थे ? इर्शाद फ़रमाया : एक दिन रखना और एक दिन छोड़ देना। बुढ़ापे के दिनों में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : काश मैं नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इजाज़त देने को क़बूल कर लेता।[1]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक दीन आसान है, और जो इस से मुक़ाबला करेगा तो दीन ही उस पर ग़ालिब आएगा, पस तुम सीधे रहो और बिशारत क़बूल करो।"[2]

﴿قُلْ : **तुम फ़रमाओ**।﴾ यहां बताया गया कि दुन्या व आख़िरत की ने'मतें अहले ईमान ही के लिये हैं क्यूं कि कुफ़्फ़ार नमक ह़राम हैं और नमक ह़रामों को कुछ भी नहीं दिया जाता लेकिन चूंकि दुन्या में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक मोहलत और इम्तिह़ान भी रखा है इस लिये कुफ़्फ़ार को भी इस में से मिल जाता है बल्कि मोहलत की वज्ह से मुसल्मानों से ज़ियादा ही मिलता है। इस के बिल मुक़ाबिल चूंकि आख़िरत में न इम्तिह़ान है और न मोहलत, लिहाज़ा वहां सिर्फ़ उन्ही को मिलेगा जो मुस्तह़िक़ होंगे और वोह सिर्फ़ मोमिनीन हैं।

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ां नई़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि अच्छी ने'मतें रब عَزَّوَجَلَّ ने मोमिनों के लिये पैदा फ़रमाई हैं, कुफ़्फ़ार इन के तुफ़ैल खा रहे हैं। लिहाज़ा जो कोई कहे कि फ़क़ीरी इस में है कि अच्छा न खाए, अच्छा न पहने वोह झूटा है। अच्छा खाओ, अच्छा पहनो (लेकिन इस के साथ) अच्छे काम करो। (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया :)

كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا[3]

(पाकीज़ा चीज़ें खाओ और अच्छे अ़मल करो।)

1 .....بخاری، کتاب الصوم، باب حق الجسم فی الصوم، ۱/۶۴۹، الحدیث: ۱۹۷۵.
2 .....بخاری، کتاب الایمان، باب الدین یسر، ۱/۲۶، الحدیث: ۳۹. 3 .....سورۂ مؤمنون ۵۱.

www.dawateislami.net

قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّیَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْیَ بِغَیْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ یُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ मेरे रब ने तो बे ह़याइयां ह़राम फ़रमाई हैं जो उन में ख़ुली हैं और जो छुपी और गुनाह और नाह़क़ ज़ियादती और येह कि **अल्लाह** का शरीक करो जिस की उस ने सनद न उतारी और येह कि **अल्लाह** पर वोह बात कहो जिस का इ़ल्म नहीं रखते।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ, मेरे रब ने तो ज़ाहिरी बात़िनी बे ह़याइयां और गुनाह और नाह़क़ ज़ियादती को ह़राम क़रार दिया है और इसे कि तुम **अल्लाह** के साथ उस चीज़ को शरीक क़रार दो जिस की **अल्लाह** ने कोई दलील नहीं उतारी और येह कि तुम **अल्लाह** पर वोह बातें कहो जिस का तुम इ़ल्म नहीं रखते।

﴿قُلْ﴾ **: तुम फ़रमाओ ।﴾** इस आयत में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए उन मुश्रिकीन से ख़ित़ाब है जो बरह्ना हो कर ख़ानए का'बा का त़वाफ़ करते थे और **अल्लाह** तआ़ला की ह़लाल की हुई पाक चीज़ों को ह़राम कर लेते थे, उन से फ़रमाया जाता है कि **अल्लाह** तआ़ला ने येह चीज़ें ह़राम नहीं कीं और उन से अपने बन्दों को नहीं रोका, जिन चीज़ों को उस ने ह़राम फ़रमाया वोह येह हैं जो **अल्लाह** तआ़ला बयान फ़रमाता है (1) बे ह़याइयां, चाहे ज़ाहिरी हों या बात़िनी, क़ौली हों या फ़े'ली (2) गुनाह (3) नाह़क़ ज़ियादती (4) हर त़रह़ का कुफ़्रो शिर्क।

﴿اَلْفَوَاحِشَ﴾ **: बे ह़याइयां ।﴾** हर वोह क़ौल और फ़े'ल जो बुरा और फ़ोह़्श हो उसे फ़ाह़िशा कहते हैं[1] आयत में "اَلْفَوَاحِشَ" से मुराद हर कबीरा गुनाह है, जो अ़लानिया किया जाए वोह "مَاظَهَرَ" या'नी ज़ाहिरी है और जो ख़ुफ़्या किया जाए वोह "مَابَطَنَ" या'नी बात़िनी है। एक क़ौल येह है कि "फ़वाह़िश" से वोह गुनाह मुराद हैं जिन में शर्ई सज़ा लाज़िम न हो और एक क़ौल येह है कि इस से मुराद ज़िना है, जो बदकारी अ़लल ए'लान हो (जैसे उजरत दे कर पेशावर औ़रतों से बदकारी करना, क्लबों और होटलों से कॉल गर्ल्ज़, सोसायटी गर्ल्ज़ बुक कर के बदकारी

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۳۳، ۲/۸۹.

www.dawateislami.net

करना) येह ''مَاظَهَرَ'' है और जो ज़िना खुफ़्या त़रीक़े से किया जाए जैसे किसी जवान लड़की या औरत से इश्क़ो महब्बत के नतीजे में या प्यार का झांसा दे कर ज़िना करना, येह ''مَابَطَنَ'' है ।[1]

ज़ाहिरी व बात़िनी बे ह़याइयों को ह़राम क़रार दिये जाने की वज्ह

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ज़ियादा कोई ग़यूर नहीं, इसी लिये **अल्लाह** तआ़ला ने तमाम ज़ाहिरी और बात़िनी फ़वाह़िश या'नी बे ह़याइयों को ह़राम कर दिया ।''[2]

ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''अगर मैं किसी को अपनी बीवी के साथ देख लूं तो तल्वार की धार से उस की जान निकाल के रख दूं ।'' जब येह बात **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सुनी तो इर्शाद फ़रमाया : ''तुम सा'द की ग़ैरत पर तअ़ज्जुब करते हो ! ह़ालां कि **अल्लाह** तआ़ला की क़सम ! मैं उन से ज़ियादा ग़ैरत मन्द हूं और **अल्लाह** तआ़ला मुझ से ज़ियादा ग़यूर है, इसी ग़ैरत की वज्ह से **अल्लाह** तआ़ला ने बे ह़याई के कामों को ह़राम फ़रमा दिया है, चाहे बे ह़याई ज़ाहिर हो या पोशीदा ।''[3]

﴿وَالْاِثْمَ : **और गुनाह ।**﴾ फ़वाह़िश की त़रह़ ''اَلْاِثْمَ'' की तफ़्सीर में भी चन्द क़ौल हैं (1) हर सग़ीरा गुनाह ''اَلْاِثْمَ'' है (2) वोह गुनाह कि जिस पर शर्ई सज़ा लाज़िम न हो ''اَلْاِثْمَ'' है । (3) हर गुनाह ''اَلْاِثْمَ'' है चाहे सग़ीरा हो या कबीरा ।[4]

﴿وَالْبَغْیَ بِغَیْرِ الْحَقِّ : **और नाह़क़ ज़ियादती ।**﴾ ''اَلْبَغْیَ'' का मा'ना है : ज़ुल्म, तकब्बुर, लोगों पर ज़ियादती करना और इन सब चीज़ों में ह़द से बढ़ जाना । नाह़क़ ज़ियादती का मा'ना है किसी शख़्स का उस चीज़ को त़लब करना जो उस का ह़क़ नहीं जब कि अपने ह़क़ को त़लब करना इस में दाख़िल नहीं ।[5]

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۳۴﴾

1 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۳۳، ۵/۲۳۲.
2 .....مسلم، کتاب التوبۃ، باب غیرۃ اللّٰہ تعالی وتحریم الفواحش، ص۱۴۷۵، الحدیث: ۳۲(۲۷۶۰).
3 .....بخاری، کتاب التوحید، باب قول النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم لا شخص اغیر من اللّٰہ، ۴/۵۴۴، الحدیث: ۷۴۱۶.
4 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۳۳، ۲/۹۰. 5 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۳۳، ۲/۹۰.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हर गुरौह का एक वा'दा है तो जब उन का वा'दा आएगा एक घड़ी न पीछे हो न आगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हर गुरौह के लिये एक मुद्दत मुक़र्रर है तो जब उन की वोह मुद्दत आ जाएगी तो एक घड़ी न पीछे होंगे और न ही आगे।

﴿وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ﴾ **: और हर गुरौह के लिये एक मुद्दत मुक़र्रर है।** इस आयत में मुक़र्ररा मुद्दत से या तो येह मुराद है कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ना फ़रमानी करने वाली उम्मतों के लिये अ़ज़ाब का एक वक़्त मुक़र्रर है और जब वोह वक़्त आएगा तो अ़ज़ाब ज़रूर आएगा। आयत का दूसरा मा'ना येह हो सकता है कि हर किसी की मौत का वक़्त मुक़र्रर है और जब वोह वक़्त आएगा तो मौत का तल्ख़ घूंट पीना पड़ेगा।

मौत के लिये हर वक़्त तय्यार रहें

चूंकि मौत का वक़्त किसी को मा'लूम नहीं है इस लिये हर वक़्त मौत के लिये तय्यार रहना चाहिये और हर वक़्त गुनाहों से दूर और नेक आ'माल में मसरूफ़ रहना चाहिये। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "पांच चीज़ों को पांच से पहले ग़नीमत जानो : (1) अपने बुढ़ापे से पहले जवानी को (2) अपनी बीमारी से पहले सिह़्ह़त को (3) अपनी मोह़ताजी से पहले मालदारी को (4) अपनी मसरूफ़िय्यत से पहले फ़राग़त को (5) अपनी मौत से पहले ज़िन्दगी को।"[1]

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वा'ज़ में फ़रमाते : जल्दी करो जल्दी करो क्यूं कि येह चन्द सांस हैं, अगर रुक गए तो तुम वोह आ'माल नहीं कर सकोगे जो तुम्हें **अल्लाह** तआ़ला के क़रीब करते हैं। **अल्लाह** तआ़ला उस शख़्स पर रह़्म फ़रमाए जो अपने नफ़्स की फ़िक्र करता है और अपने गुनाहों पर रोता है[2]।[3]

يٰبَنِيْۤ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَ اَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝۳۵

1 .....مستدرك، كتاب الرقاق، نعمتان مغبون فيهما كثير من الناس... الخ، ٥/٤٣٥، الحديث: ٧٩١٦.

2 .....احياء علوم الدين، كتاب ذكر الموت وما بعده، الباب الثاني في طول الامل... الخ، بيان المبادرة الى العمل وحذر آفة التاخير، ٥/٢٠٥.

3..... मौत की तय्यारी की रग़बत पाने के लिये किताब "मौत का तसव्वुर" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ आदम की औलाद अगर तुम्हारे पास तुम में के रसूल आएं मेरी आयतें पढ़ते तो जो परहेज़ गारी करे और संवरे तो उस पर न कुछ ख़ौफ़ और न कुछ ग़म।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ आदम की औलाद ! अगर तुम्हारे पास तुम में से वोह रसूल तशरीफ़ लाएं जो तुम्हारे सामने मेरी आयतों की तिलावत करें तो जो परहेज़ गारी इख़्तियार करेगा और अपनी इस्लाह़ कर लेगा तो उन पर न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वोह ग़मगीन होंगे।

﴿اِمَّا یَاْتِیَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ﴾ **: अगर तुम्हारे पास तुम में से रसूल तशरीफ़ लाएं ।﴾** यहां उसी साबिक़ा तनाज़ुर में औलादे आदम से ख़िताब है कि ऐ औलादे आदम ! तुम्हारे पास तुम में से ही रसूल तशरीफ़ लाएंगे जो तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब पढ़ कर सुनाएंगे उसे सुन कर जो परहेज़ गारी इख़्तियार करेगा और मम्नूआ़त से बचते हुए इ़बादतो इताअ़त का रास्ता इख़्तियार करेगा तो क़ियामत के दिन उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब का न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वोह दुन्या में कुछ छोड़ देने की वज्ह से ग़मगीन होगा बल्कि क़ियामत के दिन ह़स्बे मर्तबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से बहरावर होंगे। चुनान्चे उस दिन कितने ही लोग नूर के मिम्बरों पर होंगे, जैसा कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : मेरे जलाल की वज्ह से आपस में मह़ब्बत करने वालों के लिये (क़ियामत के दिन) नूर के मिम्बर होंगे जिन पर अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और शुहदा भी रश्क करेंगे।[1]

وَالَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَاۤ اُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۳۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं और उन के मुक़ाबिल तकब्बुर किया वोह दोज़ख़ी हैं उन्हें उस में हमेशा रहना।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो हमारी आयतें झुटलाएंगे और उन के मुक़ाबले में तकब्बुर करेंगे तो येह लोग जहन्नमी हैं, उस में हमेशा रहेंगे।

﴿وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا﴾ **: और आयात के मुक़ाबले में तकब्बुर करेंगे ।﴾** आयात के मुक़ाबले में तकब्बुर का मा'ना है उन्हें तस्लीम न करना।

1 .....ترمذی، کتاب الزھد، باب ما جاء فی الحب فی اللّٰہ، ۴/۱۷۴، الحدیث: ۲۳۹۷.

www.dawateislami.net

तकब्बुर की बहुत बड़ी क़बाहत

इस से मा'लूम हुवा कि तकब्बुर की बहुत बड़ी क़बाहत येह है कि आदमी जब तकब्बुर का शिकार होता है तो नसीहत क़बूल करना उस के लिये मुश्किल हो जाता है, चुनान्चे क़ुरआने पाक में एक जगह मुनाफ़िक़ के बारे में फ़रमाया गया :

وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब उस से कहा जाए कि **अल्लाह** से डरो तो उसे ज़िद मज़ीद गुनाह पर उभारती है तो ऐसे को जहन्नम काफ़ी है और वोह ज़रूर बहुत बुरा ठिकाना है।

और हदीसे मुबारक में है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हक़ की मुख़ालफ़त और लोगों को हक़ीर जानना तकब्बुर है(2)।''(3)

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿۳۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जिस ने **अल्लाह** पर झूट बांधा या उस की आयतें झुटलाईं उन्हें उन के नसीब का लिखा पहुंचेगा यहां तक कि जब उन के पास हमारे भेजे हुए उन की जान निकालने आएं तो उन से कहते हैं कहां हैं वोह जिन को तुम **अल्लाह** के सिवा पूजते थे कहते हैं वोह हम से गुम गए और अपनी जानों पर आप गवाही देते हैं कि वोह काफ़िर थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जिस ने **अल्लाह** पर झूट बांधा या

1 .....بقرہ:۲۰۶. 2 .....مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم الکبر وبیانہ، ص ۶۰، الحدیث: ۱۴۷(۹۱).

3 ..... तकब्बुर की मज़ीद क़बाहतें जानने के लिये किताब ''तकब्बुर'' (मत्बूआ मक्तबतुल मदीना) का मुताला फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

उस की आयतें झुटलाईं ? तो उन्हें उन का लिखा हुवा हिस्सा पहुंचता रहेगा हत्ता कि जब उन के पास उन की जान क़ब्ज़ करने के लिये हमारे भेजे हुए (फ़िरिश्ते) आते हैं तो वोह (फ़िरिश्ते उन से) कहते हैं : वोह कहां हैं जिन की तुम **अल्लाह** के सिवा इबादत किया करते थे ? वोह (जवाबन) कहते हैं : वोह हम से ग़ाइब हो गए और अपनी जानों पर आप गवाही देते हैं कि वोह काफ़िर थे।

﴿فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ﴾ **: तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन ।﴾** या'नी उस से बड़ा ज़ालिम कौन है जो **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ वोह बात मन्सूब करे जो उस ने इर्शाद नहीं फ़रमाई या जो उस ने इर्शाद फ़रमाया उसे झुटलाए।

अल्लाह तआ़ला पर इफ़्तिरा की सूरतें

अल्लाह तआ़ला पर इफ़्तिरा की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं (1) बुतों या सितारों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराना (2) यज़्दान और अह्रमन दो ख़ुदा क़रार देना (3) **अल्लाह** तआ़ला के लिये बेटे या बेटियां ठहराना (4) बात़िल अह़काम को **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ मन्सूब करना। आयात को झुटलाने से मुराद येह है कि क़ुरआने पाक को **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से नाज़िल कर्दा किताब न मानना और नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत का इन्कार करना।[1] ﴿يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ﴾ **: उन्हें उन के नसीब का लिखा पहुंचेगा ।﴾** आयत का ख़ुलासा येह है कि लौह़े मह़फ़ूज़ या इन के नविश्तए तक़्दीर में जितनी उ़म्र और रोज़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुश्रिकीन के लिये लिख दी है वोह उन को पहुंचेगी हत्ता कि जब इन के पास इन लोगों की उ़म्रें और रोज़ियां पूरी होने के बा'द **अल्लाह** तआ़ला के भेजे हुए फ़िरिश्ते मलकुल मौत और उन के मुआ़विनीन इन की जान क़ब्ज़ करने के लिये आते हैं तो वोह फ़िरिश्ते इन मुश्रिकीन से कहते हैं : तुम्हारे वोह झूटे मा'बूद कहां हैं जिन की तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा इबादत किया करते थे ? मुश्रिकीन इस के जवाब में कहते हैं : वोह हम से ग़ाइब हो गए उन का कहीं नामो निशान ही नहीं। चुनान्चे बुत न तो काफ़िरों को मौत के वक़्त किसी अ़ज़ाब से बचा सकेंगे और न आख़िरत में।

قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ فِي النَّارِ ؕ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ؕ حَتّٰۤى اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا

[1] .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۳۷، ۵/۲۳۶.

www.dawateislami.net

جَمِيْعًا ۙ قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰۤؤُلَآءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ؕ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** उन से फ़रमाता है कि तुम से पहले जो और जमाअ़तें जिन्न और आदमियों की आग में गईं उन्हीं में जाओ जब एक गुरौह दाख़िल होता है दूसरे पर ला'नत करता है यहां तक कि जब सब उस में जा पड़े तो पिछले पहलों को कहेंगे ऐ रब हमारे इन्हों ने हम को बहकाया था तू इन्हें आग का दूना अ़ज़ाब दे फ़रमाएगा सब को दूना है मगर तुम्हें ख़बर नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** उन से फ़रमाएगा कि तुम से पहले जो जिन्नों और आदमियों के गुरौह आग में गए हैं तुम भी उन में दाख़िल हो जाओ। जब एक गुरौह (जहन्नम में) दाख़िल होगा तो दूसरे (गुरौह) पर ला'नत करेगा हत्ता कि जब सब उस में जम्अ़ हो जाएंगे तो उन में बा'द वाले पहले वालों के लिये कहेंगे : ऐ हमारे रब ! इन्हों ने हमें गुमराह किया था तो तू इन्हें आग का दुगना अ़ज़ाब दे। **अल्लाह** फ़रमाएगा : सब के लिये दुगना है लेकिन तुम्हें मा'लूम नहीं।

﴿قَالَ : **फ़रमाता है**﴾ **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत के दिन उन काफ़िरों से फ़रमाएगा कि तुम से पहले जो जिन्नों और आदमियों के गुरौह आग में गए हैं तुम भी उन में दाख़िल हो कर जहन्नम में चले जाओ। जब एक दीन से तअ़ल्लुक़ रखने वाला एक गुरौह जहन्नम में दाख़िल होगा तो अपने हमदीन दूसरे गुरौह पर ला'नत करेगा या'नी हर क़िस्म का काफ़िर अपनी क़िस्म के काफ़िर को ला'नत करेगा। मुश्रिक मुश्रिकों पर ला'नत करेंगे, यहूदी यहूदियों पर और ईसाई ईसाइयों पर ला'नत करेगा। इस से मा'लूम हुवा कि क़ियामत में हर एक उस ही के साथ होगा जिस से दिल का तअ़ल्लुक़ होगा, ज़माना और जगह एक हो या मुख़्तलिफ़।

﴿قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ : **बा'द वाले पहले वालों के लिये कहेंगे**﴾ जब सब जहन्नम में जम्अ़ हो जाएंगे तो बा'द वाले या'नी पैरौकार पहले वालों या'नी गुमराह करने वालों के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करेंगे : ऐ हमारे रब ! इन्हों ने हमें गुमराह किया था तो तू इन्हें आग का दुगना अ़ज़ाब दे। जवाब मिलेगा कि सब के लिये दुगना अ़ज़ाब है और सब को मुसल्सल अ़ज़ाब होता रहेगा लेकिन तुम्हें एक दूसरे का अ़ज़ाब मा'लूम नहीं।

وَقَالَتْ اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ

www.dawateislami.net

بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿۳۹﴾ ع ۴

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और पहले पिछलों से कहेंगे तो तुम कुछ हम से अच्छे न रहे तो चखो अ़ज़ाब बदला अपने किये का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और पहले वाले दूसरों से कहेंगे तो तुम्हें हम पर कोई बरतरी न रही तो अपने आ'माल के बदले अ़ज़ाब का मज़ा चखो।

﴿فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ﴾ **: तो तुम्हें हम पर कोई बरतरी न रही ।﴾ अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से जवाब सुन कर गुमराही के पेश्वा पैरवी करने वालों से कहेंगे कि तुम्हें हम पर अ़ज़ाब से छुटकारे में कोई बरतरी न रही कुफ़्र व गुमराही में दोनों बराबर हैं। तुम अपने कुफ़्र और बुरे आ'माल का मज़ा चखो, हम अपने कुफ़्र और बुरे आ'माल का मज़ा चखते हैं। कुफ़्र व बद अ़मली, पैग़म्बरों की इहानत, मुसल्मानों को सताना हम तुम दोनों ही करते थे।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۴۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं और उन के मुक़ाबिल तकब्बुर किया उन के लिये आस्मान के दरवाज़े न खोले जाएंगे और न वोह जन्नत में दाख़िल हों जब तक सूई के नाके ऊंट न दाख़िल हो और मुजरिमों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया और उन के मुक़ाबले में तकब्बुर किया तो उन के लिये आस्मान के दरवाज़े न खोले जाएंगे और वोह जन्नत में दाख़िल न होंगे ह़त्ता कि सूई के सूराख़ में ऊंट दाख़िल हो जाए और हम मुजरिमों को ऐसा ही बदला देते हैं।

﴿اِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا﴾ **: बेशक वोह लोग जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया ।﴾** इस से

www.dawateislami.net

पहली आयत में **अल्लाह** तआ़ला की आयात को झुटलाने वालों और उन से तकब्बुर करने वालों की सज़ा जहन्नम में हमेशा रहना बयान हुई और इस आयत में इस हमेशगी की कैफ़िय्यत का बयान है, पहली येह कि उन के लिये आस्मान के दरवाज़े न खोले जाएंगे ।

कुफ़्फ़ार के लिये आस्मान के दरवाज़े न खोले जाने के मा'ना

इस का एक मा'ना येह है कि कुफ़्फ़ार के आ'माल और उन की अरवाह़ के लिये आस्मान के दरवाज़े नहीं खोले जाएंगे क्यूं कि उन के आ'माल व अरवाह़ दोनों ख़बीस हैं । ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार की अरवाह़ के लिये आस्मान के दरवाज़े नहीं खोले जाते और मोमिनीन की अरवाह़ के लिये खोले जाते हैं । इब्ने जुरैज ने कहा कि आस्मान के दरवाज़े न काफ़िरों के आ'माल के लिये खोले जाएंगे न अरवाह़ के लिये ।[1]

या'नी न ज़िन्दगी में उन का अ़मल आस्मान पर जा सकता है न मौत के बा'द उन की रूह़ जा सकती है ।

मरने के बा'द मोमिन और काफ़िर की रूह़ को आस्मान की त़रफ़ ले जाने और मोमिन की रूह़ के लिये आस्मान के दरवाज़े खुलने और काफ़िर की रूह़ के लिये न खुलने का ज़िक्र ह़दीसे पाक में भी है, चुनान्चे ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : रूह़ निकलते वक़्त मय्यित के पास फ़िरिश्ते आते हैं, अगर वोह मोमिन की रूह़ है तो उस से कहते हैं : ऐ पाक रूह़ ! पाक जिस्म से निकल आ क्यूं कि तू नेक है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से ख़ुश हो जा, जन्नत की ख़ुश्बू और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ामन्दी से ख़ुश हो जा, फ़िरिश्ते रूह़ निकलने तक येही कहते रहते हैं, जब रूह़ निकल आती है तो उसे ले कर आस्मान की त़रफ़ चढ़ते हैं, जब आस्मान के क़रीब पहुंचते हैं तो आस्मान के फ़िरिश्ते कहते हैं : येह कौन है ? फ़िरिश्ते जवाब देते हैं : फ़ुलां शख़्स की रूह़ है । आस्मानी फ़िरिश्ते कहते हैं : मरह़बा, मरह़बा, ऐ पाक रूह़ ! पाक जिस्म में रहने वाली, तू ख़ुश हो कर (आस्मानों में) दाख़िल हो जा और ख़ुश्बू और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा से ख़ुश हो जा, हर आस्मान पर उसे येही कहा जाता है, ह़त्ता कि वोह रूह़ अ़र्श तक पहुंच जाती है । अगर किसी बुरे बन्दे की रूह़ होती है तो कहते हैं : ऐ नापाक जिस्म की रूह़ ! बुरी ह़ालत के साथ आ, गर्म पानी और पीप की और इस के हम शक्ल दूसरे अ़ज़ाबों की बिशारत ह़ासिल कर । वोह रूह़ निकलने तक येही कहते रहते हैं, फिर उसे ले कर आस्मान की

[1] .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ٤٠، ٢/٩٣.

www.dawateislami.net

जानिब चलते हैं तो उस के लिये आस्मान का दरवाज़ा नहीं खोला जाता, आस्मान के फ़िरिश्ते दरयाफ़्त करते हैं : येह कौन है ? रूह ले जाने वाले फ़िरिश्ते कहते हैं : येह फ़ुलां शख़्स की रूह है, आस्मानी फ़िरिश्ते जवाब देते हैं : इस ख़बीस रूह को जो ख़बीस जिस्म में थी कोई चीज़ मुबारक न हो, इसे ज़लील कर के नीचे फेंक दो तो वोह उसे आस्मान से नीचे फेंक देते हैं फिर वोह क़ब्र में लौट आती है।[1]

कुफ़्फ़ार के लिये आस्मान के दरवाज़े न खोले जाने का दूसरा मा'ना येह है कि वोह ख़ैरो बरकत और रह़मत के नुज़ूल से मह़रूम रहते हैं।[2]

कुरआने पाक में है :

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰۤى اٰمَنُوْا وَ اتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ وَ لٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ[3]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर बस्तियों वाले ईमान लाते और तक़्वा इख़्तियार करते तो ज़रूर हम उन पर आस्मान और ज़मीन से बरकतें खोल देते मगर उन्हों ने तो झुटलाया तो हम ने उन्हें उन के आ'माल की वज्ह से (अ़ज़ाब में) गिरिफ़्तार कर दिया।

﴿وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ﴾ **: और वोह जन्नत में दाख़िल न होंगे।** ﴾ इस आयत में हमेशगी की दूसरी कैफ़िय्यत का बयान हुवा चुनान्चे फ़रमाया गया कि कुफ़्फ़ार तब तक जन्नत में दाख़िल न होंगे जब तक सूई के सूराख़ में ऊंट दाख़िल न हो जाए और येह बात चूंकि मुह़ाल है तो कुफ़्फ़ार का जन्नत में दाख़िल होना भी मुह़ाल है क्यूं कि मुह़ाल पर जो मौक़ूफ़ हो वोह ख़ुद मुह़ाल होता है इस से साबित हुवा कि कुफ़्फ़ार का जन्नत से मह़रूम रहना क़त़्ई है। याद रहे कि इस आयत में मुजरिमीन से कुफ़्फ़ार मुराद हैं क्यूं कि ऊपर उन की सिफ़त में **अल्लाह** तआ़ला की आयात को झुटलाने और उन से तकब्बुर करने का बयान हो चुका है।

لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّ مِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ؕ وَ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۱﴾

1 .....ابن ماجه، كتاب الزهد، باب ذكر الموت والاستعداد له، ٤/٤٩٧، الحديث: ٤٢٦٢.
2 .....تفسير كبير، الاعراف، تحت الآية: ٤٠، ٥/٢٤٠.
3 .....اعراف: ٩٦.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उन्हें आग ही बिछोना और आग ही ओढ़ना और ज़ालिमों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उन के लिये आग बिछोना है और उन के ऊपर से (इसी का) ओढ़ना होगा और हम ज़ालिमों को ऐसा ही बदला देते हैं।

﴿لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ﴾ **: उन के लिये आग बिछोना है।﴾** या'नी ऊपर नीचे हर त़रफ़ से आग उन्हें घेरे हुए है। सिर्फ़ ऊपर नीचे का ज़िक्र फ़रमाया क्यूं कि दायां बायां ख़ुद ही समझ में आ गया। ह़ज़रते सुवैद बिन ग़फ़लह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब **अल्लाह** तआ़ला इस बात का इरादा फ़रमाएगा कि जहन्नमी अपने मा सिवा सब को भूल जाएं तो उन में से हर शख़्स के लिये उस के क़द बराबर आग का एक सन्दूक़ बनाया जाएगा फिर उस पर आग के तालों में से एक ताला लगा दिया जाएगा, फिर उस शख़्स की हर रग में आग की कीलें लगा दी जाएंगी, फिर उस सन्दूक़ को आग के दूसरे सन्दूक़ में रख कर आग का ताला लगा दिया जाएगा, फिर उन दोनों के दरमियान आग जलाई जाएगी तो अब हर काफ़िर येह समझेगा कि उस के सिवा अब कोई आग में न रहा।[1]

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَاۤ اُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۴۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो ईमान लाए और त़ाक़त भर अच्छे काम किये हम किसी पर त़ाक़त से ज़ियादा बोझ नहीं रखते वोह जन्नत वाले हैं उन्हें उस में हमेशा रहना।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे आ'माल किये हम किसी पर त़ाक़त से ज़ियादा बोझ नहीं रखते, वोह जन्नत वाले हैं वोह उस में हमेशा रहेंगे।

﴿وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا﴾ **: और वोह जो ईमान लाए।﴾** इस से पहले चन्द आयात में **अल्लाह** तआ़ला ने कुफ़्फ़ार के लिये वईद और आख़िरत में जो कुछ उन के लिये तय्यार फ़रमाया उस का ज़िक्र किया, अब ईमान वालों से जो **अल्लाह** तआ़ला ने वा'दा फ़रमाया और आख़िरत में जो कुछ उन के लिये तय्यार फ़रमाया उस का ज़िक्र फ़रमा रहा है कि जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे आ'माल किये तो वोह जन्नत वाले हैं और वोह जन्नत में हमेशा रहेंगे। इस से दो मस्अले

1 .....مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الزھد، الشعبی، ۸/۲۸۱، الحدیث: ۱۰.

www.dawateislami.net

मा'लूम हुए एक येह कि ईमान आ'माल पर मुक़द्दम है, पहले ईमान क़बूल किया जाए और बा'द में नेक काम किये जाएं, दूसरा येह कि कोई शख़्स नेक आ'माल से बे नियाज़ नहीं चाहे किसी त़बक़े और किसी जमाअ़त से उस का तअ़ल्लुक़ हो।

﴿لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا﴾ **: हम किसी पर त़ाक़त से ज़ियादा बोझ नहीं रखते।** इस आयत में मुसल्मानों के लिये बहुत प्यारी तसल्ली है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी को उस की त़ाक़त से ज़ियादा अह़काम का पाबन्द नहीं करता। येह इस बात की त़रफ़ इशारा है कि जन्नत में जाने के लिये कोई बहुत ज़ियादा मशक़्क़त बरदाश्त नहीं करना पड़ेगी बल्कि अक्सरो बेश्तर अह़काम वोह हैं जिन पर आदमी निहायत सहूलत के साथ अ़मल कर लेता है जैसे नमाज़, रोज़ा और दीगर इ़बादात। ज़कात और ह़ज तो लाज़िम ही उस पर हैं जो अपनी सब ज़रूरिय्यात के बा'द ज़कात और ह़ज की अदाएगी की ब क़दर ज़ाइद रक़म रखते हों। यूंही मां बाप, बहन भाइयों, रिश्तेदारों और पड़ोसियों के हुक़ूक़ वग़ैरा की अदाएगी भी उ़मूमी ज़िन्दगी का ह़िस्सा है। यूंही ज़िक्रो दुरूद भी रूह़ की ग़िज़ा है और येही आ'माल जन्नत में ले जाने वाले हैं। तो जन्नत में जाने का रास्ता **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने निहायत आसान बनाया है, सिर्फ़ अपनी हिम्मत का मस्अला है।[1]

وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَقَالُوا
الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰىنَا لِهٰذَا ۫ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَاۤ اَنْ هَدٰىنَا
اللّٰهُ ۚ لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ؕ وَنُوْدُوْۤا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ
اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۴۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने उन के सीनों में से कीने खींच लिये उन के नीचे नहरें बहेंगी और कहेंगे सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जिस ने हमें उस की राह दिखाई और हम राह न पाते अगर **अल्लाह** न दिखाता बेशक हमारे रब के रसूल ह़क़ लाए और निदा हुई कि येह जन्नत तुम्हें मीरास मिली सिला तुम्हारे आ'माल का।

1..... नेक आ'माल की रग़बत पाने के लिये किताब "जन्नत में ले जाने वाले आ'माल" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है, यूंही दा'वते इस्लामी के साथ वाबस्तगी भी बहुत फ़ाएदे मन्द है।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने उन के सीनों से बुग़्ज़ो कीना खींच लिया, उन के नीचे नहरें बहेंगी और वोह कहेंगे : तमाम ता'रीफ़ें उस **अल्लाह** के लिये हैं जिस ने हमें उस की हिदायत दी और हम हिदायत न पाते अगर **अल्लाह** हमें हिदायत न देता। बेशक हमारे रब के रसूल हक़ लाए और उन्हें निदा की जाएगी कि येह जन्नत है, तुम्हें तुम्हारे आ'माल के बदले में इस का वारिस बना दिया गया।

﴿وَنَزَعْنَا﴾ **: और हम ने खींच लिया ।** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नतियों और जहन्नमियों के दरमियान कैसा प्यारा तक़ाबुल बयान फ़रमाया है कि उन के नीचे आग के बिछोने थे और इन के महल्लात के नीचे नहरें जारी होंगी। उन के गुरौह एक दूसरे पर ला'नत कर रहे थे और इन जन्नतियों के दिलों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कीने को निकाल दिया और येह सब पाकीज़ा दिल वाले होंगे। न तो दुन्यवी बातों का कीना इन के दिलों में होगा और न ही जन्नत में एक दूसरे के बुलन्द मक़ामात व महल्लात पर हसद करेंगे बल्कि सब प्यार व महब्बत से रह रहे होंगे।

पाकीज़ा दिल होना जन्नतियों का वस्फ़ है

इस से मा'लूम हुवा कि पाकीज़ा दिल होना जन्नतियों के वस्फ़ हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से उम्मीद है कि जो यहां अपने दिल को बुग़्ज़ो कीना और हसद से पाक रखेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे पाकीज़ा दिल वालों या'नी जन्नतियों में दाख़िल फ़रमाएगा। जन्नत में जाने से पहले सब के दिलों को कीने से पाक कर दिया जाएगा चुनान्चे बुख़ारी शरीफ़ की हदीस है, हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब मुसल्मानों की दोज़ख़ से नजात हो जाएगी तो उन्हें जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान पुल पर रोक लिया जाएगा फिर उन में से जिस ने जिस के साथ दुन्या में ज़ियादती की होगी उस का क़िसास लिया जाएगा पस जब उन को पाक और साफ़ कर दिया जाएगा तब उन को जन्नत में दाख़िल होने की इजाज़त दी जाएगी, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की जान है उन में से हर एक शख़्स को जन्नत में अपने ठिकाने का दुन्या के ठिकाने से ज़ियादा इल्म होगा।"[1]

बुग़्ज़ व कीने की मज़म्मत

यहां चूंकि बुग़्ज़ो कीने का तज़्किरा हुवा इस की मुनासबत से यहां बुग़्ज़ो कीने का मफ़्हूम और इस की मज़म्मत बयान की जाती है। चुनान्चे इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

1 .....بخاری، کتاب الرقاق، باب القصاص یوم القیامۃ، ۴/۲۵۶، الحدیث: ۶۵۳۵.

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं : जब आदमी आ़जिज़ होने की वज्ह से फ़ौरी ग़ुस्सा नहीं निकाल सकता तो वोह ग़ुस्सा बातिन की त़रफ़ चला जाता है और वहां दाख़िल हो कर कीना बन जाता है। कीने का मफ़्हूम येह है कि किसी को भारी जानना, उस से नफ़रत करना और दुश्मनी रखना और येह बात हमेशा हमेशा दिल में रखना।[1]

अह़ादीस में बुग़्ज़ो कीना की शदीद मज़म्मत बयान की गई है, चुनान्चे ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''लोगों के आ'माल हर हफ़्ते में दो मरतबा पीर और जुमे'रात के दिन पेश किये जाते हैं और हर मुसल्मान बन्दे की मग़्फ़िरत कर दी जाती है सिवाए उस बन्दे के जो अपने भाई के साथ कीना रखता हो। कहा जाता है : इसे छोड़ दो या मोहलत दो ह़त्ता कि येह रुजूअ़ कर लें।''[2]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बुग़्ज़ रखने वालों से बचो क्यूं कि बुग़्ज़ दीन को मूंड डालता (या'नी तबाह कर देता) है।''[3]

नोट : बुग़्ज़ो कीना के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये ''एह़याउल उ़लूम'' की तीसरी जिल्द का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।[4]

मुसल्मानों को आपस में कैसा होना चाहिये ?

मुसल्मानों को आपस में कैसा होना चाहिये इस के लिये दर्जे ज़ैल 5 अह़ादीस का मुत़ालआ़ फ़रमाएं :

(1)..... ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''एक मुसल्मान दूसरे मुसल्मान के लिये इमारत की त़रह़ है जिस का एक ह़िस्सा दूसरे को मज़बूत़ करता है, फिर आप ने एक हाथ की उंग्लियां दूसरे हाथ की उंग्लियों में दाख़िल फ़रमाईं।''[5] या'नी जिस त़रह़ येह मिली हुई हैं मुसल्मानों को भी इसी त़रह़ होना चाहिये।

(2)..... ह़ज़रते नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मुसल्मानों की आपस में दोस्ती और रह़मतो शफ़्क़त की

1 .....احیاء علوم الدین، کتاب ذم الغضب و الحقد و الحسد، القول فی معنی الحقد و نتائجه و فضیلة العفو و الرفق، ۳/۲۲۳.

2 .....مسلم، کتاب البر و الصلة و الآداب، باب النهی عن الشحناء و التهاجر، ص۱۳۸۷، الحدیث: ۳۶(۲۵۶۵).

3 .....کنز العمال، کتاب الاخلاق، قسم الاقوال، الباب الثانی فی الاخلاق و الافعال المذمومة، الفصل الثانی، ۲/۱۸۲، الحدیث: ۷۳۹۶، الجزء الثالث.

4 ..... इसी मौज़ूअ़ से मुतअ़ल्लिक़ किताब ''बुग़्ज़ो कीना'' (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

5 .....بخاری، کتاب الادب، باب تعاون المؤمنین بعضهم بعضاً، ۴/۱۰۶، الحدیث: ۶۰۲۶.

www.dawateislami.net

मिसाल जिस्म की त़रह़ है, जब जिस्म का कोई उ़ज़्व बीमार होता है तो बुख़ार और बे ख़्वाबी में सारा जिस्म उस का शरीक होता है।"[1]

(3)..... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम में अच्छा वोह शख़्स है जिस से भलाई की उम्मीद हो और जिस की शरारत से अम्न हो और तुम में बुरा वोह शख़्स है जिस से भलाई की उम्मीद न हो और जिस की शरारत से अम्न न हो।"[2]

(4)..... ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उस की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है! बन्दा मोमिन नहीं होता जब तक अपने भाई के लिये वोह पसन्द न करे जो अपने लिये पसन्द करता है।"[3]

(5)..... ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "गुफ़्तगू करते वक़्त अच्छे त़रीक़े से बात करना, जब कोई गुफ़्तगू करे तो अच्छे अन्दाज़ में उस की बात सुनना, मुलाक़ात के वक़्त मुस्कुराते चेहरे के साथ मिलना और वा'दा पूरा करना मोमिन के अख़्लाक़ में से है।"[4]

﴿وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ﴾ **: और वोह कहेंगे तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह के लिये हैं।﴾** मोमिनीन जन्नत में दाख़िल होते वक़्त कहेंगे : तमाम ता'रीफ़ें उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हमें अच्छे आ'माल की हिदायत दी और हमें ऐसे अ़मल की तौफ़ीक़ दी जिस का येह अज्रो सवाब है और हम पर फ़ज़्लो रह़मत फ़रमाई और अपने करम से अ़ज़ाबे जहन्नम से मह़फ़ूज़ किया।

अच्छे अ़मल की तौफ़ीक़ मिलने पर अल्लाह तआ़ला की ह़म्द की जाए

इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द और उस का शुक्र जन्नत में भी होगा क्यूं कि वोह ह़म्द व शुक्र ही का मक़ाम है। नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि इ़ल्मो अ़मल और हिदायत की तौफ़ीक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की अ़त़ा से है लिहाज़ा किसी को इ़ल्म या अच्छे अ़मल की तौफ़ीक़ मिले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द करे और उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की तौफ़ीक़ जाने। इसी वज्ह से हमें ब कसरत लाहौल शरीफ़ पढ़ने का फ़रमाया गया है क्यूं कि **لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه** का मा'ना है कि **नेकी की तौफ़ीक़ और बुराई से बचने की त़ाक़त नहीं मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की तौफ़ीक़ से।**

1 .....مسلم، كتاب البر و الصلة و الآداب، باب تراحم المؤمنين و تعاطفهم و تعاضدهم، ص١٣٩٦، الحديث: ٦٦(٢٥٨٦).
2 .....ترمذی، كتاب الفتن، ٧٦-باب، ٤/١١٦، الحديث: ٢٢٧٠.
3 .....مسلم، كتاب الايمان، باب الدليل على انّ من خصال الايمان... الخ، ص٤٣، الحديث: ٧٢(٤٥).
4 .....مسند الفردوس، باب الميم، ٣/٦٣٧، الحديث: ٥٩٩٧.

www.dawateislami.net

﴿وَنُوْدُوْۤا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا﴾ **: और उन्हें निदा की जाएगी कि येह जन्नत है, तुम्हें इस का वारिस बना दिया गया** ﴾ मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि जब जन्नती जन्नत में दाख़िल होंगे तो एक निदा करने वाला पुकारेगा : तुम्हारे लिये ज़िन्दगानी है कभी न मरोगे, तुम्हारे लिये तन्दुरुस्ती है कभी बीमार न होगे, तुम्हारे लिये ऐ़श है कभी तंगह़ाल न होगे ।[1]

जन्नत को दो वज्ह से मीरास फ़रमाया गया । एक येह कि कुफ़्फ़ार के ह़िस्से की जन्नत भी वोह ही लेंगे या'नी काफ़िरों के ईमान लाने की सूरत में जो जन्नती मह़ल्लात उन के लिये तय्यार थे वोह उन के कुफ़्र की वज्ह से अहले ईमान को दे दिये जाएंगे तो येह गोया उन की मीरास हुई । दूसरे येह कि जैसे मीरास अपनी मेह़नत व कमाई से नहीं मिलती इसी त़रह़ जन्नत का मिलना भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से होगा, अपने आ'माल तो ज़ाहिरी सबब होंगे और वोह भी ह़क़ीक़तन जन्नत में दाख़िले का सबब बनने के क़ाबिल नहीं होंगे क्यूं कि हमारे आ'माल तो हैं ही नाक़िस, येह तो सिर्फ़ साबिक़ा ने'मतों का शुक्राना बन जाएं या जहन्नम से छुटकारे का ज़रीआ़ बन जाएं तो भी बहुत है । इन के भरोसे पर जन्नत की त़मअ़ तो ख़ुद फ़रेबी है ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल

यहां मुफ़स्सिरीन ने एक बहुत प्यारी बात इर्शाद फ़रमाई और वोह येह कि जन्नती जन्नत में दाख़िल होंगे तो कहेंगे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने हमें हिदायत दी या'नी वोह अपने अ़मल की बात नहीं करेंगे बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल की बात करेंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा कि तुम्हें तुम्हारे आ'माल के सबब इस जन्नत का वारिस बना दिया गया । गोया बन्दा अपने अ़मल को नाचीज़ और हेच समझ कर सिर्फ़ **अल्लाह** करीम के फ़ज़्ल पर भरोसा करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्ल से उस के नाक़िस अ़मल को भी शरफ़े क़बूलिय्यत अ़त़ा फ़रमा कर क़ाबिले ज़िक्र बना देता है और फ़रमाता है कि तुम्हें तुम्हारे आ'माल के सबब जन्नत दे दी गई ।

जन्नत में दाख़िले का सबब

यहां मुफ़स्सिरीन ने येह बह़्स भी फ़रमाई है कि जन्नत में दाख़िले का सबब क्या है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल या हमारे आ'माल । तो ह़क़ीक़त येही है कि जन्नत में दाख़िले का सबब तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल ही है जैसा कि क़ुरआने पाक में है :

فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : तुम्हारे रब के फ़ज़्ल से, येही बड़ी काम्याबी है ।

1 .....مسلم، كتاب الجنة وصفة نعيمها واهلها، باب فى دوام نعيم اهل الجنة... الخ، ص ١٥٢١، الحديث: ٢٢(٢٨٣٧).

2 .....الدخان: ٥٧.

www.dawateislami.net

और येही मज़्मून ह़दीसे मुबारक में भी है, चुनान्चे बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम में से किसी शख़्स को उस का अ़मल जन्नत में दाख़िल नहीं करेगा।" सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, आप को भी नहीं ? इर्शाद फ़रमाया : "मुझे भी नहीं, मगर येह कि **अल्लाह** तआ़ला मुझे अपने फ़ज़्ल और रह़मत में ढांप ले, पस तुम इख़्लास के साथ अ़मल करो और मियाना रवी इख़्तियार करो।"[1] अलबत्ता बहुत सी आयात में आ'माल को भी जन्नत में दाख़िले का सबब क़रार दिया गया है तो दोनों त़रह़ की आयात व अह़ादीस में तत़्बीक़ येह है कि जन्नत में दाख़िले का ह़क़ीक़ी सबब तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल है लेकिन ज़ाहिरी सबब नेक आ'माल हैं।

وَنَادٰۤى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ؕ قَالُوْا نَعَمْ ۚ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ بَیْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِیْنَ ۙ﴿۴۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जन्नत वालों ने दोज़ख़ वालों को पुकारा कि हमें तो मिल गया जो सच्चा वा'दा हम से हमारे रब ने किया था तो क्या तुम ने भी पाया जो तुम्हारे रब ने सच्चा वा'दा तुम्हें दिया था बोले हां और बीच में मुनादी ने पुकार दिया कि **अल्लाह** की ला'नत ज़ालिमों पर।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जन्नती जहन्नम वालों को पुकार कर कहेंगे कि हमारे रब ने जो हम से वा'दा फ़रमाया था हम ने उसे सच्चा पाया तो क्या तुम ने भी उस वा'दे को सच्चा पाया जो तुम से तुम्हारे रब ने किया था ? वोह कहेंगे : हां, फिर एक निदा देने वाला उन के दरमियान पुकारेगा कि ज़ालिमों पर **अल्लाह** की ला'नत हो।

﴿وَنَادٰۤى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ﴾ : **और जन्नती जहन्नम वालों को पुकार कर कहेंगे।** आयत का ख़ुलासा येह है कि जब जन्नती जन्नत में और जहन्नमी जहन्नम में चले जाएंगे तो जन्नत वाले जहन्नमियों को पुकार कर कहेंगे कि हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ने जो हम से वा'दा फ़रमाया था और रसूलों عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने जो फ़रमाया था कि ईमान व त़ाअ़त पर अज्रो सवाब पाओगे हम ने

1 .....بخاری، کتاب المرضی، باب تمنی المریض الموت، ۴/۱۳، الحدیث: ۵۶۷۳.

www.dawateislami.net

तो उसे सच्चा पाया, क्या तुम लोगों ने भी उस वा'दे को सच्चा पाया जो तुम से रब عَزَّوَجَلَّ ने कुफ़्रो ना फ़रमानी पर अ़ज़ाब का वा'दा किया था ? वोह जवाब में कहेंगे : हां, हम ने भी उसे सच्चा पाया ।

क़ियामत के दिन जन्नती मुसल्मान गुनहगार मुसल्मानों को ता'ना न देंगे

यहां दोज़ख़ वालों से मुराद कुफ़्फ़ार जहन्नमी हैं न कि गुनहगार मोमिन, क्यूं कि जन्नती मुसल्मान उन गुनहगारों को ता'ना न देंगे बल्कि उन की शफ़ाअ़त कर के वहां से निकालेंगे जैसा कि ह़दीसे पाक में इर्शाद हुवा । यहां आयत में मुसल्मानों के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के उसी वा'दे की तक्मील का बयान है जो क़ुरआन में मज़्कूर है :

رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۚ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿۱۹۳﴾ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿۱۹۴﴾ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّيْ لَآ اُضِيْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۚ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِيْ سَبِيْلِيْ وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿۱۹۵﴾ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ हमारे रब ! बेशक हम ने एक निदा देने वाले को ईमान की निदा (यूं) देते हुए सुना कि अपने रब पर ईमान लाओ तो हम ईमान ले आए पस ऐ हमारे रब ! तू हमारे गुनाह बख़्श दे और हम से हमारी बुराइयां मिटा दे और हमें नेक लोगों के गुरौह में मौत अ़ता फ़रमा । ऐ हमारे रब ! और हमें वोह सब अ़ता फ़रमा जिस का तू ने अपने रसूलों के ज़रीए हम से वा'दा फ़रमाया है और हमें क़ियामत के दिन रुस्वा न करना । बेशक तू वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं करता । तो उन के रब ने उन की दुआ क़बूल फ़रमा ली कि मैं तुम में से अ़मल करने वालों के अ़मल को ज़ाएअ़ नहीं करूंगा वोह मर्द हो या औ़रत । तुम आपस में एक ही हो, पस जिन्हों ने हिजरत की और अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में उन्हें सताया गया और उन्हों ने जिहाद किया और क़त्ल कर दिये गए तो मैं ज़रूर उन के सब गुनाह उन से मिटा दूंगा और ज़रूर उन्हें ऐसे बाग़ात में दाख़िल करूंगा जिन के नीचे नहरें जारी हैं (येह) **अल्लाह** की बारगाह से अज्र है और **अल्लाह** ही के पास अच्छा सवाब है ।

(1) .....آل عمران:۱۹۳تا۱۹۵.

www.dawateislami.net

जन्नतियों का जहन्नमियों से कलाम करना उन की ज़िल्लतो रुस्वाई में इज़ाफ़ा करने के लिये होगा क्यूं कि दुन्या में उ़मूमन काफ़िर मुसल्मानों का मज़ाक़ उड़ाते थे और उन्हें ता'ने देते थे और उन पर फब्तियां कसते थे। आज उस का बदला हो रहा होगा।

﴿فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌ﴾ **: फिर एक निदा देने वाला पुकारेगा।** ﴾ पुकारने वाले ह़ज़रते इसराफ़ील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं या दूसरा फ़िरिश्ता जिस की येह ड्यूटी होगी और ज़ालिमीन से मुराद कुफ़्फ़ार हैं जैसा कि अगली आयत से मा'लूम हो रहा है।

اَلَّذِیْنَ یَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَ یَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَ هُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ۝۴۵

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जो **अल्लाह** की राह से रोकते हैं और उसे कजी चाहते हैं और आख़िरत का इन्कार रखते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जो **अल्लाह** की राह से रोकते हैं और उसे टेढ़ा (करना) चाहते हैं और वोह आख़िरत का इनकार करने वाले हैं।

﴿اَلَّذِیْنَ یَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ﴾ **: जो अल्लाह की राह से रोकते हैं।** ﴾ यहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जहन्नमियों को ज़ालिम क़रार दिया और उन के औसाफ़ येह बयान किये कि वोह दूसरों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रास्ते से रोकते हैं। दूसरा येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीन में तब्दीली चाहते थे कि दीने इलाही को बदल दें और जो त़रीक़ा **अल्लाह** तआ़ला ने अपने बन्दों के लिये मुक़र्रर फ़रमाया है उस में तग़य्युर डाल दें।[1] तीसरा वोह क़ियामत का इन्कार करते थे।

मुसल्मान कहलाने वाले बेदीन लोगों का अन्जाम

यहां येह वईदें बत़ौरे ख़ास काफ़िरों के मुतअ़ल्लिक़ हैं लेकिन जो मुसल्मान कहलाने वाले भी दूसरों को दीन पर अ़मल करने से मन्अ़ करते हैं और वोह लोग जो दीन में तह़रीफ़ व तब्दीली चाहते हैं जैसे बेदीन व मुल्ह़िद लोग जो दीन में तह़रीफ़ व तग़्यीर की कोशिशें करते रहते हैं ऐसे लोग भी कोई कम मुजरिम नहीं बल्कि वोह भी जहन्नम के मुस्तह़िक़ हैं।

जन्नतियों और जहन्नमियों के बाहमी मुकालमे

यहां आयते मुबारका में जैसा मुकालमा बयान किया गया है जन्नतियों और जहन्नमियों के दरमियान ऐसे मुकालमे क़ुरआने पाक में और जगह भी मज़्कूर हैं चुनान्चे सूरए साफ़्फ़ात में है :

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۴۵، ۲/۹۵.

www.dawateislami.net

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿۵۰﴾ قَالَ قَآىِٕلٌ مِّنْهُمْ اِنِّيْ كَانَ لِيْ قَرِيْنٌ ﴿۵۱﴾ يَّقُوْلُ اَىِٕنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ﴿۵۲﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّ عِظَامًا ءَاِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ ﴿۵۳﴾ قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ﴿۵۴﴾ فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِيْ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿۵۵﴾ قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ ﴿۵۶﴾ وَ لَوْ لَا نِعْمَةُ رَبِّيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर जन्नती आपस में सुवाल करते हुए एक दूसरे की त़रफ़ मुतवज्जेह होंगे। उन में से एक कहने वाला कहेगा : बेशक मेरा एक साथी था। मुझ से कहा करता था : क्या तुम (क़ियामत की)तस्दीक़ करने वालों में से हो ? क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हमें जज़ा सज़ा दी जाएगी ? जन्नती (दूसरे जन्नतियों से) कहेगा : क्या तुम (जहन्नम में) झांक कर देखोगे ? तो वोह झांकेगा तो (अपने) उस (दुन्या के) साथी को भड़क्ती आग के दरमियान देखेगा। वोह जन्नती कहेगा : ख़ुदा की क़सम, क़रीब था कि तू ज़रूर मुझे (भी गुमराह कर के) हलाक कर देता और अगर मेरे रब का एह़सान न होता तो ज़रूर मैं भी (अ़ज़ाब में) पेश किये जाने वालों में से होता।

नीज़ सूरए मुद्दस्सिर में है :

كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ﴿۳۸﴾ اِلَّاۤ اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ﴿۳۹﴾ فِيْ جَنّٰتٍ ۛؕ يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿۴۰﴾ عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۴۱﴾ مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ﴿۴۲﴾ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ﴿۴۳﴾ وَ لَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ﴿۴۴﴾ وَ كُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآىِٕضِيْنَ ﴿۴۵﴾ وَ كُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿۴۶﴾ حَتّٰۤى اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : हर जान अपने कमाए हुए आ'माल में गिरवी रखी है मगर दाईं त़रफ़ वाले, बाग़ों में होंगे, वोह पूछ रहे होंगे मुजरिमों से, कौन सी चीज़ तुम्हें दोज़ख़ में ले गई ? वोह कहेंगे : हम नमाज़ियों में से नहीं थे और मिस्कीन को खाना नहीं खिलाते थे और बेहूदा फ़िक्र वालों के साथ बेहूदा बातें सोचते थे और हम इन्साफ़ के दिन को झुटलाते रहे यहां तक कि हमें मौत आई।

कुफ़्र और बद अ़मली की बड़ी वज्ह

आयत के आख़िर में फ़रमाया कि **वोह आख़िरत का इन्कार करते हैं।** इस से मा'लूम हुवा कि कुफ़्रो इनाद और बद अ़मली की बड़ी वज्ह क़ियामत का इन्कार या इसे भुलाना है अगर बन्दे के दिल में क़ियामत का ख़ौफ़ हो तो जुर्म करने की हिम्मत ही न करे। इसी लिये

1 .....صافات، ۵۰تا۵۷. 2 .....مدثر ۳۸تا۴۷.

www.dawateislami.net

बुज़ुर्गाने दीन ने रोज़ाना कुछ वक़्त मौत, क़ब्र और क़ियामत के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र करने का मुक़र्रर फ़रमाया है कि येह फ़िक्र दिल की दुन्या बदल देती है और ऐसी ही सोच के बारे में फ़रमाया गया है कि "लम्ह़ा भर ग़ौरो फ़िक्र करना पूरी रात क़ियाम करने से बेहतर है।"(1)

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّا بِسِيْمٰهُمْ ۚ وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۫ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ﴿۴۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जन्नत व दोज़ख़ के बीच में एक पर्दा है और आ'राफ़ पर कुछ मर्द होंगे कि दोनों फ़रीक़ को उन की पेशानियों से पहचानेंगे और वोह जन्नतियों को पुकारेंगे कि सलाम तुम पर येह जन्नत में न गए और इस की त़मअ़ रखते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान में एक पर्दा है और आ'राफ़ पर कुछ मर्द होंगे जो सब को उन की पेशानियों से पहचानेंगे और वोह जन्नतियों को पुकारेंगे कि तुम पर सलाम हो। येह आ'राफ़ वाले ख़ुद जन्नत में दाख़िल न हुए होंगे और इस की त़मअ़ रखते होंगे।

﴿وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ﴾ **: और जन्नत व दोज़ख़ के बीच में एक पर्दा है।﴾** येह पर्दा इस लिये है ताकि दोज़ख़ का असर जन्नत में और जन्नत का असर दोज़ख़ में न आ सके और ह़क़ येह है कि येह पर्दा आ'राफ़ ही है चूंकि येह पर्दा बहुत ऊंचा होगा इस लिये इसे आ'राफ़ कहा जाता है क्यूं कि आ'राफ़ का मा'ना है "बुलन्द जगह।" इस का तज़्किरा सूरए ह़दीद में भी है चुनान्चे वहां फ़रमाया :

يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ؕ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ؕ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जिस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औ़रतें मुसल्मानों से कहेंगे कि हम पर भी एक नज़र कर दो ताकि हम तुम्हारे नूर से कुछ रोशनी ह़ासिल कर लें, कहा जाएगा : तुम अपने पीछे लौट जाओ तो वहां नूर ढूंडो (वोह लौटेंगे) तो (उस वक़्त) उन (मुसल्मानों और मुनाफ़िक़ों) के दरमियान एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिस में एक दरवाज़ा होगा (जिस से जन्नती जन्नत में चले जाएंगे) उस दरवाज़े के अन्दर की त़रफ़ रह़मत और उस के बाहर की त़रफ़ अ़ज़ाब होगा।

1 ……مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الزھد، کلام الحسن البصری، ۸/۲۵۸، الحدیث: ۳۷۔ 2 ……حدید: ۱۳۔

www.dawateislami.net

﴿وَعَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ﴾ **: और आ'राफ़ पर कुछ मर्द होंगे ।﴾** येह मर्द किस त़बक़े के होंगे इस बारे में अक़्वाल मुख़्तलिफ़ हैं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : येह वोह लोग होंगे जिन की नेकियां और बदियां बराबर होंगी वोह आ'राफ़ पर ठहरे रहेंगे, जब अहले जन्नत की त़रफ़ देखेंगे तो उन्हें सलाम करेंगे और दोज़ख़ियों की त़रफ़ देखेंगे तो कहेंगे या रब ! عَزَّوَجَلَّ, हमें ज़ालिम क़ौम के साथ न कर । फिर आख़िर कार जन्नत में दाख़िल किये जाएंगे ।[1]

एक क़ौल येह है कि जो लोग जिहाद में शहीद हुए मगर उन के वालिदैन उन से नाराज़ थे वोह आ'राफ़ में ठहराए जाएंगे ।[2]

एक क़ौल येह है कि जो लोग ऐसे हैं कि उन के वालिदैन में से एक उन से राज़ी हो, एक नाराज़ वोह आ'राफ़ में रखे जाएंगे । इन अक़्वाल से मा'लूम होता है कि अहले आ'राफ़ का मर्तबा अहले जन्नत से कम है ।

इमाम मुजाहिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल येह है आ'राफ़ में सुलह़ा, फ़ुक़रा, उ़लमा होंगे और उन का वहां क़ियाम इस लिये होगा कि दूसरे उन के फ़ज़्लो शरफ़ को देखें और एक क़ौल येह है कि आ'राफ़ में अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام होंगे और वोह उस मकाने आ़ली में तमाम अहले क़ियामत पर मुमताज़ किये जाएंगे और उन की फ़ज़ीलत और रुत्बए आ़लिया का इज़्हार किया जाएगा ताकि जन्नती और दोज़ख़ी उन को देखें और वोह इन सब के अह़वाल, सवाब व अ़ज़ाब के मिक़्दार और अह़वाल का मुआ़यना करें ।[3] इन क़ौलों पर अस्ह़ाबे आ'राफ़ जन्नतियों में से अफ़्ज़ल लोग होंगे क्यूं कि वोह बाक़ियों से मर्तबे में आ'ला हैं, इन तमाम अक़्वाल में कुछ तनाक़ुज़ नहीं है इस लिये कि येह हो सकता है कि हर त़बक़े के लोग आ'राफ़ में ठहराए जाएं और हर एक के ठहराने की ह़िक्मत जुदागाना हो ।

﴿يَعْرِفُوْنَ كُلًّۢا بِسِيْمٰىهُمْ﴾ **: दोनों फ़रीक़ को उन की पेशानियों से पहचानेंगे ।﴾** दोनों फ़रीक़ से जन्नती और दोज़ख़ी मुराद हैं, जन्नतियों के चेहरे सफ़ेद और तरो ताज़ा होंगे और दोज़ख़ियों के चेहरे सियाह और आंखें नीली येही उन की अ़लामतें हैं । ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : आ'राफ़ वाले जब जन्नतियों को देखेंगे तो उन के चेहरों की सफ़ेदी से उन्हें पहचान लेंगे और जब जहन्नमियों की त़रफ़ नज़र करेंगे तो उन्हें उन के चेहरे की सियाही से पहचान लेंगे ।[4]

1 .....الزهد لابن مبارك، اول السادس عشر، ص١٢٣، الحديث: ٤١١. 2 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ٤٦، ٢/٩٦.
3 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ٤٦، ٢/٩٦. 4 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ٤٦، ٢/٩٧.

www.dawateislami.net

जन्नतियों और जहन्नमियों की अ़लामात

अल्लाह तआ़ला के फ़रमां बरदार बन्दों के बारे में इर्शादे बारी तआ़ला है :

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ؕ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّ لَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : भलाई करने वालों के लिये भलाई है और इस से भी ज़ियादा और उन के मुंह पर न सियाही छाई होगी और न ज़िल्लत, येही जन्नत वाले हैं, वोह उस में हमेशा रहेंगे।

और काफ़िर व गुनहगार बन्दों के बारे में इर्शाद फ़रमाया :

وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَاۤ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जिन्हों ने बुराइयों की कमाई की तो बुराई का बदला उसी के बराबर है और उन पर ज़िल्लत छाई होगी, उन्हें **अल्लाह** से बचाने वाला कोई न होगा, गोया उन के चेहरों को अंधेरी रात के टुकड़ों से ढांप दिया गया है। वोही दोज़ख़ वाले हैं, वोह उस में हमेशा रहेंगे।

दूर से सुनना शिर्क नहीं

इस आयत में फ़रमाया गया आ'राफ़ वाले जन्नतियों को पुकारेंगे। जन्नत व जहन्नम में लाखों मील का फ़ासिला है लेकिन इस के बा वुजूद वोह एक दूसरे की आवाज़ सुन लेंगे, इस से मा'लूम हुवा कि दूर से सुन लेना कोई ऐसी बात नहीं जो मख़्लूक़ के लिये मानने से शिर्क लाज़िम आए क्यूं कि शिर्क की ह़क़ीक़त दुन्या व आख़िरत के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ नहीं होती या'नी येह नहीं हो सकता है कि दुन्या में एक चीज़ शिर्क हो लेकिन क़ियामत में वोह शिर्क न रहे, लिहाज़ा जो लोग अम्बिया व औलिया के दूर से सुनने के अ़क़ीदे पर शिर्क के फ़तवे देते हैं उन्हें ग़ौर कर लेना चाहिये बल्कि ख़ुद क़ुरआने पाक में है कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दूर से च्यूंटी की बातें सुन लीं, चुनान्चे फ़रमाया :

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : "च्यूंटी की आवाज़ सुन कर सुलैमान मुस्कुरा दिये"

1 .....یونس:۲۶ . 2 .....یونس:۲۷ . 3 .....النمل:۱۹ .

www.dawateislami.net

وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ
الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۷﴾ وَنَادٰۤى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ
بِسِيْمٰهُمْ قَالُوْا مَاۤ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۴۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उन की आंखें दोज़ख़ियों की त़रफ़ फिरेंगी कहेंगे ऐ हमारे रब हमें ज़ालिमों के साथ न कर। और आ'राफ़ वाले कुछ मर्दों को पुकारेंगे जिन्हें उन की पेशानी से पहचानते हैं कहेंगे तुम्हें क्या काम आया तुम्हारा जथ्था और वोह जो तुम ग़ुरूर करते थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब उन आ'राफ़ वालों की आंखें जहन्नमियों की त़रफ़ फेरी जाएंगी तो कहेंगे : ऐ हमारे रब ! हमें ज़ालिमों के साथ न करना। और आ'राफ़ वाले कुछ मर्दों को पुकार कर कहेगें जिन्हें उन की पेशानियों से पहचानते होंगे : तुम्हारी जमाअ़त और जो तुम तकब्बुर करते थे वोह तुम्हें काम न आया।

﴿وَنَادٰۤى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا﴾ **: और आ'राफ़ वाले कुछ मर्दों को पुकारेंगे।** ﴾ जब आ'राफ़ वालों की आंखें जहन्नमियों की त़रफ़ फेर दी जाएंगी उस वक़्त कुफ़्फ़ार जो कि दुन्या में तो सरदार थे और क़ियामत में जहन्नम के बासी, उन की पेशानियों पर जहन्नमी होने की अ़लामात मौजूद होंगी जिस से आ'राफ़ वाले उन्हें पहचानते हुए पुकारेंगे : "तुम्हारी जमाअ़त और जो तुम तकब्बुर करते थे वोह तुम्हें काम न आया।"

اَهٰۤؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ ؕ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا
خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَاۤ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿۴۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या येह हैं वोह लोग जिन पर तुम क़समें खाते थे कि **अल्लाह** उन को अपनी रह़मत कुछ न करेगा उन से तो कहा गया कि जन्नत में जाओ न तुम को अन्देशा न कुछ ग़म।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या येही वोह लोग हैं जिन के मुतअ़ल्लिक़ तुम क़समें खा कर कहते

www.dawateislami.net

थे कि **अल्लाह** उन पर रह़मत नहीं करेगा (उन से तो फ़रमाया गया है कि) तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओ तुम पर न कोई ख़ौफ़ है और न तुम ग़मगीन होगे।

﴿اَهٰۤؤُلَآءِ الَّذِیْنَ اَقْسَمْتُمْ﴾ : **क्या येह हैं वोह लोग जिन पर तुम क़समें खाते थे।﴾** आ'राफ़ वाले ग़रीब जन्नती मुसल्मानों की त़रफ़ इशारा कर के मुश्रिकों से कहेंगे कि क्या येही वोह ग़रीब मुसल्मान हैं जिन्हें तुम दुन्या में ह़क़ीर समझते थे और जिन की ग़रीबी फ़क़ीरी देख कर तुम क़समें खाते थे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन पर रह़मत नहीं फ़रमाएगा, अब ख़ुद देख लो कि वोह जन्नत के दाइमी ऐ़शो राह़त में किस इ़ज़्ज़तो एह़तिराम के साथ हैं और तुम किस बड़ी मुसीबत में मुब्तला हो।

ग़रीबों की ग़ुर्बत का मज़ाक़ उड़ाने से बचा जाए

इस से मा'लूम हुवा कि दुन्या में मोमिन की फ़क़ीरी या काफ़िर की अमीरी से धोका न खाना चाहिये नीज़ किसी ग़रीब की ग़ुर्बत का मज़ाक़ नहीं उड़ाना चाहिये। ग़रीबों की बे कसी का मज़ाक़ उड़ाना काफ़िरों का त़रीक़ा है। क़ुरआने पाक में कई जगह मौजूद है कि कुफ़्फ़ार मुसल्मानों को ग़रीब होने की वज्ह से त़ा'ने देते थे। मुसल्मान को ग़ुर्बत के त़ा'ने देना ईज़ाए मुस्लिम और ह़राम फ़े'ल है। ईज़ाए मुस्लिम के मुरतकिब लोगों को इस ह़दीसे मुबारक से इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये। चुनान्चे ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो कि मुफ़्लिस कौन है ?" सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ ने अ़र्ज़ की : हम में मुफ़्लिस वोह है कि जिस के पास दिरहम और साज़ो सामान न हो। इर्शाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत में मुफ़्लिस वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात (वग़ैरा आ'माल) ले कर आए और उस का ह़ाल येह हो कि उस ने (दुन्या में) इसे गाली दी, उसे तोहमत लगाई, इस का माल खाया, उस का ख़ून बहाया, उसे मारा। इस की नेकियों में से कुछ उस मज़्लूम को दे दी जाएंगी और कुछ इस मज़्लूम को, फिर अगर उस के ज़िम्मे ह़ुक़ूक़ की अदाएगी से पहले उस की नेकियां (उस के पास से) ख़त्म हो जाएं तो उन मज़्लूमों की ख़त़ाएं ले कर उस ज़ालिम पर डाल दी जाएंगी, फिर उसे आग में फेंक दिया जाएगा।"[1]

وَنَادٰۤی اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِیْضُوْا عَلَیْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ؕ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِیْنَ ۙ﴿۵۰﴾

[1] .....مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب تحریم الظلم، ص ١٣٩٤، الحدیث: ٥٩ (٢٥٨١).

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और दोज़ख़ी बिहिश्तियों को पुकारेंगे कि हमें अपने पानी का कुछ फ़ैज़ दो या उस खाने का जो **अल्लाह** ने तुम्हें दिया कहेंगे बेशक **अल्लाह** ने इन दोनों को काफ़िरों पर ह़राम किया है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जहन्नमी जन्नतियों को पुकारेंगे कि हमें कुछ पानी दे दो या उस रिज़्क़ से कुछ दे दो जो **अल्लाह** ने तुम्हें दिया है। जन्नती कहेंगे : बेशक **अल्लाह** ने येह दोनों चीज़ें काफ़िरों पर ह़राम कर दी हैं।

﴿وَنَادٰۤى اَصْحٰبُ النَّارِ﴾ **: और जहन्नमी पुकारेंगे।** ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि जब आ'राफ़ वाले जन्नत में चले जाएंगे तो दोज़ख़ियों को भी कुछ लालच होगी और वोह अ़र्ज़ करेंगे : या रब ! जन्नत में हमारे रिश्तेदार हैं, हमें इजाज़त अ़ता फ़रमा कि हम उन्हें देख सकें और उन से बात कर सकें। चुनान्चे उन्हें इजाज़त दी जाएगी तो वोह अपने रिश्तेदारों को जन्नत की ने'मतों में देखेंगे और पहचानेंगे, लेकिन अहले जन्नत उन दोज़ख़ी रिश्तेदारों को न पहचानेंगे क्यूं कि दोज़ख़ियों के मुंह काले होंगे, सूरतें बिगड़ गई होंगी, तो वोह जन्नतियों को नाम ले ले कर पुकारेंगे, कोई अपने बाप को पुकारेगा, कोई भाई को और कहेगा, हाए मैं जल गया मुझ पर पानी डालो और तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो रिज़्क़ दिया है उन ने'मतों में से खाने को दो। उन की पुकार सुन कर जन्नती कहेंगे : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह दोनों चीज़ें काफ़िरों पर ह़राम कर दी हैं।[1]

जन्नती मोमिन को जहन्नमी काफ़िर से न महब्बत होगी न इसे उस पर रह़म आएगा

इस आयत से मा'लूम हुवा कि जन्नती मोमिन को दोज़ख़ी काफ़िर से बिल्कुल महब्बत न होगी और न ही उस पर रह़म आएगा अगर्चे उस का सगा बाप या बेटा या बेहतरीन दोस्त हो, वोह उस के मांगने पर भी उधर कुछ न फेंकेगा। ख़याल रहे कि यहां ह़राम से मुराद शरई ह़राम नहीं क्यूं कि वहां शरई अह़काम जारी न होंगे बल्कि मुराद कामिल महरूमी है। नीज़ जन्नतियों का जहन्नमियों की मदद न करना काफ़िर जहन्नमियों के मुतअ़ल्लिक़ है वरना जहन्नम के मुस्तह़िक़ मुसल्मानों में से बहुत से गुनाहगारों को नेक रिश्तेदारों की शफ़ाअ़त नसीब होगी जैसे ह़ाफ़िज़े क़ुरआन के बारे में ह़दीस में तसरीह़ है।

الَّذِیْنَ اتَّخَذُوْا دِیْنَهُمْ لَهْوًا وَّ لَعِبًا وَّ غَرَّتْهُمُ الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا ۚ فَالْیَوْمَ
نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ یَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَ مَا كَانُوْا بِاٰیٰتِنَا یَجْحَدُوْنَ ﴿۵۱﴾

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۵۰، ۲/۹۸.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जिन्हों ने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया और दुन्या की ज़ीस्त ने उन्हें फ़रेब दिया तो आज हम उन्हें छोड़ देंगे जैसा उन्हों ने इस दिन के मिलने का ख़याल छोड़ा था और जैसा हमारी आयतों से इन्कार करते थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जिन्हों ने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया और दुन्या की ज़िन्दगी ने उन्हें धोका दिया तो आज हम उन्हें छोड़ देंगे क्यूं कि उन्हों ने अपने इस दिन की मुलाक़ात को भुला रखा था और वोह हमारी आयतों से इन्कार करते थे।

﴿اَلَّذِیْنَ اتَّخَذُوْا دِیْنَهُمْ لَهْوًا وَّ لَعِبًا﴾ **: जिन्हों ने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया।** इस आयत में कुफ़्फ़ार की एक बुरी सिफ़त बयान की जा रही है कि उन कुफ़्फ़ार ने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया इस त़रह़ कि अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों की पैरवी करते हुए जिसे चाहा ह़राम कह दिया और जिसे चाहा ह़लाल क़रार दे दिया और जब उन्हें ईमान क़बूल करने की दा'वत दी गई तो येह ईमान वालों से मज़ाक़ मस्ख़री करने लग गए, इन्हें दुन्या की ज़िन्दगी ने धोका दिया कि दुन्या की लज़्ज़तों में मश्ग़ूल हो कर अपने उख़्वी अन्जाम को भूल गए और अहलो इ़याल की मह़ब्बत में गिरिफ़्तार हो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत से दूर हो गए। इस से मा'लूम हुवा कि दुन्या की मह़ब्बत सख़्त ख़त़रनाक है। इसी लिये ह़दीसे मुबारक में फ़रमाया गया कि दुन्या की मह़ब्बत हर बुराई की जड़ है।[1]

﴿فَالْیَوْمَ نَنْسٰىهُمْ﴾ **: तो आज हम उन्हें छोड़ देंगे।** या'नी कुफ़्फ़ार ने दुन्या में जो मुआ़मला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़क़ में रवा रखा था क़ियामत के दिन उस का अन्जाम उन के सामने आ जाएगा चूंकि उन्हों ने क़ियामत का ख़याल तक छोड़ रखा था तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें उन के इस भूलने का बदला देगा। यहां **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ निस्यान की निस्बत का मत़लब कुफ़्फ़ार के निस्यान (या'नी भूलने) का बदला देना है।

وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّ رَحْمَةً لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۵۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक हम उन के पास एक किताब लाए जिसे हम ने एक बड़े इ़ल्म से मुफ़स्सल किया हिदायत व रह़मत ईमान वालों के लिये।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक हम उन के पास एक किताब लाए जिसे हम ने एक

(1) ..... جامع الاصول فی احادیث الرسول، الرکن الثانی، حرف الذال، الکتاب الثالث فی ذمّ الدنیا، الفصل الاول، ٤/٤٥٧، الحدیث: ٢٦٠٣.

www.dawateislami.net

अ़ज़ीम इ़ल्म की बिना पर बड़ी तफ़्सील से बयान किया, ईमान लाने वालों के लिये हिदायत और रह़मत है।

﴿وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ : **और बेशक हम उन के पास एक किताब लाए।**﴾ किताब से मुराद क़ुरआने पाक है जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने अपने कामिल इ़ल्म की बिना पर बड़ी तफ़्सील से बयान किया कि इस में इन्सानी हिदायत के लिये जिन जिन चीज़ों की ज़रूरत है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वोह तमाम चीज़ें बयान फ़रमा दीं और जिस चीज़ की त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दा'वत दी उस की ह़क़्क़ानिय्यत के ज़बर दस्त दलाइल क़ाइम फ़रमाए और उसे बार बार दिल नशीन अन्दाज़ और ह़सीन पैरायों में बयान किया। क़ुरआने पाक अ़क़ाइदे ह़क़्क़ा और आ'माले सालिह़ा के बयान का ह़सीन मज्मूआ़ है। क़ुरआन की रह़मते आ़म्मा तो सारे आ़लम के लिये है कि सारी दुन्या को एक हिदायत नामा मिल गया मगर रह़मते ख़ास्सा सिर्फ़ मोमिनों के लिये है क्यूं कि इस से नफ़्अ़ सिर्फ़ वोही उठाते हैं।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۵۳﴾

ع ۶ ۱۳

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : काहे की राह देखते हैं मगर उस की, कि इस किताब का कहा हुवा अन्जाम सामने आए जिस दिन इस का बताया अन्जाम वाक़ेअ़ होगा बोल उठेंगे वोह जो इसे पहले से भुलाए बैठे थे कि बेशक हमारे रब के रसूल ह़क़ लाए थे तो हैं कोई हमारे सिफ़ारिशी जो हमारी शफ़ाअ़त करें या हम वापस भेजे जाएं कि पहले कामों के ख़िलाफ़ काम करें बेशक उन्हों ने अपनी जानें नुक़्सान में डालीं और उन से खोए गए जो बोहतान उठाते थे।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : वोह तो सिर्फ़ क़ुरआन के कहे हुए आख़िरी अन्जाम का इन्तिज़ार कर रहे हैं। जिस दिन वोह आख़िरी अन्जाम आएगा तो जो इस से पहले भूले हुए थे बोल उठेंगे कि बेशक हमारे रब के रसूल ह़क़ के साथ तशरीफ़ लाए थे, तो हैं कोई हमारे सिफ़ारिशी जो हमारी

www.dawateislami.net

शफ़ाअ़त कर दें ? या हमें वापस भेज दिया जाए तो हम जो पहले अ़मल किया करते थे उस के बर ख़िलाफ़ आ'माल कर लें। बेशक उन्हों ने अपनी जानें नुक़्सान में डालीं और उन से खो गए जो येह बोहतान बांधते थे।

﴿هَلْ يَنْظُرُوْنَ : **काहे की राह देखते हैं।**﴾ या'नी वोह कुफ़्फ़ार जिन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला की आयात को झुटलाया, उन का इन्कार किया और उन पर ईमान न लाए वोह सिर्फ़ इस क़ुरआन के बयान किये हुए आख़िरी अन्जाम का इन्तिज़ार कर रहे हैं ह़ालां कि क़ियामत के दिन जब इस क़ुरआन का बताया हुवा अन्जाम आएगा तो वोह काफ़िर जो इस से पहले भूले हुए थे, न इस पर ईमान लाते थे और न इस के मुत़ाबिक़ अ़मल करते थे इक़्रार करते हुए बोल उठेंगे कि बेशक हमारे रब عَزَّوَجَلَّ के रसूल जो ता'लीमात लाए थे वोह सब ह़क़ थीं या'नी ह़श्रो नश्र, क़ियामत के दिन उठना और सवाब व अ़ज़ाब येह सब ह़क़ है। लेकिन उस वक़्त उन का इक़्रार कोई फ़ाएदा न देगा और जब अपनी जानों को अ़ज़ाब में देखेंगे और येह नज़ारा करेंगे कि मुसल्मानों की शफ़ाअ़त हो रही है और अम्बिया व औलिया, उ़लमा व सुलह़ा, छोटे बच्चे, माहे रमज़ान और ख़ानए का'बा वग़ैरा शफ़ाअ़त कर रहे हैं, तब कफ़े अफ़्सोस मलते हुए कहेंगे "है कोई जो हमारी भी सिफ़ारिश कर दे और अगर येह नहीं तो हमें दुन्या में ही वापस भेज दिया जाए ताकि पहले जो आ'माल किये थे उन्हें छोड़ कर नेक आ'माल कर लें, कुफ़्र की बजाए ईमान ले आएं, मा'सियत व ना फ़रमानी की बजाए इत़ाअ़त और फ़रमां बरदारी इख़्तियार कर लें।" मगर न उन्हें किसी की शफ़ाअ़त नसीब होगी और न दुन्या में वापस भेजे जाएंगे क्यूं कि येह वोह लोग हैं जिन्हों ने ईमान और अ़मल का वक़्त ज़ाएअ़ कर के अपनी जानें नुक़्सान में डालीं और अब पछताने के सिवा उन के पास कुछ नहीं बचा।

﴿وَضَلَّ عَنْهُمْ : **और उन से खो गए।**﴾ कुफ़्फ़ार जो कहते थे कि बुत ख़ुदा के शरीक हैं और अपने पुजारियों की शफ़ाअ़त करेंगे, अब आख़िरत में उन्हें मा'लूम हो गया कि उन के येह दा'वे झूटे थे।

जन्नतियों और जहन्नमियों के अह़वाल बयान करने का मक़्सद

ऊपर मुतअ़द्दद आयात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नतियों और जहन्नमियों के अह़वाल को तफ़्सील से बयान फ़रमाया है, उन के मुक़ालमे, जन्नतियों की ने'मतें और जहन्नमियों के अ़ज़ाब, जन्नतियों की ख़ुशियां और जहन्नमियों की ह़स्रतें येह सब चीज़ें बयान की गईं। आयात में जो कुछ बयान हुवा उस में बुन्यादी त़ौर पर मुसल्मानों और काफ़िरों के अन्जाम का बयान किया गया है लेकिन इस के साथ अस्ह़ाबे आ'राफ़ का भी बयान है जिन की नेकियां और गुनाह बराबर होंगे। अब यहां मुसल्मानों का एक वोह गुरौह भी होगा जिन के गुनाह ज़ियादा और नेकियां कम होंगी और यूंही वोह लोग भी होंगे जो नेकियों के बा वुजूद किसी गुनाह पर पकड़े जाएंगे। इन तमाम चीज़ों को पेशे नज़र रखते हुए हमें अपनी आख़िरत की फ़िक्र करनी

www.dawateislami.net

चाहिये। सब से पहले तो कुफ़्र से बचने की कोशिश करनी चाहिये, इस में वोह तमाम ज़राएअ़ मसलन फ़िल्में, ड्रामे, मिज़ाहिय्या प्रोग्राम और दीनी मा'लूमात की कमी दाख़िल हैं जो आज के ज़माने में कुफ़्रिय्यात का सबब बनते हैं। दूसरे नम्बर पर येह याद रखना चाहिये कि अगर्चे कोई मुसल्मान हमेशा के लिये जहन्नम में नहीं जाएगा लेकिन येह बात तै शुदा है कि कुछ गुनाहगार मुसल्मान ज़रूर जहन्नम में जाएंगे लिहाज़ा हमें जहन्नम के अ़ज़ाब और उस की होलनाकियों से डरते रहना चाहिये। सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सय्यिदुल मा'सूमीन हैं लेकिन इस के बा वुजूद ता'लीमे उम्मत के लिये आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अ़ज़ाबे जहन्नम से किस क़दर पनाह मांगते थे इस का अन्दाज़ा अहादीसे त़य्यिबा के मुत़ालए़ से हो सकता है। यूंही सह़ाबा व ताबिईन और बुज़ुर्गाने दीन भी हमेशा जहन्नम के अ़ज़ाब से ख़ाइफ़ और लरज़ां व तरसां रहते थे। तरग़ीब के लिये यहां चन्द अह़ादीस व वाक़िआ़त पेशे ख़िदमत हैं :

(1)..... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم यूं दुआ़ मांगा करते ''اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَاَعُوْذُ بِکَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ'' ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, मैं जहन्नम के अ़ज़ाब से तेरी पनाह मांगता हूं और क़ब्र के अ़ज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूं।[1]

(2)..... ह़ज़रते हुमरान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (एक मरतबा) इन आयाते करीमा :

اِنَّ لَدَيْنَاۤ اَنْكَالًا وَّ جَحِيْمًا ۙ﴿۱۲﴾ وَّ طَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّ عَذَابًا اَلِيْمًا[2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक हमारे पास भारी बेड़ियां और भड़क्ती आग है और गले में फंसने वाला खाना और दर्दनाक अ़ज़ाब है।

की तिलावत फ़रमाई तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ग़शी त़ारी हो गई।[3]

(3)..... ह़ज़रते बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि हम सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह एक जनाज़े में शरीक थे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ब्र के किनारे बैठे और इतना रोए कि आप की चश्माने अक़्दस से निकलने वाले आंसूओं से मिट्टी नम हो गई। फिर फ़रमाया : ''ऐ भाइयो ! इस क़ब्र के लिये तय्यारी करो।''[4]

(4)..... ह़ज़रते सुलैमान बिन सुहैम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : मुझे उस शख़्स ने बताया जिस ने ख़ुद ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को इस त़रह़ नमाज़ पढ़ते हुए देखा कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه नमाज़ में झुकते, उठते और सोज़ो गुदाज़ की ह़ालत में नमाज़ अदा करते, अगर कोई ना वाक़िफ़ शख़्स

1 .....نسائي، كتاب الاستعاذة، الاستعاذة من عذاب القبر، ص٨٧٤، الحديث: ٥٥١٤.
2 .....مزمل ١٢، ١٣. 3 .....الزهد لابن حنبل، تمهيد، ص٦٢، رقم: ١٤٦.
4 .....ابن ماجه، كتاب الزهد، باب الحزن والبكاء، ٤/٤٦٦، الحديث: ٤١٩٥.

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस ह़ालत को देखता तो कहता कि इन पर जुनून त़ारी है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह कैफ़िय्यत जहन्नम के ख़ौफ़ की वज्ह से उस वक़्त होती कि जब आप येह आयत :

وَ اِذَاۤ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَیِّقًا مُّقَرَّنِیْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا[1]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब उन्हें उस आग की किसी तंग जगह में ज़ंजीरों में जकड़ कर डाला जाएगा तो वहां मौत मांगेंगे।

या इस जैसी कोई और आयत तिलावत फ़रमाते।[2]

(5)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह रूमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुझे अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में येह बात पहुंची है कि उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर मैं जन्नत और जहन्नम के दरमियान होउं और मुझे येह मा'लूम न हो कि इन में से किस की त़रफ़ जाने का मुझे हुक्म दिया जाएगा तो मैं इस बात को इख़्तियार करूंगा कि मैं येह मा'लूम होने से पहले ही राख हो जाऊं कि मैं कहां जाऊंगा।''[3]

(6)..... एक अन्सारी नौ जवान के दिल में जहन्नम का ख़ौफ़ पैदा हुवा तो इस की वज्ह से वोह घर में ही बैठ गए, जब नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के पास तशरीफ़ लाए तो वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम में खड़े हो गए, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस सीने से चिमट गए, इस के बा'द एक चीख़ मारी और उन की रूह़ परवाज़ कर गई, ग़म गुसार आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ से इर्शाद फ़रमाया : ''अपने भाई के कफ़न दफ़्न की तय्यारी करो, जहन्नम के ख़ौफ़ ने इस का जिगर टुकड़े टुकड़े कर दिया है।''[4]

(7)..... ह़ज़रते अबू सुलैमान दारानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : (मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग) ह़ज़रते त़ाऊस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (का जहन्नम के ख़ौफ़ की वज्ह से येह ह़ाल था कि आप) सोने के लिये बिस्तर बिछाते और उस पर लैट जाते, फिर ऐसे तड़पने लगते जैसे दाना हंडिया में उछलता है, फिर अपने बिस्तर की गद्दी बना देते, फिर उसे भी लपेट देते और क़िब्ला रुख़ हो कर बैठ जाते यहां तक कि सुब्ह़ हो जाती और फ़रमाते ''जहन्नम की याद ने इ़बादत गुज़ारों पर नींद ह़राम कर दी है।''[5]

अल्लाह तआ़ला हमें जहन्नम के अ़ज़ाबात से डरने और अपनी आख़िरत की फ़िक्र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, आमीन।

1 .....الفرقان:۱۳.
2 .....کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، فضائل الفاروق رضی الله عنه، ۶/۲۶۴، الحدیث: ۳۵۸۲۶، الجزء الثانی عشر.
3 .....الزهد لابن حنبل، زهد عثمان بن عفان رضی الله عنه، ص۱۵۵، رقم: ۶۸۶.
4 .....الزهد لابن حنبل، زهد عبید بن عمیر، ص۳۹۴، رقم: ۲۳۴۹.
5 .....التخویف من النار، الباب الثانی فی الخوف من النار... الخ، فصل من الخائفین من منعه خوف جهنم من النوم، ص۳۷.

www.dawateislami.net

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِیْ سِتَّةِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ یُغْشِی الَّیْلَ النَّهَارَ یَطْلُبُهٗ حَثِیْثًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۵۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हारा रब **अल्लाह** है जिस ने आस्मान और ज़मीन छे दिन में बनाए फिर अ़र्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है रात दिन को एक दूसरे से ढांकता है कि जल्द उस के पीछे लगा आता है और सूरज और चांद और तारों को बनाया सब उस के हुक्म के दबे हुए सुन लो उसी के हाथ है पैदा करना और हुक्म देना बड़ी बरकत वाला है **अल्लाह** रब सारे जहान का ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक तुम्हारा रब **अल्लाह** है जिस ने आस्मान और ज़मीन छे दिन में बनाए फिर अ़र्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है, रात दिन को एक दूसरे से ढांप देता है कि (एक) दूसरे के पीछे जल्द जल्द चला आ रहा है और उस ने सूरज और चांद और सितारों को बनाया इस ह़ाल में कि सब उस के हुक्म के पाबन्द हैं। सुन लो ! पैदा करना और तमाम कामों में तसर्रुफ़ करना उसी के लाइक़ है। **अल्लाह** बड़ी बरकत वाला है जो सारे जहानों का रब है।

﴿اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ : **बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है ।**﴾ गुज़श्ता आयात में चूंकि क़ियामत के अह़वाल का बड़ी तफ़्सील से तज़्किरा हुवा और यहां से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़मत, क़ुदरत, वह़दानिय्यत और वुक़ूए क़ियामत पर दलाइल दिये गए हैं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरतो वह़दानिय्यत की दलील आस्मान व ज़मीन की तख़्लीक़ है कि **अल्लाह** तआ़ला ने आस्मान और ज़मीन को पैदा किया और छे दिन में पैदा किया जैसा कि इस आयत में और दीगर आयात में फ़रमाया गया । अगर आस्मान व ज़मीन एक लम्ह़े में पैदा होते तो किसी को शुबा हो सकता था कि येह एक इत्तिफ़ाक़ी ह़ादिसा है लेकिन जब इन की तख़्लीक़ एक मख़्सूस मुद्दत और मख़्सूस त़रीक़ए कार से हुई तो मा'लूम हुवा कि इस को किसी और ने वुजूद बख़्शा है। छे दिन में तख़्लीक़ से क्या मुराद है, इस के मुतअ़ल्लिक़ बा'ज़ ने फ़रमाया कि छे दिन से मुराद छे अदवार हैं और अक्सर ने फ़रमाया कि दुन्यवी ए'तिबार से जो छे दिन की मिक़्दार बनती है वोह मुराद है। बहर ह़ाल

www.dawateislami.net

जो भी सूरत हो **अल्लाह** तआ़ला हर सूरत पर क़ादिर है।

आस्मान व ज़मीन को 6 दिन में पैदा करने की हिक्मत

अल्लाह तआ़ला क़ादिर था कि एक लम्हे में या इस से कम में ज़मीन व आस्मान पैदा फ़रमा देता लेकिन इतने अ़र्से में उन की पैदाइश फ़रमाना ब तक़ाज़ाए हिक्मत है और इस में बन्दों के लिये ता'लीम है कि बन्दे भी अपने काम में जल्दी न किया करें बल्कि आहिस्तगी से करें।

जल्द बाज़ी से मुतअ़ल्लिक़ 2 अहादीस

यहां जल्द बाज़ी से मुतअ़ल्लिक़ दो अहादीस मुलाहज़ा हों :

(1)..... हज़रते सहल बिन साइदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "काम में जल्द बाज़ी न करना **अल्लाह** तआ़ला की तरफ़ से है और जल्द बाज़ी शैतान की तरफ़ से है।"[1]

(2)..... हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने शैख़ अ़ब्दुल क़ैस से फ़रमाया : "तुम में दो ख़स्लतें ऐसी हैं जो **अल्लाह** तआ़ला को महबूब हैं, बुर्दबारी और जल्द बाज़ी न करना[2]।"[3]

﴿ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ﴾ **: फिर अ़र्श पर जैसा उस की शान के लाइक़ है इस्तिवा फ़रमाया।** इस्तिवा का लुग़वी मा'ना तो है कि किसी चीज़ का किसी चीज़ से बुलन्द होना, किसी चीज़ का किसी चीज़ पर बैठना। यहां आयत में क्या मुराद है इस के बारे में उ़लमाए किराम ने बहुत मुफ़स्सल कलाम फ़रमाया है। हम यहां आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की एक तस्नीफ़ की रोशनी में एक ख़ुलासा बयान करते हैं जिस से इस आयत और इस तरह की जितनी भी आयात हैं उन के बारे में सहीह़ अ़क़ीदा वाज़ेह़ हो जाए। चुनान्चे आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "अन्सब (या'नी ज़ियादा मुनासिब) येही है कि आयाते मुतशाबहात से ज़ाहिरन समझ आने वाले मा'ना को एक मुनासिब व मुलाइम मा'ना की तरफ़ जो कि मोह्कमात से मुताबिक़ और मुहावरात से मुवाफ़िक़ हो फेर दिया जाए ताकि फ़ितने और गुमराही से नजात पाएं, येह मस्लक बहुत से मुतअख़्ख़िरीन उ़लमा का है कि अ़वाम की ह़ालत के पेशे नज़र इसे इख़्तियार किया है, इसे "मस्लके तावील" कहते हैं, येह

1 .....ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی التأنّی والعجلة، ۳/۴۰۷، الحدیث: ۲۰۱۹.

2 .....ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی التأنّی والعجلة، ۳/۴۰۷، الحدیث: ۲۰۱۸.

3 ..... जल्द बाज़ी की मज़म्मत और इस से मुतअ़ल्लिक़ दीगर चीज़ों की मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये किताब "जल्द बाज़ी" (मत्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

उ़लमा आयत ''ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ''की तावील कई त़रह़ से फ़रमाते हैं उन में चार वज्हें नफ़ीस व वाज़ेह़ हैं :

अव्वल : इस्तिवा ब मा'ना ''क़हर व ग़लबा'' है, येह मा'ना ज़बाने अ़रब से साबित व पैदा (ज़ाहिर) है, अ़र्श सब मख़्लूक़ात से ऊपर और ऊंचा है इस लिये इस के ज़िक्र पर इक्तिफ़ा फ़रमाया और मत़लब येह हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तमाम मख़्लूक़ात पर क़ाहिर व ग़ालिब है।

दुवुम : इस्तिवा ब मा'ना ''उ़लुव्व'' है और उ़लुव्व **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सिफ़त है, उ़लुव्वे मकान सिफ़त नहीं बल्कि उ़लुव्वे मालिकिय्यत व सुल्त़ान सिफ़त है।

सिवुम : इस्तिवा ब मा'ना ''क़स्द व इरादा'' है, या'नी फिर अ़र्श की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा या'नी इस की आफ़रीनिश का इरादा फ़रमाया या'नी इस की तख़्लीक़ शुरूअ़ की।

चहारुम : इस्तिवा ब मा'ना ''फ़राग़ व तमामी कार'' है, या'नी सिल्सिलए ख़ल्क़ व आफ़रीनिश को अ़र्श पर ख़त्म फ़रमाया, इस से बाहर कोई चीज़ न पाई, दुन्या व आख़िरत में जो कुछ बनाया और बनाएगा दाइरए अ़र्श से बाहर नहीं कि वोह तमाम मख़्लूक़ को ह़ावी है।''[1]

मज़ीद तफ़्सील के लिये फ़तावा रज़विय्या की 29वीं जिल्द में मौजूद सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का रिसालए मुबारका ''قَوَارِعُ الْقَهَّار عَلَى الْمُجَسِّمَةِ الْفُجَّار'' (**अल्लाह** तआ़ला के लिये जिस्म साबित करने वाले फ़ाजिरों का रद) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

﴿يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ﴾ **: रात दिन को एक दूसरे से ढांप देता है।** ﴾ इर्शाद फ़रमाया कि रात और दिन एक दूसरे को ढांप लेते हैं, यहां ढांपने से मुराद ज़ाइल करना है या'नी रात का अंधेरा दिन की रोशनी को और फिर आयिन्दा दिन की रोशनी रात के अंधेरे को दूर कर देती है नीज़ इन रात दिन में से हर एक दूसरे के पीछे जल्द जल्द चला आ रहा है कि दिन रात का ऐसा सिल्सिला क़ाइम फ़रमाया जो कभी टूटता नहीं और उस ने सूरज, चांद, सितारों को बनाया और ऐसा बनाया कि न कभी ख़राब हों और न कभी उन को तब्दील किया जा सके मगर जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे। येह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म के पाबन्द हैं। काएनात में तख़्लीक़ और तसर्रुफ़ का ह़क़ीक़ी इख़्तियार सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को है और उसी की ज़ात ख़ैरो बरकत वाली है कि उसी का फ़ैज़ान जारी व सारी है और सब बरकतें, इनायतें और रह़मतें उसी की त़रफ़ से हैं।

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۵۵﴾

1..... फ़तावा रज़विय्या, 29/124, 126 मुलख़्ख़सन।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अपने रब से दुआ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता बेशक ह़द से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अपने रब से गिड़गिड़ाते हुए और आहिस्ता आवाज़ से दुआ करो। बेशक वोह ह़द से बढ़ने वाले को पसन्द नहीं फ़रमाता।

﴿اُدْعُوْا رَبَّكُمْ﴾ **: अपने रब से दुआ करो।** ﴾ दुआ **अल्लाह** तआ़ला से ख़ैर त़लब करने को कहते हैं और येह इ़बादत में दाख़िल है क्यूं कि दुआ करने वाला अपने आप को आ़जिज़ो मोह़ताज और अपने परवर्दगार को ह़क़ीक़ी क़ादिर व ह़ाजत रवा ए'तिक़ाद करता है इसी लिये ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा ''اَلدُّعَآءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ'' दुआ इ़बादत का मग़्ज़ है।[1]

दुआ मांगने के फ़ज़ाइल

इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला से दुआ मांगने का हुक्म दिया गया, इस मुनासबत से हम यहां दुआ मांगने के 3 फ़ज़ाइल बयान करते हैं, चुनान्चे

(1)..... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक कोई चीज़ दुआ से बुज़ुर्ग तर नहीं।''[2]

(2)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस शख़्स के लिये दुआ का दरवाज़ा खोल दिया गया तो उस के लिये रह़मत का दरवाज़ा खोल दिया गया। **अल्लाह** तआ़ला से किये जाने वाले सुवालों में से पसन्दीदा सुवाल आ़फ़ियत का है। जो मुसीबतें नाज़िल हो चुकीं और जो नाज़िल नहीं हुईं उन सब में दुआ से नफ़्अ़ होता है, तो ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! दुआ करने को (अपने ऊपर) लाज़िम कर लो।''[3]

(3)..... ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या मैं तुम्हें वोह चीज़ न बताऊं जो तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से नजात दे और तुम्हारे रिज़्क़ को वसीअ़ कर दे ''रात दिन **अल्लाह** तआ़ला से दुआ मांगते रहो कि दुआ मोमिन का हथियार है।''[4]

1 .....ترمذی، کتاب الدعوات، باب ما جاء فی فضل الدعاء، ۵/۲۴۳، الحدیث: ۳۳۸۲.
2 .....ترمذی، کتاب الدعوات، باب ما جاء فی فضل الدعاء، ۵/۲۴۳، الحدیث: ۳۳۸۱.
3 .....ترمذی، کتاب الدعوات، باب فی دعاء النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ۵/۳۲۱، الحدیث: ۳۵۵۹.
4 .....مسند ابو یعلی، مسند جابر بن عبد اللّٰہ، ۲/۲۰۱، الحدیث: ۱۸۰۶.

www.dawateislami.net

एक दुआ से ह़ासिल होने वाले फ़वाइद

एक दुआ से आदमी को पांच फ़ाएदे ह़ासिल होते हैं :

(1)..... दुआ मांगने वाला इबादत गुज़ारों के गुरौह में शुमार होता है कि दुआ फ़ी नफ़्सिही या'नी बज़ाते ख़ुद इबादत बल्कि इबादत का मग़्ज़ है ।

(2)..... जो शख़्स दुआ करता है वोह अपने आजिज़ और मोह़ताज होने का इक़्रार और अपने परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत और करम का ए'तिराफ़ करता है ।

(3)..... दुआ मांगने से शरीअ़ते मुत़ह्हरा के हुक्म की बजा आवरी होगी कि **अल्लाह** तआ़ला ने इस का हुक्म दिया और दुआ न मांगने वाले पर ह़दीस में वईद आई ।

(4)..... सुन्नत की पैरवी होगी कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुआ मांगा करते और औरों को भी ताकीद फ़रमाते ।

(5)..... दुआ से आफ़ातो बलिय्यात दूर होती हैं और मक़्सूद ह़ासिल होता है ।[1]

नोट : दुआ के फ़ज़ाइल, आदाब, क़बूलिय्यत के अस्बाब, क़बूलिय्यत के अवक़ात, क़बूलिय्यत के मक़ामात, क़बूलिय्यत की राह में ह़ाइल रुकावटों और मम्नूअ़ दुआओं वग़ैरा की मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के वालिदे माजिद ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की तस्नीफ़ ''اَحْسَنُ الْوِعَاء لِاٰدَابِ الدُّعَا'' (दुआ के फ़ज़ाइल व आदाब और इस से मुतअ़ल्लिक़ा अह़काम पर बे मिसाल तह़क़ीक़[2]) या राक़िम की किताब ''फ़ैज़ाने दुआ'' का मुत़ालआ़ कीजिये ।

﴿اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُعْتَدِیْنَ﴾ **: बेशक वोह ह़द से बढ़ने वाले को पसन्द नहीं फ़रमाता ।** या'नी लोगों को दुआ वग़ैरा जिन चीज़ों का हुक्म दिया गया उन में ह़द से बढ़ने वालों को **अल्लाह** तआ़ला पसन्द नहीं करता ।[3]

ह़ज़रते अबू नआ़मा से रिवायत है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल ने अपने बेटे को येह दुआ करते हुए सुना : ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, मैं तुझ से जन्नत की दाईं त़रफ़ सफ़ेद महल का सुवाल करता हूं । तो फ़रमाया : ऐ बेटे ! **अल्लाह** तआ़ला से जन्नत का सुवाल करो और जहन्नम से पनाह मांगो क्यूं कि मैं ने रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए

---

1 ..... फ़ज़ाइले दुआ, फ़स्ले अव्वल, स. 54, 55 मुलख़्ख़सन

2 ..... येह किताब तस्हील और तख़्रीज के साथ मक्तबतुल मदीना ने ''फ़ज़ाइले दुआ'' के नाम से शाएअ़ की है, वहां से ख़रीद कर इस का मुत़ालआ़ फ़रमाएं ।

3 .....روح البیان، الاعراف، تحت الآیۃ: ۵۵، ۳/۱۷۸.

www.dawateislami.net

सुना है कि "अ़न्क़रीब मेरी उम्मत के कुछ लोग वुज़ू और दुआ़ में ह़द से बढ़ेंगे।"[1]

दुआ़ में ह़द से बढ़ने की सूरतें

याद रहे कि दुआ़ में ह़द से बढ़ने की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं जैसे अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मर्तबा मांगना या आस्मान पर चढ़ने की दुआ़ करना, इसी त़रह़ जो चीज़ें मुह़ाल या क़रीब ब मुह़ाल हैं उन की दुआ़ करना, हमेशा के लिये तन्दुरुस्ती और आ़फ़ियत मांगना, ऐसे काम के बदलने की दुआ़ मांगना जिस पर क़लम जारी हो चुका मसलन लम्बा आदमी कहे मेरा क़द कम हो जाए या छोटी आंखों वाला कहे कि मेरी आंखें बड़ी हो जाएं। इसी त़रह़ गुनाह की दुआ़ मांगना, रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ात टूट जाने की दुआ़ करना, **अल्लाह** तआ़ला से ह़क़ीर चीज़ मांगना, लग़्व और बे फ़ाएदा दुआ़ मांगना, रन्जो मुसीबत से घबरा कर अपने मरने की दुआ़ करना, सह़ीह़ शर्ई़ ग़रज़ के बिग़ैर किसी की मौत या बरबादी की दुआ़ मांगना, किसी मुसल्मान पर **अल्लाह** तआ़ला का ग़ज़ब नाज़िल होने या उसे जहन्नम में दाख़िल किये जाने की दुआ़ मांगना, सब मुसल्मानों के सब गुनाह बख़्शे जाने की दुआ़ मांगना और काफ़िर की मग़्फ़िरत की दुआ़ करना वग़ैरा।

وَلَا تُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّ طَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِیْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۵۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन में फ़साद न फैलाओ इस के संवरने के बा'द और उस से दुआ़ करो डरते और त़मअ़ करते बेशक **अल्लाह** की रह़मत नेकों से क़रीब है।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और ज़मीन में इस की इस्लाह़ के बा'द फ़साद बरपा न करो और **अल्लाह** से दुआ़ करो डरते हुए और त़मअ़ करते हुए। बेशक **अल्लाह** की रह़मत नेक लोगों के क़रीब है।

﴿وَلَا تُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ﴾ **: और ज़मीन में फ़साद न फैलाओ।** ﴾ या'नी ऐ लोगो ! अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के तशरीफ़ लाने, ह़क़ की दा'वत फ़रमाने, अह़काम बयान करने और अ़द्ल क़ाइम फ़रमाने के बा'द तुम कुफ़्रो शिर्क, गुनाह और ज़ुल्मो सितम कर के ज़मीन में फ़साद बरपा न करो।

[1] .....ابو داؤد، کتاب الطهارة، باب الاسراف فی الماء، ۱/۶۸، الحدیث: ۹۶.

www.dawateislami.net

﴿وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّ طَمَعًا﴾ : **और उस से दुआ करो डरते और तमअ करते ।** इस में दुआ मांगने का एक अदब बयान फ़रमाया गया है कि जब भी दुआ मांगो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से डरते हुए और उस की रह़मत की त़मअ़ करते हुए दुआ करो ।

ख़ौफ़ और उम्मीद की ह़ालत में दुआ मांगनी चाहिये

इस से मा'लूम हुवा कि दुआ और इ़बादात में ख़ौफ़ व उम्मीद दोनों होने चाहिएं इस से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जल्द क़बूल होगी । इसी मफ़्हूम पर मुश्तमिल एक ह़दीस बुख़ारी शरीफ़ में है चुनान्चे ह़ज़रते बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम सोने लगो तो नमाज़ जैसा वुज़ू कर लिया करो, फिर दाईं करवट लैट कर कहो ''اَللّٰهُمَّ اَسْلَمْتُ وَجْهِیْ اِلَیْکَ وَفَوَّضْتُ اَمْرِیْ اِلَیْکَ وَاَلْجَاْتُ ظَهْرِیْ اِلَیْکَ رَغْبَةً وَرَهْبَةً اِلَیْکَ لَا مَلْجَاَ وَلَا مَنْجَاَ مِنْکَ اِلَّا اِلَیْکَ اَللّٰهُمَّ آمَنْتُ بِکِتَابِکَ الَّذِیْ اَنْزَلْتَ وَبِنَبِیِّکَ الَّذِیْ اَرْسَلْتَ'' **तरजमा :** ऐ **अल्लाह** ! मैं ने अपना चेहरा तेरी त़रफ़ कर दिया और अपना मुआ़मला तेरे सिपुर्द कर दिया और तुझ से रग़बत और ख़ौफ़ रखते हुए अपनी पीठ झुका दी, तेरे सिवा कोई जाए पनाह और नजात की जगह नहीं । ऐ **अल्लाह** ! मैं तेरी किताब पर ईमान लाया जो तू ने नाज़िल फ़रमाई और तेरे नबी पर ईमान लाया जिन्हें तू ने भेजा ।'' (अगर रात को सोते वक़्त येह पढ़ोगे तो) अगर उस रात में मर गए तो तुम फ़ित़रत पर होगे ।[1]

وَهُوَ الَّذِیْ یُرْسِلُ الرِّیٰحَ بُشْرًۢا بَیْنَ یَدَیْ رَحْمَتِهٖؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّیِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِؕ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۵۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है कि हवाएं भेजता है उस की रह़मत के आगे मुज़्दा सुनाती यहां तक कि जब उठा लाएं भारी बादल हम ने उसे किसी मुर्दा शह़र की त़रफ़ चलाया फिर उस से पानी उतारा फिर उस से त़रह़ त़रह़ के फल निकाले इसी त़रह़ हम मुर्दों को निकालेंगे कहीं तुम नसीह़त मानो ।

1 .....بخاری، کتاب الوضوء، باب فضل من بات علی الوضوء، ۱/۱۰٤، الحدیث: ۲٤۷.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोही है जो हवाओं को इस ह़ाल में भेजता है कि उस की रह़मत के आगे आगे ख़ुश ख़बरी दे रही होती हैं यहां तक कि जब वोह हवाएं भारी बादल को उठा लाती हैं तो हम उस बादल को किसी मुर्दा शह्र की त़रफ़ चलाते हैं फिर उस मुर्दा शह्र में पानी उतारते हैं तो उस पानी के ज़रीए हर त़रह़ के फल निकालते हैं। इसी त़रह़ हम मुर्दों को निकालेंगे। (येह बयान इस लिये है) ताकि तुम नसीह़त ह़ासिल करो।

﴿وَهُوَ الَّذِیْ یُرْسِلُ الرِّیٰحَ﴾ **: और वोही है कि हवाएं भेजता है।** ﴾ इस से दो आयात पहले **अल्लाह** तआ़ला की वह़दानिय्यत के चन्द दलाइल बयान फ़रमाए गए जैसे आस्मान व ज़मीन की पैदाइश, दिन और रात का एक दूसरे के पीछे आना, सूरज, चांद और सितारों का मुसख़्ख़र होना, अब इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़मत, क़ुदरत, वह़दानिय्यत और वुक़ूए क़ियामत पर मज़ीद दलाइल बयान फ़रमाए जा रहे हैं। इस आयत का ख़ुलासा येह है **: अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कैसी अ़ज़ीम क़ुदरत है कि वोह पहले हवाओं को भेजता है जो उस की रह़मत या'नी बारिश आने की ख़ुश ख़बरी दे रही होती हैं यहां तक कि जब वोह हवाएं समुन्दर से भारी बादल को उठा लाती हैं तो **अल्लाह** तआ़ला उस बादल को किसी मुर्दा शह्र की त़रफ़ चलाता है जिस की ज़मीन ख़ुश्क पड़ी होती है और सब्ज़े का नामो निशान नहीं होता फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस मुर्दा ज़मीन पर पानी उतारता है और उस पानी के ज़रीए वहां सब्ज़ा पैदा फ़रमा देता है, वहां फल फूल उगते हैं, वहां ग़ल्ला अनाज पैदा होता है। वोह मुर्दा ज़मीन भी ज़िन्दा हो जाती है और उस की पैदावार के ज़रीए लोगों की ज़िन्दगी का सामान भी मुहय्या हो जाता है। येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत है और येही दलीले क़ुदरत इस बात को मानने पर भी मजबूर कर देती है कि जिस त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला मुर्दा ज़मीन को वीरानी के बा'द ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमाता है और उस को सर सब्ज़ो शादाब फ़रमाता है और उस में खेती, दरख़्त, फल फूल पैदा करता है ऐसे ही मुर्दों को क़ब्रों से ज़िन्दा कर के उठाएगा, क्यूं कि जो ख़ुश्क लकड़ी से तरो ताज़ा फल पैदा करने पर क़ादिर है उस से मुर्दों का ज़िन्दा करना क्या बईद है। क़ुदरत की येह निशानी देख लेने के बा'द अ़क़्ल मन्द, सलीमुल ह़वास को मुर्दों के ज़िन्दा किये जाने में कुछ तरद्दुद बाक़ी नहीं रहता।

وَالْبَلَدُ الطَّیِّبُ یَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖۚ-وَالَّذِیْ خَبُثَ لَا یَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًاؕ-كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّشْكُرُوْنَ(۵۸)ع

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अच्छी ज़मीन है उस का सब्ज़ा **अल्लाह** के हुक्म से निकलता है और जो ख़राब है उस में नहीं निकलता मगर थोड़ा ब मुश्किल हम यूंही त़रह़ त़रह़ से आयतें बयान करते हैं उन के लिये जो एह़सान मानें।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो अच्छी ज़मीन होती है उस का सब्ज़ा तो अपने रब के हुक्म से निकल आता है और जो ख़राब हो उस का सब्ज़ा बड़ी मुश्किल से थोड़ा सा निकलता है। हम इसी त़रह़ शुक्र करने वाले लोगों के लिये तफ़्सील से आयात बयान करते हैं।

﴿وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ : **और जो अच्छी ज़मीन होती है।**﴾ येह मोमिन की मिसाल है कि जिस त़रह़ उ़म्दा ज़मीन पानी से नफ़्अ़ पाती है और उस में फूल फल पैदा होते हैं इसी त़रह़ जब मोमिन के दिल पर क़ुरआनी अन्वार की बारिश होती है तो वोह उस से नफ़्अ़ पाता है, ईमान लाता है, त़ाआ़तो इबादात से फलता फूलता है। यूंही येह मिसाल फ़ैज़ाने नुबुव्वत की भी हो सकती है कि जब नबवी फ़ैज़ान आ़म होता है और नूरे नुबुव्वत की बारिश बरस्ती है तो मोमिन का दिल उस से नफ़्अ़ ह़ासिल करता है और उसे रूह़ानी ज़िन्दगी मिल जाती है और उस के रगो पै में नूरे ईमान सरायत कर जाता है और आ'माले सालिह़ा के फल फूल खिलने लगते हैं।

﴿وَالَّذِیْ خَبُثَ : **और जो ख़राब हो।**﴾ येह काफ़िर की मिसाल है कि जैसे ख़राब ज़मीन बारिश से नफ़्अ़ नहीं पाती ऐसे ही काफ़िर क़ुरआने पाक से मुन्तफ़ेअ़ नहीं होता और यूंही जब फ़ैज़ाने नुबुव्वत की बारिश होती है तो काफ़िर का ख़बीस दिल उस फ़ैज़ान से इसी त़रह़ मह़रूम रहता है जैसे बेहतरीन बारिश से कांटेदार और झाड़ झन्कार वाली ज़मीन मह़रूम रहती है।

لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۵۹﴾ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۶۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने नूह़ को उस की क़ौम की त़रफ़ भेजा तो उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम **अल्लाह** को पूजो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं बेशक मुझे तुम पर बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है। उस की क़ौम के सरदार बोले बेशक हम तुम्हें खुली गुमराही में देखते हैं।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक हम ने नूह़ को उस की क़ौम की त़रफ़ भेजा तो उस ने कहा : ऐ मेरी क़ौम ! **अल्लाह** की इबादत करो । उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं । बेशक मैं तुम पर बड़े दिन के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ करता हूं । उस की क़ौम के सरदार बोले : बेशक हम तुम्हें खुली गुमराही में देखते हैं ।

﴿لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا﴾ **: बेशक हम ने नूह़ को भेजा ।** इस से मा क़ब्ल आयात में **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी क़ुदरत और वह़दानिय्यत के दलाइल और अपनी अ़जीबो ग़रीब सन्अ़तों से मुतअ़ल्लिक़ बयान फ़रमाया, उन से **अल्लाह** तआ़ला का वाह़िद और रब होना साबित होता है । फिर मरने के बा'द उठने और ज़िन्दा होने की सिह़्ह़त पर मज़बूत़ तरीन दलील क़ाइम फ़रमाई इन सब के बा'द बड़ी तफ़्सील से अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वाक़िआ़त बयान फ़रमाए कि वोह भी अपनी उम्मतों को तौह़ीदो रिसालत और अ़क़ीदए क़ियामत की त़रफ़ दा'वत देते रहे, इस से येह मा'लूम हुवा कि येह दा'वत कोई नई नहीं बल्कि हमेशा से अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इन्ही चीज़ों की दा'वत देते आए हैं फिर इस के साथ इस बात को भी बार बार दोहराया गया कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दा'वत के इन्कार को मा'मूली न समझा जाए बल्कि पहली उम्मतों के अह़वाल को पेशे नज़र रखा जाए कि उन में से जिन्हों ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को झुटलाया और उन के बयान कर्दा अ़क़ीदए तौह़ीदो रिसालत और ह़श्रो नश्र का इन्कार किया वोह तबाहो बरबाद हो गए । अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वाक़िआ़त में सब से पहले ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़िक्र किया गया क्यूं कि कुफ़्फ़ार की त़रफ़ भेजे जाने वाले पहले रसूल येही थे ।

ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मुख़्तसर तआ़रुफ़

ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इस्मे गिरामी यश्कुर या अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार है और आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ह़ज़रते इदरीस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पड़पोते थे । आप का लक़ब "नूह़" इस लिये हुवा की आप कसरत से गिर्या व ज़ारी किया करते थे, चालीस या पचास साल की उ़म्र में नुबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाए गए ।

ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम को इबादते इलाही की दा'वत देते हुए फ़रमाया : ऐ मेरी क़ौम ! ईमान क़बूल कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करो क्यूं कि उस के सिवा कोई और ऐसा है ही नहीं जिस की इबादत की जा सके, वोही तुम्हारा मा'बूद है और जिस चीज़ का मैं तुम्हें हुक्म दे रहा हूं उस में अगर तुम मेरी नसीह़त क़बूल न करोगे और राहे रास्त पर न आओगे तो मुझे तुम पर बड़े दिन या'नी रोज़े क़ियामत या रोज़े त़ूफ़ान के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ है ।

www.dawateislami.net

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत की ज़बर दस्त दलील

अम्बियाए किराम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इन तज़्किरों में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत की ज़बर दस्त दलील है क्यूं कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उम्मी थे, फिर आप का इन वाक़िआ़त को तफ़्सीलन बयान फ़रमाना बिल ख़ुसूस ऐसे मुल्क में जहां अहले किताब के उ़लमा ब कसरत मौजूद थे और सरगर्म मुख़ालिफ़ भी थे, ज़रा सी बात पाते तो बहुत शोर मचाते, वहां हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इन वाक़िआ़त को बयान फ़रमाना और अहले किताब का साकित व हैरान रह जाना इस बात की सरीह़ दलील है कि आप नबिय्ये बरह़क़ हैं और परवर्दगारे आ़लम عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर उ़लूम के दरवाज़े खोल दिये हैं।

नोट : ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का अपनी क़ौम को राहे रास्त पर आने की दा'वत देने और उन की क़ौम पर आने वाले अ़ज़ाब का तफ़्सीली ज़िक्र सूरए हूद आयत 25 ता 48 में भी मज़्कूर है।

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ ضَلٰلَةٌ وَّ لٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۶۱﴾
اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَ اَنْصَحُ لَكُمْ وَ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۲﴾
اَوَ عَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ
وَ لِتَتَّقُوْا وَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۶۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : कहा ऐ मेरी क़ौम मुझ में गुमराही कुछ नहीं मैं तो रब्बुल आ़लमीन का रसूल हूं। तुम्हें अपने रब की रिसालतें पहुंचाता और तुम्हारा भला चाहता और मैं **अल्लाह** की त़रफ़ से वोह इ़ल्म रखता हूं जो तुम नहीं रखते। और क्या तुम्हें इस का अचम्भा हुवा कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से एक नसीह़त आई तुम में के एक मर्द की मा'रिफ़त कि वोह तुम्हें डराए और तुम डरो और कहीं तुम पर रह़्म हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फ़रमाया : ऐ मेरी क़ौम ! मुझ में कोई गुमराही नहीं लेकिन मैं तो

www.dawateislami.net

रब्बुल आ़लमीन का रसूल हूं। मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुंचाता हूं और तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही करता हूं और मैं **अल्लाह** की त़रफ़ से वोह इ़ल्म रखता हूं जो तुम नहीं रखते। और क्या तुम्हें इस बात पर तअ़ज्जुब है कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से तुम्हीं में से एक मर्द के ज़रीए़ नसीह़त आई ताकि वोह तुम्हें डराए और ताकि तुम डरो और ताकि तुम पर रह़्म किया जाए।

﴿قَالَ یٰقَوْمِ﴾ **: कहा ऐ मेरी क़ौम** ﴾ क़ौम के सरदारों का जहालत व सफ़ाहत से भरपूर जवाब सुन कर कमाले ख़ुल्क़ का मुज़ाहरा करते हुए ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने जवाब दिया कि ऐ मेरी क़ौम! मुझ में कोई गुमराही की बात नहीं बल्कि मैं तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से तुम्हारी हिदायत के लिये रसूल बना कर भेजा गया हूं क्यूं कि जब दुन्यावी बादशाह किसी ना तजरिबा कार और जाहिल को अपना वज़ीर नहीं बनाता या कोई अहम ओ़हदा नहीं सोंपता तो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला जो सब बादशाहों का बादशाह है वोह कैसे किसी बे वुक़ूफ़ या कम इ़ल्म को मन्सबे नुबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमा सकता है और मेरा काम तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पैग़ामात तुम तक पहुंचाना और तुम्हारी भलाई चाहना है।

नुबुव्वत और गुमराही जम्अ़ नहीं हो सकती

आयत नम्बर 61 से मा'लूम हुवा कि नुबुव्वत और गुमराही दोनों जम्अ़ नहीं हो सकतीं और कोई नबी एक आन के लिये भी गुमराह नहीं हो सकते। अगर नबी ही गुमराह हों तो फिर उन्हें हिदायत कौन करेगा।

मुबल्लिग़ को चाहिये कि मुख़ातब की जहालत पर शफ़क़त व नरमी का मुज़ाहरा करे

ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की क़ौम की बक्वास और आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के जवाब की त़रफ़ नज़र करें तो मा'लूम होता है कि ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام निहायत ह़लीमो करीम बुज़ुर्ग थे कि इन्तिहाई बद तमीज़ी के साथ दिये गए जवाब के मुक़ाबले में निहायत शफ़क़तो मह़ब्बत और ख़ैर ख़्वाही के साथ जवाब अ़त़ा फ़रमा रहे हैं और येह वोही ता'लीम है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को फ़रमाई थी। चुनान्चे फ़िरऔ़न की त़रफ़ भेजते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते मूसा और ह़ज़रते हारून عَلَیْہِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़रमाया :

فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّیِّنًا لَّعَلَّهٗ یَتَذَكَّرُ اَوْ یَخْشٰى (1)

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : तो तुम उस से नर्म बात कहना इस उम्मीद पर कि शायद वोह नसीह़त क़बूल कर ले या (**अल्लाह** से) डर जाए।

1 .....طٰہٰ:٤٤.

www.dawateislami.net

और येह वोही हुक्म है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें इर्शाद फ़रमाया है :

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अपने रब के रास्ते की त़रफ़ हिक्मत और अच्छी नसीह़त के साथ बुलाओ और उन से इस त़रीक़े से बह़स करो जो सब से अच्छा हो, बेशक तुम्हारा रब उसे ख़ूब जानता है जो उस की राह से गुमराह हुवा और वोह हिदायत पाने वालों को भी ख़ूब जानता है।

इस से मुबल्लिग़ीन को भी दर्स ह़ासिल करना चाहिये कि मुख़ात़ब की जहालत पर बर अंगेख़्ता होने की बजाए ह़त्तल इम्कान नरमी और शफ़्क़त के साथ जवाब दिया जाए।

فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ﴿۶۴﴾ ع ۸ ۱۵

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन्हों ने उसे झुटलाया तो हम ने उसे और जो उस के साथ किश्ती में थे नजात दी और अपनी आयतें झुटलाने वालों को डुबो दिया बेशक वोह अन्धा गुरौह था।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो उन्हों ने नूह़ को झुटलाया तो हम ने उसे और जो उस के साथ किश्ती में थे सब को नजात दी और हमारी आयतें झुटलाने वालों को ग़र्क़ कर दिया बेशक वोह अन्धे लोग थे।

﴿فَكَذَّبُوْهُ﴾ **: तो उन्हों ने नूह़ को झुटलाया।** ﴾ जब ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत को झुटलाया, ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर नाज़िल होने वाली वह़ी जो आप उन तक पहुंचा देते थे उसे क़बूल न किया और एक अ़र्से तक अ़ज़ाबे इलाही से ख़ौफ़ दिलाने और राहे रास्त पर लाने की कोशिशें करने के बा वुजूद भी वोह लोग अपनी बात पर डटे रहे तो उन पर **अल्लाह** तआ़ला का अ़ज़ाब नाज़िल हुवा। जो मोमिनीन ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ किश्ती में सुवार थे उन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने अ़ज़ाब से महफ़ूज़

(1) .....النحل: ۱۲۵.

www.dawateislami.net

रखा और बाक़ी सब को ग़र्क़ कर दिया। इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मनों पर उस वक़्त तक दुन्यावी अ़ज़ाब नहीं आते जब तक वोह पैग़म्बर की ना फ़रमानी न करें, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम किसी को अ़ज़ाब देने वाले नहीं हैं जब तक कोई रसूल न भेज दें।

ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की किश्ती में चालीस मर्द और चालीस औ़रतें सुवार थीं मगर आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद के सिवा किसी की नस्ल न चली इस लिये आप को "आदमे सानी" कहते हैं। आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने मज़ीद फ़रमाया "**बेशक वोह (या'नी कुफ़्फ़ार) अन्धे लोग थे।**" या'नी उन के पास नुबुव्वत की शान देखने वाली आंख न थी, उन के दिल अन्धे थे अगर्चे आंखें खुली थीं जैसा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि उन के दिल अन्धे थे, मा'रिफ़त का नूर उन की क़िस्मत में न था।(2)

وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۶۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और आ़द की त़रफ़ उन की बिरादरी से हूद को भेजा कहा ऐ मेरी क़ौम **अल्लाह** की बन्दगी करो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं तो क्या तुम्हें डर नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और क़ौमे आ़द की त़रफ़ उन के हमक़ौम हूद को भेजा। (हूद ने) फ़रमाया : ऐ मेरी क़ौम ! **अल्लाह** की इ़बादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं। तो क्या तुम डरते नहीं ?

﴿وَاِلٰى عَادٍ﴾ : **और क़ौमे आ़द की त़रफ़** ﴾ क़ौमे आ़द दो हैं : **आ़दे ऊला** येह ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम है और येह यमन में आबाद थे और **आ़दे सानिया**, येह ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम है, इसी को समूद कहते हैं इन दोनों के दरमियान सो बरस का फ़ासिला है। यहां आ़दे ऊला मुराद है।(3)

1 .....بنی اسرائیل:۱۵. 2 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ٦٤، ۲/۱۰۸.
3 .....جمل، الاعراف، تحت الآیۃ: ٦٥، ۳/۵۸، روح البیان، الاعراف، تحت الآیۃ: ٦٥، ۳/۱۸۵.

www.dawateislami.net

ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम का वाक़िआ़

इस आयत और अगली चन्द आयात में जो वाक़िआ़ बयान हुवा उस का ख़ुलासा येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने क़ौमे आ़द की हिदायत के लिये उन के हमक़ौम ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को उन की त़रफ़ भेजा। ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन से फ़रमाया : "ऐ मेरी क़ौम ! तुम **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत करो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं, क्या तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से डर नहीं लगता ?" इस पर क़ौम के काफ़िर सरदार बोले : हम तो तुम्हें बे वुक़ूफ़ समझते और झूटा गुमान करते हैं और तुम्हें रिसालत के दा'वे में सच्चा ही नहीं जानते। कुफ़्फ़ार का ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बारगाह में येह गुस्ताख़ाना कलाम कि "तुम्हें बे वुक़ूफ़ समझते हैं, झूटा गुमान करते हैं" इन्तिहा दरजे की बे अदबी और कमीनगी थी और वोह इस बात के मुस्तह़िक़ थे कि उन्हें सख़्त तरीन जवाब दिया जाता मगर ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने अख़्लाक़ो अदब और शाने ह़िल्म से जो जवाब दिया उस में शाने मुक़ाबला ही न पैदा होने दी और उन की जहालत से चश्म पोशी फ़रमाई चुनान्चे फ़रमाया : ऐ मेरी क़ौम ! बे वुक़ूफ़ी का मेरे साथ कोई तअ़ल्लुक़ नहीं मैं तो रब्बुल आ़लमीन का रसूल हूं। मैं तो तुम्हें अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पैग़ामात पहुंचाता हूं और तुम्हारे लिये क़ाबिले ए'तिमाद ख़ैर ख़्वाह हूं और क्या तुम्हें इस बात पर तअ़ज्जुब है कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से तुम्हीं में से एक मर्द के ज़रीए़ नसीह़त आई ताकि वोह तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से डराए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के येह एह़सान याद करो कि उस ने तुम्हें क़ौमे नूह़ के बा'द उन का जा नशीन बनाया और तुम्हें अ़ज़ीम जिस्मानी क़ुव्वत से नवाज़ा कि क़दकाठ और क़ुव्वत दोनों में दूसरों से मुमताज़ बनाया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के एह़सानात याद करो, उस पर ईमान लाओ और इत़ाअ़तो बन्दगी का रास्ता इख़्तियार करो। ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام चूंकि अपनी क़ौम की बस्ती से अ़लाह़दा एक तन्हाई के मक़ाम में इ़बादत किया करते थे, जब आप के पास वह़ी आती तो क़ौम के पास आ कर सुना देते, उस वक़्त क़ौम येह जवाब देती कि क्या तुम हमारे पास इस लिये आए हो कि हम एक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करें और जिन बुतों की इ़बादत हमारे बाप दादा किया करते थे उन्हें छोड़ दें। अगर तुम सच्चे हो तो वोह अ़ज़ाब ले आओ जिस की तुम हमें वईदें सुनाते हो। ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : बेशक तुम पर तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब और ग़ज़ब लाज़िम हो गया। क़ौमे आ़द पर आने वाले अ़ज़ाब की कैफ़िय्यत का बयान चन्द आयात के बा'द मज़्कूर है और इस के इ़लावा येह वाक़िआ़ सूरए हूद आयत नम्बर 50 ता 60 में भी मज़्कूर है।

www.dawateislami.net

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۶۶﴾ قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۶۷﴾ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿۶۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उस की क़ौम के सरदार बोले बेशक हम तुम्हें बे वुक़ूफ़ समझते हैं और बेशक हम तुम्हें झूटों में गुमान करते हैं। कहा ऐ मेरी क़ौम मुझे बे वुक़ूफ़ी से क्या अ़लाक़ा मैं तो परवर्दगारे आ़लम का रसूल हूं। तुम्हें अपने रब की रिसालतें पहुंचाता हूं और तुम्हारा मो'तमद ख़ैर ख़्वाह हूं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उस की क़ौम के काफ़िर सरदार बोले, बेशक हम तुम्हें बे वुक़ूफ़ समझते हैं और बेशक हम तुम्हें झूटों में से गुमान करते हैं। (हूद ने) फ़रमाया : ऐ मेरी क़ौम ! मेरे साथ बे वुक़ूफ़ी का कोई तअ़ल्लुक़ नहीं। मैं तो रब्बुल आ़लमीन का रसूल हूं। मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुंचाता हूं और मैं तुम्हारे लिये क़ाबिले ए'तिमाद ख़ैर ख़्वाह हूं।

﴿لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ﴾ **: मेरे साथ बे वुक़ूफ़ी का कोई तअ़ल्लुक़ नहीं।** काफ़िरों ने गुस्ताख़ी कर के ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को مَعَاذَاللہ बे वुक़ूफ़ कहा, जिस पर आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बड़े तह़म्मुल से जवाब दिया कि बे वुक़ूफ़ी का मेरे साथ कोई तअ़ल्लुक़ नहीं। और इस की वज्ह बिल्कुल वाज़ेह़ है कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام कामिल अ़क़्ल वाले होते हैं और हमेशा हिदायत पर होते हैं। तमाम जहान की अ़क़्ल नबी की अ़क़्ल के मुक़ाबले में ऐसी है जैसे समुन्दर का एक क़त़रा क्यूं कि नबी तो वह़ी के ज़रीए अपने रब عَزَّوَجَلَّ से इ़ल्म व अ़क़्ल ह़ासिल करता है और इस चीज़ के बराबर कोई दूसरी चीज़ का होना मुह़ाल है।

सूरए आ'राफ़ की आयत नम्बर 67 और 68 से मा'लूम होने वाले मसाइल

इस आयत से दो मस्अले मा'लूम हुए :

(1)..... जाहिल और बे वुक़ूफ़ लोगों की बद तमीज़ी व जहालत पर बुर्दबारी का मुज़ाहरा करना सुन्नते अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام है।

www.dawateislami.net

(2)..... अहले इल्मो कमाल को ज़रूरत के मौक़अ़ पर अपने मन्सबो कमाल का इज़्हार जाइज़ है।

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ؕ وَاذْكُرُوْۤا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْۤا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۶۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और क्या तुम्हें इस का अचम्भा हुवा कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से एक नसीह़त आई तुम में के एक मर्द की मा'रिफ़त कि वोह तुम्हें डराए और याद करो जब उस ने तुम्हें क़ौमे नूह़ का जा नशीन किया और तुम्हारे बदन का फैलाव बढ़ाया तो **अल्लाह** की ने'मतें याद करो कि कहीं तुम्हारा भला हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और क्या तुम्हें इस बात पर तअ़ज्जुब है कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से तुम्हीं में से एक मर्द के ज़रीए़ नसीह़त आई ताकि वोह तुम्हें डराए और याद करो जब उस ने तुम्हें क़ौमे नूह़ के बा'द जा नशीन बनाया और तुम्हारी जसामत में क़ुव्वत और वुस्अ़त ज़ियादा की तो **अल्लाह** की ने'मतें याद करो ताकि तुम फ़लाह़ पाओ।

﴿وَزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصْۜطَةً : और तुम्हारी जसामत में क़ुव्वत और वुस्अ़त ज़ियादा की ।﴾ **अल्लाह** तआ़ला ने क़ौमे आ़द को सल्त़नत और बदनी क़ुव्वत अ़त़ा फ़रमाई थी, चुनान्चे शद्दाद इब्ने आ़द जैसा बड़ा बादशाह इन्हीं में हुवा। येह बहुत लम्बे क़द वाले और बड़े भारी डेलडोल वाले थे।

قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۷۰﴾ قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ؕ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْۤ اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ وَ

www.dawateislami.net

اٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ فَانْتَظِرُوْۤا اِنِّیْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِیْنَ ﴿۷۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बोले क्या तुम हमारे पास इस लिये आए हो कि हम एक **अल्लाह** को पूजें और जो हमारे बाप दादा पूजते थे उन्हें छोड़ दें तो लाओ जिस का हमें वा'दा दे रहे हो अगर सच्चे हो। कहा ज़रूर तुम पर तुम्हारे रब का अ़ज़ाब और ग़ज़ब पड़ गया क्या मुझ से ख़ाली उन नामों में झगड़ रहे हो जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिये **अल्लाह** ने उन की कोई सनद न उतारी तो रास्ता देखो मैं भी तुम्हारे साथ देखता हूं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क़ौम ने कहा : क्या तुम हमारे पास इस लिये आए हो कि हम एक **अल्लाह** की इ़बादत करें और जिन चीज़ों की इ़बादत हमारे बाप दादा किया करते थे उन्हें छोड़ दें। अगर तुम सच्चे हो तो ले आओ वोह (अ़ज़ाब) जिस की तुम हमें वईदें सुनाते हो। फ़रमाया : बेशक तुम पर तुम्हारे रब का अ़ज़ाब और ग़ज़ब लाज़िम हो गया। क्या तुम मुझ से उन नामों के बारे में झगड़ रहे हो जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिया हैं, जिन की कोई दलील **अल्लाह** ने नहीं उतारी तो तुम भी इन्तिज़ार करो और मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूं।

﴿قَدْ وَقَعَ عَلَیْكُمْ﴾ **: ज़रूर तुम पर लाज़िम हो गया।** ﴾ ह़ज़रते हूद عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि तुम पर तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ का ग़ज़ब लाज़िम हो गया और तुम्हारी सरकशी से तुम पर अ़ज़ाब आना वाजिब व लाज़िम हो गया। क्या तुम फ़ुज़ूल नामों या'नी बुतों के बारे में झगड़ते हो जिन्हें तुम्हारे बाप दादा ने घड़ लिया और उन्हें पूजने लगे और मा'बूद मानने लगे ह़ालां कि उन की कुछ ह़क़ीक़त ही नहीं है और वोह उलूहिय्यत के मा'ना से क़त़्अ़न ख़ाली व आ़री हैं।

فَاَنْجَیْنٰهُ وَالَّذِیْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِیْنَ ﴿۷۲﴾ ع ۹ ۱۲

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो हम ने उसे और उस के साथ वालों को अपनी एक बड़ी रह़मत फ़रमा कर नजात दी और जो हमारी आयतें झुटलाते थे उन की जड़ काट दी और वोह ईमान वाले न थे।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो हम ने उसे और उस के साथियों को अपनी रह़मत के साथ नजात दी और जो हमारी आयतें झुटलाते थे उन की जड़ काट दी और वोह ईमान वाले न थे।

﴿فَاَنْجَیْنٰهُ **: तो हम ने उसे नजात दी ।**﴾ इस आयत में क़ौमे आ़द पर नाज़िल होने वाले अ़ज़ाब का ज़िक्र है।

ह़ज़रते हूद عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम पर अ़ज़ाब नाज़िल होने का वाक़िआ़

इस का मुख़्तसर वाक़िआ़ येह है कि क़ौमे आ़द अह़क़ाफ़ में रहती थी, अह़क़ाफ़ उ़मान और ह़ज़्रमौत के दरमियान अ़लाक़ए यमन में एक रेगिस्तान है। क़ौमे आ़द ने ज़मीन को फ़िस्क़ से भर दिया था। येह लोग बुत परस्त थे इन के एक बुत का नाम "सुदाअ" और एक का "सुमूद" और एक का "हबाअ" था। **अल्लाह** तआ़ला ने इन में ह़ज़रते हूद عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मब्ऊ़स फ़रमाया आप ने उन्हें तौह़ीद का ह़ुक्म दिया, शिर्क व बुत परस्ती और ज़ुल्मो जफ़ाकारी की मुमानअ़त की, लेकिन वोह लोग न माने और आप की तक्ज़ीब करने लगे और कहने लगे हम से ज़ियादा ज़ोर आवर कौन है ? उन में से सिर्फ़ चन्द आदमी ह़ज़रते हूद عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान लाए जो बहुत थोड़े थे और वोह भी मजबूरन अपना ईमान छुपाए रखते थे। उन मोमिनीन में से एक शख़्स का नाम मरसद बिन सा'द था, वोह अपना ईमान मख़्फ़ी रखते थे। जब क़ौम ने सरकशी की और अपने नबी ह़ज़रते हूद عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तक्ज़ीब की और ज़मीन में फ़साद किया और सितम गारियों में ज़ियादती की और बड़ी बड़ी मज़बूत़ इमारतें बनाईं तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन पर बारिश रोक दी, तीन साल बारिश न हुई अब वोह बहुत मुसीबत में मुब्तला हुए और उस ज़माने में दस्तूर येह था कि जब कोई बला या मुसीबत नाज़िल होती थी तो लोग बैतुल ह़राम में ह़ाज़िर हो कर **अल्लाह** तआ़ला से उस मुसीबत को दूर करने की दुआ़ करते थे, इसी लिये उन लोगों ने एक वफ़्द बैतुल्लाह को रवाना किया उस वफ़्द में तीन आदमी थे जिन में मरसद बिन सा'द भी थे येह वोही साह़िब हैं जो ह़ज़रते हूद عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान लाए थे और अपना ईमान मख़्फ़ी रखते थे। उस ज़माने में मक्कए मुकर्रमा में अ़मालीक़ की सुकूनत थी और उन लोगों का सरदार मुआ़विया बिन बक्र था, उस शख़्स का नन्हियाल क़ौमे आ़द में था, उसी अ़लाक़े से येह वफ़्द मक्कए मुकर्रमा के ह़वाली में मुआ़विया बिन बक्र के यहां मुक़ीम हुवा। उस ने उन लोगों की बहुत इ़ज़्ज़त की और निहायत ख़ातिर मदारात की, येह लोग वहां शराब पीते और बांदियों का नाच देखते थे। इस त़रह़ उन्हों ने ऐ़शो नशात़ में एक महीना बसर किया। मुआ़विया को ख़याल आया कि येह लोग तो राह़त में पड़ गए और क़ौम

www.dawateislami.net

की मुसीबत को भूल गए जो वहां गिरिफ़्तारे बला है मगर मुआ़विया बिन बक्र को येह ख़याल भी था कि अगर वोह उन लोगों से कुछ कहे तो शायद वोह ख़याल करें कि अब इस को मेज़बानी गिरां गुज़रने लगी है इस लिये उस ने गाने वाली बांदी को ऐसे अश्आ़र दिये जिन में क़ौमे आ़द की ह़ाजत का तज़्किरा था जब बांदी ने वोह नज़्म गाई तो उन लोगों को याद आया कि हम उस क़ौम की मुसीबत की फ़रियाद करने के लिये मक्कए मुकर्रमा भेजे गए हैं। अब उन्हें ख़याल हुवा कि ह़रम शरीफ़ में दाख़िल हो कर क़ौम के लिये पानी बरसने की दुआ़ करें, उस वक़्त मरसद बिन सा'द ने कहा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम, तुम्हारी दुआ़ से पानी न बरसेगा, अलबत्ता अगर तुम अपने नबी की इत़ाअ़त करो और **अल्लाह** तआ़ला से तौबा करो तो बारिश होगी, उस वक़्त मरसद ने अपने इस्लाम का इज़्हार कर दिया। उन लोगों ने मरसद को छोड़ दिया और ख़ुद मक्कए मुकर्रमा जा कर दुआ़ की **अल्लाह** तआ़ला ने तीन क़िस्म के बादल भेजे, एक सफ़ेद, एक सुर्ख़ और एक सियाह। उस के साथ आस्मान से निदा हुई कि ऐ क़ील ! अपने लिये और अपनी क़ौम के लिये इन में से एक बादल इख़्तियार कर, उस ने इस ख़याल से सियाह बादल को इख़्तियार किया कि इस से बहुत पानी बरसेगा, चुनान्चे वोह बादल क़ौमे आ़द की त़रफ़ चला और वोह लोग इस को देख कर बहुत ख़ुश हुए मगर उस से एक हवा चली जो इस शिद्दत की थी कि ऊंटों और आदमियों को उड़ा उड़ा कर कहीं से कहीं ले जाती थी। येह देख कर वोह लोग घरों में दाख़िल हुए और अपने दरवाज़े बन्द कर लिये मगर हवा की तेज़ी से बच न सके उस ने दरवाज़े भी उखेड़ दिये और उन लोगों को हलाक भी कर दिया और क़ुदरते इलाही से सियाह परिन्दे नुमूदार हुए जिन्हों ने उन की लाशों को उठा कर समुन्दर में फेंक दिया। ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मोमिनीन को ले कर क़ौम से जुदा हो गए थे इस लिये वोह सलामत रहे, क़ौम के हलाक होने के बा'द वोह ईमानदारों को साथ ले कर मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ लाए और आख़िर उ़म्र शरीफ़ तक वहीं **अल्लाह** तआ़ला की इबादत करते रहे।

وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ
غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا
تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۷۳﴾
وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ عَادٍ وَّبَوَّاَكُمْ فِي الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ

وقف لازم

www.dawateislami.net

مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا
تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿۷۴﴾ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ
قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا
مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿۷۵﴾ قَالَ الَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِيْٓ اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۷۶﴾ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ
اَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۷۷﴾
فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿۷۸﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ
وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ
وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿۷۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और समूद की त़रफ़ उन की बिरादरी से सालेह़ को भेजा कहा ऐ मेरी क़ौम **अल्लाह** को पूजो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से रोशन दलील आई येह **अल्लाह** का नाक़ा है तुम्हारे लिये निशानी तो इसे छोड़ दो कि **अल्लाह** की ज़मीन में खाए और इसे बुराई से हाथ न लगाओ कि तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब आ लेगा। और याद करो जब तुम को आ़द का जा नशीन किया और मुल्क में जगह दी कि नर्म ज़मीन में महल बनाते हो और पहाड़ों में मकान तराशते हो तो **अल्लाह** की ने'मतें याद करो और ज़मीन में फ़साद मचाते न फिरो। उस की क़ौम के तकब्बुर वाले कमज़ोर मुसल्मानों से बोले क्या तुम जानते हो कि सालेह़ अपने रब के रसूल हैं बोले वोह जो कुछ ले कर भेजे गए हम उस पर ईमान रखते हैं। मुतकब्बिर बोले जिस पर तुम ईमान लाए हमें उस से इन्कार है। पस नाक़ा की कूचें काट दीं और

www.dawateislami.net

अपने रब के हुक्म से सरकशी की और बोले ऐ सालेह़ हम पर ले आओ जिस का तुम वा'दा दे रहे हो अगर तुम रसूल हो। तो उन्हें ज़ल्ज़ले ने आ लिया तो सुब्ह़ को अपने घरों में औंधे रह गए। तो सालेह़ ने उन से मुंह फेरा और कहा ऐ मेरी क़ौम बेशक मैं ने तुम्हें अपने रब की रिसालत पहुंचा दी और तुम्हारा भला चाहा मगर तुम ख़ैर ख़्वाहों के ग़रज़ी ही नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और क़ौमे समूद की त़रफ़ उन के हमक़ौम सालेह़ को भेजा। सालेह़ ने फ़रमाया : ऐ मेरी क़ौम ! **अल्लाह** की इबादत करो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं। बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से रोशन निशानी आ गई। तुम्हारे लिये निशानी के त़ौर पर **अल्लाह** की येह ऊंटनी है। तो तुम इसे छोड़े रखो ताकि **अल्लाह** की ज़मीन में खाए और इसे बुराई के साथ हाथ न लगाओ वरना तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब पकड़ लेगा। और याद करो जब उस ने तुम्हें क़ौमे आ़द के बा'द जा नशीन बनाया और उस ने तुम्हें ज़मीन में ठिकाना दिया, तुम नर्म ज़मीन में मह़ल्लात बनाते थे और पहाड़ों को तराश कर मकानात बनाते थे तो **अल्लाह** की ने'मतें याद करो और ज़मीन में फ़साद मचाते न फिरो। उस की क़ौम के मुतकब्बिर सरदार कमज़ोर मुसल्मानों से कहने लगे : क्या तुम जानते हो कि सालेह़ अपने रब का रसूल है ? उन्हों ने कहा : बेशक हम उस पर ईमान रखते हैं जिस के साथ उन्हें भेजा गया है। मुतकब्बिर बोले : बेशक हम उस का इन्कार करने वाले हैं जिस पर तुम ईमान लाए हो। पस (काफ़िरों ने) ऊंटनी की टांगों की रगों को काट दिया और अपने रब के हुक्म से सरकशी की और कहने लगे : ऐ सालेह़ ! अगर तुम रसूल हो तो हम पर वोह अ़ज़ाब ले आओ जिस की तुम हमें वईदें सुनाते रहते हो। तो उन्हें ज़ल्ज़ले ने पकड़ लिया तो वोह सुब्ह़ को अपने घरों में औंधे पड़े रह गए। तो सालेह़ ने उन से मुंह फेर लिया और फ़रमाया : ऐ मेरी क़ौम ! बेशक मैं ने तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुंचा दिया और मैं ने तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही की लेकिन तुम ख़ैर ख़्वाहों को पसन्द नहीं करते।

﴿وَ اِلٰى ثَمُوْدَ﴾ **: और क़ौमे समूद की त़रफ़।** ﴾ समूद भी अ़रब का ही एक क़बीला था। येह लोग समूद बिन राम बिन साम बिन नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद में थे और ह़िजाज़ व शाम के दरमियान सर ज़मीने ह़िज्र में रहते थे। ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वालिद का नाम उ़बैद बिन आसिफ़ बिन मासिह़ बिन उ़बैद बिन ह़ाज़र इब्ने समूद है। क़ौमे समूद क़ौमे आ़द के बा'द हुई और ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द हैं।[1]

1 .....روح البيان، الاعراف، تحت الآية: ٧٣، ٣/١٨٩-١٩٠.

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम का वाक़िआ़

यहां से आगे चन्द आयात में जो वाक़िआ़ बयान हुवा उस का ख़ुलासा येह है कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को उन की क़ौम समूद की त़रफ़ भेजा तो उन्हों ने अपनी क़ौम से फ़रमाया : ऐ मेरी क़ौम ! तुम **अल्लाह** तआ़ला को एक मानो, उस के साथ किसी को भी शरीक न ठहराओ और सिर्फ़ उसी की इ़बादत करो क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई इस क़ाबिल ही नहीं है कि वोह इ़बादत का मुस्तह़िक़ हो, **अल्लाह** तआ़ला ही तुम्हारा मा'बूद है। ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने क़ौमे समूद को **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतें याद दिला कर भी समझाया कि : ऐ क़ौमे समूद ! तुम उस वक़्त को याद करो, जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें क़ौमे आ़द के बा'द उन का जा नशीन बनाया, क़ौमे आ़द को उन के गुनाहों के सबब हलाक कर के तुम्हें उन की जगह बसाया, **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हें ज़मीन में रहने को जगह अ़त़ा की, तुम्हारा ह़ाल येह है कि तुम गरमी के मौसिम में आराम करने के लिये हमवार ज़मीन में मह़ल्लात बनाते हो और सर्दी के मौसिम में सर्दी से बचने के लिये पहाड़ों को तराश कर मकानात बनाते हो। तुम **अल्लाह** तआ़ला की इन ने'मतों को याद करो और ज़मीन में कुफ़्र और गुनाह करने से बचो कि गुनाह, सरकशी और कुफ़्र की वज्ह से ज़मीन में फ़साद फैलता है और रब्बे क़ह्हार عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब आते हैं। क़ौमे समूद के सरदार जुन्दअ़ बिन अ़म्र ने ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अ़र्ज़ की : "अगर आप सच्चे नबी हैं तो पहाड़ के उस पथ्थर से फुलां फुलां सिफ़ात की ऊंटनी ज़ाहिर करें, अगर हम ने येह मो'जिज़ा देख लिया तो आप पर ईमान ले आएंगे।" ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ईमान का वा'दा ले कर रब عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की। सब के सामने वोह पथ्थर फटा और उसी शक्लो सूरत की पूरी जवान ऊंटनी नुमूदार हुई और पैदा होते ही अपने बराबर बच्चा जना। येह मो'जिज़ा देख कर जुन्दअ़ तो अपने ख़ास लोगों के साथ ईमान ले आया जब कि बाक़ी लोग अपने वा'दे से फिर गए और कुफ़्र पर क़ाइम रहे। ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम के मुतकब्बिर सरदार कमज़ोर मुसल्मानों से कहने लगे : क्या तुम येह अ़क़ीदा रखते हो कि ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने रब के रसूल हैं ? उन्हों ने कहा : बेशक हमारा येही अ़क़ीदा है, हम उन्हें और उन की ता'लीमात को ह़क़ समझते हैं। सरदारों ने कहा : जिस पर तुम ईमान रखते हो, हम तो उस का इन्कार करते हैं। ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इस मो'जिज़े वाली ऊंटनी के बारे में फ़रमाया था कि "तुम इस ऊंटनी को तंग न करना और इसे इस के ह़ाल पर छोड़ दो ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़मीन में खाए और इसे बुराई की निय्यत से हाथ न लगाना, न मारना, न हंकाना और न क़त्ल करना। अगर तुम ने ऐसा किया तो नतीजा येह होगा कि तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब पकड़ लेगा।" क़ौमे समूद में एक

www.dawateislami.net

सदूक़ नामी औरत थी, जो बड़ी ह़सीनो जमील और मालदार थी, उस की लड़कियां भी बहुत ख़ूब सूरत थीं। चूंकि ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ऊंटनी से उस के जानवरों को दुश्वारी होती थी इस लिये उस ने मस्दअ़ इब्ने दह्र और क़ैदार को बुला कर कहा कि "अगर तू ऊंटनी को ज़ब्ह़ कर दे तो मेरी जिस लड़की से चाहे निकाह़ कर लेना।" येह दोनों ऊंटनी की तलाश में निकले और एक जगह पा कर दोनों ने उसे ज़ब्ह़ कर दिया मगर क़ैदार ने ज़ब्ह़ किया और मस्दअ़ ने ज़ब्ह़ पर मदद दी। और ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से सरकशी करते हुए कहने लगे : ऐ सालेह़! अगर तुम रसूल हो तो हम पर वोह अ़ज़ाब ले आओ जिस की तुम हमें वईदें सुनाते रहते हो। उन्हों ने बुध के दिन ऊंटनी की कूचें काटीं थीं, ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन से फ़रमाया कि तुम तीन दिन के बा'द हलाक हो जाओगे। पहले दिन तुम्हारे चेहरे ज़र्द, दूसरे दिन सुर्ख़, तीसरे दिन सियाह हो जाएंगे। चुनान्चे ऐसा ही हुवा और वोह लोग इतवार के दिन दोपहर के क़रीब अव्वलन होलनाक आवाज़ में गिरिफ़्तार हुए जिस से उन के जिगर फट गए और हलाक हो गए। फिर सख़्त ज़ल्ज़ला क़ाइम किया गया। उन की हलाकत से पहले अव्वलन ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मोमिनों के साथ उस बस्ती से निकल कर जंगल में चले गए। फिर उन की हलाकत के बा'द वहां से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा रवाना हुए। रवानगी के वक़्त उन की लाशों पर गुज़रे तो उन की लाशों से ख़ित़ाब कर के बोले : ऐ मेरी क़ौम! बेशक मैं ने तुम्हें अपने रब عَزَّوَجَلَّ का पैग़ाम पहुंचा दिया और मैं ने तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही की लेकिन तुम ख़ैर ख़्वाहों को पसन्द नहीं करते।

नोट : सूरए हूद आयत नम्बर 61 ता 68 में भी येह वाक़िआ़ मज़्कूर है।

﴿هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ﴾ **: अल्लाह की येह ऊंटनी है।** इस ऊंटनी की पैदाइश से ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के कई मो'जिज़ात का ज़ुहूर हुवा, एक येह कि वोह ऊंटनी न किसी पीठ में रही, न किसी पेट में, न किसी नर से पैदा हुई न मादा से, न ह़म्ल में रही न उस की ख़िल्क़त तदरीजन कमाल को पहुंची बल्कि त़रीक़ए आ़दिया के ख़िलाफ़ वोह पहाड़ के एक पत्थर से दफ़्अ़तन पैदा हुई, इस की येह पैदाइश मो'जिज़ा है। **दूसरा** येह कि एक दिन वोह पानी पीती और दूसरे दिन पूरा क़बीला समूद, येह भी मो'जिज़ा है कि एक ऊंटनी एक क़बीले के बराबर पी जाए, **तीसरा** येह कि उस के पीने के दिन उस का दूध दोहा जाता था और वोह इतना होता था कि तमाम क़बीले को काफ़ी हो और पानी के क़ाइम मक़ाम हो जाए **चौथा** येह कि तमाम वुह़ूशो ह़ैवानात उस की बारी के रोज़ पानी से पीने से बाज़ रहते थे। इतने मो'जिज़ात ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिद्क़े नुबुव्वत की ज़बर दस्त दलीलें थीं।

﴿تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا﴾ **: तुम नर्म ज़मीन में मह़ल्लात बनाते थे।** क़ौमे समूद ने गर्मियों के लिये बस्तियों में मह़ल बनाए हुए थे और सर्दी के मौसिम के लिये पहाड़ों में गर्म मकानात ता'मीर किये थे जैसा कि आज कल भी दौलत मन्द लोग करते हैं ठन्डे और गर्म अ़लाक़ों में जुदा जुदा मकानात बनाते हैं।

www.dawateislami.net

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۸۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और लूत़ को भेजा जब उस ने अपनी क़ौम से कहा क्या वोह बे ह़याई करते हो जो तुम से पहले जहान में किसी ने न की।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और (हम ने) लूत़ को भेजा, जब उस ने अपनी क़ौम से कहा : क्या तुम वोह बे ह़याई करते हो जो तुम से पहले जहान में किसी ने नहीं की।

﴿وَلُوْطًا﴾ **: और लूत़ को भेजा।** ह़ज़रते लूत़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के भतीजे हैं, जब आप के चचा ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने शाम की त़रफ़ हिजरत की तो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने सर ज़मीने फ़िलिस्त़ीन में क़ियाम फ़रमाया और ह़ज़रते लूत़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام उर्दुन में उतरे। **अल्लाह** तआ़ला ने आप को अहले सुदूम की त़रफ़ मब्ऊ़स किया, आप इन लोगों को दीने ह़क़ की दा'वत देते थे और फ़े'ले बद से रोकते थे। क़ौमे लूत़ की सब से बड़ी ख़बासत लिवात़त या'नी लड़कों से बद फ़े'ली करना था इसी पर ह़ज़रते लूत़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि क्या तुम ऐसी बे ह़याई का इरतिकाब करते हो जो सारे जहान में तुम से पहले किसी ने नहीं की, तुम औ़रतों को छोड़ कर शह्वत पूरी करने के लिये मर्दों के पास जाते हो, यक़ीनन तुम ह़द से गुज़र चुके हो।

लिवात़त की मज़म्मत

इस आयत से मा'लूम हुवा कि इग़्लाम बाज़ी ह़ज़रते लूत عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की क़ौम की ईजाद है इसी लिये इसे "लिवात़त" कहते हैं। येह भी मा'लूम हुवा कि लड़कों से बद फ़े'ली ह़रामे क़त़्ई है और इस का मुन्किर काफ़िर है। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अह़ादीस और बुज़ुर्गाने दीन के आसार में लिवात़त की शदीद मज़म्मत बयान की गई है, चुनान्चे

(1)..... ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि : "मुझे तुम पर क़ौमे लूत़ वाले अ़मल का सब से

www.dawateislami.net

ज़ियादा ख़ौफ़ है।''[1]

(2)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन बार इर्शाद फ़रमाया : ''لَعَنَ اللّٰهُ مَنْ عَمِلَ عَمَلَ قَوْمِ لُوْطٍ'' उस शख़्स पर **अल्लाह** तआ़ला की ला'नत हो जो क़ौमे लूत़ वाला अ़मल करे।[2]

(3)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस शख़्स को क़ौमे लूत़ वाला अ़मल करते पाओ तो करने वाले और करवाने वाले दोनों को क़त्ल कर दो।''[3]

(4)..... ह़ज़रते ख़ुज़ैमा बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** तआ़ला ह़क़ बात इर्शाद फ़रमाने से ह़या नहीं फ़रमाता, तुम औ़रतों के पाख़ाने के मक़ाम में वत़ी न करो।''[4]

(5)..... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसे शख़्स पर नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाता जो अपनी औ़रत के पीछे के मक़ाम में आए या'नी वत़ी करे।''[5]

(6)..... ह़ज़रते अबू सईद सा'लूक़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''अ़न्क़रीब इस उम्मत में ऐसी जमाअ़त पैदा होगी जिन को लूत़ी कहा जाएगा और उन की तीन क़िस्में हैं : **एक** वोह जो मह़ज़ देखते हैं, **दूसरे** वोह जो हाथ मिलाते हैं और **तीसरे** वोह जो इस ख़बीस अ़मल का इरतिकाब करते हैं।''[6]

(7)..... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''जो शख़्स ख़ुद को लिवात़त के लिये पेश करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे औ़रतों की शह्वत में मुब्तला कर देगा और उसे क़ियामत के दिन तक क़ब्र में मरदूद शैत़ान की सूरत में रखेगा।''[7]

(8)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि ''बद फ़े'ली का मुरतकिब

1 .....ابن ماجه، كتاب الحدود، باب من عمل عمل قوم لوط، ٣/٢٣٠، الحديث: ٢٥٦٣.
2 .....سنن الكبرى للنسائي، ابواب التعزيرات والشهود، من عمل عمل قوم لوط، ٤/٣٢٢، الحديث: ٧٣٣٧.
3 .....ابو داود، كتاب الحدود، باب فيمن عمل عمل قوم لوط، ٤/٢١١، الحديث: ٤٤٦٢.
4 .....ابن ماجه، كتاب النكاح، باب النهى عن اتيان النساء فى ادبارهن، ٢/٤٥٠، الحديث: ١٩٢٤.
5 .....ابن ماجه، كتاب النكاح، باب النهى عن اتيان النساء فى ادبارهن، ٢/٤٤٩، الحديث: ١٩٢٣.
6 .....كتابُ الكبائر، الكبيرة الحادية عشرة، اللواط، ص٦٣-٦٤.
7 .....كتابُ الكبائر، الكبيرة الحادية عشرة، فصل فى عقوبة من امكن من نفسه طائعاً، ص٦٦.

www.dawateislami.net

अगर तौबा किये बिग़ैर मर जाए तो क़ब्र में ख़िन्ज़ीर की शक्ल में बदल दिया जाता है।''[1]

(9)..... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन ज़कवान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं जिस का ख़ुलासा है : ''ख़ूब सूरत लड़कों के साथ न बैठा करो क्यूं कि उन की सूरतें कुंवारी औ़रतों की सूरतों जैसी होती हैं नीज़ वोह औ़रतों से ज़ियादा फ़ितने में डालने वाले हैं।''[2]

(10)..... एक ताबेई बुज़ुर्ग رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''मैं नौ जवान सालिक (या'नी आ़बिदो ज़ाहिद नौ जवान) के साथ बे रीश लड़के के बैठने को सात दरिन्दों से ज़ियादा ख़त़रनाक समझता हूं।''[3]

(11)..... ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (जिन की मा'रिफ़त, इ़ल्म, ज़ोहदो तक़्वा और नेकियों में पेश क़दमी मश्हूरो मा'रूफ़ है) एक ह़म्माम में दाख़िल हुए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास एक ख़ूब सूरत लड़का आ गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''इसे मुझ से दूर करो ! इसे मुझ से दूर करो ! क्यूं कि मैं हर औ़रत के साथ एक शैत़ान देखता हूं जब कि हर लड़के के साथ दस (10) से ज़ियादा शैत़ान देखता हूं।''[4]

(12)..... ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा, उस के साथ एक ख़ूब सूरत बच्चा भी था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : ''तुम्हारे साथ येह कौन है ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''येह मेरा भान्जा है।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''आयिन्दा इसे ले कर मेरे पास न आना और इसे साथ ले कर रास्ते में न चला कर ताकि इसे और तुम्हें न जानने वाले बद गुमानी न करें।''[5]

लिवात़त की अ़क़्ली और त़िब्बी ख़बासतें

लिवात़त का अ़मल अ़क़्ली और त़िब्बी दोनों ए'तिबार से भी इन्तिहाई ख़बीस है, अ़क़्ली ए'तिबार से इस की एक ख़बासत येह है कि येह अ़मल फ़ित़रत के ख़िलाफ़ है क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने फ़ित़री ए'तिबार से मर्द को अ़मल करने वाला और औ़रत को ख़ास मक़ाम में अ़मल क़बूल करने वाला बनाया है और लिवात़त इन्सान तो इन्सान जानवरों की भी फ़ित़रत के ख़िलाफ़ है कि जानवर भी शह्वत पूरी करने के लिये नर की त़रफ़ या मादा के ख़ास मक़ाम के इ़लावा की त़रफ़ नहीं बढ़ता, इस लिये लिवात़त करने वाला अपनी फ़ित़रत के ख़िलाफ़ चल रहा है और फ़ित़रत के ख़िलाफ़ चलना अ़क़्ली ए'तिबार से इन्तिहाई क़बीह़ है।

दूसरी ख़बासत येह है कि इस की वज्ह से नस्ले इन्सानी में इज़ाफ़ा रुक जाता है क्यूं

1 .....کتابُ الکبائر، الکبیرۃ الحادیۃ عشرۃ، اللواط، ص٦٣. 5 .....کتاب الکبائر، الکبیرۃ الحادیۃ عشرۃ، اللواط، ص٦٥.
2 .....شعب الایمان، السابع والثلاثون من شعب الایمان... الخ، ٤/٣٥٨، روایت نمبر: ٥٣٩٧.
3 .....شعب الایمان، السابع والثلاثون من شعب الایمان... الخ، ٤/٣٥٨، روایت نمبر: ٥٣٩٦.
4 .....شعب الایمان، السابع والثلاثون من شعب الایمان... الخ، ٤/٣٥٩، روایت نمبر: ٥٤٠٤.

www.dawateislami.net

कि **अल्लाह** तआ़ला ने नस्ले इन्सानी में इज़ाफ़े का येह त़रीक़ा मुक़र्रर फ़रमाया है कि मर्द और औ़रत दोनों में शह्वत रखी और इस शह्वत की तस्कीन के लिये जाइज़ औ़रत को ज़रीआ़ बनाया, जब येह अपनी शह्वत पूरी करते हैं तो इस के नतीजे में औ़रत ह़ामिला हो जाती और कुछ अ़र्से बा'द उस के हां एक इन्सान की पैदाइश होती है और इस त़रह़ इन्सानों की ता'दाद में इज़ाफ़ा होता रहता है। अब अगर शह्वत को इस के अस्ल ज़रीए़ की बजाए किसी और ज़रीए़ से तस्कीन दी जाए तो इस का नतीजा येह होगा कि नस्ले इन्सानी में इज़ाफ़ा रुक जाएगा और इस सूरत में इन्तिहाई संगीन मसाइल का सामना करना पड़ेगा, जैसे वोह ममालिक जिन में लिवात़त के अ़मल को रवाज दिया गया है आज उन का ह़ाल येह हो चुका है कि वोह दूसरे ममालिक के लोगों को अपने हां बुलवा कर और उन्हें आसाइशें दे कर अपने मुल्क के लोगों की ता'दाद बढ़ाने पर मजबूर हैं।

तीसरी ख़बासत येह है कि इस अ़मल की वज्ह से इन्सानिय्यत ख़त्म हो जाती है क्यूं कि मर्द का औ़रत से अपनी शह्वत को पूरा करना जानवरों के शह्वानी अ़मल से मुशाबहत रखता है लेकिन मर्द व औ़रत के इस अ़मल को सिर्फ़ इस लिये अच्छा क़रार दिया गया है कि वोह औलाद के ह़ुसूल का सबब है और जब किसी ऐसे त़रीक़े से शह्वत को पूरा किया जाए जिस में औलाद ह़ासिल होना मुम्किन न हो तो येह इन्सानिय्यत न रही बल्कि निरी ह़ैवानिय्यत बन गई और किसी का मर्तबए इन्सानी से गिर कर ह़ैवानों में शामिल होना अ़क़्ली ए'तिबार से इन्तिहाई क़बीह़ है।

चौथी ख़बासत येह है कि लिवात़त का अ़मल ज़िल्लतो रुस्वाई और आपस में अ़दावत और नफ़रत पैदा होने का एक सबब है जब कि शौहर का अपनी बीवी के साथ जिमाअ़ करना इ़ज़्ज़त का ज़रीआ़ और इन में उल्फ़तो मह़ब्बत बढ़ने का सबब है, जैसा कि **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَمِنْ اٰیٰتِهٖۤ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْۤا اِلَیْهَا وَجَعَلَ بَیْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّ رَحْمَةً (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उस की निशानियों से है कि उस ने तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जिन्स से जोड़े बनाए ताकि तुम उन की त़रफ़ आराम पाओ और तुम्हारे दरमियान मह़ब्बत और रह़मत रखी।

और अ़क़्ले सलीम रखने वाले के नज़्दीक वोह अ़मल ज़रूर ख़बीस है जो ज़िल्लतो रुस्वाई और नफ़रतो अ़दावत पैदा होने का सबब बने।

ति़ब्बी त़ौर पर इस की ख़बासत के लिये येही काफ़ी है कि इन्सान की क़ुव्वते मुदाफ़अ़त ख़त्म कर के उसे इन्तिहाई कर्ब की ज़िन्दगी गुज़ारने पर मजबूर कर देने वाला और

(1) ..... روم: ٢١.

www.dawateislami.net

अभी तक ला इलाज मरज़ फैलने का बहुत बड़ा सबब लिवात़त है और जिन ममालिक में लिवात़त को क़ानूनी शक्ल दे कर आ़म करने की कोशिश की गई है उन में दीगर ममालिक के मुक़ाबले में एड्ज़ के मरज़ में मुब्तला अफ़राद की ता'दाद भी ज़ियादा है।

और इस की दूसरी ति़ब्बी ख़बासत येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने औ़रत के रेह़्म में मनी को जज़्ब करने की ज़बर दस्त क़ुव्वत रखी है और जब मर्द अपनी बीवी के साथ जिमाअ़ करता है तो उस के जिस्म का जो ह़िस्सा औ़रत के जिस्म में जाता है तो रेह़्म उस से मनी के तमाम क़त़रात जज़्ब कर लेता है जब कि औ़रत और मर्द के पिछले मक़ाम में मनी जज़्ब करने की सलाह़िय्यत नहीं रखी गई और जब मर्द लिवात़त का अ़मल करता है तो इस के बा'द लिवात़त के अ़मल के लिये इस्ति'माल किये गए जिस्म के ह़िस्से में मनी के कुछ क़त़रात रह जाते हैं और बा'ज़ अवक़ात उन में तअ़फ़्फ़ुन पैदा हो जाता है और जिस्म के उस ह़िस्से में सोज़ाक वग़ैरा मोहलिक क़िस्म के अमराज़ पैदा हो जाते हैं और उस शख़्स का जीना दुश्वार हो जाता है।

नोट : ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम का तफ़्सीली वाक़िआ़ सूरए ह़िज्र आयत 51 ता 77 में मज़्कूर है।

اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿۸۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम तो मर्दों के पास शह्वत से जाते हो औ़रतें छोड़ कर बल्कि तुम लोग ह़द से गुज़र गए।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : बेशक तुम औ़रतों को छोड़ कर मर्दों के पास शह्वत से जाते हो बल्कि तुम लोग ह़द से गुज़रे हुए हो।

﴿اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً﴾ **: बेशक तुम मर्दों के पास शह्वत से जाते हो।** ﴾ या'नी उन के साथ बद फ़े'ली करते हो और वोह औ़रतें जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे लिये ह़लाल किया है उन्हें छोड़ते हो। इन्सान को शह्वत इस लिये दी गई कि नस्ले इन्सानी बाक़ी रहे और दुन्या की आबादी हो और औ़रतों को शह्वत का मह़ल और नस्ल चलाने का ज़रीआ़ बनाया कि इन से मा'रूफ़ त़रीक़े के मुत़ाबिक़ और जैसे शरीअ़त ने इजाज़त दी उस त़रह़ औलाद ह़ासिल की जाए, जब आदमियों ने औ़रतों को छोड़ कर इन का काम मर्दों से लेना चाहा तो वोह ह़द से गुज़र गए और उन्हों ने इस क़ुव्वत के मक़्सदे सह़ीह़ को फ़ौत कर दिया क्यूं कि मर्द को न ह़म्ल होता है और न वोह बच्चा जनता है तो उस के साथ मश्ग़ूल होना सिवाए शैत़ानिय्यत के और क्या है। उ़लमाए तारीख़ का बयान है कि क़ौमे लूत़ की बस्तियां निहायत सर सब्ज़ो शादाब

www.dawateislami.net

थीं और वहां ग़ल्ले और फल ब कसरत पैदा होते थे, ज़मीन का दूसरा ख़ित्ता उस की मिस्ल न था। इस लिये जा बजा से लोग यहां आते थे और उन्हें परेशान करते थे, ऐसे वक़्त में इब्लीसे लईन एक बूढ़े की सूरत में नुमूदार हुवा और उन से कहने लगा कि अगर तुम मेहमानों की इस कसरत से नजात चाहते हो तो जब वोह लोग आएं तो उन के साथ बद फ़े'ली करो इस त़रह़ येह फ़े'ले बद उन्हों ने शैत़ान से सीखा और उन में राइज हुवा।

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿۸۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उस की क़ौम का कुछ जवाब न था मगर येही कहना कि इन को अपनी बस्ती से निकाल दो येह लोग तो पाकीज़गी चाहते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन की क़ौम का इस के सिवा कोई जवाब न था कि उन्हों ने कहा : इन को अपनी बस्ती से निकाल दो। येह लोग बड़े पाक बनते फिरते हैं।

﴿وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖ﴾ **: और उस की क़ौम का कुछ जवाब न था।** ﴾ ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के समझाने पर उन की क़ौम के लोग एक दूसरे से कहने लगे कि ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की पैरवी करने वालों को अपनी बस्ती से निकाल दो येह लोग तो बड़ी पाकीज़गी चाहते हैं। या'नी गोया पाकीज़गी उन के लिये बाइ़से इस्तिह़्ज़ा चीज़ बन गई और उस क़ौम का ज़ौक़ इतना ख़राब हो गया था कि उन्हों ने इस सिफ़ते मद्ह़ को ऐब क़रार दिया।

अच्छे अ़मल को बुरा और बुरे अ़मल को अच्छा समझने की औंधी सोच

इस से मा'लूम हुवा कि जब किसी के दिन बुरे आते हैं तो उसे औंधी सूझती है कि उसे अच्छी चीज़ें बुरी लगना और बुरी चीज़ें अच्छी नज़र आना शुरूअ़ हो जाती हैं। आज कल के ह़ालात देखे जाएं तो हमारे मुआ़शरे में भी लोगों की एक ता'दाद ऐसी है जिन में येह वबा आ़म नज़र आती है और येह लोग जब किसी को दीन के अह़काम पर अ़मल करता देखते हैं तो उन की त़बीअ़त ख़राब हो जाती है और उस ख़राबी के बाइ़स दाढ़ी रखने को बुरा और न रखने को अच्छा समझते हैं। दाढ़ी वाले को ह़क़ारत की नज़र से और दाढ़ी मुन्डे को पसन्द की नज़र से देखते हैं। दाढ़ी वाले के साथ रिश्ता करने को बाइ़से आ़र और बिग़ैर दाढ़ी वाले से रिश्ता करने को क़ाबिले फ़ख़्र तसव्वुर करते हैं। नमाज़ रोज़े की पाबन्दी और सुन्नतों पर अ़मल करने वाले उन्हें अपनी निगाहों में अ़जीब नज़र आते और गाने बाजों, फ़िल्मों ड्रामों में

www.dawateislami.net

मश्ग़ूल लोग ज़िन्दगी की रा'नाइयों से लुत्फ़ अन्दोज़ होते नज़र आते हैं। औरतों का पर्दा करना फ़रसूदा अ़मल और बेपर्दा होना जदीद दौर का तक़ाज़ा समझते हैं। सिर्फ़ अपनी बीवी के साथ तअ़ल्लुक़ क़ाइम रखने को तंग ज़ेहनी और ग़ैर औरतों से ना जाइज़ तअ़ल्लुक़ात को रोशन ख़याली कहते हैं। अपनी औरतों के ग़ैर मर्दों से दूर रहने को अपनी बे इ़ज़्ज़ती जब कि उन का ग़ैर मर्दों से मिलने और उन से तअ़ल्लुक़ात क़ाइम करने को अपनी इ़ज़्ज़त तसव्वुर करते हैं। ह़राम कमाई को अपना ह़क़ और ज़रूरत जब कि ह़लाल कमाई को अपनी ह़क़ तलफ़ी क़रार देते हैं। अमानतो दियानत दारी और सच्चाई को भोलापन जब कि ख़ियानत, झूट, धोका और फ़रेब कारी को अपनी चालाकी और महारत समझते हैं। सरे दस्त येह चन्द मिसालें पेश की हैं वरना थोड़ा सा ग़ौर करें तो अच्छे काम को बुरा और बुरे काम को अच्छा समझने की हज़ारों मिसालें सामने आ जाएंगी। ऐ काश ! मुसल्मान अपने रब तआ़ला के इस फ़रमान पर ग़ौर करें और अपनी रविश से बाज़ आ जाएं, **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

اَفَمَنْ زُیِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ فَاِنَّ اللّٰهَ یُضِلُّ مَنْ یَّشَآءُ وَ یَهْدِیْ مَنْ یَّشَآءُ ۫ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَیْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌۢ بِمَا یَصْنَعُوْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : तो क्या वोह शख़्स जिस के लिये उस का बुरा अ़मल ख़ूब सूरत बना दिया गया तो वोह उसे अच्छा (ही) समझता है (क्या वोह हिदायत याफ़्ता आदमी जैसा हो सकता है ?) तो बेशक **अल्लाह** गुमराह करता है जिसे चाहता है और राह दिखाता है जिसे चाहता है, तो ह़स्रतों की वज्ह से उन पर तुम्हारी जान न चली जाए। बेशक **अल्लाह** ख़ूब जानता है जो कुछ वोह करते हैं।

किसी जगह नेक बन्दों का मौजूद होना अम्न का ज़रीआ़ है

कुफ़्फ़ार के, नबी عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन के सह़ाबा को वहां से निकालने की बात से येह भी मा'लूम हुवा कि किसी बस्ती में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे बन्दों का रहना उस जगह अम्न रहने का ज़रीआ़ है और उन का वहां से निकल जाना अ़ज़ाब का ज़रीआ़। वोह लोग ख़ुद उन्हें निकाल कर अपने अ़ज़ाब का सामान करना चाहते थे।

فَاَنْجَیْنٰهُ وَ اَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِیْنَ ﴿۸۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो हम ने उसे और उस के घर वालों को नजात दी मगर उस की औ़रत वोह रह जाने वालों में हुई।

(1) .....فاطر: ٨.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो हम ने उसे और उस के घर वालों को नजात दी सिवाए उस की बीवी के। वोह बाक़ी रहने वालों में से थी।

﴿فَاَنْجَیْنٰهُ وَاَهْلَهٗ﴾ **: तो हम ने उसे और उस के घर वालों को नजात दी ।** ﴾ जब ह़ज़रते लूत़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम पर अ़ज़ाब आया तो **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते लूत़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, आप के घर वालों में से आप की दो बेटियों और सारे मुसल्मानों को अ़ज़ाब से बचा लिया, अलबत्ता ह़ज़रते लूत़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बीवी जिस का नाम वाहिला था वोह आप पर ईमान न लाई बल्कि काफ़िरा ही रही, अपनी क़ौम से मह़ब्बत रखती और उन के लिये जासूसी करती थी, येह अ़ज़ाब में मुब्तला हुई।

وَاَمْطَرْنَا عَلَیْهِمْ مَّطَرًا ؕ فَانْظُرْ كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِیْنَ ﴿۸۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने उन पर एक मींह बरसाया तो देखो कैसा अन्जाम हुवा मुजरिमों का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने उन पर बारिश बरसाई तो देखो, मुजरिमों का कैसा अन्जाम हुवा ?

﴿وَاَمْطَرْنَا عَلَیْهِمْ مَّطَرًا﴾ **: और हम ने उन पर बारिश बरसाई ।** ﴾ ह़ज़रते लूत़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम पर इस त़रह़ अ़ज़ाब आया कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन पर पथ्थरों की ख़ौफ़नाक बारिश बरसाई कि जो गन्धक और आग से मुरक्कब थे। एक क़ौल येह है कि बस्ती में रहने वाले जो वहां मुक़ीम थे वोह तो ज़मीन में धंसा दिये गए और जो सफ़र में थे वोह इस बारिश से हलाक किये गए। इमाम मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने कहा कि ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْهِ السَّلَام नाज़िल हुए और उन्हों ने अपना बाज़ू क़ौमे लूत़ की बस्तियों के नीचे डाल कर उस ख़ित्ते को उखाड़ लिया और आस्मान के क़रीब पहुंच कर उस को औंधा कर के गिरा दिया और इस के बा'द पथ्थरों की बारिश की गई।

आयत ''وَاَمْطَرْنَا عَلَیْهِمْ مَّطَرًا'' से मा'लूम होने वाले मसाइल

इस आयत से दो मस्अले मा'लूम हुए,

(1)..... येह बदकारी तमाम जुर्मों से बड़ा जुर्म है कि इस जुर्म की वज्ह से क़ौमे लूत़ पर ऐसा अ़ज़ाब आया जो दूसरी अ़ज़ाब पाने वाली क़ौमों पर न आया।

(2)..... मुजरिमों के तारीख़ी ह़ालात पढ़ना, इन में ग़ौर करना भी इ़बादत है ताकि अपने दिल में गुनाहों से नफ़रत पैदा हो, इसी त़रह़ मह़बूब क़ौमों के ह़ालात में ग़ौर करना मह़बूब है ताकि इत़ाअ़त का जज़्बा पैदा हो।

www.dawateislami.net

وَ اِلٰى مَدْیَنَ اَخَاهُمْ شُعَیْبًا ؕ قَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ
غَیْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَیِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَوْفُوا الْكَیْلَ وَ الْمِیْزَانَ وَ لَا
تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْیَآءَهُمْ وَ لَا تُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ؕ
ذٰلِكُمْ خَیْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ۚ﴿۸۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और मद्यन की त़रफ़ उन की बिरादरी से शुऐ़ब को भेजा कहा ऐ मेरी क़ौम **अल्लाह** की इ़बादत करो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से रोशन दलील आई तो नाप और तोल पूरी करो और लोगों की चीज़ें घटा कर न दो और ज़मीन में इन्तिज़ाम के बा'द फ़साद न फैलाओ येह तुम्हारा भला है अगर ईमान लाओ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मद्यन की त़रफ़ उन के हमक़ौम शुऐ़ब को भेजा, उन्हों ने फ़रमाया : ऐ मेरी क़ौम ! **अल्लाह** की इ़बादत करो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं, बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से रोशन दलील आ गई तो नाप और तोल पूरा पूरा करो और लोगों को उन की चीज़ें कम कर के न दो और ज़मीन में इस की इस्लाह़ के बा'द फ़साद न फैलाओ। येह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम ईमान लाओ।

﴿وَ اِلٰى مَدْیَنَ اَخَاهُمْ شُعَیْبًا﴾ : **और मद्यन की त़रफ़ उन के हमक़ौम शुऐ़ब को भेजा।** ﴾ मद्यन ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के क़बीले का नाम है और इन की बस्ती का नाम भी मद्यन था, इस बस्ती का नाम मद्यन इस लिये हुवा कि येह लोग ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद से एक बेटे मद्यन की औलाद में से थे, मद्यन और मिस्र के दरमियान अस्सी दिन के सफ़र की मिक़्दार फ़ासिला था। ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद से हैं। आप عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दादी ह़ज़रते लूत़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बेटी थीं, ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अहले मद्यन के हमक़ौम थे और आप عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अम्बियाए बनी इसराईल में से न थे।[1]

(1) ……خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۸۵، ۲/۱۱۸، تفسیر صاوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۸۵، ۲/۶۹۱، ملتقطاً۔

www.dawateislami.net

﴿قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ﴾ **: बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से रोशन दलील आ गई ।** इस आयत से साबित हुवा कि ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मो'जिज़े ले कर आए थे अलबत्ता क़ुरआने पाक में मुअ़य्यन नहीं किया गया कि इन का मो'जिज़ा क्या और किस क़िस्म का था । ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात में से एक मो'जिज़ा येह भी है कि आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को बकरियां तोह़फ़े में दे कर फ़रमाया : "येह बकरियां सफ़ेद और सियाह बच्चे जनेंगी ।" चुनान्चे जैसे आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया वैसे ही हुवा ।[1]

﴿فَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ﴾ **: तो नाप और तोल पूरा पूरा करो ।** ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम में शिर्क के इ़लावा भी जो गुनाह आ़म थे उन में से एक नाप तोल में कमी करना और दूसरा लोगों को उन की चीज़ें कम कर के देना और तीसरा लोगों को ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से दूर करने की कोशिशें करना था । ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम को नाप तोल में कमी करने और लोगों को उन की अश्या घटा कर देने से मन्अ़ किया और ज़मीन में फ़साद करने से रोका क्यूं कि इस बस्ती में **अल्लाह** तआ़ला के नबी तशरीफ़ ले आए और उन्हों ने नुबुव्वत के अह़काम बयान फ़रमा दिये तो येह बस्ती की इस्लाह़ का सब से क़वी ज़रीआ़ है लिहाज़ा अब तुम कुफ़्र व गुनाह कर के फ़साद बरपा न करो ।

कुफ़्फ़ार भी बा'ज़ अह़काम के मुकल्लफ़ हैं

इस से मा'लूम हुवा कि बा'ज़ अह़काम के कुफ़्फ़ार भी मुकल्लफ़ हैं क्यूं कि ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी काफ़िर क़ौम को नाप तोल दुरुस्त करने का हुक्म दिया और न मानने पर अ़ज़ाबे इलाही आ गया, बल्कि क़ियामत में काफ़िरों को नमाज़ छोड़ने पर भी अ़ज़ाब होगा जैसा कि क़ुरआने मजीद में है कि जब जन्नती काफ़िरों से पूछेंगे कि तुम्हें क्या चीज़ जहन्नम में ले गई तो वोह कहेंगे :

لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ[2]

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : हम नमाज़ियों में से नहीं थे ।

नाप तोल पूरा न करने वालों के लिये वईद

ह़ज़रते नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا एक बेचने वाले के पास से गुज़रते हुए येह फ़रमा रहे थे : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर ! और नाप तोल पूरा पूरा कर ! क्यूं कि कमी करने वालों को मैदाने मह़शर में खड़ा किया जाएगा यहां तक कि उन का पसीना उन के कानों के निस्फ़ तक पहुंच जाएगा ।"[3]

1 .....البحر المحیط، الاعراف، تحت الآیۃ: ۸۵، ۴/۳۳۹. 2 .....مدثر ۴۳. 3 .....بغوی، المطففین، تحت الآیۃ: ۳، ۴/۴۲۸.

www.dawateislami.net

आग के दो पहाड़

ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : मैं एक मरतबा अपने पड़ोसी के पास गया तो उस पर मौत के आसार नुमायां थे और वोह कह रहा था : "आग के दो पहाड़, आग के दो पहाड़ ।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, मैं ने उस से पूछा : क्या कह रहे हो ? तो उस ने बताया : ऐ अबू यह़्या ! मेरे पास दो पैमाने थे, एक से देता और दूसरे से लेता था । ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं उठा और एक पैमाने को दूसरे पर (तोड़ने की ख़ातिर) मारने लग गया । तो उस ने कहा : "ऐ अबू यह़्या ! जब भी आप एक को दूसरे पर मारते हैं मुआ़मला ज़ियादा शदीद और सख़्त हो जाता है ।" पस वोह इसी मरज़ में मर गया ।[1]

अल्लाह तआ़ला हमें नाप तोल में कमी करने से महफ़ूज़ फ़रमाए, आमीन ।

وَ لَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ وَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَ اذْكُرُوْۤا اِذْ كُنْتُمْ قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ۪ وَ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۸۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हर रास्ते पर यूं न बैठो कि राहगीरों को डराओ और **अल्लाह** की राह से उन्हें रोको जो उस पर ईमान लाए और इस में कजी चाहो और याद करो जब तुम थोड़े थे उस ने तुम्हें बढ़ा दिया और देखो फ़सादियों का कैसा अन्जाम हुवा ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हर रास्ते पर यूं न बैठो कि राहगीरों को डराओ और **अल्लाह** के रास्ते से ईमान लाने वालों को रोको और तुम इस में टेढ़ापन तलाश करो और याद करो जब तुम थोड़े थे तो उस ने तुम्हारी ता'दाद में इज़ाफ़ा कर दिया और देखो, फ़सादियों का कैसा अन्जाम हुवा ?

﴿وَلَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ﴾ **: और हर रास्ते पर यूं न बैठो ।** ﴾ येह लोग मद्यन के रास्तों पर बैठ जाते थे और हर राहगीर से कहते थे कि मद्यन शह्र में एक जादूगर है येह भी कहा गया कि उन के बा'ज़ लोग मुसाफ़िरों पर डकेतियां डालते थे ।

[1] .....الزواجر عن اقتراف الكبائر، الباب الثانى فى الكبائر الظاهرة، الكبيرة الثالثة بعد المائتين، ۱/۵۳۳.

www.dawateislami.net

﴿وَاذْكُرُوْٓا : **और याद करो ।**﴾ तुम थोड़े थे तुम्हें बहुत कर दिया, ग़रीब थे अमीर कर दिया, कमज़ोर थे क़वी कर दिया इन ने'मतों का तक़ाज़ा है कि तुम इस का शुक्रिय्या अदा करो कि मुझ पर ईमान लाओ ।

﴿وَانْظُرُوْا : **और देखो ।**﴾ या'नी पिछली उम्मतों के अह़वाल और गुज़रे हुए ज़मानों में सरकशी करने वालों के अन्जाम व मआल इ़ब्रत की निगाह से देखो और सोचो । ज़ाहिर येह है कि येह कलाम भी ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का है । आप अपनी क़ौम से फ़रमा रहे हैं कि अपने से पहली उम्मतों के तारीख़ी ह़ालात मा'लूम करना, क़ौम के बनने बिगड़ने से इ़ब्रत पकड़ना हुक्मे इलाही है। ऐसे ही बुज़ुर्गाने दीन की सवानेह़ उ़म्रियां और ख़ुसूसन हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते त़य्यिबा का मुत़ालआ़ बेहतरीन इ़बादत है इस से तक़्वा, रब عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ और इ़बादत का ज़ौक़ पैदा होता है ।

وَ اِنْ كَانَ طَآىِٕفَةٌ مِّنْكُمْ اٰمَنُوْا بِالَّذِيْۤ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَ طَآىِٕفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا ۚ وَ هُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿۸۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम में एक गुरौह उस पर ईमान लाया जो मैं ले कर भेजा गया और एक गुरौह ने न माना तो ठहरे रहो यहां तक कि **अल्लाह** हम में फ़ैसला करे और **अल्लाह** का फ़ैसला सब से बेहतर ।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और अगर तुम में एक गुरौह उस पर ईमान लाए जिस के साथ मुझे भेजा गया है और एक गुरौह (उस पर) ईमान न लाए तो तुम इन्तिज़ार करो ह़त्ता कि **अल्लाह** हमारे दरमियान फ़ैसला कर दे और वोह सब से बेहतरीन फ़ैसला फ़रमाने वाला है ।

﴿وَاِنْ كَانَ طَآىِٕفَةٌ مِّنْكُمْ : **और अगर तुम में एक गुरौह ।**﴾ या'नी अगर तुम मेरी रिसालत में इख़्तिलाफ़ कर के दो फ़िर्क़े हो गए कि एक फ़िर्क़े ने माना और एक मुन्किर हुवा तो इन्तिज़ार करो यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे दरमियान फ़ैसला कर दे कि तस्दीक़ करने वाले ईमानदारों को इ़ज़्ज़त दे और उन की मदद फ़रमाए और झुटलाने वाले मुन्किरीन को हलाक करे और उन्हें अ़ज़ाब दे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बेहतरीन फ़ैसला फ़रमाने वाला है क्यूं कि वोह ह़ाकिमे ह़क़ीक़ी है उस के हुक्म में न ग़लती का एह़तिमाल है न उस के हुक्म की कहीं अपील है।

www.dawateislami.net

قَالَ الْمَلَاُ

9

www.dawateislami.net

पारह नम्बर.....9

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَاۤ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا كٰرِهِيْنَ ﴿۸۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उस की क़ौम के मुतकब्बिर सरदार बोले ऐ शुऐ़ब क़सम है कि हम तुम्हें और तुम्हारे साथ वाले मुसल्मानों को अपनी बस्ती से निकाल देंगे या तुम हमारे दीन में आ जाओ कहा क्या अगर्चे हम बेज़ार हों।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उस की क़ौम के मुतकब्बिर सरदार कहने लगे : ऐ शुऐ़ब ! हम ज़रूर तुम्हें और तुम्हारे साथ वाले मुसल्मानों को अपनी बस्ती से निकाल देंगे या तुम हमारे दीन में आ जाओ। फ़रमाया : क्या अगर्चे हम बेज़ार हों ?

﴿قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ﴾ **: उस की क़ौम के मुतकब्बिर सरदार कहने लगे ।** इस से पहली आयात में ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अपनी क़ौम को किये गए वा'ज़ो नसीह़त का बयान हुवा, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का वा'ज़ो नसीह़त सुन कर आप की क़ौम के वोह सरदार जिन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान लाने और पैरवी करने से तकब्बुर किया था, उन के जवाब का ज़िक्र इस आयत में फ़रमाया गया है, चुनान्चे फ़रमाया गया कि ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम के मुतकब्बिर सरदार उन की नसीह़तें सुन कर कहने लगे : ऐ शुऐ़ब ! हम क़सम खाते हैं कि हम ज़रूर तुम्हें और तुम्हारे साथ ईमान वालों को अपनी बस्ती से निकाल देंगे, या'नी अस्ल मक़्सूद तो आप को निकालना है और आप की वज्ह से आप के मोमिन साथियों को भी निकाल देंगे।[1]

क़ौम की हलाकत का बाइस उस के रहनुमा

ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम के सरदारों की बे अदबी उन की हलाकत का सबब बनी, इस से मा'लूम हुवा कि क़ौम के सरदार क़ौम की हलाकत का बाइस बनते हैं अगर येह दुरुस्त हो जाएं तो क़ौम को आ'ला दरजे पर पहुंचा देते हैं और बिगड़ जाएं तो ज़िल्लत की गहरी खाइयों में गिरा देते हैं। तारीख़ गवाह है कि मुस्लिम हुक्मरानों और मुस्लिम रहनुमाओं

1 .....ابو سعود، الاعراف، تحت الآية: ۸۸، ۲/۲۷۲.

www.dawateislami.net

के आ'माल, अख़्लाक़ और किरदार की दुरुस्ती ने जहां मुस्लिम अ़वाम की सीरतो किरदार को बदल कर रख दिया वहीं ग़ैर मुस्लिम भी इस से बहुत मुतअस्सिर हुए और उन में से बहुत से दामने इस्लाम से वाबस्ता हो गए जब कि बहुत से इस्लाम और मुसल्मानों की दुश्मनी से बाज़ आ गए इसी त़रह़ जब मुस्लिम हुक्मरानों और मुस्लिम रहनुमाओं के आ'माल, अख़्लाक़ और किरदार में बिगाड़ पैदा हुवा और वोह ऐ़शो त़रब और लह्वो लइ़ब की ज़िन्दगी गुज़ारने में मश्ग़ूल हो गए तो मुस्लिम अ़वाम की अ़मली और अख़्लाक़ी ह़ालत इस क़दर गिर गई कि हुनूद व यहूद तक इन का ह़ाल देख कर शरमा गए और इसी वज्ह से कुफ़्फ़ार के दिलों से मुसल्मानों का ख़ौफ़ और दबदबा जाता रहा और वोह एक एक कर के मुसल्मानों के मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों पर क़ाबिज़ होते चले गए और आज मुसल्मानों का ह़ाल येह है कि वोह पचास से ज़ाइद ममालिक में तक़्सीम हैं और दुन्या के इन्तिहाई क़ीमती तरीन वसाइल के मालिक होने के बा वुजूद कुफ़्फ़ार के क़ब्ज़े में हैं। **अल्लाह** तआ़ला हम सब को अस्लाफ़ के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

﴿اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِیْ مِلَّتِنَا﴾ : **या तुम हमारे दीन में आ जाओ।** इस का लफ़्ज़ी मा'ना येह बनता है कि **''या तुम हमारे दीन में लौट आओ''** इस से ब ज़ाहिर येह मा'लूम होता है कि مَعَاذَاللہ ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पहले उन के दीन में दाख़िल थे तभी तो उन्हों ने आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को वापस लौट आने की दा'वत दी, मुफ़स्सिरीन ने इस इश्काल के चन्द जवाबात दिये हैं, उन में से 3 दर्जे ज़ैल हैं :

(1)..... ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर ईमान लाने वाले चूंकि पहले काफ़िर थे तो जब आप की क़ौम ने आप की पैरवी करने वालों को मुख़ात़ब किया तो इस ख़ित़ाब में आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को भी शामिल कर के आप पर भी वोही हुक्म जारी कर दिया ह़ालां कि आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तो उन के दीन में कभी दाख़िल ही न हुए थे।[1]

(2)..... काफ़िर सरदारों ने अ़वाम को शको शुबे में डालने के लिये इस त़रह़ कलाम किया ताकि लोग येह समझें कि आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पहले उन के दीन व मज़्हब पर ही थे। ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन्हें जो जवाब दिया कि **''क्या अगर्चे हम बेज़ार हों''** येह उन के इस इ़श्तिबाह के रद में था।[2]

(3)..... ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام कुफ़्रो शिर्क से तो क़त़्अ़न दूरो नुफ़ूर थे लेकिन इब्तिदा में छुप कर इ़बादत वग़ैरा करते थे जिस की वज्ह से उन का दीन क़ौम पर ज़ाहिर न था जिस से उन्हों ने यहे समझा कि आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام उन के दीन पर हैं।

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۸۸، ۱۱۹/۲. 2 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۸۸، ۳۱۶/۵.

www.dawateislami.net

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ؕ وَمَا يَكُوْنُ لَنَاۤ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَاۤ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ؕ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ؕ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ ﴿۸۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ज़रूर हम **अल्लाह** पर झूट बांधेंगे अगर तुम्हारे दीन में आ जाएं बा'द इस के कि **अल्लाह** ने हमें इस से बचाया है और हम मुसल्मानों में किसी का काम नहीं कि तुम्हारे दीन में आए मगर येह कि **अल्लाह** चाहे जो हमारा रब है हमारे रब का इ़ल्म हर चीज़ को मुह़ीत़ है हम ने **अल्लाह** ही पर भरोसा किया ऐ रब हमारे हम में और हमारी क़ौम में ह़क़ फ़ैसला कर और तेरा फ़ैसला सब से बेहतर।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक (फिर तो) ज़रूर हम **अल्लाह** पर झूट बांधेंगे अगर इस के बा'द भी हम तुम्हारे दीन में आएं जब कि **अल्लाह** ने हमें इस से बचाया है और हम मुसल्मानों में किसी का काम नहीं कि तुम्हारे दीन में आए मगर येह कि हमारा रब **अल्लाह** चाहे। हमारे रब का इ़ल्म हर चीज़ को मुह़ीत़ है, हम ने **अल्लाह** ही पर भरोसा किया। ऐ हमारे रब ! हम में और हमारी क़ौम में ह़क़ के साथ फ़ैसला फ़रमा दे और तू सब से बेहतर फ़ैसला फ़रमाने वाला है।

اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ **: अगर हम तुम्हारे दीन में आ जाएं** ﴾ ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम का जवाब सुन कर उन से फ़रमाया था कि "क्या हम तुम्हारे दीन में आएं अगर्चे हम इस से बेज़ार हों ?" इस पर उन्हों ने कहा : हां फिर भी तुम हमारे दीन में आ जाओ। तो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे इस बात़िल दीन से हमें बचाया हुवा है और तुम्हारे बात़िल दीन की क़बाह़त और उस के फ़साद का इ़ल्म दे कर मुझे शुरूअ़ ही से कुफ़्र से दूर रखा और मेरे साथियों को कुफ़्र से निकाल कर ईमान की तौफ़ीक़ दे दी है तो अगर इस के बा'द भी हम तुम्हारे दीन में आएं तो फिर बेशक ज़रूर हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर झूट बांधने वालों में से होंगे और हम में किसी का काम नहीं कि तुम्हारे दीन में आए मगर येह कि हमारा रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी को गुमराह करना चाहे तो कुछ भी हो सकता है।

www.dawateislami.net

शैत़ान अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को गुमराह नहीं कर सकता

याद रहे कि गुमराह होने से नबी عَلَيْهِ السَّلَام ख़ारिज हैं क्यूं कि वोह क़त़्ई मा'सूम होते हैं और शैत़ान उन्हें गुमराह नहीं कर सकता। रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

اِنَّ عِبَادِیْ لَیْسَ لَكَ عَلَیْهِمْ سُلْطٰنٌ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक मेरे बन्दों पर तेरा कुछ क़ाबू नहीं।

ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का येह फ़रमान कि "हमारा रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे तो कुछ भी हो सकता है।" दर ह़क़ीक़त **अल्लाह** तआ़ला की मशिय्यत के आगे सरे तस्लीम ख़म करना है।

﴿وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَیْءٍ عِلْمًا﴾ **: हमारे रब का इल्म हर चीज़ को मुह़ीत़ है।** ﴾ या'नी जो हो चुका और जो आइन्दा होगा सब चीज़ों को **अल्लाह** तआ़ला अज़ल से ही जानता है लिहाज़ा सआ़दत मन्द वोही है जो **अल्लाह** तआ़ला के इल्म में सईद है और बद बख़्त वोह है जो **अल्लाह** तआ़ला के इल्म में शक़ी है।(2)

येह आयत उन आयात की तफ़्सीर है जिन में फ़रमाया गया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर चीज़ को घेरे हुए है, या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इल्म और उस की क़ुदरत घेरे हुए है वरना **अल्लाह** तआ़ला जिस्म व मकान से और इस ए'तिबार से घेरने और घिरने से पाक है। इस की मज़ीद तफ़्सील सूरए निसाअ की आयत नम्बर 126 की तफ़्सीर में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

﴿عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا﴾ **: हम ने अल्लाह ही पर भरोसा किया।** ﴾ या'नी हम ने ईमान पर साबित क़दम रहने और शरीर लोगों से ख़लासी पाने में **अल्लाह** तआ़ला ही पर भरोसा किया।(3)

तवक्कुल का ह़क़ीक़ी मफ़्हूम

तवक्कुल का मफ़्हूम येह है कि अस्बाब पर ए'तिमाद करते हुए नतीजा **अल्लाह** तआ़ला पर छोड़ दिया जाए, तवक्कुल तर्के अस्बाब का नाम नहीं बल्कि अस्बाब इख़्तियार करते हुए मुसब्बिबुल अस्बाब पर ए'तिमाद करने का नाम है। ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, मैं

1 .....حجر: ٤٢.
2 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ٨٩، ٢/ ١٢٠.
3 .....روح البيان، الاعراف، تحت الآية: ٨٩، ٣/ ٢٠٣.

www.dawateislami.net

ऊंटनी को बांध कर तवक्कुल करूं या उसे खुला छोड़ कर तवक्कुल करूं ? इर्शाद फ़रमाया : ''उसे बांध कर तवक्कुल करो।''[1]

﴿رَبَّنَا : ऐ हमारे रब।﴾ जब ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को क़ौम के ईमान लाने की उम्मीद न रही तो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने यूं दुआ फ़रमाई ''رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ'' ऐ हमारे रब ! हम में और हमारी क़ौम में ह़क़ के साथ फ़ैसला फ़रमा दे और तू सब से बेहतर फ़ैसला फ़रमाने वाला है। ज़ुजाज ने कहा कि इस के येह मा'ना हो सकते हैं कि ऐ हमारे रब ! हमारे अम्र को ज़ाहिर फ़रमा दे, इस से मुराद येह है कि इन पर ऐसा अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमा जिस से इन का बात़िल पर होना और ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन के मुत्तबिई़न का ह़क़ पर होना ज़ाहिर हो।[2]

وَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَىِٕنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿۹۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उस की क़ौम के काफ़िर सरदार बोले कि अगर तुम शुऐ़ब के ताबेअ़ हुए तो ज़रूर तुम नुक़्सान में रहोगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उस की क़ौम के काफ़िर सरदार बोले कि अगर तुम शुऐ़ब के ताबेअ़ हुए तो ज़रूर तुम नुक़्सान में रहोगे।

﴿وَقَالَ الْمَلَاُ : और सरदार बोले।﴾ ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम के सरदारों ने जब ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन पर ईमान लाने वालों की दीन में मज़बूती देखी तो उन्हें येह ख़ौफ़ लाह़िक़ हुवा कि कहीं और लोग भी इन पर ईमान न ले आएं चुनान्चे जो लोग अभी तक ईमान नहीं लाए थे उन्हें मआ़शी बदह़ाली से डराते हुए कहने लगे कि अगर तुम ने ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान लाते हुए उन के दीन की पैरवी की और अपना आबाई दीनो मज़हब और कम तोलना, कम नापना वग़ैरा जो काम तुम करते हो उसे छोड़ दिया तो सुन लो ! तुम ज़रूर नुक़्सान में रहोगे क्यूं कि इस त़रह़ तुम्हें तिजारती लेनदेन में पूरा तोलना पड़ेगा।[3]

1 .....ترمذی، کتاب صفة یوم القیامة، ٦٠-باب، ٤/٢٣٢، الحدیث: ٢٥٢٥.
2 .....خازن، الاعراف، تحت الآیة: ٨٩، ٢/١٢٠. 3 .....ابو سعود، الاعراف، تحت الآیة: ٩٠، ٢/٢٧٦.

www.dawateislami.net

अह़कामे इलाहिय्यह की पाबन्दी में अपनी नाकामी समझने वाले ग़ौर करें

ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम के सरदारों की येह रविश उन की बीमार ज़ेहनिय्यत का पता देती है कि अह़कामे इलाहिय्यह की पाबन्दी में अपनी नाकामी जब कि राहे रास्त पर चलने में अपनी हलाकत और दीने ह़क़ पर ईमान लाने में उन्हें मुहीब ख़त़रात नज़र आने लगे और उन्हों ने दूसरों को भी दीने ह़क़ से दूर करने की कोशिश शुरूअ़ कर दी। इस त़रह़ की बीमार ज़ेहनिय्यत के ह़ामिल अफ़्राद की हमारे मुआ़शरे में भी कोई कमी नहीं, इस्लाम के उसूल व क़वानीन को अहम्मिय्यत न देने वालों, शरीअ़त के क़वानीन में तब्दीली की रट लगाने वालों, ज़कात को टेक्स तसव्वुर करने वालों, रिश्वत को अपना ह़क़ समझने वालों, नाप तोल में कमी करने वालों, पर्दे को औ़रत की आज़ादी के ख़िलाफ़ क़रार देने वालों, इस्लामी सज़ाओं को ज़ुल्मो बरबरिय्यत शुमार करने वालों को चाहिये कि अहले मद्यन के ह़ालात और इन के अन्जाम पर ग़ौर करें। हमारे हां भी कितने लोग येह ना'रा लगाने वाले हैं कि अगर सूदी निज़ाम को छोड़ दिया तो हम नुक़्सान में पड़ जाएंगे और हमारी तरक़्क़ी रुक जाएगी। इस जुम्ले में और अहले मद्यन के जुम्ले में कितना फ़र्क़ है इस पर ग़ौर फ़रमा लें।

فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِیْ دَارِهِمْ جٰثِمِیْنَ ﴿۹۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन्हें ज़ल्ज़ले ने आ लिया तो सुब्ह़ अपने घरों में औंधे पड़े रह गए।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो उन्हें शदीद ज़ल्ज़ले ने अपनी गिरिफ़्त में ले लिया तो सुब्ह़ के वक़्त वोह अपने घरों में औंधे पड़े रह गए।

﴿فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ﴾ **: तो उन्हें शदीद ज़ल्ज़ले ने अपनी गिरिफ़्त में ले लिया।** ﴾ जब ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम की गुमराही अपनी इन्तिहा को पहुंच गई और हर त़रह़ से समझाने, अ़ज़ाबे इलाही से डराने के बा वुजूद भी येह लोग अपनी सरकशी से बाज़ न आए तो उन पर **अल्लाह** तआ़ला का अ़ज़ाब नाज़िल हुवा।

अहले मद्यन पर आने वाले अ़ज़ाब की कैफ़िय्यत

इस आयत में है कि अहले मद्यन को "**शदीद ज़ल्ज़ले ने अपनी गिरिफ़्त में ले लिया।**" जब कि सूरए हूद में इस त़रह़ है :

www.dawateislami.net

وَاَخَذَتِ الَّذِیْنَ ظَلَمُوا الصَّیْحَةُ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ज़ालिमों को ख़ौफ़नाक चीख़ ने पकड़ लिया।

तफ़्सीरे अबू सऊ़द में है : मुम्किन है कि ज़ल्ज़ले की इब्तिदा इस चीख़ से हुई हो, इस लिये किसी जगह जैसे सूरए हूद में हलाकत की निस्बत सबबे क़रीब या'नी ख़ौफ़नाक चीख़ की त़रफ़ की गई और दूसरी जगह जैसे इस आयत में सबबे बईद या'नी ज़ल्ज़ले की त़रफ़ की गई।(2)

ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को अस्ह़ाबे ऐका की त़रफ़ भी मब्ऊ़स फ़रमाया था और अहले मद्यन की त़रफ़ भी। अस्ह़ाबे ऐका तो अब्र से हलाक किये गए और अहले मद्यन ज़ल्ज़ले में गिरिफ़्तार हुए और एक होलनाक आवाज़ से हलाक हो गए।(3)

مع

اَلَّذِیْنَ كَذَّبُوْا شُعَیْبًا كَاَنْ لَّمْ یَغْنَوْا فِیْهَا ۚۛ اَلَّذِیْنَ كَذَّبُوْا شُعَیْبًا كَانُوْا هُمُ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۹۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : शुऐ़ब को झुटलाने वाले गोया उन घरों में कभी रहे ही न थे शुऐ़ब को झुटलाने वाले वोही तबाही में पड़े।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह जिन्हों ने शुऐ़ब को झुटलाया ऐसे हो गए गोया उन घरों में कभी रहे ही न थे। शुऐ़ब को झुटलाने वाले ही नुक़्सान उठाने वाले हुए।

﴿اَلَّذِیْنَ كَذَّبُوْا شُعَیْبًا﴾ **: शुऐ़ब को झुटलाने वाले।** आयत का ख़ुलासा येह है कि ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को झुटलाने वालों पर जब मुसल्सल ना फ़रमानी और सरकशी की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब आया तो वोह हलाकतो बरबादी से दोचार हो गए, उन के शानदार मह़ल्लात जहां ज़िन्दगी अपनी तमाम तर रौनक़ों के साथ जल्वा गर थी ऐसे वीरान हो गए कि वहां हर सू ख़ाक उड़ने लगी और हलाकत के बा'द ऐसा मा'लूम होता था कि गोया यहां कभी

1 .....هود:٩٤.
2 .....ابو سعود، الاعراف، تحت الآیة: ٩١، ٢/٢٧٦.
3 .....خازن، الاعراف، تحت الآیة: ٩١، ٢/١٢٠.

www.dawateislami.net

कोई आबाद ही नहीं हुवा ।[1]

﴿كَانُوْا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ﴾ : **वोही नुक़्सान उठाने वाले हुए ।** ﴾ ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम के लोग इस ख़ौफ़ की वज्ह से आप पर ईमान नहीं लाते थे कि अगर इन्हों ने उन पर ईमान ला कर उन की शरीअ़त पर अ़मल शुरूअ़ कर दिया तो वोह मआ़शी बदह़ाली की दलदल में फंस जाएंगे, **अल्लाह** तआ़ला ने इस आयत में तम्बीह फ़रमाई कि जिस ख़ौफ़ की वज्ह से वोह क़बूले ईमान से दूर थे वोह दुरुस्त साबित न हुवा बल्कि नतीजा इस के बिल्कुल बर अ़क्स निकला कि जिन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी पर ईमान ला कर उन की शरीअ़त की पैरवी की वोह तो दीनो दुन्या दोनों में काम्याब हो गए और जिन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को झुटलाया और आप की ना फ़रमानी की, उन की दुन्या तो बरबाद हुई, इस के साथ आख़िरत भी बरबाद हो गई । लिहाज़ा नुक़्सान तो उन लोगों ने उठाया है जो सरकश और ना फ़रमान थे न कि उन्हों ने जो ताबेअ़ और फ़रमां बरदार थे ।[2]

इक़्तिसादी और मआ़शी बेहतरी इस्लामी अह़काम पर अ़मल करने में है

अहले मद्यन के ह़ालात में उन लोगों के लिये बहुत इ़ब्रत है कि जो मह़ज़ नाम निहाद और बे बुन्याद इक़्तिसादी ज़बूंह़ाली के ख़ौफ़ से शरीअ़ते इस्लामिया के वाज़ेह़ अह़काम में रद्दो बदल करने के लिये पेचो ताब खाते नज़र आते हैं, ऐसे ह़ज़रात को चाहिये कि मद्यन वालों के ह़ालात का बग़ौर मुत़ालआ़ करें और अपनी इस रविश को बदल कर सह़ीह़ इस्लामी सोच अपनाने की कोशिश करें और मआ़शी बेहतरी के लिये इस्लाम के दिये हुए उसूलो क़वानीन पर अ़मल करें फिर देखें कि कैसे येह इक़्तिसादी और मआ़शी त़ौर पर मज़बूत़ होते हैं ।

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ
فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿۹۳﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो शुऐ़ब ने उन से मुंह फेरा और कहा ऐ मेरी क़ौम मैं तुम्हें अपने रब की रिसालत पहुंचा चुका और तुम्हारे भले को नसीह़त की तो क्यूंकर ग़म करूं काफ़िरों का ।

1 .....تفسیر طبری، الاعراف، تحت الآیۃ: ۹۲، ۶/۶، ملتقطاً.
2 .....مدارك، الاعراف، تحت الآیۃ: ۹۲، ص ۳۷۵، ملخصاً.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो शुऐब ने उन से मुंह फेर लिया और फ़रमाया, ऐ मेरी क़ौम ! बेशक मैं ने तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुंचा दिये और मैं ने तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही की तो काफ़िर क़ौम पर मैं कैसे ग़म करूं ?

﴿وَقَالَ﴾ **: और फ़रमाया ।** जब ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम पर अ़ज़ाब आया तो आप ने उन से मुंह फेर लिया और क़ौम की हलाकत के बा'द जब आप उन की बेजान ना'शों पर गुज़रे तो उन से फ़रमाया : **''ऐ मेरी क़ौम ! बेशक मैं ने तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुंचा दिये और मैं ने तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही की लेकिन तुम किसी त़रह़ ईमान न लाए ।''**[1]

मुर्दे सुनते हैं

कुफ़्फ़ार की हलाकत के बा'द ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन से जो कलाम फ़रमाया इस से मा'लूम हुवा कि मुर्दे सुनते हैं । ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम को सुनाया, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम को सुनाया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी क़ौम को सुनाया ।[2]

मुर्दों के सुनने की क़ुव्वत से मुतअ़ल्लिक़ बुख़ारी शरीफ़ में है : जब अबू जहल वग़ैरा कुफ़्फ़ार को बद्र के कूंएं में फेंक दिया गया तो उस वक़्त **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से ख़ित़ाब फ़रमाया : ''فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا'' तो क्या तुम ने उस वा'दे को सच्चा पाया जो तुम से तुम्हारे रब ने किया था ? ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप ऐसे जिस्मों से कलाम फ़रमा रहे हैं कि जिन के अन्दर रूहें नहीं । इर्शाद फ़रमाया : ''وَالَّذِی نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهٖ مَا اَنْتُمْ بِاَسْمَعَ لِمَا اَقُوْلُ مِنْهُمْ'' उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़े में मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की जान है जो कुछ मैं कह रहा हूं उसे तुम इन से ज़ियादा नहीं सुनते ।[3]

साबिक़ा उम्मतों के अह़वाल बयान करने से मक़्सूद

पिछली उम्मतों के अह़वाल और उन पर आने वाले अ़ज़ाबात के बयान से मक़्सूद सिर्फ़ उन की दास्तानें सुनाना नहीं बल्कि मक़्सूद नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत को झंझोड़ना है । इन के सामने उन क़ौमों का ह़ाल बयान किया गया है कि जिन से अ़रब के लोग वाक़िफ़ थे, जिन के खन्डरात अ़रबों के तिजारती क़ाफ़िलों की गुज़र गाहों के इर्द गिर्द

1 .....صاوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۹۴، ۲/۶۹۴، ملخصاً. 2 .....تفسیر ابن ابی حاتم، الاعراف، تحت الآیۃ: ۹۳، ۵/۱۵۲۴.
3 .....بخاری، کتاب المغازی، باب قتل ابی جھل، ۳/۱۱، الحدیث: ۳۹۷۶.

www.dawateislami.net

वाक़ेअ़ थे, जिन की ख़ुशहाली, बाला दस्ती और ग़लबा व इक़्तिदार की बड़ी शोहरत थी और फिर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ना फ़रमानी के बाइ़स उन की तबाही व बरबादी के दिल ख़राश वाक़िआ़त हुए जो सब को मा'लूम थे, येह वाक़िआ़त और ह़ालात बता कर उन्हें आगाह किया कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी उन्हीं ता'लीमात को कामिल और मुकम्मल सूरत में तुम्हारे पास लाए हैं जो पहले नबियों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी अपनी उम्मतों को अपने ज़माने में दीं, अगर तुम ने भी इन्कार किया और सरकशी की रविश इख़्तियार की तो याद रखो तुम्हारा अन्जाम भी वोही होगा जो पहले मुन्किरीन का होता आया है। दोनों जहां की सआ़दत और सलामती मत़्लूब है तो रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त करो और उन का दामने रह़मत मज़बूत़ी से थाम लो, तुम्हें दुन्या व आख़िरत दोनों में सर बुलन्दी नसीब हो जाएगी।

وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ﴿۹۴﴾ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۹۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और न भेजा हम ने किसी बस्ती में कोई नबी मगर येह कि उस के लोगों को सख़्ती और तक्लीफ़ में पकड़ा कि वोह किसी त़रह़ ज़ारी करें। फिर हम ने बुराई की जगह भलाई बदल दी यहां तक कि वोह बहुत हो गए और बोले बेशक हमारे बाप दादा को रन्ज व राह़त पहुंचे थे तो हम ने उन्हें अचानक उन की ग़फ़्लत में पकड़ लिया।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने किसी बस्ती में कोई नबी न भेजा मगर हम ने उस के रहने वालों को सख़्ती और तक्लीफ़ में पकड़ा ताकि वोह गिड़गिड़ाएं। फिर हम ने बदह़ाली की जगह ख़ुशह़ाली बदल दी यहां तक कि वोह बहुत बढ़ गए और वोह कहने लगे : बेशक हमारे बाप दादा को (भी) तक्लीफ़ और राह़त पहुंचती रही है तो हम ने उन्हें अचानक पकड़ लिया और उन्हें इस का कुछ इ़ल्म न था।

www.dawateislami.net

﴿اِلَّاۤ اَخَذْنَاۤ اَهْلَهَا﴾ **: मगर हम ने उस के रहने वालों को पकड़ा ।** ﴾ इस से पहली आयात में **अल्लाह** तआ़ला ने ख़ास क़ौमों या'नी ह़ज़रते नूह़, ह़ज़रते हूद, ह़ज़रते सालेह़, ह़ज़रते लूत़ और ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौमों के तफ़्सीली ह़ालात और उन के कुफ़्र व सरकशी की वज्ह से उन पर नाज़िल होने वाले अ़ज़ाब और उस की कैफ़िय्यत का ज़िक्र फ़रमाया, अब इस आयत और इस से अगली आयत में तमाम उम्मतों के इज्माली ह़ालात और एक आ़म उसूल बयान किया जा रहा है कि जिस के तह़्त सब क़ौमों से बरताव होता है। उस का ख़ुलासा येह है कि जब कभी किसी अ़लाक़े या शह़्र में कोई नबी عَلَيْهِ السَّلَام मब्ऊ़स किये गए तो वोह उस जगह बसने वालों को शिर्क से बचने, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को एक मानने, सिर्फ़ उसी की इ़बादत करने और उस की भेजी हुई शरीअ़त पर अ़मल करने की दा'वत देते। अपनी सदाक़त के इज़्हार के लिये रोशन मो'जिज़ात दिखाते और **अल्लाह** तआ़ला के अ़ज़ाब से डराते, मगर इस के बा वुजूद जब वहां के बासी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी عَلَيْهِ السَّلَام की दा'वत क़बूल करने से इन्कार कर देते और इतनी वाज़ेह़ और साफ़ निशानियां देखने के बा'द भी अपनी हटधर्मी से बाज़ न आते तो फ़ौरन ही उन पर अ़ज़ाब नाज़िल न कर दिया जाता बल्कि पहले उन्हें त़रह़ त़रह़ के मसाइबो आलाम, सख़्तियों और तकालीफ़ में मुब्तला कर दिया जाता ताकि इस त़रह़ उन का दिमाग़ ठिकाने आए और बात़िल मज़हब छोड़ कर ह़क़ मज़हब के सायए रह़मत में आ जाएं और अगर येह त़रीक़ा भी कारगर साबित न होता तो फिर उन पर इन्आ़मो इक्राम के दरवाज़े खोल दिये जाते, औलाद की कसरत, माल की ज़ियादती, इ़ज़्ज़तो वक़ार में इज़ाफ़ा, क़ुव्वतो ग़लबा वग़ैरा हर त़रह़ की असाइशें उन्हें मुहय्या कर दी जातीं ताकि इस त़रह़ वोह अपने ह़क़ीक़ी मोह़सिन को पहचान कर उस की ना फ़रमानी से बाज़ आ जाएं और उस की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी इख़्तियार कर लें लेकिन अगर वोह मसाइबो आलाम के पहाड़ टूट पड़ने के बा'द भी ग़फ़्लत से बेदार न होते और ने'मतों की बोहतात के बा वुजूद भी उन के दिल अपने मेह़रबान और करीम परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी की त़रफ़ माइल न होते तो वोह अ़ज़ाबे इलाही के मुस्तह़िक़ ठहरते। येह सब बयान करने से मक़्सूद कुफ़्फ़ारे क़ुरैश और दीगर कुफ़्फ़ार को ख़ौफ़ दिलाना है ताकि वोह अपने कुफ़्र व सरकशी से बाज़ आ कर **अल्लाह** तआ़ला और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इत़ाअ़त गुज़ार व फ़रमां बरदार बन जाएं।[1]

﴿قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَ السَّرَّآءُ﴾ **: बेशक हमारे बाप दादा को (भी) तक्लीफ़ और राह़त पहुंचती रही है ।** ﴾ जब ना फ़रमान क़ौमें मसाइबो आलाम का शिकार हुईं तो उस वक़्त होना येह चाहिये था कि वोह लोग उन सख़्तियों और तकालीफ़ से इ़ब्रत ह़ासिल करते हुए अपनी इस्लाह़ की

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۹۴، ۱۲۱/۲، ابو سعود، الاعراف، تحت الآیۃ: ۹۴-۹۵، ۲۷۷/۲، جمل، الاعراف، تحت الآیۃ: ۹۴، ۷۷/۳، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

तरफ़ तवज्जोह देते लेकिन वोह येह कह कर अपने दिल को मना लेते कि येह तबाह कुन बारिश या क़हत साली या ज़ल्ज़ला या आंधी तूफ़ान जिस ने तबाही व बरबादी मचा दी और सब कुछ नेस्तो नाबूद कर दिया, येह हमारे बाप दादा को भी ऐसे ही तक्लीफ़ और राहत पहुंचती रही है इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी का कोई दख़्ल नहीं और न ही येह हमारी किसी अख़्लाक़ी कमज़ोरी, कारोबारी बद दियानती और ग़रीबों पर ज़ुल्मो तअद्दी की सज़ा है बल्कि येह सब मौसिमी तग़य्युरात का नतीजा हैं और ज़माने का दस्तूर ही येह है कभी तक्लीफ़ होती है कभी राहत ।[1]

ना गहानी आफ़ात और मुसल्मानों की हालते ज़ार

इन गुज़री हुई क़ौमों के हालात को सामने रखते हुए हमें चाहिये कि हम अपने मौजूदा हालात पर थोड़ा ग़ौर कर लें और अपने गिरेबान में झांक कर अपना मुहासबा करने की कोशिश करें कि ऐसी कौन सी मुसीबत है जिस से हम दोचार नहीं हुए, अब भी तूफ़ान, ज़ल्ज़ले, सैलाब आते हैं लेकिन इन से इब्रत हासिल करने की बजाए उन की साइन्सी तहक़ीक़ात पर ग़ौर किया जाता है और जो लोग इस मुसीबत में मुब्तला हों उन का तमाशा देखा जाता है । बक़िय्या इन चीज़ों को देख कर इब्रत हासिल करना, तौबा की तरफ़ राग़िब होना, बारगाहे इलाही में रुजूअ करना, बुरे आ'माल छोड़ देना, नेक आ'माल में मश्ग़ूल हो जाना, ज़ुल्मो सितम और बद दियानती को छोड़ देना येह सब कुछ फिर भी नहीं किया जाता बल्कि अफ़्सोस ! हमारे दिल की सख़्ती का तो येह आलम है कि तूफ़ान का सुन कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से पनाह मांगने और अपने गुनाहों से तौबा करने की बजाए ख़ुशी ख़ुशी साहिले समुन्दर की तरफ़ तूफ़ान का नज़ारा करने दौड़ते हैं, गोया आने वाले तूफ़ान जो मुम्किन था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अज़ाब हों उसे भी अपनी तफ़रीह का एक ज़रीआ समझ लेते हैं, ज़ल्ज़ला या सैलाब की तबाही देख कर इब्रत पकड़ने की बजाए उन मुसीबत ज़दों की जानो माल और इज़्ज़तो आबरू पर डाके डालने लग गए । उन मुसीबत के मारों के लिये इमदाद रक़्सो सुरूर की महफ़िलें सजा कर, बेहया औरतों के डान्स दिखा कर, फ़ोहश और गन्दे गाने सुना कर जम्अ करने लग गए । **अल्लाह** तआला हमारी क़ौम को अक़्ले सलीम अता फ़रमाए । बादल, आंधी वग़ैरा को देख कर सरकारे दो आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अमले मुबारक क्या था इसे इस हदीसे पाक की रोशनी में मुलाहज़ा फ़रमाएं, हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है कि जब रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तेज़ आंधी को मुलाहज़ा फ़रमाते और जब बादल आस्मान पर छा जाते तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अक़्दस का रंग मुतग़य्यर हो जाता और आप कभी हुजरे से बाहर तशरीफ़ ले जाते और कभी वापस आ जाते, फिर जब बारिश हो जाती तो येह

1 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۹۵، ۵/۳۲۱، ملخصاً.

www.dawateislami.net

कैफ़िय्यत ख़त्म हो जाती । मैं ने इस की वज्ह पूछी तो इर्शाद फ़रमाया : ऐ आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ! मुझे येह ख़ौफ़ हुवा कि कहीं येह बादल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब न हो जो मेरी उम्मत पर भेजा गया हो ।[1]

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰۤى اٰمَنُوْا وَ اتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ وَ لٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۹۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर बस्तियों वाले ईमान लाते और डरते तो ज़रूर हम उन पर आस्मान और ज़मीन से बरकतें खोल देते मगर उन्हों ने तो झुटलाया तो हम ने उन्हें उन के किये पर गिरिफ़्तार किया ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर बस्तियों वाले ईमान लाते और तक़्वा इख़्तियार करते तो ज़रूर हम उन पर आस्मान और ज़मीन से बरकतें खोल देते मगर उन्हों ने तो झुटलाया तो हम ने उन्हें उन के आ'माल की वज्ह से पकड़ लिया ।

﴿وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰۤى اٰمَنُوْا وَ اتَّقَوْا﴾ : **और अगर बस्तियों वाले ईमान लाते और तक़्वा इख़्तियार करते ।** पहली आयत में बयान हुवा कि जब उन क़ौमों ने ना फ़रमानी और सरकशी का रास्ता इख़्तियार किया तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन पर अपना अ़ज़ाब नाज़िल किया और इस आयत में बताया जा रहा है कि अगर वोह लोग इताअ़तो फ़रमां बरदारी करते तो इस सूरत में आस्मानी और ज़मीनी बरकतें उन्हें नसीब होतीं चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया कि अगर बस्तियों वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस के फ़िरिश्तों, उस की किताबों, उस के रसूलों और क़ियामत के दिन पर ईमान लाते और ख़ुदा और रसूल की इताअ़त इख़्तियार करते और जिस चीज़ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और रसूल عَلَیْہِ السَّلَام ने मन्अ़ फ़रमाया उस से बाज़ रहते तो ज़रूर हम उन पर आस्मान और ज़मीन से बरकतें खोल देते और हर त़रफ़ से उन्हें ख़ैर पहुंचती, वक़्त पर नाफ़ेअ़ और मुफ़ीद बारिशें होतीं, ज़मीन से खेती फल ब कसरत पैदा होते, रिज़्क़ की फ़राख़ी होती, अम्नो सलामती रहती और आफ़तों से महफ़ूज़ रहते ।[2]

तक़्वा रह़मते इलाही मिलने का ज़रीआ़ है

इस से मा'लूम हुवा कि तक़्वा दुन्या में भी और आख़िरत में भी रह़मते इलाही का

1 .....شعب الایمان، الحادی عشر من شعب الایمان... الخ، ۱/۵٤٦، الحدیث: ۹۹٤.

2 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۹٦، ۵/۳۲۱.

www.dawateislami.net

ज़रीआ़ है। एक और मक़ाम पर **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا[1]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो **अल्लाह** से डरे **अल्लाह** उस के लिये (दुन्या व आख़िरत की मुसीबतों से) निकलने का रास्ता बना देगा।

मसाइब की दूरी के लिये नेक आ'माल करने जाइज़ हैं

इस से येह भी मा'लूम हुवा कि दुन्यावी मसाइब दूर करने के लिये नेक आ'माल करने जाइज़ हैं या'नी **अल्लाह** तआ़ला को राज़ी करने के लिये अ़मल किया जाए ताकि वोह अपनी रह़मत फ़रमाते हुए हमारी ह़ाजत पूरी कर दे, इसी लिये बारिश के लिये नमाज़े इस्तिस्क़ा और ग्रहन में नमाज़े कुसूफ़ पढ़ते हैं। यहां हम ज़ाहिरी और बात़िनी मसाइब की दूरी के लिये अह़ादीस में मज़्कूर चन्द आ'माल ज़िक्र करते हैं ताकि मुसल्मान उन पर अ़मल कर के अपने मसाइब दूर करने की कोशिश करें।

(1)..... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं ने सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना कि जिस मुसल्मान पर कोई मुसीबत आए और वोह **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म के मुत़ाबिक़ "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ" पढ़े (और येह दुआ़ करे) "اَللّٰهُمَّ اْجُرْنِیْ فِیْ مُصِیْبَتِیْ وَاَخْلِفْ لِیْ خَیْرًا مِّنْهَا" ऐ **अल्लाह** ! मेरी इस मुसीबत पर मुझे अज्र अ़त़ा फ़रमा और मुझे इस का बेहतर बदल अ़त़ा फ़रमा" तो **अल्लाह** तआ़ला उस को उस से बेहतर बदल अ़त़ा फ़रमाएगा।[2]

(2)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह दिल ऐसे ज़ंग आलूद होते रहते हैं जैसे लोहा पानी लगने से ज़ंग आलूद हो जाता है।" अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, उन दिलों की सैक़ल क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : "मौत की ज़ियादा याद और क़ुरआने करीम की तिलावत।"[3]

(3)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स रोज़ाना रात के वक़्त सूरए वाक़िअ़ह पढ़े तो वोह फ़ाक़े से हमेशा महफ़ूज़ रहेगा।"[4]

(4)..... ह़ज़रते अ़त़ा बिन अबी रबाह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, मुझे ख़बर मिली है कि हुज़ूरे

1 .....الطلاق: ۲. 2 .....مسلم، کتاب الجنائز، باب ما یقال عند المصیبة، ص ٤٥٧، الحدیث: ٣ (٩١٨).
3 .....شعب الایمان، التاسع عشر من شعب الایمان... الخ، ۳۵۲/۲، الحدیث: ٢٠١٤.
4 .....شعب الایمان، التاسع عشر من شعب الایمان... الخ، فصل فی فضائل السور والآیات، ۴۹۲/۲، الحدیث: ٢٥٠٠.

www.dawateislami.net

पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो दिन के शुरूअ़ में सूरए यासीन पढ़ ले तो उस की तमाम ज़रूरतें पूरी होंगी।"(1)

﴿وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا﴾ : **मगर उन्हों ने तो झुटलाया।** या'नी ईमान लाने की सूरत में तो हम उन्हें ज़मीनी और आस्मानी बरकतों से नवाज़ते लेकिन वोह ईमान न लाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूलों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को झुटलाने लगे तो हम ने उन्हें उन के आ'माल की वज्ह से अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार कर दिया।(2)

वुस्अ़ते रिज़्क़ सआ़दत भी है और वबाल भी

इस आयत से साबित हुवा कि जब इन्सान **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र गुज़ार बन्दा हो तो रिज़्क़ में वुस्अ़त और फ़राख़ दस्ती सआ़दत है और जब नाशुक्र हो तो येह उस के लिये वबाल है। एक और मक़ाम पर इर्शादे बारी तआ़ला है :

وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब तुम्हारे रब ने ए'लान फ़रमा दिया कि अगर तुम मेरा शुक्र अदा करोगे तो मैं तुम्हें और ज़ियादा अ़ता करूंगा और अगर तुम नाशुक्री करोगे तो मेरा अ़ज़ाब सख़्त है।

اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿۹۷﴾ اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿۹۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या बस्तियों वाले नहीं डरते कि उन पर हमारा अ़ज़ाब रात को आए जब वोह सोते हों। या बस्तियों वाले नहीं डरते कि उन पर हमारा अ़ज़ाब दिन चढ़े आए जब वोह खेल रहे हों।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या बस्तियों वाले इस बात से बे ख़ौफ़ हो गए कि उन पर हमारा अ़ज़ाब रात को आए जब वोह सो रहे हों। या बस्तियों वाले इस बात से बे ख़ौफ़ हैं कि उन पर हमारा अ़ज़ाब दिन के वक़्त आ जाए जब वोह खेल में पड़े हुए हों।

1 .....دارمی، کتاب فضائل القرآن، باب فی فضل یٰس، ۲/۵۴۹، الحدیث: ۳۴۱۸.
2 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۹۶، ۲/۱۲۲. 3 .....ابراھیم: ۷.

www.dawateislami.net

﴿اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى﴾ : **क्या बस्तियों वाले बे ख़ौफ़ हो गए** ।﴾ यहां बस्तियों वालों से मुराद मक्कए मुकर्रमा और आसपास की बस्तियों वाले हैं और एक क़ौल येह है कि इस से मुराद हर उस बस्ती के अफ़्राद हैं जिन्हों ने कुफ़्र किया और **अल्लाह** के नबी को झुटलाया। इस आयत और इस से अगली आयत में उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से डराया जा रहा है कि कहीं ऐसा न हो उन की ग़फ़्लत के अवक़ात में मसलन रात को सोते वक़्त या दिन में उस वक़्त जब येह खेलकूद में पड़े हों उन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब नाज़िल हो जाए क्यूं कि अ़ज़ाबे इलाही अक्सर ग़फ़्लत के वक़्त आता है और ग़फ़्लत ज़ियादा तर रात के आख़िरी हिस्से में या पूरे दिन चढ़े होती है।[1]

नेक आ'माल करने और अ़ज़ाबे इलाही से डरने की तरग़ीब

इन आयात में जहां कुफ़्फ़ार को **अल्लाह** तआ़ला के अ़ज़ाब से डराया गया है वहीं मुसल्मानों को भी नेक आ'माल करने और **अल्लाह** तआ़ला के अ़ज़ाब से डरते रहने की तरग़ीब दी गई है। एक और मक़ाम पर **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ[2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** से डरो जैसा उस से डरने का ह़क़ है और ज़रूर तुम्हें मौत सिर्फ़ इस्लाम की ह़ालत में आए।

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ मुसल्मानों के गुरौह ! **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हें जिस चीज़ की रग़बत दी है उस में रग़बत रखो और जिस चीज़ से या'नी अपने अ़ज़ाब, झिड़क और जहन्नम से डराया है तो उस से बचो और डरो। अगर जन्नत का एक क़त़रा तुम्हारे साथ दुन्या में हो जिस में तुम अब मौजूद हो तो वोह तुम्हारे लिये उसे अच्छा कर दे और अगर जहन्नम का एक क़त़रा तुम्हारी इस दुन्या में आ जाए तो वोह उसे तुम पर ख़राब कर दे[3]।"[4]

اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۹۹﴾ ع

ع ۱۲

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۹۷، ۲/۱۲۲. 2 .....اٰل عمران: ۱۰۲.
3 .....البعث والنشور للبیھقی، باب ما جاء فی طعام اھل النار وشرابھم، ص۳۰۳، الحدیث: ۵۴۶.
4 ..... नेक आ'माल की रग़बत और जज़्बा पाने और अपने दिलों में **अल्लाह** तआ़ला के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ उजागर करने के लिये दा'वते इस्लामी के साथ वाबस्तगी मुफ़ीद है।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या **अल्लाह** की ख़फ़ी तदबीर से निडर हैं तो **अल्लाह** की ख़फ़ी तदबीर से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या वोह **अल्लाह** की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ हैं तो **अल्लाह** की ख़ुफ़्या तदबीर से सिर्फ़ तबाह होने वाले लोग ही बे ख़ौफ़ होते हैं।

﴿اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ﴾ **: क्या वोह अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ हैं ।﴾** मक्र के लुग़वी मा'ना हैं "ख़ुफ़्या तदबीर" जब कि आ़म मुहावरे में धोका और फ़रेब को "मक्र" कहा जाता है, यहां इस का लुग़वी मा'ना या'नी ख़ुफ़्या तदबीर मुराद है। इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला के ख़ास ग़ज़ब का ज़िक्र है चुनान्चे फ़रमाया गया : क्या कुफ़्फ़ार **अल्लाह** तआ़ला की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ हैं और उस के ढील देने और दुन्यवी ने'मतें देने पर मग़रूर हो कर उस के अ़ज़ाब से बे फ़िक्र हो गए हैं सुन लो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से सिर्फ़ तबाह होने वाले लोग ही बे ख़ौफ़ होते हैं और उस के मुख़्लिस बन्दे उस का ख़ौफ़ रखते हैं।

अल्लाह तआ़ला की ख़ुफ़्या तदबीर से हर वक़्त डरते रहना चाहिये

इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ का दिल से निकल जाना सख़्त नुक़्सान का सबब है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ढील या उस का किसी बन्दे को गुनाह पर न पकड़ना येह उस की ख़ुफ़्या तदबीर है लिहाज़ा हर वक़्त **अल्लाह** तआ़ला की ख़ुफ़्या तदबीर से डरते रहना चाहिये। तरग़ीब के लिये चन्द हिकायात पेश की जाती हैं :

(1)..... ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام एक मरतबा बारगाहे रिसालत में रोते हुए ह़ाज़िर हुए तो रह़मते दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त किया : "ऐ जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ! तुम्हें किस चीज़ ने रुला दिया ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : जब से **अल्लाह** तआ़ला ने जहन्नम को पैदा फ़रमाया है, मेरी आंखें उस वक़्त से कभी इस ख़ौफ़ के सबब ख़ुश्क नहीं हुईं कि मुझ से कहीं कोई ना फ़रमानी न हो जाए और मैं जहन्नम में डाल दिया जाऊं।[1]

(2)..... जब इब्लीस के मरदूद होने का वाक़िआ़ हुवा तो ह़ज़रते जिब्राईल और ह़ज़रते मीकाईल عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام रोने लगे तो रब तआ़ला ने दरयाफ़्त किया (ह़ालां कि वोह सब जानता है) "तुम क्यूं रोते हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरी ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ नहीं हैं। रब तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : तुम इसी ह़ालत पर रहना (या'नी कभी मुझ से बे ख़ौफ़

1 .....شعب الايمان، الحادى عشر من شعب الايمان... الخ، ١/٥٢١، الحديث: ٩١٥.

www.dawateislami.net

मत होना) ।[1]

(3)..... ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक बार मैं ने ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक बाग़ की दीवार के पास देखा कि वोह अपने आप से फ़रमा रहे थे : "वाह ! लोग तुझे अमीरुल मुअमिनीन कहते हैं और तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से नहीं डरता, अगर तू ने रब तआ़ला का ख़ौफ़ न रखा तो उस के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हो जाएगा ।"[2]

(4)..... ह़ज़रते रबीअ़ बिन ख़ैसम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की साहिब ज़ादी ने उन से कहा : अब्बाजान ! मैं देखती हूं कि सब लोग सोते हैं और आप नहीं सोते इस की वज्ह क्या है ? फ़रमाया : ऐ मेरी नूरे नज़र ! तेरा बाप रात को सोने से डरता है । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इशारा ऊपर मज़्कूर आयत की त़रफ़ था ।[3]

(5)..... ह़ज़रते ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चालीस बरस तक नहीं हंसे, जब उन को बैठे हुए देखा जाता तो यूं मा'लूम होता गोया एक क़ैदी हैं जिसे गरदन उड़ाने के लिये लाया गया हो, और जब गुफ़्तगू फ़रमाते तो अन्दाज़ ऐसा होता गोया आख़िरत को आंखों से देख देख कर बता रहे हैं, और जब ख़ामोश रहते तो ऐसा महसूस होता गोया उन की आंखों में आग भड़क रही है, जब उन से इस क़दर ग़मगीन व ख़ौफ़ज़दा रहने का सबब पूछा गया तो फ़रमाया : "मुझे इस बात का ख़ौफ़ है कि अगर **अल्लाह** तआ़ला ने मेरे बा'ज़ ना पसन्दीदा आ'माल को देख कर मुझ पर ग़ज़ब फ़रमाया और येह फ़रमा दिया कि जाओ ! मैं तुम्हें नहीं बख़्शता तो मेरा क्या बनेगा ?"[4]

अल्लाह तआ़ला हमारे ईमान की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए और हमें अपनी ख़ुफ़्या तदबीर से डरते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, आमीन ।

أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ أَهْلِهَا أَنْ لَوْ نَشَاءُ
أَصَبْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और क्या वोह जो ज़मीन के मालिकों के बा'द उस के वारिस हुए उन्हें

1 .....احیاء علوم الدین ، کتاب الخوف والرجاء، بیان احوال الانبیاء والملائکۃ... الخ، ۲۲۳/٤.
2 .....کیمیائے سعادت، رکن چہارم: منجیات، اصل ششم، مقام سیم، ۸۹۲/۲.
3 .....مدارك، الاعراف، تحت الآیۃ: ۹۹، ص۳۷۷.
4 .....احیاء علوم الدین، کتاب الخوف والرجاء، بیان احوال الصحابۃ والتابعین... الخ، ۲۳۱/٤.

www.dawateislami.net

इतनी हिदायत न मिली कि हम चाहें तो उन्हें उन के गुनाहों पर आफ़त पहुंचाएं और हम उन के दिलों पर मोहर करते हैं कि वोह कुछ नहीं सुनते।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और क्या वोह लोग जो ज़मीन वालों के बा'द उस के वारिस हुए उन्हें इस बात ने भी हिदायत न दी कि अगर हम चाहें तो उन के गुनाहों के सबब उन्हें पकड़ लें और हम उन के दिलों पर मोहर लगा देते हैं तो वोह कुछ नहीं सुनते।

﴿اَوَلَمْ یَهْدِ لِلَّذِیْنَ﴾ **: और क्या उन लोगों को हिदायत न मिली।** ﴾ इस से पहली आयात में **अल्लाह** तआ़ला ने गुज़श्ता उम्मतों के कुफ़्फ़ार का तफ़्सीली और इज्माली ह़ाल बयान फ़रमाया अब इस आयत में उन वाक़िआ़त को बयान करने की ह़िक्मत का ज़िक्र है कि येह वाक़िआ़त इन मौजूदा काफ़िरों की हिदायत के लिये बयान किये गए हैं ताकि उन से येह इ़ब्रत पकड़ें और ईमान लाएं।[1]

आयत का ख़ुलासा येह है कि मुश्रिकीने मक्का जो क़ौमे नूह़, क़ौमे समूद और क़ौमे मद्यन के बा'द उन अ़लाक़ों में आबाद हुए हैं इतने कम फ़ह्म और नादान हैं कि येह लोग गुज़श्ता क़ौमों पर अ़ज़ाब के आसार देख कर इतनी इ़ब्रत भी ह़ासिल नहीं करते कि जिन की सर ज़मीन का इन्हें वारिस बनाया गया उन का ना फ़रमानी के सबब कितना बुरा अन्जाम हुवा ? क्या इन लोगों को इतनी बात भी समझ नहीं आती कि जिस रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ ने पिछली क़ौमों को उन के करतूतों की सज़ा दी वोह आज इन्हें भी सज़ा देने पर क़ादिर है।

﴿وَنَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ﴾ **: और हम उन के दिलों पर मोहर लगा देते हैं।** ﴾ इस का मा'ना येह है कि जिस के सामने **अल्लाह** तआ़ला ने हिदायत के रास्ते वाज़ेह़ फ़रमा दिये और गुज़श्ता उम्मतों की मिसालें भी बयान फ़रमा दीं वोह इस के बा'द भी अपने कुफ़्र और सरकशी पर क़ाइम रहे तो **अल्लाह** तआ़ला उस के दिल पर मोहर लगा देता है जिस के सबब वोह किसी ह़क़ बात को क़बूल करने के लिये सुनता ही नहीं।[2]

इस आयत में नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तसल्ली दी गई है कि आप के हर त़रह़ से इन्हें नसीह़त करने के बा वुजूद भी अगर येह लोग ईमान नहीं लाते तो आप ग़म न करें, आप की तब्लीग़ के मुअस्सिर होने में कोई कमी नहीं है बल्कि अस्ल बात येह है कि इन्हें कुफ़्र व हटधर्मी की सज़ा देने के लिये हम ने इन के दिलों पर मोहर लगा दी है।

1 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۰۰، ۵/۳۲۳، ملتقطاً. 2 .....البحر المحیط، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۰۰، ۴/۳۵۲.

www.dawateislami.net

تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآىِٕهَا ۚ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۰۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह बस्तियां हैं जिन के अह़वाल हम तुम्हें सुनाते हैं और बेशक उन के पास उन के रसूल रोशन दलीलें ले कर आए तो वोह इस क़ाबिल न हुए कि वोह उस पर ईमान लाते जिसे पहले झुटला चुके थे **अल्लाह** यूंही छाप लगा देता है काफ़िरों के दिलों पर।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह बस्तियां हैं जिन के अह़वाल हम तुम्हें सुनाते हैं और बेशक उन के पास उन के रसूल रोशन दलाइल ले कर तशरीफ़ लाए तो वोह इस क़ाबिल न हुए कि उस पर ईमान ले आते जिसे पहले झुटला चुके थे। **अल्लाह** यूंही काफ़िरों के दिलों पर मोह़र लगा देता है।

﴿تِلْكَ الْقُرٰى﴾ **: येह बस्तियां हैं।** ﴾ इस आयत में ख़िताब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से है और बस्तियों से वोह पांच बस्तियां मुराद हैं कि जिन के अह़वाल का ज़िक्र मा क़ब्ल आयात में गुज़रा या'नी क़ौमे नूह़, क़ौम हूद, क़ौमे सालेह़, क़ौमे लूत़ और क़ौमे शुऐ़ब की बस्तियां।[1]

अल्लाह तआ़ला अपने मह़बूब को तसल्ली देते हुए इर्शाद फ़रमाता है कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, हम तुम्हें उन बस्तियों और उन में रहने वालों के बारे में बताते हैं, उन के ह़ालात और उन के अपने रसूलों के साथ किये गए मुआ़मलात की ख़बर देते हैं ताकि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप जान लो कि हम रसूलों और उन पर ईमान लाने वालों की उन के दुश्मन कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में कैसी मदद फ़रमाते हैं और कुफ़्फ़ार को उन के कुफ़्रो इनाद और सरकशी की सज़ा में किस त़रह़ हलाक करते हैं, लिहाज़ा मुश्रिकीने मक्का को चाहिये कि पिछली क़ौमों के ह़ालात से इ़ब्रतो नसीह़त ह़ासिल करें और अपनी सरकशी से बाज़ आ जाएं

1 .....البحر المحیط، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۰۱، ۴/۳۵۳، تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۰۱، ۵/۳۲۴، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

वरना इन का अन्जाम भी उन्ही जैसा होगा ।[1]

﴿فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ﴾ : **तो वोह इस क़ाबिल न हुए कि उस पर ईमान ले आते जिसे पहले झुटला चुके थे ।**﴾ इस आयत की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीन ने मुतअ़द्दद अक़्वाल नक़्ल किये हैं :

(1)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : इस का मा'ना येह है कि आ़लमे अरवाह़ में मीसाक़ के दिन वोह लोग जिस चीज़ को दिल से झुटला चुके थे कि सिर्फ़ ज़बान से "بَلٰی" कह कर इक़्रार कर लिया और दिल से इन्कार किया था उसे नबी से सुन कर भी न माने बल्कि उसी इन्कार पर क़ाइम रहे ।[2]

(2)..... इमाम मुजाहिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस का मा'ना येह है कि अगर हम उन लोगों को हलाक करने और अ़ज़ाब का मुआ़यना करवाने के बा'द दोबारा ज़िन्दा कर के दुन्या में भेज देते तब भी वोह उस चीज़ को न मानते जिसे वोह पहली ज़िन्दगी में झुटला चुके थे ।[3]

(3)..... नबियों के मो'जिज़ात देखने से पहले जिस चीज़ को झुटला चुके थे उसे मो'जिज़ात देख कर भी न माने ।[4]

(4)..... अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तशरीफ़ आवरी पर पहले दिन जिस का इन्कार कर चुके थे आख़िर तक उसे न माने झुटलाते ही रहे ।[5]

﴿كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ﴾ : **अल्लाह यूंही काफ़िरों के दिलों पर मोह़र लगा देता है ।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, जिस त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला ने साबिक़ा उम्मतों के कुफ़्फ़ार के दिलों पर मोह़र लगा दी और उन्हें हलाक कर दिया इसी त़रह़ आप की क़ौम के उन काफ़िरों के दिलों पर **अल्लाह** तआ़ला मोह़र लगा देता है जिन के बारे में **अल्लाह** तआ़ला लिख चुका कि येह ईमान नहीं लाएंगे ।[6]

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ١٠١، ٢/١٢٣.
2 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ١٠١، ٥/٣٢٤.
3 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ١٠١، ٢/١٢٣.
4 .....تفسیر قرطبی، الاعراف، تحت الآیۃ: ١٠١، ٤/١٨٤، الجزء السابع.
5 .....مدارک، الاعراف، تحت الآیۃ: ١٠١، ص٣٧٧.
6 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ١٠١، ٢/١٢٣.

www.dawateislami.net

وَمَا وَجَدْنَا لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ ۚ وَ اِنْ وَّجَدْنَاۤ اَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِیْنَ ﴿۱۰۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन में अक्सर को हम ने क़ौल का सच्चा न पाया और ज़रूर उन में अक्सर को बे हुक्म ही पाया।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने उन के अक्सर लोगों को अ़ह्द पूरा करने वाला न पाया और बेशक हम ने उन में अक्सर को ना फ़रमान ही पाया।

﴿وَمَا وَجَدْنَا لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ﴾ : **और हम ने उन के अक्सर लोगों को अ़ह्द पूरा करने वाला न पाया।** ﴾ इस अ़ह्द से मुराद वोह वा'दा और अ़ह्दो पैमान है जो **अल्लाह** तआ़ला ने मीसाक़ के दिन उन से लिया था या मुराद येह है कि जब कभी कोई मुसीबत आती तो अ़ह्द करते कि या रब ! عَزَّوَجَلَّ, अगर तू हमें इस से नजात दे तो हम ज़रूर ईमान लाएंगे फिर जब नजात पाते तो उस अ़ह्द से फिर जाते और ईमान न लाते।[1]

मुसीबत के वक़्त अ़ह्दो पैमान और बा'द में उस के बर ख़िलाफ़

आयत में अ़ह्द की जो दूसरी तफ़्सीर बयान की गई है उस को पेशे नज़र रख कर अपने अह़वाल पर ग़ौर करें तो मा'लूम होता है कि हमारे अन्दर भी अ़मली ए'तिबार से ऐसी कमज़ोरियां पाई जाती हैं कि कोई बीमार पड़ता है या मुसीबत में मुब्तला होता है तो **अल्लाह** तआ़ला से अ़ह्दो पैमान करता है कि ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, एक मरतबा मुझे इस मुसीबत से छुटकारा दे दे, दोबारा सारी ज़िन्दगी तेरी फ़रमां बरदारी में गुज़ारूंगा मगर जैसे ही वोह मुसीबत दूर होती है तो येह सब अ़ह्दो पैमान पसे पुश्त डाल दिये जाते हैं और वोही पुरानी मौज मस्ती और ग़फ़्लतो मा'सियत की ज़िन्दगी लौट आती है।

यहां तक ह़ज़रते नूह़, ह़ज़रते हूद, ह़ज़रते सालेह़, ह़ज़रते लूत़ और ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और इन की उम्मतों के वाक़िआ़त बयान फ़रमाए गए अब इस के बा'द वाली आयतों से ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का तज़्किरा शुरूअ़ होता है।

(1) .....بغوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۰۲، ۲/۱۵٤، مدارک، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۰۲، ص۳۷۷، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۱۰۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर उन के बा'द हम ने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔ़न और उस के दरबारियों की त़रफ़ भेजा तो उन्हों ने उन निशानियों पर ज़ियादती की तो देखो कैसा अन्जाम हुवा मुफ़्सिदों का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर उन के बा'द हम ने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔ़न और उस की क़ौम की त़रफ़ भेजा तो उन्हों ने उन निशानियों पर ज़ियादती की तो देखो फ़सादियों का कैसा अन्जाम हुवा ?

﴿ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى﴾ **: फिर उन के बा'द हम ने मूसा को भेजा ।** इस सूरत में जो वाक़िआ़त मज़्कूर हैं उन में से येह छटा क़िस्सा है। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वाक़िए़ को मा क़ब्ल ज़िक्र किये गए अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वाक़िआ़त के मुक़ाबले में तफ़्सील से बयान किया गया है क्यूं कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात उन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात के मुक़ाबले में ज़ियादा मज़बूत़ थे और आप की क़ौम की जहालत भी दीगर नबियों की अक़्वाम के मुक़ाबले में ज़ियादा थी।[1]

इस आयत का ख़ुलासा येह है कि इस से पहली आयात में जिन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़िक्र हुवा उन के बा'द हम ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को उन की सदाक़त पर दलालत करने वाली निशानियों जैसे रोशन हाथ और अ़सा वग़ैरा मो'जिज़ात के साथ फ़िरऔ़न और उस की क़ौम की त़रफ़ भेजा तो उन्हों ने उन निशानियों पर ज़ियादती की क्यूं कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जो निशानियां ले कर आए थे वोह बिल्कुल साफ़ वाज़ेह़ और ज़ाहिर थीं लेकिन फिर भी फ़िरऔ़न और उस के दरबारियों ने इक़्रार की बजाए इन्कार ही किया तो उन्हों ने इक़्रार की जगह इन्कार और ईमान की जगह कुफ़्र को रख कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की निशानियों के साथ ज़ियादती की तो ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप निगाहे बसीरत से देखें कि फ़सादियों का कैसा अन्जाम हुवा और हम ने उन्हें किस त़रह़ हलाक

[1] .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۰۳، ۵/۳۲۴.

www.dawateislami.net

किया ।[1]

ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मुख़्तसर तआ़रुफ़

ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वालिद का नाम इ़मरान और आप की वालिदा का अयारख़ा भी मज़्कूर है। आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद में से हैं। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वफ़ात से चार सो बरस और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से सात सो बरस बा'द पैदा हुए और आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने एक सो बीस बरस उ़म्र पाई ।[2]

नोट : ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़िन्दगी के अहम वाक़िआ़त **अल्लाह** तआ़ला ने इस सूरत और दीगर सूरतों में बयान फ़रमाए हैं उन की तफ़्सील اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन आयतों की तफ़्सीर में बयान की जाएगी ।

फ़िरऔ़न का मुख़्तसर तआ़रुफ़

फ़िरऔ़न अस्ल में एक शख़्स का नाम था फिर दौरे जाहिलिय्यत में येह मिस्र के हर बादशाह का लक़ब बन गया। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़माने के फ़िरऔ़न का नाम वलीद बिन मुस्अ़ब बिन रय्यान था ।[3]

وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और मूसा ने कहा ऐ फ़िरऔ़न मैं परवर्दगारे आ़लम का रसूल हूं।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और मूसा ने फ़रमाया : ऐ फ़िरऔ़न ! मैं रब्बुल आ़लमीन का रसूल हूं।

﴿وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ﴾ **: और मूसा ने फ़रमाया : ऐ फ़िरऔ़न !** जब **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़िरऔ़न के पास तशरीफ़ ले गए तो उसे **अल्लाह** तआ़ला की रबूबिय्यत का इक़्रार करने और उस पर ईमान लाने की दा'वत दी और उस से फ़रमाया : मैं

1 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۰۳، ۵/۳۲۵، خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۰۳، ۲/۱۲۳-۱۲۴، ملتقطاً.

2 .....البدایہ والنہایہ، ذکر قصۃ موسی الکلیم علیہ الصلاۃ والتسلیم، ۱/۳۲۶، ۳۲۹، صاوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۰۳، ۲/۶۹۶، ملتقطاً.

3 .....صاوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۰۳، ۲/۶۹۶.

www.dawateislami.net

रब्बुल आ़लमीन की त़रफ़ से तेरी जानिब और तेरी क़ौम की त़रफ़ रसूल बना कर भेजा गया हूं।[1]

नोट : सूरए शुअ़राअ और सूरए طٰہٰ में इस से पहले का तफ़्सीली वाक़िआ़ मज़्कूर है।

حَقِیْقٌ عَلٰۤى اَنْ لَّاۤ اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَیِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ مَعِیَ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ ۝۱۰۵

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मुझे सज़ावार है कि **अल्लाह** पर न कहूं मगर सच्ची बात मैं तुम सब के पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से निशानी ले कर आया हूं तो तू बनी इसराईल को मेरे साथ छोड़ दे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मेरी शान के लाइक़ येही है कि **अल्लाह** के बारे में सच के सिवा कुछ न कहूं। बेशक मैं तुम सब के पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से निशानी ले कर आया हूं तो बनी इसराईल को मेरे साथ छोड़ दे।

﴿حَقِیْقٌ﴾ **: मेरी शान के लाइक़ येही है।** ﴾ ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का कलाम सुन कर फ़िरऔ़न ने कहा : तुम झूट बोलते हो, इस पर आप ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी शान के लाइक़ येही है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बारे में सच के सिवा कुछ न कहूं क्यूं कि रसूल की येही शान है कि वोह कभी ग़लत़ बात नहीं कहते।[2] और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से निशानियां या'नी मो'जिज़ात ले कर आया हूं।

﴿فَاَرْسِلْ مَعِیَ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ﴾ **: तो बनी इसराईल को मेरे साथ छोड़ दे।** ﴾ जब ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपनी रिसालत की तब्लीग़ से फ़ारिग़ हुए तो चूंकि आप का रसूल होना साबित हो चुका था और फ़िरऔ़न पर आप की इत़ाअ़त फ़र्ज़ हो गई थी इस लिये आप ने फ़िरऔ़न को हुक्म फ़रमाया : तू बनी इसराईल को अपनी ग़ुलामी से आज़ाद कर दे ताकि वोह मेरे साथ अर्ज़े मुक़द्दसा में चले जाएं जो उन का वत़न है। बनी इसराईल की ग़ुलामी का सबब येह हुवा था कि ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की औलाद ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वज्ह से अपने वत़न फ़िलिस्त़ीन से हिजरत कर के मिस्र में आबाद हो गई, मिस्र में इन की नस्ल काफ़ी बढ़ी, जब फ़िरऔ़न की हुकूमत आई तो उस ने इन्हें अपना ग़ुलाम बना लिया और इन से जब्री

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۰۴، ۲/۱۲۴. 2 .....مدارک، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۰۵، ص۳۷۸.

www.dawateislami.net

मशक़्क़त लेना शुरूअ़ कर दी। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इन्हें इस ग़ुलामी से नजात दिलाना चाही और फ़िरऔ़न से फ़रमाया कि बनी इसराईल को मेरे साथ भेज दे ताकि येह अपने आबाई वत़न में आबाद हों।[1]

قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ بِهَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۰۶﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۰۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बोला अगर तुम कोई निशानी ले कर आए हो तो लाओ अगर सच्चे हो। तो मूसा ने अपना अ़सा डाल दिया वोह फ़ौरन एक ज़ाहिर अज़्दहा हो गया।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : कहा : अगर तुम कोई निशानी ले कर आए हो तो उसे पेश करो अगर तुम सच्चे हो। तो मूसा ने अपना अ़सा डाल दिया तो वोह फ़ौरन एक ज़ाहिर अज़्दहा बन गया।

﴿قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ بِهَا﴾ **: कहा : अगर तुम कोई निशानी ले कर आए हो तो उसे पेश करो।** ﴾ इस आयत और इस के बा'द वाली आयत का ख़ुलासा येह है कि जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी रिसालत की तब्लीग़ मुकम्मल फ़रमाई तो फ़िरऔ़न ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से कहा : अगर आप के पास अपनी सदाक़त की कोई निशानी है तो मेरे सामने उसे ज़ाहिर करें ताकि पता चल जाए कि आप अपने दा'वे में सच्चे हैं या नहीं तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपना अ़सा ज़मीन पर डाल दिया, वोह फ़ौरन एक ज़ाहिर अज़्दहा बन गया।[2]

अ़साए कलीम अज़्दहाए ग़ज़ब

तफ़्सीरे सावी में है : जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने लाठी फेंकी तो वोह ज़र्द रंग का एक बालदार अज़्दहा बन गई, उस के दोनों जबड़ों के दरमियान तक़रीबन एक सो बीस फ़ुट का फ़ासिला था, वोह अपनी दुम पर खड़ा हो गया, उस का एक जबड़ा ज़मीन पर था और दूसरा जबड़ा फ़िरऔ़न के महल की दीवार पर था, वोह अज़्दहा फ़िरऔ़न को पकड़ने के लिये

1 .....صاوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۰۵، ۲/۶۹۷.
2 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۰۶-۱۰۷، ۲/۱۲۴.

www.dawateislami.net

दौड़ा तो फ़िरऔ़न अपना तख़्त छोड़ कर भाग गया ।[1]

وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿۱۰۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अपना हाथ गिरेबान में डाल कर निकाला तो वोह देखने वालों के सामने जगमगाने लगा ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अपना हाथ गिरेबान में डाल कर निकाला तो वोह देखने वालों के सामने जगमगाने लगा ।

﴿وَنَزَعَ يَدَهٗ : और अपना हाथ गिरेबान में डाल कर निकाला ।﴾ इस आयत में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दूसरे मो'जिज़े का ज़िक्र है कि आप ने अपना हाथ गिरेबान में डाल कर निकाला तो वोह देखने वालों के सामने जगमगाने लगा और उस की रोशनी और चमक नूरे आफ़्ताब पर ग़ालिब हो गई । एक रिवायत में है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़िरऔ़न को अपना हाथ दिखा कर पूछा कि "येह क्या है ?" फ़िरऔ़न ने जवाब दिया : आप का हाथ है । फिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपना हाथ गिरेबान में डाल कर निकाला तो वोह जगमगाने लगा ।[2]

दस्ते अक़्दस का कमाल

येह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुबारक हाथ का कमाल था, अब सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस का कमाल मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

हर ख़त़े कफ़ है यहां ऐ दस्ते बैज़ाए कलीम मोज्ज़न दरियाए नूरे बे मिसाली हाथ में

या'नी ऐ प्यारे मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के चमकते हुए नूरानी हाथ ! तेरी बड़ी शान है लेकिन हमारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते करम की हर लकीर से नूर का एक बे मिसाल दरिया मोज्ज़न है, इस से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि जब हर लकीर की येह शान है तो पूरे दस्ते अक़्दस की अ़ज़्मत का अन्दाज़ा कौन लगा सकता है ।

قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۰۹﴾

1 .....صاوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۰۷، ۲/۶۹۷. 2 .....مدارک، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۰۸، ص۳۷۸.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क़ौमे फ़िरऔ़न के सरदार बोले येह तो एक इ़ल्म वाला जादूगर है।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : क़ौमे फ़िरऔ़न के सरदार बोले : बेशक येह तो बड़े इ़ल्म वाला जादूगर है।

قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ : क़ौमे फ़िरऔ़न के सरदार बोले। जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी सदाक़त ज़ाहिर करने के लिये दो मो'जिज़ात दिखाए तो क़ौमे फ़िरऔ़न के सरदार बोले : बेशक येह तो बड़े इ़ल्म वाला जादूगर है जिस ने जादू से नज़र बन्दी कर दी और लोगों को अ़सा अज़्दहा नज़र आने लगा और गन्दुमी रंग का हाथ आफ़्ताब से ज़ियादा रोशन मा'लूम होने लगा। उन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुतअ़ल्लिक़ येह बात इस लिये कही कि उस ज़माने में जादू का बड़ा ज़ोर था, जादू की बहुत सी क़िस्में थीं और बा'ज़ क़िस्में बड़ी ह़ैरान कुन थीं, इसी लिये फ़िरऔ़न की क़ौम ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बारे में ख़याल किया कि येह जादू में बड़े माहिर हैं, फिर उन्हों ने आपस में एक दूसरे से कहा कि इन्हों ने इतना बड़ा जादू इस लिये पेश किया है कि येह शायद मुल्क व रियासत के त़लब गार हैं।[1]

يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ ۚ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿۱۱۰﴾ قَالُوْۤا اَرْجِهْ
وَاَخَاهُ وَاَرْسِلْ فِي الْمَدَآىِٕنِ حٰشِرِيْنَ ﴿۱۱۱﴾ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ﴿۱۱۲﴾
وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْۤا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ
الْغٰلِبِيْنَ ﴿۱۱۳﴾ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰۤى اِمَّاۤ
اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّاۤ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ﴿۱۱۵﴾ قَالَ اَلْقُوْا ۚ فَلَمَّاۤ اَلْقَوْا
سَحَرُوْۤا اَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۱۶﴾ وَاَوْحَيْنَاۤ
اِلٰى مُوْسٰۤى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ ۚ فَوَقَعَ

[1] .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۰۹، ۲/۱۲۵، تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۰۹، ۵/۳۳۰، ملتقطاً۔

www.dawateislami.net

الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۱۸﴾ فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا
صٰغِرِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿۱۲۰﴾ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۲۱﴾
رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाला चाहता है तो तुम्हारा क्या मश्वरा है। बोले उन्हें और उन के भाई को ठहरा और शहरों में लोग जम्अ़ करने वाले भेज दे। कि हर इ़ल्म वाले जादूगर को तेरे पास ले आएं। और जादूगर फ़िरऔ़न के पास आए बोले कुछ हमें इन्आ़म मिलेगा अगर हम ग़ालिब आएं। बोला हां और उस वक़्त तुम मुक़र्रब हो जाओगे। बोले ऐ मूसा या तो आप डालें या हम डालने वाले हों। कहा तुम्हीं डालो जब उन्हों ने डाला लोगों की निगाहों पर जादू कर दिया और उन्हें डरा दिया और बड़ा जादू लाए। और हम ने मूसा को वह़ी फ़रमाई कि अपना अ़सा डाल तो नागाह वोह उन की बनावटों को निगलने लगा। तो ह़क़ साबित हुवा और उन का काम बात़िल हुवा। तो यहां वोह मग़लूब पड़े और ज़लील हो कर पलटे। और जादूगर सज्दे में गिरा दिये गए। बोले हम ईमान लाए जहान के रब पर। जो रब है मूसा और हारून का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकालना चाहता है तो तुम क्या मश्वरा देते हो ? उन्हों ने कहा : उन्हें और उन के भाई को कुछ मोहलत दो और शहरों में जम्अ़ करने वालों को भेज दो। वोह तुम्हारे पास हर इ़ल्म वाले जादूगर को ले आएंगे। और (फिर) जादूगर फ़िरऔ़न के पास आ गए तो कहने लगे : अगर हम ग़ालिब आ गए तो (क्या) हमारे लिये यक़ीनी तौ़र पर कोई इन्आ़म होगा। (फ़िरऔ़न ने) कहा : हां और बेशक तुम तो (मेरे) क़रीबी लोगों में से हो जाओगे। (जादूगरों ने) कहा : ऐ मूसा ! या तो आप (अपना अ़सा) डालें या हम (कुछ) डालते हैं। फ़रमाया : तुम ही डालो। जब उन्हों ने डालीं तो लोगों की आंखों पर जादू कर दिया और उन्हें ख़ौफ़ज़दा कर दिया और वोह बहुत बड़ा जादू ले कर आए। और हम ने मूसा को वह़ी फ़रमाई कि तुम अपना अ़सा डाल दो तो अचानक वोह अ़सा उन की बनावटी चीज़ों को निगलने लगा। तो ह़क़ साबित हो गया और जो कुछ वोह कर रहे थे सब बात़िल हो गया। तो वोह वहीं मग़लूब हो गए और ज़लील हो कर पलटे। और जादूगर सज्दे में गिरा दिये गए। वोह कहने लगे : हम तमाम जहानों के रब पर ईमान लाए। जो मूसा और हारून का रब है।

www.dawateislami.net

﴿فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ﴾ : **तो तुम्हारा क्या मश्वरा है ।** इस आयत और इस के बा'द वाली 12 आयात में मज़्कूर वाक़िए का ख़ुलासा येह है कि दरबारियों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात देख कर उन्हें बहुत माहिर जादूगर समझा और इस ख़दशे का इज़्हार किया कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने जादू के ज़ोर से लोगों को अपना गिरवीदा बना कर मम्लकत पर क़ब्ज़ा जमाना चाहते हैं तो फ़िरऔ़न ने अपने दरबारियों से कहा : तुम इस के बारे में क्या मश्वरा देते हो ? उन्हों ने कहा : तुम ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन के भाई ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को चन्द रोज़ की मोहलत दो और शहरों में अपने ख़ास आदमी भेज दो ताकि वोह ऐसे जादूगर जम्अ़ कर के लाएं जो जादू में माहिर हों और सब पर फ़ाइक़ हों ताकि वोह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मुक़ाबला कर के उन्हें शिकस्त दें । चुनान्चे फ़िरऔ़न ने अपनी मम्लकत के तमाम माहिर जादूगरों को जम्अ़ कर लिया । उन जादूगरों को इ़ल्म था कि जिस मक़्सद के लिये उन्हें त़लब किया गया है वोह बड़ा अहम है चुनान्चे उन्हों ने फ़िरऔ़न से कहा : अगर हम ग़ालिब आ गए और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को शिकस्त दे दी तो क्या हमें यक़ीनी त़ौर पर कोई शाहाना इन्आ़म मिलेगा । फ़िरऔ़न येह तसल्ली आमेज़ अल्फ़ाज़ सुन कर बहुत ख़ुश हुवा और कहने लगा : बेशक तुम्हें इन्आ़मो इक्राम से नवाज़ा जाएगा और सिर्फ़ येही नहीं बल्कि तुम्हें मेरे ख़ास क़रीबी लोगों में दाख़िल कर लिया जाएगा । येह जादूगर कुल सत्तर हज़ार थे जिन में चन्द सरदार थे, जब मुक़ाबले का दिन आया तो सब मुक़र्ररा जगह पर जम्अ़ हुए, मुक़ाबले का आग़ाज़ हुवा तो जादूगरों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से कहा : ऐ मूसा ! या तो आप पहले अपना अ़सा ज़मीन पर डालें या हम अपने पास मौजूद चीज़ें डालते हैं । ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : तुम ही पहले डालो । ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का येह फ़रमाना इस लिये था कि आप को उन की कुछ परवाह न थी और आप को कामिल ए'तिमाद था कि उन के मो'जिज़े के सामने सेह्र नाकामो मग़्लूब होगा । जब उन्हों ने अपना सामान डाला जिस में बड़े बड़े रस्से और लकड़ियां थीं तो वोह अज़्दहे नज़र आने लगे और मैदान उन से भरा हुवा मा'लूम होने लगा । लोग येह देख कर ख़ौफ़ज़दा हुए । **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को वह़ी फ़रमाई कि तुम अपना अ़सा डाल दो । जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपना अ़सा डाला तो वोह एक अ़ज़ीमुश्शान अज़्दहा बन गया । वोह जादूगरों की सेह्र कारियों को एक एक कर के निगल गया और तमाम रस्से और लठ्ठे जो उन्हों ने जम्अ़ किये थे जो तीन सो ऊंट का बार थे सब का ख़ातिमा कर दिया जब मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस को दस्ते मुबारक में लिया तो पहले की त़रह़ अ़सा हो गया और उस का ह़ज्म और वज़्न अपने ह़ाल पर रहा येह देख कर जादूगरों ने पहचान लिया कि अ़साए मूसा सेह्र नहीं और क़ुदरते बशरी ऐसा

www.dawateislami.net

करिश्मा नहीं दिखा सकती ज़रूर येह अम्रे समावी है चुनान्चे येह मो'जिज़ा देख कर उन पर ऐसा असर हुवा कि वोह बे इख़्तियार ''اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ या'नी हम तमाम जहानों के रब पर ईमान लाए'' कहते हुए सज्दे में गिर गए और उन का ह़ाल ऐसे मा'लूम होता था कि किसी ने पेशानियां पकड़ कर ज़मीन पर लगा दीं ।[1]

﴿قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ رَبِّ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ﴾ **: बोले ऐ मूसा ।** ﴾ जादूगरों ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का येह अदब किया कि आप को मुक़द्दम किया और आप की इजाज़त के बिग़ैर अपने अ़मल में मश्ग़ूल न हुए, इस अदब का इ़वज़ उन्हें येह मिला कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें ईमान व हिदायत की दौलत से सरफ़राज़ फ़रमा दिया ।[2]

﴿سَحَرُوْۤا اَعْیُنَ النَّاسِ﴾ **: लोगों की आंखों पर जादू कर दिया ।** ﴾ इस आयत में जादूगरों के जादू के असर का ज़िक्र है कि उन्हों ने अपने फेंके हुए रस्सों और लाठियों की ह़क़ीक़त न बदली बल्कि लोगों की निगाहों पर असर डाल दिया कि लोगों को रींगते दौड़ते सांप मह़सूस हुए । इस से मा'लूम हुवा कि फ़िरऔ़न के जादूगरों के जादू की सूरत येह थी या'नी ह़क़ीक़त न बदली थी ।

﴿وَ جَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِیْمٍ﴾ **: और वोह बहुत बड़ा जादू ले कर आए ।** ﴾ जब जादूगरों ने मोटे रस्से और लम्बी लाठियां डालीं तो वोह पहाड़ों की मानन्द अज़्दहे बन गए जिस से मैदान भर गया और अज़्दहे एक दूसरे पर चढ़ने लगे । एक क़ौल येह है कि जादूगरों ने रस्सियों पर पारह मल दिया और लाठियों में भी पारह डाल दिया फिर उन्हें ज़मीन पर फेंक दिया, जब उन पर सूरज की रोशनी पड़ी तो ऐसे मह़सूस होने लगा कि येह दौड़ते हुए सांप हैं । वोह मैदान एक मील लम्बा था और पूरा मैदान सांपों से भरा पड़ा था । येह सूरते ह़ाल देख कर लोग ख़ौफ़ज़दा हो गए ।[3]

قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ؕ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِی
الْمَدِیْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَاۤ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ لَاُقَطِّعَنَّ اَیْدِیَكُمْ
وَ اَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِیْنَ ﴿۱۲۴﴾ قَالُوْۤا اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۱۰-۱۱۷، ۲/۱۲۵-۱۲۷، قرطبی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۱۶، ٤/ ۱۸۷، الجزء السابع، روح المعانی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۲۰-۱۲۱، ۵/۳۸، ملخصاً.

2 .....قرطبی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۱۵، ٤/۱۸٦، الجزء السابع. 3 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۱٦، ۲/۱۲۷.

www.dawateislami.net

مُنْقَلِبُوْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّاۤ اِلَّاۤ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰیٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ؕ رَبَّنَاۤ اَفْرِغْ عَلَیْنَا صَبْرًا وَّ تَوَفَّنَا مُسْلِمِیْنَ ﴿۱۲۶﴾ ع ۱۳

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फ़िरऔ़न बोला तुम इस पर ईमान ले आए क़ब्ल इस के कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं येह तो बड़ा जा'ल है जो तुम सब ने शह्र में फैलाया है कि शह्र वालों को इस से निकाल दो तो अब जान जाओगे। क़सम है कि मैं तुम्हारे एक त़रफ़ के हाथ और दूसरी त़रफ़ के पाउं काटूंगा फिर तुम सब को सूली दूंगा। बोले हम अपने रब की त़रफ़ फिरने वाले हैं। और तुझे हमारा क्या बुरा लगा येही ना कि हम अपने रब की निशानियों पर ईमान लाए जब वोह हमारे पास आईं ऐ रब हमारे हम पर सब्र उंडेल दे और हमें मुसल्मान उठा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फ़िरऔ़न ने कहा : तुम इस पर ईमान ले आए क़ब्ल इस के कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं। येह तो बहुत बड़ा धोका है जो तुम ने इस शह्र में किया है ताकि तुम शह्र के लोगों को इस से निकाल दो तो अब तुम जान जाओगे। मैं ज़रूर तुम्हारे एक त़रफ़ के हाथ और दूसरी त़रफ़ के पाउं काट दूंगा फिर तुम सब को फांसी दे दूंगा। (जादूगर) कहने लगे : बेशक हम अपने रब की त़रफ़ पलटने वाले हैं। और तुझे हमारी त़रफ़ से येही बात बुरी लगी है कि हम अपने रब की निशानियों पर ईमान ले आए जब वोह हमारे पास आईं। ऐ हमारे रब ! हम पर सब्र उंडेल दे और हमें ह़ालते इस्लाम में मौत अ़त़ा फ़रमा।

﴿قَالَ فِرْعَوْنُ﴾ **: फ़िरऔ़न बोला।** इस आयत और इस के बा'द वाली 3 आयात का ख़ुलासा येह है कि जब जादूगर ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर ईमान ले आए तो येह देख कर फ़िरऔ़न बोला : मेरी इजाज़त के बिग़ैर तुम ईमान क्यूं ले आए ? येह तो बहुत बड़ा धोका है जो तुम और ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام सब ने मुत्तफ़िक़ हो कर इस शह्र में किया है। तुम सब शागिर्द हो और ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तुम्हारे उस्ताद हैं, तुम ने ख़ुफ़्या साज़ बाज़ कर के येह मुक़ाबला किया और तुम जान बूझ कर हार गए ताकि तुम शह्र के लोगों को इस से निकाल दो और ख़ुद इस पर मुसल्लत़ हो जाओ तो अब तुम जान जाओगे कि मैं तुम्हारे साथ किस त़रह़ पेश आता हूं और मैं तुम्हें क्या सज़ा दूंगा। मैं ज़रूर तुम्हारे एक त़रफ़ के हाथ और दूसरी त़रफ़ के पाउं काट दूंगा फिर तुम सब को दरियाए नील के किनारे फांसी दे दूंगा। फ़िरऔ़न की इस गुफ़्तगू पर जादूगरों ने येह जवाब दिया : बेशक हम अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ पलटने वाले हैं,

www.dawateislami.net

तो हमें मौत का क्या ग़म ? क्यूं कि मरने के बा'द हमें अपने रब عَزَّوَجَلَّ की लिक़ा और उस की रह़मत नसीब होगी और जब सब को उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करना है तो वोह ख़ुद हमारे और तुम्हारे दरमियान फ़ैसला फ़रमा देगा । इस के बा'द उन जादूगरों ने सब्र की दुआ़ की, कि ''رَبَّنَاۤ اَفْرِغْ عَلَیْنَا صَبْرًا وَّ تَوَفَّنَا مُسْلِمِیْنَ'' ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हम पर सब्र उंडेल दे और हमें ह़ालते इस्लाम में मौत अ़त़ा फ़रमा ।

﴿ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِیْنَ﴾ : **फिर तुम सब को सूली दूंगा ।** ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि दुन्या में पहला सूली देने वाला और पहला हाथ पाउं काटने वाला फ़िरऔ़न है ।[1]

﴿قَالُوْۤا﴾ : **(जादूगर) कहने लगे ।** इस से मा'लूम हुवा कि मोमिन के दिल में जज़्बए ईमानी के ग़लबे के वक़्त ग़ैरुल्लाह का ख़ौफ़ नहीं होता । ह़क़ क़बूल करने के बा'द उन जादूगरों का ह़ाल येह हुवा कि फ़िरऔ़न की ऐसी होशरुबा सज़ा सुन कर भी उन के क़दम डगमगाए नहीं बल्कि उन्हों ने मज्मए़ आ़म में फ़िरऔ़न के मुंह पर उस की धमकी का बड़ी जुर्अत के साथ जवाब दिया और अपने ईमान को किसी तक़य्या के ग़िलाफ़ में न लपेटा ।

﴿وَ تَوَفَّنَا مُسْلِمِیْنَ﴾ : **और हमें ह़ालते इस्लाम में मौत अ़त़ा फ़रमा ।** ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : येह लोग दिन के अव्वल वक़्त में जादूगर थे और उसी रोज़ आख़िर वक़्त में शहीद ।[2]

मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सोह़बत ने पुराने काफ़िरों को एक दिन में ईमान, सह़ाबिय्यत, शहादत तमाम मदारिज त़ै करा दिये, सोह़बत का फ़ैज़ सब से ज़ियादा है । एक क़ौल येह भी है कि फ़िरऔ़न उन्हें शहीद न कर सका था ।[3]

وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِیُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ وَ یَذَرَكَ وَ اٰلِهَتَكَ ؕ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ وَ نَسْتَحْیٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَ اِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿۱۲۷﴾

1 .....تفسیر قرطبی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۲۳، ۴/۱۸۷، الجزء السابع.
2 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۲۶، ۲/۱۲۸. 3 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۲۴، ۵/۳۳۹.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और क़ौमे फ़िरऔ़न के सरदार बोले क्या तू मूसा और उस की क़ौम को इस लिये छोड़ता है कि वोह ज़मीन में फ़साद फैलाएं और मूसा तुझे और तेरे ठहराए हुए मा'बूदों को छोड़ दे बोला अब हम इन के बेटों को क़त्ल करेंगे और इन की बेटियां ज़िन्दा रखेंगे और हम बेशक इन पर ग़ालिब हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और क़ौमे फ़िरऔ़न के सरदार बोले : क्या तू मूसा और उस की क़ौम को इस लिये छोड़ देगा ताकि वोह ज़मीन में फ़साद फैलाएं और वोह मूसा तुझे और तेरे मुक़र्रर किये हुए मा'बूदों को छोड़े रखे। (फ़िरऔ़न ने) कहा : अब हम इन के बेटों को क़त्ल करेंगे और इन की बेटियां ज़िन्दा रखेंगे और बेशक हम इन पर ग़ालिब हैं।

﴿وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ﴾ **: और क़ौमे फ़िरऔ़न के सरदार बोले।** ऐ फ़िरऔ़न ! क्या तू ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम को इस लिये छोड़ देगा ताकि वोह इस त़रह़ फ़साद फैलाएं कि मिस्र की सर ज़मीन में तेरी मुख़ालफ़त करें और वहां के बाशिन्दों का दीन बदल दें। सरदारों ने येह इस लिये कहा था कि जादूगरों के साथ छे लाख आदमी भी ईमान ले आए थे। सरदारों ने फ़िरऔ़न से दूसरी बात येह कही कि **"और वोह मूसा तुझे और तेरे मुक़र्रर किये हुए मा'बूदों को छोड़े रखे"** या'नी न तेरी इ़बादत करें और न तेरे मुक़र्रर किये हुए मा'बूदों की पूजा करें।

मुफ़स्सिर सुद्दी का क़ौल है कि फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम के लिये बुत बनवा दिये थे और उन की इ़बादत करने का हुक्म देता था और कहता था कि "मैं तुम्हारा भी रब हूं और इन बुतों का भी।" बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि फ़िरऔ़न दहरी था या'नी सानेए़ आ़लम के वुजूद का मुन्किर, इस का ख़याल था कि आ़लमे सिफ़्ली की तदबीर सितारे करते हैं इसी लिये उस ने सितारों की सूरतों पर बुत बनवाए थे, उन की ख़ुद भी इ़बादत करता था और दूसरों को भी उन की इ़बादत का हुक्म देता था और अपने आप को ज़मीन का मुता़अ़ व मख़्दूम कहता था इसी लिये वोह "اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى" (मैं तुम्हारा सब से आ'ला रब हूं) कहता था।[1]

﴿قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ﴾ **: (फ़िरऔ़न ने) कहा : अब हम इन के बेटों को क़त्ल करेंगे।** फ़िरऔ़न की क़ौम के सरदारों ने फ़िरऔ़न से जो येह कहा था कि **"क्या तू मूसा और उस की क़ौम को इस लिये छोड़ देगा ताकि वोह ज़मीन में फ़साद फैलाएं"** इस से उन का मत़लब फ़िरऔ़न को ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और आप की क़ौम के क़त्ल पर उभारना था। जब उन्हों ने ऐसा किया तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन को नुज़ूले अ़ज़ाब का ख़ौफ़ दिलाया। फ़िरऔ़न अपनी क़ौम की ख़्वाहिश पूरी करने पर क़ुदरत नहीं रखता था क्यूं कि वोह ह़ज़रते

1 .....مدارك، الاعراف، تحت الآية: ١٢٧، ص ٣٨١، خازن، الاعراف، تحت الآية: ١٢٧، ٢/١٢٨، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़े की कुव्वत से मरऊ़ब हो चुका था इसी लिये उस ने अपनी क़ौम से येह कहा कि "हम बनी इसराईल के लड़कों को क़त्ल करेंगे और लड़कियों को छोड़ देंगे।" इस से उस का मत़लब येह था कि इस त़रह़ ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम की ता'दाद घटा कर उन की कुव्वत कम करेंगे। मज़ीद येह कि अ़वाम में अपना भरम रखने के लिये येह भी कह दिया कि "**हम बेशक उन पर ग़ालिब हैं।**" इस से उस का मक़्सूद येह था कि अ़वाम को पता चल जाए कि उस ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम को किसी इ़ज्ज़ या ख़ौफ़ की वज्ह से नहीं छोड़ा बल्कि वोह जब चाहे उन्हें पकड़ सकता है। येह बात वोह अपने मुंह से कहता था जब कि फ़िरऔ़न का ह़ाल येह था कि उस का दिल ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के रो'ब में भरा पड़ा था।[1]

قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْاۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِۙ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝۱۲۸

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया **अल्लाह** की मदद चाहो और सब्र करो बेशक ज़मीन का मालिक **अल्लाह** है अपने बन्दों में जिसे चाहे वारिस बनाए और आख़िर मैदान परहेज़ गारों के हाथ है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया : **अल्लाह** से मदद त़लब करो और सब्र करो। बेशक ज़मीन का मालिक **अल्लाह** है, वोह अपने बन्दों में जिसे चाहता है वारिस बना देता है और अच्छा अन्जाम परहेज़ गारों के लिये ही है।

﴿قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ﴾ : **मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया।** फ़िरऔ़न के इस क़ौल कि "**हम बनी इसराईल के लड़कों को क़त्ल करेंगे**" की वज्ह से बनी इसराईल में कुछ परेशानी पैदा हो गई और उन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से इस की शिकायत की, इस के जवाब में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम को तसल्ली देते हुए फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मदद त़लब करो, वोह तुम्हें काफ़ी है और आने वाली मुसीबतों और बलाओं से घबराओ नहीं बल्कि उन पर सब्र करो, बेशक ज़मीन का मालिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है और ज़मीने मिस्र भी इस में दाख़िल है, वोह अपने बन्दों में जिसे चाहता है वारिस बना देता है। येह फ़रमा कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बनी इसराईल को तवक्कोअ़ दिलाई कि फ़िरऔ़न और उस की क़ौम हलाक

1 ……خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۲۷، ۲/ ۱۲۸، تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۲۷، ۵/ ۳۴۲، تفسیر قرطبی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۲۷، ۴/ ۱۸۹، الجزء السابع، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

होगी और बनी इसराईल उन की ज़मीनों और शहरों के मालिक होंगे और उन्हें बिशारत देते हुए फ़रमाया : अच्छा अन्जाम परहेज़ गारों के लिये ही है ।[1]

قَالُوْۤا اُوْذِیْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِیَنَا وَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ؕ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ یُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَ یَسْتَخْلِفَكُمْ فِی الْاَرْضِ فَیَنْظُرَ كَیْفَ تَعْمَلُوْنَ۠ ﴿۱۲۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बोले हम सताए गए आप के आने से पहले और आप के तशरीफ़ लाने के बा'द कहा क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक करे और उस की जगह ज़मीन का मालिक तुम्हें बनाए फिर देखे कैसे काम करते हो ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (क़ौम ने) कहा : हमें आप के तशरीफ़ लाने से पहले भी और तशरीफ़ आवरी के बा'द भी सताया गया है । (मूसा ने) फ़रमाया : अन्क़रीब तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मनों को हलाक कर देगा और तुम्हें ज़मीन में जा नशीन बना देगा फिर वोह देखेगा कि तुम कैसे काम करते हो ।

﴿قَالُوْۤا اُوْذِیْنَا﴾ **: बोले हम सताए गए ।** ﴾ ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम ने फ़िरऔ़न की धमकी से ख़ौफ़ज़दा हो कर दूसरी मरतबा ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अ़र्ज़ की, कि "हमें आप के तशरीफ़ लाने से पहले भी सताया गया कि फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों ने त़रह़ त़रह़ की मुसीबतों में मुब्तला कर रखा था और लड़कों को बहुत ज़ियादा क़त्ल किया था और आप के तशरीफ़ लाने के बा'द अब फिर सताया जाएगा कि अब वोह दोबारा हमारी औलाद के क़त्ल का इरादा रखता है तो हमारी मदद कब होगी और येह मुसीबतें कब दूर की जाएंगी ?" ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन से फ़रमाया : अन्क़रीब तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे दुश्मनों को हलाक कर देगा और तुम्हें ज़मीन में जा नशीन बना देगा फिर वोह देखेगा कि तुम कैसे काम करते हो और किस त़रह़ शुक्रे ने'मत बजा लाते हो ।

ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इल्मे ग़ैब की दलील

इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ग़ैब का इ़ल्म

[1] .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۲۸، ۲/۱۲۹، مدارک، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۲۸، ص ۳۸۱، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

दिया था कि आइन्दा पेश आने वाले वाक़िआ़त बिला कमो कास्त बयान फ़रमा दिये और जैसा आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया था वैसा ही हुवा कि फ़िरऔ़न अपनी क़ौम के साथ हलाक कर दिया गया और बनी इसराईल मुल्के मिस्र के मालिक हुए।

وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۳۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक हम ने फ़िरऔ़न वालों को बरसों के क़हत़ और फलों के घटाने से पकड़ा कि कहीं वोह नसीह़त मानें।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक हम ने फ़िरऔ़नियों को कई साल के क़हत़ और फलों की कमी में गिरिफ़्तार कर दिया ताकि वोह नसीह़त ह़ासिल करें।

﴿وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ﴾ **: और बेशक हम ने फ़िरऔ़न वालों को पकड़ा।** ﴾ इस आयत से **अल्लाह** तआ़ला की रोशन निशानियों को झुटलाने के सबब फ़िरऔ़न और उस की क़ौम की हलाकत के इब्तिदाई वाक़िआ़त को बयान फ़रमाया गया है। सब से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़िरऔ़नियों को कई साल के क़हत़, फलों की कमी और फ़क़्रो फ़ाक़ा की मुसीबत में गिरिफ़्तार किया। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : दीहात में रहने वाले फ़िरऔ़नी क़हत़ की मुसीबत में गिरिफ़्तार हुए और शहरों में रहने वाले (आफ़ात की वज्ह से) फलों की कमी की मुसीबत में मुब्तला हुए। ह़ज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : उन लोगों पर एक वक़्त ऐसा आया कि खजूर के दरख़्त पर सिर्फ़ एक ही खजूर उगती थी।[1]

अल्लाह तआ़ला ने उन पर येह सख़्तियां इस लिये नाज़िल फ़रमाईं ताकि इन से इ़ब्रत ह़ासिल करते हुए वोह सरकशी और इ़नाद का रास्ता छोड़ कर **अल्लाह** तआ़ला की बन्दगी की त़रफ़ लौट आएं क्यूं कि सख़्ती व मुसीबत दिल को नर्म कर देती है और **अल्लाह** तआ़ला के पास जो भलाई है उस की त़रफ़ राग़िब कर देती है। कहते हैं कि "फ़िरऔ़न ने अपनी चार सो बरस की उ़म्र में से तीन सो बीस साल तो इस आराम के साथ गुज़ारे थे कि इस मुद्दत में वोह कभी दर्द, बुख़ार या भूक में मुब्तला ही नहीं हुवा। अगर उस के साथ ऐसा होता तो वोह कभी रबूबिय्यत का दा'वा न करता।"[2]

1 .....صاوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۳۰، ۲/ ۷۰۱، خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۳۰، ۲/ ۱۲۹، ابو سعود، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۳۰، ۲/ ۲۸۸، ملتقطاً.

2 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۳۰، ۵/ ۳٤٤، مدارک، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۳۰، ص ۳۸۱، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

मसाइब ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदारी का सबब भी हैं

याद रहे कि **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से भेजी हुई आफ़तों और मुसीबतों में भी बहुत सारी ह़िक्मतें होती हैं और एक ह़िक्मत येह भी है कि इन की वज्ह से इन्सान ग़फ़्लत से बेदार हो और **अल्लाह** तआ़ला का इत़ाअ़त गुज़ार और फ़रमां बरदार बन्दा बन जाए लिहाज़ा ज़ल्ज़ला, तूफ़ान, सैलाब या किसी और मुसीबत का सामना हो तो उस से इ़ब्रत ह़ासिल करते हुए ग़फ़्लत की नींद से बेदार होने की कोशिश करनी चाहिये ।

فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗؕ اَلَاۤ اِنَّمَا طٰٓىِٕرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो जब उन्हें भलाई मिलती कहते येह हमारे लिये है और जब बुराई पहुंचती तो मूसा और उस के साथ वालों से बद शुगूनी लेते सुन लो उन के नसीबे की शामत तो **अल्लाह** के यहां है लेकिन उन में अक्सर को ख़बर नहीं ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो जब उन्हें भलाई मिलती तो कहते येह हमारे लिये है और जब बुराई पहुंचती तो उसे मूसा और उन के साथियों की नुहूसत क़रार देते । सुन लो ! उन की नुहूसत **अल्लाह** ही के पास है लेकिन उन में अक्सर नहीं जानते ।

﴿فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ﴾ **: तो जब उन्हें भलाई मिलती ।** फ़िरऔ़नी कुफ़्र में इस क़दर रासिख़ हो चुके थे कि इन तक्लीफ़ों से भी उन की सरकशी बढ़ती ही रही, जब उन्हें सर सब्ज़ी व शादाबी, फलों, मवेशियों और रिज़्क़ में वुस्अ़त, सिह़्ह़त, आफ़ात से आ़फ़ियत व सलामती वग़ैरा भलाई मिलती तो कहते येह तो हमें मिलना ही था क्यूं कि हम इस के अह्ल और इस के मुस्तह़िक़ हैं । येह लोग उस भलाई को न तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल जानते और न ही उस के इन्आ़मात पर शुक्र अदा करते और जब उन्हें क़ह़त़, ख़ुश्क साली, मरज़, तंगी और आफ़त वग़ैरा कोई बुराई पहुंचती तो उसे ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन के साथियों की नुहूसत क़रार देते और कहते

www.dawateislami.net

कि येह बलाएं इन की वज्ह से पहुंचीं, अगर येह न होते तो येह मुसीबतें न आतीं।[1]

बद शुगूनी की मज़म्मत

मुश्रिक क़ौमों में मुख़्तलिफ़ चीज़ों से बुरा शुगून लेने की रस्म बहुत पुरानी है और इन के तवह्हुम परस्त मिज़ाज हर चीज़ से असर क़बूल कर लेते, जैसे कोई शख़्स किसी काम को निकलता और रास्ते में कोई जानवर सामने से गुज़र गया या किसी मख़्सूस परिन्दे की आवाज़ कान में पड़ जाती तो फ़ौरन घर वापस लौट आता, इसी त़रह़ किसी के आने को, बा'ज़ दिनों और महीनों को मन्हूस समझना इन के हां आ़म था। इसी त़रह़ के तसव्वुरात और ख़यालात हमारे मुआ़शरे में भी बहुत फैले हुए हैं। इस्लाम इस त़रह़ की तवह्हुम परस्ती की हरगिज़ इजाज़त नहीं देता और इस्लाम ने जहां दीगर मुश्रिकाना रस्मों की जड़ें ख़त्म कीं वहीं इस ने बदफ़ाली का भी ख़ातिमा कर दिया। चुनान्चे

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरकारे दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "शुगून शिर्क है, शुगून शिर्क है, शुगून शिर्क है, हम में से हर एक को ऐसा ख़याल आ जाता है लेकिन **अल्लाह** तआ़ला उसे हटा कर तवक्कुल पर क़ाइम फ़रमा देता है।"[2]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिसे किसी चीज़ की बदफ़ाली ने उस के मक़्सद से लौटा दिया उस ने शिर्क किया।" अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, ऐसा शख़्स क्या कफ़्फ़ारा दे ? इर्शाद फ़रमाया : " येह कहे " اَللّٰھُمَّ لَا طَیْرَ اِلَّا طَیْرُکَ وَلَا خَیْرَ اِلَّا خَیْرُکَ وَلَا اِلٰہَ غَیْرُکَ ऐ **अल्लाह** ! तेरी फ़ाल के इलावा और कोई फ़ाल नहीं, तेरी भलाई के सिवा और कोई भलाई नहीं और तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं।" (येह अल्फ़ाज़ कह कर अपने काम को चला जाए।)[3]

अह़ादीस में बद शुगूनी को शिर्क क़रार दे ने का मत़लब येह है कि जब कोई शख़्स बद शुगूनी के अफ़्आ़ल को मुअस्सिरे ह़क़ीक़ी जाने तो शिर्क है और या मुश्रिकों का फ़े'ल होने की वज्ह से ज़ज़्र और सख़्ती से समझाने के त़ौर पर शिर्क क़रार दिया गया है।[4]

وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰیَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۳۲﴾

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۳۱، ۲/ ۱۳۰، تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۳۱، ۵/ ۳٤٤، ملتقطاً.

2 .....ابو داؤد، کتاب الطب، باب فی الطیرۃ، ٤/ ۲۳، الحدیث: ۳۹۱۰.

3 .....مسند امام احمد، مسند عبد اللّٰہ بن عمرو بن العاص رضی اللّٰہ تعالی عنہما، ۱/ ٦۸۳، الحدیث: ۷۰٦٦.

4 .....बद शुगूनी से मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये किताब "बद शुगूनी" मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बोले तुम कैसी भी निशानी ले कर हमारे पास आओ कि हम पर उस से जादू करो हम किसी त़रह़ तुम पर ईमान लाने वाले नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और (फ़िरऔ़नियों ने) कहा : (ऐ मूसा !) तुम हमारे ऊपर जादू करने के लिये हमारे पास कैसी भी निशानी ले आओ, हम हरगिज़ तुम पर ईमान लाने वाले नहीं।

﴿وَقَالُوْا﴾ **: और बोले ।** इस से पहली आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने फ़िरऔ़न और उस की क़ौम की एक जहालत और गुमराही बयान फ़रमाई कि उन्हों ने क़ह़त़, ख़ुश्क साली और फलों की कमी को ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन के साथ वालों की नुहूसत क़रार दिया और वोह येह न जान सके कि बारिश का न होना नीज़ ग़ल्ला और फलों का कम या ज़ियादा होना येह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत से है और इन सब चीज़ों का ख़ालिक़ **अल्लाह** तआ़ला है किसी मख़्लूक़ का इस में कोई दख़्ल नहीं। अब इस आयत में उन की एक और जहालत बयान फ़रमाई कि येह लोग मो'जिज़े और सेह्र में फ़र्क़ नहीं करते और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का अ़सा जो अज़्दहा बन गया था उसे सेह्र कहते थे ह़ालां कि इन के तमाम बड़े बड़े जादूगर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़े के सामने आ़जिज़ हो चुके थे।[1]

जब फ़िरऔ़न और उस की क़ौम की सरकशी यहां तक पहुंच गई कि उन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से साफ़ साफ़ कह दिया : ऐ मूसा ! तुम हमारे ऊपर जादू करने के लिये कैसी भी निशानी हमारे पास ले आओ, हम हरगिज़ तुम पर ईमान नहीं लाएंगे, तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन के ख़िलाफ़ दुआ़ की, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام चूंकि मुस्तजाबुद्दा'वात थे इस लिये आप की दुआ़ क़बूल हुई। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ए ज़रर के बा'द फ़िरऔ़न और उस की क़ौम पर जो अ़ज़ाब आए उन का ज़िक्र अगली आयत में है।

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿۱۳۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो भेजा हम ने उन पर तूफ़ान और टीड्डी और घुन (या किलनी जूएं) और मेंडक और ख़ून जुदा जुदा निशानियां तो उन्हों ने तकब्बुर किया और वोह मुजरिम क़ौम थी।

[1] .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۳۲، ۵/۳۴۵.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो हम ने उन पर तूफ़ान और टीड्डी और पिस्सू (या जूएं) और मेंडक और ख़ून की जुदा जुदा निशानियां भेजीं तो उन्हों ने तकब्बुर किया और वोह मुजरिम क़ौम थी।

﴿فَاَرْسَلْنَا **: तो हम ने भेजा ।**﴾ जब जादूगरों के ईमान लाने के बा'द भी फ़िरऔ़नी अपने कुफ़्रो सरकशी पर जमे रहे तो उन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानियां पै दर पै वारिद होने लगीं क्यूं कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दुआ की थी कि या रब ! عَزَّوَجَلَّ, फ़िरऔ़न ज़मीन में बहुत सरकश हो गया है और उस की क़ौम ने भी अ़ह्द शिकनी की है उन्हें ऐसे अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार कर जो उन के लिये सज़ा हो और मेरी क़ौम और बा'द वालों के लिये इ़ब्रतो नसीह़त हो, तो **अल्लाह** तआ़ला ने तूफ़ान भेजा, हुवा यूं कि बादल आया, अंधेरा हुवा और कसरत से बारिश होने लगी। क़िब्ति़यों के घरों में पानी भर गया यहां तक कि वोह उस में खड़े रह गए और पानी उन की गरदनों की हंस्लियों तक आ गया, उन में से जो बैठा वोह डूब गया, येह लोग न हिल सकते थे न कुछ काम कर सकते थे। हफ़्ते के दिन से ले कर दूसरे हफ़्ते तक सात रोज़ इसी मुसीबत में मुब्तला रहे और बा वुजूद इस के कि बनी इसराईल के घर उन के घरों से मुत्तसिल थे उन के घरों में पानी न आया। जब येह लोग आ़जिज़ हुए तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अ़र्ज़ की : हमारे लिये दुआ फ़रमाइये कि येह मुसीबत दूर हो जाए तो हम आप पर ईमान ले आएंगे और बनी इसराईल को आप के साथ भेज देंगे। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दुआ फ़रमाई तो तूफ़ान की मुसीबत दूर हो गई, ज़मीन में वोह सर सब्ज़ी व शादाबी आई जो पहले कभी न देखी थी। खेतियां ख़ूब हुईं और दरख़्त ख़ूब फले। येह देख कर फ़िरऔ़नी कहने लगे : येह पानी तो ने'मत था और ईमान न लाए। एक महीना तो आ़फ़ियत से गुज़रा, फिर **अल्लाह** तआ़ला ने टिड्डी भेजी वोह खेतियां और फल, दरख़्तों के पत्ते, मकान के दरवाज़े, छतें, तख़्ते, सामान ह़त्ता कि लोहे की कीलें तक खा गईं और क़िब्ति़यों के घरों में भर गईं लेकिन बनी इसराईल के यहां न गईं। अब क़िब्ति़यों ने परेशान हो कर फिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से दुआ की दरख़्वास्त की और ईमान लाने का वा'दा किया, इस पर अ़ह्दो पैमान किया। सात रोज़ या'नी हफ़्ते से हफ़्ते तक टिड्डी की मुसीबत में मुब्तला रहे, फिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ से नजात पाई। खेतियां और फल जो कुछ बाक़ी रह गए थे उन्हें देख कर कहने लगे : येह हमें काफ़ी हैं हम अपना दीन नहीं छोड़ते चुनान्चे ईमान न लाए, अ़ह्द वफ़ा न किया और अपने आ'माले ख़बीसा में मुब्तला हो गए। एक महीना आ़फ़ियत से गुज़रा, फिर **अल्लाह** तआ़ला ने कुम्मल भेजे, इस में मुफ़स्सिरीन का इख़्तिलाफ़ है, बा'ज़ कहते हैं कि कुम्मल घुन

www.dawateislami.net

है, बा'ज़ कहते हैं जूं, बा'ज़ कहते हैं एक और छोटा सा कीड़ा है। उस कीड़े ने जो खेतियां और फल बाक़ी रहे थे वोह खा लिये, येह कीड़ा कपड़ों में घुस जाता था और जिल्द को काटता था, खाने में भर जाता था, अगर कोई दस बोरी गन्दुम चक्की पर ले जाता तो तीन सेर वापस लाता बाक़ी सब कीड़े खा जाते। येह कीड़े फ़िरऔनियों के बाल, भवें, पलकें चाट गए, उन के जिस्म पर चेचक की त़रह़ भर जाते ह़त्ता कि उन कीड़ों ने उन का सोना दुश्वार कर दिया था। इस मुसीबत से फ़िरऔनी चीख़ पड़े और उन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अ़र्ज़ की : हम तौबा करते हैं, आप इस बला के दूर होने की दुआ़ फ़रमाइये। चुनान्चे सात रोज़ के बा'द येह मुसीबत भी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ से दूर हुई, लेकिन फ़िरऔनियों ने फिर अ़ह्द शिकनी की और पहले से ज़ियादा ख़बीस तर अ़मल शुरूअ़ कर दिये। एक महीना अम्न में गुज़रने के बा'द फिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दुआ़ की तो **अल्लाह** तआ़ला ने मेंडक भेजे और येह ह़ाल हुवा कि आदमी बैठता था तो उस की मजलिस में मेंडक भर जाते, बात करने के लिये मुंह खोलता तो मेंडक कूद कर मुंह में चला जाता, हांडियों में मेंडक, खानों में मेंडक, चूल्हों में मेंडक भर जाते तो आग बुझ जाती थी, लैटते थे तो मेंडक ऊपर सुवार होते थे, इस मुसीबत से फ़िरऔनी रो पड़े और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अ़र्ज़ की : अब की बार हम पक्की तौबा करते हैं। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन से अ़ह्दो पैमान ले कर दुआ़ की तो सात रोज़ के बा'द येह मुसीबत भी दूर हुई और एक महीना आ़फ़ियत से गुज़रा, लेकिन फिर उन्हों ने अ़ह्द तोड़ दिया और अपने कुफ़्र की तरफ़ लौटे। फिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दुआ़ फ़रमाई तो तमाम कूंओं का पानी, नहरों और चश्मों का पानी, दरियाए नील का पानी ग़रज़ हर पानी उन के लिये ताज़ा ख़ून बन गया। उन्हों ने फ़िरऔन से इस की शिकायत की तो कहने लगा कि "ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने जादू से तुम्हारी नज़र बन्दी कर दी है।" उन्हों ने कहा : तुम किस नज़र बन्दी की बात कर रहे हो ? हमारे बरतनों में ख़ून के सिवा पानी का नामो निशान ही नहीं। येह सुन कर फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि "क़िब्ती बनी इसराईल के साथ एक ही बरतन से पानी लें।" लेकिन हुवा यूं कि जब बनी इसराईल निकालते तो पानी निकलता, क़िब्ती निकालते तो उसी बरतन से ख़ून निकलता, यहां तक कि फ़िरऔनी औ़रतें प्यास से आ़जिज़ हो कर बनी इसराईल की औ़रतों के पास आईं और उन से पानी मांगा तो वोह पानी उन के बरतन में आते ही ख़ून हो गया। येह देख कर फ़िरऔनी औ़रत कहने लगी कि "तू पानी अपने मुंह में ले कर मेरे मुंह में कुल्ली कर दे।" मगर जब तक वोह पानी इसराईली औ़रत के मुंह में रहा

www.dawateislami.net

पानी था, जब फ़िरऔ़नी औ़रत के मुंह में पहुंचा तो ख़ून हो गया। फ़िरऔ़न ख़ुद प्यास से मुज़्तर हुवा तो उस ने तर दरख़्तों की रत़ूबत चूसी, वोह रत़ूबत मुंह में पहुंचते ही ख़ून हो गई। सात रोज़ तक ख़ून के सिवा कोई चीज़ पीने की मुयस्सर न आई तो फिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से दुआ़ की दरख़्वास्त की और ईमान लाने का वा'दा किया। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दुआ़ फ़रमाई येह मुसीबत भी दूर हुई मगर वोह ईमान फिर भी न लाए।[1]

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۚ﴿۱۳۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उन पर अ़ज़ाब पड़ता कहते ऐ मूसा हमारे लिये अपने रब से दुआ़ करो उस अ़ह्द के सबब जो उस का तुम्हारे पास है बेशक अगर तुम हम पर से अ़ज़ाब उठा दोगे तो हम ज़रूर तुम पर ईमान लाएंगे और बनी इसराईल को तुम्हारे साथ कर देंगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब उन पर अ़ज़ाब वाक़ेअ़ होता तो कहते, ऐ मूसा ! हमारे लिये अपने रब से दुआ़ करो उस अ़ह्द के सबब जो उस का तुम्हारे पास है। बेशक अगर आप हम से अ़ज़ाब उठा दोगे तो हम ज़रूर आप पर ईमान लाएंगे और ज़रूर हम बनी इसराईल को तुम्हारे साथ कर देंगे।

﴿وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ﴾ **: और जब उन पर अ़ज़ाब वाक़ेअ़ होता।** इस आयत में मज़्कूर लफ़्ज़ ''رِجْز'' का मा'ना अ़ज़ाब है। इस की तफ़्सीर में एक क़ौल येह है कि इस से मुराद वोही पांच क़िस्मों का अ़ज़ाब है जो तूफ़ान, टिड्डियों, कुम्मल, मेंडक और ख़ून की सूरत में उन पर मुसल्लत़ किया गया। और दूसरा क़ौल येह है कि इस से मुराद त़ाऊ़न है और येह पहले पांच अ़ज़ाबों के बा'द छटा अ़ज़ाब है।[2]

इस आयत का ख़ुलासा येह है कि फ़िरऔ़न और उस की क़ौम पर जब तूफ़ान, टिड्डियों, कुम्मल, मेंडक और ख़ून या त़ाऊ़न की सूरत में अ़ज़ाब नाज़िल होता तो उस वक़्त ह़ज़रते मूसा

1 .....بغوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۳۳، ۲/۱۵۹-۱۶۱. 2 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۳۴، ۲/۱۳۲.

www.dawateislami.net

عَلَيْهِ السَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बारगाह में हाज़िर हो कर कहते : ऐ मूसा ! हमारे लिये अपने रब عَزَّوَجَلَّ से उस अ़ह्द के सबब दुआ करो जो उस का तुम्हारे पास है कि हमारे ईमान लाने की सूरत में वोह हमें अ़ज़ाब न देगा। अगर आप عَلَيْهِ السَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने हम से येह अ़ज़ाब दूर कर दिया तो हम वा'दा करते हैं कि ज़रूर आप पर ईमान लाएंगे और आप के मुत़ालबे को पूरा करते हुए हम ज़रूर बनी इसराईल को आप के साथ रवाना कर देंगे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के काम उस के मक़्बूल बन्दों की त़रफ़ मन्सूब किये जा सकते हैं

इस आयत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के काम उस के मक़्बूल बन्दों की त़रफ़ मन्सूब किये जा सकते हैं और मुश्किलात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल बन्दों की बारगाह में हाज़िर हो कर उन से हाजत रवाई का मुत़ालबा किया जा सकता है, जैसे **अ़ज़ाब दूर करना अल्लाह** तआ़ला का काम है जब कि फ़िरऔ़न और उस की क़ौम ने अ़ज़ाब दूर करने की निस्बत हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ करते हुए अ़र्ज़ की, कि "لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ" बेशक अगर आप ने हम से येह अ़ज़ाब दूर कर दिया। इस निस्बत पर न तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने कोई ए'तिराज़ किया न **अल्लाह** तआ़ला ने कोई इ़ताब फ़रमाया।

इसी त़रह़ **बेटा देना अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का काम है जब कि हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने इस की निस्बत अपनी त़रफ़ करते हुए हज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया :

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मैं तो तेरे रब का भेजा हुवा हूं ताकि मैं तुझे एक पाकीज़ा बेटा अ़त़ा करूं।

اِنَّمَاۤ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا (1)

यूंही **परिन्दों को पैदा करना, मादर ज़ाद अन्धों को आंखें देना, कोढ़ियों को शिफ़ायाब करना, मुर्दों को ज़िन्दा करना अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का काम है। जब कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इसे अपनी त़रफ़ मन्सूब करते हुए फ़रमाया :

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से परिन्दे जैसी एक शक्ल बनाता हूं फिर उस में फूंक मारूंगा तो वोह **अल्लाह** के हुक्म से फ़ौरन परिन्दा बन जाएगी और मैं पैदाइशी अन्धों को और कोढ़ के मरीज़ों को शिफ़ा देता हूं और मैं **अल्लाह** के हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा करता हूं।

اَنِّیْۤ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّیْنِ كَهَیْـَٔةِ الطَّیْرِ فَاَنْفُخُ فِیْهِ فَیَكُوْنُ طَیْرًۢا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْیِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ (2)

1 .....مریم: ۱۹. 2 .....آل عمران: ۴۹.

www.dawateislami.net

सरे दस्त क़ुरआने मजीद से येह तीन मक़ामात ज़िक्र किये हैं जिन में **अल्लाह** तआ़ला के कामों को **अल्लाह** तआ़ला के मक़्बूल बन्दों की त़रफ़ मन्सूब किया गया, अब सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ की सीरत से चन्द वाक़िआ़त मुलाह़ज़ा हों कि जब कभी सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ को कोई मुश्किल या मुसीबत पेश आती या उन्हें कोई ज़रूरत या ह़ाजत दरपेश होती तो वोह रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ रुजूअ़ करते और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अपनी मुसीबतों की ख़लासी और अपनी ह़ाजत रवाई के लिये अ़र्ज़ करते और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन की मुश्किलात दूर कर देते और ह़ाजतें पूरी फ़रमा देते थे, चुनान्चे जंगे बद्र में ह़ज़रते अ़क्काशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तल्वार टूट गई तो वोह ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो गए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें एक छड़ी दी जो उन के हाथ में पहुंचते ही तल्वार बन गई।[1]

जंगे उ़ह़ुद के मौक़अ़ पर ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आंख तीर लगने से निकल गई तो वोह ढेला ले कर सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो गए और आंख मांगी तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें आंख अ़त़ा कर दी।[2]

ग़ज़्वए ख़ैबर के मौक़अ़ पर ह़ज़रते सलमान बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी टूटी हुई पिंडली ले कर बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसी वक़्त उन की पिंडली को दुरुस्त कर दिया।[3]

क़ह़त़ से नजात पाने के लिये एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुआ़ की दरख़्वास्त की, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई तो ऐसी बारिश बरसी कि हफ़्ता भर रुकने का नाम न लिया।[4]

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ एक मरतबा सफ़र में प्यास से जां बलब हुए तो बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अपनी प्यास के बारे में अ़र्ज़ की, सरकारे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उंग्लियों से पानी के चश्मे बहा कर उन्हें सैराब कर दिया।[5]

और ह़ज़रते रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जन्नत मांगी तो उन्हें जन्नत अ़त़ा कर दी।[6]

1 ……جامع الاصول فی احادیث الرسول، الرکن الثالث، الفن الثانی، الباب الرابع، حرف العین، الفصل الاول فی الاسماء، القسم الاول، الفرع الاول، عکاشه بن محصن، ۱۳/۳۲٤.

2 ……مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، فی فضل الانصار، ۷/۵٤۲، الحدیث: ۱۵.

3 ……بخاری، کتاب المغازی، باب غزوة خیبر، ۳/۸۳، الحدیث: ٤۲۰٦.

4 ……بخاری، کتاب الاستسقاء، باب الاستسقاء علی المنبر، ۱/۳٤۸، الحدیث: ۱۰۱۵.

5 ……بخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوة فی الاسلام، ۲/٤۹۵، الحدیث: ۳۵۷۹.

6 ……مسلم، کتاب الصلاة، باب فضل السجود والحث علیه، ص۲۵۲، الحدیث: ۲۲٦(٤۸۹).

www.dawateislami.net

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰۤى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿۱۳۵﴾
فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا
غٰفِلِيْنَ ﴿۱۳۶﴾ وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ
وَمَغَارِبَهَا الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِيْۤ
اِسْرَآءِيْلَ ۙ بِمَا صَبَرُوْا ؕ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا
كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ﴿۱۳۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब हम उन से अ़ज़ाब उठा लेते एक मुद्दत के लिये जिस तक उन्हें पहुंचना है जभी वोह फिर जाते। तो हम ने उन से बदला लिया तो उन्हें दरिया में डुबो दिया इस लिये कि हमारी आयतें झुटलाते और उन से बे ख़बर थे। और हम ने उस क़ौम को जो दबा ली गई थी उस ज़मीन के पूरब पश्चिम का वारिस किया जिस में हम ने बरकत रखी और तेरे रब का अच्छा वा'दा बनी इसराईल पर पूरा हुवा बदला उन के सब्र का और हम ने बरबाद कर दिया जो कुछ फ़िरऔ़न और उस की क़ौम बनाती और जो चुनाइयां उठाते थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर जब हम उन से उस मुद्दत तक के लिये अ़ज़ाब उठा लेते जिस तक उन्हें पहुंचना था तो वोह फ़ौरन (अपना अ़हद) तोड़ देते। तो हम ने उन से बदला लिया तो उन्हें दरिया में डुबो दिया क्यूं कि उन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया और उन से बिल्कुल ग़ाफ़िल रहे। और हम ने उस क़ौम को जिसे दबाया गया था उस ज़मीन के मशरिक़ों और मग़रिबों का मालिक बना दिया जिस में हम ने बरकत रखी थी और बनी इसराईल पर उन के सब्र के बदले में तेरे रब का अच्छा वा'दा पूरा हो गया और हम ने वोह सब ता'मीरात बरबाद कर दीं जो फ़िरऔ़न और उस की क़ौम बनाती थी और वोह इ़मारतें जिन्हें वोह बुलन्द करते थे।

﴿فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ﴾ **: तो हम ने उन से बदला लिया ।﴾** इस का मा'ना येह है कि जब बार बार फ़िरऔ़नियों को अ़ज़ाबों से नजात दी गई और वोह किसी अ़हद पर क़ाइम न रहे और ईमान

www.dawateislami.net

न लाए और कुफ़्र न छोड़ा तो जो मीआ़द उन के लिये मुक़र्रर फ़रमाई गई थी वोह पूरी होने के बा'द उन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने दरियाए नील में ग़र्क़ कर के हलाक कर दिया ।[1]

﴿وَاَوْرَثْنَا﴾ **: और हम ने मालिक बना दिया ।** ﴾ हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बनी इसराईल को ग़ैबी ख़बर दी थी कि "**अ़न्क़रीब तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मनों को हलाक कर देगा और तुम्हें ज़मीन में जा नशीन बना देगा**" जैसा आप ने फ़रमाया था वैसा ही हुवा, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला ने फ़िरऔ़न को ग़र्क़ कर के हलाक कर दिया, इस का ज़िक्र ऊपर वाली आयत में है और **अल्लाह** तआ़ला ने बनी इसराईल को पूरे मिस्र व शाम का मालिक बना दिया, इस का ज़िक्र इस आयत में है ।[2]

इस आयत का ख़ुलासा येह है कि फ़िरऔ़न के ग़र्क़ हो जाने के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने फ़िरऔ़न के मज़ालिम का शिकार बनी इसराईल को सर ज़मीन के मशरिक़ो मग़रिब या'नी मिस्र व शाम का मालिक बना दिया । इस सर ज़मीन में **अल्लाह** तआ़ला ने नहरों, दरख़्तों, फलों, खेतियों और पैदावार की कसरत से बरकत रखी थी इस त़रह़ बनी इसराईल पर उन के सब्र की वज्ह से **अल्लाह** तआ़ला का अच्छा वा'दा पूरा हो गया और **अल्लाह** तआ़ला ने उन तमाम इ़मारतों, ऐवानों और बाग़ों को बरबाद कर दिया जो फ़िरऔ़न और उस की क़ौम ने बनाए थे । इस आयत में सब्र की फ़ज़ीलत भी बयान की गई है कि बनी इसराईल को उन के सब्र की वज्ह से इ़ज़्ज़त, ग़लबा, ख़ुशह़ाली और हुक्मरानी नसीब हुई ।

وَجٰوَزْنَا بِبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ یَّعْكُفُوْنَ عَلٰۤى
اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا یٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَاۤ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ ؕ قَالَ
اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِیْهِ وَ بٰطِلٌ مَّا
كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने बनी इसराईल को दरिया पार उतारा तो उन का गुज़र एक ऐसी क़ौम पर हुवा कि अपने बुतों के आगे आसन मारे थे बोले ऐ मूसा हमें एक ख़ुदा बना दे जैसा इन के लिये इतने ख़ुदा हैं बोला तुम ज़रूर जाहिल लोग हो । येह ह़ाल तो बरबादी का है जिस में

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۳۶، ۲/۱۳۲. 2 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۳۷، ۵/۳۴۸، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

येह लोग हैं और कुछ कर रहे हैं निरा बातिल है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने बनी इसराईल को दरिया से पार कर दिया तो उन का गुज़र एक ऐसी क़ौम के पास से हुवा जो अपने बुतों के आगे जम कर बैठे हुए थे। (बनी इसराईल ने) कहा : ऐ मूसा ! हमारे लिये भी ऐसा ही एक मा'बूद बना दो जैसे इन के लिये कई मा'बूद हैं। (मूसा ने) फ़रमाया : तुम यक़ीनन जाहिल लोग हो। बेशक येह लोग जिस काम में पड़े हुए हैं वोह सब बरबाद होने वाला है और जो कुछ येह कर रहे हैं वोह सब बातिल है।

﴿وَجٰوَزْنَا بِبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ الْبَحْرَ﴾ **: और हम ने बनी इसराईल को दरिया से पार कर दिया।** इस आयत से **अल्लाह** तआ़ला ने बनी इसराईल से ने'मत की जो नाशुक्रियां हुईं और जिन बुरे अफ़्आ़ल में वोह मुब्तला हुए उन का और दीगर वाक़िआ़त का बयान शुरूअ़ फ़रमाया और इस से मक़्सूद नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तसल्ली देना और आप की उम्मत को नसीह़त करना है कि वोह किसी ह़ाल में भी अपने नफ़्स के मुह़ासबे से ग़ाफ़िल न हों और अपने अह़वाल में ग़ौरो फ़िक्र करते रहें।[1]

आयत का ख़ुलासा येह है कि दसवीं मुह़र्रम के दिन फ़िरऔ़न और उस की क़ौम को ग़र्क़ करने के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने बनी इसराईल को दरिया से पार कर दिया तो उन का गुज़र एक ऐसी क़ौम के पास से हुवा जो अपने बुतों के आगे जम कर बैठे हुए थे और उन की इ़बादत करते थे। इब्ने जुरैज ने कहा कि येह बुत गाय की शक्ल के थे। यहां से बनी इसराईल के दिल में बछड़ा पूजने का शौक़ पैदा हुवा जिस का नतीजा बा'द में गाय परस्ती की शक्ल में नुमूदार हुवा। उन को देख कर बनी इसराईल ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से कहा : ऐ मूसा ! जिस त़रह़ इन के लिये कई मा'बूद हैं जिन की येह इ़बादत और ता'ज़ीम करते हैं हमारे लिये भी ऐसा ही एक मा'बूद बना दो ताकि हम भी उस की इ़बादत करें और ता'ज़ीम बजा लाएं। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन के मुत़ालबे को रद करते हुए फ़रमाया : बेशक तुम जाहिल लोग हो कि इतनी निशानियां देख कर भी न समझे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वाह़िद है, उस का कोई शरीक नहीं और उस के सिवा किसी की इ़बादत जाइज़ नहीं।[2]

नोट : याद रहे कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से येह अ़र्ज़ सारे बनी इसराईल ने न की थी क्यूं कि उन में ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और दीगर बुज़ुर्ग औलियाउल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم भी थे, बल्कि उन लोगों ने की थी जो अभी तक रासिख़ुल ईमान न हुए थे।

1 .....ابو سعود، الاعراف، تحت الآية: ١٣٨، ٢/٢٩١.

2 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ١٣٨، ٢/١٣٣، تفسير كبير، الاعراف، تحت الآية: ١٣٨، ٥/٣٤٩، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

﴿اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ : **बेशक येह लोग** ।﴾ या'नी अ़न्क़रीब येह बुत परस्त और इन के बुत हमारे हाथों हलाक किये जाएंगे जब कि तुम बुत परस्त नहीं बल्कि बुत शिकन हो। इस में ग़ैब की ख़बर है और बा'द में वोही हुवा जो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया था।

قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۴۰﴾ وَ اِذْ
اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ
وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَ فِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿۱۴۱﴾ ع ۱۳

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : कहा क्या **अल्लाह** के सिवा तुम्हारा और कोई ख़ुदा तलाश करूं ह़ालां कि उस ने तुम्हें ज़माने भर पर फ़ज़ीलत दी। और याद करो जब हम ने तुम्हें फ़िरऔ़न वालों से नजात बख़्शी कि तुम्हें बुरी मार देते तुम्हारे बेटे ज़ब्ह़ करते और तुम्हारी बेटियां बाक़ी रखते और इस में तुम्हारे रब का बड़ा फ़ज़्ल हुवा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (मूसा ने) फ़रमाया : क्या तुम्हारे लिये **अल्लाह** के सिवा कोई और मा'बूद तलाश करूं ह़ालां कि उस ने तुम्हें सारे जहान वालों पर फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई है। और याद करो जब हम ने तुम्हें फ़िरऔ़नियों से नजात दी जो तुम्हें बहुत बुरी सज़ा देते, तुम्हारे बेटों को क़त्ल करते और तुम्हारी बेटियों को ज़िन्दा रखते और इस में तुम्हारे रब की त़रफ़ से बड़ी आज़्माइश थी।

﴿قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا : **कहा क्या अल्लाह के सिवा तुम्हारा और कोई ख़ुदा तलाश करूं** ।﴾ जब बनी इसराईल ने मा'बूद बना कर देने का मुत़ालबा किया तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन की जहालत को वाज़ेह़ किया और फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हारे लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई और मा'बूद तलाश करूं ह़ालां कि उस ने तुम्हें सारे जहान वालों पर फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई है।" या'नी ख़ुदा वोह नहीं होता जो तराश कर बना लिया जाए बल्कि ख़ुदा वोह है जिस ने तुम्हें फ़ज़ीलत दी क्यूं कि वोह फ़ज़्लो एह़सान पर क़ादिर है तो वोही इबादत का मुस्तह़िक़ है और उस के फ़ज़्लो एह़सान का तक़ाज़ा है कि इस का शुक्र और ह़क़ अदा किया जाए न कि नाशुक्री और शिर्क किया जाए।

www.dawateislami.net

﴿وَاِذْ اَنْجَیْنٰكُمْ﴾ : **और याद करो जब हम ने तुम्हें नजात दी ।** ﴾ इस आयत की तफ़्सीर सूरए बक़रह आयत 49 में गुज़र चुकी है। इस मक़ाम पर येह आयत ज़िक्र करने से मक़्सूद येह बताना है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वोही है जिस ने तुम पर येह अ़ज़ीम इन्आ़म फ़रमाया तो तुम्हें **अल्लाह** तआ़ला के इ़लावा किसी और की इ़बादत में मश्ग़ूल होना कैसे रवा होगा ?[1]

وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِیْنَ لَیْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِیْقَاتُ رَبِّهٖۤ اَرْبَعِیْنَ لَیْلَةً ۚ وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِیْهِ هٰرُوْنَ اخْلُفْنِیْ فِیْ قَوْمِیْ وَاَصْلِحْ وَ لَا تَتَّبِعْ سَبِیْلَ الْمُفْسِدِیْنَ ﴿۱۴۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने मूसा से तीस रात का वा'दा फ़रमाया और उन में दस और बढ़ा कर पूरी कीं तो उस के रब का वा'दा पूरी चालीस रात का हुवा और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा मेरी क़ौम पर मेरे नाइब रहना और इस्लाह़ करना और फ़सादियों की राह को दख़्ल न देना।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने मूसा से तीस रातों का वा'दा फ़रमाया और उन में दस (रातों) का इज़ाफ़ा कर के पूरा कर दिया तो उस के रब का वा'दा चालीस रातों का पूरा हो गया और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा : तुम मेरी क़ौम में मेरा नाइब रहना और इस्लाह़ करना और फ़सादियों के रास्ते पर न चलना।

﴿وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى﴾ : **और हम ने मूसा से वा'दा फ़रमाया ।** ﴾ इस आयत में तौरात नाज़िल होने की कैफ़िय्यत का बयान है।

नुज़ूले तौरात का वाक़िआ़

इस का वाक़िआ़ येह है कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने मिस्र में बनी इसराईल से वा'दा फ़रमाया था कि जब **अल्लाह** तआ़ला उन के दुश्मन फ़िरऔ़न को हलाक फ़रमा देगा तो वोह उन के पास **अल्लाह** तआ़ला की जानिब से एक किताब लाएंगे जिस में ह़लाल व ह़राम का बयान होगा। जब **अल्लाह** तआ़ला ने फ़िरऔ़न को हलाक कर दिया तो ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** तआ़ला से उस किताब को नाज़िल फ़रमाने की दरख़्वास्त की, उन्हें

1 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۴۲، ۵/۳۵۱.

www.dawateislami.net

हुक्म मिला कि तीस रोज़े रखें, येह ज़ुल क़ा'दह का महीना था। जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام रोज़े पूरे कर चुके तो आप को अपने दहने मुबारक में एक त़रह़ की बू मा'लूम हुई, इस वज्ह से आप ने मिस्वाक कर ली। फ़िरिश्तों ने उन से अ़र्ज़ की : "हमें आप के दहने मुबारक से बड़ी मह़बूब ख़ुश्बू आया करती थी, आप ने मिस्वाक कर के उस को ख़त्म कर दिया। **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें हुक्म फ़रमाया कि माहे ज़िल ह़िज्जा में दस रोज़े और रखें और इर्शाद फ़रमाया कि" ऐ मूसा! क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि रोज़ेदार के मुंह की ख़ुश्बू मेरे नज़्दीक मुश्क की ख़ुश्बू से ज़ियादा पाकीज़ा है।[1]

﴿وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ﴾ **: और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा।** आयत का ख़ुलासा येह है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने पहाड़ पर मुनाजात के लिये जाते वक़्त अपने भाई ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से फ़रमाया : "तुम मेरे वापस आने तक मेरी क़ौम में मेरे नाइब बन कर रहो और बनी इसराईल के साथ नरमी से पेश आना, उन के साथ भलाई करना और उन्हें **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त पर उभारना और बनी इसराईल के उन लोगों के त़रीक़े पर न चलना जो ज़मीन में अपने रब عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी कर के और गुनाहगारों की उन के गुनाह पर मदद कर के फ़साद बरपा करते हैं बल्कि जो लोग अपने रब عَزَّوَجَلَّ के इत़ाअ़त गुज़ार बन्दे हैं उन के त़रीक़े को इख़्तियार करना।[2]

याद रहे कि यहां ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से जो इस्लाह़ और सह़ीह़ रास्ते पर चलने का फ़रमाया वोह ह़क़ीक़त में आप के वासित़े से बनी इसराईल को फ़रमाया था वरना अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तो फ़सादियों के रास्ते पर चलने से मा'सूम हैं। येह भी हो सकता है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को येह फ़रमाना बत़ौरे ताकीद व इस्तिक़ामत के हो।

وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ رَبِّ اَرِنِيْۤ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ؕ
قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ

1 .....بیضاوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۴۲، ۳/۵۶، مدارک، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۴۲، ص۳۸۴، تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۴۲، ۵/۳۵۱-۳۵۲، ملتقطاً.

2 .....بغوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۴۲، ۲/۱۶۳، تفسیر طبری، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۴۲، ۶/۴۹.

www.dawateislami.net

تَرٰىنِیْ ؕ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّ خَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّاۤ
اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَیْكَ وَ اَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۴۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब मूसा हमारे वा'दे पर हाज़िर हुवा और उस से उस के रब ने कलाम फ़रमाया अ़र्ज़ की ऐ रब मेरे मुझे अपना दीदार दिखा कि मैं तुझे देखूं फ़रमाया तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा हां इस पहाड़ की त़रफ़ देख येह अगर अपनी जगह पर ठहरा रहा तो अ़न्क़रीब तू मुझे देख लेगा फिर जब उस के रब ने पहाड़ पर अपना नूर चमकाया उसे पाश पाश कर दिया और मूसा गिरा बेहोश फिर जब होश हुवा बोला पाकी है तुझे मैं तेरी त़रफ़ रुजूअ़ लाया और मैं सब से पहला मुसल्मान हूं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब मूसा हमारे वा'दे के वक़्त पर हाज़िर हुवा और उस के रब ने उस से कलाम फ़रमाया, तो उस ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! मुझे अपना जल्वा दिखा ताकि मैं तेरा दीदार कर लूं। (**अल्लाह** ने) फ़रमाया : तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा, अलबत्ता इस पहाड़ की त़रफ़ देख, येह अगर अपनी जगह पर ठहरा रहा तो अ़न्क़रीब तू मुझे देख लेगा फिर जब उस के रब ने पहाड़ पर अपना नूर चमकाया तो उसे पाश पाश कर दिया और मूसा बेहोश हो कर गिर गए फिर जब होश आया तो अ़र्ज़ की : तू पाक है, मैं तेरी त़रफ़ रुजूअ़ लाया और मैं सब से पहला मुसल्मान हूं।

﴿وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ﴾ : **और उस के रब ने उस से कलाम फ़रमाया ।** ﴾ इस आयत से साबित हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से कलाम फ़रमाया इस पर हमारा ईमान है और हमारी क्या हैसिय्यत कि हम उस कलाम की ह़क़ीक़त से बह़स कर सकें। किताबों में मज़्कूर है कि जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام कलाम सुनने के लिये ह़ाज़िर हुए तो आप ने त़हारत की और पाकीज़ा लिबास पहना और रोज़ा रख कर त़ूरे सीना में ह़ाज़िर हुए। **अल्लाह** तआ़ला ने एक बादल नाज़िल फ़रमाया जिस ने पहाड़ को हर त़रफ़ से चार फ़रसंग (या'नी 12 मील) की मिक़्दार ढक लिया। शयात़ीन और ज़मीन के जानवर ह़त्ता कि साथ रहने वाले फ़िरिश्ते तक वहां से अ़लाह़दा कर दिये गए। आप के लिये आस्मान खोल दिया गया तो आप ने मलाएका को मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि हवा में खड़े हैं और आप ने अ़र्शे इलाही को साफ़ देखा यहां तक कि अल्वाह़ पर क़लमों की आवाज़ सुनी और **अल्लाह** तआ़ला ने आप से कलाम फ़रमाया।

www.dawateislami.net

आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस की बारगाह में अपने मा'रूज़ात पेश किये, उस ने अपना कलामे करीम सुना कर नवाज़ा। ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام आप के साथ थे लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से जो कुछ फ़रमाया वोह उन्हों ने कुछ न सुना। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को कलामे रब्बानी की लज़्ज़त ने उस के दीदार का आरज़ू मन्द बनाया।[1]

﴿قَالَ لَنْ تَرٰىنِیْ﴾ **: फ़रमाया : तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा।** जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** तआ़ला का कलाम सुना तो कलामे रब्बानी की लज़्ज़त ने उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीदार का मुश्ताक़ बना दिया चुनान्चे बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! मुझे अपना जल्वा दिखा ताकि मैं तेरा दीदार कर लूं। या'नी सिर्फ़ दिल या ख़याल का दीदार नहीं मांगता बल्कि आंख का दीदार चाहता हूं कि जैसे तू ने मेरे कान से ह़िजाब उठा दिया तो मैं ने तेरा कलामे क़दीम सुन लिया ऐसे ही मेरी आंख से पर्दा हटा दे ताकि तेरा जमाल देख लूं। **अल्लाह** तआ़ला ने उन से इर्शाद फ़रमाया : तुम दुन्या में मेरा दीदार करने की ताक़त नहीं रखते।[2]

अल्लाह तआ़ला का दीदार ना मुम्किन नहीं

इस आयत से येह साबित नहीं होता कि **अल्लाह** तआ़ला का दीदार मुम्किन नहीं बल्कि इसी आयत में **अल्लाह** तआ़ला का दीदार मुम्किन होने पर कई दलाइल हैं।

पहली दलील : अगर दीदारे इलाही ना मुम्किन था तो इस की दुआ़ करना ना जाइज़ होता और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जो कि नुबुव्वत के उ़लूमो मआ़रिफ़ और इस के असरार के ह़ामिल हैं वोह हरगिज़ यूं दुआ़ न करते ''رَبِّ اَرِنِیْۤ اَنْظُرْ اِلَیْكَ'' ऐ मेरे रब ! मुझे अपना जल्वा दिखा ताकि मैं तेरा दीदार कर लूं। और अगर बिलफ़र्ज़ येह दुआ़ ना जाइज़ होती तो **अल्लाह** तआ़ला ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ऐसी दुआ़ करने से मन्अ़ फ़रमा देता।

दूसरी दलील : अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से फ़रमाया : ''لَنْ تَرٰىنِیْ'' तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा। इस में **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के देखने की नफ़ी की है, येह नहीं फ़रमाया कि मेरा देखना मुम्किन नहीं।

तीसरी दलील : येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : ''وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِیْ'' अलबत्ता इस पहाड़ की त़रफ़ देख, येह अगर

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ۱۴۳، ۲/۱۳۶، روح البيان، الاعراف، تحت الآية: ۱۴۳، ۲/۲۲۹-۲۳۰.

2 .....صاوی، الاعراف، تحت الآية: ۱۴۳، ۲/۷۰۷.

www.dawateislami.net

अपनी जगह पर ठहरा रहा तो अ़न्क़रीब तू मुझे देख लेगा। इस में **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के देखने को पहाड़ के अपनी जगह बर क़रार रहने पर मुअ़ल्लक़ किया और पहाड़ का अपनी जगह पर बर क़रार रहना फ़ी नफ़्सिही मुम्किन है और जो मुम्किन पर मौक़ूफ़ होता है वोह भी मुम्किन होता है, लिहाज़ा साबित हुवा कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का **अल्लाह** तआ़ला को देखना मुम्किन था। सरे दस्त येह तीन दलाइल अ़र्ज़ किये हैं, इन के इ़लावा क़ुरआने पाक की कई आयात और अह़ादीस से साबित होता है कि **अल्लाह** तआ़ला का दीदार मुम्किन है और क़ियामत के दिन ईमान वाले इस सआ़दत से बहरा मन्द होंगे। सह़ीह़ बुख़ारी में है, ह़ज़रते अ़दी बिन ह़ातिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम में से हर शख़्स के साथ उस का रब عَزَّوَجَلَّ कलाम फ़रमाएगा उस शख़्स के और उस के रब عَزَّوَجَلَّ के दरमियान कोई तरजुमान होगा और न कोई ह़िजाब होगा जो उस के रब عَزَّوَجَلَّ को देखने से मानेअ़ हो।"[1]

नोट : आख़िरत में मोमिनों को **अल्लाह** तआ़ला का दीदार होने से मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली दलाइल सूरए अन्आ़म की आयत नम्बर 103 की तफ़्सीर में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

قَالَ يٰمُوْسٰۤى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِىْ وَبِكَلَامِىْ ۫ فَخُذْ مَاۤ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फ़रमाया ऐ मूसा मैं ने तुझे लोगों से चुन लिया अपनी रिसालतों और अपने कलाम से तो ले जो मैं ने तुझे अ़त़ा फ़रमाया और शुक्र वालों में हो।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : (**अल्लाह** ने) फ़रमाया : ऐ मूसा ! मैं ने अपनी रिसालतों और अपने कलाम के साथ तुझे लोगों पर मुन्तख़ब कर लिया तो जो मैं ने तुम्हें अ़त़ा फ़रमाया है उसे ले लो और शुक्र गुज़ारों में से हो जाओ।

قَالَ يٰمُوْسٰۤى : फ़रमाया ऐ मूसा। **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को दीदार के मुत़ालबे पर मन्अ़ फ़रमा दिया था, इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर किये गए इन्आ़मात को गिनवा कर उन्हें तसल्ली देते हुए शुक्र करने का हुक्म दे रहा है गोया

[1] .....بخاری، کتاب التوحید، باب قول اللّٰہ تعالی: وجوہ یومئذ ناضرۃ... الخ، ٤/٥٥٦، الحدیث: ٧٤٤٣.

www.dawateislami.net

कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन से इर्शाद फ़रमाया : ऐ मूसा ! दीदार का मुत़ालबा करने पर अगर्चे तुझे मन्अ़ कर दिया गया लेकिन मैं ने तुम्हें फ़ुलां फ़ुलां अ़ज़ीम ने'मतें तो अ़त़ा फ़रमाई हैं लिहाज़ा दीदार से मन्अ़ करने पर अपना सीना तंग न करो, तुम उन ने'मतों की त़रफ़ देखो जिन के साथ मैं ने तुम्हें ख़ास किया कि मैं ने अपनी रिसालतों के साथ तुझे लोगों पर मुन्तख़ब कर लिया और तुम्हें मुझ से बिला वासित़ा हम कलामी का शरफ़ अ़त़ा हुवा जब कि दीगर अम्बियाओ मुरसलीन عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से फ़िरिश्ते के वासित़े से कलाम हुवा ।[1]

ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का अपने ज़माने के लोगों पर इन्तिख़ाब हुवा

याद रहे कि आयत में जो बयान हुवा कि "**अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा को अपनी रिसालतों और अपने कलाम के साथ लोगों पर मुन्तख़ब कर लिया**" इस में लोगों से मुराद उन के ज़माने के लोग हैं और इस में कोई शक नहीं कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने ज़माने के लोगों में सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़तो मर्तबे वाले, शराफ़तो वजाहत वाले थे क्यूं कि आप साह़िबे शरीअ़त थे और आप पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब तौरात भी नाज़िल हुई । लिहाज़ा इस से ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की फ़ज़ीलत साबित नहीं होती ।[2]

وَكَتَبْنَا لَهٗ فِي الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ؕ سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۱۴۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने उस के लिये तख़्तियों में लिख दी हर चीज़ की नसीह़त और हर चीज़ की तफ़्सील और फ़रमाया ऐ मूसा इसे मज़बूती से ले और अपनी क़ौम को हुक्म दे कि इस की अच्छी बातें इख़्तियार करें अ़न्क़रीब मैं तुम्हें दिखाऊंगा बे हुक्मों का घर ।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और हम ने उस के लिये (तौरात की) तख़्तियों में हर चीज़ की नसीह़त और हर चीज़ की तफ़्सील लिख दी (और फ़रमाया) इसे मज़बूती से पकड़ लो और अपनी

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ١٤٤، ٢/١٣٨.

2 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ١٤٤، ٢/١٣٨، صاوی، الاعراف، تحت الآية: ١٤٤، ٢/٧٠٨، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

क़ौम को हुक्म दो कि वोह इस की अच्छी बातें इख़्तियार करें। अ़न्क़रीब मैं तुम्हें ना फ़रमानों का घर दिखाऊंगा।

﴿وَكَتَبْنَا لَهٗ فِي الْاَلْوَاحِ﴾ : **और हम ने उस के लिये तख़्तियों में लिख दी।** ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "اَلْوَاحُ" या'नी तख़्तियों से मुराद तौरात की तख़्तियां हैं और आयत का मा'ना येह है कि हम ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये तौरात को तख़्तियों में लिख दिया, जिन तख़्तियों में तौरात को लिखा गया वोह ज़बर जद या ज़ुमुर्रुद की थीं और उन की ता'दाद सात या दस थी। तौरात ईदुल अज़्ह़ा के दिन ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को अ़ता हुई।[1]

नीज़ इस आयत में मज़ीद येह चीज़ें बयान हुई हैं :

(1)..... हर चीज़ की नसीह़त, इस से मुराद येह है कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम को अपने दीन में ह़लाल ह़राम और अच्छी बुरी चीज़ों से मुतअ़ल्लिक़ जिन अह़काम की ज़रूरत थी वोह सब तौरात में लिखी हुई थीं।[2]

(2)..... हर चीज़ की तफ़्सील, इस का मा'ना येह है कि बनी इसराईल को जितने अह़कामे शरइ़य्या दिये गए थे तौरात में उन तमाम अह़काम की तफ़्सील लिख दी थी।[3]

(3)..... तौरात को मज़बूती से पकड़ना, क़ुव्वत और मज़बूती से पकड़ने का मत़लब येह है कि बड़ी कोशिश, चुस्ती, होशियारी और शौक़ से इस में मौजूद अह़काम पर अ़मल करने का अ़ज़्म कर के इस को हाथ में लो।[4]

नोट : याद रहे कि इस में ख़ित़ाब अगर्चे ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से है लेकिन इस से मुराद आप के साथ आप की क़ौम भी है।

(4)..... तौरात की अच्छी बातें इख़्तियार करने का हुक्म देना। इस का मा'ना येह है कि तौरात में जो अह़काम मज़्कूर हैं उन में जो ज़ियादा बेहतर हो उसे इख़्तियार करने का हुक्म दो क्यूं कि तौरात में अ़ज़ीमत और रुख़्सत, जाइज़ और मुस्तह़ब उमूर का भी ज़िक्र है। अ़ज़ीमत पर अ़मल करना रुख़्सत पर अ़मल के मुक़ाबले में बेहतर है।[5]

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۴۵، ۲/۱۳۸، تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۴۵، ۵/۳۶۰، ملتقطاً.

2 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۴۵، ۵/۳۶۰.

3 .....تفسیر قرطبی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۴۵، ۴/۲۰۳، الجزء السابع.

4 .....قرطبی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۴۵، ۴/۲۰۳، الجزء السابع، بیضاوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۴۵، ۳/۵۸، ملتقطاً.

5 .....صاوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۴۵، ۲/۷۰۹.

www.dawateislami.net

एक क़ौल येह है कि तौरात में अम्र व नही का बयान है, तो जिस काम के करने का हुक्म दिया गया है उसे करने और जिस से मन्अ़ किया गया है उस से रुक जाने का हुक्म दो।[1]

और एक क़ौल येह है कि तौरात में फ़राइज़, नवाफ़िल और मुबाह़ कामों के अह़काम हैं। फ़राइज़ो नवाफ़िल पर अ़मल करना बेहतरीन अ़मल है और सिर्फ़ फ़राइज़ पर अ़मल करना इस से कम दरजे का है और मुबाह़ पर अ़मल करना इस से भी कम दरजे का है। तो जो अ़मल बेहतरीन है उस के करने का हुक्म दो।[2]

﴿سَاُورِیْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِیْنَ﴾ **: अ़न्क़रीब मैं तुम्हें ना फ़रमानों का घर दिखाऊंगा।** ﴾ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत के कई मा'ना बयान किये हैं। ह़ज़रते ह़सन और अ़त़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمَا ने कहा कि बे हुक्मों के घर से जहन्नम मुराद है। और ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का क़ौल है कि "मा'ना येह हैं कि मैं तुम्हें शाम में दाख़िल करूंगा और गुज़री हुई उम्मतों के मनाज़िल दिखाऊंगा जिन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मुख़ालफ़त की ताकि तुम्हें उस से इ़ब्रत ह़ासिल हो।" और अ़त़िय्या औ़फ़ी का क़ौल है कि "دَارَ الْفٰسِقِیْنَ" से फ़िरऔ़न और उस की क़ौम के मकानात मुराद हैं जो मिस्र में हैं। और मुफ़स्सिर सुद्दी का क़ौल है कि इस से मनाज़िले कुफ़्फ़ार मुराद हैं। कल्बी ने कहा कि इस से आ़द व समूद और हलाक शुदा उम्मतों के मनाज़िल मुराद हैं जिन पर अ़रब के लोग अपने सफ़रों में हो कर गुज़रा करते थे।[3]

سَاَصْرِفُ عَنْ اٰیٰتِیَ الَّذِیْنَ یَتَكَبَّرُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ ؕ وَ اِنْ
یَّرَوْا كُلَّ اٰیَةٍ لَّا یُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَ اِنْ یَّرَوْا سَبِیْلَ الرُّشْدِ لَا یَتَّخِذُوْهُ
سَبِیْلًا ۚ وَ اِنْ یَّرَوْا سَبِیْلَ الْغَیِّ یَتَّخِذُوْهُ سَبِیْلًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا
بِاٰیٰتِنَا وَ كَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِیْنَ ﴿۱۴۶﴾ وَ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَ لِقَآءِ الْاٰخِرَةِ

1 .....تفسیر طبری، الاعراف، تحت الآیة: ۱۴۵، ۶/۵۹.
2 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیة: ۱۴۵، ۵/۳۶۰.
3 .....خازن، الاعراف، تحت الآیة: ۱۴۵، ۲/۱۴۰.

www.dawateislami.net

حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ یُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۷﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं अपनी आयतों से उन्हें फेर दूंगा जो ज़मीन में नाहक़ अपनी बड़ाई चाहते हैं और अगर सब निशानियां देखें उन पर ईमान न लाएं और अगर हिदायत की राह देखें उस में चलना पसन्द न करें और गुमराही का रास्ता नज़र पड़े तो उस में चलने को मौजूद हो जाएं येह इस लिये कि उन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं और उन से बे ख़बर बने। और जिन्हों ने हमारी आयतें और आख़िरत के दरबार को झुटलाया उन का सब किया धरा अकारत गया उन्हें क्या बदला मिलेगा मगर वोही जो करते थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मैं अपनी आयतों से उन लोगों को फेर दूंगा जो ज़मीन में नाहक़ अपनी बड़ाई चाहते हैं और अगर वोह सब निशानियां देख लें तो भी उन पर ईमान नहीं लाते और अगर वोह हिदायत की राह देख लें तो उसे अपना रास्ता नहीं बनाते और अगर गुमराही का रास्ता देख लें तो उसे अपना रास्ता बना लेते हैं। येह इस लिये कि उन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया और उन से ग़ाफ़िल रहे। और जिन्हों ने हमारी आयतों और आख़िरत की मुलाक़ात को झुटलाया तो उन के तमाम आ'माल बरबाद हुए, उन्हें उन के आ'माल ही का बदला दिया जाएगा।

﴿سَاَصْرِفُ عَنْ اٰیٰتِیَ﴾ **: और मैं अपनी आयतों से फेर दूंगा।** ﴾ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत के मुख़्तलिफ़ मा'ना बयान किये हैं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : इस का मा'ना येह है कि जो लोग मेरे बन्दों पर ग़ुरूर करते हैं और मेरे औलिया से लड़ते हैं मैं उन्हें अपनी आयतें क़बूल करने और उन की तस्दीक़ करने से फेर दूंगा ताकि वोह मुझ पर ईमान न लाएं। येह उन के इ़नाद की सज़ा है कि उन्हें हिदायत से महरूम किया गया।[1]

तकब्बुर की ता'रीफ़ और इस की अक़्साम

इस आयत में नाहक़ तकब्बुर करने वालों के लिये बड़ी इ़ब्रत है। तकब्बुर की ता'रीफ़ येह है कि दूसरों को ह़क़ीर जानना। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''اَلْكِبْرُ بَطَرُ الْحَقِّ وَغَمْطُ النَّاسِ'' तकब्बुर

1 .....بغوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۴۶، ۲/۱۶۷.

www.dawateislami.net

हक़ की मुख़ालफ़त और लोगों को हक़ीर जानने का नाम है।[1]

इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : तकब्बुर की तीन क़िस्में हैं :

(1)..... वोह तकब्बुर जो **अल्लाह** तआ़ला के मुक़ाबले में हो जैसे इब्लीस, नमरूद और फ़िरऔ़न का तकब्बुर या ऐसे लोगों का तकब्बुर जो ख़ुदाई का दा'वा करते हैं और **अल्लाह** तआ़ला के बन्दों से नफ़रत के तौ़र पर मुंह फेरते हैं।

(2)..... वोह तकब्बुर जो **अल्लाह** तआ़ला के रसूल के मुक़ाबले में हो, जिस त़रह़ कुफ़्फ़ारे मक्का ने किया और कहा कि हम आप जैसे बशर की इत़ाअ़त नहीं करेंगे, हमारी हिदायत के लिये **अल्लाह** तआ़ला ने कोई फ़िरिश्ता या सरदार क्यूं नहीं भेजा, आप तो एक यतीम शख़्स हैं।

(3)..... वोह तकब्बुर जो आदमी आ़म इन्सानों पर करे, जैसे उन्हें ह़क़ारत से देखे, ह़क़ को न माने और ख़ुद को बेहतर और बड़ा जाने।[2]

तकब्बुर की तीनों अक़्साम का ह़ुक्म

अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल की जनाब में तकब्बुर करना कुफ़्र है जब कि आ़म बन्दों पर तकब्बुर करना कुफ़्र नहीं लेकिन इस का गुनाह भी बहुत बड़ा है।

तकब्बुर का समरा और अन्जाम

इस आयत में नाह़क़ तकब्बुर का समरा और तकब्बुर करने वालों का जो अन्जाम बयान हुवा कि नाह़क़ तकब्बुर करने वाले अगर सारी निशानियां देख लें तो भी वोह ईमान नहीं लाते और अगर वोह हिदायत की राह देख लें तो वोह उसे अपना रास्ता नहीं बनाते और अगर गुमराही का रास्ता देख लें तो उसे अपना रास्ता बना लेते हैं। इस से मा'लूम हुवा कि ग़ुरूर वोह आग है जो दिल की तमाम क़ाबिलिय्यतों को जला कर बरबाद कर देती है ख़ुसूसन जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूलों के मुक़ाबले में तकब्बुर हो। **अल्लाह** तआ़ला की पनाह। क़ुरआनो ह़दीस से हर कोई हिदायत नहीं ले सकता, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

1 .....مسلم، كتاب الايمان، باب تحريم الكبر و بيانه، ص ٦٠، الحديث: ١٤٧ (٩١).

2 .....کیمیائے سعادت، رکن سوم: مہلکات، اصل نہم، پیدا کردن درجات کبر، ٢/٧٠٧-٧٠٨.

www.dawateislami.net

يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ؕ وَ يَهْدِیْ بِهٖ كَثِيْرًا (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** बहुत से लोगों को इस के ज़रीए़ गुमराह करता है और बहुत से लोगों को हिदायत अ़ता फ़रमाता है।

तकब्बुर ही ने इब्लीस के दिल में ह़सद की आग भड़काई, और उस की तमाम इ़बादात बरबाद कर के रख दीं।(2)

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ؕ
اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَ لَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَ كَانُوْا
ظٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۸﴾ وَ لَمَّا سُقِطَ فِيْۤ اَيْدِيْهِمْ وَ رَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَىِٕنْ لَّمْ
يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَ يَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۱۴۹﴾ وَ لَمَّا رَجَعَ مُوْسٰۤى
اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِيْ مِنْۢ بَعْدِيْ ۚ
اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَ اَلْقَى الْاَلْوَاحَ وَ اَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗۤ اِلَيْهِ ؕ
قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِيْ وَ كَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِيْ ۪ فَلَا تُشْمِتْ
بِيَ الْاَعْدَآءَ وَ لَا تَجْعَلْنِيْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۵۰﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ
وَ لِاَخِيْ وَ اَدْخِلْنَا فِيْ رَحْمَتِكَ ۫ وَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۱۵۱﴾

وقف لازم

ع ۱۵ ۸

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और मूसा के बा'द उस की क़ौम अपने ज़ेवरों से एक बछड़ा बना

1 .....बक़रह:۲٦.

2 ..... तकब्बुर के बारे में मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये किताब "तकब्बुर" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

बैठी बेजान का धड़ गाय की त़रह़ आवाज़ करता क्या न देखा कि वोह उन से न बात करता है और न उन्हें कुछ राह बताए उसे लिया और वोह ज़ालिम थे। और जब पचताए और समझे कि हम बहके बोले अगर हमारा रब हम पर मेह्र न करे और हमें न बख़्शे तो हम तबाह हुए। और जब मूसा अपनी क़ौम की त़रफ़ पलटा गुस्से में भरा झुंजलाया हुवा कहा तुम ने क्या बुरी मेरी जा नशीनी की मेरे बा'द क्या तुम ने अपने रब के हुक्म से जल्दी की और तख़्तियां डाल दीं और अपने भाई के सर के बाल पकड़ कर अपनी त़रफ़ खींचने लगा कहा ऐ मेरे मां जाए क़ौम ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि मुझे मार डालें तो मुझ पर दुश्मनों को न हंसा और मुझे ज़ालिमों में न मिला। अ़र्ज़ की ऐ रब मेरे मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे और हमें अपनी रह़मत के अन्दर ले ले और तू सब मेह्र वालों से बढ़ कर मेह्र वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मूसा के पीछे उस की क़ौम ने अपने ज़ेवरात से एक बेजान बछड़े को (मा'बूद) बना लिया जिस की गाय जैसी आवाज़ थी। क्या उन्हों ने येह न देखा कि वोह (बछड़ा) उन से न कलाम करता है और न उन्हें कोई हिदायत देता है ? उन्हों ने उसे (मा'बूद) बना लिया और वोह ज़ालिम थे। और जब शरमिन्दा हुए और समझ गए कि वोह यक़ीनन गुमराह हो गए थे तो कहने लगे : अगर हमारे रब ने हम पर रह़्म न फ़रमाया और हमारी मग़्फ़िरत न फ़रमाई तो हम ज़रूर तबाह हो जाएंगे। और जब मूसा अपनी क़ौम की त़रफ़ बहुत ज़ियादा ग़मो गुस्से में भरे हुए लौटे तो फ़रमाया : तुम ने मेरे बा'द कितना बुरा काम किया, क्या तुम ने अपने रब के हुक्म में जल्दी की ? और मूसा ने तख़्तियां (ज़मीन पर) डाल दीं और अपने भाई के सर के बाल पकड़ कर अपनी त़रफ़ खींचने लगे। (हारून ने) कहा : ऐ मेरी मां के बेटे ! बेशक क़ौम ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि मुझे मार डालते तो तुम मुझ पर दुश्मनों को हंसने का मौक़अ़ न दो और मुझे ज़ालिमों के साथ न मिला। अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे और हमें अपनी रह़मत में दाख़िल फ़रमा और तू सब रह़्म करने वालों से बढ़ कर रह़्म फ़रमाने वाला है।

﴿وَاتَّخَذَ﴾ **: और बना लिया।** इस आयत और इस के बा'द वाली 3 आयात में जो वाक़िआ़ बयान हुवा उस का ख़ुलासा येह है कि जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कलाम करने के लिये कोहे त़ूर पर तशरीफ़ ले गए तो उन के जाने के तीस दिन बा'द सामिरी ने बनी इसराईल से वोह तमाम ज़ेवरात जम्अ़ कर लिये जो उन्हों ने अपनी ईद के दिन क़िब्त़ियों से इस्ति'माल की ख़ात़िर लिये थे। फ़िरऔ़न चूंकि अपनी क़ौम के साथ हलाक हो चुका था, इस लिये येह ज़ेवरात बनी इसराईल के पास थे और सामिरी की हैसिय्यत बनी इसराईल में ऐसी

www.dawateislami.net

थी कि लोग उस की बात को अहम्मिय्यत देते और उस पर अ़मल करते थे। सामिरी चूंकि सोने को ढालने का काम करता था इस लिये उस ने तमाम सोने चांदी को ढाल कर उस से एक बेजान बछड़ा बनाया। फिर सामिरी ने ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام के घोड़े के सुम के नीचे से ली हुई ख़ाक उस बछड़े में डाली तो उस के असर से वोह गोश्त और ख़ून में तब्दील हो गया (और बक़ौले दीगर वोह सोने ही का बछड़ा था) और गाय की त़रह़ डकारने लगा। सामिरी के बहकाने पर बनी इसराईल के बारह हज़ार लोगों के इ़लावा बक़िय्या सब ने उस बछड़े की पूजा की। येह लोग इतने बे वुक़ूफ़ और कम अ़क़्ल थे कि इतनी बात भी न समझ सके कि येह बछड़ा न तो उन से सुवाल जवाब की सूरत में कलाम कर सकता है, न उन्हें रुश्दो हिदायत की राह दिखा सकता है तो येह मा'बूद किस त़रह़ हो सकता है। ह़ालां कि बनी इसराईल जानते थे कि रब वोह है जो क़ादिरे मुत़्लक़, अ़लीम, ख़बीर और हादी हो और नबी के वासित़े से मख़्लूक़ से कलाम फ़रमाए। बछड़ा चूंकि राहे हिदायत न दिखा सकता था इस ए'तिबार से वोह जमाद की त़रह़ था। बनी इसराईल ने **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत से ए'राज़ कर के ऐसे आ़जिज़ो नाक़िस बछड़े को पूजा तो वोह ज़ालिम ठहरे। फिर जब अपने इस करतूत पर शरमिन्दा हुए और समझ गए कि वोह यक़ीनन गुमराह हो गए थे तो कहने लगे : अगर हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ने हम पर रह़्म न फ़रमाया और हमारी मग़्फ़िरत न फ़रमाई तो हम ज़रूर तबाह हो जाएंगे। जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने रब عَزَّوَجَلَّ की मुनाजात से मुशर्रफ़ हो कर कोहे त़ूर से अपनी क़ौम की त़रफ़ वापस पलटे तो बहुत ज़ियादा ग़मो ग़ुस्से में भरे हुए थे इस लिये कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें ख़बर दे दी थी कि सामिरी ने उन की क़ौम को गुमराह कर दिया है। आप को झुंजलाहट और ग़ुस्सा सामिरी पर था न कि ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर, क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को पहले से बता दिया था कि उन्हें सामिरी ने गुमराह किया है। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने (क़ौम से फ़रमाया कि तुम ने मेरे बा'द कितना बुरा काम किया कि शिर्क करने लगे और मेरे तौरात ले कर आने का इन्तिज़ार भी न किया। दूसरे क़ौल के मुत़ाबिक़ आयत का मत़लब येह है कि आप عَلَيْهِ السَّلَام ने) ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और अपनी क़ौम के उन लोगों से जिन्हों ने बछड़े की पूजा न की थी फ़रमाया : तुम ने मेरे बा'द कितना बुरा काम किया कि लोगों को बछड़ा पूजने से न रोका। क्या तुम ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुक्म में जल्दी की और मेरे तौरैत ले कर आने का इन्तिज़ार न किया ? इस के बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने तौरात की तख़्तियां ज़मीन पर डाल दीं और अपने भाई के सर के बाल

www.dawateislami.net

पकड़ कर अपनी त़रफ़ खींचने लगे क्यूं कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अपनी क़ौम का ऐसी बद तरीन मा'सियत में मुब्तला होना निहायत शाक़ और गिरां हुवा तब ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से कहा : ऐ मेरी मां के बेटे ! मैं ने क़ौम को रोकने और उन को वा'ज़ो नसीह़त करने में कमी नहीं की लेकिन क़ौम ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि मुझे मार डालते तो तुम मुझ पर दुश्मनों को हंसने का मौक़अ़ न दो और मेरे साथ ऐसा सुलूक न करो जिस से वोह ख़ुश हों और मुझे ज़ालिमों के साथ शुमार न करो। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने भाई का उ़ज़्र क़बूल कर के बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! अगर हम में से किसी से कोई इफ़रात़ या तफ़रीत़ हो गई तो मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे और हमें अपनी ख़ास रह़मत में दाख़िल फ़रमा और तू रह़म करने वालों में सब से बढ़ कर रह़म फ़रमाने वाला है। येह दुआ आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इस लिये मांगी कि दूसरे लोग येह सुन कर ख़ुश न हों कि भाइयों में चल गई और इस के साथ येह वज्ह भी थी कि ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ग़म ग़लत़ हो जाए।[1]

नोट : येह वाक़िआ़ इज्माली त़ौर पर सूरए बक़रह आयत 51 ता 54 में गुज़र चुका है, मज़ीद तफ़्सील के साथ इस के इलावा सूरए طٰهٰ में भी मज़्कूर है।

﴿وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ﴾ **: और तख़्तियां डाल दीं।** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने जब अपनी क़ौम को बछड़े की पूजा करते देखा तो दीनी ह़मिय्यत और **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन के साथ शिर्क पर ग़ैरत की वज्ह से शदीद ग़ज़ब नाक हुए और उ़ज्लत में तौरात की तख़्तियां ज़मीन पर रख दीं ताकि उन का हाथ जल्दी फ़ारिग़ हो जाए और वोह अपने भाई ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का सर पकड़ सकें। इसे क़ुरआने पाक में डालने से ता'बीर किया गया। इस डालने में किसी भी त़रह़ तौरात की तख़्तियों की बे ह़ुर्मती मक़्सूद न थी और वोह जो मन्क़ूल है कि बा'ज़ तख़्तियां टूट गईं तो अगर वोह दुरुस्त है तो वोह उ़ज्लत में ज़मीन पर रखने की वज्ह से टूटी होंगी, न येह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ग़रज़ थी और न ही उन को येह गुमान था कि ऐसा हो जाएगा। यहां पर सिर्फ़ दीनी ह़मिय्यत और फ़र्ते ग़ज़ब की वज्ह से जल्दी में उन तख़्तियों को ज़मीन पर रखना मुराद है।[2]

---

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ١٤٨ - ١٥٠، ٢/ ١٤٠-١٤٢، ابو سعود، الاعراف، تحت الآية: ١٤٨ - ١٥١، ٢/ ٢٩٧-٢٩٩، ملتقطاً.

2 .....روح المعاني، الاعراف، تحت الآية: ١٥٠، ٥/ ٩٠-٩١.

www.dawateislami.net

﴿فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْاَعْدَآءَ﴾ : **तो तुम मुझ पर दुश्मनों को हंसने का मौक़अ़ न दो ।** ﴾ **शमातत** का मा'ना है किसी की तक्लीफ़ पर ख़ुश होना ।[1]

शमातत की मज़म्मत

फ़ी ज़माना दीनी और दुन्यवी दोनों शो'बों में शमातत के नज़ारे बहुत आ़म हैं, मज़्हबी लोग और इसी त़रह़ कारीगर, दुकानदार, कारख़ाने, फ़ेक्टरी या मिल में मुलाज़मत करने वाले, यूंही किसी कम्पनी, इदारे या बेंक में जॉब करने वाले, इन की अक्सरिय्यत भी शमातत या'नी अपने मुसल्मान भाई पर आने वाली मुसीबत पर ख़ुश होने के मज़्मूम फ़े'ल में मुब्तला नज़र आती है और बा'ज़ अवक़ात तो यूं होता है कि अगर आपस में किसी वज्ह से नाराज़ी हो जाए तो फिर जिस से नाराज़ी होती है अगर वोह या उस के घर में से कोई बीमार हो जाए, उस के यहां डाका पड़ जाए या उस का माल चोरी हो जाए, या किसी वज्ह से कारोबार ठप हो जाए, या ह़ादिसा हो जाए, या मुक़द्दमा क़ाइम हो जाए या पोलीस गिरिफ़्तार कर ले, या गाड़ी का नुक़्सान या चालान हो जाए, अल ग़रज़ वोह किसी त़रह़ की भी मुसीबत में फंस जाए तो नाराज़ होने वाले साहिब बड़ी ख़ुशी का इज़्हार करते हैं बल्कि बा'ज़ ह़ज़रात जो कि ज़रूरत से ज़ियादा बातूनी और बे अ़मल होने के बा वुजूद अपने आप को "बड़ा पहुंचा हुवा" समझ बैठते हैं वोह तो यहां तक बोल पड़ते हैं कि देखा ! हम को सताया था ना तो उस के साथ "ऐसा" हो गया ! गोया वोह छुपी बातों और सरबस्ता (या'नी ख़ुफ़्या) राज़ों के जानने वाले हैं और आं बदौलत (या'नी इन) को अपने मुख़ालिफ़ पर आने वाली मुसीबत के अस्बाब मा'लूम हो जाते हैं । ऐसे लोगों को चाहिये कि ज़ैल में मज़्कूर रिवायत और इमाम ग़ज़ाली के फ़रमान से इ़ब्रत ह़ासिल करें, चुनान्चे

ह़ज़रते वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "لَا تُظْهِرِ الشَّمَاتَةَ لِاَخِيْكَ فَيَرْحَمُهُ اللّٰهُ وَيَبْتَلِيْكَ" अपने भाई की **शमातत** न कर (या'नी उस की मुसीबत पर इज़्हारे मसर्रत न कर) कि **अल्लाह** तआ़ला उस पर रह़्म करेगा और तुझे उस में मुब्तला कर देगा ।[2]

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ١٥٠، ٢/١٤٢.

2 .....ترمذی، كتاب صفة يوم القيامة، ٥٤-باب، ٤/٢٢٧، الحديث: ٢٥١٤.

www.dawateislami.net

ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : कहा गया है कि कुछ गुनाह ऐसे हैं जिन की सज़ा ''बुरा ख़ातिमा'' है हम इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहते हैं। येह गुनाह **''विलायत और करामत का झूटा दा'वा करना है।''**(1)

याद रहे कि अगर किसी मुसल्मान की मुसीबत पर दिल में ख़ुद ब ख़ुद ख़ुशी पैदा हुई तो इस का क़ुसूर नहीं ताहम इस ख़ुशी को दिल से निकालने की भरपूर सई करे, अगर ख़ुशी का इज़्हार करेगा तो **शमातत** का मुरतकिब होगा। लिहाज़ा हर मुसल्मान को चाहिये कि दूसरे मुसल्मान की तक्लीफ़ पर ख़ुशी के इज़्हार से बचे और शैत़ान के धोके में आ कर ख़ुद को ''बड़ा पहुंचा हुवा'' न समझे और इस से बचने की दुआ भी करता रहे। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सख़्त मुसीबत, बद बख़्ती के आने, बुरी तक़्दीर और दुश्मनों के त़ा'नो तश्नीअ़ से पनाह मांगा करते थे।(2)

﴿قَالَ : अ़र्ज़ की﴾ येह दुआए मग़्फ़िरत उम्मत की ता'लीम के लिये है, वरना अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام गुनाहों से पाक होते हैं इस लिये ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने भाई को इस दुआ में शामिल फ़रमाया ह़ालां कि उन से कोई कोताही सरज़द न हुई थी। नीज़ इस दुआ में ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दिलजूई और क़ौम के सामने उन के इक्राम का इज़्हार भी मक़्सूद था।

اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِيْنَ ﴿۱۵۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो बछड़ा ले बैठे अ़न्क़रीब उन्हें उन के रब का ग़ज़ब और ज़िल्लत पहुंचना है दुन्या की ज़िन्दगी में और हम ऐसा ही बदला देते हैं बोहतान हायों को।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जिन्हों ने बछड़े को (मा'बूद) बना लिया अ़न्क़रीब उन्हें दुन्या की ज़िन्दगी में उन के रब का ग़ज़ब और ज़िल्लत पहुंचेगी और हम बोहतान बांधने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं।

1 .....احیاء علوم الدین، کتاب قواعد العقائد، الفصل الرابع من قواعد العقائد فی الایمان والاسلام... الخ، ۱/۱۷۱.

2 .....بخاری، کتاب الدعوات، باب التعوّذ من جهد البلاء، ۴/۲۰۲، الحدیث: ۶۳۴۷.

www.dawateislami.net

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ﴾ : **बेशक वोह लोग जिन्हों ने बछड़े को (मा'बूद) बना लिया ।** ﴾ इस आयत की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीन का **एक क़ौल** येह है कि इस से मुराद वोह बछड़ा पूजने वाले लोग हैं जो ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के कोहे तूर से वापस आने से पहले ही मर गए । **दूसरा क़ौल** येह है कि इस से मुराद वोह यहूदी हैं कि जिन्हों ने बछड़े को पूजा और बा'द में तौबा न की ।[1] **तीसरा क़ौल** येह है कि इस से मुराद वोह लोग हैं जिन्हों ने क़त्ल हो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा की । इस सूरत में ग़ज़ब से मुराद क़त्ल होना और ज़िल्लत से मुराद गुमराही का ए'तिराफ़ करना और क़त्ल होने का हुक्म तस्लीम करना है । **चौथा क़ौल** येह है कि इस से मुराद सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने के यहूदी हैं । ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : येह वोह लोग हैं जिन्हों ने हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पाया और उन के आबाओ अज्दाद बछड़े की पूजा करते थे और ग़ज़ब से मुराद आख़िरत का अ़ज़ाब और दुन्या में ज़िल्लत से मुराद जिज़्या देना है । अ़ति़य्या औ़फ़ी का क़ौल है कि : ग़ज़ब से मुराद बनू नज़ीर और बनू क़ुरैज़ा का मुसल्मानों के हाथों क़त्ल होना और ज़िल्लत से मुराद उन्हें ह़िजाज़ से जला वत़न करना है ।[2]

﴿وَكَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُفْتَرِیْنَ﴾ : **और हम बोहतान बांधने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं ।** ﴾ या'नी जिस त़रह़ हम ने उन बछड़े की पूजा करने वालों को बदला दिया इसी त़रह़ हम हर उस शख़्स को बदला देंगे जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर झूट बांधे और ग़ैरे ख़ुदा की इ़बादत करे । अबू क़िलाबा कहते हैं : **अल्लाह** की क़सम ! येह क़ियामत तक हर बोहतान बांधने वाले की जज़ा है कि **अल्लाह** तआ़ला उसे ज़लील करेगा । ह़ज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : येह सज़ा क़ियामत तक आने वाले हर बिद्अ़ती के बारे में है । ह़ज़रते मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हर बिद्अ़ती अपने सर के ऊपर से ज़िल्लत पाएगा फिर येही आयत तिलावत फ़रमाई ।[3]

बिद्अ़त की ता'रीफ़

बिद्अ़त के लुग़वी मा'ना हैं नई चीज़ और बिद्अ़त के शर्ई मा'ना हैं वोह अ़क़ाइद या वोह आ'माल जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ह़यात के ज़माने में न हों बा'द में ईजाद हुए हों ।[4]

1 .....البحر المحیط، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۵۲، ۴/۳۹۵.

2 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۵۲، ۲/۱۴۳. 3 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۵۲، ۲/۱۴۳.

4 ..... जाअल ह़क़, ह़िस्सए अव्वल, पहला बाब : बिद्अ़त के मा'ना और इस के अक़्साम व अह़काम में, स. 177

www.dawateislami.net

बिद्अ़त की अक़्साम

बुन्यादी तौ़र पर बिद्अ़त की दो क़िस्में हैं : **(1)** बिद्अ़ते ह़सना **(2)** बिद्अ़ते सय्यिआ। **बिद्अ़ते ह़सना** येह है कि वोह नया काम जो किसी सुन्नत के ख़िलाफ़ न हो। और **बिद्अ़ते सय्यिआ** येह है कि दीन में कोई ऐसा त़रीक़ा ईजाद करना कि जिस की अस्ल किताबो सुन्नत में न हो और उस की वज्ह से शरीअ़त का कोई हुक्म तब्दील हो रहा हो।

وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْۤا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۵۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जिन्हों ने बुराइयां कीं और उन के बा'द तौबा की और ईमान लाए तो इस के बा'द तुम्हारा रब बख़्शने वाला मेहरबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह लोग जिन्हों ने बुरे आ'माल किये फिर उन के बा'द तौबा कर ली और ईमान ले आए तो बेशक इस तौबा व ईमान के बा'द तुम्हारा रब बख़्शने वाला मेहरबान है।

﴿وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ : **और वोह लोग जिन्हों ने बुरे आ'माल किये।**﴾ इस आयत में गुनाह के बा'द तौबा करने वालों के लिये बहुत बड़ी बिशारत और **अल्लाह** तआ़ला की रह़मते बे पायां का ज़िक्र है। आयत का ख़ुलासा येह है कि जिस शख़्स ने गुनाह का कोई पहलू न छोड़ा या'नी कुफ़्र तक का इरतिकाब किया, फिर उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने तमाम गुनाहों से सच्ची तौबा कर ली और ईमान लाया और उस तौबा पर क़ाइम रहा तो **अल्लाह** तआ़ला उस के सब गुनाह बख़्श देगा और उस की तौबा क़बूल फ़रमाएगा।[1]

इस आयत से साबित हुवा कि गुनाह ख़्वाह सग़ीरा हों या कबीरा जब बन्दा उन से तौबा करता है तो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला अपने फ़ज़्लो रह़मत से उन सब को मुआ़फ़ फ़रमाता है।

तौबा के फ़ज़ाइल

कसीर अह़ादीस में भी गुनाहों से सच्ची तौबा की क़बूलिय्यत और इस के फ़ज़ाइल

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۵۳، ۲/۱۴۳.

www.dawateislami.net

बयान किये गए हैं, तरग़ीब के लिये उन में से दो अहादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)..... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर तुम इतने गुनाह करो कि वोह आस्मान तक पहुंच जाएं और फिर तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमा लेगा।"[1]

(2)..... ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दे की तौबा पर इस से भी ज़ियादा ख़ुश होता है जैसे तुम में से किसी का ऊंट जंगल में गुम होने के बा'द दोबारा उसे मिल जाए[2]।"[3]

रह़मते इलाही की वुस्अ़त

इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत का ज़िक्र हुवा, इस मुनासबत से यहां **अल्लाह** तआ़ला की वसीअ़ रह़मत के बयान पर मुश्तमिल एक ह़दीसे पाक मुलाह़ज़ा फ़रमाएं, चुनान्चे ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला के पास सो रह़मतें हैं। उन में से एक रह़मत उस ने जिन्नो इन्स, ह़ैवानात और ह़शरातुल अ़र्द़ में नाज़िल की जिस से वोह एक दूसरे पर शफ़्क़त और रह़म करते हैं, इसी से वह़शी जानवर अपने बच्चों पर रह़म करते हैं। और **अल्लाह** तआ़ला ने निनानवे रह़मतें बचा रखी हैं, उन से क़ियामत के दिन अपने बन्दों पर रह़म फ़रमाएगा।"[4]

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ۖۚ وَفِیْ نُسْخَتِهَا هُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّلَّذِیْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ یَرْهَبُوْنَ ﴿۱۵۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब मूसा का ग़ुस्सा थमा तख़्तियां उठा लीं और उन की तह़रीर में हिदायत और रह़मत है उन के लिये जो अपने रब से डरते हैं।

1 .....ابن ماجه، كتاب الزهد، باب ذكر التوبة، ٤/ ٤٩٠، الحديث: ٤٢٤٨.

2 .....بخاری، كتاب الدعوات، ٤/ ١٩١، الحديث: ٦٣٠٩.

3 ..... तौबा के फ़ज़ाइल, शराइत़ और इस से मुतअ़ल्लिक़ दीगर चीज़ों की मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये किताब "तौबा की रिवायात व ह़िकायात" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

4 .....مسلم، كتاب التوبة، باب فی سعة رحمة الله تعالى وانّها سبقت غضبه، ص ١٤٧٢، الحديث: ١٩(٢٧٥٢).

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब मूसा का ग़ुस्सा थम गया तो उस ने तख़्तियां उठा लीं और उन की तह़रीर में हिदायत और रह़मत है उन के लिये जो अपने रब से डरते हैं।

﴿وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ﴾ **: और जब मूसा का ग़ुस्सा थमा ।** इस से पहली आयत में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ह़ालते ग़ज़ब में जो कुछ सादिर हुवा उस का ज़िक्र किया गया अब इस आयत में ग़ुस्सा थम जाने के बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से जो वाक़ेअ़ हुवा उसे बयान किया गया है, चुनान्चे जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर क़ौम में आ कर तह़क़ीक़ करने से भी येह ज़ाहिर हो गया कि इन के भाई ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से कोई कोताही सरज़द न हुई थी और उन्हों ने जो उ़ज़्र बयान किया वोह दुरुस्त था तो आप का ग़ुस्सा जाता रहा और आप ने तौरात की तख़्तियां ज़मीन से उठा लीं। याद रहे कि जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ग़ुस्सा आया तो आप ने दो काम किये थे : **(1)** तौरात की तख़्तियां ज़मीन पर डाल दीं **(2)** ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को सर से पकड़ कर अपनी त़रफ़ खींचा। जब ग़ुस्सा ठन्डा हुवा तो उस की तलाफ़ी में भी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दो काम किये **(1)** तौरात की तख़्तियां ज़मीन से उठा लीं। **(2)** अपने भाई के लिये दुआ़ की।[1]

وَاخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّاۤ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ
قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَ اِيَّايَ ؕ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ
السُّفَهَآءُ مِنَّا ۚ اِنْ هِيَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ؕ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَآءُ وَتَهْدِيْ مَنْ
تَشَآءُ ؕ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ﴿۱۵۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और मूसा ने अपनी क़ौम से सत्तर मर्द हमारे वा'दे के लिये चुने फिर जब उन्हें ज़ल्ज़ले ने लिया मूसा ने अ़र्ज़ की ऐ रब मेरे तू चाहता तो पहले ही उन्हें और मुझे हलाक कर देता क्या तू हमें उस काम पर हलाक फ़रमाएगा जो हमारे बे अ़क़्लों ने किया वोह नहीं मगर तेरा आज़माना तू उस से बहकाए जिसे चाहे और राह दिखाए जिसे चाहे तू हमारा मौला है तो हमें

[1] .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۵۴، ۵/۳۷۴.

www.dawateislami.net

बख़्श दे और हम पर मेहर कर और तू सब से बेहतर बख़्शने वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मूसा ने हमारे वा'दे के लिये अपनी क़ौम से सत्तर मर्द मुन्तख़ब कर लिये फिर जब उन्हें ज़ल्ज़ले ने पकड़ लिया तो मूसा ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! अगर तू चाहता तो पहले ही उन्हें और मुझे हलाक कर देता। क्या तू हमें उस काम की वज्ह से हलाक फ़रमाएगा जो हमारे बे अ़क़्लों ने किया। येह तो नहीं है मगर तेरी त़रफ़ से आज़्माना तू उस के ज़रीए़ जिसे चाहता है गुमराह करता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है। तू हमारा मौला है, तो हमें बख़्श दे और हम पर रह़्म फ़रमा और तू सब से बेहतर बख़्शने वाला है।

﴿وَاخْتَارَ مُوْسٰى﴾ **: और मूसा ने मुन्तख़ब कर लिये।** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पहली बार रब عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात करने और तौरात लेने तशरीफ़ ले गए थे। और इस बार गाय की पूजा करने वालों को मुआ़फ़ी दिलवाने के लिये सत्तर आदमियों को साथ ले कर तशरीफ़ ले गए, चुनान्चे ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने हर गुरौह से 6 अफ़्राद मुन्तख़ब कर लिये, चूंकि बनी इसराईल के बारह गुरौह थे और जब हर गुरौह में से 6 आदमी चुने तो दो बढ़ गए और जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन से फ़रमाया कि मुझे सत्तर आदमी लाने का हुक्म हुवा है और तुम 72 हो गए इस लिये तुम में से दो आदमी यहीं रह जाएं तो वोह आपस में झगड़ने लगे। इस पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : रह जाने वाले को जाने वाले की त़रह़ ही सवाब मिलेगा, येह सुन कर ह़ज़रते कालिब और ह़ज़रते यूशअ़ عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام रह गए और कुल सत्तर आदमी आप के हमराह गए। येह सत्तर अफ़्राद उन लोगों में से थे जिन्हों ने बछड़े की पूजा न की थी।[1] ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन्हें रोज़ा रखने, बदन और कपड़े पाक करने का हुक्म दिया फिर उन के साथ तूरे सीना की त़रफ़ निकले, जब पहाड़ के क़रीब पहुंचे तो उन्हें एक बादल ने ढांप लिया। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उन के साथ उस में दाख़िल हो गए और सब ने सज्दा किया। फिर क़ौम ने **अल्लाह** तआ़ला का कलाम सुना जो उस ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से फ़रमाया कि येह करो और येह न करो। **अल्लाह** तआ़ला ने बनी इसराईल के बारे में जो हुक्म दिया वोह तौबा के लिये अपनी जान देना था। जब कलाम का सिल्सिला ख़त्म होने के बा'द बादल

[1] .....جمل مع جلالين، الاعراف، تحت الآية: ١٥٥، ٣/١١٩.

www.dawateislami.net

उठा लिया गया तो येह लोग ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए और कहने लगे : तौबा में अपनी जानों को क़त्ल करने का जो हुक्म हम ने सुना उस की तस्दीक़ हम उस वक़्त तक नहीं करेंगे जब तक कि **अल्लाह** तआ़ला को ए'लानिया देख न लें। इस पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के देखते ही देखते उन्हें शदीद ज़ल्ज़ले ने आ लिया और वोह तमाम अफ़राद हलाक हो गए।[1] येह देख कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने गिड़गिड़ा कर बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की, कि "ऐ मेरे रब ! عَزَّوَجَلَّ, अगर तू चाहता तो यहां ह़ाज़िर होने से पहले ही इन्हें और मुझे हलाक कर देता ताकि बनी इसराईल इन सब की हलाकत अपनी आंखों से देख लेते और उन्हें मुझ पर क़त्ल की तोहमत लगाने का मौक़अ़ न मिलता। अब जो मैं अकेला वापस जाऊंगा तो बनी इसराईल कहेंगे कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उन सब को मरवा आए हैं। ऐ मौला ! मेरी इ़ज़्ज़त तेरे हाथ में है। क्या तू हमें उस काम की वज्ह से हलाक फ़रमाएगा जो हमारे बे अ़क़्लों ने किया। उन्हों ने जो किया येह तो तेरी ही त़रफ़ से आज़्माइश है तू उस के ज़रीए़ जिसे चाहता है गुमराह करता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है। तू हमारा मौला है, तो हमें बख़्श दे और हम पर रह़्म फ़रमा और तू सब से बेहतर बख़्शने वाला है।" इस आयत से मा'लूम हुवा कि शफ़ाअ़ते नबी बरह़क़ है जिस से दुन्या व दीन की आफ़तें टल जाती हैं। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन सब की शफ़ाअ़त फ़रमाई जो उन के काम आई।

وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَآ اِلَيْكَ ؕ قَالَ
عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا
لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ۚ ﴿۱۵۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हमारे लिये इस दुन्या में भलाई लिख और आख़िरत में बेशक हम तेरी त़रफ़ रुजूअ़ लाए फ़रमाया मेरा अ़ज़ाब मैं जिसे चाहूं दूं और मेरी रह़मत हर चीज़ को घेरे है तो अ़न्क़रीब मैं ने'मतों को उन के लिये लिख दूंगा जो डरते और ज़कात देते हैं और वोह हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं।

[1] .....ابو سعود، الاعراف، تحت الآية: ١٥٥، ٢/ ٣٠١، صاوی، الاعراف، تحت الآية: ١٥٥، ٢/ ٧١٥، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हमारे लिये इस दुन्या में और आख़िरत में भलाई लिख दे, बेशक हम ने तेरी त़रफ़ रुजूअ़ किया। फ़रमाया : मैं जिसे चाहता हूं अपना अ़ज़ाब पहुंचाता हूं और मेरी रह़मत हर चीज़ को घेरे हुए है तो अ़न्क़रीब मैं अपनी रह़मत उन के लिये लिख दूंगा जो परहेज़गार हैं और ज़कात देते हैं और वोह हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं।

﴿وَاكْتُبْ لَنَا﴾ **: और हमारे लिये लिख दे।** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ज़ल्ज़ले के वक़्त जो दुआ़ मांगी इस आयत में उस का बक़िय्या ह़िस्सा है। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : **ऐ अल्लाह ! हमारे लिये इस दुन्या में और आख़िरत में भलाई लिख दे बेशक हम ने तेरी त़रफ़ रुजूअ़ किया।** दुन्या की भलाई से पाकीज़ा ज़िन्दगी और नेक आ'माल मुराद हैं और आख़िरत की भलाई से जन्नत, **अल्लाह** तआ़ला का दीदार और दुन्या की नेकियों पर सवाब मुराद है। और येह भी कहा गया कि दुन्या की भलाई से मुराद ने'मत और इ़बादत है और आख़िरत की भलाई से मुराद जन्नत है और इस के इ़लावा और क्या भलाई हो सकती है। **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ के बा'द फ़रमाया कि : मेरी शान येह है कि मैं जिसे चाहता हूं अपना अ़ज़ाब पहुंचाता हूं कोई और इस में दख़्ल अन्दाज़ी कर ही नहीं सकता और मेरी रह़मत की शान येह है कि मेरी रह़मत हर चीज़ को घेरे हुए है, दुन्या में हर मुसल्मान, काफ़िर, इत़ाअ़त गुज़ार और ना फ़रमान मेरी ने'मतों से बहरा मन्द होता है।[1]

﴿فَسَاَكْتُبُهَا﴾ **: अ़न्क़रीब मैं आख़िरत की ने'मतों को लिख दूंगा।** जब येह आयत नाज़िल हुई ''وَرَحْمَتِیْ وَسِعَتْ كُلَّ شَیْءٍ'' तो इब्लीस बहुत ख़ुश हुवा और कहने लगा मैं भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत में दाख़िल हो गया, और जब आयत का येह ह़िस्सा ''فَسَاَكْتُبُهَا'' नाज़िल हुवा तो इब्लीस मायूस हो गया।[2]

यहूदियों ने जब इस आयत को सुना तो कहने लगे हम मुत्तक़ी हैं और हम ज़कात देते हैं और अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं तो अगली आयत नाज़िल फ़रमा कर **अल्लाह** तआ़ला ने वाज़ेह़ फ़रमा दिया कि येह फ़ज़ाइल उम्मते मुह़म्मदिय्यह के साथ ख़ास हैं।[3]

اَلَّذِیْنَ یَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِیَّ الْاُمِّیَّ الَّذِیْ یَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ

1 .....البحر المحیط، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۵۶، ۴/۳۹۹، تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۵۶، ۵/۳۷۸، روح المعانی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۵۶، ۵/۱۰۳، ملتقطاً.

2 .....صاوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۵۶، ۲/۷۱۵-۷۱۶. 3 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۵۶، ۲/۱۴۶.

www.dawateislami.net

فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ ۫ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ
وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَ
اتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۵۷﴾ ع ۱۹

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो ग़ुलामी करेंगे उस रसूल बे पढ़े ग़ैब की ख़बरें देने वाले की जिसे लिखा हुवा पाएंगे अपने पास तौरैत और इन्जील में वोह उन्हें भलाई का हुक्म देगा और बुराई से मन्अ़ फ़रमाएगा और सुथरी चीज़ें उन के लिये ह़लाल फ़रमाएगा और गन्दी चीज़ें उन पर ह़राम करेगा और उन पर से वोह बोझ और गले के फन्दे जो उन पर थे उतारेगा तो वोह जो उस पर ईमान लाएं और उस की ता'ज़ीम करें और उसे मदद दें और उस नूर की पैरवी करें जो उस के साथ उतरा वोही बा मुराद हुए।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह जो उस रसूल की इत्तिबाअ़ करें जो ग़ैब की ख़बरें देने वाले हैं, जो किसी से पढ़े हुए नहीं हैं, जिसे येह (अहले किताब) अपने पास तौरात और इन्जील में लिखा हुवा पाते हैं, वोह उन्हें नेकी का हुक्म देते हैं और उन्हें बुराई से मन्अ़ करते हैं और उन के लिये पाकीज़ा चीज़ें ह़लाल फ़रमाते हैं और गन्दी चीज़ें उन पर ह़राम करते हैं और उन के ऊपर से वोह बोझ और क़ैदें उतारते हैं जो उन पर थीं तो वोह लोग जो उस नबी पर ईमान लाएं और उस की ता'ज़ीम करें और उस की मदद करें और उस नूर की पैरवी करें जो उस के साथ नाज़िल किया गया तो वोही लोग फ़लाह़ पाने वाले हैं।

﴿اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ﴾ : **वोह जो रसूल की ग़ुलामी करते हैं।** मुफ़स्सिरीन का इस बात पर इज्माअ़ है कि इस आयत में **रसूल** से सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुराद हैं। आयत में ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र वस्फ़े रिसालत से फ़रमाया गया क्यूं कि आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस की मख़्लूक़ के दरमियान वासिता हैं, रिसालत के फ़राइज़ अदा फ़रमाते हैं, **अल्लाह** तआ़ला के अवामिर व नवाही, शराएअ़ व अह़काम उस के बन्दों को पहुंचाते हैं।[1]

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۵۷، ۲/۱۴۶.

www.dawateislami.net

नबी और उम्मी का तरजमा

इस के बा'द आप की तौसीफ़ में "**नबी**" फ़रमाया गया, इस का तरजमा सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने "**ग़ैब की ख़बरें देने वाले**" किया है और येह निहायत ही सह़ीह़ तरजमा है क्यूं कि نَبَأٌ "ख़बर" के मा'ना में है और नबी की मुन्फ़रिद ख़बर बत़ौरे ख़ास ग़ैब ही की ख़बर होती है तो इस से मुराद ग़ैब की ख़बर लेना बिल्कुल दुरुस्त है। क़ुरआने करीम में येह लफ़्ज़ ख़बर के मा'ना में ब करसत इस्ति'माल हुवा है। एक जगह इर्शाद हुवा :

قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ वोह (क़ुरआन) एक अ़ज़ीम ख़बर है।

एक जगह फ़रमाया :

تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَاۤ اِلَيْكَ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह कुछ ग़ैब की ख़बरें हैं जो हम तुम्हारी त़रफ़ वह़ी करते हैं।

एक जगह फ़रमाया :

فَلَمَّاۤ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآىِٕهِمْ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो जब आदम ने उन्हें उन अश्या के नाम बता दिये।

इन के इ़लावा ब कसरत आयात में येह लफ़्ज़ इस मा'ना में मज़्कूर है।

फिर येह लफ़्ज़ या फ़ाइ़ल के मा'ना में होगा या मफ़्ऊ़ल के मा'ना में। पहली सूरत में इस के मा'ना हैं "**ग़ैब की ख़बरें देने वाले**" और दूसरी सूरत में इस के मा'ना होंगे "**ग़ैब की ख़बरें दिये हुए**" और इन दोनों मा'ना की ताईद क़ुरआने करीम से होती है। पहले मा'ना की ताईद इस आयत से होती है :

نَبِّئْ عِبَادِيْۤ (4)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मेरे बन्दों को ख़बर दो।

दूसरी आयत में फ़रमाया :

قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ (5)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (ऐ ह़बीब !) तुम फ़रमाओ, क्या मैं तुम्हें बता दूं ?

और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इर्शाद जो क़ुरआने करीम में वारिद हुवा :

1 ص:٦٧ ..... 2 هود:٤٩ . 3 البقرة:٣٣ ..... 4 حجر:٤٩ . 5 ال عمران:١٥ .

www.dawateislami.net

وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِیْ بُیُوْتِكُمْ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम्हें ग़ैब की ख़बर देता हूं जो तुम खाते हो और जो अपने घरों में जम्अ़ करते हो।

इस का तअ़ल्लुक़ भी इसी क़िस्म से है। और दूसरी सूरत की ताईद इस आयत से होती है :

نَبَّاَنِیَ الْعَلِیْمُ الْخَبِیْرُ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मुझे इ़ल्म वाले ख़बरदार (**अल्लाह**) ने बताया।

और ह़क़ीक़त में अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ग़ैब की ख़बरें देने वाले ही होते हैं। तफ़्सीरे ख़ाज़िन में है कि "आप के वस्फ़ में "**नबी**" फ़रमाया, क्यूं कि नबी होना आ'ला और अशरफ़ मरातिब में से है और येह इस पर दलालत करता है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बहुत बुलन्द दरजे रखने वाले और उस की त़रफ़ से ख़बर देने वाले हैं।"(3)

उम्मी का तरजमा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने "**बे पढ़े**" फ़रमाया। येह तरजमा बिल्कुल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के इर्शाद के मुत़ाबिक़ है और यक़ीनन उम्मी होना आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात में से एक मो'जिज़ा है कि दुन्या में किसी से पढ़ा नहीं और किताब वोह लाए जिस में अव्वलीनो आख़िरीन और ग़ैबों के उ़लूम हैं।(4) आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

ऐसा उम्मी किस लिये मिन्नत कशे उस्ताद हो क्या किफ़ायत उस को اِقْرَاْ رَبُّکَ الْاَکْرَم नहीं

﴿یَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِی التَّوْرٰىةِ وَ الْاِنْجِیْلِ﴾ : **उसे येह (अहले किताब) अपने पास तौरात और इन्जील में लिखा हुवा पाते हैं।** ﴾ या'नी अपने पास तौरैत व इन्जील में आप की ना'तो सिफ़त और नुबुव्वत लिखी हुई पाते हैं।

तौरात व इन्जील में मज़्कूर औसाफ़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

सह़ीह़ बुख़ारी में है, ह़ज़रते अ़त़ा बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वोह औसाफ़ दरयाफ़्त किये जो तौरैत में मज़्कूर हैं तो उन्हों ने फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम ! हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जो औसाफ़ क़ुरआने करीम में आए हैं उन्हीं में से बा'ज़ औसाफ़ तौरैत

(1) .....آل عمران: ٤٩. (2) .....التحریم: ٣. (3) .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ١٥٧، ٢/١٤٦.
(4) .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ١٥٧، ٢/١٤٧.

www.dawateislami.net

में मज़्कूर हैं। इस के बा'द उन्हों ने पढ़ना शुरूअ़ किया : ऐ नबी ! हम ने तुम्हें शाहिद व मुबश्शिर और नज़ीर और उम्मियों का निगह्बान बना कर भेजा, तुम मेरे बन्दे और मेरे रसूल हो, मैं ने तुम्हारा नाम मुतवक्किल रखा, न बद ख़ुल्क़ हो न सख़्त मिज़ाज, न बाज़ारों में आवाज़ बुलन्द करने वाले हो न बुराई से बुराई को दफ़्अ़ करने वाले बल्कि ख़ताकारों को मुआफ़ करते हो और उन पर एह़सान फ़रमाते हो, **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें न उठाएगा जब तक कि तुम्हारी बरकत से ग़ैर मुस्तक़ीम मिल्लत को इस त़रह़ रास्त न फ़रमा दे कि लोग सिद्क़ो यक़ीन के साथ ''لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ'' पुकारने लगें और तुम्हारी बदौलत अन्धी आंखें बीना और बहरे कान शिन्वा (सुनने वाले) और पर्दों में लिपटे हुए दिल कुशादा हो जाएं।[1]

और ह़ज़रते का'ब अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से सरकारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सिफ़ात में तौरैत शरीफ़ का येह मज़मून भी मन्क़ूल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सिफ़त में फ़रमाया कि ''मैं उन्हें हर ख़ूबी के क़ाबिल करूंगा, और हर ख़ुल्क़े करीम अ़त़ा फ़रमाऊंगा, इत्मीनाने क़ल्ब और वक़ार को उन का लिबास बनाऊंगा और त़ाआ़त व एह़सान को उन का शिआ़र करूंगा, तक़्वा को उन का ज़मीर, ह़िक्मत को उन का राज़, सिद्क़ो वफ़ा को उन की त़बीअ़त, अ़फ़्वो करम को उन की आ़दत, अ़द्ल को उन की सीरत, इज़्हारे ह़क़ को उन की शरीअ़त, हिदायत को उन का इमाम और इस्लाम को उन की मिल्लत बनाऊंगा। अह़मद उन का नाम है, मख़्लूक़ को उन के सदक़े में गुमराही के बा'द हिदायत और जहालत के बा'द इल्मो मा'रिफ़त और गुमनामी के बा'द रिफ़अ़तो मन्ज़िलत अ़त़ा करूंगा। उन्हीं की बरकत से क़िल्लत के बा'द कसरत और फ़क़्र के बा'द दौलत और तफ़र्रुक़े के बा'द मह़ब्बत इनायत करूंगा, उन्हीं की बदौलत मुख़्तलिफ़ क़बाइल, ग़ैर मुज्तमअ़ ख़्वाहिशों और इख़्तिलाफ़ रखने वाले दिलों में उल्फ़त पैदा करूंगा और उन की उम्मत को तमाम उम्मत से बेहतर करूंगा।''[2]

एक और ह़दीस में तौरैत शरीफ़ से हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के येह औसाफ़ मन्क़ूल हैं : मेरे बन्दे अह़मदे मुख़्तार, उन की जाए विलादत मक्कए मुकर्रमा और जाए हिजरत मदीनए त़य्यिबा है, उन की उम्मत हर ह़ाल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कसीर ह़म्द करने वाली है।[3]

1 .....بخاری، کتاب البیوع، باب کراھیۃ السخب فی السوق، ۲/۲۵، الحدیث: ۲۱۲۵.
2 .....الشفاء، القسم الاول فی تعظیم اللّٰہ تعالی لہ، الباب الاول فی ثناء اللّٰہ تعالی علیہ، الفصل الثانی، ص۲۵-۲۶.
3 .....ابن عساکر، باب ما جاء من انّ الشام یکون ملک اھل الاسلام، ۱/۱۸۶-۱۸۷.

www.dawateislami.net

हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : अहले किताब हर ज़माने में अपनी किताबों में तराश ख़राश करते रहे और उन की बड़ी कोशिश इस पर मुसल्लत़ रही कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र अपनी किताबों में नाम को न छोड़ें। तौरैत इन्जील वग़ैरा उन के हाथ में थीं इस लिये उन्हें इस में कुछ दुश्वारी न थी लेकिन हज़ारों तब्दीलियां करने बा'द भी मौजूदा ज़माने की बाईबल में हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बिशारत का कुछ न कुछ निशान बाक़ी रह ही गया। चुनान्चे ब्रिटिश एन्ड फ़ॉरन बाईबल सोसायटी लाहोर 1931 सि.ई. की छपी हुई बाईबल में यूह़न्ना की इन्जील के बाब चौदह की सोलहवीं आयत में है : "और मैं बाप से दरख़्वास्त करूंगा तो वोह तुम्हें दूसरा मददगार बख़्शेगा कि अबद तक तुम्हारे साथ रहे।" लफ़्ज़ **मददगार** पर ह़ाशिया है, उस में इस के मा'ना "वकील या शफ़ीअ़" लिखे हैं तो अब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द ऐसा आने वाला जो शफ़ीअ़ हो और अबद तक रहे या'नी उस का दीन कभी मन्सूख़ न हो बजुज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कौन है ? फिर उन्तीसवीं तीसवीं आयत में है : "और अब मैं ने तुम से उस के होने से पहले कह दिया है ताकि जब हो जाए तो तुम यक़ीन करो इस के बा'द मैं तुम से बहुत सी बातें न करूंगा क्यूं कि दुन्या का सरदार आता है और मुझ में उस का कुछ नहीं।" कैसी साफ़ बिशारत है और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी उम्मत को हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत का कैसा मुन्तज़िर बनाया और शौक़ दिलाया है और **दुन्या का सरदार** ख़ास सय्यिदे आ़लम का तरजमा है और येह फ़रमाना कि "मुझ में उस का कुछ नहीं" हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़मत का इज़्हार, उस के हुज़ूर अपना कमाले अदबो इन्किसार है।

फिर इसी किताब के बाब सोलह की सातवीं आयत है : "लेकिन मैं तुम से सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिये फ़ाएदे मन्द है क्यूं कि अगर मैं न जाऊं तो वोह मददगार तुम्हारे पास न आएगा, लेकिन अगर जाऊंगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा।" इस में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बिशारत के साथ इस का भी साफ़ इज़्हार है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ातमुल अम्बिया हैं। आप का ज़ुहूर जब ही होगा जब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी तशरीफ़ ले जाएं। इस की तेरहवीं आयत है : "लेकिन जब वोह या'नी सच्चाई का रूह़ आएगा तो तुम को तमाम सच्चाई की राह दिखाएगा इस लिये कि वोह अपनी त़रफ़ से न कहेगा लेकिन जो कुछ सुनेगा वोही कहेगा और तुम्हें आइन्दा की ख़बरें देगा।" इस आयत में बताया गया कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद पर दीने इलाही की तक्मील हो जाएगी और

www.dawateislami.net

आप सच्चाई की राह या'नी दीने ह़क़ को मुकम्मल कर देंगे। इस से येही नतीजा निकलता है कि उन के बा'द कोई नबी न होगा और येह कलिमे कि "अपनी त़रफ़ से न कहेगा जो कुछ सुनेगा वोही कहेगा" ख़ास "وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ۝ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى"[1] का तरजमा है और येह जुम्ला कि "तुम्हें आइन्दा की ख़बरें देगा" इस में साफ़ बयान है कि वोह नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ैबी उ़लूम ता'लीम फ़रमाएंगे, जैसा कि क़ुरआने करीम में फ़रमाया "يُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ"[2] (तुम्हें वोह ता'लीम फ़रमाता है जो तुम्हें मा'लूम नहीं था।) और "مَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ"[3] (येह नबी ग़ैब बताने पर बख़ील नहीं।)"[4]

﴿وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ : और उन के लिये पाकीज़ा चीज़ें ह़लाल फ़रमाते हैं।﴾ या'नी जो ह़लाल व त़य्यिब चीज़ें बनी इसराईल पर उन की ना फ़रमानी की वज्ह से ह़राम हो गई थीं नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन्हें ह़लाल फ़रमा देंगे और बहुत सी ख़बीस व गन्दी चीज़ों को ह़राम करेंगे।

﴿وَيَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ : और उन के ऊपर से वोह बोझ और क़ैदें उतारते हैं जो उन पर थीं।﴾ बोझ से मुराद सख़्त तक्लीफ़ें हैं जैसा कि तौबा में अपने आप को क़त्ल करना और जिन आ'ज़ा से गुनाह सादिर हों उन को काट डालना और क़ैद से मुराद मशक़्क़त वाले अह़काम हैं जैसा कि बदन और कपड़े के जिस मक़ाम को नजासत लगे उस को क़ैंची से काट डालना और ग़नीमतों को जलाना और गुनाहों का मकानों के दरवाज़ों पर ज़ाहिर होना वग़ैरा।[5]

﴿وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ : और उस की ता'ज़ीम करें और उस की मदद करें।﴾ इस से मा'लूम हुवा कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम ए'तिक़ादी, अ़मली, क़ौली, फ़े'ली, ज़ाहिरी, बात़िनी हर त़रह़ लाज़िम है बल्कि रुक्ने ईमान है।

﴿وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ : और नूर की पैरवी करें।﴾ इस नूर से क़ुरआन शरीफ़ मुराद है जिस से मोमिन का दिल रोशन होता है और शक व जहालत की तारीकियां दूर होती हैं और इल्मो यक़ीन की ज़िया फैलती है।[6]

﴿اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ : तो वोही लोग फ़लाह़ पाने वाले हैं।﴾ इस से मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दुन्या व आख़िरत में भलाई लिख देने की दुआ अपनी उम्मत के लिये फ़रमाई तो **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया कि येह शान उम्मते मुह़म्मदी की है, سُبْحٰنَ اللّٰه और साथ ही अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़ाइल और उम्मते मर्ह़ूमा के मनाक़िब उन्हें सुना दिये

1 .....نجم:۳، ٤. 2 .....بقرہ:۱۵۱. 3 .....التکویر:۲٤.

4 ..... ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, अल आ'राफ़, तह़तल आयह : 157, स. 321

5 .....مدارك، الاعراف، تحت الآية: ۱۵۷، ص ۳۹۰. 6 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ۱۵۷، ۲/۱٤۸.

www.dawateislami.net

गए, इस से मा'लूम हुवा कि ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत पहले भी आ़लम में मश्हूर थी मगर इस उम्मत की नेकियां शाएअ़ कर दी गई थीं और इन के गुनाहों का ज़िक्र न किया था बल्कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا भी मश्हूर कर दिये गए, जैसा कि **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۚۛ وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह उन की सिफ़त तौरैत में (मज़्कूर) है और उन की सिफ़त इन्जील में (मज़्कूर) है।

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۪ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ ऐ लोगो मैं तुम सब की त़रफ़ उस **अल्लाह** का रसूल हूं कि आस्मान व ज़मीन की बादशाही उसी को है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं जिलाए और मारे तो ईमान लाओ **अल्लाह** और उस के रसूल बे पढ़े ग़ैब बताने वाले पर कि **अल्लाह** और उस की बातों पर ईमान लाते हैं और उन की ग़ुलामी करो कि तुम राह पाओ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ : ऐ लोगो ! मैं तुम सब की त़रफ़ **अल्लाह** का रसूल हूं जिस के लिये आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोही ज़िन्दा करता है और मारता है तो ईमान लाओ **अल्लाह** और उस के रसूल पर जो नबी हैं, (किसी से) पढ़े हुए नहीं हैं, **अल्लाह** और उस की तमाम बातों पर ईमान लाते हैं और उन की पैरवी करो ताकि तुम हिदायत पा लो।

﴿قُلْ : **तुम फ़रमाओ**﴾ या'नी ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप लोगों से फ़रमा दीजिये कि मैं तुम सब की त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं, ऐसा नहीं कि बा'ज़ का तो रसूल हूं और बा'ज़ का नहीं।(2)

1 .....الفتح: ٢٩. 2 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ١٥٨، ٢/١٤٨.

www.dawateislami.net

उ़मूमे रिसालत की दलील

येह आयत सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उ़मूमे रिसालत की दलील है कि आप तमाम मख़्लूक़ के लिये रसूल हैं और कुल जहां आप की उम्मत है। सह़ीह़ बुख़ारी और मुस्लिम में है, ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : पांच चीज़ें मुझे ऐसी अ़त़ा हुई हैं जो मुझ से पहले किसी को न मिलीं **(1)** हर नबी ख़ास क़ौम की त़रफ़ मब्ऊ़स होता था और मैं सुर्ख़ो सियाह की त़रफ़ मब्ऊ़स फ़रमाया गया **(2)** मेरे लिये ग़नीमतें ह़लाल की गईं और मुझ से पहले किसी के लिये नहीं हुई थीं **(3)** मेरे लिये ज़मीन पाक और पाक करने वाली (या'नी तयम्मुम के क़ाबिल) और मस्जिद की गई जिस किसी को कहीं नमाज़ का वक़्त आए वहीं पढ़ ले **(4)** दुश्मन पर एक माह की मसाफ़त तक मेरा रो'ब डाल कर मेरी मदद फ़रमाई गई **(5)** और मुझे शफ़ाअ़त इनायत की गई।[1] और मुस्लिम शरीफ़ की एक ह़दीस में येह भी है कि "मुझे तमाम मख़्लूक़ की त़रफ़ मब्ऊ़स किया गया और मुझ पर नुबुव्वत ख़त्म कर दी गई"[2]

﴿اَلَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ﴾ : **जिस के लिये आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत है।** इस आयत की इब्तिदा में **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हुक्म दिया कि आप लोगों से फ़रमा दें कि मैं तुम सब की त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं, और अब इन के दा'वे के दुरुस्त होने की दलील बयान की जा रही है कि जिस ख़ुदा के लिये आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत है और वोह इन की तदबीर फ़रमाने वाला और इन के तमाम उमूर का मालिक है उसी ने मुझे तुम्हारी त़रफ़ भेजा है और मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम से कहूं : मैं तुम सब की त़रफ़ **अल्लाह** तआ़ला का रसूल हूं और **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और वोह अपनी मख़्लूक़ को ज़िन्दा करने और उन्हें मौत देने पर क़ुदरत रखता है और जिस की ऐसी शान हो तो वोह इस बात पर भी क़ादिर है कि वोह अपनी मख़्लूक़ की त़रफ़ किसी रसूल को भेज दे तो तुम **अल्लाह** तआ़ला पर और उस के रसूल मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाओ जिन की शान येह है कि वोह नबी हैं, किसी से पढ़े हुए नहीं हैं, **अल्लाह** तआ़ला और उस की तमाम बातों पर ईमान लाते हैं और ऐ लोगो ! तुम उन की ग़ुलामी इख़्तियार कर लो और वोह तुम्हें जिस काम का हुक्म दें उसे करो और जिस से मन्अ़ फ़रमाएं उस से बाज़ आ जाओ ताकि तुम उन की पैरवी कर के हिदायत पा जाओ।[3]

1 .....بخاری ، کتاب الصلاۃ، باب قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم: جعلت لی الارض مسجداً وطھوراً، ۱/۱۶۸، الحدیث: ۴۳۸، مسلم، کتاب المساجد و مواضع الصلاۃ، ص۲۶۵، الحدیث: ۳ (۵۲۱).

2 .....مسلم، کتاب المساجد و مواضع الصلاۃ، ص۲۶۶، الحدیث: ۵ (۵۲۳).

3 .....خازن ، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۵۸، ۲/۱۴۸-۱۴۹.

www.dawateislami.net

وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰۤى اُمَّةٌ یَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ یَعْدِلُوْنَ ﴿۱۵۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और मूसा की क़ौम से एक गुरौह है कि ह़क़ की राह बताता और उसी से इन्साफ़ करता ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मूसा की क़ौम से एक गुरौह वोह है जो ह़क़ की राह बताता है और उसी के मुत़ाबिक़ इन्साफ़ करता है ।

﴿وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰۤى اُمَّةٌ﴾ **: और मूसा की क़ौम से एक गुरौह ।** या'नी बनी इसराईल की सरकशियों और ना फ़रमानियों के बा वुजूद उन में से एक जमाअ़त ह़क़ पर भी क़ाइम रही । ह़क़ पर क़ाइम रहने वाले गुरौह से कौन लोग मुराद हैं, इस बारे में एक क़ौल येह है कि ह़क़ पर क़ाइम रहने वालों से मुराद बनी इसराईल के वोह लोग हैं जिन्हों ने इस्लाम क़बूल कर लिया, जैसे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और इन के साथी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا, क्यूं कि येह पहले ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और तौरात पर ईमान लाए फिर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और क़ुरआन पर भी ईमान लाए ।[1]

और एक क़ौल येह है कि इस से मुराद बनी इसराईल के वोह लोग हैं जिन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की शरीअ़त मन्सूख़ होने से पहले उसे मज़बूती से थामे रखा, उस में कोई तब्दीली न की और न ही अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को शहीद किया ।[2] इन के इ़लावा और भी अक़्वाल हैं ।

وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَیْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ؕ وَاَوْحَیْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى اِذِ
اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗۤ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا
عَشْرَةَ عَیْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَظَلَّلْنَا عَلَیْهِمُ
الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَیْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَیِّبٰتِ

1 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۵۹، ۵/۳۸۷. 2 .....البحر المحیط، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۵۹، ۴/۴۰۴.

www.dawateislami.net

مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَ مَا ظَلَمُوْنَا وَ لٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۶۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने उन्हें बांट दिया बारह क़बीले गुरौह गुरौह और हम ने वह़ी भेजी मूसा को जब उस से उस की क़ौम ने पानी मांगा कि इस पथ्थर पर अपना अ़सा मारो तो उस में से बारह चश्मे फूट निकले हर गुरौह ने अपना घाट पहचान लिया और हम ने उन पर अब्र साएबान किया और उन पर मन्न व सल्वा उतारा खाओ हमारी दी हुई पाक चीज़ें और उन्हों ने हमारा कुछ नुक़्सान न किया लेकिन अपनी ही जानों का बुरा करते थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने उन्हें बारह क़बीलों में तक़्सीम कर के अलग अलग जमाअ़त बना दिया और हम ने मूसा की त़रफ़ वह़ी भेजी जब उस से उस की क़ौम ने पानी मांगा कि इस पथ्थर पर अपना अ़सा मारो तो उस में से बारह चश्मे जारी हो गए, हर गुरौह ने अपने पीने की जगह को पहचान लिया और हम ने उन पर बादलों का साया किया और उन पर मन्न व सल्वा उतारा (और फ़रमाया) हमारी दी हुई पाक चीज़ें खाओ और उन्हों ने (हमारी ना फ़रमानी कर के) हमारा कुछ नुक़्सान न किया लेकिन अपनी ही जानों का नुक़्सान करते रहे।

﴿وَ قَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَیْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا﴾ : **और हम ने उन्हें बारह क़बीलों में तक़्सीम कर के अलग अलग जमाअ़त बना दिया।**﴾ बनी इसराईल को **अल्लाह** तआ़ला ने बारह गुरौहों में तक़्सीम कर दिया क्यूं कि येह ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बारह बेटों की औलाद से पैदा हुए थे और इन्हें एक दूसरे से मुमताज़ कर दिया ताकि येह बाहम ह़सद न करें और इन में लड़ाई झगड़े और क़त्लो ग़ारत की नौबत न आए।[1]

नोट : आयत के बक़िय्या हिस्से की तफ़्सीर सूरए बक़रह आयत नम्बर 57 और 60 में गुज़र चुकी है।

وَ اِذْ قِیْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْیَةَ وَ كُلُوْا مِنْهَا حَیْثُ شِئْتُمْ وَ قُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِیْٓـٰٔتِكُمْ ؕ سَنَزِیْدُ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۶۱﴾ فَبَدَّلَ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَیْرَ الَّذِیْ قِیْلَ لَهُمْ

1 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۶۰، ۵/۳۸۸.

www.dawateislami.net

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۶۲﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब उन से फ़रमाया गया इस शहर में बसो और इस में जो चाहो खाओ और कहो गुनाह उतरे और दरवाज़े में सज्दा करते दाख़िल हो हम तुम्हारे गुनाह बख़्श देंगे अ़न्क़रीब नेकों को ज़ियादा अ़ता फ़रमाएंगे। तो उन में के ज़ालिमों ने बात बदल दी उस के ख़िलाफ़ जिस का उन्हें हुक्म था तो हम ने उन पर आस्मान से अ़ज़ाब भेजा बदला उन के ज़ुल्म का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब उन से फ़रमाया गया कि इस शहर में सुकूनत इख़्तियार करो और इस में जो चाहो खाओ और यूं कहो "हमारी बख़्शिश हो" और (शहर के) दरवाज़े में सज्दा करते हुए दाख़िल हो जाओ तो हम तुम्हारी ख़ताएं मुआ़फ़ कर देंगे (और) नेकी करने वालों को अ़न्क़रीब और ज़ियादा अ़ता फ़रमाएंगे। तो उन में से ज़ालिमों ने जो बात उन से कही गई थी उसे दूसरी बात से बदल दिया तो हम ने उन पर आस्मान से अ़ज़ाब भेजा क्यूं कि वोह ज़ुल्म करते थे।

﴿وَاِذْ قِيْلَ لَهُمُ﴾ **: और याद करो जब उन से फ़रमाया गया।** इस की तफ़्सीर सूरए बक़रह आयत नम्बर 58 के तह़्त गुज़र चुकी है।

﴿فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا﴾ **: तो उन में से ज़ालिमों ने बात बदल दी।** इस की तफ़्सीर सूरए बक़रह आयत नम्बर 59 के तह़्त गुज़र चुकी है जिस का ख़ुलासा येह है कि उन्हें हुक्म तो था कि حِطَّةٌ कहते हुए दरवाज़े में दाख़िल हों, حِطَّةٌ तौबा और इस्तिग़फ़ार का कलिमा है लेकिन वोह बजाए इस के बराहे तमस्ख़ुर حِنْطَةٌ فِيْ شَعِيْرَةٍ कहते हुए दाख़िल हुए। इस बिना पर उन पर अ़ज़ाब नाज़िल हुवा और वोह अ़ज़ाब ता़ऊन की वबा थी जिस से एक साअ़त में चौबीस हज़ार इसराईली फ़ौत हो गए।

وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ
اِذْ تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۚ
كَذٰلِكَ ۚ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۱۶۳﴾ وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ
تَعِظُوْنَ قَوْمًا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ قَالُوْا

www.dawateislami.net

مَّعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۱۶۴﴾ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖۤ
اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ
بَـِٔيْسٍۭ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۱۶۵﴾ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ
كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿۱۶۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन से ह़ाल पूछो उस बस्ती का कि दरिया किनारे थी जब वोह हफ़्ते के बारे में ह़द से बढ़ते जब हफ़्ते के दिन उन की मछलियां पानी पर तैरती उन के सामने आतीं और जो दिन हफ़्ते का न होता न आतीं इस त़रह़ हम उन्हें आज़माते थे उन की बे हुक्मी के सबब। और जब उन में से एक गुरौह ने कहा क्यूं नसीह़त करते हो उन लोगों को जिन्हें **अल्लाह** हलाक करने वाला है या उन्हें सख़्त अ़ज़ाब देने वाला बोले तुम्हारे रब के हुज़ूर मा'ज़िरत को और शायद उन्हें डर हो। फिर जब वोह भुला बैठे जो नसीह़त उन्हें हुई थी हम ने बचा लिये वोह जो बुराई से मन्अ़ करते थे और ज़ालिमों को बुरे अ़ज़ाब में पकड़ा बदला उन की ना फ़रमानी का। फिर जब उन्हों ने मुमानअ़त के हुक्म से सरकशी की हम ने उन से फ़रमाया हो जाओ बन्दर दुत्कारे हुए।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन से उस बस्ती का ह़ाल पूछो जो दरिया के किनारे पर थी, जब वोह हफ़्ते के बारे में ह़द से बढ़ने लगे, जब हफ़्ते के दिन तो मछलियां पानी पर तैरती हुई उन के सामने आतीं और जिस दिन हफ़्ता न होता उस दिन मछलियां न आतीं। इसी त़रह़ हम उन की ना फ़रमानी की वज्ह से उन की आज़्माइश करते थे। और जब उन में से एक गुरौह ने कहा : तुम उन लोगों को क्यूं नसीह़त करते हो जिन्हें **अल्लाह** हलाक करने वाला है या उन्हें सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है ? उन्हों ने कहा : तुम्हारे रब के हुज़ूर उ़ज़्र पेश करने के लिये और शायद येह डरें। फिर जब उन्हों ने उस नसीह़त को भुला दिया जो उन्हें की गई थी तो हम ने बुराई से मन्अ़ करने वालों को नजात दी और ज़ालिमों को उन की ना फ़रमानी के सबब बुरे अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार कर दिया। फिर जब उन्हों ने मुमानअ़त के हुक्म से सरकशी की हम ने उन से फ़रमाया : धुत्कारे हुए बन्दर बन जाओ।

www.dawateislami.net

﴿وَسْـَٔلْهُمْ﴾ **: और उन से पूछो ।﴾ शाने नुज़ूल :** सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीने में रहने वाले यहूदियों को उन के कुफ़्र पर सरज़निश करते और उन से फ़रमाया करते कि तुम लोग अपने बाप दादा के नक़्शे क़दम पर हो कि उन्हों ने हमेशा पिछले नबियों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मुख़ालफ़त की । (और तुम मेरी मुख़ालफ़त कर रहे हो ।) इस पर यहूदी बोले "हमारे बाप दादा अपने रब عَزَّوَجَلَّ के फ़रमां बरदार और अपने नबियों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इताअ़त गुज़ार थे ।" ह़ालां कि वोह जानते थे कि वाक़ेई उन के बाप दादा अपने नबियों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मुख़ालफ़त करते रहे हैं मगर उन का ख़याल था कि इन वाक़िआ़त की किसी को ख़बर नहीं, इस लिये अपने बाप दादों की मा'सूमियत के ढंडोरे पीटते थे । तब येह आयते करीमा नाज़िल हुई जिस में उन के पोल खोल दिये गए और वोह लोग ह़ैरान रह गए ।[1]

इस आयत में ख़ित़ाब सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से है कि आप अपने क़रीब रहने वाले यहूदियों से सरज़निश के त़ौर पर उस बस्ती वालों का ह़ाल दरयाफ़्त फ़रमाएं । इस सुवाल से मक़्सूद कुफ़्फ़ार पर येह ज़ाहिर करना था कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत और ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात का इन्कार करना येह उन के लिये कोई नई बात नहीं है बल्कि कुफ़्रो मा'सियत तो उन का पुराना दस्तूर है कि उन के आबाओ अज्दाद भी कुफ़्र पर क़ाइम रहे ।[2]

﴿عَنِ الْقَرْيَةِ﴾ **: बस्ती का ह़ाल ।﴾** उस बस्ती के बारे में इख़्तिलाफ़ है कि वोह कौन सी थी । ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि वोह मिस्र व मदीना के दरमियान एक क़र्या है । एक क़ौल है कि मद्यन व तूर के दरमियान एक बस्ती है । इमाम ज़ोहरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया कि वोह क़र्या, त़बरियए शाम है । और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से एक रिवायत येह है कि वोह बस्ती मद्यन है । बा'ज़ के नज़्दीक वोह बस्ती ईला है ।[3]

﴿اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ﴾ **: जब वोह हफ़्ते के बारे में ह़द से बढ़ने लगे ।﴾** इस आयत और इस से बा'द वाली 3 आयात में जो वाक़िआ़ बयान हुवा उस का ख़ुलासा येह है कि उस बस्ती में रहने वाले बनी इसराईल को **अल्लाह** तआ़ला ने हफ़्ते का दिन इबादत के लिये ख़ास करने और इस दिन तमाम दुन्यावी मशाग़िल तर्क करने का हुक्म दिया नीज़ उन पर हफ़्ते के दिन शिकार ह़राम फ़रमा दिया । जब **अल्लाह** तआ़ला ने उन की आज़्माइश का इरादा फ़रमाया तो हुवा यूं कि हफ़्ते के दिन दरिया में ख़ूब मछलियां आतीं और येह लोग पानी की सत़ह़ पर उन्हें देखते थे,

1 .....صاوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۶۳، ۲/۷۱۹. 2 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۶۳، ۲/۱۵۰.
3 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۶۳، ۲/۱۵۱، بیضاوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۶۳، ۳/۶۷، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

जब इतवार का दिन आता तो मछलियां न आतीं। शैत़ान ने उन के दिल में वस्वसा डाला कि तुम्हें मछलियां पकड़ने से मन्अ़ किया गया है लिहाज़ा तुम ऐसा करो कि दरिया के किनारे बड़े बड़े ह़ौज़ बना लो और हफ़्ते के दिन दरिया से उन ह़ौज़ों की त़रफ़ नालियां निकाल लो, यूं हफ़्ते को मछलियां ह़ौज़ में आ जाएंगी और तुम इतवार के दिन उन्हें पकड़ लेना, चुनान्चे उन के एक गुरौह ने येह किया कि जुमुआ़ को दरिया के किनारे किनारे बहुत से गढ़े खोदे और हफ़्ते की सुब्ह़ को दरिया से उन गढ़ों तक नालियां बनाईं जिन के ज़रीए़ पानी के साथ आ कर मछलियां गढ़ों में क़ैद हो गईं और इतवार के दिन उन्हें निकाल लिया और येह कह कर अपने दिल को तसल्ली दे दी कि हम ने हफ़्ते के दिन तो मछली पानी से नहीं निकाली। एक अ़र्से तक येह लोग इस फ़े'ल में मुब्तला रहे। इन के इस अ़मल की वज्ह से उस बस्ती में बसने वाले अफ़्राद तीन गुरौहों में तक़्सीम हो गए थे :

(1)..... उन में एक तिहाई ऐसे लोग थे जो हफ़्ते के दिन मछली का शिकार करने से बाज़ रहे और शिकार करने वालों को मन्अ़ करते थे।

(2)..... एक तिहाई ऐसे अफ़्राद थे जो ख़ुद ख़ामोश रहते और दूसरों को मन्अ़ न करते थे जब कि मन्अ़ करने वालों से कहते थे कि ऐसी क़ौम को क्यूं नसीह़त करते हो जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हलाक करने वाला या उन्हें सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है।

(3)..... और एक गुरौह वोह ख़त़ाकार लोग थे जिन्हों ने ह़ुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त की और हफ़्ते के दिन शिकार किया, उसे खाया और बेचा।

जब मछली का शिकार करने वाले लोग इस मा'सियत से बाज़ न आए तो मन्अ़ करने वाले गुरौह ने उन से कहा कि "हम तुम्हारे साथ मेल बरताव न रखेंगे।" इस के बा'द उन्हों ने गाउं को तक़्सीम कर के दरमियान में एक दीवार खींच दी। मन्अ़ करने वालों का एक दरवाज़ा अलग था जिस से आते जाते थे और ख़त़ाकारों का दरवाज़ा जुदा था। ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन ख़त़ाकारों पर ला'नत की तो एक रोज़ मन्अ़ करने वालों ने देखा कि ख़त़ाकारों में से कोई बाहर नहीं निकला, तो उन्हों ने ख़याल किया कि शायद आज शराब के नशे में मदहोश हो गए होंगे, चुनान्चे उन्हें देखने के लिये दीवार पर चढ़े तो देखा कि वोह बन्दरों की सूरतों में मस्ख़ हो गए थे। अब येह लोग दरवाज़ा खोल कर अन्दर दाख़िल हुए तो वोह बन्दर अपने रिश्तेदारों को पहचानते और उन के पास आ कर उन के कपड़े सूंघते थे और येह लोग उन बन्दर हो जाने वालों को नहीं पहचानते थे। इन लोगों ने बन्दर हो जाने वालों से कहा : "क्या हम लोगों ने तुम्हें इस से मन्अ़ नहीं किया था ?" उन्हों ने सर के इशारे से कहा : हां। इस

www.dawateislami.net

के तीन दिन बा'द वोह सब हलाक हो गए और मन्अ़ करने वाले सलामत रहे। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उम्मी होने और पिछली किताबें पढ़ी हुई न होने के बा वुजूद भी इन वाक़िआ़त की ख़बर देना एक मो'जिज़ा है कि आप ने यहूदियों के सामने उन के आबाओ अज्दाद के आ'माल और **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म की ना फ़रमानी की वज्ह से उन का बन्दर व ख़िन्ज़ीर की शक्लों में तब्दील हो जाना सब बयान फ़रमा दिया।[1]

शरई अह़काम बातिल करने के लिये ह़ीला करने वालों को नसीह़त

इस वाक़िए़ में उन लोगों के लिये बड़ी इ़ब्रत है कि जो शरई अह़काम को बातिल करने और उन्हें अपनी ख़्वाहिशों के मुताबिक़ ढालने के लिये त़रह़ त़रह़ के ग़ैर शरई ह़ीलों का सहारा लेते हैं, उन्हें इस बात से डरना चाहिये कि कहीं इस की पादाश में उन की शक्लें भी न बिगाड़ दी जाएं। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जैसा यहूदियों ने किया तुम इस त़रह़ न करना कि तुम **अल्लाह** तआ़ला की ह़राम कर्दा चीज़ों को त़रह़ त़रह़ के ह़ीले कर के ह़लाल समझने लगो।"[2]

याद रहे कि हुक्मे शरई को बातिल करने के लिये ह़ीला करना ह़राम है जैसा कि यहां मज़्कूर हुवा अलबत्ता हुक्मे शरई को किसी दूसरे शरई त़रीक़े से ह़ासिल करने के लिये ह़ीला करना जाइज़ है जैसा कि क़ुरआने पाक में ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इस त़रह़ का अ़मल सूरए ص आयत 44 में मज़्कूर है। अ़वामुन्नास को चाहिये कि पहले ह़ीले से मुतअ़ल्लिक़ शरई रहनुमाई ह़ासिल करें इस के बा'द ह़ीला करें ताकि मा'लूमात में कमी की वज्ह से गुनाह में पड़ने का अन्देशा बाक़ी न रहे।

नोट : इस वाक़िए़ की बा'ज़ तफ़्सीलात सूरए बक़रह आयत 65 में गुज़र चुकी हैं। ﴿وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ﴾ **: और जब उन में से एक गुरौह ने कहा।** इस आयत में तीसरे गुरौह का ज़िक्र है कि जिन्हों ने ख़ामोशी इख़्तियार की थी। इस से मा'लूम हुवा कि येह लोग मछली के शिकार पर बिल्कुल राज़ी न थे बल्कि उन से मुतनफ़्फ़िर थे जब कि उन्हें समझाते इस लिये नहीं थे कि उन के मानने की उम्मीद न थी। इस से ब ज़ाहिर येह समझ आता है कि येह लोग भी नजात पा गए थे क्यूं कि जब किसी के मानने की उम्मीद न हो तो अम्र बिल मा'रूफ़ करना फ़र्ज़ नहीं रहता, हां अफ़्ज़ल ज़रूर होता है नीज़ अम्र बिल मा'रूफ़ फ़र्ज़े किफ़ाया है लिहाज़ा जब एक गुरौह येह कर ही रहा था तो उन पर बिऐ़निही फ़र्ज़ न रहा।

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۶۳ و ۱۶۶، ۲/۱۵۱-۱۵۲. 2 .....در منثور، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۶۳، ۳/۵۹۲.

www.dawateislami.net

﴿كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ﴾ **: धुत्कारे हुए बन्दर बन जाओ ।** ﴾ हदीस शरीफ़ में है, हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, एक शख़्स ने अ़र्ज़ की **: या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, क्या बन्दर और ख़िन्ज़ीर मस्ख़ शुदा लोग हैं ? रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला ने किसी क़ौम को हलाक कर के या किसी क़ौम को अ़ज़ाब दे कर उस की नस्ल नहीं चलाई और बन्दर और ख़िन्ज़ीर तो उन से पहले भी होते थे ।"[1] लिहाज़ा मौजूदा बन्दर उस क़ौम की औलाद में से नहीं क्यूं कि वोह तो फ़ना कर दी गई ।

وَ اِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَیَبْعَثَنَّ عَلَیْهِمْ اِلٰى یَوْمِ الْقِیٰمَةِ مَنْ یَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِیْعُ الْعِقَابِ ۚۖ وَ اِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۶۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब तुम्हारे रब ने हुक्म सुना दिया कि ज़रूर क़ियामत के दिन तक उन पर ऐसे को भेजता रहूंगा जो उन्हें बुरी मार चखाए बेशक तुम्हारा रब ज़रूर जल्द अ़ज़ाब वाला है और बेशक वोह बख़्शने वाला मेहरबान है ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब तुम्हारे रब ने ए'लान कर दिया कि वोह ज़रूर क़ियामत के दिन तक उन पर ऐसों को भेजता रहेगा जो उन्हें बुरा अ़ज़ाब देते रहेंगे बेशक तुम्हारा रब ज़रूर जल्द अ़ज़ाब देने वाला है और बेशक वोह बख़्शने वाला मेहरबान है ।

﴿وَ اِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ﴾ **: और जब तुम्हारे रब ने ए'लान कर दिया ।** ﴾ इस से पहली आयात में **अल्लाह** तआ़ला ने यहूदियों की सरकशी, गुनाह पर दीदा दिलेरी और इस की सज़ा में मस्ख़ कर के बन्दर बना देने का ज़िक्र फ़रमाया और इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने येह ज़िक्र फ़रमाया है कि क़ियामत तक यहूदियों के लिये ज़िल्लत और ग़ुलामी मुक़द्दर कर दी गई है ।[2]

इस आयत का मा'ना येह है कि ऐ ह़बीब ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, आप के रब عَزَّوَجَلَّ ने यहूदियों के आबाओ अज्दाद को उन के अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ज़बान से येह ख़बर दी थी कि **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत तक यहूदियों पर ऐसे अफ़राद मुसल्लत़ करता रहेगा जो उन्हें ज़िल्लत और ग़ुलामी का मज़ा चखाते रहेंगे । चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला ने यहूदियों पर बुख़्ते नस्सर, सिन्जारीब और रूमी ईसाई बादशाहों को मुसल्लत़ फ़रमाया जो अपने अपने ज़मानों

1 .....مسلم، کتاب القدر، باب بیان انّ الآجال والارزاق وغیرھا... الخ، ص ١٤٣٢، الحدیث: ٣٣ (٢٦٦٣).
2 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ١٦٧، ٥/٣٩٣.

www.dawateislami.net

में यहूदियों को सख़्त ईज़ाएं पहुंचाते रहे ।[1] फिर मुसल्मान सलातीन इन पर मुक़र्रर हुए, फिर अंग्रेज़ों की ग़ुलामी में रहे, क़रीब के दौर में जर्मनी में हिटलर ने इन्हें चुन चुन कर क़त्ल किया और अपने मुल्क से निकाल दिया । यहूदियों की हरकतें ही ऐसी हैं कि कोई सल्तनत इन्हें अपने मुल्क में रखने पर आमादा नहीं होती येही वज्ह है कि मौजूदा दौर में भी किसी सल्तनत ने इज्तिमाई तौर पर इन्हें अपने मुल्क में न रखा बल्कि इन्हें फ़िलिस्तीन में आबाद किया और यहीं से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन की बड़ी तबाही का आग़ाज़ होगा ।

وَقَطَّعْنٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۱۶۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हें हम ने ज़मीन में मुतफ़र्रिक़ कर दिया गुरौह गुरौह उन में कुछ नेक हैं और कुछ और त़रह़ के और हम ने उन्हें भलाइयों और बुराइयों से आज़माया कि कहीं वोह रुजूअ़ लाएं ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने उन्हें ज़मीन में मुख़्तलिफ़ गुरौहों में तक़्सीम कर दिया, उन में कुछ सालिह़ीन हैं और कुछ इस के इ़लावा हैं और हम ने उन्हें ख़ुश ह़ालियों और बद ह़ालियों से आज़माया ताकि वोह लौट आएं ।

﴿وَقَطَّعْنٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اُمَمًا﴾ **: और हम ने उन्हें ज़मीन में मुख़्तलिफ़ गुरौहों में तक़्सीम कर दिया ।** आयत का ख़ुलासा येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, हम ने यहूदियों की जम्इ़य्यत को मुन्तशिर कर दिया और इन का शीराज़ा बिखेर दिया और ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, मौजूदा यहूदियों में कुछ नेक भी हैं जो **अल्लाह** तआ़ला और रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाए और दीन पर साबित रहे और उन के इ़लावा कुछ ऐसे हैं कि जिन्हों ने ना फ़रमानी की, कुफ़्र किया और दीन को बदल डाला । और हम ने उन्हें ख़ुश ह़ालियों और बद ह़ालियों से आज़माया इस त़रह़ कि कभी उन पर अरज़ानी, तन्दुरुस्ती और दुन्यवी इ़ज़्ज़त के दरवाज़े खोल दिये और कभी उन पर क़ह़त़, बीमारियों, मुसीबतों और ज़िल्लतों को मुसल्लत़ कर दिया ताकि वोह अपनी ना फ़रमानियों से लौट आएं क्यूं कि बा'ज़ तो मुसीबत में रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ करते हैं और बा'ज़ राह़तों में ।

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۶۷، ۲/۱۵۲.

www.dawateislami.net

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۶۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर उन की जगह उन के बा'द वोह ना ख़लफ़ आए कि किताब के वारिस हुए इस दुन्या का माल लेते हैं और कहते अब हमारी बख़्शिश होगी और अगर वैसा ही माल उन के पास और आए तो ले लें क्या उन पर किताब में अ़हद न लिया गया कि **अल्लाह** की त़रफ़ निस्बत न करें मगर ह़क़ और उन्हों ने उसे पढ़ा और बेशक पिछला घर बेहतर है परहेज़ गारों को तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर उन के बा'द ऐसे बुरे जा नशीन आए जो किताब के वारिस हुए वोह इस दुन्या का माल लेते हैं और कहते हैं कि हमारी मग़्फ़िरत कर दी जाएगी ह़ालां कि अगर वैसा ही माल उन के पास मज़ीद आ जाए तो उसे (भी) ले लेंगे। क्या किताब में उन से येह अ़हद नहीं लिया गया था ? कि **अल्लाह** के बारे में ह़क़ बात के सिवा कुछ न कहेंगे और वोह पढ़ चुके हैं जो उस किताब में है और बेशक आख़िरत का घर परहेज़ गारों के लिये बेहतर है, तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं ?

﴿فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ﴾ **: फिर उन के बा'द ऐसे बुरे जा नशीन आए ।** ﴾ इस आयत में बनी इसराईल के ना ख़लफ़ जा नशीनों के चन्द ऐ़ब बयान किये गए हैं :

(1)..... वोह रिश्वत ले कर तौरैत के अह़काम बदल देते।

(2)..... ना फ़रमानियों के बा वुजूद येह कहते कि हमारा येह गुनाह बख़्श दिया जाएगा इस पर हमारी पकड़ न होगी।

(3)..... इस जुर्म पर क़ाइम रहे कि जब रिश्वत मिली उसे ले कर शरई़ ह़ुक्म बदल दिया।

(4)..... येह सारे जुर्म नादानी में नहीं बल्कि दीदा व दानिस्ता करते रहे।

www.dawateislami.net

ना फ़रमानियों के बा वुजूद बख़्शिश की तमन्ना रखना कैसा है ?

इस आयत में यहूदियों की एक सरकशी येह बयान हुई कि **''ना फ़रमानियों के बा वुजूद वोह येह समझते थे कि उन के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे और इस पर उन की पकड़ न होगी''** यहूदियों की इस सरकशी की बुन्याद येह थी कि येह लोग इस ज़ो'म में मुब्तला थे कि हम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हैं इस लिये इन गुनाहों पर हम से कुछ मुआख़ज़ा न होगा। फ़ी ज़माना भी ऐसे लोगों की कमी नहीं कि जो अपनी बद आ'मालियों के बा वुजूद ख़ुद को आख़िरत के अज्रो सवाब का ह़क़दार समझते हैं यूंही बा'ज़ समझदार क़िस्म के लोग शैत़ान के इस धोके में फंस कर गुनाहों में पड़े रहते हैं कि हम अगर्चे गुनाहगार हैं लेकिन फ़ुलां कामिल पीर साह़िब के मुरीद हैं लिहाज़ा हम बख़्शे जाएंगे और गुनाहों पर हमारी पकड़ न होगी। ऐसे ह़ज़रात ख़ुद ही ग़ौर कर लें कि उन का येह त़र्ज़े अ़मल किन की अ़क्कासी कर रहा है, शायद येह वोही दौर है कि जिस की ख़बर इस रिवायत में दी गई है, ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : अ़न्क़रीब लोगों के सीनों में क़ुरआन इस त़रह़ बोसीदा हो जाएगा जिस त़रह़ कपड़ा बोसीदा हो कर झड़ने लगता है, वोह किसी शौक़ और लज़्ज़त के बिग़ैर क़ुरआने पाक की तिलावत करेंगे, उन के आ'माल सिर्फ़ त़मअ़ और ह़िर्स होंगे। वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ की वज्ह से गुनाहों में कमी नहीं करेंगे। वोह बुरे काम करने के बा वुजूद तब्लीग़ करेंगे और कहेंगे कि अ़न्क़रीब हमारी बख़्शिश कर दी जाएगी क्यूं कि हम **अल्लाह** तआ़ला के साथ शिर्क नहीं करते।[1]

इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हर वोह तवक़्क़ोअ़ जो तौबा या इ़बादत में सुरूर की रग़बत पैदा करे वोह रजा (या'नी उम्मीद) है और हर वोह उम्मीद जो इ़बादत में फ़ुतूर और बात़िल की त़रफ़ झुकाव पैदा करे तो वोह धोका है जैसे किसी शख़्स के दिल में ख़याल पैदा हो कि वोह गुनाह को तर्क कर दे और अ़मल में मश्ग़ूल हो जाए और शैत़ान उस से कहे कि तुम अपने आप को क्यूं अ़ज़ाब और तक्लीफ़ में डालते हो, तुम्हारा रब करीम है, ग़फ़ूर है, रह़ीम है और वोह (इस वज्ह से) तौबा और इ़बादत में सुस्ती करने लगे तो ऐसा शख़्स धोके में मुब्तला है, इस सूरत में बन्दे पर लाज़िम है कि वोह नेक आ'माल करे और अपने नफ़्स को **अल्लाह** तआ़ला के ग़ज़ब और उस के बहुत बड़े अ़ज़ाब से डराए और कहे कि **अल्लाह** तआ़ला गुनाहों को बख़्शने वाला और तौबा क़बूल करने वाला होने के साथ साथ सख़्त अ़ज़ाब देने वाला भी है, वोह अगर्चे करीम है लेकिन वोह कुफ़्फ़ार को हमेशा हमेशा के लिये जहन्नम में डालेगा ह़ालां कि उन का कुफ़्र उस का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता बल्कि वोह अ़ज़ाब, मशक़्क़त, बीमारियां, फ़क़्र और भूक वग़ैरा जिस त़रह़ दुन्या में बन्दों पर मुसल्लत़ करता है

1 .....دارمی، کتاب فضائل القرآن، باب فی تعاهد القرآن، ۲/۵۳۱، الحدیث: ۳۳۴۶.

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ वोह इन चीज़ों को उन से दूर भी कर सकता है तो जिस का अपने बन्दों के साथ येह त़रीक़ा है और उस ने मुझे अपने अ़ज़ाब से डराया है तो मैं उस से कैसे न डरूं और मैं किस त़रह़ उस से धोके में रहूं।

पस ख़ौफ़ और उम्मीद दो राहनुमा हैं जो लोगों को अ़मल की तरग़ीब देते हैं और जो बात अ़मल की रग़बत पैदा न करे वोह तमन्ना और धोका है और अक्सर लोग जो उम्मीद लगाए बैठे हैं और इस की वज्ह से वोह अ़मल में कोताही करते हैं, दुन्या की त़रफ़ मुतवज्जेह रहते हैं, **अल्लाह** तआ़ला से मुंह फेरते हैं और आख़िरत के लिये अ़मल नहीं करते तो वोह धोके में हैं। नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस बात की ख़बर दी और बयान फ़रमाया कि ''अ़न्क़रीब इस उम्मत के पिछले लोगों के दिलों पर धोका ग़ालिब हो जाएगा।'' आप ने जो फ़रमाया वोह हो कर रहा, जैसा कि पहले ज़माने के लोग दिन रात इ़बादत और नेक आ'माल करते रहते थे इस के बा वुजूद उन के दिलों में येह ख़ौफ़ रहता था कि उन्हों ने अपने रब की त़रफ़ लौट कर जाना है, वोह रात दिन इ़बादत में गुज़ारने के बा वुजूद अपने नफ़्सों के बारे में ख़ौफ़ज़दा रहते थे, वोह बहुत ज़ियादा तक़्वा इख़्तियार करने, ख़्वाहिशात और शुबुहात से बचने के बा वुजूद तन्हाई में अपने नफ़्सों के लिये रोते थे। लेकिन अब ह़ालत येह है कि तुम लोगों को मुत्मइन, ख़ुश और बे ख़ौफ़ देखोगे ह़ालां कि वोह गुनाहों पर औंधे गिरते हैं, दुन्या में पूरी तवज्जोह रखे हुए हैं और उन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला से मुंह फेर रखा है, उन का ख़याल है कि वोह **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम पर कामिल यक़ीन रखते हैं, उस के अ़फ़्वो दर गुज़र और मग़्फ़िरत की उम्मीद रखते हैं गोया उन का गुमान येह है कि उन्हों ने जिस त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम की मा'रिफ़त ह़ासिल की है इस त़रह़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا और पहले के बुज़ुर्गों को ह़ासिल न थी, अगर येह बात (या'नी अ़फ़्वो मग़्फ़िरत) महज़ तमन्ना और आसानी से ह़ासिल हो जाती तो (नेक आ'माल के बा वुजूद) उन बुज़ुर्गों के रोने, ख़ौफ़ खाने और ग़मगीन होने का क्या मत़लब था।[1]

इस के इ़लावा उन उ़लमा को भी अपने त़र्ज़े अ़मल पर ग़ौर की ह़ाजत है कि जो ख़ुद तो अ़वाम में मुक़्तदा की ह़ैसिय्यत रखते हैं और अपनी औलाद की अच्छी दीनी ता'लीमो तरबियत से ग़फ़्लत का शिकार हैं, जब उन की औलाद जा नशीनी की मस्नद पर जल्वा अफ़्रोज़ होगी तो कहीं येह भी इन्ही ख़राबियों का शिकार न हो जाए जिन का बनी इसराईल के जा नशीन हुए।

وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَؕ اِنَّا لَا نُضِيْعُ

[1] .....احیاء علوم الدین، کتاب ذمّ الغرور، بیان ذمّ الغرور وحقیقته وامثلته، ۳/۴۷۳-۴۷۴.

www.dawateislami.net

اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿۱۷۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो किताब को मज़बूत थामते हैं और उन्हों ने नमाज़ क़ाइम रखी और हम नेकों का नेग नहीं गंवाते।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह जो किताब को मज़बूती से थामते हैं और उन्हों ने नमाज़ क़ाइम रखी, बेशक हम इस्लाह करने वालों का अज्र ज़ाएअ नहीं करते।

﴿وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ : **और वोह जो किताब को मज़बूती से थामते हैं।**﴾ किताब को मज़बूती से थामने से मुराद उस के मुताबिक़ अमल करना, उस के तमाम अहकाम को मानना और उस में किसी तरह की तब्दीली रवा, न रखना है, और इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि येह आयत अहले किताब में से हज़रते अब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वग़ैरा ऐसे अस्हाब के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने पहली किताब की इत्तिबाअ की और उस में कोई तहरीफ़ की न उस के मज़ामीन को छुपाया और उस किताब के इत्तिबाअ की बदौलत उन्हें क़ुरआने पाक पर ईमान नसीब हुवा।[1]

﴿وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ : **और उन्हों ने नमाज़ क़ाइम कर रखी है।**﴾ नमाज़ अगर्चे किताब को मज़बूती से थामने में दाख़िल है अलबत्ता इसे जुदागाना ज़िक्र करने से मक़्सूद इस की अज़मत का इज़्हार और येह बताना है कि **अल्लाह** तआला और उस के रसूल पर ईमान लाने के बा'द सब से अहम इबादत नमाज़ है।[2]

नमाज़ की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत

कसीर अहादीस में नमाज़ पढ़ने की बहुत अहम्मिय्यत और फ़ज़ीलत बयान की गई है, तरग़ीब के लिये उन में से 3 अहादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)..... हज़रत उमरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक साहिब ने अर्ज़ की, **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, इस्लाम में सब से ज़ियादा **अल्लाह** तआला के नज़्दीक महबूब क्या चीज़ है ? इर्शाद फ़रमाया : "वक़्त में नमाज़ पढ़ना और जिस ने नमाज़ छोड़ी उस का कोई दीन नहीं,

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۷۰، ۲/۱۵۴.
2 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۷۰، ۲/۱۵۴.

www.dawateislami.net

नमाज़ दीन का सुतून है।''[1]

(2)..... ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''सब से पहले क़ियामत के दिन बन्दे से नमाज़ का ह़िसाब लिया जाएग, अगर येह दुरुस्त हुई तो बाक़ी आ'माल भी ठीक रहेंगे और येह बिगड़ी तो सभी बिगड़े।''[2]

(3)..... ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''पांच नमाज़ें **अल्लाह** तआ़ला ने बन्दों पर फ़र्ज़ कीं, जिस ने अच्छी त़रह़ वुज़ू किया और वक़्त में पढ़ीं और रुकूअ़ व ख़ुशूअ़ को पूरा किया तो उस के लिये **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ज़िम्मए करम पर अ़ह्द कर लिया है कि उसे बख़्श दे, और जिस ने न किया उस के लिये अ़ह्द नहीं, चाहे बख़्श दे, चाहे अ़ज़ाब करे[3]।''[4]

क़ुरआने मजीद के अह़काम पर अ़मल के मुआ़मले में हमारी ह़ालत

इस आयत में किताब को मज़बूती से थामने वालों की फ़ज़ीलत बयान हुई इसे सामने रखते हुए क़ुरआने मजीद के अह़काम पर अ़मल के सिल्सिले में हम अपने अस्लाफ़ के ह़ाल और अपने ह़ाल का मुवाज़ना करें तो मौजूदा दौर में मुसल्मानों की मज्मूई़ सूरते ह़ाल इन्तिहाई तश्वीश नाक नज़र आती है कि फ़ी ज़माना मुसल्मान क़ुरआने मजीद पर अ़मल से इन्तिहाई दूर हो चुके और दुन्या की ने'मतों और रंगीनियों पर मुत़्मइन बैठे नज़र आ रहे हैं। ह़ज़रते ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने 70 बद्री सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को देखा वोह **अल्लाह** तआ़ला की ह़लाल कर्दा चीज़ों से (तक़्वा व वरअ़ की वज्ह से) इस क़दर इज्तिनाब करते थे जिस क़दर तुम ह़राम चीज़ों से परहेज़ नहीं करते। जिस क़दर तुम फ़राख़ी की ह़ालत पर ख़ुश होते हो उस से ज़ियादा वोह आज़्माइशों पर ख़ुश होते थे। अगर तुम उन्हें देख लेते तो कहते कि येह मजनून हैं और अगर वोह तुम्हारे बेहतरीन लोगों को देखते तो कहते कि इन लोगों का (आख़िरत में) कोई ह़िस्सा नहीं और अगर वोह तुम्हारे बुरे लोगों को देखते तो कहते : इन लोगों का ह़िसाब के दिन पर ईमान नहीं। उन में से किसी के सामने ह़लाल माल पेश किया जाता तो वोह येह कह कर लेने से इन्कार कर देते कि मुझे अपना दिल ख़राब हो जाने का डर

1 .....شعب الایمان، باب الحادی والعشرون من شعب الایمان... الخ، ۳/۳۹، الحدیث: ۲۸۰۷.

2 .....معجم الاوسط، باب العین، من اسمه علی، ۳/۳۲، الحدیث: ۳۷۸۲.

3 .....ابو داؤد، کتاب الصلاۃ، باب المحافظة علی وقت الصلوات، ۱/۱۸۶، الحدیث: ۴۲۵.

4 ..... नमाज़ से मुतअ़ल्लिक़ ज़रूरी अह़काम और मसाइल जानने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की किताब ''नमाज़ के अह़काम'' और ''इस्लामी बहनों की नमाज़'' (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

है (जब कि तुम ह़राम माल लेने में भी ज़रा परवाह नहीं करते)।[1]

अल्लाह तआ़ला मुसल्मानों को अ़क़्ले सलीम और क़ुरआने करीम पर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

وَ اِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّ ظَنُّوْۤا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَاۤ اٰتَیْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّ اذْكُرُوْا مَا فِیْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۷۱﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब हम ने पहाड़ उन पर उठाया गोया वोह साएबान है और समझे कि वोह उन पर गिर पड़ेगा लो जो हम ने तुम्हें दिया ज़ोर से और याद करो जो उस में है कि कहीं तुम परहेज़ गार हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब हम ने पहाड़ उन के ऊपर बुलन्द कर दिया गोया वोह साएबान है और उन्हों ने समझ लिया कि येह उन पर गिरने ही वाला है (और हम ने कहा) जो हम ने तुम्हें दिया है उसे मज़बूती से थाम लो और जो कुछ उस में है उसे याद करो ताकि तुम परहेज़ गार बन जाओ।

﴿وَ اِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ﴾ **: और याद करो, जब हम ने पहाड़ उन के ऊपर बुलन्द कर दिया।** जब बनी इसराईल ने तकालीफ़े शाक़्क़ा की वज्ह से तौरैत के अह़काम क़बूल करने से इन्कार किया तो **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْهِ السَّلَام ने एक पहाड़ जिस की मिक़्दार उन के लश्कर के बराबर थी या'नी तीन मील लम्बा और तीन मील चौड़ा पहाड़ उठा कर साएबान की त़रह़ उन के सरों के क़रीब कर दिया और उन से कहा गया कि तौरैत के अह़काम क़बूल करो वरना येह तुम पर गिरा दिया जाएगा। पहाड़ को सरों पर देख कर सब के सब सज्दे में गिर गए। मगर इस त़रह़ कि बायां रुख़्सार और अब्रू तो उन्हों ने सज्दे में रख दी और दाईं आंख से पहाड़ को देखते रहे कि कहीं गिर ही न पड़े, चुनान्चे अब तक यहूदियों के सज्दे की येही शान है।[2]

क़ुरआने करीम का आहिस्ता आहिस्ता नुज़ूल अल्लाह तआ़ला की ख़ास रह़मत है

इस से मा'लूम हुवा कि क़ुरआन का 23 साल के अ़र्से में आहिस्ता आहिस्ता उतरना

1 .....احیاء علوم الدین ، کتاب الفقر و الزهد، بیان تفضیل الزهد فیما هو من ضروریات الحیاة، ۲۹۷/٤.

2 .....صاوی، الاعراف، تحت الآیة: ۱۷۱، ۷۲۳/۲.

www.dawateislami.net

भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ास रह़मत है कि इस त़रह़ मुसल्मानों को तमाम अह़कामात पर अ़मल आसान हो गया। आज़ाद त़बीअ़त एक दम सारे अह़काम की पाबन्दी में दिक़्क़त मह़सूस करती है।

وَ اِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِیْۤ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّیَّتَهُمْ وَ اَشْهَدَهُمْ عَلٰۤى
اَنْفُسِهِمْۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْؕ قَالُوْا بَلٰىۛ شَهِدْنَاۛ اَنْ تَقُوْلُوْا یَوْمَ الْقِیٰمَةِ اِنَّا
كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِیْنَ ۙ﴿۱۷۲﴾ اَوْ تَقُوْلُوْۤا اِنَّمَاۤ اَشْرَكَ اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَ كُنَّا
ذُرِّیَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْۚ اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۱۷۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मह़बूब याद करो जब तुम्हारे रब ने औलादे आदम की पुश्त से उन की नस्ल निकाली और उन्हें ख़ुद उन पर गवाह किया क्या मैं तुम्हारा रब नहीं सब बोले क्यूं नहीं हम गवाह हुए कि कहीं क़ियामत के दिन कहो कि हमें इस की ख़बर न थी। या कहो कि शिर्क तो पहले हमारे बाप दादा ने किया और हम उन के बा'द बच्चे हुए तो क्या तू हमें उस पर हलाक फ़रमाएगा जो अहले बात़िल ने किया।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ मह़बूब ! याद करो जब तुम्हारे रब ने औलादे आदम की पुश्त से उन की नस्ल निकाली और उन्हें ख़ुद उन पर गवाह बनाया (और फ़रमाया) क्या मैं तुम्हारा रब नहीं ? सब ने कहा : क्यूं नहीं, हम ने गवाही दी। (येह इस लिये हुवा) ताकि तुम क़ियामत के दिन येह न कहो कि हमें इस की ख़बर न थी। या येह कहने लगो कि शिर्क तो पहले हमारे बाप दादा ने किया और हम उन के बा'द (उन की) औलाद हुए तो क्या तू हमें उस पर हलाक फ़रमाएगा जो अहले बात़िल ने किया।

﴿وَ اِذْ : और ऐ मह़बूब ! याद करो।﴾ इस आयत में फ़रमाया गया कि "ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, याद करो जब तुम्हारे रब ने औलादे आदम की पुश्त से उन की नस्ल निकाली" जब कि ह़दीस शरीफ़ में है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की पुश्त से उन की ज़ुर्रिय्यत निकाली।[1]

1 .....ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة الاعراف، ۵/۵۱، الحدیث: ۳۰۸۶.

www.dawateislami.net

आयत व ह़दीस दोनों पर नज़र करने से येह मा'लूम होता है कि ज़ुर्रिय्यत निकालना उसी तरतीब के साथ हुवा जिस त़रह़ दुन्या में उन्हों ने एक दूसरे से पैदा होना था या'नी ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की पुश्त से उन की औलाद और औलाद की पुश्त से उन की औलाद इसी त़रह़ क़ियामत तक पैदा होने वाले लोग। **अल्लाह** तआ़ला ने उन के लिये रबूबिय्यत और वह़दानिय्यत के दलाइल क़ाइम फ़रमा कर और अ़क़्ल दे कर उन से अपनी रबूबिय्यत की शहादत त़लब फ़रमाई तो सब ने कहा : क्यूं नहीं, हम ने अपने ऊपर गवाही दी और तेरी रबूबिय्यत और वह़दानिय्यत का इक़्रार किया।[1]

﴿اَنْ تَقُوْلُوْا یَوْمَ الْقِیٰمَةِ﴾ **: कि तुम क़ियामत के दिन कहो।** इस आयत और बा'द वाली आयत का ख़ुलासा येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ **अल्लाह** की रबूबिय्यत का इक़्रार करने वालो ! येह गवाह बनाना इस लिये था ताकि तुम क़ियामत के दिन येह न कह सको कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम जो शिर्क व कुफ़्र में मुब्तला रहे हैं इस में हमारा क़ुसूर नहीं, क्यूं कि हमें ख़बर थी ही नहीं कि तू ही हमारा रब عَزَّوَجَلَّ है और तेरे सिवा कोई भी रब नहीं और ऐ रब्बे करीम ! तू बे ख़बर को नहीं पकड़ता, लिहाज़ा हमें छोड़ दे और अ़ज़ाब न दे और न ही येह कह सको कि "हम कुफ़्रो शिर्क में इस लिये बे क़ुसूर हैं कि हमारे बाप दादा मुश्रिक थे हम तो उन की वज्ह से शिर्क में मुब्तला हुए, क़ुसूर उन का है न कि हमारा।" उन्हें येह बातें कहने का ह़क़ इस लिये न होगा कि जब उन से अह्दे मीसाक़ ले लिया गया और येह बात उन के दिलों की तह में रख दी गई और इस अ़ह्द की याद दिहानी के लिये उन के पास रसूल आए और उन्हों ने इस अ़ह्द को याद दिलाया, किताबें उतरीं और उन के सामने ह़क़ बयान कर दिया गया तो अब येह उ़ज़्र करने का उन के पास मौक़अ़ न रहा।[2]

सूरए आ'राफ़ की आयत नम्बर 172 और 173 से मा'लूम होने वाले अह़काम

इन आयात से 3 अह़काम मा'लूम हुए :

(1)..... उ़मूमी तौ़र पर शरई अह़काम में बे ख़बरी मो'तबर नहीं, कोई येह उ़ज़्र पेश कर के कि मुझे मा'लूम नहीं था **अल्लाह** तआ़ला के अ़ज़ाब से नहीं छूट सकता। हर शख़्स पर फ़र्ज़ है कि ज़रूरत के मुत़ाबिक़ दीनी मसाइल सीखे।

(2)..... अ़क़ाइद में बाप दादों की तक़्लीद दुरुस्त नहीं, **अल्लाह** तआ़ला ने अ़क़्ल दी है लिहाज़ा ख़ुद तह़क़ीक़ कर के दुरुस्त अ़क़ीदे इख़्तियार करने चाहिएं।

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۷۲، ۱۵۶/۲. 2 .....بغوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۷۲، ۱۷۸/۲.

www.dawateislami.net

(3)..... गुनाह की बुन्याद डालना अगर्चे सख़्त तर जुर्म है मगर बा'द में दूसरे लोग येह गुनाह करने वाले भी मुजरिम होंगे, वोह येह उ़ज़्र नहीं कर सकते कि हम चूंकि इस गुनाह को ईजाद करने वाले नहीं इस लिये क़ुसूर वार भी नहीं।

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۱۷۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम इसी त़रह़ आयतें रंग रंग से बयान करते हैं और इस लिये कि कहीं वोह फिर आएं।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और हम इसी त़रह़ तफ़्सील से आयात बयान करते हैं और इस लिये कि वोह रुजूअ़ कर लें।

﴿وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ﴾ **: और हम इसी त़रह़ तफ़्सील से आयात बयान करते हैं।** ﴾ या'नी ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, जिस त़रह़ आप की क़ौम के सामने हम ने इस सूरत की आयात तफ़्सील से बयान की हैं हम इन के इ़लावा आयात भी इसी त़रह़ तफ़्सील से बयान करते हैं ताकि बन्दे तदब्बुरो तफ़क्कुर कर के ह़क़ व ईमान क़बूल करें और इस लिये तफ़्सील से आयात बयान करते हैं ताकि वोह शिर्क व कुफ़्र से तौह़ीद व ईमान की त़रफ़ रुजूअ़ कर लें और साह़िबे मो'जिज़ात नबी के बताने से अपने अ़ह्दे मीसाक़ को याद करें और उस के मुत़ाबिक़ अ़मल करें।[1]

चूंकि क़ुरआने करीम तमाम लोगों की हिदायत के लिये आया है और लोगों में से बा'ज़ डर से, बा'ज़ लालच से और बा'ज़ दलाइल से मानते हैं, इस लिये क़ुरआने करीम में हर त़रह़ की आयात मज़्कूर हैं कि जो जिस चीज़ से मान सके मान ले।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿۱۷۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ महबूब उन्हें उस का अह़वाल सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयतें दीं तो वोह उन से साफ़ निकल गया तो शैत़ान उस के पीछे लगा तो गुमराहों में हो गया।

1 .....تفسیر طبری، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۷۴، ۱۱۸/۶، خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۷۴، ۱۵۸/۲، ملتقطاً۔

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ महबूब ! उन्हें उस आदमी का ह़ाल सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयात अ़ता फ़रमाईं तो वोह उन से साफ़ निकल गया फिर शैत़ान उस के पीछे लग गया तो वोह आदमी गुमराहों में से हो गया ।

﴿وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْۤ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا﴾ **: और ऐ महबूब ! उन्हें उस आदमी का ह़ाल सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयात अ़ता फ़रमाईं ।﴾ शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास, अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द और इमाम मुजाहिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : येह आयत बल्अ़म बिन बाऊ़रा के बारे में नाज़िल हुई ।[1]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : येह आयत उमय्या बिन अबू सल्त के बारे में नाज़िल हुई ।[2]

ह़ज़रते सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : येह आयत अबू आ़मिर बिन सैफ़ी के बारे में नाज़िल हुई ।[3]

बल्अ़म बिन बाऊ़रा का वाक़िआ़

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि जब ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने जब्बारीन से जंग का इरादा किया और सर ज़मीने शाम में नुज़ूल फ़रमाया तो बल्अ़म बिन बाऊ़रा की क़ौम उस के पास आई और उस से कहने लगी कि ''ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام बहुत तेज़ मिज़ाज हैं और उन के साथ बहुत बड़ा लश्कर है, वोह यहां इस लिये आए हैं ताकि हम से जंग करें और हमें हमारे शहरों से निकाल कर हमारी बजाए बनी इसराईल को इस सर ज़मीन में आबाद करें, तेरे पास इस्मे आ'ज़म है और तुम ऐसे शख़्स हो कि तुम्हारी हर दुआ क़बूल होती है, तुम निकलो और **अल्लाह** तआ़ला से दुआ करो कि वोह उन्हें यहां से भगा दे ।'' क़ौम की बात सुन कर बल्अ़म ने कहा : अफ़्सोस है तुम पर ! ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **अल्लाह** तआ़ला के नबी हैं, उन के साथ फ़िरिश्ते और ईमानदार लोग हैं, इस लिये मैं उन के ख़िलाफ़ कैसे बद दुआ कर सकता हूं ! मुझे **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से जो इ़ल्म मिला है उस का तक़ाज़ा येह है कि अगर मैं ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ख़िलाफ़ ऐसा किया तो मेरी दुन्या व आख़िरत बरबाद हो जाएगी । क़ौम ने जब गिर्या व ज़ारी के साथ मुसल्सल इसरार किया तो बल्अ़म ने कहा : अच्छा ! मैं पहले अपने रब की मरज़ी मा'लूम कर लूं । बल्अ़म का येही त़रीक़ा था कि जब कभी कोई दुआ करता तो पहले मरज़िये इलाही मा'लूम

1 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۷۵، ۵/۴۰۳.
2 .....سنن الکبری للنسائی، کتاب التفسیر، سورۃ الاعراف، ۶/۳۴۸، الحدیث: ۱۱۱۹۴.
3 .....تفسیر قرطبی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۷۵، ۴/۲۲۹، الجزء السابع.

www.dawateislami.net

कर लेता और ख़्वाब में उस का जवाब मिल जाता, चुनान्चे इस मरतबा उस को येह जवाब मिला कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन के साथियों के ख़िलाफ़ दुआ न करना। चुनान्चे उस ने क़ौम से कह दिया कि "मैं ने अपने रब से इजाज़त चाही थी मगर मेरे रब ने उन के ख़िलाफ़ बद दुआ करने की मुमानअ़त फ़रमा दी है।" फिर उस की क़ौम ने उसे हदिय्ये और नज़राने दिये जिन्हें उस ने क़बूल कर लिया। इस के बा'द क़ौम ने दोबारा उस से बद दुआ करने की दरख़्वास्त की तो दूसरी मरतबा बल्अ़म ने रब तबारक व तआ़ला से इजाज़त चाही। अब की बार इस का कुछ जवाब न मिला तो उस ने क़ौम से कह दिया कि "मुझे इस मरतबा कुछ जवाब ही नहीं मिला।" वोह लोग कहने लगे कि "अगर **अल्लाह** तआ़ला को मन्ज़ूर न होता तो वोह पहले की त़रह़ दोबारा भी साफ़ मन्अ़ फ़रमा देता।" फिर क़ौम ने और भी ज़ियादा इसरार किया ह़त्ता कि वोह उन की बातों में आ गया। चुनान्चे बल्अ़म बिन बाऊ़रा अपनी गधी पर सुवार हो कर एक पहाड़ की त़रफ़ रवाना हुवा। गधी ने उसे कई मरतबा गिराया और वोह फिर सुवार हो जाता ह़त्ता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से गधी ने उस से कलाम किया और कहा : अफ़्सोस ! ऐ बल्अ़म ! कहां जा रहे हो ? क्या तुम देख नहीं रहे कि फ़िरिश्ते मुझे जाने से रोक रहे हैं। (शर्म करो) क्या तुम **अल्लाह** तआ़ला के नबी और फ़िरिश्तों के ख़िलाफ़ बद दुआ करने जा रहे हो ? बल्अ़म फिर भी बाज़ न आया और आख़िर कार वोह बद दुआ करने के लिये अपनी क़ौम के साथ पहाड़ पर चढ़ा। अब बल्अ़म जो बद दुआ करता **अल्लाह** तआ़ला उस की ज़बान को उस की क़ौम की त़रफ़ फेर देता था और अपनी क़ौम के लिये जो दुआए ख़ैर करता था तो बजाए क़ौम के बनी इसराईल का नाम उस की ज़बान पर आता था। येह देख कर उस की क़ौम ने कहा : ऐ बल्अ़म ! तू येह क्या कर रहा है ? बनी इसराईल के लिये दुआ और हमारे लिये बद दुआ क्यूं कर रहा है ? बल्अ़म ने कहा : "येह मेरे इख़्तियार की बात नहीं, मेरी ज़बान मेरे क़ब्ज़े में नहीं है, **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत मुझ पर ग़ालिब आ गई है।" इतना कहने के बा'द उस की ज़बान निकल कर उस के सीने पर लटक गई। उस ने अपनी क़ौम से कहा : मेरी तो दुन्या व आख़िरत दोनों बरबाद हो गईं, अब मैं तुम्हें उन के ख़िलाफ़ एक तदबीर बताता हूं "तुम ह़सीनो जमील औ़रतों को बना संवार कर उन के लश्कर में भेज दो, अगर उन में से एक शख़्स ने भी बदकारी कर ली तो तुम्हारा काम बन जाएगा क्यूं कि जो क़ौम ज़िना करे **अल्लाह** तआ़ला उस पर सख़्त नाराज़ होता है और उसे काम्याब नहीं होने देता।" चुनान्चे बल्अ़म की क़ौम ने इसी त़रह़ किया, जब औ़रतें बन संवर कर लश्कर में पहुंचीं तो एक कन्आ़नी औ़रत बनी इसराईल के एक सरदार के पास से गुज़री तो वोह अपने ह़ुस्नो जमाल की वज्ह से उसे पसन्द आ गई। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मन्अ़ करने के बा वुजूद उस सरदार ने उस औ़रत के साथ बदकारी की, इस की पादाश में उसी वक़्त बनी इसराईल पर त़ाऊ़न मुसल्लत़ कर दिया गया। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मुशीर उस वक़्त वहां मौजूद न था जब

www.dawateislami.net

वोह आया तो उस ने बदकारी का क़िस्सा मा'लूम होने के बा'द मर्द व औ़रत दोनों को क़त्ल कर दिया। तब त़ाऊ़न का अ़ज़ाब उन से उठा लिया गया, लेकिन इस दौरान सत्तर हज़ार इसराईली त़ाऊ़न से हलाक हो चुके थे। इस आयत में इस का बयान है।[1]

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗۤ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْؕ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۷۶﴾ سَآءَ مَثَلًا ۟ الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۷۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम चाहते तो आयतों के सबब उसे उठा लेते मगर वोह तो ज़मीन पकड़ गया और अपनी ख़्वाहिश का ताबेअ़ हुवा तो उस का ह़ाल कुत्ते की त़रह़ है तू उस पर ह़म्ला करे तो ज़बान निकाले और छोड़ दे तो ज़बान निकाले येह ह़ाल है उन का जिन्हों ने हमारी आयतें झूटलाईं तो तुम नसीह़त सुनाओ कि कहीं वोह ध्यान करें। क्या बुरी कहावत है उन की जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं और अपनी ही जान का बुरा करते थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर हम चाहते तो आयतों के सबब उसे बुलन्द मर्तबा कर देते मगर वोह तो दुन्या की त़रफ़ माइल हो गया और अपनी ख़्वाहिश का ताबेअ़ हो गया तो उस का ह़ाल कुत्ते की त़रह़ है तू उस पर सख़्ती करे तो ज़बान निकाले और तू उसे छोड़ दे तो (भी) ज़बान निकाले। येह उन लोगों का ह़ाल है जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया तो तुम येह वाक़िआ़त बयान करो ताकि वोह ग़ौरो फ़िक्र करें। कितनी बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्हों ने हमारी आयात को झुटलाया और वोह अपनी जानों पर ही ज़ुल्म किया करते थे।

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا : और अगर हम चाहते तो आयतों के सबब उसे बुलन्द मर्तबा कर देते। या'नी अगर हम चाहते तो ना फ़रमानी करने से पहले ही उसे रोक देते फिर इन आयात पर अ़मल की वज्ह से उसे बुलन्द मर्तबा अ़त़ा फ़रमा कर अबरार की मनाज़िल में पहुंचा देते, लेकिन वोह तो दुन्या की त़रफ़ माइल हो गया और उस ने दुन्या और इस की लज़्ज़तों को

1 ……بغوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۷۵، ۲/۱۷۹-۱۸۰.

www.dawateislami.net

आख़िरत और उस की ने'मतों पर तरजीह़ देने में अपनी ख़्वाहिश की पैरवी की ।[1]

लालची और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करने वाले उ़लमा के लिये नसीह़त

इस आयत में बल्अ़म बिन बाऊ़रा का ह़ाल बयान हुवा, येह शख़्स फ़ज़्लो कमाल की उस मन्ज़िल पर फ़ाइज़ था कि गुज़श्ता किताबों का आ़लिम था, **अल्लाह** तआ़ला का इस्मे आ'ज़म उसे मा'लूम था, जो दुआ़ मांगता वोह क़बूल होती थी, अपनी जगह पर बैठे बैठे अ़र्श को देख लेता था, बारह हज़ार तुलबा उस के दर्स में शरीक हो कर उस की बातें लिखा करते थे ।[2]

फ़ज़्लो कमाल का इतना बड़ा मर्तबा पाने वाला शख़्स जब अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश की पैरवी करने लगा, दुन्या के माल और इस की ने'मतों की त़रफ़ राग़िब हो गया, आख़िरत और उस की ने'मतों को पसे पुश्त डाल दिया तो अन्जामे कार जो कुछ उसे अ़त़ा हुवा था सब छीन लिया गया, उस का ईमान बरबाद हो गया और दुन्या व आख़िरत में ख़ाइबो ख़ासिर हुवा । इस वाक़िए़ में उन उ़लमा के लिये बड़ी नसीह़त है कि जो अपने इ़ल्म के ज़रीए़ (या अपने इ़ल्म के बा वुजूद) अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करते और दुन्या का माल और इस की ने'मतें त़लब करते हैं ।[3]

याद रहे कि माल और मर्तबे की ह़िर्स दीन के लिये इन्तिहाई नुक़्सान देह है और क़ल्बी लालच की वज्ह से लिये गए माल में बरकत नहीं दी जाती, चुनान्चे ह़ज़रते का'ब बिन मालिक अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''दो भूके भेड़िये बकरियों के रेवड़ में छोड़ दिये जाएं तो वोह इतना नुक़्सान नहीं करते जितना माल और मर्तबे की ह़िर्स करने वाला अपने दीन के लिये नुक़्सान देह है ।''[4]

और ह़ज़रते ह़कीम बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ ह़कीम ! येह माल तरो ताज़ा और मीठा है, जो इसे अच्छी निय्यत से ले तो इस में उसे बरकत दी जाती है और जो इसे क़ल्बी लालच से लेगा तो इस में उसे बरकत नहीं दी जाती और वोह उस शख़्स की त़रह़ हो जाता है जो खाए और शिकम सेर न हो और (याद रखो) **ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है ।**''[5]

1 .....قرطبی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۷۶، ۴/۲۳۰، الجزء السابع، مدارك، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۷۶، ص۳۹۵، ملتقطاً.
2 .....صاوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۷۵، ۲/۷۲۷. 3 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۷۶، ۲/۱۶۰.
4 .....ترمذی، کتاب الزھد، ۴۳-باب، ۴/۱۶۶، الحدیث: ۲۳۸۳.
5 .....بخاری، کتاب الرقاق، باب قول النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم: ھذا المال خضرۃ حلوۃ، ۴/۲۳۰، الحدیث: ۶۴۴۱.

www.dawateislami.net

﴿فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ﴾ **: तो उस का ह़ाल कुत्ते की त़रह़ है ।** ﴾ इस आयत में दुन्या के मालो मताअ़ की वज्ह से दीन के अह़काम पसे पुश्त डालने वाले आ़लिम को कुत्ते से तश्बीह दी गई है । कुत्ता एक ज़लील जानवर है और ज़लील तर कुत्ता वोह है जो थकावट, शिद्दत की गरमी और प्यास होने या न होने के बा वुजूद हर वक़्त ज़बान बाहर निकाल कर हांपता रहता हो । जिस शख़्स को **अल्लाह** तआ़ला इल्मे दीन की इ़ज़्ज़तो करामत से सरफ़राज़ फ़रमाए और उसे लोगों के माल से बे नियाज़ कर दे, फिर वोह किसी ह़ाजत व ज़रूरत के बिग़ैर सिर्फ़ अपनी क़ल्बी ख़सासत और कमीना पन की वज्ह से दीन के वाज़ेह़ अह़काम से ए'राज़ कर के दुन्या के माल दौलत और मन्सबो मर्तबे की त़रफ़ झुके और इस ख़बीस अ़मल पर क़ाइम रहे तो वोह हांपने वाले कुत्ते की त़रह़ है कि हर वक़्त हांपने वाला कुत्ता किसी ह़ाजत की बिना पर नहीं बल्कि अपनी फ़ित़रत की वज्ह से हांपता रहता है ।[1]

दरबारी उ़लमा के लिये इ़ब्रत

इस आयत में उन दरबारी उ़लमा के लिये बड़ी इ़ब्रत है जो मन्सबो मर्तबे, मुराआ़तो वज़ाइफ़ के ह़ुसूल की ख़ातिर ह़ुक्काम की त़बीअ़त के मुत़ाबिक़ फ़तवे और उन के मुवाफ़िक़ बयान देते हैं । अगर येह फ़तवे क़ुरआनो ह़दीस की सरीह़ नुसूस से टकराते हों तो उन्हें डर जाना चाहिये कि कहीं उन का अन्जाम भी बल्अ़म की त़रह़ न हो जाए । आयत से मा'लूम हुवा कि नबी का गुस्ताख़ आ़लिम **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक कुत्ते की त़रह़ है कि न दुन्या में इ़ज़्ज़त नसीब हो और न आख़िरत में क्यूं कि बल्अ़म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुन्किर न था, वोह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मुख़ालिफ़ हुवा तो **अल्लाह** तआ़ला ने उसे कुत्ते की बद तरीन ह़ालत से तश्बीह दी ।

مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۷۸﴾
وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ
بِهَا ۫ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ۭ اُولٰٓئِكَ
كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ۭ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿۱۷۹﴾

[1] .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۷۶، ۵/۴۰۵.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जिसे **अल्लाह** राह दिखाए तो वोही राह पर है और जिसे गुमराह करे तो वोही नुक़्सान में रहे। और बेशक हम ने जहन्नम के लिये पैदा किये बहुत जिन्न और आदमी वोह दिल रखते हैं जिन में समझ नहीं और वोह आंखें जिन से देखते नहीं और वोह कान जिन से सुनते नहीं वोह चौपायों की त़रह़ हैं बल्कि उन से बढ़ कर गुमराह वोही ग़फ़्लत में पड़े हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जिसे **अल्लाह** हिदायत दे तो वोही हिदायत याफ़्ता होता है और जिन्हें **अल्लाह** गुमराह कर दे तो वोही नुक़्सान उठाने वाले हैं। और बेशक हम ने जहन्नम के लिये बहुत से जिन्नात और इन्सान पैदा किये हैं उन के ऐसे दिल हैं जिन के ज़रीए़ वोह समझते नहीं और उन की ऐसी आंखें हैं जिन के साथ वोह देखते नहीं और उन के ऐसे कान हैं जिन के ज़रीए़ वोह सुनते नहीं, येह लोग जानवरों की त़रह़ हैं बल्कि उन से भी ज़ियादा भटके हुए, येही लोग ग़फ़्लत में पड़े हुए हैं।

﴿مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ﴾ **: जिसे अल्लाह हिदायत दे ।** ﴾ इस आयत का मा'ना येह है कि हिदायत और गुमराही दोनों को पैदा करना **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से है जब कि इन में से किसी को इख़्तियार करना बन्दे की त़रफ़ से है, लिहाज़ा बन्दा अगर हिदायत इख़्तियार करता है तो **अल्लाह** तआ़ला उस में हिदायत पैदा फ़रमा देता है और अगर वोह गुमराही इख़्तियार करता है तो **अल्लाह** तआ़ला उस में गुमराही पैदा फ़रमा देता है।[1]

﴿وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ﴾ **: और बेशक हम ने जहन्नम के लिये पैदा किये ।** ﴾ इस आयत का मा'ना येह है कि बहुत से जिन्नात और इन्सानों का अन्जाम जहन्नम में दाख़िला होगा। जिन्नों और इन्सानों को पैदा करने का अस्ल मक़्सद तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत है जैसा कि इस आयत में है :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ[2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मैं ने जिन्न और आदमी इसी लिये बनाए कि मेरी इ़बादत करें।

लेकिन इन में से बहुत का अन्जामे कार जहन्नम है। इस आयत के लफ़्ज़ ''لِجَهَنَّمَ'' की इब्तिदा में मज़्कूर लाम ''लामे आ़क़िबत'' है। अ़रबी से वाक़िफ़ ह़ज़रात इसे आसानी से समझ लेंगे।

﴿لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا﴾ **: उन के ऐसे दिल हैं जिन के ज़रीए़ वोह समझते नहीं ।** ﴾ इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने कुफ़्फ़ार के होलनाक अन्जाम की वज्ह बयान फ़रमाई कि येह जहन्नम का

1 .....روح البيان، الاعراف، تحت الآية: ۱۷۸، ۳/۲۷۹. 2 .....الذاريات: ۵۶.

www.dawateislami.net

ईंधन इस लिये बने कि इन के ऐसे दिल हैं जिन के ज़रीए वोह हक़ से ए'राज़ कर के आयाते इलाहिय्यह में तदब्बुर करने से महरूम हो गए हालां कि येही दिल का ख़ास काम था। इन की ऐसी आंखें हैं कि जिन के साथ वोह हक़ व हिदायत का रास्ता, **अल्लाह** तआ़ला की रोशन निशानियां और तौहीद के दलाइल नहीं देखते। इन के ऐसे कान हैं जिन के ज़रीए वोह कुरआन की आयात और इस की नसीहतें क़बूल करने के लिये नहीं सुनते और क़ल्बो हवास रखने के बा वुजूद वोह उमूरे दीन में उन से नफ़्अ़ नहीं उठाते लिहाज़ा येह लोग जानवरों की तरह हैं बल्कि उन से भी ज़ियादा भटके हुए हैं।[1]

काफ़िरों को जानवरों से बदतर फ़रमाए जाने की वुजूहात

कुफ़्फ़ार को जानवरों से बदतर फ़रमाने की मुतअ़द्दद वुजूहात हैं :

(1)..... जानवरों में **अल्लाह** तआ़ला की आयात समझने, देखने और सुनने की कुव्वत ही नहीं लिहाज़ा अगर वोह न समझें तो मा'ज़ूर हैं लेकिन कुफ़्फ़ार के आ'ज़ा में येह कुव्वत है, फिर भी वोह उस से काम नहीं लेते लिहाज़ा वोह जानवरों से बदतर हैं।[2]

(2)..... चौपाया भी अपने नफ़्अ़ की तरफ़ बढ़ता है और ज़रर से बचता और उस से पीछे हटता है लेकिन काफ़िर जहन्नम की राह पर चल कर अपना ज़रर इख़्तियार करता है तो उस से बदतर हुवा।[3]

(3)..... जानवर अपने मालिक के कहने पर चलते हैं जब कि काफ़िर ना फ़रमान हैं कि अपने मालिके हक़ीक़ी ख़ुदावन्दे कुद्दूस के अह़काम की मुख़ालफ़त करते हैं इस लिये जानवरों से बदतर हैं। इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद नसफ़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : आदमी रूह़ानी, शहवानी, समावी, अर्ज़ी है जब इस की रूह़ शह्वत पर ग़ालिब हो जाती है तो मलाएका से फ़ाइक़ हो जाता है और जब शह्वात रूह़ पर ग़लबा पा जाती हैं तो ज़मीन के जानवरों से बदतर हो जाता है।[4]

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۪ وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْۤ اَسْمَآىِٕهٖ ؕ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸۰﴾

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ١٧٩، ٢/١٦٢. 2 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ١٧٩، ٢/١٦٢.
3 .....مدارك، الاعراف، تحت الآية: ١٧٩، ص٣٩٦. 4 .....مدارك، الاعراف، تحت الآية: ١٧٩، ص٣٩٦.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** ही के हैं बहुत अच्छे नाम तो उसे उन से पुकारो और उन्हें छोड़ दो जो उस के नामों में ह़क़ से निकलते हैं वोह जल्द अपना किया पाएंगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बहुत अच्छे नाम **अल्लाह** ही के हैं तो उसे उन नामों से पुकारो और उन लोगों को छोड़ दो जो उस के नामों में ह़क़ से दूर होते हैं, अ़न्क़रीब उन्हें उन के आ'माल का बदला दिया जाएगा।

﴿وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى﴾ **: और बहुत अच्छे नाम अल्लाह ही के हैं।** ﴾ **शाने नुज़ूल :** अबू जह्ल ने कहा था कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) और इन के अस्ह़ाब (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا) का दा'वा तो येह है कि वोह एक परवर्दगार की इ़बादत करते हैं फिर वोह **अल्लाह** और रह़मान दो को क्यूं पुकारते हैं ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई[1]

और इस जाहिले बे ख़िरद को बताया गया कि मा'बूद तो एक ही है नाम उस के बहुत हैं।

अस्माए ह़ुस्ना के फ़ज़ाइल

अह़ादीस में अस्माए ह़ुस्ना के बहुत फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, तरग़ीब के लिये दो अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)..... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** तआ़ला के निनानवे नाम हैं या'नी एक कम सो, जिस ने उन्हें याद कर लिया वोह जन्नत में दाख़िल हुवा।"[2]

ह़ज़रते अ़ल्लामा यह़या बिन शरफ़ नववी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं "उ़लमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि अस्माए इलाहिय्या निनानवे में मुन्ह़सिर नहीं हैं" ह़दीस का मक़्सूद सिर्फ़ येह है कि इतने नामों के याद करने से इन्सान जन्नती हो जाता है।[3]

(2)..... एक रिवायत में है कि "**अल्लाह** तआ़ला के निनानवे नाम हैं जिस ने उन के ज़रीए़ दुआ़ मांगी तो **अल्लाह** तआ़ला उस की दुआ़ को क़बूल फ़रमाएगा।"[4]

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیة: ۱۸۰، ۲/۱۶۲.

2 .....بخاری، کتاب الشروط، باب ما یجوز من الاشتراط والثّنیا فی الاقرار... الخ، ۲/۲۲۹، الحدیث: ۲۷۳۶.

3 .....نووی علی المسلم، کتاب الذکر والدعاء والتوبة... الخ، باب فی اسماء اللّٰه تعالٰی وفضل من احصاها، ۹/۵، الجزء السابع عشر.

4 .....جامع صغیر، حرف الهمزة، ص۱۴۳، الحدیث: ۲۳۷۰.

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला के निनानवे अस्मा

ह़दीसे पाक में **अल्लाह** तआ़ला के येह निनानवे अस्मा बयान किये गए हैं :

''هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ الْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَیْمِنُ الْعَزِیْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ الْغَفَّارُ الْقَهَّارُ الْوَهَّابُ الرَّزَّاقُ الْفَتَّاحُ الْعَلِیْمُ الْقَابِضُ الْبَاسِطُ الْخَافِضُ الرَّافِعُ الْمُعِزُّ الْمُذِلُّ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ الْحَكَمُ الْعَدْلُ اللَّطِیْفُ الْخَبِیْرُ الْحَلِیْمُ الْعَظِیْمُ الْغَفُوْرُ الشَّكُوْرُ الْعَلِیُّ الْكَبِیْرُ الْحَفِیْظُ الْمُقِیْتُ الْحَسِیْبُ الْجَلِیْلُ الْكَرِیْمُ الرَّقِیْبُ الْمُجِیْبُ الْوَاسِعُ الْحَكِیْمُ الْوَدُوْدُ الْمَجِیْدُ الْبَاعِثُ الشَّهِیْدُ الْحَقُّ الْوَكِیْلُ الْقَوِیُّ الْمَتِیْنُ الْوَلِیُّ الْحَمِیْدُ الْمُحْصِی الْمُبْدِئُ الْمُعِیْدُ الْمُحْیِیُ الْمُمِیْتُ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ الْوَاجِدُ الْمَاجِدُ الْوَاحِدُ الصَّمَدُ الْقَادِرُ الْمُقْتَدِرُ الْمُقَدِّمُ الْمُؤَخِّرُ الْاَوَّلُ الْآخِرُ الظَّاهِرُ الْبَاطِنُ الْوَالِیْ الْمُتَعَالِیْ الْبَرُّ التَّوَّابُ الْمُنْتَقِمُ الْعَفُوُّ الرَّءُوْفُ مَالِكُ الْمُلْكِ ذُو الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ الْمُقْسِطُ الْجَامِعُ الْغَنِیُّ الْمُغْنِیُ الْمَانِعُ الضَّارُّ النَّافِعُ النُّوْرُ الْهَادِیْ الْبَدِیْعُ الْبَاقِیْ الْوَارِثُ الرَّشِیْدُ الصَّبُوْرُ''[1]

अस्माए ह़ुस्ना पढ़ कर दुआ़ मांगने का बेहतरीन त़रीक़ा

इस मौक़अ़ पर अस्माए बारी तआ़ला पढ़ कर दुआ़ मांगने का एक बेहतरीन त़रीक़ा ह़ाज़िरे ख़िदमत है, बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : जो शख़्स इस त़रह़ दुआ़ मांगे कि पहले कहे ''اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ یَارَحْمٰنُ، یَارَحِیْمُ'' फिर ''रह़ीम'' के बा'द से तमाम अस्माए मुबारका ह़र्फ़े निदा के साथ पढ़े (या'नी یَامَلِكُ، یَاقُدُّوْسُ، یَاسَلَامُ .....यूंही आख़िर तक) जब अस्मा मुकम्मल हो जाएं तो यूं कहे ''اَنْ تُصَلِّیَ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَنْ تَرْزُقَنِیْ وَجَمِیْعَ مَنْ یَّتَعَلَّقُ بِیْ بِتَمَامِ نِعْمَتِكَ وَدَوَامِ عَافِیَتِكَ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ'' फिर दुआ़ मांगे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुराद पूरी होगी और कभी दुआ़ रद न होगी।[2]

﴿اَلَّذِیْنَ یُلْحِدُوْنَ فِیْۤ اَسْمَآىٕهٖ﴾ **: जो उस के नामों में ह़क़ से दूर होते हैं।** **अल्लाह** तआ़ला के नामों में ह़क़ व इस्तिक़ामत से दूर होना कई त़रह़ से है **एक** तो येह है कि उस के नामों को कुछ बिगाड़ कर ग़ैरों पर इत़्लाक़ करना जैसा कि मुश्रिकीन ने इलाह का ''लात'' और अ़ज़ीज़ का ''उ़ज़्ज़ा''

1 .....ترمذی، کتاب الدعوات، ۸۲-باب، ۵/۳۰۳، الحدیث: ۳۵۱۸.

2 .....روح البیان، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۸۰، ۳/۲۸۲.

www.dawateislami.net

और मन्नान का "मनात" कर के अपने बुतों के नाम रखे थे, येह नामों में ह़क़ से तजावुज़ और ना जाइज़ है। **दूसरा** येह कि **अल्लाह** तआ़ला के लिये ऐसा नाम मुक़र्रर किया जाए जो क़ुरआनो ह़दीस में न आया हो येह भी जाइज़ नहीं जैसे कि **अल्लाह** तआ़ला को सख़ी कहना क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला के अस्मा तौक़ीफ़िया हैं। **तीसरा** येह कि हुस्ने अदब की रिआ़यत न करना। **चौथा** येह कि **अल्लाह** तआ़ला के लिये कोई ऐसा नाम मुक़र्रर किया जाए जिस के मा'ना फ़ासिद हों येह भी बहुत सख़्त ना जाइज़ है, जैसे कि लफ़्ज़ राम और परमात्मा वग़ैरा। **पांचवां** येह कि ऐसे अस्मा का इत़्लाक़ करना जिन के मा'ना मा'लूम नहीं हैं और येह नहीं जाना जा सकता कि वोह जलाले इलाही के लाइक़ हैं या नहीं।[1]

इल्ह़ाद फ़िल अस्मा की एक सूरत येह भी है कि ग़ैरुल्लाह पर **अल्लाह** तआ़ला के उन नामों का इत़्लाक़ किया जाए जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ ख़ास हैं। जैसे किसी का नाम रह़मान, क़ुद्दूस, ख़ालिक़, क़दीर रखना या कह कर पुकारना, हमारे ज़माने में येह बला बहुत आ़म है कि अ़ब्दुर्रह़मान को रह़मान, अ़ब्दुल ख़ालिक़ को ख़ालिक़ और अ़ब्दुल क़दीर को क़दीर वग़ैरा कह कर पुकारते हैं येह ह़राम है, इस से बचना लाज़िम है।

وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿۱۸۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हमारे बनाए हुओं में एक गुरौह वोह है कि ह़क़ बताएं और उस पर इन्साफ़ करें।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हमारी मख़्लूक़ में से एक ऐसा गुरौह है जो ह़क़ की हिदायत देता है और उसी के मुत़ाबिक़ अ़द्ल करते हैं।

﴿وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ : **और हमारी मख़्लूक़ में से एक गुरौह।**﴾ येह गुरौह अहले ह़क़ उ़लमा और हादियाने दीन का है।[2]

कोई ज़माना अहले ह़क़ से ख़ाली न होगा

इस आयत से येह मस्अला साबित हुवा कि हर ज़माने के अहले ह़क़ का इज्माअ़ हुज्जत है और येह भी साबित हुवा कि कोई ज़माना ह़क़ परस्तों और दीन के हादियों से ख़ाली न होगा जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है, ह़ज़रते सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, ताजदारे रिसालत

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۸۰، ۲/۱٦٤. 2 .....مدارک، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۸۱، ص۳۹۷.

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत का एक गुरौह ता क़ियामत दीने हक़ पर क़ाइम रहेगा उस को किसी की अ़दावत व मुख़ालफ़त ज़रर न पहुंचा सकेगी।[1]

وَالَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَیْثُ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं जल्द हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता अ़ज़ाब की त़रफ़ ले जाएंगे जहां से उन्हें ख़बर न होगी।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया तो अ़न्क़रीब हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता (अ़ज़ाब की त़रफ़) ले जाएंगे जहां से उन्हें ख़बर भी न होगी।

﴿وَالَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا﴾ **: और जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया।** इस आयत का मा'ना येह है कि जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया हम उन्हें इस त़रह़ हलाकत व अ़ज़ाब के क़रीब कर देंगे कि उन्हें पता भी न चल सकेगा क्यूं कि येह लोग जब कोई जुर्म या गुनाह करते हैं तो **अल्लाह** तआ़ला दुन्या में उन पर ने'मत और भलाई के दरवाज़े खोल देता है, दुन्यवी ने'मतों की फ़रावानी देख कर येह बहुत ख़ुश होते हैं और सरकशी व गुमराही, गुनाह और मआ़सी का बाज़ार मज़ीद गर्म कर देते हैं ह़त्ता कि जितना ने'मतों में इज़ाफ़ा होता है उतना ही गुनाह ज़ियादा करते हैं, फिर अचानक ऐ़न ग़फ़्लत की ह़ालत में **अल्लाह** तआ़ला उन्हें अपनी गिरिफ़्त में ले लेता है।[2]

गुनाहों के बा वुजूद ने'मतें मिलना कहीं अल्लाह तआ़ला की ढील न हो

इस आयत में उन मुसल्मानों के लिये भी बड़ी इ़ब्रत है जो दिन रात गुनाहों में मसरूफ़ रहने के बा वुजूद ऐ़शो फ़रावानी की ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं और आए दिन उन की ऐ़शो इ़शरत और मालो दौलत में इज़ाफ़ा होता चला जा रहा है, उन्हें भी इस बात से डर जाना चाहिये कि कहीं येह **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से उन के लिये ढील न हो और ऐ़न ग़फ़्लत की ह़ालत **अल्लाह** तआ़ला उन की गिरिफ़्त न फ़रमा ले। इर्शादे बारी तआ़ला है :

1 .....مسلم، كتاب الامارة، باب قوله صلى الله عليه وسلم: لا تزال طائفة من امتي... الخ، ص ١٠٦١، الحديث: ١٧٠(١٩٢٠).

2 .....تفسير كبير، الاعراف، تحت الآية: ١٨٢، ٥/٤١٨.

www.dawateislami.net

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍؕ حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوْا بِمَاۤ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ(1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर जब उन्हों ने उन नसीहतों को भुला दिया जो उन्हें की गई थीं तो हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये यहां तक कि जब वोह उस पर ख़ुश हो गए जो उन्हें दी गई तो हम ने अचानक उन्हें पकड़ लिया पस अब वोह मायूस हैं।

हज़रते उक़्बा बिन आमिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब तुम येह देखो कि **अल्लाह** तआ़ला बन्दों को उन के गुनाहों के बा वुजूद उन के सुवालों के मुताबिक़ अ़ता फ़रमा रहा है तो येह उन के लिये सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से इस्तिद्राज और ढील है।"(2)

हज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में जब किस्रा के ख़ज़ाने लाए गए तो उस वक़्त उन्हों ने दुआ़ की : ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, मैं इस बात से तेरी पनाह चाहता हूं कि मैं ढील दिये जाने वालों से होउं क्यूं कि मैं ने तेरा येह इर्शाद सुना है :

سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अ़न्क़रीब हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता (अ़ज़ाब की त़रफ़) ले जाएंगे जहां से उन्हें ख़बर भी न होगी।(3)

وَاُمْلِیْ لَهُمْؕ اِنَّ كَیْدِیْ مَتِیْنٌ ﴿۱۸۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं उन्हें ढील दूंगा बेशक मेरी ख़ुफ़्या तदबीर बहुत पक्की है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मैं उन्हें ढील दूंगा बेशक मेरी ख़ुफ़्या तदबीर बहुत मज़बूत़ है।

﴿وَاُمْلِیْ لَهُمْ﴾ **: और मैं उन्हें ढील दूंगा।** या'नी मैं उन की उ़म्र लम्बी कर दूंगा ताकि येह कुफ़्र और गुनाहों में मज़ीद आगे बढ़ जाएं और गुनाहों की वज्ह से उन पर जल्दी अ़ज़ाब नाज़िल नहीं करूंगा ताकि उन की तौबा और रुजूअ़ की कोई सूरत न रहे, बेशक मेरी ख़ुफ़्या तदबीर बहुत

1 .....انعام: ٤٤.

2 .....مسند امام احمد، مسند الشامیین، حدیث عقبة بن عامر الجهنی، ١٢٢/٦، الحدیث: ١٧٣١٣.

3 .....سنن الکبری للبیهقی، کتاب قسم الفیء والغنیمة، باب الاختیار فی التعجیل بقسمة مال الفیء اذا اجتمع، ٥٨١/٦، الحدیث: ١٣٠٣٣.

www.dawateislami.net

मज़बूत और मेरी गिरिफ़्त सख़्त है।[1]

गुनाहों के बा वुजूद उ़म्र लम्बी हो तो इसे बेहतर न समझा जाए

याद रहे कि कुफ़्र और गुनाहों के बा वुजूद लम्बी उ़म्र मिलना, फ़ौरी अ़ज़ाब न होना और मसाइबो आलाम का न आना ऐसी चीज़ नहीं कि जिसे अपने ह़क़ में बेहतर समझा जाए बल्कि तौबा न करने की सूरत में येही मोहलत गुनाहों में इज़ाफ़े और तबाही व बरबादी का सबब बन जाती है, इर्शादे रब्बानी है :

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّمَا نُمْلِیْ لَهُمْ خَیْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ اِنَّمَا نُمْلِیْ لَهُمْ لِیَزْدَادُوْۤا اِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِیْنٌ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और काफ़िर हरगिज़ येह गुमान न रखें कि हम उन्हें जो मोहलत दे रहे हैं येह उन के लिये बेहतर है, हम तो सिर्फ़ इस लिये उन्हें मोहलत दे रहे हैं कि उन के गुनाह और ज़ियादा हो जाएं और उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।

ह़ज़रते अबू बक्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, लोगों में सब से बेहतर कौन है ? इर्शाद फ़रमाया : "जिस की उ़म्र लम्बी हो और अ़मल नेक हों।" उस ने अ़र्ज़ की : लोगों में सब से बदतर कौन है ? इर्शाद फ़रमाया : "जिस की उ़म्र लम्बी हो और अ़मल बुरे हों।"[3]

اَوَلَمْ یَتَفَكَّرُوْا ۗ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۱۸۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या सोचते नहीं कि उन के साहिब को जुनून से कुछ अ़लाक़ा नहीं वोह तो साफ़ डर सुनाने वाले हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : क्या वोह ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते कि उन के साहिब के साथ जुनून का कोई तअ़ल्लुक़ नहीं, वोह तो साफ़ डर सुनाने वाले हैं।

1 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۸۳، ۵/۴۱۸، روح البیان، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۸۳، ۳/۲۸۸، ملتقطاً.

2 .....آل عمران:۱۷۸.

3 .....ترمذی، کتاب الفتن، ۲۲-باب منہ، ۴/۱۴۸، الحدیث: ۲۳۳۷.

www.dawateislami.net

﴿مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ﴾ **: उन के साहिब के साथ जुनून का कोई तअ़ल्लुक़ नहीं ।** ﴾ कुफ़्फ़ारे मक्का में से बा'ज़ जाहिल क़िस्म के लोग सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ जुनून की निस्बत करते थे, इस की एक वज्ह येह थी कि सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अफ़्आ़ल कुफ़्फ़ार के अफ़्आ़ल से जुदा थे क्यूं कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुन्या और इस की लज़्ज़तों से मुंह फेर कर आख़िरत की त़रफ़ मुतवज्जेह थे । **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ दा'वत देने और उस का ख़ौफ़ दिलाने में शबो रोज़ मश्ग़ूल थे, यूं नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अ़मल उन के त़रीक़े के मुख़ालिफ़ हुवा तो उन्हों ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मजनून समझा । ह़ज़रते ह़सन बसरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रात के वक़्त कोहे सफ़ा पर चढ़ कर क़बीले क़बीले को पुकारते हुए फ़रमाते : ऐ बनी फ़ुलां ! ऐ बनी फ़ुलां ! **अल्लाह** तआ़ला की पकड़ और उस के अ़ज़ाब से डराते तो कुफ़्फ़ार में से कोई कहता कि तुम्हारे साहिब मजनून हैं, रात से ले कर सुब्ह़ तक चिल्लाते रहते हैं इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मा'मूलात में उन्हें ग़ौरो तफ़क्कुर करने की दा'वत दी ताकि उन्हें मा'लूम हो जाए कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी जुनून की वज्ह से नहीं बल्कि उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से डराने के लिये पुकारते हैं । **दूसरी वज्ह येह थी** कि वह़ी नाज़िल होते वक़्त रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अ़जीब ह़ालत त़ारी होती, चेहरा मुतग़य्यर हो जाता, रंग पीला पड़ जाता और यूं मह़सूस होता था जैसे आप पर ग़शी त़ारी हो । येह देख कर जाहिल लोग आप की त़रफ़ जुनून की निस्बत करते । **अल्लाह** तआ़ला ने उन जाहिलों का रद करते हुए इस आयत में फ़रमाया कि मेरे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर किसी क़िस्म का जुनून नहीं येह तो उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाते हैं और अपने फ़सीह़ अल्फ़ाज़ के साथ क़त़्ई दलाइल पेश करते हैं, इन की फ़साह़त का मुक़ाबला करने से पूरी दुन्याए अ़रब आ़जिज़ आ चुकी है । मेरे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ बहुत उ़म्दा और मुआ़शरत बड़ी पाकीज़ा है, इन की हर आ़दतो ख़स्लत इन्तिहाई नेक है हमेशा अच्छे काम करते हैं और इसी वज्ह से तमाम अ़क़्ल मन्दों के मुक़्तदा व पेश्वा हैं और येह बिल्कुल बदीही बात है कि जो इन्सान उ़म्दा और पाकीज़ा शख़्सिय्यत का ह़ामिल हो उसे मजनून क़रार देना किसी त़रह़ भी दुरुस्त नहीं ।[1]

(1) .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۸٤، ۲/۱٦٥، تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۸٤، ٥/٤۲۰.

www.dawateislami.net

اَوَلَمْ یَنْظُرُوْا فِیْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَیْءٍ ۙ۬ وَّ اَنْ عَسٰۤى اَنْ یَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَیِّ حَدِیْثٍۭ بَعْدَهٗ یُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۸۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या उन्हों ने निगाह न की आस्मानों और ज़मीन की सल्त़नत में और जो जो चीज़ **अल्लाह** ने बनाई और येह कि शायद उन का वा'दा नज़्दीक आ गया हो तो इस के बा'द और कौन सी बात पर यक़ीन लाएंगे ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या उन्हों ने आस्मानों और ज़मीन की सल्त़नत और जो जो चीज़ **अल्लाह** ने पैदा की है उस में ग़ौर नहीं किया ? और इस बात में कि शायद उन की मुद्दत नज़्दीक आ गई हो तो इस (क़ुरआन) के बा'द और कौन सी बात पर ईमान लाएंगे ?

﴿اَوَلَمْ یَنْظُرُوْا﴾ **: क्या उन्हों ने ग़ौर नहीं किया ?** इस आयत का ख़ुलासा येह है कि क्या उन कुफ़्फ़ार ने आस्मानों और ज़मीन की सल्त़नत और जो जो चीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पैदा की है उस में ग़ौर नहीं किया ताकि वोह उन के ज़रीए **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरतो वह़दानिय्यत पर इस्तिद्लाल करते क्यूं कि इन सब में **अल्लाह** तआ़ला की वह़दानिय्यत और ह़िक्मतो क़ुदरत के कमाल की बे शुमार रोशन दलीलें मौजूद हैं और क्या उन्हों ने इस बात में ग़ौर नहीं किया कि शायद उन की मौत की मुद्दत नज़्दीक आ गई हो और वोह कुफ़्र की ह़ालत में मरने के बा'द हमेशा के लिये जहन्नमी हो जाएं ? ऐसे ह़ाल में अ़क़्ल मन्द पर लाज़िम है कि वोह सोचे, समझे और दलाइल पर नज़र करे और **अल्लाह** तआ़ला की वह़दानिय्यत, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत और क़ुरआने अ़ज़ीम के किताबे इलाही होने पर ईमान लाए क्यूं कि क़ुरआने पाक के बा'द और कोई किताब और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द और कोई रसूल आने वाला नहीं जिस का इन्तिज़ार हो कि क़ुरआने मजीद **अल्लाह** तआ़ला की आख़िरी किताब और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आख़िरी नबी हैं, अगर इन पर ईमान नहीं लाया तो फिर किस पर ईमान लाएगा ।

مَنْ یُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِیَ لَهٗ ؕ وَ یَذَرُهُمْ فِیْ طُغْیَانِهِمْ یَعْمَهُوْنَ ﴿۱۸۶﴾

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जिसे **अल्लाह** गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं और उन्हें छोड़ता है कि अपनी सरकशी में भटका करें।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जिसे **अल्लाह** गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं और वोह उन्हें छोड़ता है कि अपनी सरकशी में भटक्ते रहें।

﴿مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ﴾ : **जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं।** इस आयत का येह मा'ना नहीं है कि कुफ़्फ़ार को **अल्लाह** तआ़ला ने गुमराह किया है क्यूं कि अगर येह मा'ना हो तो कुफ़्फ़ार क़ियामत के दिन हुज्जत पेश करेंगे कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने हमें गुमराह कर दिया था तो इस में हमारा क्या क़ुसूर है ? किस क़ानून की बिना पर हमें हमारी गुमराही की सज़ा दी जा रही है ? बल्कि इस आयत का मा'ना येह है कि जब मुसल्सल कुफ़्रिय्या अ़क़ाइद पर जमे रहने की वज्ह से कुफ़्फ़ार के दिलों में गुमराही रासिख़ हो गई और वोह अपनी सरकशी में ह़द से बढ़ गए ह़त्ता कि उन्हों ने अपने इख़्तियार से उस चीज़ को ज़ाएअ़ कर दिया जो उन्हें हिदायत और ईमान की दा'वत देती तो फिर उन के दिलो दिमाग़ से दा'वते ह़क़ क़बूल करने की इस्ति'दाद जाती रही और वोह इस त़रह़ हो गए गोया कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें गुमराही पर पैदा किया है।

गुनाह पर जल्दी पकड़ न होना अ़ज़ाब है

इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला का किसी बन्दे को छोड़े रखना और उस की गिरिफ़्त न करना अ़ज़ाब है या'नी यूं कि बन्दा कुफ़्रो शिर्क और गुनाह करता रहे लेकिन कोई पकड़ न हो जब कि इस के बर अ़क्स बन्दे की मा'मूली बात पर गिरिफ़्त हो जाना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत है। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब **अल्लाह** तआ़ला किसी बन्दे से भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे जल्द ही दुन्या में सज़ा देता है और अगर किसी बन्दे से बुराई का इरादा करता है तो गुनाह के सबब उस का बदला रोक रखता है यहां तक कि क़ियामत के दिन उसे पूरा बदला देगा।"[1]

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ
لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَاۤ اِلَّا هُوَ ؕ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ لَا تَاْتِيْكُمْ
اِلَّا بَغْتَةً ؕ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ

وقف لازم

1 .....ترمذی، کتاب الزهد، باب ما جاء فی الصبر علی البلاء، ۱۷۸/٤، الحدیث: ۲٤۰٤.

www.dawateislami.net

اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम से क़ियामत को पूछते हैं कि वोह कब को ठहरी है तुम फ़रमाओ उस का इल्म तो मेरे रब के पास है उसे वोही उस के वक़्त पर ज़ाहिर करेगा भारी पड़ रही है आस्मानों और ज़मीन में तुम पर न आएगी मगर अचानक तुम से ऐसा पूछते हैं गोया तुम ने उसे ख़ूब तह़क़ीक़ कर रखा है तुम फ़रमाओ उस का इल्म तो **अल्लाह** ही के पास है लेकिन बहुत लोग जानते नहीं ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : आप से क़ियामत के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करते हैं कि उस के क़ाइम होने का वक़्त कब है ? तुम फ़रमाओ : उस का इल्म तो मेरे रब के पास है, उसे वोही उस के वक़्त पर ज़ाहिर करेगा, वोह आस्मानों और ज़मीन में भारी पड़ रही है, तुम पर वोह अचानक ही आ जाएगी । आप से ऐसा पूछते हैं गोया आप उस की ख़ूब तह़क़ीक़ कर चुके हैं, तुम फ़रमाओ : उस का इल्म तो **अल्लाह** ही के पास है, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं ।

﴿يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ﴾ **: आप से क़ियामत के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करते हैं ।﴾ शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि यहूदियों ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कहा था कि अगर आप नबी हैं तो हमें बताइये कि क़ियामत कब क़ाइम होगी क्यूं कि हमें उस का वक़्त मा'लूम है ।[1] इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई ।

﴿قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّیْ﴾ **: तुम फ़रमाओ : उस का इल्म तो मेरे रब के पास है ।﴾** इस आयत में बता दिया गया कि क़ियामत के मुअ़य्यन वक़्त की ख़बर देना रसूल की कोई ज़िम्मेदारी नहीं क्यूं कि येह इल्मे शरीअ़त नहीं जिस की इशाअ़त की जाए बल्कि क़ियामत का इल्म **अल्लाह** तआ़ला के असरार में से है जिस का छुपाना ज़रूरी है, लिहाज़ा अगर इस सर बस्ता राज़ को हर त़रह़ से ज़ाहिर कर दिया जाए तो फिर क़ियामत का अचानक आना बाक़ी न रहेगा ह़ालां कि इसी आयत में तसरीह़ है कि "لَا تَاْتِیْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً" तुम पर वोह अचानक ही आ जाएगी अ़वाम से क़ियामत का इल्म मख़्फ़ी रखने की वज्ह से मुतअ़ल्लिक़ उ़लमा फ़रमाते हैं : बन्दों से क़ियामत का इल्म और इस के वुक़ूअ़ का वक़्त मख़्फ़ी रखने का सबब येह है कि लोग क़ियामत से ख़ौफ़ज़दा और डरते रहें क्यूं कि जब उन्हें मा'लूम नहीं होगा कि क़ियामत किस वक़्त आएगी तो वोह इस से बहुत ज़ियादा डरेंगे और हर वक़्त गुनाहों से बचने की कोशिश करेंगे और

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۸۷، ۲/۱۶۵.

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला की इ़बादत में कोशां रहेंगे ताकि कहीं ऐसा न हो कि वोह गुनाहों में मश्ग़ूल हों और क़ियामत आ जाए ।[1]

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ियामत का इ़ल्म अ़ता किया गया है

सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बड़ी तफ़्सील के साथ क़ियामत से पहले और उस के क़रीब तरीन अवक़ात के बारे में तफ़्सीलात बयान फ़रमाई हैं जो इस बात की अ़लामत हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ियामत का इ़ल्म था । उन में से 8 अहादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)..... ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत उस वक़्त तक क़ाइम न होगी ह़त्ता कि ज़माना जल्द जल्द गुज़रने लगेगा । साल एक माह की त़रह़ गुज़रेगा । महीना हफ़्ते की त़रह़ गुज़रेगा । हफ़्ता एक दिन की त़रह़, एक दिन एक घन्टे की त़रह़ और एक घन्टा आग की चिंगारी की त़रह़ गुज़र जाएगा ।"[2]

(2)..... ह़ज़रते सलामह बिन्ते हुर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से रिवायत है, हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत की अ़लामतों में से येह है कि अहले मस्जिद इमामत करने के लिये एक दूसरे से कहेंगे और उन्हें नमाज़ पढ़ने के लिये कोई इमाम न मिलेगा ।"[3]

(3)..... ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत की अ़लामतों में से येह है कि इ़ल्म उठाया जाएगा और जह्ल का ज़ुहूर होगा, ज़िना आ़म होगा और शराब पी जाएगी, मर्द कम हो जाएंगे और औ़रतें ज़ियादा होंगी ह़त्ता कि पचास औ़रतों का कफ़ील एक मर्द होगा ।"[4]

(4)..... ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब मेरी उम्मत पन्दरह कामों को करेगी तो उस पर मसाइब का आना ह़लाल हो जाएगा ।" अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह !** वोह क्या काम हैं ? इर्शाद फ़रमाया : "जब माले ग़नीमत को ज़ाती दौलत बना लिया जाएगा, अमानत को माले ग़नीमत बना लिया जाएगा, ज़कात को जुर्माना समझ लिया जाएगा, जब लोग अपनी बीवी की इत़ाअ़त करेंगे और अपनी मां की ना फ़रमानी करेंगे, जब दोस्त के साथ नेकी करेंगे और बाप के साथ बुराई करेंगे, जब मस्जिदों में आवाज़ें बुलन्द की जाएंगी, ज़लील तरीन शख़्स को क़ौम का सरदार बना दिया

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ۱۸۷، ۲/۱۶۶.
2 .....ترمذی، کتاب الفتن، باب ما جاء فی تقارب الزمن وقصر الامل، ۴/۱۴۸، الحدیث: ۲۳۳۹.
3 .....ابو داؤد، کتاب الصلاۃ، باب فی کراھیۃ التدافع عن الامامۃ، ۱/۲۳۹، الحدیث: ۵۸۱.
4 .....بخاری، کتاب النکاح، باب یقلّ الرجال ویکثر النساء، ۳/۴۷۲، الحدیث: ۵۲۳۱.

www.dawateislami.net

जाएगा, जब किसी शख़्स के शर के डर से उस की इ़ज़्ज़त की जाएगी, शराब पी जाएगी, रेशम पहना जाएगा, गाने वालियां और साज़ रखे जाएंगे और इस उम्मत के आख़िरी लोग पहलों को बुरा कहेंगे। उस वक़्त तुम सुर्ख़ आंधियों, ज़मीन के धंसने और मस्ख़ का इन्तिज़ार करना।''[1]

(5)..... ह़ज़रते हुज़ैफ़ा बिन उसैद ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़ियामत हरगिज़ उस वक़्त तक क़ाइम न होगी जब तक कि तुम उस से पहले दस निशानियां न देख लो।'' फिर आप ने धूएं, दज्जाल, दाब्बतुल अर्द़, सूरज के मग़रिब से तुलूअ़ होने, ह़ज़रते ईसा बिन मरयम के नुज़ूल, याजूज माजूज का और तीन मरतबा ज़मीन धंसने का ज़िक्र फ़रमाया, एक मरतबा मशरिक़ में, एक मरतबा मग़रिब में, एक मरतबा जज़ीरए अ़रब में और सब के आख़िर में एक आग ज़ाहिर होगी जो लोगों को मह़शर की त़रफ़ ले जाएगी।[2]

(6)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मन्क़ूल एक त़वील रिवायत के आख़िर में है कि क़ियामत यौमे आ़शूरा या'नी मुह़र्रम के महीने की दस तारीख़ को होगी।[3]

(7)..... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''सब से बेहतर दिन जिस में सूरज तुलूअ़ होता है वोह जुमुआ़ का है, इसी दिन ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पैदा किये गए, इसी दिन जन्नत में दाख़िल किये गए और इसी दिन जन्नत से बाहर लाए गए और क़ियामत भी जुमुआ़ के दिन क़ाइम होगी।''[4]

(8)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला ने जुमुआ़ की आख़िरी साअ़त में ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को पैदा किया और इसी साअ़त में क़ियामत क़ाइम होगी।[5]

हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ियामत की इस क़दर तफ़्सीली अ़लामात बयान फ़रमाई हैं कि दीगर निशानियों के साथ साथ क़ियामत का महीना, दिन, तारीख़ और वोह घड़ी भी बता दी कि जिस में क़ियामत वाक़ेअ़ होगी अलबत्ता आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह नहीं बताया कि किस सिन में क़ियामत वाक़ेअ़ होगी। इस की वज्ह येह है कि अगर सिन भी बता देते तो हमें मा'लूम हो जाता कि क़ियामत आने में अब कितने

1 .....جامع الاصول، حرف القاف، الكتاب التاسع، الباب الاول، الفصل الحادى عشر، ۱۰/۳۸٤، الحديث: ۷۹۲۵.
2 .....مسلم، كتاب الفتن واشراط الساعة، باب فى الآيات التى تكون قبل الساعة، ص ۱۵۵۱، الحديث: ۳۹ (۲۹۰۱).
3 .....فضائل الاوقات للبيهقى، باب تخصيص يوم عاشوراء بالذكر، ص ۱۱۹، الحديث: ۲۸۲.
4 .....مسلم، كتاب الجمعة، باب فضل يوم الجمعة، ص ٤۲۵، الحديث: ۱۸ (۸۵٤).
5 .....كتاب الاسماء والصفات للبيهقى، باب بدء الخلق، ۲/۲۵۰، رقم: ۸۱۱.

www.dawateislami.net

साल, कितने दिन और कितनी घड़ियां बाक़ी रह गई हैं यूं क़ियामत के अचानक आने का जो ज़िक्र क़ुरआने पाक में है वोह साबित न होता लिहाज़ा साल न बताना क़ुरआने पाक के सिद्क़ को क़ाइम रखने के लिये और इस के इलावा बहुत कुछ बता देना अपना इल्म ज़ाहिर करने के लिये है।

قُلْ لَّاۤ اَمْلِكُ لِنَفْسِیْ نَفْعًا وَّ لَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَ لَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَیْبَ لَا سْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَیْرِ ۛۚ وَ مَا مَسَّنِیَ السُّوْٓءُ ؕ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِیْرٌ وَّ بَشِیْرٌ لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ۠ ﴿۱۸۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ मैं अपनी जान के भले बुरे का ख़ुद मुख़्तार नहीं मगर जो **अल्लाह** चाहे और अगर मैं ग़ैब जान लिया करता तो यूं होता कि मैं ने बहुत भलाई जम्अ़ कर ली और मुझे कोई बुराई न पहुंची मैं तो येही डर और ख़ुशी सुनाने वाला हूं उन्हें जो ईमान रखते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ, मैं अपनी जान के नफ़्अ़ और नुक़्सान का ख़ुद मालिक नहीं मगर जो **अल्लाह** चाहे अगर मैं ग़ैब जान लिया करता तो मैं बहुत सी भलाई जम्अ़ कर लेता और मुझे कोई बुराई न पहुंचती। मैं तो ईमान वालों को सिर्फ़ डर और ख़ुश ख़बरी सुनाने वाला हूं।

﴿قُلْ لَّاۤ اَمْلِكُ لِنَفْسِیْ نَفْعًا وَّ لَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ﴾ : **तुम फ़रमाओ, मैं अपनी जान के नफ़्अ़ और नुक़्सान का इतना ही मालिक हूं जितना अल्लाह चाहे।** ﴾ आयत का ख़ुलासए कलाम येह है कि इस आयत में हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कमाल दरजे की आ़जिज़ी, अ़ज़मते इलाही और अ़क़ीदए तौ़हीद के इज़्हार का हुक्म फ़रमाया गया कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास जो क़ुदरतो इख़्तियार और इल्म है ख़्वाह अपनी ज़ात के मुतअ़ल्लिक़ या दूसरों के बारे में, यूंही दुन्यावी चीज़ों के बारे में या क़ियामत, आख़िरत और जन्नत के बारे में वोह तमाम का तमाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से है लिहाज़ा हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अव्वलीनो आख़िरीन से अफ़्ज़ल होना, दुन्या व आख़िरत के उमूर में तसर्रुफ़ फ़रमाना, सहाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ को शिफ़ा अ़ता फ़रमाना बल्कि जन्नत अ़ता फ़रमाना, उंगलियों से पानी

www.dawateislami.net

के चश्मे जारी करना वग़ैरहा जितनी चीज़ें हैं सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के चाहने से हैं।

﴿وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ﴾ : **और अगर मैं ग़ैब जान लिया करता।** इस आयते मुबारका में इल्मे ग़ैब की नफ़ी की उ़लमाए किराम ने मुख़्तलिफ़ तौजीहात बयान की हैं, उन में से चार तौजीहात दर्जे ज़ैल हैं जिन्हें आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उ़लूम के बयान पर मुश्तमिल अपनी ला जवाब किताब ''اِنْبَاءُ الْحَیِّ اَنَّ كَلَامَهُ الْمَصُوْنَ تِبْيَانٌ لِكُلِّ شَیْءٍ'' (**अल्लाह** तआ़ला का कलाम क़ुरआने मजीद हर चीज़ का रोशन बयान है) में बयान फ़रमाया है।

(1)..... इस आयत में इल्मे अ़त़ाई की नफ़ी नहीं बल्कि इल्मे ज़ाती की नफ़ी है

इमाम क़ाज़ी इ़याज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه शिफ़ा शरीफ़ में फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात में से येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ग़ुयूब पर मुत्त़लअ़ फ़रमाया और आइन्दा होने वाले वाक़िआ़त से बा ख़बर किया। इस बाब में अह़ादीस का वोह बह्रे ज़ख़्ख़ार है कि कोई इस की गहराई जान ही नहीं सकता और न इस का पानी ख़त्म होता है। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात में से येह एक ऐसा मो'जिज़ा है जो यक़ीन और वुसूक़ से मा'लूम है और हम तक इस की ख़बरें मुतवातिर त़रीक़े से कसरत से पहुंची हैं और ग़ैब पर इत्तिलाअ़ होने पर इन अह़ादीस के मआ़नी व मत़ालिब आपस में मुत्तह़िद हैं।[1]

अ़ल्लामा शहाबुद्दीन अह़मद बिन मुह़म्मद ख़फ़ाजी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : येह वज़ाह़त उन क़ुरआनी आयात के मुनाफ़ी नहीं जिन में येह इर्शाद फ़रमाया गया है कि **अल्लाह** तआ़ला के इ़लावा और कोई ग़ैब नहीं जानता और इस आयते करीमा ''وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ'' में किसी वासित़े के बिग़ैर (या'नी इल्मे ज़ाती) की नफ़ी की गई है अलबत्ता **अल्लाह** तआ़ला के बताने से हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ग़ैब पर मुत्त़लअ़ होना साबित है और इस की दलील **अल्लाह** तआ़ला का येह फ़रमान है :

عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ[2]

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : ग़ैब का जानने वाला अपने ग़ैब पर किसी को मुकम्मल इत्तिलाअ़ नहीं देता। सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के।[3]

1 .....شفاء شريف، فصل ومن ذلك ما اطلع عليه من الغيوب وما يكون، ص۳۳۵-۳۳۶، الجزء الاول. 2 .....سورۂ جن۲۶، ۲۷.
3 .....نسيم الرياض، القسم الاول فی تعظيم العلی الاعظم... الخ، فصل فيما اطلع عليه من الغيوب وما يكون، ۴/۱۴۹.

www.dawateislami.net

(2)..... येह कलाम अदब व तवाज़ोअ़ के त़ौर पर है

अ़ल्लामा अ़ली बिन मुह़म्मद ख़ाज़िन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस आयत में इस बात का एह़तिमाल है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह कलाम तवाज़ोअ़ और अदब के त़ौर पर फ़रमाया हो और मत़लब येह है कि मैं ग़ैब नहीं जानता मगर येह कि **अल्लाह** तआ़ला ने जिस की मुझे इत्तिलाअ़ दी और जो मेरे लिये मुक़र्रर फ़रमाया मैं सिर्फ़ उसी को जानता हूं।[1]

(3)..... इस आयत में फ़िलह़ाल ग़ैब जानने की नफ़ी है मुस्तक़्बिल में न जानने पर दलील नहीं है

अ़ल्लामा अ़ली बिन मुह़म्मद ख़ाज़िन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस आयत में एक एह़तिमाल येह भी है कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ैब पर मुत्त़लअ़ होने से पहले येह कलाम फ़रमाया, फिर जब **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इ़ल्मे ग़ैब की इत्तिलाअ़ दी तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस की ख़बर दी जैसा कि **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया :

فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ [2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ग़ैब का जानने वाला अपने ग़ैब पर किसी को मुकम्मल इत्तिलाअ़ नहीं देता। सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के।[3]

(4)..... येह कलाम कुफ़्फ़ार के सुवाल के जवाब में सादिर हुवा

अ़ल्लामा अ़ली बिन मुह़म्मद ख़ाज़िन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस आयत में येह भी एह़तिमाल है कि येह कलाम कुफ़्फ़ार के सुवाल के जवाब में सादिर हुवा, फिर इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने ग़ैबी अश्या को हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ज़ाहिर किया और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की ख़बर दी ताकि येह नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मो'जिज़ा और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत सह़ीह़ होने पर दलील बन जाए।[4]

﴿لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ﴾ **: तो मैं बहुत सी भलाई जम्अ़ कर लेता।** ﴾ आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : भलाई जम्अ़ करना और बुराई न पहुंचना उसी के इख़्तियार में हो सकता है जो ज़ाती क़ुदरत रखे और ज़ाती क़ुदरत वोही रखेगा

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ١٨٨، ٢/١٦٧. 2 .....سورۂ جن٢٦، ٢٧.
3 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ١٨٨، ٢/١٦٧. 4 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ١٨٨، ٢/١٦٧.

www.dawateislami.net

जिस का इल्म भी ज़ाती हो क्यूं कि जिस की एक सिफ़त ज़ाती है उस के तमाम सिफ़ात ज़ाती तो मा'ना येह हुए कि अगर मुझे ग़ैब का इल्म ज़ाती होता तो क़ुदरत भी ज़ाती होती और मैं भलाई जम्अ़ कर लेता और बुराई न पहुंचने देता। भलाई से मुराद राह़तें और काम्याबियां और दुश्मनों पर ग़लबा है और बुराइयों से तंगी व तक्लीफ़ और दुश्मनों का ग़ालिब आना है। येह भी हो सकता है कि भलाई से मुराद सरकशों का मुत़ीअ़ और ना फ़रमानों का फ़रमां बरदार और काफ़िरों का मोमिन कर लेना हो और बुराई से बद बख़्त लोगों का बा वुजूद दा'वत के मह़रूम रह जाना तो ह़ासिले कलाम येह होगा कि अगर मैं नफ़्अ़ व ज़रर का ज़ाती इख़्तियार रखता तो ऐ मुनाफ़िक़ीन व काफ़िरीन ! तुम्हीं सब को मोमिन कर डालता और तुम्हारी कुफ़्री ह़ालत देखने की तक्लीफ़ मुझे न पहुंचती।[1]

هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِیَسْكُنَ
اِلَیْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِیْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّاۤ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا
اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَىٕنْ اٰتَیْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِیْنَ ﴿۱۸۹﴾ فَلَمَّاۤ اٰتٰىهُمَا
صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِیْمَاۤ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ﴿۱۹۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोही है जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी में से उस का जोड़ा बनाया कि उस से चैन पाए फिर जब मर्द उस पर छाया उसे एक हलका सा पेट रह गया तो उसे लिये फिरा कि फिर जब बोझल पड़ी दोनों ने अपने रब **अल्लाह** से दुआ की ज़रूर अगर तू हमें जैसा चाहिये बच्चा देगा तो बेशक हम शुक्र गुज़ार होंगे। फिर जब उस ने उन्हें जैसा चाहिये बच्चा अ़त़ा फ़रमाया उन्हों ने उस की अ़त़ा में उस के साझी ठहराए तो **अल्लाह** को बरतरी है उन के शिर्क से।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोही है जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी में से उस की बीवी बनाई ताकि उस से सुकून ह़ासिल करे फिर जब मर्द उस औ़रत पर छाया तो उसे एक हलके से बोझ का ह़म्ल हो गया तो वोह उसी को ले कर चलती रही फिर जब ह़म्ल का वज़्न बढ़ गया तो

1 ..... ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, अल आ'राफ़, तह़्तल आयह : 188, स. 330

www.dawateislami.net

दोनों अपने रब से दुआ करने लगे : अगर तू हमें सह़ीह़ सालिम बच्चा अ़त़ा फ़रमा दे तो हम यक़ीनन शुक्र गुज़ार होंगे। फिर जब उस ने उन्हें सह़ीह़ सालिम बच्चा अ़त़ा फ़रमा दिया तो उन्हों ने उस की अ़त़ा में शरीक ठहरा दिये तो **अल्लाह** उन के शिर्क से बुलन्दो बाला है।

﴿هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ﴾ **: वोही है जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया।** इस आयत और इस के बा'द वाली आयत की मुफ़स्सिरीन ने मुख़्तलिफ़ तफ़ासीर बयान की हैं, उन में से दो तफ़ासीर दर्जे ज़ैल हैं :

(1)..... मुश्रिकीन येह कहा करते थे कि ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام (مَعَاذَاللہ) बुतों की इ़बादत करते थे और भलाई त़लब करने और बुराई दूर होने के सिल्सिले में बुतों की त़रफ़ रुजूअ़ करते थे, तो इन आयात में **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का वाक़िआ़ बयान फ़रमाया कि उन्हों ने तो **अल्लाह** तआ़ला से इस त़रह़ दुआ़ की थी कि ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, अगर तू हमें सह़ीह़ सालिम और तन्दुरुस्त बच्चा अ़त़ा फ़रमाएगा तो हम ज़रूर तेरी इस ने'मत का शुक्र अदा करेंगे और जब **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें सह़ीह़ सालिम बच्चा अ़त़ा कर दिया तो क्या उन दोनों ने **अल्लाह** तआ़ला की अ़त़ा में उस का शरीक ठहराया ? **अल्लाह** तआ़ला उन मुश्रिकों के शिर्क और ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ मन्सूब उन की बात से बरी है।

(2)..... इन आयात में **अल्लाह** तआ़ला ने जो वाक़िआ़ बयान फ़रमाया है येह बत़ौरे मिसाल है और इस में मुश्रिकों की जहालत और उन के शिर्क का ह़ाल बयान किया गया है। इस सूरत में आयत का ख़ुलासा येह है कि **अल्लाह** तआ़ला वोही है जिस ने तुम में से हर एक को एक जान से पैदा किया या'नी मां और बाप से पैदा किया और येह दोनों इन्सान होने में यक्सां हैं, फिर जब शौहर और बीवी में मिलाप हुवा और ह़म्ल ज़ाहिर हुवा तो उन दोनों ने अपने रब से दुआ़ की, कि अगर तू हमें सह़ीह़ और तन्दुरुस्त बच्चा अ़त़ा करेगा तो हम ज़रूर तेरी ने'मतों का शुक्र अदा करने वालों में से होंगे, फिर जब **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें वैसा ही बच्चा इ़नायत फ़रमाया तो उन का ह़ाल येह हुवा कि वोह **अल्लाह** तआ़ला की अ़त़ा में उस के शरीक ठहराने लग गए क्यूं कि कभी तो वोह उस बच्चे को इन्सानी फ़ित़रत के तक़ाज़े की त़रफ़ मन्सूब करते हैं जैसे दह़रियों का ह़ाल है, कभी सितारों की त़रफ़ निस्बत करते हैं जैसा कि सितारा परस्तों का त़रीक़ा है और कभी बुतों की त़रफ़ मन्सूब करते हैं जैसा कि बुत परस्तों का दस्तूर है। **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया कि "वोह उन के इस शिर्क से बरतर है।"[1]

اَیُشْرِكُوْنَ مَا لَا یَخْلُقُ شَیْــٴًـا وَّهُمْ یُخْلَقُوْنَ ﴿۱۹۱﴾

1 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۸۹، ۵/۴۲۸.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या उसे शरीक करते हैं जो कुछ न बनाए और वोह ख़ुद बनाए हुए हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या वोह उसे (**अल्लाह** का) शरीक बनाते हैं जो कोई चीज़ नहीं बना सकता और ख़ुद उन्हें बनाया जाता है।

﴿اَیُشْرِكُوْنَ مَا لَا یَخْلُقُ﴾ **: क्या वोह उसे (अल्लाह का) शरीक बनाते हैं जो कोई चीज़ नहीं बना सकता।**﴾ इस आयत और अगली चन्द आयात में बुतों के मा'बूद होने की नफ़ी पर कई दलीलें क़ाइम फ़रमाई गई हैं। चुनान्चे इस आयत में फ़रमाया गया कि क्या मुश्रिकीन उसे **अल्लाह** तआ़ला का शरीक बनाते हैं जो किसी चीज़ को पैदा करने की अस्लन क़ुदरत नहीं रखता बल्कि वोह ख़ुद भी अपने बनाए जाने में किसी का मोहताज है ह़ालां कि मा'बूद तो सिर्फ़ वोह हो सकता है जिस ने अपने इबादत गुज़ार को पैदा किया हो।[1]

وَلَا یَسْتَطِیْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَاۤ اَنْفُسَهُمْ یَنْصُرُوْنَ ﴿۱۹۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और न वोह उन को कोई मदद पहुंचा सकें और न अपनी जानों की मदद करें।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और न वोह उन की कोई मदद करने की ताक़त रखते हैं और न अपनी जानों की मदद कर सकते हैं।

﴿وَلَا یَسْتَطِیْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا﴾ **: और न वोह उन की कोई मदद करने की ताक़त रखते हैं।**﴾ इस आयत में बुतों की बे क़द्री और शिर्क के बुत़लान का बयान और मुश्रिकीन के कमाले जहल का इज़्हार है और बताया गया है कि इबादत का मुस्तह़िक़ वोही हो सकता है जो इबादत करने वाले को नफ़्अ़ पहुंचाने और उस का ज़रर दूर करने की क़ुदरत रखता हो, मुश्रिकीन जिन बुतों को पूजते हैं उन की बे क़ुदरती इस दरजे की है कि वोह किसी चीज़ के बनाने वाले नहीं, किसी चीज़ के बनाने वाले तो क्या होते ख़ुद अपनी ज़ात में दूसरे से बे नियाज़ नहीं। ख़ुद मख़्लूक़ हैं और बनाने वाले के मोहताज हैं। इस से बढ़ कर बे इख़्तियारी येह है कि वोह किसी की मदद नहीं कर सकते और किसी की क्या मदद करेंगे ख़ुद उन्हें कोई ज़रर पहुंचे तो उसे दूर नहीं कर सकते। कोई उन्हें तोड़ दे, गिरा दे अल ग़रज़ जो चाहे करे वोह उस से अपनी ह़िफ़ाज़त नहीं कर सकते लिहाज़ा ऐसे मजबूर व बे इख़्तियार को पूजना इन्तिहा दरजे का जहल है।[2]

1 .....روح البیان، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۹۱، ۳/۲۹۵. 2 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۹۲، ۵/۴۳۰-۴۳۱.

www.dawateislami.net

وَ اِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ﴿۱۹۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम उन्हें राह की त़रफ़ बुलाओ तो तुम्हारे पीछे न आएं तुम पर एक सा है चाहे उन्हें पुकारो या चुप रहो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर तुम उन्हें रहनुमाई करने के लिये बुलाओ तो तुम्हारे पीछे नहीं आएंगे। तुम पर बराबर है कि तुम उन्हें पुकारो या तुम ख़ामोश रहो।

﴿وَ اِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى﴾ **: और अगर तुम उन्हें रहनुमाई करने के लिये बुलाओ ।﴾** या'नी ऐ मुश्रिको ! अगर तुम इन बुतों को इस लिये बुलाओ कि वोह तुम्हारी उस चीज़ की त़रफ़ रहनुमाई कर दें जिस से तुम अपने मक़ासिद को ह़ासिल कर लो तो येह तुम्हारी मुराद की त़रफ़ नहीं आएंगे और ऐ मुश्रिको ! तुम इन बुतों को पुकारो या ख़ामोश रहो तुम्हारे लिये दोनों सूरतें बराबर हैं क्यूं कि न तो उन्हें पुकारने की सूरत में तुम्हें कोई फ़ाएदा ह़ासिल होगा और न ही ख़ामोश रहने की सूरत कुछ फ़ाएदा मिलेगा।[1]

اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۹۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जिन को तुम **अल्लाह** के सिवा पूजते हो तुम्हारी त़रह़ बन्दे हैं तो उन्हें पुकारो फिर वोह तुम्हें जवाब दें अगर तुम सच्चे हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह जिन्हें तुम **अल्लाह** के सिवा पूजते हो वोह तुम्हारी त़रह़ बन्दे हैं तो तुम उन्हें पुकारो फिर अगर तुम सच्चे हो तो उन्हें चाहिये कि वोह तुम्हें जवाब दें।

﴿اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ﴾ **: बेशक वोह (बुत) जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो ।﴾** आयत में लफ़्ज़ "تَدْعُوْنَ" का मा'ना है "تَعْبُدُوْنَ" या'नी जिन की तुम इबादत करते हो। इस आयत का ख़ुलासा येह है कि ऐ काफ़िरो ! सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला की इबादत करने की बजाए

[1] .....روح البیان، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۹۳، ۳/۲۹۵.

www.dawateislami.net

जिन बुतों की तुम इबादत करते हो और तुम उन्हें अपना मा'बूद कहते हो येह भी इसी त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला के मम्लूक और मख़्लूक़ हैं जिस त़रह़ तुम हो और **अल्लाह** तआ़ला के मम्लूको मख़्लूक़ किसी त़रह़ पूजे जाने के क़ाबिल नहीं, इस के बा वुजूद भी अगर तुम उन्हें अपना मा'बूद कहते हो तो तुम नफ़्अ़ पहुंचाने और नुक़्सान दूर करने के सिल्सिले में उन्हें पुकारो, फिर अगर तुम अपने गुमान के मुत़ाबिक़ सच्चे हो कि येह उस चीज़ की क़ुदरत रखते हैं जिस से तुम आ़जिज़ हो तो उन बुतों को चाहिये कि वोह तुम्हें जवाब दें।[1]

मख़्लूक़ में से किसी को मा'बूद मान कर पुकारना शिर्क है वरना हरगिज़ शिर्क नहीं

यहां एक अहम बात याद रहे कि **अल्लाह** तआ़ला के इलावा और किसी की भी इबादत करना शिर्क है, इसी त़रह़ मख़्लूक़ में से किसी को मा'बूद मान कर उसे पुकारना या उस से ह़ाजतें और मदद त़लब करना भी शिर्क है अलबत्ता अगर कोई **अल्लाह** तआ़ला के इलावा किसी और को मा'बूद न मानता हो और वोह **अल्लाह** तआ़ला के नेक बन्दों को उस की अ़त़ा से मुश्किलात दूर करने वाला, ह़ाजतें पूरी करने वाला और मदद के वक़्त मदद करने वाला मानता हो और इसी अ़क़ीदे की बुन्याद पर वोह बारगाहे इलाही के मक़्बूल बन्दों से मुश्किलात की दूरी के लिये फ़रियाद करता हो, अपनी ह़ाजतें पूरी होने के लिये दुआ़एं मांगता हो या मुसीबत के वक़्त उन्हें मदद के लिये पुकारता हो तो उस का येह फ़रियाद करना, मांगना और पुकारना हरगिज़ शिर्क नहीं हो सकता। इस की वज्ह येह है कि जिन लोगों ने क़ुरआने पाक में ग़ौरो तफ़क्कुर किया है वोह अच्छी त़रह़ जानते हैं कि कुफ़्फ़ारो मुश्रिकीन का अपने बुतों से मुतअ़ल्लिक़ अ़क़ीदा येह था कि वोह बुतों को मा'बूद मानते और उन की इबादत करते थे, जैसा कि क़ुरआने पाक में है :

اِنَّهُمْ كَانُوْۤا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ۙ يَسْتَكْبِرُوْنَ ۙ۝۳۵ وَ يَقُوْلُوْنَ اَئِنَّا لَتَارِكُوْۤا اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ[2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक जब उन से कहा जाता था कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं तो वोह तकब्बुर करते थे। और कहते थे क्या हम एक दीवाने शाइ़र की वज्ह से अपने मा'बूदों को छोड़ दें।

और इसी अ़क़ीदे की बुन्याद पर कुफ़्फ़ार बुतों से अपनी ह़ाजतें त़लब करते थे, और आज भी किसी इन्सान या ग़ैर इन्सान, ज़िन्दा या मुर्दा को मा'बूद मान कर उस की इबादत

1 .....بیضاوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۹۴، ۳/۸۴، تفسیر قرطبی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۹۴، ۴/۲۴۴، الجزء السابع، روح البیان، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۹۴، ۳/۲۹۵، ملتقطاً. 2 .....الصافات ۳۵، ۳۶.

www.dawateislami.net

करना, उसे दूर या नज़्दीक से पुकारना शिर्क है लेकिन अगर कोई येह अ़क़ीदा न रखते हुए या'नी मा'बूद न मान कर किसी को पुकारे या निदा करे तो उस के अ़मल को मुश्रिकों जैसा अ़मल क़रार देते हुए उसे भी मुश्रिक क़रार दे देना सरासर जहालत नहीं तो और क्या है। जो पुकारना या निदा करना शिर्क है वोह हर ह़ाल में शिर्क है चाहे इन्सान हो या ग़ैर इन्सान से, ज़िन्दा से हो या फ़ौत शुदा से, दूर से हो या नज़्दीक से और जो निदा शिर्क नहीं वोह किसी भी ह़ाल में शिर्क नहीं। निदा या सुवाल के शिर्क होने का दारो मदार पुकारने वाले के अ़क़ीदे पर है अगर वोह मा'बूद और ख़ुदा मान कर पुकारता है तो येह शिर्क है अब चाहे दूर से पुकारे या नज़्दीक से, ज़िन्दा को पुकारे या फ़ौत शुदा को और अगर उस का येह अ़क़ीदा नहीं तो शिर्क हरगिज़ नहीं लिहाज़ा **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पुकारना हरगिज़ शिर्क नहीं क्यूं कि कोई भी कलिमा गो मुसल्मान आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मा'बूद नहीं समझता और न उन की इबादत करता है बल्कि हर नमाज़ में वोह कई बार येह ए'लान करता है कि ''اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ'' मैं गवाही देता हूं कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और रसूल हैं। यूंही **अल्लाह** तआ़ला के नेक बन्दों को पुकारने वाला, उन से सुवाल करने वाला, उन्हें मा'बूद समझ कर हरगिज़ नहीं पुकारता बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दा समझ कर और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से पुकार सुनने वाला जान कर पुकारता है लिहाज़ा उस का येह अ़मल भी हरगिज़ शिर्क नहीं।

اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ
يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ
كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿۱۹۵﴾ اِنَّ وَلِيِّۦَ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى
الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۹۶﴾ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَآ
اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿۱۹۷﴾ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَسْمَعُوْا ؕ وَتَرٰىهُمْ
يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿۱۹۸﴾

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या उन के पाउं हैं जिन से चलें या उन के हाथ हैं जिन से गिरिफ़्त करें या उन के आंखें हैं जिन से देखें या उन के कान हैं जिन से सुनें तुम फ़रमाओ कि अपने शरीकों को पुकारो और मुझ पर दाउं चलो और मुझे मोहलत न दो। बेशक मेरा वाली **अल्लाह** है जिस ने किताब उतारी और वोह नेकों को दोस्त रखता है। और जिन्हें उस के सिवा पूजते हो वोह तुम्हारी मदद नहीं कर सकते और न ख़ुद अपनी मदद करें। और अगर उन्हें राह की त़रफ़ बुलाओ तो न सुनें और तू उन्हें देखे कि वोह तेरी त़रफ़ देख रहे हैं और उन्हें कुछ भी नहीं सूझता।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या इन के पाउं हैं जिन से येह चलते हैं ? या इन के हाथ हैं जिन से येह पकड़ते हैं ? या इन की आंखें हैं जिन से येह देखते हैं ? या इन के कान हैं जिन से येह सुनते हैं ? तुम फ़रमा दो कि अपने शरीकों को बुला लो फिर मेरे ऊपर अपना दाउं चलाओ और मुझे मोहलत न दो। बेशक मेरा मददगार **अल्लाह** है जिस ने किताब उतारी और वोह सालिह़ीन की मदद करता है। और **अल्लाह** के सिवा जिन की तुम इ़बादत करते हो वोह तुम्हारी मदद करने की त़ाक़त नहीं रखते और न ही वोह अपनी मदद कर सकते हैं। और अगर तुम उन्हें रहनुमाई करने के लिये बुलाओ तो वोह न सुनेंगे और तुम उन्हें देखो (तो यूं लगेगा) कि वोह तुम्हारी त़रफ़ देख रहे हैं ह़ालां कि उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता।

﴿اَلَهُمْ اَرْجُلٌ﴾ **: क्या इन के पाउं हैं।** इस आयत का मा'ना येह है कि इन्सान की क़ुदरत का दारो मदार इन चार आ'ज़ा पर है, हाथ, पाउं, कान और आंख कि इन्सान तमाम उमूर में इन से मदद लेता है जब कि बुतों के येह आ'ज़ा नहीं हैं, लिहाज़ा इन्सान इन आ़जिज़ बुतों से अफ़्ज़ल हुवा क्यूं कि चलने, पकड़ने, देखने और सुनने की त़ाक़त रखने वाला उस से बेहतर है जो इन सलाह़िय्यतों से मह़रूम है, लिहाज़ा इन्सान हर ह़ाल में इन बुतों से अफ़्ज़ल है कि बुत पथ्थरों और दरख़्तों से बने हुए हैं, किसी को नफ़्अ़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते तो जब इन में वोह क़ुव्वतो त़ाक़त भी नहीं जो तुम में है फिर तुम इन की पूजा कैसे करते हो ? और अपने से कमतर को पूज कर क्यूं ज़लील होते हो।[1]

﴿قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ﴾ **: (ऐ मह़बूब !) तुम फ़रमा दो कि अपने शरीकों को बुला लो।** **शाने नुज़ूल :** रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब बुत परस्ती की मज़म्मत की और बुतों की आ़जिज़ी और बे इख़्तियारी का बयान फ़रमाया तो मुश्रिकीन ने धम्काया और कहा कि बुतों को बुरा कहने वाले तबाहो बरबाद हो जाते हैं और येह बुत उन्हें हलाक कर देते हैं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इस आयत और इस के बा'द वाली तीन आयात में फ़रमाया

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ١٩٥، ٢/١٦٩.

www.dawateislami.net

गया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप इन से फ़रमा दें कि अगर तुम बुतों में कुछ कुदरत समझते हो तो उन्हें पुकारो और मुझे नुक़्सान पहुंचाने में उन से मदद लो और तुम भी जो मक्रो फ़रेब कर सकते हो वोह मेरे मुक़ाबले में करो और इस में देर न करो, मुझे तुम्हारी और तुम्हारे मा'बूदों की कुछ भी परवाह नहीं और तुम सब मिल कर भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते क्यूं कि मेरी ह़िफ़ाज़त करने वाला मेरा मददगार वोह रब तआ़ला है जिस ने मुझ पर क़ुरआन नाज़िल कर के मुझे अ़ज़मत अ़ता की और वोह अपने नेक बन्दों को दोस्त रखता और उन की मदद फ़रमाता है और ऐ बुत परस्तो ! **अल्लाह** तआ़ला के सिवा जिन की तुम इ़बादत करते हो वोह किसी काम में तुम्हारी मदद करने की त़ाक़त नहीं रखते और न ही वोह अपनी मदद कर सकते हैं तो मैं फिर उन की किस त़रह़ परवाह करूं और वैसे भी येह तुम्हारी मदद क्या करेंगे क्यूं कि इन का अपना ह़ाल येह है कि अगर तुम इन्हें अपने मक़ासिद के ह़ुसूल की त़रफ़ रहनुमाई करने के लिये बुलाओ तो वोह तुम्हारी पुकार न सुनेंगे और तुम उन्हें देखो तो यूं लगेगा कि वोह तुम्हारी त़रफ़ देख रहे हैं ह़ालां कि उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता क्यूं कि वोह देखने से ही आ़जिज़ हैं ।[1]

अल्लाह तआ़ला के मक़्बूल बन्दों से मदद चाहना और उन्हें वसीला बनाना तौह़ीद के बर ख़िलाफ़ नहीं

अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस आयत (नम्बर 198) में बुतों का जो ह़ाल बयान हुवा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाए इ़ज़ाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم का ह़ाल उन के बर ख़िलाफ़ है अगर्चे येह भी **अल्लाह** तआ़ला की मख़्लूक़ हैं क्यूं कि इस त़ौर पर मक़्बूलाने बारगाहे इलाही से मदद चाहना, उन्हें वसीला बनाना और उन की त़रफ़ (किसी चीज़ की अ़त़ा वग़ैरा की) निस्बत करना कि येह **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरतों के मज़ाहर, उस के अन्वार की जल्वा गाहें, उस के कमालात के आईने और ज़ाहिरी व बात़िनी उमूर में उस की बारगाह में सिफ़ारिशी हैं, इन्तिहाई अहम काम है और येह हरगिज़ शिर्क नहीं बल्कि येह ऐन तौह़ीद है[2] ।[3]

﴿وَتَرٰىهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ﴾ : **और तुम उन्हें देखो (तो यूं लगेगा) कि वोह तुम्हारी त़रफ़ देख रहे हैं ।**

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ۱۹۵-۱۹۶، ۲/۱۶۹-۱۷۰، روح البيان، الاعراف، تحت الآية: ۱۹۵-۱۹۶، ۳/۲۹۶، ملتقطاً. 2 .....روح البيان، الاعراف، تحت الآية: ۱۹۸، ۳/۲۹۶.

3..... **अल्लाह** तआ़ला के मक़्बूल बन्दों से मदद मांगने के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिसाला "करामाते शेरे ख़ुदा" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) सफ़ह़ा 56 ता 95 का मुत़ालआ़ करना बहुत मुफ़ीद है ।

www.dawateislami.net

इस आयत की एक तफ़्सीर येह भी बयान की गई है कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप इन काफ़िरों को देखें कि येह अपनी आंखों से तो आप की त़रफ़ देख रहे हैं लेकिन इन्हें कुछ दिखाई नहीं दे रहा क्यूं कि येह निगाहे बसीरत से आप को नहीं देख रहे तो अगर्चे फ़िल वक़्त येह आप के सामने हैं लेकिन दर ह़क़ीक़त येह आप से ग़ाइब हैं अलबत्ता अगर येह मेरी वह़दानिय्यत का इक़्रार और आप की रिसालत की तस्दीक़ कर लेते हैं तो येह ह़क़ीक़ी त़ौर पर देखने वाले बन जाएंगे ।[1]

निगाहे बसीरत से देखना ही ह़क़ीक़ी त़ौर पर फ़ाएदे मन्द है

इस से मा'लूम हुवा कि सिर्फ़ ज़ाहिरी निगाहों से हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देख लेना ह़क़ीक़ी त़ौर पर फ़ाएदे मन्द नहीं बल्कि निगाहे बसीरत से देखना फ़ाएदे मन्द है और येही वज्ह है कि जब अबू जह्ल के बेटे ह़ज़रते इक्रमा ने निगाहे बसीरत से हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की तो सह़ाबिय्यत के आ'ला मन्सब पर फ़ाइज़ हो कर हमेशा के लिये जन्नत के ह़क़दार ठहरे और ख़ुद अबू जह्ल सिर्फ़ ज़ाहिरी निगाहों से देखता रहा जिस की वज्ह से उसे बद बख़्ती से नजात न मिली और हमेशा के लिये जहन्नम का ह़क़दार ठहरा ।

एक मरतबा सुल्त़ान मह़मूद ग़ज़्नवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه शैख़ अबुल ह़सन ख़रक़ानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले गए और कुछ देर उन के पास बैठ कर अ़र्ज़ की : या शैख़ ! आप ह़ज़रते अबू यज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बारे में क्या फ़रमाते हैं । ह़ज़रते अबुल ह़सन ख़रक़ानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : वोह ऐसे शख़्स हैं कि जिस ने उन की ज़ियारत की वोह हिदायत पा गया और उसे वाज़ेह़ त़ौर पर सआ़दत ह़ासिल हो गई । ह़ज़रते मह़मूद ग़ज़्नवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अ़र्ज़ की : या शैख़ ! येह किस त़रह़ हुवा कि अबू जह्ल ने हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा लेकिन इस के बा वुजूद उसे न कोई सआ़दत मिली और न वोह शक़ावत व बद बख़्ती से ख़लासी पा सका ? आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : अबू जह्ल ने दर ह़क़ीक़त **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा ही नहीं जिस की वज्ह से वोह बद बख़्ती से छुटकारा न पा सका बल्कि उस ने मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह को देखा है, अगर वोह **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देख लेता तो वोह बद बख़्ती से निकल कर सआ़दत मन्दी में दाख़िल हो जाता और इस का मिस्दाक़ **अल्लाह** तआ़ला का येह फ़रमान है "وَتَرٰىهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ" तो सर की आंखों से देखने से येह सआ़दत नहीं मिलती बल्कि दिल की निगाहों से देखें तो येह सआ़दत नसीब होती है, इस लिये जिस ने ह़ज़रते अबू

1 .....روح البيان، الاعراف، تحت الآية: ۱۹۸، ۳/۲۹۷.

www.dawateislami.net

यज़ीद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को दिल की निगाहों से देखा तो वोह सआ़दत पा गया। इस वाक़िए से येह भी ज़ाहिर हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला के औलिया को भी निगाहे बसीरत से देखना ही फ़ाएदा देता है।[1]

خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۱۹۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ महबूब मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ह़बीब ! मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो।

﴿خُذِ الْعَفْوَ﴾ **: ऐ महबूब ! मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो ।** इस आयत में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तीन बातों की हिदायत फ़रमाई गई है :

(1)..... जो मुजरिम मा'ज़िरत त़लब करता हुवा आप के पास आए तो उस पर शफ़्क़तो मेह्रबानी करते हुए उसे मुआ़फ़ कर दीजिये।

(2)..... अच्छे और मुफ़ीद काम करने का लोगों को हुक्म दीजिये।

(3)..... जाहिल और ना समझ लोग आप को बुरा भला कहें तो उन से उलझिये नहीं बल्कि ह़िल्म का मुज़ाहरा फ़रमाएं।

अ़फ़्वो दर गुज़र और सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पूरी ज़िन्दगी अ़फ़्वो दर गुज़र से इ़बारत थी। आप के बे मिसाल अ़फ़्वो दर गुज़र का एक वाक़िआ़ मुलाह़ज़ा हो, चुनान्चे ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शहज़ादी ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا को उन के शौहर अबुल आ़स ने ग़ज़्वए बद्र के बा'द मदीनए मुनव्वरह के लिये रवाना किया। जब क़ुरैशे मक्का को उन की रवानगी का इ़ल्म हुवा तो उन्हों ने ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का पीछा किया ह़त्ता कि मक़ामे ज़ी तुवा में उन्हें पा लिया। हब्बार बिन अल अस्वद ने ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا को नेज़ा मारा जिस की वज्ह से आप ऊंट से गिर गईं और आप का ह़म्ल साक़ित़ हो गया।[2]

इतनी बड़ी अज़िय्यत पहुंचाने वाले शख़्स के साथ नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सुलूक मुलाह़ज़ा हो, चुनान्चे ह़ज़रते जुबैर बिन मुत़्अ़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि जिइ़र्राना

1 .....روح البیان، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۹۸، ۳/۲۹۷. 2 .....سیرت نبویہ لابن ہشام، خروج زینب الی المدینۃ، ص ۲۷۱.

www.dawateislami.net

से वापसी पर मैं सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास बैठा था कि अचानक दरवाज़े से हिबार बिन अल अस्वद दाख़िल हुवा, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, येह हिबार बिन अल अस्वद है। इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने इसे देख लिया है।" एक शख़्स उसे मारने के लिये खड़ा हुवा तो ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे इशारा किया कि बैठ जाए। हिबार ने क़रीब आते ही कहा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ! आप पर सलाम हो, मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं। **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, मैं आप से भाग कर कई शहरों में गया और मैं ने सोचा कि अ़जम के मुल्कों में चला जाऊं, फिर मुझे आप की नर्म दिली, सिलए रेह़्मी और दुश्मनों से आप का दर गुज़र करना याद आया। ऐ **अल्लाह** के नबी ! हम मुश्रिक थे **अल्लाह** तआ़ला ने आप के सबब हमें हिदायत दी और हमें हलाकत से नजात अ़ता की। आप मेरी जहालत से और मेरी उन तमाम बातों से जिन की आप तक ख़बर पहुंची है दर गुज़र फ़रमाएं। मैं अपने तमाम बुरे कामों का इक़रार करता हूं और अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ करता हूं। रह़ीमो करीम आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने तुम्हें मुआ़फ़ कर दिया। **अल्लाह** तआ़ला ने तुम पर एह़सान किया है कि उस ने तुम्हें इस्लाम की हिदायत दे दी और इस्लाम पिछले तमाम गुनाहों को मिटा देता है।"[1]

इस त़रह़ के बीसियों वाक़िआ़त हैं जिन में अ़ज़ीम अ़फ़्वो दर गुज़र की झलक नुमायां है जैसे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अबू सुफ़्यान को मुआ़फ़ कर दिया, अपने चचा ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को शहीद करने वाले ग़ुलाम वह़शी को मुआ़फ़ कर दिया, ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का दांतों से कलेजा चबाने वाली हिन्द बिन्ते उ़त्बा को मुआ़फ़ कर दिया, यूंही सफ़्वान बिन मुअ़त्त़ल, उ़मैर बिन वह्ब और इ़क्रमा बिन अबू जह्ल को मुआ़फ़ कर दिया, सुराक़ा बिन मालिक को अमान लिख दी और इन के इ़लावा बहुत से ज़ालिमों और सितम शिआ़रों के ज़ुल्मो जफ़ा से दर गुज़र कर के मुआ़फ़ी का परवाना अ़ता फ़रमा दिया। आयत में मज़्कूर हुक्म हर मुसल्मान के लिये है कि अ़फ़्वो दर गुज़र इख़्तियार करे, नेकी का हुक्म दे और जाहिलों से मुंह फेर ले।[2]

وَ اِمَّا یَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّیْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۲۰۰﴾

1 .....الاصابه، حرف الهاء، الهاء بعدها الباء، ٦/٤١٢-٤١٣.

2 ..... अ़फ़्वो दर गुज़र की तरग़ीब और जज़्बा पाने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिसाला "अ़फ़्वो दर गुज़र की फ़ज़ीलत" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ सुनने वाले अगर शैत़ान तुझे कोई कोंचा दे तो **अल्लाह** की पनाह मांग बेशक वोही सुनता जानता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ सुनने वाले ! अगर शैत़ान की त़रफ़ से कोई वस्वसा तुझे उभारे तो (फ़ौरन) **अल्लाह** की पनाह मांग, बेशक वोही सुनने वाला जानने वाला है।

وَاِمَّا یَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّیْطٰنِ نَزْغٌ : और ऐ सुनने वाले ! अगर शैत़ान की त़रफ़ से कोई वस्वसा तुझे उभारे । इस आयत में ख़ित़ाब नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से है और मुराद और लोग हैं क्यूं कि शैत़ान आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मुसल्लत़ नहीं हो सकता, और इस का मा'ना येह है कि ऐ इन्सान ! अगर शैत़ान की त़रफ़ से कोई वस्वसा तुझे (**अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी वग़ैरा पर) उभारे तो उस के शर से **अल्लाह** तआ़ला की पनाह मांग और अपने आप से उस वस्वसे को दूर किये जाने से मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में इल्तिजा कर, बेशक वोह तेरी दुआ़ को सुनने वाला और तेरे ह़ाल को जानने वाला है।[1]

शैत़ान को मग़लूब करने के त़रीक़े

इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : सूफ़ियाए किराम और मुजाहदात करने वाली बुज़ुर्ग हस्तियों के नज़्दीक शैत़ान से जंग करने और इसे मग़लूब करने के दो त़रीक़े हैं :

(1)..... शैत़ान के मक्रो फ़रेब से बचने के लिये सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला की पनाह ली जाए, इस के इलावा (शैत़ान के शर से) बचने का और कोई रास्ता नहीं, क्यूं कि शैत़ान एक ऐसा कुत्ता है जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने तुम पर मुसल्लत़ फ़रमा दिया है, अगर तुम उस से मुक़ाबला और जंग करने और उसे दूर करने में मश्ग़ूल हो गए तो तुम तंग आ जाओगे और तुम्हारा क़ीमती वक़्त ज़ाएअ़ हो जाएगा और आख़िर कार वोह तुम पर ग़ालिब आ जाएगा और तुम्हें ज़ख़्मी कर के नाकारा बना देगा, इस लिये बहर ह़ाल उस कुत्ते के मालिक की त़रफ़ ही मुतवज्जेह होना पड़ेगा और उसी की पनाह लेनी होगी ताकि वोह शैत़ान को तुम से दूर कर दे और **अल्लाह** तआ़ला से पनाह मांगना तुम्हारे लिये शैत़ान से जंग और मुक़ाबला करने से बेहतर है।

(2)..... शैत़ान से मुक़ाबला करने, उसे दूर करने और उस की तरदीद और मुख़ालफ़त करने के लिये बन्दा हर वक़्त तय्यार रहे।

[1] .....صاوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۲۰۰، ۲/۷۳۷، خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۲۰۰، ۲/۱۷۱، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

मैं (इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली) कहता हूं : मेरे नज़्दीक इस का जामेअ़ और बेहतरीन त़रीक़ा येह है कि (मज़्कूरा बाला) दोनों त़रीक़ों पर अ़मल किया जाए, लिहाज़ा सब से पहले शैत़ान मरदूद की शरारतों से **अल्लाह** तआ़ला की पनाह ली जाए, जैसा कि **अल्लाह** तआ़ला ने हमें इस का हुक्म इर्शाद फ़रमाया है और **अल्लाह** तआ़ला हमें शैत़ाने लईन के शर से महफ़ूज़ रखने के लिये काफ़ी है, इस के बा'द भी अगर तुम येह महसूस करो कि **अल्लाह** तआ़ला की पनाह लेने के बा वुजूद शैत़ान तुम पर ग़ालिब आने की कोशिश कर रहा है और वोह तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ रहा तो तुम्हें समझ लेना चाहिये कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारा इम्तिह़ान लेना चाहता है ताकि **अल्लाह** तआ़ला इ़बादत वग़ैरा में तुम्हारी कुव्वत और सब्र को ज़ाहिर फ़रमा दे जैसा कि काफ़िरों को हम पर मुसल्लत़ फ़रमाया गया ह़ालां कि **अल्लाह** तआ़ला काफ़िरों के अ़ज़ाइम और उन की शर अंगेज़ियों को हमारे जिहाद किये बिग़ैर मल्या मेट कर देने पर क़ादिर है लेकिन वोह उन्हें सफ़्ह़ए हस्ती से ख़त्म नहीं फ़रमाता बल्कि हमें उन के ख़िलाफ़ जिहाद करने का हुक्म देता है ताकि जिहाद, सब्र, गुनाहों से छुटकारे और शहादत से हमें भी ह़िस्सा मिल जाए और हम इस इम्तिह़ान में काम्याबो कामरान हो जाएं, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और येह इस लिये होता है कि **अल्लाह** ईमान वालों की पहचान करा दे और तुम में से कुछ लोगों को शहादत का मर्तबा अ़त़ा फ़रमा दे और **अल्लाह** ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता।

और इर्शाद फ़रमाता है :

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या तुम इस गुमान में हो कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे ह़ालां कि अभी **अल्लाह** ने तुम्हारे मुजाहिदों का इम्तिह़ान नहीं लिया और न (ही) सब्र वालों की आज़्माइश की है।

तो (जिस त़रह़ काफ़िरों के साथ जिहाद का हुक्म है) इसी त़रह़ हमें शैत़ान से भी इन्तिहाई जां फ़िशानी के साथ मुक़ाबला और उस से जंग करने का हुक्म दिया गया है, नीज़ उ़लमाए

(1) .....ال عمران: ١٤٠. (2) .....ال عمران: ١٤٢.

www.dawateislami.net

किराम ने शैत़ान से मुक़ाबला करने और उस पर ग़लबा ह़ासिल करने के (मज़ीद) तीन त़रीक़े बयान फ़रमाए हैं :

(1)..... तुम शैत़ान के मक्रो फ़रेब और उस की ह़ीला साज़ी से होशियार और बा ख़बर हो जाओ क्यूं कि जब तुम्हें उस की ह़ीला साज़ियों का इल्म होगा तो वोह तुम्हें नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेगा, जिस त़रह़ चोर को जब मा'लूम हो जाता है कि मालिके मकान को मेरे आने का इल्म हो गया है तो वोह भाग जाता है।

(2)..... जब शैत़ान तुम्हें गुमराहियों की त़रफ़ बुलाए तो तुम उसे रद कर दो और तुम्हारा दिल उस की त़रफ़ बिल्कुल मुतवज्जेह न हो और न ही तुम उस की पैरवी करो क्यूं कि शैत़ान एक भोंकने वाले कुत्ते की त़रह़ है, अगर तुम उसे छेड़ोगे तो वोह तुम्हारी त़रफ़ तेज़ी के साथ लपकेगा और (ह़म्ला कर के) तुम्हें ज़ख़्मी कर देगा और अगर तुम उस से कनारा कशी इख़्तियार कर लोगे तो मुम्किन है कि वोह ख़ामोश रहे।

(3)..... तुम हमेशा **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र करते रहो और अपने आप को हर वक़्त **अल्लाह** तआ़ला की याद में मसरूफ़ रखो।[1]

अल्लाह तआ़ला हमें शैत़ान के वस्वसों और इस के मक्रो फ़रेब से महफ़ूज़ फ़रमाए और इस के वारों से बचने के लिये मुअस्सिर इक़्दामात करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, आमीन।

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَائِفٌ مِّنَ الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُم مُّبْصِرُونَ ﴿٢٠١﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैत़ानी ख़याल की ठेस लगती है होशियार हो जाते हैं उसी वक़्त उन की आंखें खुल जाती हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक परहेज़ गारों को जब शैत़ान की त़रफ़ से कोई ख़याल आता है तो वोह (हुक्मे ख़ुदा) याद करते हैं फिर उसी वक़्त उन की आंखें खुल जाती हैं।

﴿إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا﴾ **: बेशक वोह जो डर वाले हैं।** ﴾ आयत में मज़्कूर लफ़्ज़ "طَٰٓئِفٌ" के बारे में अ़ल्लामा राग़िब अस्फ़हानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि इन्सान को वर्ग़लाने के लिये इन्सान

[1] .....منهاج العابدين، العقبة الثالثة ، العائق الثالث، ص ٥٥-٥٦.

www.dawateislami.net

के गिर्द गर्दिश करने वाले शैत़ान को त़ाइफ़ कहते हैं।[1] और इस आयत का मा'ना येह है कि वोह लोग जो मुत्तक़ी और परहेज़ गार हैं जब शैत़ान की त़रफ़ से उन्हें गुनाह करने या **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त छोड़ने का कोई वस्वसा आता है तो वोह **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत और उस के इन्आ़मात में ग़ौर करते हैं और उस के अ़ज़ाब और सवाब को याद करते हैं और उसी वक़्त गुनाह करने से रुक जाते हैं क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने गुनाह से रुकने का हुक्म दिया और गुनाह करने से मन्अ़ किया है।[2]

शैत़ान के वस्वसे से बचने का एक त़रीक़ा

इस से मा'लूम हुवा कि जब शैत़ान दिल में गुनाह करने का वस्वसा डाले तो उस वक़्त **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत और उस के इन्आ़मात में ग़ौर करना और **अल्लाह** तआ़ला की सज़ा और उस के सवाब को याद करना उस वस्वसे को दूर करने और गुनाह से रुकने में मुआ़विनो मददगार है लिहाज़ा जब भी शैत़ान गुनाह करने पर उक्साए तो उस वक़्त बन्दे को चाहिये कि वोह अपने ऊपर **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत और उस के इन्आ़मात व एह़सानात को याद करे और ना फ़रमानी करने पर उस की त़रफ़ से मिलने वाली सज़ा और इत़ाअ़त करने की सूरत में उस की त़रफ़ से मिलने वाले सवाब को याद करे तो اِنْ شَآءَاللّٰه शैत़ान का वस्वसा दूर हो जाएगा और वोह गुनाह करने से बच जाएगा और अगर शामते नफ़्स से गुनाह सरज़द हो जाए तो फ़ौरन **अल्लाह** तआ़ला को याद कर के अपने गुनाह की मुआ़फ़ी मांग ले, जैसा कि एक और मक़ाम पर **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَالَّذِیْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۫ وَمَنْ یَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۫ وَلَمْ یُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ یَعْلَمُوْنَ[3]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह लोग कि जब किसी बे ह़याई का इरतिकाब कर लें या अपनी जानों पर ज़ुल्म कर लें तो **अल्लाह** को याद कर के अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगें और **अल्लाह** के इलावा कौन गुनाहों को मुआ़फ़ कर सकता है और येह लोग जान बूझ कर अपने बुरे आ'माल पर इसरार न करें।

1 .....مفردات امام راغب، کتاب الطاء، ص ٥٣١، تحت اللفظ: طوف.
2 .....قرطبی، الاعراف، تحت الآیة: ٢٠١، ٤/ ٢٥٠، الجزء السابع، صاوی، الاعراف، تحت الآیة: ٢٠١، ٢/ ٧٣٨، ملتقطاً.
3 .....ال عمران: ١٣٥.

www.dawateislami.net

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़मानए मुबारक में एक नौ जवान बहुत मुत्तक़ी व परहेज़ गार व इ़बादत गुज़ार था, ह़त्ता कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी उस की इ़बादत पर तअ़ज्जुब किया करते थे। वोह नौ जवान नमाज़े इ़शा मस्जिद में अदा करने के बा'द अपने बूढ़े बाप की ख़िदमत करने के लिये जाया करता था। रास्ते में एक ख़ूबरू औ़रत उसे अपनी त़रफ़ बुलाती और छेड़ती थी, लेकिन येह नौ जवान उस पर तवज्जोह दिये बिग़ैर निगाहें झुकाए गुज़र जाया करता था। आख़िर कार एक दिन वोह नौ जवान शैत़ान के वर्ग़लाने और उस औ़रत की दा'वत पर बुराई के इरादे से उस की जानिब बढ़ा, लेकिन जब दरवाज़े पर पहुंचा तो उसे **अल्लाह** तआ़ला का येही फ़रमाने आ़लीशान याद आ गया

اِنَّ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓىٕفٌ مِّنَ الشَّیْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ(1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक जब शैत़ान की त़रफ़ से परहेज़ गारों को कोई ख़याल आता है तो वोह फ़ौरन हुक्मे ख़ुदा याद करते हैं फिर उसी वक़्त उन की आंखें खुल जाती हैं।

इस आयते पाक के याद आते ही उस के दिल पर **अल्लाह** तआ़ला का ख़ौफ़ इस क़दर ग़ालिब हुवा कि वोह बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर गया। जब येह बहुत देर तक घर न पहुंचा तो उस का बूढ़ा बाप उसे तलाश करता हुवा वहां पहुंचा और लोगों की मदद से उसे उठवा कर घर ले आया। होश आने पर बाप ने तमाम वाक़िआ़ दरयाफ़्त किया, नौ जवान ने पूरा वाक़िआ़ बयान कर के जब इस आयते पाक का ज़िक्र किया, तो एक मरतबा फिर उस पर **अल्लाह** तआ़ला का शदीद ख़ौफ़ ग़ालिब हुवा, उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और उस का दम निकल गया। रातों रात ही उस के ग़ुस्ल व कफ़नो दफ़्न का इन्तिज़ाम कर दिया गया। सुब्ह़ जब येह वाक़िआ़ ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में पेश किया गया तो आप उस के बाप के पास ता'ज़ियत के लिये तशरीफ़ ले गए और उस से फ़रमाया कि आप ने हमें इत्तिलाअ़ क्यूं नहीं दी ? (ताकि हम भी जनाज़े में शरीक हो जाते) उस ने अ़र्ज़ की : अमीरुल मुअमिनीन ! उस का इन्तिक़ाल रात में हुवा था (और आप के आराम का ख़याल करते हुए बताना मुनासिब मा'लूम न हुवा)। आप ने फ़रमाया कि "मुझे उस की क़ब्र पर ले चलो।" वहां पहुंच कर आप ने येह आयते मुबारका पढ़ी :

(1) .....اعراف: ۲۰۱.

www.dawateislami.net

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं।

तो क़ब्र में से उस नौ जवान ने जवाब देते हुए कहा कि **या अमीरल मुअमिनीन ! बेशक मेरे रब ने मुझे दो जन्नतें अ़ता फ़रमाई हैं।**(2)

وَ اِخْوَانُهُمْ یَمُدُّوْنَهُمْ فِی الْغَیِّ ثُمَّ لَا یُقْصِرُوْنَ ﴿۲۰۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो शैत़ानों के भाई हैं शैत़ान उन्हें गुमराही में खींचते हैं फिर गई नहीं करते।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह जो शैत़ानों के भाई हैं शैत़ान उन्हें गुमराही में खींचते हैं फिर वोह कमी नहीं करते।

﴿وَ اِخْوَانُهُمْ﴾ **: और वोह जो शैत़ानों के भाई हैं।** इर्शाद फ़रमाया कि शैत़ानों के भाई या'नी मुश्रिकों को शैत़ान गुमराही में खींचते हैं यहां तक कि वोह गुमराही पर पक्के हो जाते हैं, फिर वोह न तो गुमराही से रुकते हैं और न गुमराही छोड़ते हैं।(3)

मुत्तक़ी मुसल्मान और काफ़िर का ह़ाल

इस से मुत्तक़ी मुसल्मान और काफ़िर का ह़ाल वाज़ेह़ हुवा कि मुसल्मान को जब शैत़ान की त़रफ़ से कोई ख़याल आता है तो वोह **अल्लाह** तआ़ला का हुक्म याद करता है और पहचान जाता है कि येह शैत़ान का वार है, फिर वोह उस से रुक जाता है और तौबा व इस्तिग़्फ़ार करता है जब कि काफ़िर अपनी गुमराही में ही पुख़्ता होता चला जाता है, न वोह **अल्लाह** तआ़ला का हुक्म याद करता है और न ही अपनी गुमराही से रुजूअ़ करता है।(4)

1 .....الرحمن:٤٦.

2 .....ابن عساكر، ذكر من اسمه عمرو، عمرو بن جامع بن عمرو بن محمد... الخ، ٤٥/ ٤٥٠، ذمّ الهوى، الباب الثانى والثلاثون فى فضل من ذكر ربّه فترك ذنبه، ص ١٩٠-١٩١.

3 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ٢٠٢، ٢/ ١٧١.

4 .....خازن، الاعراف، تحت الآية: ٢٠٢، ٢/ ١٧١.

www.dawateislami.net

وَ اِذَا لَمْ تَاْتِهِمْ بِاٰیَةٍ قَالُوْا لَوْ لَا اجْتَبَیْتَهَا ؕ قُلْ اِنَّمَاۤ اَتَّبِعُ مَا یُوْحٰۤى اِلَیَّ مِنْ رَّبِّیْ ۚ هٰذَا بَصَآىٕرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۲۰۳﴾ وَ اِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَ اَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۲۰۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ महबूब जब तुम उन के पास कोई आयत न लाओ तो कहते हैं तुम ने दिल से क्यूं न बनाई। तुम फ़रमाओ मैं तो उसी की पैरवी करता हूं जो मेरी तरफ़ मेरे रब से वही होती है येह तुम्हारे रब की तरफ़ से आंखें खोलना है और हिदायत और रहमत मुसल्मानों के लिये और जब कुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगा कर सुनो और ख़ामोश रहो कि तुम पर रहम हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ हबीब ! जब तुम उन के पास निशानी नहीं लाते तो कहते हैं कि तुम ने ख़ुद ही क्यूं न बना ली ? तुम फ़रमाओ : मैं तो उसी की पैरवी करता हूं जो मेरी तरफ़ मेरे रब की तरफ़ से वही भेजी जाती है। येह तुम्हारे रब की तरफ़ से आंखें खोल देने वाले दलाइल हैं और मुसल्मानों के लिये हिदायत और रहमत है। और जब कुरआन पढ़ा जाए तो उसे ग़ौर से सुनो और ख़ामोश रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए।

﴿وَ اِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ﴾ **: और जब कुरआन पढ़ा जाए।** इस से पहली आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने कुरआने मजीद की अ़ज़मत बयान फ़रमाई थी कि कुरआने पाक की आयात तो तुम्हारे रब की तरफ़ से आंखें खोल देने वाले दलाइल हैं और ईमान लाने वाले लोगों के लिये हिदायत और रहमत है और इस आयत में बताया है कि इस की अ़ज़मतो शान का तक़ाज़ा येह है कि जब कुरआन पढ़ा जाए तो उसे ग़ौर से सुना जाए और ख़ामोश रहा जाए।[1]

अ़ल्लामा अ़ब्दुल्लाह बिन अहमद नसफ़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस आयत से साबित हुवा कि जिस वक़्त कुरआने करीम पढ़ा जाए ख़्वाह नमाज़ में या ख़ारिजे नमाज़ उस वक़्त सुनना और ख़ामोश रहना वाजिब है।[2]

1 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیة: ۲۰۴، ۵/۴۳۹.
2 .....مدارك، الاعراف، تحت الآیة: ۲۰۴، ص۴۰۱.

www.dawateislami.net

इमाम के पीछे क़ुरआन पढ़ने की मुमानअ़त

याद रहे कि इस आयते मुबारका के बारे में मुफ़स्सिरीन के मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं, एक क़ौल येह है कि इस आयत में ख़ुत्बे को बग़ौर सुनने और ख़ामोश रहने का हुक्म है। और एक क़ौल येह है कि इस आयत से नमाज़ व ख़ुत्बा दोनों में बग़ौर सुनने और ख़ामोश रहने का वुजूब साबित होता है। जब कि जुम्हूर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ इस त़रफ़ हैं कि येह आयत मुक़्तदी के सुनने और ख़ामोश रहने के बाब में है।[1]

ख़ुलासा येह है कि इस आयत से इमाम के पीछे क़ुरआने पाक पढ़ने की मुमानअ़त साबित होती है और कसीर अह़ादीस में भी येही हुक्म फ़रमाया गया है कि इमाम के पीछे क़िराअत न की जाए। चुनान्चे

(1)..... ह़ज़रते बशीर बिन जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़ पढ़ाई तो आप ने कुछ लोगों को सुना कि वोह नमाज़ में इमाम के साथ क़िराअत कर रहे हैं। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया : ''क्या अभी तुम्हारे लिये वोह वक़्त नहीं आया कि तुम इस आयत के मा'ना समझो।''[2]

(2)..... ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब तुम नमाज़ पढ़ने लगो तो अपनी सफ़ों को दुरुस्त कर लो, फिर तुम में से कोई एक इमामत करवाए, पस जब वोह तक्बीर कहे तो तुम तक्बीर कहो।'' एक रिवायत में इतना ज़ाइद है कि ''और जब वोह क़िराअत करे तो तुम ख़ामोश रहो।''[3]

(3)..... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इमाम इसी लिये होता है कि उस की इक़्तिदा की जाए पस जब वोह तक्बीर कहे तो तुम तक्बीर कहो और जब वोह क़िराअत करे तो ख़ामोश रहो।''[4]

(4)..... ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''जिस ने एक रक्अ़त भी बिग़ैर सूरए फ़ातिह़ा के पढ़ी उस की नमाज़ न हुई मगर येह कि इमाम के पीछे हो।''[5]

नोट : यहां एक और मस्अला भी याद रखें कि बा'ज़ लोग ख़त्म शरीफ़ में मिल कर ज़ोर से तिलावत करते हैं येह भी मम्नूअ़ है।

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۲۰۴، ۱۷۲/۲، مدارک، الاعراف، تحت الآیۃ: ۲۰۴، ص ۴۰۱، ملتقطاً.

2 .....تفسیر ابن جریر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۲۰۴، ۱۶۱/۶.

3 .....مسلم، کتاب الصلاۃ، باب التشہد فی الصلاۃ، ص ۲۱۴-۲۱۵، الحدیث: ۶۲-۶۳(۴۰۴).

4 .....ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ والسنّۃ فیہا، باب اذا قرأ الامام فانصتوا، ۴۶۱/۱، الحدیث: ۸۴۶.

5 .....ترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ما جاء فی ترک القراءۃ خلف الامام... الخ، ۳۳۸/۱، الحدیث: ۳۱۳.

www.dawateislami.net

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿۲۰۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने रब को अपने दिल में याद करो ज़ारी और डर से और बे आवाज़ निकले ज़बान से सुब्ह और शाम और ग़ाफ़िलों में न होना।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अपने रब को अपने दिल में याद करो गिड़गिड़ाते हुए और डरते हुए और बुलन्दी से कुछ कम आवाज़ में, सुब्हो शाम, और ग़ाफ़िलों में से न होना।

﴿وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا : **और अपने रब को अपने दिल में याद करो गिड़गिड़ाते हुए।**﴾ इस आयत में ख़िताब रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से है और इस ख़िताब में उम्मते मुस्तफ़ा भी दाख़िल है कि येह हुक्म तमाम मुकल्लफ़ीन को आम है। हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि इस आयत में ज़िक्र से मुराद नमाज़ में क़िराअत करना है। एक क़ौल येह है कि ज़िक्र में तिलावते क़ुरआन, दुआ और तस्बीहो तहलील वग़ैरा तमाम अज़्कार शामिल हैं।[1]

ख़ुलासा येह है कि **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र दिल में किया जाए या दरमियानी आवाज़ में, ह़द से ज़ियादा बुलन्द आवाज़ में चीख़ते हुए न किया जाए, नीज़ **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र आ़जिज़ी और ख़ौफ़ के साथ हो। नीज़ ज़िक्रुल्लाह सुब्हो शाम किया जाए। बुलन्द आवाज़ से और आहिस्ता आवाज़ से ज़िक्र करना दोनों के बारे में अह़ादीस मौजूद हैं, अगर ज़िक्र करने वाले को रियाकारी का अन्देशा हो या नमाज़ियों और आराम करने वालों को तक्लीफ़ पहुंचने का अन्देशा हो तो आहिस्ता ज़िक्र किया जाए वरना बुलन्द आवाज़ से करने में ह़रज नहीं।

﴿بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ : **सुब्ह और शाम।**﴾ इन दोनों अवक़ात में ज़िक्र करना अफ़्ज़ल है, इस की एक वज्ह येह है कि सुब्ह के वक़्त इन्सान नींद से बेदार होता है तो उस वक़्त ज़िक्र करने से उस के नामए आ'माल में सब से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करना लिखा जाएगा और शाम के वक़्त इन्सान सोता है और नींद एक त़रह़ की मौत है, लिहाज़ा इस वक़्त भी ज़िक्र करना मुनासिब है कि मुम्किन है सोते में ही इन्तिक़ाल हो जाए, अगर ऐसा हुवा तो क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता हुवा उठेगा। दूसरी वज्ह येह है कि तुलूए फ़ज्र के बा'द तुलूए

1 .....خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: ۲۰۵، ۱۷۳/۲، مدارك، الاعراف، تحت الآیۃ: ۲۰۵، ص ۴۰۲، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

आफ़्ताब तक और इसी त़रह़ नमाज़े अ़स्र के बा'द ग़ुरूब तक नफ़्ल नमाज़ मम्नूअ़ है, इस लिये इन वक़्तों में ज़िक्र करना मुस्तह़ब है ताकि बन्दे के तमाम अवक़ात क़ुर्बतो त़ाअ़त में मश्ग़ूल रहें।[1]

नोट : ज़िक्रे जली और ख़फ़ी से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात के लिये किताब "जाअल ह़क़" का मुत़ालआ़ कीजिये।

إِنَّ الَّذِينَ عِندَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيُسَبِّحُونَهُ وَلَهُ يَسْجُدُونَ ﴿٢٠٦﴾ السجدة ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो तेरे रब के पास हैं उस की इबादत से तकब्बुर नहीं करते और उस की पाकी बोलते और उसी को सज्दा करते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह जो तेरे रब के पास हैं वोह उस की इबादत से तकब्बुर नहीं करते और उस की पाकी बयान करते हैं और उसी को सज्दा करते हैं।

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ عِنْدَ رَبِّكَ﴾ **: बेशक वोह जो तेरे रब के पास हैं।** इस आयत का मा'ना येह है कि जब फ़िरिश्ते अपने बे इन्तिहा शरफ़, पाक और मा'सूम होने, शह्वत और ग़ज़ब से बरी होने, कीना और ह़सद से मुनज़्ज़ा होने के बा वुजूद हमेशा **अल्लाह** तआ़ला की इबादत करते हैं और ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के साथ सज्दा रेज़ होते हैं तो इन्सान जो कि जिस्मानी ज़ुल्मतों, बशरी कसाफ़तों और शह्वतो ग़ज़ब की आमाज गाह है, वोह इस बात का ज़ियादा ह़क़दार है कि **अल्लाह** तआ़ला की इबादत ज़ियादा करे।[2]

सज्दए तिलावत के चन्द अह़काम

येह आयत आयाते सज्दा में सब से पहली आयत है, इस मुनासबत से हम यहां सज्दए तिलावत के चन्द अह़काम बयान करते हैं :

(1)..... आयते सज्दा पढ़ने या सुनने से सज्दा वाजिब हो जाता है पढ़ने में येह शर्त़ है कि इतनी आवाज़ से हो कि अगर कोई उ़ज़्र न हो तो ख़ुद सुन सके, सुनने वाले के लिये येह ज़रूरी नहीं कि बिल क़स्द सुनी हो बल्कि बिला क़स्द सुनने से भी सज्दा वाजिब हो जाता है।[3]

1 .....صاوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۲۰۵، ۲/ ۷۴۰. 2 .....تفسیر کبیر، الاعراف، تحت الآیۃ: ۲۰۶، ۵/ ۴۴۵.
3 .....ہدایہ، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ۱/ ۷۸، در مختار مع رد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ۲/ ۶۹۵-۶۹۶.

www.dawateislami.net

(2)..... सज्दा वाजिब होने के लिये एक क़ौल के मुताबिक़ पूरी आयत पढ़ना ज़रूरी है और एक क़ौल के मुताबिक़ पूरी आयत पढ़ना ज़रूरी नहीं बल्कि वोह लफ़्ज़ जिस में सज्दे का माद्दा पाया जाता है और उस के साथ पहले या बा'द का कोई लफ़्ज़ मिला कर पढ़ना काफ़ी है।[1]

(3)..... अगर इतनी आवाज़ से आयत पढ़ी कि सुन सकता था मगर शोरो ग़ुल या बहरे होने की वज्ह से न सुनी तो सज्दा वाजिब हो गया और अगर महज़ होंट हिले आवाज़ पैदा न हुई तो वाजिब न हुवा।[2]

(4)..... फ़ारसी या किसी और ज़बान में आयत का तरजमा पढ़ा तो पढ़ने वाले और सुनने वाले पर सज्दा वाजिब हो गया।

सज्दए तिलावत की फ़ज़ीलत

सज्दए तिलावत की फ़ज़ीलत के बारे में हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब आदमी आयते सज्दा पढ़ कर सज्दा करता है तो शैतान हट जाता है और रो कर कहता है : हाए मेरी बरबादी ! इब्ने आदम को सज्दे का हुक्म हुवा तो उस ने सज्दा किया, उस के लिये जन्नत है और मुझे सज्दे का हुक्म दिया गया तो मैं ने इन्कार किया मेरे लिये दोज़ख़ है।"[3]

सज्दए तिलावत का त़रीक़ा

सज्दए तिलावत का मस्नून त़रीक़ा येह है कि खड़ा हो कर اَللّٰہُ اَکْبَر कहता हुवा सज्दे में जाए और कम से कम तीन बार سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی कहे, फिर اَللّٰہُ اَکْبَر कहता हुवा खड़ा हो जाए, पहले पीछे दोनों बार اَللّٰہُ اَکْبَر कहना सुन्नत है और खड़े हो कर सज्दे में जाना और सज्दे के बा'द खड़ा होना येह दोनों क़ियाम मुस्तहब।[4]

याद रहे कि सज्दए तिलावत के लिये اَللّٰہُ اَکْبَر कहते वक़्त न हाथ उठाना है और न इस में तशह्हुद है न सलाम।[5]

नोट : सज्दए तिलावत के मज़ीद मसाइल जानने के लिये बहारे शरीअ़त हिस्सा 4 से "**सज्दए तिलावत का बयान**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

1 .....رد المحتار على الدر المختار، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ٢/٦٩٤، تحت قول الدر: اى اكثرها... الخ.
2 .....عالمگيرى، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ١/١٣٢، ١٣٣.
3 .....مسلم، كتاب الايمان، باب بيان اطلاق اسم الكفر على من ترك الصلاة، ص٥٦، الحديث: ١٣٣ (٨١).
4 .....عالمگيرى، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ١/١٣٥، در مختار مع رد المحتار، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ٢/٦٩٩-٧٠٠.
5 .....تنوير الابصار، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ٢/٧٠٠.

www.dawateislami.net

سُوْرَةُ الْاَنْفَال

सूरए अन्फ़ाल का तआ़रुफ़

मक़ामे नुज़ूल

सह़ीह़ क़ौल के मुत़ाबिक़ येह सूरत मदनी है। और एक क़ौल येह है कि येह सूरत उन सात आयतों के इ़लावा मदनी है जो मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुई और वोह आयत नमबर 30 ''وَاِذْ یَمْكُرُ بِكَ الَّذِیْنَ'' से शुरूअ़ होती हैं।[1]

रुकूअ़ और आयात की ता'दाद

इस सूरत में **10** रुकूअ़ और **75** आयातें हैं।

''अन्फ़ाल'' नाम रखने की वज्ह

अन्फ़ाल नफ़्ल की जम्अ़ है और इस का मा'ना है ग़नीमत का माल, इस सूरत की पहली आयत में अन्फ़ाल या'नी माले ग़नीमत के अह़काम के बारे में मुसल्मानों के सुवाल और उन्हें दिये जाने वाले जवाब का ज़िक्र है, इस मुनासबत से इस सूरत का नाम ''सूरए अन्फ़ाल'' रखा गया।

सूरए अन्फ़ाल के मज़ामीन

इस सूरत का मर्कज़ी मज़मून येह है कि इस में माले ग़नीमत के अह़काम, ग़ज़्वए बद्र का तफ़्सीली वाक़िआ़ और इस की ह़िक्मतें बयान की गईं और मुसल्मानों को जंग के उसूल सिखाए गए हैं। इस के इ़लावा इस सूरत में येह मज़ामीन बयान किये गए हैं :

(1)..... **अल्लाह** तआ़ला और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त करने का हुक्म दिया गया और ख़ौफ़े ख़ुदा की फ़ज़ीलत बयान की गई।

(2)..... मक्कए मुकर्रमा से हिजरत के वक़्त ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़िलाफ़ कुफ़्फ़ार की साज़िश और **अल्लाह** तआ़ला का अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कुफ़्फ़ार की साज़िश से मह़फ़ूज़ रखने का बयान है।

(3)..... हर चीज़ में ज़रूरी अस्बाब इख़्तियार करने के बा'द **अल्लाह** तआ़ला पर तवक्कुल

[1] .....خازن، تفسیر سورۃ الانفال، ۲/۱۷٤.

www.dawateislami.net

करने का हुक्म दिया गया।

(4)..... मुसल्मानों को कुफ़्फ़ार के साथ किये हुए मुआ़हदे पूरे करने और मुआ़हदा तोड़ने पर उन के साथ सख़्ती करने का हुक्म दिया गया।

(5)..... कुफ़्फ़ार के साथ जिहाद करने के मक़ासिद बयान किये गए।

(6)..... कुफ़्फ़ार के दिलों में धाक बिठाने के लिये मुसल्मानों को जंगी साज़ो सामान की भरपूर तय्यारी का हुक्म दिया गया।

(7)..... इस सूरत के आख़िर में क़ैदियों के बारे में अह़काम और मुहाजिरीन व अन्सार के मुजाहिदों के फ़ज़ाइल बयान किये गए।

सूरए आ'राफ़ के साथ मुनासबत

सूरए अन्फ़ाल की अपने से मा क़ब्ल सूरत "आ'राफ़" के साथ मुनासबत येह है कि सूरए आ'राफ़ में मश्हूर रसूलों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अपनी क़ौमों के साथ ह़ालात बयान किये गए थे और सूरए अन्फ़ाल में सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अपनी क़ौम के साथ ह़ालात बयान किये गए हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह़्म वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान, रह़मत वाला है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۪ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝١

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मह़बूब तुम से ग़नीमतों को पूछते हैं तुम फ़रमाओ ग़नीमतों के मालिक **अल्लाह** व रसूल हैं तो **अल्लाह** से डरो और अपने आपस में मेल रखो और **अल्लाह** व रसूल का हुक्म मानो अगर ईमान रखते हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ मह़बूब ! तुम से अम्वाले ग़नीमत के बारे में पूछते हैं। तुम

www.dawateislami.net

फ़रमाओ, ग़नीमत के मालों के मालिक **अल्लाह** और रसूल हैं तो **अल्लाह** से डरते रहो और आपस में सुल्ह़ सफ़ाई रखो और **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म मानो अगर तुम मोमिन हो।

﴿يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ﴾ : **ऐ ह़बीब ! तुम से अम्वाले ग़नीमत के बारे में पूछते हैं।** ﴾ अन्फ़ाल, नफ़्ल की जम्अ़ है और इस से मुराद माले ग़नीमत है।[1] और नफ़्ल को ग़नीमत इस लिये कहते हैं कि येह भी मह़ज़ **अल्लाह** तआ़ला का फ़ज़्ल और उस की अ़त़ा है।[2] **शाने नुज़ूल :** इस आयत के शाने नुज़ूल से मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ रिवायात हैं, उन में से दो रिवायात यहां ज़िक्र की जाती हैं :

(1)..... ह़ज़रते अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से आयते अन्फ़ाल के नुज़ूल के बारे में पूछा तो आप ने फ़रमाया कि येह आयत हम अहले बद्र के ह़क़ में नाज़िल हुई जब ग़नीमत के मुआ़मले में हमारे दरमियान इख़्तिलाफ़ पैदा हुवा और बद मज़गी की नौबत आ गई तो **अल्लाह** तआ़ला ने मुआ़मला हमारे हाथ से निकाल कर अपने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सिपुर्द कर दिया और आप ने वोह माल मुसल्मानों में बराबर तक़्सीम कर दिया।[3]

(2)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ज़्वए बद्र के दिन इर्शाद फ़रमाया : "जो तुम में से येह काम कर दिखाए उसे माले ग़नीमत में से येह इन्आ़म मिलेगा" चुनान्चे नौ जवान आगे बढ़ गए और उ़म्र रसीदा ह़ज़रात झन्डों के पास खड़े रहे और वहां से न हटे। जब **अल्लाह** तआ़ला ने काफ़िरों पर फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाई तो बूढ़ों ने फ़रमाया : "हम तुम्हारे पुश्त पनाह थे, अगर तुम्हें शिकस्त हो जाती तो तुम हमारी त़रफ़ आते लिहाज़ा येह नहीं कि ग़नीमत तुम ले जाओ और हम ख़ाली हाथ रह जाएं।" जवानों ने इस बात से इन्कार किया और कहा कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमारा येह ह़क़ मुक़र्रर फ़रमाया है। इस पर येह आयत नाज़िल हुई।[4]

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِیْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَ اِذَا تُلِیَتْ عَلَیْهِمْ اٰیٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِیْمَانًا وَّ عَلٰى رَبِّهِمْ یَتَوَكَّلُوْنَ ۚ﴿۲﴾

1 .....جمل، الانفال، تحت الآیۃ: ۱، ۳/۱۶۴. 2 .....بیضاوی، الانفال، تحت الآیۃ: ۱، ۳/۸۷.
3 .....مسند امام احمد، مسند الانصار، حدیث عبادۃ بن الصامت رضی اللّٰہ عنہ، ۸/۴۱۰، الحدیث: ۲۲۸۱۱.
4 .....ابو داؤد، کتاب الجہاد، باب فی النفل، ۳/۱۰۲، الحدیث: ۲۷۳۷.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ईमान वाले वोही हैं कि जब **अल्लाह** याद किया जाए उन के दिल डर जाएं और जब उन पर उस की आयतें पढ़ी जाएं उन का ईमान तरक़्क़ी पाए और अपने रब ही पर भरोसा करें।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ईमान वाले वोही हैं कि जब **अल्लाह** को याद किया जाए तो उन के दिल डर जाते हैं और जब उन पर उस की आयात की तिलावत की जाती है तो उन के ईमान में इज़ाफ़ा हो जाता है और वोह अपने रब पर ही भरोसा करते हैं।

﴿اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ﴾ **: ईमान वाले वोही हैं।﴾** इस से पहली आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने ईमान की शर्त़ के साथ अपनी और अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त का ह़ुक्म दिया क्यूं कि कामिल ईमान, कामिल इत़ाअ़त को मुस्तल्ज़िम है। जब कि इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने कामिल ईमान वालों के तीन औसाफ़ बयान फ़रमाए हैं।[1]

कामिल ईमान वालों के तीन औसाफ़

इस आयत में अपने ईमान में सच्चे और कामिल लोगों का **पहला वस्फ़** येह बयान हुवा कि **जब अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **को याद किया जाए तो उन के दिल डर जाते हैं।**

अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ दो त़रह़ का होता है : (1) अ़ज़ाब के ख़ौफ़ से गुनाहों को तर्क कर देना (2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जलाल, उस की अ़ज़मत और उस की बे नियाज़ी से डरना। **पहली क़िस्म** का ख़ौफ़ आ़म मुसल्मानों में से परहेज़ गारों को होता है और **दूसरी क़िस्म** का ख़ौफ़ अम्बियाओ मुरसलीन, औलियाए कामिलीन और मुक़र्रब फ़िरिश्तों को होता है और जिस का **अल्लाह** तआ़ला से जितना ज़ियादा क़ुर्ब होता है उसे उतना ही ज़ियादा ख़ौफ़ होता है।[2]

जैसा कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं तुम सब से ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाला हूं और तुम सब से ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त रखने वाला हूं।"[3]

ख़ौफ़े ख़ुदा से मुतअ़ल्लिक़ आसार

ह़ज़रते ह़सन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने एक

1 .....خازن، الانفال، تحت الآیة: ۲، ۲/۱۷۵-۱۷۶. 2 .....تفسیر کبیر، الانفال، تحت الآیة: ۲، ۵/۴۵۰ ملتقطاً.
3 .....بخاری، کتاب الایمان، باب قول النبی صلی اللّٰه علیه وسلم: انا اعلمکم باللّٰه، ۱/۱۸، الحدیث: ۲۰.

www.dawateislami.net

मरतबा दरख़्त पर परिन्दे को बैठे हुए देखा तो फ़रमाया : ऐ परिन्दे ! तेरे लिये कितनी भलाई है कि तू फल खाता और दरख़्त पर बैठता है काश ! मैं भी एक फल होता जिसे परिन्दे खा लेते।[1]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा कि आप ने ज़मीन से एक तिन्का उठा कर फ़रमाया : काश ! मैं एक तिन्का होता। काश ! मैं कुछ भी न होता। काश ! मैं पैदा न हुवा होता। काश ! मैं भूला बिसरा होता।[2]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरकारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस मोमिन बन्दे की आंख से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से आंसू निकले, ख़्वाह वोह मच्छर के सर जितना हो, फिर वोह आंसू रुख़्सार के सामने के ह़िस्से को मस करे तो **अल्लाह** तआ़ला उस पर दोज़ख़ की आग ह़राम कर देता है[3]।"[4]

दूसरा वस्फ़ येह बयान हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की आयात सुन कर उन के ईमान में इज़ाफ़ा हो जाता है।** यहां ईमान में ज़ियादती से ईमान की मिक़्दार में ज़ियादती मुराद नहीं बल्कि इस से मुराद ईमान की कैफ़िय्यत में ज़ियादती है।

तीसरा वस्फ़ येह बयान हुवा कि **वोह अपने रब** عَزَّوَجَلَّ **पर ही भरोसा करते हैं।** या'नी वोह अपने तमाम काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द कर देते हैं, उस के इ़लावा किसी से उम्मीद रखते हैं और न किसी से डरते हैं।[5]

तवक्कुल का ह़क़ीक़ी मा'ना और तवक्कुल की फ़ज़ीलत

इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : तवक्कुल का येह मा'ना नहीं कि इन्सान अपने आप को और अपनी कोशिशों को मोह्मल छोड़ दे जैसा कि बा'ज़ जाहिल कहते हैं बल्कि तवक्कुल येह है कि इन्सान ज़ाहिरी अस्बाब को इख़्तियार करे लेकिन दिल से उन अस्बाब पर भरोसा न करे बल्कि **अल्लाह** तआ़ला की नुसरत, उस की ताईद और उस की ह़िमायत पर भरोसा करे।[6] इस की ताईद इस ह़दीसे पाक से भी होती है चुनान्चे ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, मैं

1 .....کتاب الزھد لابن مبارك، باب تعظیم ذكر اللّٰه عزّوجل، ص ۸۱، رقم: ۲۴۰.
2 .....کتاب الزھد لابن مبارك، باب تعظیم ذكر اللّٰه عزّوجل، ص ۷۹، رقم: ۲۳۴.
3 .....ابن ماجه، کتاب الزهد، باب الحزن والبكاء، ۴/۴۶۷، الحدیث: ۴۱۹۷.
4 ..... दिल में **अल्लाह** तआ़ला का ख़ौफ़ पैदा करने की तरग़ीब पाने और इस से मुतअ़ल्लिक़ दीगर चीज़ों की मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये किताब "ख़ौफ़े ख़ुदा" (मत्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ मुफ़ीद है।
5 .....خازن، الانفال، تحت الآیة: ۲، ۲/۱۷۶. 6 .....تفسیر کبیر، ال عمران، تحت الآیة: ۱۵۹، ۳/۴۱۰.

www.dawateislami.net

अपने ऊंट को बांध कर तवक्कुल करूं या उसे खुला छोड़ कर तवक्कुल करूं ? इर्शाद फ़रमाया : ''तुम उसे बांधो फिर तवक्कुल करो।''(1)

और तवक्कुल की फ़ज़ीलत के बारे में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार बिग़ैर ह़िसाब जन्नत में जाएंगे और येह वोह लोग होंगे जो मन्तर जन्तर नहीं करते, फ़ाल के लिये चिड़ियां नहीं उड़ाते और अपने रब عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा करते हैं।''(2)

الَّذِیْنَ یُقِیْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ۝۳

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो नमाज़ क़ाइम रखें और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करें।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह जो नमाज़ क़ाइम रखते हैं और हमारे दिये हुए रिज़्क़ में से हमारी राह में ख़र्च करते हैं।

اَلَّذِیْنَ یُقِیْمُوْنَ الصَّلٰوةَ **: वोह जो नमाज़ क़ाइम रखते हैं।** इस से पहली आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने कामिल ईमान वालों के जो तीन औसाफ़ बयान किये या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र के वक़्त डर जाना, तिलावते क़ुरआन के वक़्त ईमान ज़ियादा होना और **अल्लाह** तआ़ला पर तवक्कुल करना, इन तीनों का तअ़ल्लुक़ क़ल्बी आ'माल से था जब कि इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने उन के दो औसाफ़ ऐसे बयान फ़रमाए हैं कि जिन का तअ़ल्लुक़ ज़ाहिरी आ'ज़ा के आ'माल से है, **पहला वस्फ़** येह इर्शाद फ़रमाया कि ''वोह जो नमाज़ क़ाइम रखते हैं'' नमाज़ क़ाइम रखने से मुराद येह है कि फ़र्ज़ नमाज़ों को उन की तमाम शराइत़ व अरकान के साथ उन के अवक़ात में अदा करना। **दूसरा वस्फ़** येह इर्शाद फ़रमाया कि ''और हमारे दिये हुए रिज़्क़ में से हमारी राह में ख़र्च करते हैं'' इस का मत़लब येह है कि वोह अपने माल उस जगह ख़र्च करते हैं जहां ख़र्च करने का **अल्लाह** तआ़ला ने हुक्म इर्शाद फ़रमाया, इस में ज़कात, ह़ज, जिहाद में ख़र्च करना और नेक कामों में ख़र्च करना सब दाख़िल है(3)।(4)

1 .....ترمذی، کتاب صفة یوم القیامة، ٦٠-باب، ٤/٢٣٢، الحدیث: ٢٥٢٥.
2 .....بخاری، کتاب الرقاق، باب ومن یتوکل علی اللّٰہ فھو حسبہ، ٤/٢٤٠، رقم ٦٤٧٢.
3 .....خازن، الانفال، تحت الآیة: ٣، ٢/١٧٧.
4 ..... **अल्लाह** तआ़ला की राह में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल और अह़काम वग़ैरा की मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये किताब ''ज़ियाए सदक़ात'' (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۚ﴿۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येही सच्चे मुसल्मान हैं इन के लिये दरजे हैं इन के रब के पास और बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त की रोज़ी ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येही सच्चे मुसल्मान हैं, इन के लिये इन के रब के पास दरजात और मग़्फ़िरत और इ़ज़्ज़त वाला रिज़्क़ है ।

﴿اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا﴾ **: येही सच्चे मुसल्मान हैं ।** ﴾ इन्हें सच्चे मुसल्मान का लक़ब इस लिये अ़ता हुवा कि जहां इन के दिल ख़शिय्यते इलाही, इख़्लास और तवक्कुल जैसी सिफ़ाते आ़लिया से मुत्तसिफ़ हैं वहीं इन के ज़ाहिरी आ'ज़ा भी रुकूअ़ व सुजूद और राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने में मसरूफ़ हैं ।[1]

﴿لَهُمْ دَرَجٰتٌ﴾ **: इन के लिये दरजे हैं ।** ﴾ इस आयत में मा क़ब्ल मज़्कूर पांच औसाफ़ के ह़ामिल मोमिनीन के लिये तीन जज़ाएं बयान की गई हैं :

(1)..... इन के लिये इन के रब के पास दरजात हैं । या'नी जन्नत में इन के लिये मरातिब हैं और इन में से बा'ज़ बा'ज़ से आ'ला हैं क्यूं कि मज़्कूरा बाला औसाफ़ को अपनाने में मोमिनीन के अह़वाल में तफ़ावुत है इसी लिये जन्नत में इन के मरातिब भी जुदागाना हैं ।

(2)..... इन के लिये मग़्फ़िरत है । या'नी इन के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे ।

(3)..... और इ़ज़्ज़त वाला रिज़्क़ है । या'नी वोह रिज़्क़ है जो **अल्लाह** तआ़ला ने इन के लिये जन्नत में तय्यार फ़रमाया है । इसे इ़ज़्ज़त वाला इस लिये फ़रमाया गया कि इन्हें येह रिज़्क़ हमेशा ता'ज़ीम व इक्राम के साथ और मेह़नतो मशक़्क़त के बिग़ैर अ़ता किया जाएगा ।[2]

كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۖ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ

1 .....بیضاوی، الانفال، تحت الآیۃ: ٤، ٣/٨٨-٨٩.

2 .....خازن، الانفال، تحت الآیۃ: ٤، ٢/١٧٨.

www.dawateislami.net

لَكٰرِهُوْنَ ۙ﴿۵﴾ يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ
اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿۶﴾ وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا
لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ
الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۙ﴿۷﴾ لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ
وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जिस त़रह़ ऐ महबूब तुम्हें तुम्हारे रब ने तुम्हारे घर से ह़क़ के साथ बरआमद किया और बेशक मुसल्मानों का एक गुरौह इस पर नाख़ुश था। सच्ची बात में तुम से झगड़ते थे बा'द इस के कि ज़ाहिर हो चुकी गोया वोह आंखों देखी मौत की त़रफ़ हांके जाते हैं। और याद करो जब **अल्लाह** ने तुम्हें वा'दा दिया था कि इन दोनों गुरौहों में एक तुम्हारे लिये है और तुम येह चाहते थे कि तुम्हें वोह मिले जिस में कांटे का खटका नहीं और **अल्लाह** येह चाहता था कि अपने कलाम से सच को सच कर दिखाए और काफ़िरों की जड़ काट दे। कि सच को सच करे और झूट को झूटा पड़े बुरा मानें मुजरिम।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जैसे तुम्हें तुम्हारे रब ने तुम्हारे घर से ह़क़ के साथ बरआमद किया ह़ालां कि यक़ीनन मुसल्मानों का एक गुरौह इस पर नाख़ुश था। येह ह़क़ बात के बारे में उस के रोशन हो जाने के बा'द तुम से झगड़ते थे गोया उन्हें आंखों देखी मौत की त़रफ़ हांका जा रहा है। और याद करो जब **अल्लाह** ने तुम से वा'दा किया कि इन दोनों गुरौहों में एक तुम्हारे लिये है और तुम येह चाहते थे कि तुम्हें वोह मिले जिस में कांटे का खटका न हो और **अल्लाह** येह चाहता था कि अपने कलाम से सच को सच कर दिखाए और काफ़िरों की जड़ काट दे। ताकि सच को सच्चा कर दिखाए और झूट को झूटा कर दिखाए अगर्चे मुजरिम ना पसन्द करें।

﴿كَمَا : **जिस त़रह**।﴾ इस आयत का मा'ना येह है कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, माले ग़नीमत का मुसल्मानों के इख़्तियार से निकाल कर आप के इख़्तियार में दे देना ऐसे ही ह़क़ है जैसे आप का ग़ज़्वए बद्र के लिये अपने घर से निकलना बरह़क़ था अगर्चे दोनों चीज़ें त़ब्ई त़ौर पर बा'ज़ मुसल्मानों की त़बीअ़त पर गिरां गुज़र रही हैं।

www.dawateislami.net

وَ اِنَّ فَرِیْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِیْنَ لَكٰرِهُوْنَ : हालां कि यक़ीनन मुसल्मानों का एक गुरौह इस पर नाख़ुश था । इस गुरौह के नाख़ुश होने की वज्ह येह थी कि वोह देख रहे थे कि उन की ता'दाद कम है, हथियार थोड़े हैं जब कि दुश्मन की ता'दाद भी ज़ियादा है और वोह अस्लह़ा वग़ैरा का बड़ा सामान रखता है । इन आयात में मज़्कूर वाक़िए़ का ख़ुलासा येह है कि मुल्के शाम से अबू सुफ़्यान के एक तिजारती क़ाफ़िले के साथ आने की ख़बर पा कर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम के साथ उन से मुक़ाबले के लिये रवाना हुए तो मक्कए मुकर्रमा से अबू जह्ल क़ुरैश का एक लश्करे गिरां ले कर उस तिजारती क़ाफ़िले की इमदाद के लिये रवाना हुवा । अबू सुफ़्यान तो रस्ते से कतरा कर अपने क़ाफ़िले के हमराह साह़िले समुन्दर के रास्ते पर चल पड़े और अबू जह्ल से उस के रफ़ीक़ों ने कहा कि क़ाफ़िला तो बच गया इस लिये अब मक्कए मुकर्रमा वापस चल । अबू जह्ल ने इन्कार कर दिया और वोह ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जंग करने के इरादे से बद्र की त़रफ़ चल पड़ा । नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मश्वरा किया और फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है कि **अल्लाह** तआ़ला कुफ़्फ़ार के दोनों गुरौहों या'नी तिजारती क़ाफ़िले या क़ुरैश के लश्कर में से एक पर मुसल्मानों को फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाएगा । सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने इस बात में मुवाफ़क़त की लेकिन बा'ज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने येह उ़ज़्र पेश किया कि हम इस तय्यारी से नहीं चले थे और न हमारी ता'दाद इतनी है और न ही हमारे पास काफ़ी अस्लह़े का सामान है । येह उ़ज़्र रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को गिरां गुज़रा और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क़ाफ़िला तो साह़िल की त़रफ़ निकल गया जब कि अबू जह्ल सामने आ रहा है । इस पर उन लोगों ने फिर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, क़ाफ़िले ही का तआ़क़ुब कीजिये और दुश्मन के लश्कर को छोड़ दीजिये । येह बात ख़ात़िरे अक़्दस पे ना गवार हुई तो ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर और ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने खड़े हो कर अपने इख़्लासो फ़रमां बरदारी और रिज़ाजूई व जां निसारी का इज़्हार किया और बड़ी क़ुव्वतो इस्तिह़्काम के साथ अ़र्ज़ की, कि वोह किसी त़रह़ मरज़िये मुबारक के ख़िलाफ़ सुस्ती करने वाले नहीं हैं । फिर और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने भी अ़र्ज़ की, कि **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जो हुक्म फ़रमाया उस के मुत़ाबिक़ तशरीफ़ ले चलें हम आप के साथ हैं कभी पीछे न हटेंगे, हम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाए हैं, हम ने आप की तस्दीक़ की और हम ने आप की पैरवी के अ़ह्द किये हैं । हमें आप

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ में समुन्दर के अन्दर कूद जाने से भी कोई उ़ज़्र नहीं है। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : चलो, **अल्लाह** तआ़ला की बरकत पर भरोसा करो, उस ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है और मैं तुम्हें बिशारत देता हूं कि मुझे दुश्मनों के गिरने की जगह नज़र आ रही है। इस के बा'द हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुफ़्फ़ार के मरने और गिरने की जगह हर एक के नाम के साथ बता दी और एक एक की जगह पर निशानात लगा दिये और येह मो'जिज़ा देखा गया कि उन में से जो मर कर गिरा उसी निशान पर गिरा और उस से ख़त़ा न की।[1]

नोट : ग़ज़्वए बद्र से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात के लिये सूरए आले इ़मरान की आयत **123** ता **127** की तफ़्सीर मुलाह़ज़ा कीजिये।

اِذْ تَسْتَغِیْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّیْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓىٕكَةِ مُرْدِفِیْنَ ۝۹ وَ مَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَ لِتَطْمَىٕنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَ مَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ۝۱۰ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जब तुम अपने रब से फ़रियाद करते थे तो उस ने तुम्हारी सुन ली कि मैं तुम्हें मदद देने वाला हूं हज़ार फ़िरिश्तों की क़ित़ार से। और येह तो **अल्लाह** ने किया मगर तुम्हारी ख़ुशी को और इस लिये कि तुम्हारे दिल चैन पाएं और मदद नहीं मगर **अल्लाह** की त़रफ़ से बेशक **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : याद करो जब तुम अपने रब से फ़रियाद करते थे तो उस ने तुम्हारी फ़रियाद क़बूल की, कि मैं एक हज़ार लगातार आने वाले फ़िरिश्तों के साथ तुम्हारी मदद करने वाला हूं। और **अल्लाह** ने इस को ख़ुश ख़बरी के लिये ही बनाया और इस लिये कि तुम्हारे दिल मुत्मइन हो जाएं और मदद सिर्फ़ **अल्लाह** ही की त़रफ़ से होती है। बेशक **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाला है।

اِذْ تَسْتَغِیْثُوْنَ رَبَّكُمْ : याद करो जब तुम अपने रब से फ़रियाद करते थे। शाने नुज़ूल : ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ग़ज़्वए बद्र के दिन रसूले करीम

[1] ……خازن، الانفال، تحت الآیۃ: ۵-۷، ۲/۱۷۸-۱۸۰.

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुश्रिकीन को मुलाहज़ा फ़रमाया तो वोह एक हज़ार थे और आप के साथ तीन सो उन्नीस मर्द थे। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़िब्ले की त़रफ़ मुंह किया और अपने बा बरकत हाथ फैला कर अपने रब عَزَّوَجَلَّ से येह दुआ करने लगे : ''या रब ! عَزَّوَجَلَّ, तू ने जो मुझ से वा'दा किया है उसे पूरा फ़रमा। या रब ! عَزَّوَجَلَّ, तू ने मुझ से जो वा'दा किया है वोह इनायत फ़रमा। या रब ! عَزَّوَجَلَّ, अगर तू अहले इस्लाम की इस जमाअ़त को हलाक कर देगा तो ज़मीन में तेरी परस्तिश न होगी।'' हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इसी त़रह़ दुआ करते रहे यहां तक कि मुबारक कन्धों से चादर शरीफ़ उतर गई। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ाज़िर हुए और चादरे मुबारक शानए अक़्दस पर डाल कर अ़र्ज़ की : या नबिय्यल्लाह ! अपने रब عَزَّوَجَلَّ के साथ आप की मुनाजात काफ़ी हो गई वोह बहुत जल्द अपना वा'दा पूरा फ़रमाएगा। इस पर येह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई।[1]

﴿اَنِّیْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓىٕكَةِ مُرْدِفِیْنَ﴾ **: मैं एक हज़ार लगातार आने वाले फ़िरिश्तों के साथ तुम्हारी मदद करने वाला हूं।**﴾ चुनान्चे पहले एक हज़ार फ़िरिश्ते आए फिर तीन हज़ार फिर पांच हज़ार। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि मुसल्मान उस दिन काफ़िरों का तआ़क़ुब करते थे और काफ़िर मुसल्मानों के आगे आगे भागता जाता था कि अचानक ऊपर से कोड़े की आवाज़ आती और सुवार का येह कलिमा सुना जाता था ''اَقْدِمْ حَیْزُوْمُ'' या'नी आगे बढ़ ऐ ह़ैज़ूम (ह़ैज़ूम ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام के घोड़े का नाम है) और नज़र आता था कि काफ़िर गिर कर मर गया और उस की नाक तल्वार से उड़ा दी गई और चेहरा ज़ख़्मी हो गया। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अपने येह मुआ़यने बयान किये तो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह तीसरे आस्मान की मदद है।[2]

नोट : ग़ज़्वए बद्र में फ़िरिश्तों के नुज़ूल से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात के लिये सूरए आले इ़मरान आयत 124 के तह़्त तफ़्सीर मुलाह़ज़ा कीजिये।

اِذْ یُغَشِّیْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَ یُنَزِّلُ عَلَیْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّیُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَ یُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّیْطٰنِ وَ لِیَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ

1 .....مسلم، کتاب الجهاد والسیر، باب الامداد بالملائکة فی غزوة بدر... الخ، ص ۹۶۹، الحدیث: ۵۸ (۱۷۶۳).
2 .....مسلم، کتاب الجهاد والسیر، باب الامداد بالملائکة فی غزوة بدر... الخ، ص ۹۶۹، الحدیث: ۵۸ (۱۷۶۳).

www.dawateislami.net

وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ﴿۱۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जब उस ने तुम्हें ऊंघ से घेर दिया तो उस की त़रफ़ से चैन थी और आस्मान से तुम पर पानी उतारा कि तुम्हें उस से सुथरा कर दे और शैत़ान की नापाकी तुम से दूर फ़रमावे और तुम्हारे दिलों की ढारस बंधाए और उस से तुम्हारे क़दम जमा दे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : याद करो जब उस ने अपनी त़रफ़ से तुम्हारी तस्कीन के लिये तुम पर ऊंघ डाल दी और तुम पर आस्मान से पानी उतारा ताकि उस के ज़रीए़ वोह तुम्हें पाक कर दे और तुम से शैत़ान की नापाकी को दूर कर दे और तुम्हारे दिलों को मज़बूत़ कर दे और उस से तुम्हारे क़दम जमा दे।

﴿اِذْ یُغَشِّیْكُمُ النُّعَاسَ﴾ **: याद करो जब उस ने तुम पर ऊंघ डाल दी ।﴾** ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ग़ुनूदगी अगर जंग में हो तो अम्न है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है और नमाज़ में हो तो शैत़ान की त़रफ़ से है। जंग में ग़ुनूदगी का अम्न होना इस से ज़ाहिर है कि जिसे जान का अन्देशा हो उसे नींद और ऊंघ नहीं आती, वोह ख़त़रे और इज़्त़िराब में रहता है। शदीद ख़ौफ़ के वक़्त ग़ुनूदगी आना ह़ुसूले अम्न और ज़वाले ख़ौफ़ की दलील है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि जब मुसल्मानों को दुश्मनों की कसरत और मुसल्मानों की क़िल्लत से जानों का ख़ौफ़ हुवा और बहुत ज़ियादा प्यास लगी तो उन पर ग़ुनूदगी डाल दी गई जिस से उन्हें राह़त ह़ासिल हुई, थकान और प्यास दूर हुई और वोह दुश्मन से जंग करने पर क़ादिर हुए। येह ऊंघ उन के ह़क़ में ने'मत थी। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि येह ऊंघ मो'जिज़े के ह़ुक्म में है क्यूं कि यक्बारगी सब को ऊंघ आई और कसीर जमाअ़त का शदीद ख़ौफ़ की ह़ालत में इस त़रह़ यक्बारगी ऊंघ जाना ख़िलाफ़े आ़दत है।[1]

﴿وَیُنَزِّلُ عَلَیْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً﴾ **: और तुम पर आस्मान से पानी उतारा ।﴾** ग़ज़्वए बद्र के दिन मुसल्मान रेगिस्तान में उतरे तो उन के और उन के जानवरों के पाउं रेत में धंसे जाते थे जब कि मुश्रिकीन उन से पहले पानी की जगहों पर क़ब्ज़ा कर चुके थे। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ में से बा'ज़ को वुज़ू की और बा'ज़ को ग़ुस्ल की ज़रूरत थी और इस के साथ प्यास की शिद्दत भी थी। शैत़ान ने उन के दिल में वस्वसा डाला कि तुम्हारा गुमान है कि तुम ह़क़ पर हो, तुम में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी हैं और तुम **अल्लाह** वाले हो जब कि ह़ाल येह है कि मुश्रिकीन

[1] .....خازن، الانفال، تحت الآیۃ: ۱۱، ۲/۱۸۲.

www.dawateislami.net

ग़ालिब हो कर पानी पर पहुंच गए और तुम वुज़ू और ग़ुस्ल किये बिग़ैर नमाज़ें पढ़ रहे हो तो तुम्हें दुश्मन पर फ़त्ह़ याब होने की किस त़रह़ उम्मीद है ? शैत़ान का येह वस्वसा यूं ज़ाइल हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला ने बारिश भेजी जिस से वादी सैराब हो गई और मुसल्मानों ने उस से पानी पिया, ग़ुस्ल और वुज़ू किये, अपनी सुवारियों को पानी पिलाया और अपने बरतनों को पानी से भर लिया, बारिश की वज्ह से ग़ुबार भी बैठ गया और ज़मीन इस क़ाबिल हो गई कि उस पर क़दम जमने लगे, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ के दिल ख़ुश हो गए और बारिश की ने'मत काम्याबी और फ़त्ह़ ह़ासिल होने की दलील हुई ।[1]

اِذْ یُوْحِیْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓىٕكَةِ اَنِّیْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْاؕ سَاُلْقِیْ فِیْ قُلُوْبِ الَّذِیْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَ اضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍؕ(۱۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जब ऐ महबूब तुम्हारा रब फ़िरिश्तों को वह़ी भेजता था कि मैं तुम्हारे साथ हूं तुम मुसल्मानों को साबित रखो अ़न्क़रीब मैं काफ़िरों के दिलों में हैबत डालूंगा तो काफ़िरों की गरदनों से ऊपर मारो और उन की एक एक पोर पर ज़र्ब लगाओ ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : याद करो ऐ ह़बीब ! जब तुम्हारा रब फ़िरिश्तों को वह़ी भेजता था कि मैं तुम्हारे साथ हूं तुम मुसल्मानों को साबित रखो । अ़न्क़रीब मैं काफ़िरों के दिलों में हैबत डाल दूंगा तो तुम काफ़िरों की गरदनों के ऊपर मारो और उन के एक एक जोड़ पर ज़र्बें लगाओ ।

﴿اَنِّیْ مَعَكُمْ﴾ **: मैं तुम्हारे साथ हूं ।﴾** आयत के इस ह़िस्से की **एक तफ़्सीर** येह है कि जब फ़िरिश्ते मुसल्मानों की मदद कर रहे थे तो **अल्लाह** तआ़ला ने फ़िरिश्तों की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई कि मैं तुम्हारे साथ हूं । **दूसरी तफ़्सीर** येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने फ़िरिश्तों की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई कि मैं मुसल्मानों के साथ हूं तुम उन की मदद करो और उन्हें साबित क़दम रखो । फ़िरिश्तों के साबित क़दम रखने का मा'ना येह है कि फ़िरिश्तों ने सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

[1] .....تفسیر بغوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۱، ۲/۱۹۷.

www.dawateislami.net

को ख़बर दी कि **अल्लाह** तआ़ला मुसल्मानों की मदद फ़रमाएगा और रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुसल्मानों को येह ख़बर दे दी (जिस से मुसल्मानों के दिल मुत्मइन हो गए और वोह इस जंग में साबित क़दम रहे) । दूसरी तफ़्सीर ज़ियादा क़वी है क्यूं कि इस कलाम से मक़्सूद ख़ौफ़ ज़ाइल करना है क्यूं कि फ़िरिश्ते कुफ़्फ़ार से नहीं डरते महज़ मुसल्मान ख़ौफ़ज़दा थे ।[1]

﴿فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ﴾ **: तो तुम काफ़िरों की गरदनों के ऊपर मारो ।** ﴾ एक क़ौल येह है कि इस आयत में ख़िताब मुसल्मानों से है और एक क़ौल येह है कि ख़िताब फ़िरिश्तों से है ।[2]

जंगे बद्र में फ़िरिश्तों ने लड़ाई में बा क़ाइदा ह़िस्सा लिया था

मुफ़स्सिरीन की एक ता'दाद के मुताबिक़ जंगे बद्र में फ़िरिश्तों ने बा क़ाइदा लड़ाई में ह़िस्सा लिया था यहां हम दो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के बयानात तह़रीर करते हैं जिन से मुफ़स्सिरीन के इस मौक़िफ़ की ताईद होती है । चुनान्चे

ह़ज़रते अबू दावूद माज़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जो ग़ज़्वए बद्र में ह़ाज़िर हुए थे, फ़रमाते हैं कि मैं मुश्रिक की गरदन मारने के लिये उस के दर पै हुवा लेकिन उस का सर मेरी तल्वार पहुंचने से पहले ही कट कर गिर गया तो मैं ने जान लिया कि इसे किसी और ने क़त्ल किया है ।[3]

ह़ज़रते सह्ल बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि ग़ज़्वए बद्र के दिन हम में से कोई तल्वार से मुश्रिक की त़रफ़ इशारा करता था तो उस की तल्वार पहुंचने से पहले ही मुश्रिक का सर जिस्म से जुदा हो कर गिर जाता था ।[4]

नोट : याद रहे कि ग़ज़्वए बद्र का वाक़िआ़ **2** सि.हि. **17** रमज़ानुल मुबारक, बरोज़ जुमुआ़ सुब्ह़ के वक़्त पेश आया था ।[5]

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۱۳﴾

1 .....تفسیر کبیر، الانفال، تحت الآیۃ: ۱۲، ۵/۴۶۳ . 2 .....بغوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۲، ۲/۱۹۷ .
3 .....مسند امام احمد، مسند الانصار، حدیث ابی داود المازنی رضی اللہ عنہ، ۹/۲۰۲، الحدیث: ۲۳۸۳۹ .
4 .....معرفۃ الصحابہ، سھل بن حنیف بن واھب بن العکیم، ۲/۴۴۱، رقم: ۳۲۹۹ .
5 .....خازن، الانفال، تحت الآیۃ: ۱۲، ۲/۱۸۴ .

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह इस लिये कि उन्हों ने **अल्लाह** और उस के रसूल से मुख़ालफ़त की और जो **अल्लाह** और उस के रसूल से मुख़ालफ़त करे तो बेशक **अल्लाह** का अ़ज़ाब सख़्त है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह अ़ज़ाब इस लिये हुवा कि उन्हों ने **अल्लाह** और उस के रसूल से मुख़ालफ़त की और जो **अल्लाह** और उस के रसूल से मुख़ालफ़त करे तो बेशक **अल्लाह** सख़्त सज़ा देने वाला है।

﴿ذٰلِكَ : **येह अ़ज़ाब।**﴾ या'नी ग़ज़्वए बद्र के दिन कुफ़्फ़ार के दिलों में रो'ब डाले जाने, क़त्ल और क़ैदी होने के अ़ज़ाब का सबब येह था कि उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुख़ालफ़त की और ग़ज़्वए बद्र के दिन जो अ़ज़ाब उन पे नाज़िल हुवा येह उस अ़ज़ाब के मुक़ाबले में बहुत थोड़ा है जो क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला ने उन के लिये तय्यार कर रखा है।[1]

ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह तो चखो और इस के साथ येह है कि काफ़िरों को आग का अ़ज़ाब है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह (सज़ा है) तो इस का मज़ा चखो और इस के साथ येह भी है कि काफ़िरों के लिये आग का अ़ज़ाब है।

﴿ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ : **येह तो चखो।**﴾ या'नी ऐ कुफ़्फ़ार ! ग़ज़्वए बद्र में तुम्हारा क़त्ल और क़ैद होना तो दुन्या की सज़ा है, तुम इस का मज़ा चखो और इस के साथ येह भी है कि आख़िरत में काफ़िरों के लिये आग का अ़ज़ाब है।[2]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ﴿۱۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो जब काफ़िरों के लाम से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो उन्हें पीठ न दो।

1 .....تفسیر کبیر، الانفال، تحت الآیۃ: ۱۳، ۵/۴۶۴.

2 ..... جلالین، الانفال، تحت الآیۃ: ۱۴، ص۱۴۸-۱۴۹، خازن، الانفال، تحت الآیۃ: ۱۴، ۲/۱۸۴، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! जब काफ़िरों के लश्कर से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो उन से पीठ न फेरो।

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا﴾ **: ऐ ईमान वालो !﴾** इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने येह हुक्म दिया है कि मैदाने जंग में मुसल्मान काफ़िरों को पीठ न दिखाएं और येह हुक्म उस वक़्त है कि जब कुफ़्फ़ार मुसल्मानों से ता'दाद में डबल हों इस से ज़ियादा न हों और अगर कुफ़्फ़ार की ता'दाद मुसल्मानों के मुक़ाबले में डबल से ज़ियादा हो तो फिर मुसल्मानों का पीठ फेर कर भागना ना जाइज़ व ह़राम नहीं है। जुम्हूर के नज़्दीक एक सो मुसल्मानों का दो सो कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले से भागना किसी ह़ाल में जाइज़ नहीं है और अगर काफ़िरों की ता'दाद दो सो से ज़ियादा हो तो उन के मुक़ाबले से भागना अगर्चे जाइज़ है लेकिन सब्रो इस्तिक़ामत से उन के मुक़ाबले में डटे रहना बेहतर और अफ़्ज़ल है।[1]

وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَىٕذٍ دُبُرَهٗۤ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो उस दिन उन्हें पीठ देगा मगर लड़ाई का हुनर करने या अपनी जमाअ़त में जा मिलने को तो वोह **अल्लाह** के ग़ज़ब में पलटा और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और क्या बुरी जगह है पलटने की।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो उस दिन लड़ाई में हुनर मन्दी का मुज़ाहरा करने या अपने लश्कर से मिलने के इ़लावा किसी और सूरत में उन्हें पीठ दिखाएगा तो वोह **अल्लाह** के ग़ज़ब का मुस्तह़िक़ होगा और उस का ठिकाना जहन्नम है और बहुत बुरी लौटने की जगह है।

﴿وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَىٕذٍ دُبُرَهٗ﴾ **: और जो उस दिन उन्हें पीठ दिखाएगा ।﴾** या'नी मुसल्मानों में से जो जंग में कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले से भागा वोह ग़ज़बे इलाही में गिरिफ़्तार हुवा और उस का ठिकाना दोज़ख़ है अलबत्ता दो सूरतें ऐसी हैं जिन में वोह पीठ दिखा कर भागने वाला नहीं है।

(1)..... किसी जंगी ह़िक्मते अ़मली की वज्ह से पीछे हटना मसलन पीछे हट कर ह़म्ला करना ज़ियादा मुअस्सिर हो या ख़त़रनाक जगह से हट कर मह़फ़ूज़ जगह से ह़म्ला करने का

1 .....تفسیر قرطبی، الانفال، تحت الآیۃ: ١٦، ٤/٢٧٢، الجزء السابع.

www.dawateislami.net

क़स्द हो तो इस सूरत में वोह पीठ दिखा कर भागने वाला नहीं है।

(2)..... अपनी जमाअ़त में मिलने के लिये पीछे हटना मसलन मुसल्मान फ़ौजियों का कोई फ़र्द या गुरौह मर्कज़ी जमाअ़त से बिछड़ गया और वोह अपने बचाव के लिये पस्पा हो कर मर्कज़ी जमाअ़त से मिला तो येह भी भागने वालों में शुमार न होगा।

जंगे उहुद और जंगे हुनैन में पस्पाई इख़्तियार करने वाले सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का हुक्म

जंगे उहुद और जंगे हुनैन में जिन सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के क़दम उखड़ गए थे वोह इस आयत की वईद में दाख़िल नहीं हैं क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआने पाक में जंगे उहुद में पस्पाई इख़्तियार करने वाले सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की आ़म मुआ़फ़ी का ए'लान फ़रमा दिया :

اِنَّ الَّذِیْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ یَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِۙ اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّیْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْاۚ وَ لَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक तुम में से वोह लोग जो उस दिन भाग गए जिस दिन दोनों फ़ौजों का मुक़ाबला हुवा, उन्हें शैत़ान ही ने उन के बा'ज़ आ'माल की वज्ह से लग़्ज़िश में मुब्तला किया और बेशक **अल्लाह** ने उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दिया है।

यूंही जंगे हुनैन में जिन सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इब्तिदाअन पस्पाई इख़्तियार की उन के मोमिन रहने की गवाही ख़ुद क़ुरआन में मौजूद है, **अल्लाह** तआ़ला ने उन के क़दम जमाए और उन पर अपना सकीना उतारा, इर्शादे बारी तआ़ला है :

ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِیْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ وَ اَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर **अल्लाह** ने अपने रसूल पर और अहले ईमान पर अपनी तस्कीन नाज़िल फ़रमाई और उस ने (फ़िरिश्तों के) ऐसे लश्कर उतारे जो तुम्हें दिखाई नहीं देते थे।

जो इस त़रह़ के वाक़िआ़त को ले कर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की शान में गुस्ताख़ी करे और उन पर ज़बाने त़ा'न दराज़ करे वोह बड़ा बद बख़्त है कि उन की मुआ़फ़ी का ए'लान रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ ख़ुद फ़रमा चुका है।

1 .....آل عمران: ۱۵۵. 2 .....التوبہ: ۲۶.

www.dawateislami.net

فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۷﴾ ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो तुम ने उन्हें क़त्ल न किया बल्कि **अल्लाह** ने उन्हें क़त्ल किया और ऐ महबूब वोह ख़ाक जो तुम ने फेंकी तुम ने न फेंकी थी बल्कि **अल्लाह** ने फेंकी और इस लिये कि मुसल्मानों को इस से अच्छा इन्आ़म अ़ता फ़रमाए बेशक **अल्लाह** सुनता जानता है। येह तो लो और इस के साथ येह है कि **अल्लाह** काफ़िरों का दाउं सुस्त करने वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो तुम ने उन्हें क़त्ल नहीं किया बल्कि **अल्लाह** ने उन्हें क़त्ल किया और ऐ हबीब ! जब आप ने ख़ाक फेंकी तो आप ने न फेंकी थी बल्कि **अल्लाह** ने फेंकी थी और इस लिये ताकि मुसल्मानों को अपनी त़रफ़ से अच्छा इन्आ़म अ़ता फ़रमाए। बेशक **अल्लाह** सुनने वाला जानने वाला है। येह ह़क़ है और येह कि **अल्लाह** काफ़िरों के मक्रो फ़रेब को कमज़ोर करने वाला है।

﴿فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ﴾ **: तो तुम ने उन्हें क़त्ल नहीं किया ।﴾ शाने नुज़ूल :** जब मुसल्मान जंगे बद्र से वापस हुए तो उन में से एक कहता था कि मैं ने फ़ुलां को क़त्ल किया, दूसरा कहता था मैं ने फ़ुलां को क़त्ल किया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि इस क़त्ल को तुम अपने ज़ोरे बाज़ू और ताक़तो क़ुव्वत की त़रफ़ मन्सूब न करो कि येह दर ह़क़ीक़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इमदाद और उस की तक़्वियत और ताईद है ।[1]

हर अच्छे काम की निस्बत अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ की जाए

इस आयत से मा'लूम हुवा कि अच्छे और नेक काम की निस्बत **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ करनी चाहिये और जब इन्सान कोई अच्छा और नेक काम करे तो उस पर फ़ख़्र नहीं करना चाहिये क्यूं कि नेक काम बन्दा ख़ुद नहीं करता बल्कि जो भी नेक काम करता है उस में **अल्लाह** तआ़ला की तौफ़ीक़ शामिले ह़ाल हो तो ही करता है।

﴿وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى﴾ **: और ऐ महबूब ! जब आप ने ख़ाक फेंकी तो आप ने न फेंकी थी बल्कि अल्लाह ने फेंकी थी ।﴾ शाने नुज़ूल :** इस आयत के शाने नुज़ूल से

1 .....تفسیر بغوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۷، ۲/۱۹۹.

www.dawateislami.net

मुतअ़ल्लिक़ जुम्हूर मुफ़स्सिरीन का मुख़्तार क़ौल येह है कि जब कुफ़्फ़ार और मुसल्मानों की फ़ौजें एक दूसरे के सामने हुईं तो रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मुट्ठी ख़ाक काफ़िरों के चेहरे पर मारी और फ़रमाया ''شَاهَتِ الْوُجُوْه'' या'नी उन लोगों के चेहरे बिगड़ जाएं। वोह ख़ाक तमाम काफ़िरों की आंखों में पड़ी और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ बढ़ कर उन्हें क़त्ल और गिरिफ़्तार करने लगे। कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की शिकस्त का अस्ल सबब ख़ाक की वोह मुट्ठी थी जो ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फेंकी थी। इस मौक़अ़ पर **अल्लाह** तआ़ला ने ये आयत नाज़िल फ़रमाई :

وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ह़बीब ! जब आप ने ख़ाक फेंकी तो वोह आप ने न फेंकी थी बल्कि **अल्लाह** ने फेंकी थी।[1]

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस वाक़िए़ की मन्ज़र कशी करते हुए क्या ख़ूब फ़रमाते हैं :

मैं तेरे हाथों के सदक़े कैसी कंकरियां थीं वोह जिन से इतने काफ़िरों का दफ़्अ़तन मुंह फिर गया

اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۹﴾ ع ۲

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ काफ़िरो अगर तुम फ़ैसला मांगते हो तो येह फ़ैसला तुम पर आ चुका और अगर बाज़ आओ तो तुम्हारा भला है और अगर तुम फिर शरारत करो तो हम फिर सज़ा देंगे और तुम्हारा जथ्था तुम्हें कुछ काम न देगा चाहे कितना ही बहुत हो और इस के साथ येह है कि **अल्लाह** मुसल्मानों के साथ है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ काफ़िरो ! अगर तुम फ़ैसला मांगते हो तो येह फ़ैसला तुम पर आ चुका और अगर तुम बाज़ आ जाओ तो येह तुम्हारे लिये बेहतर है और अगर तुम फिर येही करोगे तो हम भी फिर वोही करेंगे और तुम्हारा गुरौह तुम्हें कोई फ़ाएदा न देगा अगर्चे बहुत ज़ियादा हो और मज़ीद येह कि **अल्लाह** मुसल्मानों के साथ है।

[1] .....تفسیر طبری، الانفال، تحت الآیۃ: ۱۷، ۶/۲۰۳، قرطبی، الانفال، تحت الآیۃ: ۱۷، ۴/۲۷۶، الجزء السابع.

www.dawateislami.net

﴿اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا﴾ **: ऐ काफ़िरो ! अगर तुम फ़ैसला मांगते हो ।﴾ शाने नुज़ूल :** इस आयत में ख़िताब उन मुश्रिकीन से है जिन्हों ने बद्र में सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जंग की और उन में से अबू जह्ल ने अपने और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में येह दुआ की, कि "या रब हम में जो तेरे नज़्दीक अच्छा हो उस की मदद कर और जो बुरा हो उसे मुसीबत में मुब्तला कर ।"[1]

और एक रिवायत में है कि मुश्रिकीन ने मक्कए मुकर्रमा से बद्र की त़रफ़ चलते वक़्त का'बए मुअ़ज़्ज़मा के पर्दों से लिपट कर येह दुआ की थी कि "या रब ! अगर मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ह़क़ पर हों तो उन की मदद फ़रमा और अगर हम ह़क़ पर हों तो हमारी मदद कर" इस पर येह आयत नाज़िल हुई[2] कि जो फ़ैसला तुम ने चाहा था वोह कर दिया गया और जो गुरौह़ ह़क़ पर था उस को फ़त्ह़ दी गई, येह तुम्हारा अपना मांगा हुवा फ़ैसला है । अब आस्मानी फ़ैसले से भी इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत साबित हुई, अबू जह्ल भी इस जंग में ज़िल्लतो रुस्वाई के साथ मारा गया और उस का सर रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश किया गया ।

﴿وَاِنْ تَنْتَهُوْا﴾ **: और अगर तुम बाज़ आ जाओ ।﴾** आयत के इस ह़िस्से में भी कुफ़्फ़ार से ख़िताब है और आयत का मा'ना येह है कि अगर तुम मेरे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दुश्मनी रखने, इन्हें झुटलाने और इन के ख़िलाफ़ जंग करने से बाज़ आ गए तो येह दीन और दुन्या दोनों में तुम्हारे लिये बेहतर है । दीन में इस त़रह़ कि तुम दाइमी अ़ज़ाब से बच जाओगे और सवाब से मालामाल किये जाओगे, जब कि दुन्या में इस त़रह़ कि तुम क़त्ल किये जाने, क़ैदी बनाए जाने और ग़नीमत के त़ौर पर अम्वाल ले लिये जाने से बच जाओगे और अगर तुम ने मुसल्मानों से दोबारा जंग की तो हम फिर मुसल्मानों को तुम पर मुसल्लत़ कर देंगे जैसा कि तुम ग़ज़्वए बद्र में मुशाहदा कर चुके हो और येह जान चुके हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ताईद और नुसरत तुम्हारी बजाए मुसल्मानों के साथ है और तुम कितनी भारी जम्इ़य्यत ले कर क्यूं न आओ वोह तुम्हें शिकस्त से न बचा सकेगी जैसे बद्र के मैदान में तुम्हारा बड़ा जथ्था तुम्हारे किसी काम न आया ।[3]

ग़ैब की एक ख़बर

इस आयत में ग़ैब की ख़बर है कि मुसल्मानों के मुक़ाबले में कुफ़्फ़ार के भारी लश्कर

1 .....خازن، الانفال، تحت الآية: ۱۹، ۱۸۶/۲.
2 .....مدارك، الانفال، تحت الآية: ۱۹، ص۴۰۸. 3 .....تفسير كبير، الانفال، تحت الآية: ۱۹، ۴۶۸/۵.

www.dawateislami.net

भी मग़्लूब हो जाएंगे, **अल्लाह** तआ़ला ने येह ख़बर पूरी फ़रमा दी, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا के अ़ह्दे ख़िलाफ़त और बा'द में भी थोड़े मुसल्मान बहुत से काफ़िरों पर ग़ालिब आए। मुसल्मानों की जंगी तारीख़ का इ़ल्म रखने वाले जानते हैं कि

(1) ग़ज़्वए मौता में सिर्फ़ तीस हज़ार जां निसाराने मुस्त़फ़ा के मुक़ाबले में रूम के बादशाह क़ैसर की फ़ौज की ता'दाद दो लाख थी, लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के शेरों ने इस जंग में परचमे इस्लाम सरनिगूं न होने दिया।

(2)..... जंगे यरमूक में ह़ज़रते अबू उ़बैदा आ़मिर बिन अल जर्राह़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه तक़रीबन **40000** की क़लील फ़ौज के साथ दुश्मन के दस लाख साठ हज़ार फ़ौजियों से टकराए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नुस्रतो ह़िमायत से काम्याबो कामरान हुए।

(3)..... इसी जंग में ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने सिर्फ़ **60** कफ़न बरदोश मुजाहिदीन के साथ दुश्मन के **60000** जंगजू और सर ता पा लौहे से लेस फ़ौजियों के साथ सुब्ह़ से ले कर शाम तक मुक़ाबला किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से उन पर ग़ालिब आ गए।

(4)..... ह़ज़रते त़ारिक़ बिन ज़ियाद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने सिर्फ़ **1700** जांबाज़ मुजाहिदीन के साथ उन्दुलुस के बादशाह लिड्रेक के सत्तर हज़ार शह सुवारों से जंग की और नुस्रते इलाही के सदक़े उन्हें कुचल कर रख दिया।

येह ग़ाज़ी येह तेरे पुर असरार बन्दे जिन्हें तू ने बख़्शा है ज़ौक़े ख़ुदाई
दोनीम इन की ठोकर से सह़रा व दरिया सिमट कर पहाड़ इन की हैबत से राई

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ﴿۲۰﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿۲۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म मानो और सुन सुना कर उस से न फिरो और उन जैसे न होना जिन्हों ने कहा हम ने सुना और वोह नहीं सुनते।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** और उस के रसूल की इताअ़त किया करो और सुन कर उस से मुंह न फेरो। और उन लोगों की त़रह़ न होना जिन्हों ने कहा : हम ने सुन लिया ह़ालां कि वोह नहीं सुनते।

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا﴾ **: ऐ ईमान वालो !** ﴾ इस आयत से मक़्सूद सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त करने का हुक्म देना और इन की ना फ़रमानी से मन्अ़ करना है जब कि **अल्लाह** तआ़ला की इताअ़त का ज़िक्र इस बात पर मुतनब्बेह करने के लिये है कि रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की इताअ़त है जैसा कि एक मक़ाम पर सराह़त के साथ इर्शाद फ़रमाया :

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ[1]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जिस ने रसूल का हुक्म माना बेशक उस ने **अल्लाह** का हुक्म माना।[2]

﴿وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ﴾ **: और उन लोगों की त़रह़ न होना।** ﴾ इर्शाद फ़रमाया कि उन लोगों की त़रह़ न होना जिन्हों ने कहा : हम ने सुन लिया ह़ालां कि वोह नहीं सुनते, क्यूं कि जो सुन कर फ़ाएदा न उठाए और नसीह़त ह़ासिल न करे उस का सुनना सुनना ही नहीं है। येह मुनाफ़िक़ीन और मुश्रिकीन का ह़ाल है मुसल्मानों को इस से दूर रहने का हुक्म दिया जा रहा है।

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۲۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक सब जानवरों में बदतर **अल्लाह** के नज़्दीक वोह हैं जो बहरे गूंगे हैं जिन को अ़क़्ल नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक सब जानवरों में बदतर **अल्लाह** के नज़्दीक वोह हैं जो बहरे गूंगे हैं जिन को अ़क़्ल नहीं।

﴿اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ﴾ **: बेशक सब जानवरों में बदतर।** ﴾ या'नी मख़्लूक़े ख़ुदा में से रूए ज़मीन पर **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक बदतर वोह हैं जो न ह़क़ सुनते हैं, न ह़क़ बात बोलते हैं और न ह़क़ को समझते हैं। कान और ज़बान व अ़क़्ल से फ़ाएदा नहीं उठाते बल्कि जानवरों से भी बदतर हैं क्यूं कि येह दीदा व दानिस्ता बहरे गूंगे बनते और अ़क़्ल से दुश्मनी करते हैं। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : येह आयत बनी अ़ब्दुद्दार

1 .....النساء: ۸۰. 2 .....ابو سعود، الانفال، تحت الآیة: ۲۰، ۲/۳۵۳.

www.dawateislami.net

बिन कुसय के हक़ में नाज़िल हुई जो कहते थे कि जो कुछ मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लाए हम उस से बहरे गूंगे अन्धे हैं, येह सब लोग जंगे उहुद में क़त्ल हो गए और इन में से सिर्फ़ दो शख़्स हज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर और हज़रते सुवैबित़ बिन हरमला رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ईमान लाए।[1]

وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ؕ وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۲۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर **अल्लाह** उन में कुछ भलाई जानता तो उन्हें सुना देता और अगर सुना देता जब भी अन्जाम कार मुंह फेर कर पलट जाते।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर **अल्लाह** उन में कुछ भलाई जानता तो उन्हें सुना देता और अगर वोह उन्हें सुना देता तो भी वोह रू गर्दानी करते हुए पलट जाते।

وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا : और अगर अल्लाह उन में कुछ भलाई जानता बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि अहले मक्का हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से येह फ़रमाइश करते कि आप हमारे सामने कुसय को ज़िन्दा कर दें क्यूं कि वोह बा बरकत बुज़ुर्ग हैं, अगर उस ने आप की नुबुव्वत की गवाही दे दी तो हम आप पर ईमान ले आएंगे। **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : अगर उन की ख़्वाहिश के मुताबिक़ हम कुसय को ज़िन्दा कर देते और वोह उस का कलाम सुन लेते तो भी वोह रू गर्दानी करते हुए पलट जाते।[2] यहां ख़ैर से मुराद सिद्क़ो रग़बत है या'नी अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन लोगों के दिलों में क़बूले हक़ का सच्चा जज़्बा और रग़बत जानता या'नी पाता तो उन्हें सुना देता या'नी उन के मत़लूबा मो'जिज़ात उन्हें दिखा देता और हक़ सुना देता लेकिन चूंकि उन के दिलों में वोह सिद्क़ो रग़बत मौजूद ही नहीं लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें उन के मत़लूबा मो'जिज़ात न दिखाए और अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें दिखा भी देता तो येह मुंह फेर लेते।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۴﴾

(1) ..... خازن، الانفال، تحت الآیة: ۲۲، ۲/۱۸۸. (2) ..... تفسیر بغوی، الاعراف، تحت الآیة: ۲۳، ۲/۲۰۲.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो **अल्लाह** व रसूल के बुलाने पर ह़ाज़िर हो जब रसूल तुम्हें उस चीज़ के लिये बुलाएं जो तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शेगी और जान लो कि **अल्लाह** का हुक्म आदमी और उस के दिली इरादों में ह़ाइल हो जाता है और येह कि तुम्हें उसी की त़रफ़ उठना है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** और उस के रसूल की बारगाह में ह़ाज़िर हो जाओ जब वोह तुम्हें उस चीज़ के लिये बुलाएं जो तुम्हें ज़िन्दगी देती है और जान लो कि **अल्लाह** का हुक्म आदमी और उस के दिल के दरमियान ह़ाइल हो जाता है और येह कि उसी की त़रफ़ तुम्हें उठाया जाएगा।

﴿اِسْتَجِیْبُوْا لِلّٰهِ وَ لِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ﴾ : **अल्लाह और उस के रसूल के बुलाने पर ह़ाज़िर हो।** इस आयत में वाह़िद का सीग़ा "دَعَا" इस लिये ज़िक्र किया गया कि हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बुलाना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही का बुलाना है।[1]

रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब भी बुलाएं तो उन की बारगाह में ह़ाज़िर होना ज़रूरी है

इस आयत से साबित हुवा कि ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब भी किसी को बुलाएं तो उस पर लाज़िम है कि वोह आप की बारगाह में ह़ाज़िर हो जाए चाहे वोह किसी भी काम में मसरूफ़ हो। बुख़ारी शरीफ़ में है, ह़ज़रते अबू सईद बिन मुअ़ल्ला رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि में मस्जिदे नबवी में नमाज़ पढ़ रहा था कि मुझे रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बुलाया, लेकिन मैं आप के बुलाने पर ह़ाज़िर न हुवा। (नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बा'द) मैं ने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, मैं नमाज़ पढ़ रहा था। सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या **अल्लाह** तआ़ला ने येह नहीं फ़रमाया है कि

اِسْتَجِیْبُوْا لِلّٰهِ وَ لِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** और रसूल के बुलाने पर ह़ाज़िर हो जाया करो जब वोह तुम्हें बुलाएं।[2]

ऐसा ही वाक़िआ़ एक और ह़दीस में है, ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की त़रफ़ तशरीफ़ लाए और उन्हें आवाज़ दी "ऐ उबय !" ह़ज़रते उबय رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه नमाज़ पढ़ रहे थे, उन्हों ने

1 .....خازن، الانفال، تحت الآیة: ۲۴، ۲/۱۸۸. 2 .....بخاری، باب ما جاء فی فاتحة الکتاب، ۳/۱۶۳، الحدیث: ۴۴۷۴.

www.dawateislami.net

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तरफ़ देखा लेकिन कोई जवाब न दिया, फिर मुख़्तसर नमाज़ पढ़ कर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ की ''اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه'' रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''وَعَلَيْكَ السَّلَام'' ऐ उबय ! जब मैं ने तुम्हें पुकारा तो जवाब देने में कौन सी चीज़ रुकावट बनी ? अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** मैं नमाज़ पढ़ रहा था, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम ने क़ुरआने पाक में येह नहीं पाया कि

اِسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** और उस के रसूल की बारगाह में हाज़िर हो जाओ जब वोह तुम्हें उस चीज़ के लिये बुलाएं जो तुम्हें ज़िन्दगी देती है।

अ़र्ज़ की : हां **या रसूलल्लाह !** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आइन्दा ऐसा न होगा।[1]

﴿لِمَا يُحْيِيْكُمْ﴾ **: उस चीज़ के लिये जो तुम्हें ज़िन्दगी देती है।** ﴾ ज़िन्दगी देने वाली चीज़ के बारे में एक क़ौल येह है कि इस से ईमान मुराद है क्यूं कि काफ़िर मुर्दा होता है ईमान से उस को ज़िन्दगी हासिल होती है। ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि वोह चीज़ क़ुरआन है क्यूं कि इस से दिलों की ज़िन्दगी है और इस में नजात है और दोनों जहान की ह़िफ़ाज़त है। ह़ज़रते मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि वोह चीज़ जिहाद है क्यूं कि इस की बदौलत **अल्लाह** तआ़ला ज़िल्लत के बा'द इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाता है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि वोह चीज़ शहादत है, क्यूं कि शुहदा अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पास ज़िन्दा हैं और उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है।[2]

وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۲۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उस फ़ितने से डरते रहो जो हरगिज़ तुम में ख़ास ज़ालिमों ही को न पहुंचेगा और जान लो कि **अल्लाह** का अ़ज़ाब सख़्त है।

1 .....ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ما جاء فی فضل فاتحة الکتاب، ٤/ ٤٠٠، الحدیث: ٢٨٨٤.

2 .....خازن، الانفال، تحت الآیة: ٢٤، ٢/ ١٨٨.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उस फ़ितने से डरते रहो जो हरगिज़ तुम में ख़ास ज़ालिमों को ही नहीं पहुंचेगा और जान लो कि **अल्लाह** सख़्त सज़ा देने वाला है।

﴿وَاتَّقُوْا فِتْنَةً : **और उस फ़ितने से डरते रहो।**﴾ इस से पहली आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने इन्सानों को इस बात से डराया था कि बनू आदम और इन के दिलों के दरमियान **अल्लाह** तआ़ला ह़ाइल है और इस आयत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुसल्मानों को फ़ितनों, आज़्माइशों और अ़ज़ाब से डराया है कि अगर ज़ालिमों पर अ़ज़ाब नाज़िल हुवा तो वोह सिर्फ़ ज़ालिमों तक ही मह़दूद न रहेगा बल्कि नेक व बद सब लोगों पर येह अ़ज़ाब नाज़िल होगा। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने मोमिनीन को हुक्म फ़रमाया है कि वोह अपनी त़ाक़तो क़ुदरत के मुत़ाबिक़ बुराइयों को रोकें और गुनाह करने वालों को गुनाह से मन्अ़ करें अगर उन्हों ने ऐसा न किया तो अ़ज़ाब उन सब को आ़म होगा और ख़त़ाकार और ग़ैर ख़त़ाकार सब को पहुंचेगा।[1]

क़ुदरत के बा वुजूद बुराई से मन्अ़ करना छोड़ देना अ़ज़ाबे इलाही आने का सबब है

इस आयत से मा'लूम हुवा कि जो क़ौम क़ुदरत के बा वुजूद बुराइयों से मन्अ़ करना छोड़ देती है और लोगों को गुनाहों से नहीं रोकती तो वोह अपने इस तर्के फ़र्ज़ की शामत में मुब्तलाए अ़ज़ाब होती है। कसीर अह़ादीस में भी येह चीज़ बयान की गई है, उन में से 3 अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)..... सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला मख़्सूस लोगों के अ़मल की वज्ह से अ़ज़ाबे आ़म नहीं करता जब तक कि आ़म त़ौर पर लोग ऐसा न करें कि मन्नूआ़त को अपने दरमियान होता देखते रहें और उस के रोकने और मन्अ़ करने पर क़ादिर होने के बा वुजूद उस से न रोकें, न मन्अ़ करें। जब ऐसा होता है तो **अल्लाह** तआ़ला अ़ज़ाब में आ़म व ख़ास सब को मुब्तला कर देता है।"[2]

(2)..... ह़ज़रते जरीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, मैं ने सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि "किसी क़ौम में जो शख़्स गुनाहों में सरगर्म हो और वोह लोग क़ुदरत के बा वुजूद उस को न रोकें तो **अल्लाह** तआ़ला मरने से पहले उन्हें अ़ज़ाब में मुब्तला कर देता है।"[3]

1 .....تفسیر کبیر، الانفال، تحت الآیۃ: ۲۵، ۵/۴۷۳، خازن، الانفال، تحت الآیۃ: ۲۵، ۲/۱۸۹، ملتقطاً.

2 ..... شرح السنہ، کتاب الرقاق، باب الامر بالمعروف والنھی عن المنکر، ۷/۳۵۸، الحدیث: ۴۰۵۰.

3 .....ابو داؤد، اول کتاب الملاحم، باب الامر والنھی، ۴/۱۶۴، الحدیث: ۴۳۳۹.

www.dawateislami.net

(3)..... हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम ! तुम ज़रूर नेकी की दा'वत देते रहना और बुराई से मन्अ़ करते रहना और तुम ज़रूर ज़ुल्म करने वाले के हाथों को पकड़ लेना और उसे ज़रूर ह़क़ पर अ़मल के लिये मजबूर करना वरना **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे दिल भी एक जैसे कर देगा फिर तुम पर भी इसी त़रह़ ला'नत करेगा जिस त़रह़ बनी इसराईल पर ला'नत की गई।"[1]

अल्लाह तआ़ला हमें एक दूसरे को नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, आमीन।[2]

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِیْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِی الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ یَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَ اَیَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَ رَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۲۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब तुम थोड़े थे मुल्क में दबे हुए डरते थे कि कहीं लोग तुम्हें उचक न ले जाएं तो उस ने तुम्हें जगह दी और अपनी मदद से ज़ोर दिया और सुथरी चीज़ें तुम्हें रोज़ी दीं कि कहीं तुम एह़सान मानो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब तुम ज़मीन में थोड़े थे, दबे हुए थे, तुम डरते थे कि कहीं लोग तुम्हें उचक कर न ले जाएं तो **अल्लाह** ने तुम्हें ठिकाना दिया और अपनी मदद से तुम्हें क़ुव्वत दी और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ों का रिज़्क़ दिया ताकि तुम शुक्र अदा करो।

﴿وَاذْكُرُوْا﴾ **: और याद करो।** इस से पहली आयात में **अल्लाह** तआ़ला ने मोमिनीन को अपनी और अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त का हुक्म दिया और फ़ितने से डराया, अब इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने इन्हें अपनी ने'मतें याद दिलाईं चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया : ऐ मुहाजिरीन के गुरौह ! याद करो, जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बि'सत से पहले तुम ता'दाद में कम थे और इब्तिदाए इस्लाम में मक्का की सर ज़मीन पर तुम्हें कमज़ोर समझा जाता था और तुम दूसरे शहरों में सफ़र करने से डरते थे कि कहीं कुफ़्फ़ार लूट न लें, **अल्लाह**

1 .....ابو داؤد، اول کتاب الملاحم، باب الامر والنهی، ۴/۱۶۳، الحدیث: ۴۳۳۶-۴۳۳۷.

2 ..... नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने के बारे में अहम मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की किताब "नेकी की दा'वत" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें मक्का से मदीना मुन्तक़िल कर के ठिकाना दिया और तुम कुफ़्फ़ार के शर से महफ़ूज़ हो गए और अपनी मदद से तुम्हें क़ुव्वत अ़ता की, कि बद्र की जंग में कुफ़्फ़ार पर तुम्हारी हैबत डाल दी जिस के नतीजे में तुम अपने से तीन गुना बड़े लश्कर पर ग़ालिब आ गए और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ों का रिज़्क़ दिया कि तुम्हारे लिये माले ग़नीमत को ह़लाल कर दिया जब कि पहली उम्मतों पर वोह ह़राम था ताकि तुम **अल्लाह** तआ़ला की अ़ता कर्दा ने'मतों पर शुक्र अदा करो।[1]

ने'मत की नाशुक्री ने'मत छिन जाने का सबब है

हर दौर में इसी त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला इज्तिमाई और इन्फ़िरादी त़ौर पर मुसल्मानों को त़रह़ त़रह़ की ने'मतों से नवाज़ता है, मसाइबो आलाम से नजात दे कर राह़तो आराम अ़ता करता है। जब मुसल्मान **अल्लाह** तआ़ला की नाशुक्री करते, यादे ख़ुदा से ग़फ़्लत को अपना शिआ़र बना लेते और अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात की तक्मील में मसरूफ़ हो जाते हैं और अपने बुरे आ'माल की कसरत की वज्ह से ख़ुद को **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों का ना अह्ल साबित कर देते हैं तो **अल्लाह** तआ़ला उन से अपनी दी हुई ने'मतें वापस ले लेता है। आ़लमी सत़्ह़ पर अ़ज़ीम सल्त़नत रखने के बा'द मुसल्मानों का ज़वाल, इ़ज़्ज़त के बा'द ज़िल्लत, फ़ुतूह़ात के बा'द मौजूदा शिकस्त वग़ैरा इस चीज़ की वाज़ेह़ मिसालें मौजूद हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْۤا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो **अल्लाह** व रसूल से दग़ा न करो और न अपनी अमानतों में दानिस्ता ख़ियानत।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** और रसूल से ख़ियानत न करो और न जान बूझ कर अपनी अमानतों में ख़ियानत करो।

﴿لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ﴾ **: अल्लाह और रसूल से ख़ियानत न करो।** ﴾ फ़राइज़ छोड़ देना **अल्लाह** तआ़ला से ख़ियानत करना है और सुन्नत को तर्क करना **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ख़ियानत करना है।[2] **शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ज़रते अबू लुबाबा अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के

1 .....خازن، الانفال، تحت الآیۃ: ۲۶، ۱۸۹/۲، تفسیر کبیر، الانفال، تحت الآیۃ: ۲۶، ۴۷۴/۵، ملتقطاً.

2 .....خازن، الانفال، تحت الآیۃ: ۲۷، ۱۹۰/۲.

www.dawateislami.net

हक़ में नाज़िल हुई। इस का वाक़िआ येह है कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बनू क़ुरैज़ा के यहूदियों का दो हफ़्ते से ज़ियादा अ़र्से तक मुह़ासरा फ़रमाया, वोह इस मुह़ासरे से तंग आ गए और उन के दिल ख़ाइफ़ हो गए तो उन से उन के सरदार का'ब बिन असद ने येह कहा कि अब तीन सूरतें हैं, एक येह कि इस शख़्स या'नी नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ करो और इन की बैअ़त कर लो क्यूं कि ख़ुदा की क़सम ! येह ज़ाहिर हो चुका है कि वोह नबिय्ये मुरसल हैं और येह वोही रसूल हैं जिन का ज़िक्र तुम्हारी किताब में है, इन पर ईमान ले आए तो जान माल, अहलो औलाद सब महफ़ूज़ रहेंगे। इस बात को क़ौम ने न माना तो का'ब ने दूसरी सूरत पेश की और कहा कि तुम अगर इसे नहीं मानते तो आओ पहले हम अपने बीवी बच्चों को क़त्ल कर दें फिर तल्वारें खींच कर मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उन के सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ के मुक़ाबले में आ जाएं ताकि अगर हम इस मुक़ाबले में हलाक भी हो जाएं तो हमारे साथ अपने अहले ख़ाना और औलाद का ग़म तो न रहेगा। इस पर क़ौम ने कहा कि बीवी बच्चों के बा'द जीना ही किस काम का ? का'ब ने कहा : येह भी मन्ज़ूर नहीं है तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुल्ह़ की दरख़्वास्त करो शायद इस में कोई बेहतरी की सूरत निकले। उन्हों ने ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुल्ह़ की दरख़्वास्त की लेकिन हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस के सिवा और कोई बात मन्ज़ूर न फ़रमाई कि अपने ह़क़ में ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के फ़ैसले को मन्ज़ूर करें। इस पर उन्हों ने कहा कि हमारे पास ह़ज़रते अबू लुबाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ को भेज दीजिये क्यूं कि ह़ज़रते अबू लुबाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से उन के तअ़ल्लुक़ात थे और ह़ज़रते अबू लुबाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ का माल और उन की औलाद और उन के इ़याल सब बनू क़ुरैज़ा के पास थे। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू लुबाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ को भेज दिया, बनू क़ुरैज़ा ने उन से राय दरयाफ़्त की, कि क्या हम ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ का फ़ैसला मन्ज़ूर कर लें कि जो कुछ वोह हमारे ह़क़ में फ़ैसला दें वोह हमें क़बूल हो। ह़ज़रते अबू लुबाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अपनी गरदन पर हाथ फेर कर इशारा किया कि येह तो गले कटवाने की बात है। ह़ज़रते अबू लुबाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ कहते हैं कि मेरे क़दम अपनी जगह से हटने न पाए थे कि मेरे दिल में येह बात जम गई कि मुझ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ियानत वाक़ेअ़ हुई, येह सोच कर वोह ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में तो न आए, सीधे मस्जिद शरीफ़ पहुंचे और मस्जिद शरीफ़ के एक सुतून से अपने आप को बंधवा लिया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम खाई कि न कुछ खाएंगे न पियेंगे यहां तक कि मर

www.dawateislami.net

जाएं या **अल्लाह** तआ़ला उन की तौबा क़बूल करे। वक़्तन फ़ वक़्तन उन की ज़ौजा आ कर उन्हें नमाज़ों के लिये और त़र्ह़ ह़ाजतों के लिये खोल दिया करती थीं और फिर बांध दिये जाते थे। हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जब येह ख़बर पहुंची तो फ़रमाया कि अबू लुबाबा मेरे पास आते तो मैं उन के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ करता लेकिन जब उन्हों ने येह किया है तो मैं उन्हें न खोलूंगा जब तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की तौबा क़बूल न करे। वोह सात रोज़ बंधे रहे और न कुछ खाया न पिया यहां तक कि बेहोश हो कर गिर गए। फिर **अल्लाह** तआ़ला ने उन की तौबा क़बूल की, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ ने उन्हें तौबा क़बूल होने की बिशारत दी। तो उन्हों ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! जब तक रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे ख़ुद न खोलें तब तक मैं न खोलूंगा। **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें अपने दस्ते मुबारक से खोल दिया। ह़ज़रते अबू लुबाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : मेरी तौबा उस वक़्त पूरी होगी जब मैं अपनी क़ौम की बस्ती छोड़ दूं जिस में मुझ से येह ख़त़ा सरज़द हुई और मैं अपना पूरा माल अपनी मिल्क से निकाल दूं। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तिहाई माल का सदक़ा करना काफ़ी है। उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई।[1] इस से मा'लूम हुवा कि अपनी क़ौम के राज़ दूसरी क़ौम तक पहुंचाना सख़्त जुर्म है।

وَاعْلَمُوْۤا اَنَّمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۲۸﴾ ع

ع ٢

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जान रखो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद सब फ़ितना है और **अल्लाह** के पास बड़ा सवाब है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जान लो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद एक इम्तिह़ान है और येह कि **अल्लाह** के पास बड़ा सवाब है।

﴿وَاعْلَمُوْۤا﴾ **: और जान लो।** इस आयत का ख़ुलासा येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुसल्मानों से फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने मालो दौलत और औलाद की जो ने'मतें तुम्हें अ़त़ा की हैं वोह तुम्हारे लिये एक आज़्माइश हैं ताकि **अल्लाह** तआ़ला इस के ज़रीए येह ज़ाहिर फ़रमा दे कि तुम माल और औलाद में **अल्लाह** तआ़ला के हुक़ूक़ किस त़रह़ अदा करते हो और **अल्लाह** तआ़ला के अह़कामात पर अ़मल करने में माल और औलाद की मह़ब्बत तुम्हारे लिये रुकावट बनती है या नहीं और इस बात पे यक़ीन रखो कि अपने माल और औलाद में जितना तुम **अल्लाह** तआ़ला के अह़काम के मुत़ाबिक़ अ़मल करते हो उस का सवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही

[1] .....تفسیر بغوی، الاعراف، تحت الآیۃ: ۲۷، ۲/۲۰۳-۲۰۴، جمل، تحت الآیۃ: ۲۷، ۳/۱۸۵-۱۸۶، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

के पास है लिहाज़ा तुम **अल्लाह** तआ़ला की इताअ़त करो ताकि आख़िरत में तुम्हें बे शुमार अज्र दिया जाए ।[1]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۲۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अगर **अल्लाह** से डरोगे तो तुम्हें वोह देगा जिस से ह़क़ को बातिल से जुदा कर लो और तुम्हारी बुराइयां उतार देगा और तुम्हें बख़्श देगा और **अल्लाह** बड़े फ़ज़्ल वाला है ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! अगर तुम **अल्लाह** से डरोगे तो तुम्हें ह़क़ व बातिल में फ़र्क़ कर देने वाला नूर अ़ता फ़रमा देगा और तुम्हारे गुनाह मिटा देगा और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमा देगा और **अल्लाह** बड़े फ़ज़्ल वाला है ।

﴿اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ﴾ **: अगर तुम अल्लाह से डरोगे ।** ﴾ जो शख़्स रब तआ़ला से डरे और उस के हुक्म पर चले तो **अल्लाह** तआ़ला उसे तीन ख़ुसूसी इन्आ़म अ़ता फ़रमाएगा ।

पहला इन्आ़म येह कि उसे फ़ुरक़ान अ़ता फ़रमाएगा । या'नी **अल्लाह** तआ़ला उस के दिल को ऐसा नूर और तौफ़ीक़ अ़ता करेगा जिस से वोह ह़क़ व बातिल के दरमियान फ़र्क़ कर लिया करे ।[2]

मोमिन की फ़िरासत

मोमिन की फ़िरासत के बारे में ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''اِتَّقُوْا فَرَاسَةَ الْمُؤْمِنِ فَاِنَّهٗ يَنْظُرُ بِنُوْرِ اللّٰهِ'' मोमिन की फ़िरासत व दानाई से डरो वोह **अल्लाह** के नूर से देखता है ।[3]

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में एक मरतबा एक शख़्स आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िरी के लिये जा रहा था कि रास्ते में एक अज्नबिय्या औ़रत पर उस की निगाह पड़ गई । जब ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की

1 .....تفسیر طبری، الانفال، تحت الآیة: ۲۸، ۶/۲۲۲. 2 .....خازن، الانفال، تحت الآیة: ۲۹، ۲/۱۹۱.
3 .....معجم الاوسط، باب الباء، من اسمه بکر، ۲/۲۷۱، الحدیث: ۳۲۵۴.

www.dawateislami.net

ख़िदमत में हाज़िर हुवा तो उन्हों ने फ़रमाया : हमारे पास बा'ज़ हज़रात इस हालत में आते हैं कि उन की आंख में ज़िना का असर होता है। उस शख़्स ने अ़र्ज़ की : क्या अभी वही बन्द नहीं हुई ? फ़रमाया : येह वही नहीं बल्कि मोमिन की फ़िरासत है।[1]

दूसरा इन्आ़म येह कि उस के साबिक़ा गुनाह मिटा दिये जाएंगे और **तीसरा इन्आ़म** येह है कि **अल्लाह** तआ़ला उस के ऐबों को छुपा लेगा।[2]

وَاِذْ یَمْكُرُ بِكَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لِیُثْبِتُوْكَ اَوْ یَقْتُلُوْكَ اَوْ یُخْرِجُوْكَ ؕ وَیَمْكُرُوْنَ وَیَمْكُرُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَیْرُ الْمٰكِرِیْنَ ۝۳۰

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ महबूब याद करो जब काफ़िर तुम्हारे साथ मक्र करते थे कि तुम्हें बन्द कर लें या शहीद कर दें या निकाल दें और वोह अपना सा मक्र करते थे और **अल्लाह** अपनी ख़ुफ़्या तदबीर फ़रमाता था और **अल्लाह** की ख़ुफ़्या तदबीर सब से बेहतर।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ हबीब ! याद करो जब काफ़िरों ने तुम्हारे ख़िलाफ़ साज़िश की, कि तुम्हें बांध दें या तुम्हें शहीद कर दें या तुम्हें निकाल दें और वोह अपनी साज़िशें कर रहे थे और **अल्लाह** अपनी ख़ुफ़्या तदबीर फ़रमा रहा था और **अल्लाह** सब से बेहतर ख़ुफ़्या तदबीर फ़रमाने वाला है।

﴿وَاِذْ : और ऐ महबूब याद करो।﴾ आयत में उस वाक़िए़ का ज़िक्र है जो हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने ज़िक्र फ़रमाया कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश दारुन्नद्वा (या'नी कमेटी घर) में रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में मश्वरा करने के लिये जम्अ़ हुए और इब्लीसे लईन एक बुढ्ढे की सूरत में आया और कहने लगा कि मैं नज्द का शैख़ हूं, मुझे तुम्हारे इस इज्तिमाअ़ की इत्तिलाअ़ हुई तो मैं आया, मुझ से तुम कुछ न छुपाना मैं तुम्हारा रफ़ीक़ हूं और इस मुआ़मले में बेहतर राय से तुम्हारी मदद करूंगा। उन्हों ने इस को शामिल कर लिया और ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ राय ज़नी शुरूअ़ हुई। अबुल बख़्तरी ने कहा कि "मेरी राय येह है कि मुहम्मद (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को पकड़ कर एक मकान में

1 .....تفسیر قرطبی، الحجر، تحت الآیۃ: ۷۵، ۵/۳۳، الجزء العاشر.

2 ..... **अल्लाह** तआ़ला से डरने की ज़रूरत, अहम्मिय्यत और तरग़ीब वग़ैरा पर मुश्तमिल मा'लूमात हासिल करने के लिये किताब "ख़ौफ़े ख़ुदा" (मत्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

क़ैद कर दो और मज़बूत बन्दिशों से बांध कर दरवाज़ा बन्द कर दो, सिर्फ़ एक सूराख़ छोड़ दो जिस से कभी कभी खाना पानी दिया जाए और वहीं वोह हलाक हो कर रह जाएं।'' इस पर शैत़ाने लईन जो शैख़े नज्दी बना हुवा था बहुत नाख़ुश हुवा और कहा : बड़ी नाक़िस राय है, जब येह ख़बर मश्हूर होगी तो उन के अस्ह़ाब आएंगे और तुम से मुक़ाबला करेंगे और उन्हें तुम्हारे हाथ से छुड़ा लेंगे। लोगों ने कहा : शैख़े नज्दी ठीक कहता है। फिर हिशाम बिन अम्र खड़ा हुवा, उस ने कहा मेरी राय येह है कि इन को (या'नी मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को) ऊंट पर सुवार कर के अपने शह्र से निकाल दो, फिर वोह जो कुछ भी करें उस से तुम्हें कुछ ज़रर नहीं। इब्लीस ने इस राय को भी ना पसन्द किया और कहा : जिस शख़्स ने तुम्हारे होश उड़ा दिये और तुम्हारे दानिश मन्दों को ह़ैरान बना दिया उस को तुम दूसरों की त़रफ़ भेजते हो ! तुम ने उस की शीरीं कलामी नहीं देखी है ? अगर तुम ने ऐसा किया तो वोह दूसरी क़ौम के दिलों को तस्ख़ीर कर के उन लोगों के साथ तुम पर चढ़ाई कर देंगे। अहले मज्मअ़ ने कहा : शैख़े नज्दी की राय ठीक है। इस पर अबू जह्ल खड़ा हुवा और उस ने येह राय दी कि क़ुरैश के हर हर ख़ानदान से एक एक आ़ली नसब जवान मुन्तख़ब किया जाए और उन को तेज़ तल्वारें दी जाएं, वोह सब यक्बारगी हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ह़म्ला आवर हो कर क़त्ल कर दें तो बनी हाशिम क़ुरैश के तमाम क़बाइल से न लड़ सकेंगे। ज़ियादा से ज़ियादा येह होगा कि उन्हें ख़ून का मुआ़वज़ा देना पड़ेगा और वोह दे दिया जाएगा। इब्लीसे लईन ने इस तज्वीज़ को पसन्द किया और अबू जह्ल की बहुत ता'रीफ़ की और इसी पर सब का इत्तिफ़ाक़ हो गया। ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने सरकारे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर येह वाक़िआ़ पेश किया और अ़र्ज़ की, कि हुज़ूर ! रात के वक़्त अपनी ख़्वाब गाह में न रहें, **अल्लाह** तआ़ला ने इज़्न दिया है, आप मदीनए त़य्यिबा का अ़ज़्म फ़रमाएं। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को रात में अपनी ख़्वाब गाह में रहने का ह़ुक्म दिया और फ़रमाया कि हमारी चादर शरीफ़ ओढ़ लो तुम्हें कोई ना गवार बात पेश न आएगी और हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दौलत सराए अक़्दस से बाहर तशरीफ़ लाए और एक मुश्त ख़ाक दस्ते मुबारक में ली और आयत ''اِنَّا جَعَلْنَا فِیْۤ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا'' पढ़ कर मुह़ासरा करने वालों पर मारी, सब की आंखों और सरों पर पहुंची, सब अन्धे हो गए और हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को न देख सके। इस के बा'द आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के हमराह ग़ारे सौर में तशरीफ़ ले गए और ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को लोगों की अमानतें पहुंचाने के लिये मक्कए मुकर्रमा में छोड़ा। मुश्रिकीन रात भर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दौलत सराए अक़्दस का

www.dawateislami.net

पहरा देते रहे, सुब्ह के वक़्त जब क़त्ल के इरादे से हम्ला आवर हुए तो देखा कि बिस्तर पर ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم हैं। उन से हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में दरयाफ़्त किया कि कहां हैं तो उन्हों ने फ़रमाया : हमें मा'लूम नहीं। कुफ़्फ़ारे क़ुरैश तलाश के लिये निकले, जब ग़ारे सौर पर पहुंचे तो मकड़ी के जाले देख कर कहने लगे कि अगर इस में दाख़िल होते तो येह जाले बाक़ी न रहते। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस ग़ार में तीन दिन ठहरे फिर मदीनए त़य्यिबा रवाना हुए।[1]

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَاۙ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۳۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उन पर हमारी आयतें पढ़ी जाएं तो कहते हैं हां हम ने सुना हम चाहते तो ऐसी हम भी कह देते येह तो नहीं मगर अगलों के क़िस्से।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब उन के सामने हमारी आयात की तिलावत की जाती है तो कहते हैं : बेशक हम ने सुन लिया, अगर हम चाहते तो ऐसा (कलाम) हम भी कह देते, येह सिर्फ़ पहले लोगों की दास्तानें हैं।

﴿وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا : **और जब उन के सामने हमारी आयात की तिलावत की जाती है।**﴾

शाने नुज़ूल : येह आयत क़बीलए बनू अ़ब्दुद्दार के एक शख़्स नज़्र बिन ह़ारिस के बारे में नाज़िल हुई। नज़्र बिन ह़ारिस एक ताजिर था और वोह तिजारत के लिये फ़ारस, ह़ीरा और दीगर ममालिक का सफ़र करता था, उस ने वहां के बाशिन्दों से रुस्तम, अस्फ़न्द्यार और दीगर अ़जमिय्यों के क़िस्से सुन रखे थे और यहूदी व ईसाई इ़बादत गुज़ारों को तौरात व इन्जील की तिलावत करते, रुकूअ़ व सुजूद करते और गिर्या व ज़ारी करते हुए देखा था। जब नज़्र बिन ह़ारिस मक्कए मुकर्रमा आया तो इसे मा'लूम हुवा कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर वही नाज़िल होती है, येह क़ुरआन की तिलावत करते और नमाज़ पढ़ते हैं। इस ने कहा : जो कलाम मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पेश करते हैं इस जैसा तो हम ने सुना हुवा है अगर हम चाहें तो हम भी ऐसा ही कलाम कह सकते हैं। **अल्लाह** तआ़ला ने इन कुफ़्फ़ार का येह मक़ूला बयान किया कि इस में उन की कमाल दरजे की बेशर्मी व बे ह़याई है। क़ुरआने पाक की तह़द्दी फ़रमाने और फ़ुसह़ाए अ़रब को क़ुरआने करीम के मिस्ल एक सूरत बना लाने की दा'वतें देने

1 .....خازن، الانفال، تحت الآية: ٣٠، ٢/١٩١-١٩٢.

www.dawateislami.net

और उन सब के आ़जिज़ रह जाने के बा'द येह कलिमा कहना और ऐसा बातिल दा'वा करना निहायत ज़लील ह़रकत है ।[1]

وَ اِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۳۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब बोले कि ऐ **अल्लाह** अगर येही (क़ुरआन) तेरी त़रफ़ से ह़क़ है तो हम पर आस्मान से पथ्थर बरसा या कोई दर्दनाक अ़ज़ाब हम पर ला ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब उन्हों ने कहा : ऐ **अल्लाह** अगर येह (क़ुरआन) ही तेरी त़रफ़ से ह़क़ है तो हम पर आस्मान से पथ्थर बरसा दे या कोई दर्दनाक अ़ज़ाब हम पर ले आ ।

﴿وَ اِذْ قَالُوْا﴾ **: और जब उन्हों ने कहा ।** ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : जब **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने गुज़श्ता उम्मतों के वाक़िआ़त बयान फ़रमाए तो नज़्र बिन ह़ारिस ने कहा : अगर मैं चाहूं तो इस जैसे वाक़िआ़त कह सकता हूं । ह़ज़रते उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नज़्र बिन ह़ारिस से फ़रमाया : तू **अल्लाह** तआ़ला से डर, रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़क़ बात इर्शाद फ़रमाते हैं । नज़्र बिन ह़ारिस ने कहा : मैं भी सच्ची बात कहता हूं । ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : नबिय्ये अकरम ''لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ'' कहते हैं । नज़्र बिन ह़ारिस ने कहा : मैं भी ''لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ'' कहता हूं लेकिन येह बुत **अल्लाह** की बेटियां हैं । फिर नज़्र बिन ह़ारिस ने दुआ़ मांगी कि ऐ **अल्लाह** ! जो क़ुरआन मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) लाए हैं अगर येह ही तेरी त़रफ़ से ह़क़ है तो हम पर आस्मान से पथ्थर बरसा दे या कोई दर्दनाक अ़ज़ाब हम पर ले आ । नज़्र बिन ह़ारिस वोह बद बख़्त काफ़िर है कि जिस की मज़म्मत में क़ुरआने पाक की दस आयात नाज़िल हुईं और ग़ज़्वए बद्र के दिन सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस से जहन्नम वासिल हुवा ।[2]

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि येह दुआ़ अबू जहल ने मांगी थी ।[3]

1 .....تفسیر طبری، الانفال، تحت الآیۃ: ۳۱، ۲۲۹/۶، خازن، الانفال، تحت الآیۃ: ۳۱، ۱۹۲/۲.

2 .....خازن، الانفال، تحت الآیۃ: ۳۲، ۱۹۲/۲-۱۹۳.

3 .....بخاری، کتاب التفسیر، باب واذ قالوا اللّٰھمّ ان کان ھذا... الخ، ۲۲۹/۳، الحدیث: ٤٦٤٨.

www.dawateislami.net

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿۳۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** का काम नहीं कि इन्हें अ़ज़ाब करे जब तक ऐ महबूब तुम इन में तशरीफ़ फ़रमा हो और **अल्लाह** उन्हें अ़ज़ाब करने वाला नहीं जब तक वोह बख़्शिश मांग रहे हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और **अल्लाह** की येह शान नहीं कि इन्हें अ़ज़ाब दे जब तक ऐ ह़बीब ! तुम इन में तशरीफ़ फ़रमा हो और **अल्लाह** उन्हें अ़ज़ाब देने वाला नहीं जब कि वोह बख़्शिश मांग रहे हैं।

﴿وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ﴾ **: और अल्लाह की येह शान नहीं कि इन्हें अ़ज़ाब दे ।** ﴾ इर्शाद फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला की येह शान नहीं कि जिस अ़ज़ाब का कुफ़्फ़ार ने सुवाल किया वोह अ़ज़ाब उन्हें दे जब तक ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, तुम उन में तशरीफ़ फ़रमा हो, क्यूं कि आप रह़मतुल्लिल आ़लमीन बना कर भेजे गए हो और सुन्नते इलाहिय्यह येह है कि जब तक किसी क़ौम में उस के नबी मौजूद हों उन पर आ़म बरबादी का अ़ज़ाब नहीं भेजता कि जिस से सब के सब हलाक हो जाएं और कोई न बचे ।[1]

मुफ़स्सिरीन की एक जमाअ़त का क़ौल है कि येह आयत सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर उस वक़्त नाज़िल हुई जब आप मक्कए मुकर्रमा में मुक़ीम थे । फिर जब आप ने हिजरत फ़रमाई और कुछ मुसल्मान रह गए जो इस्तिग़फ़ार किया करते थे तो ''وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ'' जब तक इस्तिग़फ़ार करने वाले ईमानदार मौजूद हैं उस वक़्त तक भी अ़ज़ाब न आएगा । नाज़िल हुई । फिर जब वोह ह़ज़रात भी मदीनए त़य्यिबा को रवाना हो गए तो **अल्लाह** तआ़ला ने फ़त्ह़े मक्का का इज़्न दिया और येह अ़ज़ाबे मौऊ़द आ गया जिस की निस्बत अगली आयत में फ़रमाया ''وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ'' । ह़ज़रते मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया कि ''وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ'' भी कुफ़्फ़ार का मक़ूला है जो उन से ह़िकायतन ज़िक्र किया गया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की जहालत का ज़िक्र फ़रमाया कि इस क़दर

[1] .....جلالين، الانفال، تحت الآية: ۳۳، ص ۱۵۰، مدارك، الانفال، تحت الآية: ۳۳، ص ۴۱۲، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

अह़मक़ हैं कि आप ही तो येह कहते हैं कि या रब अगर येह तेरी त़रफ़ से ह़क़ है तो हम पर नाज़िल कर और आप ही येह कहते हैं कि ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) जब तक आप हैं अ़ज़ाब नाज़िल न होगा क्यूं कि कोई उम्मत अपने नबी की मौजूदगी में हलाक नहीं की जाती ।[1]

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इसी आयत की त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाते हैं :

اَنْتَ فِيْهِمْ *ने अ़दू को भी लिया दामन में ऐ शे जावेद मुबारक तुझे शैदाइये दोस्त*

अ़ज़ाब से अम्न में रहने का ज़रीआ़

अ़ल्लामा अ़ली बिन मुह़म्मद ख़ाज़िन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस आयत से साबित हुवा कि इस्तिग़फ़ार अ़ज़ाब से अम्न में रहने का ज़रीआ़ है ।[2]

अह़ादीस में इस्तिग़फ़ार के बहुत फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, उन में से 3 अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)..... ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला ने मेरी उम्मत के लिये मुझ पर दो अम्न (वाली आयात) उतारी हैं, एक "وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ" और दूसरी "وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ" जब मैं इस दुन्या से पर्दा कर लूंगा तो क़ियामत तक के लिये इस्तिग़फ़ार छोड़ दूंगा ।"[3]

(2)..... ह़ज़रते अबू सईद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "शैत़ान ने कहा : ऐ मेरे रब ! तेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जब तक तेरे बन्दों की रूहें उन के जिस्मों में हैं, मैं उन्हें भटकाता रहूंगा । **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जब तक वोह मुझ से इस्तिग़फ़ार करेंगे तो मैं उन्हें बख़्शता रहूंगा ।"[4]

(3)..... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने इस्तिग़फ़ार को अपने लिये ज़रूरी क़रार दिया तो

1 .....خازن، الانفال، تحت الآية: ۳۳، ۲/۱۹۳. 2 .....خازن، الانفال، تحت الآية: ۳۳، ۲/۱۹۳.
3 .....ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة الانفال، ۵/۵۶، الحدیث: ۳۰۹۳.
4 .....مسند امام احمد، مسند ابی سعید الخدری رضی الله عنه، ۴/۵۹، الحدیث: ۱۱۲۴۴.

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला उसे हर ग़म और तक्लीफ़ से नजात देगा और उसे ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़ता फ़रमाएगा जहां से उसे वहमो गुमान भी न होगा।''[1]

وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْۤا اَوْلِيَآءَهٗ ؕ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗۤ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हें क्या है कि **अल्लाह** उन्हें अ़ज़ाब न करे वोह तो मस्जिदे ह़राम से रोक रहे हैं और वोह इस के अह्ल नहीं उस के औलिया तो परहेज़ गार ही हैं मगर उन में अक्सर को इ़ल्म नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन्हें क्या है कि **अल्लाह** उन्हें अ़ज़ाब न दे ह़ालां कि येह मस्जिदे ह़राम से रोक रहे हैं और येह इस के अह्ल ही नहीं, इस के अह्ल तो परहेज़ गार ही हैं मगर उन में अक्सर जानते नहीं।

﴿وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ﴾ **: और उन्हें क्या है कि अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब न दे।** इस से पहली आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया कि जब तक मेरा ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन में तशरीफ़ फ़रमा है **अल्लाह** तआ़ला इन्हें अ़ज़ाब न देगा और इस आयत में फ़रमाया कि उन्हें अ़ज़ाब देगा। तो इस आयत का मा'ना येह हुवा जब **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन के बीच से चले जाएंगे तो **अल्लाह** तआ़ला इन्हें अ़ज़ाब देगा। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस आयत में अ़ज़ाब से मुराद (क़त्ल और क़ैद होने का) वोह अ़ज़ाब है जो बद्र के दिन उन्हें पहुंचा।[2]

एक क़ौल येह है कि इस से मुराद वोह अ़ज़ाब है जो फ़त्ह़े मक्का के दिन उन्हें पहुंचा। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं इस से आख़िरत का अ़ज़ाब मुराद है और जिस अ़ज़ाब की इन से नफ़ी की गई है उस से दुन्यावी अ़ज़ाब मुराद है। इन कुफ़्फ़ार को अ़ज़ाब दिये जाने का सबब येह है कि येह मस्जिदे ह़राम से रोक रहे हैं और मोमिनीन को त़वाफ़े का'बा के लिये नहीं आने देते जैसा कि वाक़िअ़ए ह़ुदैबिया के साल रिसालत मआब

1 .....ابن ماجه، كتاب الادب، باب الاستغفار، ٤/٢٥٧، الحديث: ٣٨١٩.
2 .....خازن، الانفال، تحت الآية: ٣٤، ٢/١٩٤.

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के अस्हाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को रोका।[1]

﴿وَمَا كَانُوْۤا اَوْلِیَآءَهٗ : और येह इस के अह्ल ही नहीं।﴾ कुफ़्फ़ार येह दा'वा करते थे कि हम ख़ानए का'बा और ह़रम शरीफ़ के मुतवल्ली हैं तो हम जिसे चाहें इस में दाख़िल होने दें और जिसे चाहें रोक दें। **अल्लाह** तआ़ला ने उन के रद में इर्शाद फ़रमाया कि येह मस्जिदे ह़राम के अह्ल नहीं और का'बे के उमूर में तसर्रुफ़ व इन्तिज़ाम का कोई इख़्तियार नहीं रखते क्यूं कि येह मुश्रिक हैं, मस्जिदे ह़राम का मुतवल्ली होने के अह्ल तो परहेज़ गार ही हैं।

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَیْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِیَةً ؕ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝۳۵

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और का'बे के पास उन की नमाज़ नहीं मगर सीटी और ताली तो अब अ़ज़ाब चखो बदला अपने कुफ़्र का।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और बैतुल्लाह के पास उन की नमाज़ सिर्फ़ सीटियां बजाना और तालियां बजाना ही था तो अपने कुफ़्र के बदले अ़ज़ाब का मज़ा चखो।

﴿وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَیْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِیَةً : और बैतुल्लाह के पास उन की नमाज़ सिर्फ़ सीटियां बजाना और तालियां बजाना ही था।﴾ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश नंगे हो कर ख़ानए का'बा का त़वाफ़ करते थे और सीटियां और तालियां बजाते थे और उन का येह फ़े'ल या तो इस बात़िल अ़क़ीदे की वज्ह से था कि सीटी और ताली बजाना इ़बादत है और या इस शरारत की वज्ह से कि उन के इस शोर से ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नमाज़ में परेशानी हो।[2]

اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ لِیَصُدُّوْا عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ؕ فَسَیُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ تَكُوْنُ عَلَیْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ یُغْلَبُوْنَ ؕ وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا

1 ……تفسیر کبیر، الانفال، تحت الآیۃ: ۳۴، ۵/۴۸۰.
2 ……تفسیر کبیر، الانفال، تحت الآیۃ: ۳۵، ۵/۴۸۱.

www.dawateislami.net

اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ﴿۳۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक काफ़िर अपने माल ख़र्च करते हैं कि **अल्लाह** की राह से रोकें तो अब उन्हें ख़र्च करेंगे फिर वोह उन पर पछतावा होंगे फिर मग़लूब कर दिये जाएंगे और काफ़िरों का ह़श्र जहन्नम की त़रफ़ होगा ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक काफ़िर अपने माल इस लिये ख़र्च करते हैं कि **अल्लाह** की राह से रोकें तो अब माल ख़र्च करेंगे फिर वोही माल उन पर ह़स्रतो नदामत हो जाएंगे फिर येह मग़लूब कर दिये जाएंगे और काफ़िरों को जहन्नम की त़रफ़ चलाया जाएगा ।

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ﴾ **: बेशक काफ़िर अपने माल ख़र्च करते हैं ।** इस आयत का ख़ुलासा येह है कि कुफ़्फ़ार अपना माल मुश्रिकीन को इस लिये देते हैं ताकि वोह उस माल के ज़रीए क़ुव्वत ह़ासिल कर के **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और मुसल्मानों के ख़िलाफ़ जंग करें । **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया कि उन का येह माल ख़र्च करना अ़न्क़रीब उन के लिये नदामत का सबब होगा क्यूं कि उन के अम्वाल तो ख़र्च हो जाएंगे लेकिन उन की आरज़ू पूरी न होगी । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नूर को बुझा देना और कुफ़्र के कलिमे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कलिमे पर बुलन्द करना उन की ख़्वाहिश है लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने कलिमे को बुलन्द और कुफ़्र के कलिमे को पस्त करता है फिर मुसल्मानों को ग़लबा अ़त़ा फ़रमाता है और आख़िरत में **अल्लाह** तआ़ला काफ़िरों को जहन्नम में जम्अ़ फ़रमाएगा और उन्हें अ़ज़ाब देगा ।[1]

शाने नुज़ूल : येह आयत कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के उन लोगों के बारे में नाज़िल हुई जिन्हों ने जंगे बद्र के मौक़अ़ पर कुफ़्फ़ार के लश्कर का खाना अपने ज़िम्मे लिया था, येह कुल बारह अश्ख़ास थे जिन में से हर शख़्स लश्कर को रोज़ाना दस ऊंट ज़ब्ह़ कर के खिलाता था । उन बारह अफ़्राद में से दो अश्ख़ास ह़ज़रते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब और ह़ज़रते ह़कीम बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا बा'द में ईमान ले आए थे । एक क़ौल येह है कि येह आयत अबू सुफ़्यान के बारे में नाज़िल हुई, अबू सुफ़्यान ने जंगे उहुद के मौक़अ़ पर दो हज़ार कुफ़्फ़ार को किराए पर जंग के लिये तय्यार किया और उन पर चालीस ऊक़िया सोना ख़र्च किया । और एक क़ौल येह है कि जंगे बद्र की शिकस्त के बा'द मक़्तूलीन के अहले ख़ाना ने अबू सुफ़्यान के तिजारती क़ाफ़िले में शरीक ताजिरों को अपना माल मुसल्मानों के ख़िलाफ़ जंग करने में ख़र्च करने की तरग़ीब दी और तमाम ताजिर कुफ़्फ़ार इस बात पर राज़ी हो गए, उन के बारे में येह आयत नाज़िल हुई ।[2]

1 .....تفسیر طبری، الانفال، تحت الآیۃ: ۳۶، ۶/۲۴۱. 2 .....خازن، الانفال، تحت الآیۃ: ۳۶، ۲/۱۹۵.

www.dawateislami.net

لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَ يَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ
فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۳۷﴾ ع ۴ ۱۸
قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَ اِنْ يَّعُوْدُوْا
فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۳۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : इस लिये कि **अल्लाह** गन्दे को सुथरे से जुदा फ़रमा दे और नजासतों को तले ऊपर रख कर सब एक ढेर बना कर जहन्नम में डाल दे वोही नुक़्सान पाने वाले हैं। तुम काफ़िरों से फ़रमाओ अगर वोह बाज़ रहे तो जो हो गुज़रा वोह उन्हें मुआफ़ फ़रमा दिया जाएगा और अगर फिर वोही करें तो अगलों का दस्तूर गुज़र चुका है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ताकि **अल्लाह** ख़बीस को पाकीज़ा से जुदा कर दे और ख़बीसों को एक दूसरे के ऊपर कर के सब को ढेर बना कर जहन्नम में डाल दे, वोही नुक़्सान पाने वाले हैं। तुम काफ़िरों से फ़रमाओ कि अगर वोह बाज़ आ गए तो जो पहले गुज़र चुका वोह उन्हें मुआफ़ कर दिया जाएगा और अगर वोह दोबारा (लड़ाई) करेंगे तो पहले लोगों का दस्तूर गुज़र चुका।

﴿لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ﴾ **: ताकि अल्लाह ख़बीस को पाकीज़ा से जुदा कर दे ।** इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने कुफ़्फ़ार को ख़बीस और मोमिनीन को त़य्यिब कह कर दोनों में फ़र्क़ बयान फ़रमाया है और आख़िरत में इन के दरमियान फ़र्क़ येह है कि **अल्लाह** तआ़ला मुसल्मानों को जन्नत और कुफ़्फ़ार को जहन्नम में दाख़िल फ़रमाएगा।[1]

﴿قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا﴾ **: तुम काफ़िरों से फ़रमाओ ।** इस आयत का मा'ना येह है कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप अबू सुफ़्यान और उस के साथियों से फ़रमा दीजिये कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल के साथ कुफ़्र करने और मुसल्मानों के ख़िलाफ़ जंग करने से बाज़ आ जाएं और दीने इस्लाम में दाख़िल हो कर दीने इस्लाम को मज़बूती से थाम लें तो **अल्लाह** तआ़ला उन का कुफ़्र और इस्लाम से पहले के गुनाह मुआफ़ फ़रमा देगा और अगर

1 .....خازن، الانفال، تحت الآیۃ: ۳۷، ۲/۱۹۵.

www.dawateislami.net

वोह अपने कुफ़्र पर क़ाइम रहे, आप के और मुसल्मानों के ख़िलाफ़ फिर जंग की तो इस मुआ़मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सुन्नत गुज़र चुकी है कि **अल्लाह** तआ़ला अपने दुश्मनों को हलाक फ़रमा देता है और अपने अम्बिया व औलिया की मदद फ़रमाता है जैसे पिछली उम्मतों के कुफ़्फ़ार ने जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूलों को झुटलाया, उन की नसीह़त क़बूल करने की बजाए सरकशी का रास्ता इख़्तियार किया तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें इ़ब्रत नाक अ़ज़ाब में मुब्तला कर दिया, यूंही जंगे बद्र में **अल्लाह** तआ़ला ने मुसल्मानों की मदद की और मुश्रिकों को शिकस्त व रुस्वाई से दोचार किया वोह फिर ऐसा ही करेगा।[1]

काफ़िर तौबा करे तो उस के साबिक़ा गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं

इस आयत से मा'लूम हुवा कि काफ़िर जब कुफ़्र से बाज़ आए और इस्लाम क़बूल कर ले तो उस का पहला कुफ़्र और ह़ालते कुफ़्र में किये गए गुनाह सब मुआ़फ़ हो जाते हैं। सह़ीह़ मुस्लिम में है कि जब अ़म्र बिन आ़स इस्लाम क़बूल करने के लिये बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुए और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दस्ते अक़्दस थाम कर अ़र्ज़ की, कि मैं इस शर्त पर इस्लाम क़बूल करता हूं कि मेरी मग़्फ़िरत कर दी जाए, तो रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि इस्लाम क़बूल करना साबिक़ा गुनाहों को ख़त्म कर देता है।"[2]

وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّ يَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۳۹﴾ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ؕ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَ نِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿۴۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन से लड़ो यहां तक कि कोई फ़साद बाक़ी न रहे और सारा दीन **अल्लाह** ही का हो जाए फिर अगर वोह बाज़ रहें तो **अल्लाह** उन के काम देख रहा है और अगर

1 ……بیضاوی، الانفال، تحت الآیۃ: ۳۸، ۳/۱۰۷، خازن، الانفال، تحت الآیۃ: ۳۸، ۲/۱۹۵، تفسیر طبری، الاعراف، تحت الآیۃ: ۳۸، ۶/۲۴۴، ملتقطاً.

2 ……مسلم، کتاب الایمان، باب کون الاسلام یھدم ما قبلہ... الخ، ص۷۴، الحدیث: ۱۹۲ (۱۲۱).

www.dawateislami.net

वोह फिरें तो जान लो कि **अल्लाह** तुम्हारा मौला है तो क्या ही अच्छा मौला और क्या ही अच्छा मददगार ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन से लड़ो यहां तक कि कोई फ़साद बाक़ी न रहे और सारा दीन **अल्लाह** ही का हो जाए फिर अगर वोह बाज़ आ जाएं तो **अल्लाह** उन के काम देख रहा है । और अगर येह रू गर्दानी करें तो जान लो कि **अल्लाह** तुम्हारा मददगार है, क्या ही अच्छा मौला और क्या ही अच्छा मददगार ।

﴿وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ﴾ **: और उन से लड़ो यहां तक कि कोई फ़साद बाक़ी न रहे ।** इस आयत और इस के बा'द वाली आयत का ख़ुलासा येह है कि ऐ ईमान वालो ! उन काफ़िरों से लड़ो यहां तक कि शिर्क का ग़लबा न रहे और **अल्लाह** तआ़ला का दीन इस्लाम ग़ालिब हो जाए, फिर अगर वोह अपने कुफ़्र से बाज़ आ जाएं तो **अल्लाह** तआ़ला उन के काम देख रहा है, वोह उन्हें इस की और उन के इस्लाम लाने की जज़ा देगा और अगर येह लोग ईमान लाने से रू गर्दानी करें तो जान लो कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारा मददगार है, तुम उसी की मदद पर भरोसा रखो और उन की दुश्मनी की परवाह न करो और **अल्लाह** तआ़ला क्या ही अच्छा मौला और क्या ही अच्छा मददगार है ।[1]

जिहाद के 2 फ़ज़ाइल

इस आयत में जिहाद का ज़िक्र हुवा इस मुनासबत से यहां जिहाद के दो फ़ज़ाइल मुलाह़ज़ा हों :

(1)..... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला की राह में एक घड़ी ठहरना ह़जरे अस्वद के पास शबे क़द्र में क़ियाम करने से बेहतर है ।"[2]

(2)..... ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है "जो शख़्स मेरे रास्ते में जिहाद करता है मैं उस का ज़ामिन हूं, अगर मैं उस की रूह़ क़ब्ज़ करता हूं तो उसे जन्नत का वारिस बनाता हूं और अगर वापस (घर) लौटाता हूं तो सवाब और माले ग़नीमत के साथ लौटाता हूं ।"[3]

1 .....جلالین، الانفال، تحت الآیۃ: ۳۹، ص ۱۵۱، تفسیر سمرقندی، الانفال، تحت الآیۃ: ۳۹، ۲/ ۱۸، روح البیان، الانفال، تحت الآیۃ: ۳۹، ۳/ ۳۴۵، ملتقطاً.

2 .....شعب الایمان، السابع والعشرون من شعب الایمان.... الخ، ۴/ ۴۰، الحدیث: ۴۲۸۶.

3 .....ترمذی، کتاب فضائل الجهاد، باب ما جاء فی فضل الجهاد، ۳/ ۲۳۱، الحدیث: ۱۶۲۶.

www.dawateislami.net

मआख़िज़ो मराजेअ़

نمبر شمار	نام کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعات
	قرآن مجید	کلامِ الٰہی	
1	کنز الإیمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا اکیڈمی، ہند
2	کنز العرفان	شیخ الحدیث والتفسیر ابوالصالح مفتی محمد قاسم قادری	مکتبۃ المدینہ

كتب التفسير وعلوم القرآن

1	تفسیرِ طبری	امام ابوجعفر محمد بن جریر طبری، متوفی ۳۱۰ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
2	تفسیر ابن ابی حاتم	حافظ عبدالرحمٰن بن محمد بن ادریس رازی ابن ابی حاتم، متوفی ۳۲۷ھ	مکتبہ نزار مصطفیٰ الباز، ریاض ۱۴۱۷ھ
3	تفسیرِ سمرقندی	ابواللیث نصر بن محمد بن ابراہیم سمرقندی، متوفی ۳۷۵ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۳ھ
4	تفسیرِ بغوی	امام ابومحمد حسین بن مسعود فراء بغوی، متوفی ۵۱۶ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۴ھ
5	تفسیرِ کبیر	امام فخر الدین محمد بن عمر بن حسین رازی، متوفی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
6	تفسیرِ قرطبی	ابوعبداللہ محمد بن احمد انصاری قرطبی، متوفی ۶۷۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
7	تفسیرِ بیضاوی	امام ناصر الدین عبداللہ بن ابوعمر بن محمد شیرازی بیضاوی، متوفی ۶۸۵ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
8	تفسیرِ مدارک	امام عبداللہ بن احمد بن محمود نسفی، متوفی ۷۱۰ھ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
9	تفسیر نیشاپوری	نظام الدین حسن بن محمد بن حسین قمی نیسابوری، متوفی ۷۲۸ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۶ھ
10	تفسیرِ خازن	علاء الدین علی بن محمد بغدادی، متوفی ۷۴۱ھ	مطبعہ میمنیہ، مصر ۱۳۱۷ھ
11	البحرُ المحیط	ابوحیان محمد بن یوسف اندلسی، متوفی ۷۴۵ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
12	تفسیر ابن کثیر	ابوفداء اسماعیل بن عمر بن کثیر دمشقی شافعی، متوفی ۷۷۴ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
13	تفسیرِ جلالین	امام جلال الدین محلی، متوفی ۸۶۴ھ وامام جلال الدین سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	
14	تفسیرِ دُر منثور	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۰۳ھ

www.dawateislami.net

15	تناسق الدرر	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۰۶ھ
16	تفسیرِ ابو سعود	علامہ ابو سعود محمد بن مصطفیٰ عمادی، متوفی ۹۸۲ھ	دار الفکر، بیروت
17	عنایۃ القاضی	شہاب الدین احمد بن محمد بن عمر خفاجی، متوفی ۱۰۶۹ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۷ھ
18	تفسیراتِ احمدیہ	شیخ احمد بن ابی سعید ملّا جیون جونپوری، متوفی ۱۱۳۰ھ	
19	روحُ البیان	شیخ اسماعیل حقی بروسی، متوفی ۱۱۳۷ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۰۵ھ
20	تفسیرِ جمل	علامہ شیخ سلیمان جمل، متوفی ۱۲۰۴ھ	
21	تفسیرِ صاوی	احمد بن محمد صاوی مالکی خلوتی، متوفی ۱۲۴۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۱ھ
22	روح المعانی	ابو الفضل شہاب الدین سید محمود آلوسی، متوفی ۱۲۷۰ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
23	خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ
24	تفسیر نعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	مکتبہ اسلامیہ
25	نور العرفان	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	

کتب الحدیث و متعلقاتہ

1	مصنف ابن ابی شیبہ	حافظ عبد اللہ بن محمد بن ابی شیبہ کوفی عبسی، متوفی ۲۳۵ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
2	مسندِ امام احمد	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
3	دارمی	امام حافظ عبد اللہ بن عبد الرحمٰن دارمی، متوفی ۲۵۵ھ	دار الکتاب العربی، بیروت ۱۴۰۷ھ
4	بخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
5	مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم، بیروت ۱۴۱۹ھ
6	ابن ماجہ	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
7	ابو داؤد	امام ابو داؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۱ھ
8	ترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ

www.dawateislami.net

9	مسند البزار	امام ابوبکر احمد عمرو بن عبدالخالق بزار، متوفی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم، المدینۃ المنورۃ ۱۴۲۴ھ
10	سنن نسائی	امام ابوعبدالرحمٰن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۶ھ
11	سنن الکبری	امام ابوعبدالرحمٰن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۱ھ
12	مسند ابو یعلی	ابویعلی احمد بن علی بن مثنی موصلی، متوفی ۳۰۷ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
13	معجم الکبیر	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	داراحیاءالتراث العربی، بیروت ۱۴۲۲ھ
14	معجم الأوسط	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
15	مستدرك	امام ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
16	حلیۃ الاولیاء	حافظ ابونعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
17	سنن الکبری	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۴ھ
18	شعب الإیمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
19	مسند الفردوس	ابوشجاع شیرویہ بن شہردار بن شیرویہ دیلمی، متوفی ۵۰۹ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۰۶ھ
20	شرح السنۃ	امام ابومحمد حسین بن مسعود بغوی، متوفی ۵۱۶ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۴ھ
21	ابن عساکر	ابوقاسم علی بن حسن شافعی، متوفی ۵۷۱ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۵ھ
22	جامع الاصول	امام مبارک بن محمد شیبانی معروف بابن اثیر جزری، متوفی ۶۰۶ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
23	مشکاۃ المصابیح	علامہ ولی الدین تبریزی، متوفی ۷۴۲ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۲۴ھ
24	جامع بیان العلم وفضلہ	عبدالرحمٰن بن شہاب الدین بن احمد بن رجب حنبلی، متوفی ۷۹۵ھ	المکتبۃ الفیصلیۃ، مکۃ المکرّمہ
25	جامع العلوم والحکم	عبدالرحمٰن بن شہاب الدین بن احمد بن رجب حنبلی، متوفی ۷۹۵ھ	المکتبۃ الفیصلیۃ، مکۃ المکرّمہ
26	جامع الاحادیث	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالفکر بیروت، ۱۴۱۴ھ
27	جامع صغیر	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۵ھ
28	کنز العمال	علی متقی بن حسام الدین ہندی برہان پوری، متوفی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ

www.dawateislami.net

کتب شروح الحدیث

1	نووی علی المسلم	امام محی الدین ابوزکریا یحییٰ بن شرف نووی، متوفی ۶۷۶ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۰۱ھ
2	عمدۃ القاری	امام بدرالدین ابومحمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۵ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
3	مرقاۃ المفاتیح	علی بن سلطان محمد ہروی قاری حنفی، متوفی ۱۰۱۴ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
4	فیض القدیر	علامہ محمد عبدالرءوف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
5	مراٰۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	مکتبہ اسلامیہ

کتب العقائد

1	کتاب الاسماء والصفات	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	مکتبۃ السوادی، جدہ
2	شرح عقائد نسفیہ	علامہ مسعود بن عمر سعدالدین تفتازانی، متوفی ۷۹۳ھ	
3	جاء الحق	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	قادری پبلشرز، ۲۰۰۳ء

کتب الفقہ

1	ھدایہ	برہان الدین علی بن ابی بکر مَرغینانی، متوفی ۵۹۳ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت
2	فتح القدیر	کمال الدین محمد بن عبدالواحد ابن ہمام، متوفی ۶۸۱ھ	
3	بحر الرائق	علامہ زین الدین بن نجیم، متوفی ۹۷۰ھ	۱۴۲۰ھ
4	تنویر الابصار	شمس الدین محمد بن عبد اللہ بن احمد تمرتاشی، متوفی ۱۰۰۴ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
5	در مختار	علاءالدین محمد بن علی حصکفی، متوفی ۱۰۸۸ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
6	عالمگیری	علامہ ہمام مولانا شیخ نظام، متوفی ۱۱۶۱ھ و جماعۃ من علماء الہند	دارالفکر بیروت ۱۴۰۳ھ
7	رد المحتار	محمد امین ابن عابدین شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
8	فتاوی رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن

www.dawateislami.net

9	بہارشریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ

كتب التصوف

1	الزهد	امام عبد اللہ بن مبارک مروزی، متوفی ۱۸۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
2	الزهد	امام ابوعبد اللہ احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دارالغد الجدید، ۱۴۲۶ھ
3	كتاب الزهد	حافظ امام ابوبکر عبد اللہ بن محمد قرشی، متوفی ۲۸۱ھ	دارابن کثیر، دمشق ۱۴۲۰ھ
4	رسائل ابن ابی الدنیا	حافظ امام ابوبکر عبد اللہ بن محمد قرشی، متوفی ۲۸۱ھ	مکتبۃ العصریہ، بیروت ۱۴۲۶ھ
5	البعث والنشور	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	مرکز الخدمات والابحاث الثقافیہ، بیروت ۱۴۰۶ھ
6	احياء علوم الدين	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر، بیروت ۲۰۰۰ء
7	كيمياء سعادت	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	انتشارات گنجینہ، تہران
8	منهاج العابدين	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	مؤسسۃ السیر وان، بیروت ۱۴۱۶ھ
9	التخويف من النار	ابوالفرج زین الدین عبدالرحمٰن بن احمد حنبلی، متوفی ۷۹۵ھ	مکتبہ دارالبیان، دمشق ۱۴۰۹ھ
10	ذم الهوى	امام ابوالفرج عبدالرحمٰن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	
11	كتاب الكبائر	امام محمد بن احمد بن عثمان ذہبی، متوفی ۷۴۸ھ	
12	تنبيه المغترين	عبدالوہاب بن احمد بن علی شعرانی، متوفی ۹۷۳ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۲۵ھ
13	الزواجر عن اقتراف الكبائر	احمد بن محمد بن علی بن حجر مکی ہیتمی، متوفی ۹۷۴ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۱۹ھ

كتب السيرة

1	سیرت نبویہ	ابومحمد عبدالملک بن ہشام، متوفی ۲۱۳ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
2	الشفا	قاضی ابوالفضل عیاض مالکی، متوفی ۵۴۴ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا، ہند
3	الروض الانف	ابوالقاسم عبدالرحمٰن بن عبد اللہ خشمی سہیلی، متوفی ۵۸۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ

www.dawateislami.net

4	سیرت حلبیہ	ابوالفرج نورالدین علی بن ابراہیم حلبی شافعی، متوفی ۱۰۴۴ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
5	نسیم الریاض	شہاب الدین احمد بن محمد بن عمر خفاجی، متوفی ۱۰۶۹ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
6	سیرت مصطفیٰ	شیخ الحدیث عبدالمصطفیٰ اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ

کتب التاریخ

1	البدایۃ والنہایۃ	ابوفداء اسماعیل بن عمر بن کثیر دمشقی شافعی، متوفی ۷۷۴ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ

الکتب المتفرقۃ

1	مفردات امام راغب	علامہ راغب اصفہانی، متوفی فی حدود ۴۲۵ھ	دارالقلم، دمشق ۱۴۱۶ھ
2	معرفۃ الصحابہ	احمد بن عبد اللہ بن اسحاق ابونعیم اصبہانی، متوفی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۲۲ھ
3	فضائل الاوقات	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۷ھ
4	القاموس المحیط	مجدالدین محمد بن یعقوب فیروزآبادی، متوفی ۸۱۷ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۱۷ھ
5	الاصابہ فی تمییز الصحابہ	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۵ھ
6	تاج العروس	سید محمد مرتضیٰ حسینی زبیدی حنفی، متوفی ۱۲۰۵ھ	مطبعہ خیریہ، مصر ۱۳۰۶ھ
7	فضائل دعا	مصنف: رئیس المتکلمین مولانا نقی علی خان، متوفی ۱۲۹۷ھ شارح: اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ
8	حیات اعلیٰ حضرت	ملک العلماء ظفر الدین بہاری، متوفی ۱۳۸۲ھ	مکتبۃ المدینہ

www.dawateislami.net

ज़िम्नी फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा
मशिय्यते ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ	
बुरा काम कर के **अल्लाह** तआ़ला की मशिय्यत की त़रफ़ मन्सूब नहीं करना चाहिये	65
अल्लाह तआ़ला की मशिय्यत से मुतअ़ल्लिक़ दो अहम मसाइल	177
दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ	
आख़िरत में **अल्लाह** तआ़ला के दीदार से मुतअ़ल्लिक़ अहले सुन्नत का अ़क़ीदा	168
दीदारे इलाही के क़ुरआने पाक से तीन दलाइल	169
दीदारे इलाही के अह़ादीस से 3 दलाइल	169
आयत "لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ" का मफ़्हूम	170
अल्लाह तआ़ला का दीदार ना मुम्किन नहीं	426
अस्माए ह़ुस्ना	
अस्माए ह़ुस्ना के फ़ज़ाइल	479
अल्लाह तआ़ला के निनानवे अस्मा	480
अस्माए ह़ुस्ना पढ़ कर दुआ़ मांगने का बेहतरीन त़रीक़ा	480
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत व ने'मत	
नुज़ूले रह़मत के दिन को ईद बनाना सालिह़ीन का त़रीक़ा है	54
अल्लाह तआ़ला की रह़मत देख कर गुनाहों पर बेबाक नहीं होना चाहिये	78
अल्लाह तआ़ला की ने'मत पर ख़ुश होने का ह़ुक्म	105
बेदीनों और ज़ालिमों की हलाकत **अल्लाह** तआ़ला की ने'मत है	107
तक़्वा रह़मते इलाही मिलने का ज़रीआ़ है	386
रह़मते इलाही की वुस्अ़त	441
क़ुरआने करीम का आहिस्ता आहिस्ता नुज़ूल **अल्लाह** तआ़ला की ख़ास रह़मत है	468
ने'मत की नाशुक्री ने'मत छिन जाने का सबब है	543
इस्लाम और इस की ता'लीमात	
इस्लाम क़बूल करने वाले को क्या करना चाहिये ?	84
औ़रतों के ह़ुक़ूक़ से मुतअ़ल्लिक़ इस्लाम की ह़सीन ता'लीमात	237
नज़रिय्यात व मा'मूलाते अहले सुन्नत	
जानवर पर किसी का नाम पुकारने से मुतअ़ल्लिक़ अहम मस्अला	41
नुज़ूले रह़मत के दिन को ईद बनाना सालिह़ीन का त़रीक़ा है	54
सफ़र कर के मज़ाराते औ़लिया पर जाना जाइज़ है	76
नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़ल्मे ग़ैब का इन्कार करने वालों का रद	112
बद मज़्हबों की मह़फ़िलों में जाने और उन की तक़ारीर सुनने का शरई़ ह़ुक्म	133
मख़्लूक़ के लिये वसीअ़ इ़ल्मो क़ुदरत मानना शिर्क नहीं	294
दूर से सुनना शिर्क नहीं	329
ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इ़ल्मे ग़ैब की दलील	409
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के काम उस के मक़्बूल बन्दों की त़रफ़ मन्सूब किये जा सकते हैं	417
नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ियामत का इ़ल्म अ़ता किया गया है	489

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा
मख़्लूक़ में से किसी को मा'बूद मान कर पुकारना शिर्क है वरना हरगिज़ शिर्क नहीं	498
शिर्क	
शिर्क की ता'रीफ़	66
अहले अ़रब में शिर्क व बुत परस्ती की इब्तिदा कब हुई ?	219
मख़्लूक़ के लिये वसीअ़ इल्मो क़ुदरत मानना शिर्क नहीं	294
दूर से सुनना शिर्क नहीं	329
मख़्लूक़ में से किसी को मा'बूद मान कर पुकारना शिर्क है वरना हरगिज़ शिर्क नहीं	498
बिद्अ़त	
बिद्अ़त की ता'रीफ़	439
बिद्अ़त की अक़्साम	440
क़ुरआने करीम	
क़ुरआने मजीद की 4 शानें	187
क़ुरआनो ह़दीस के मुक़ाबले में आबाओ अज्दाद की पैरवी मुश्रिकों का त़रीक़ा है	189
क़ुरआने मजीद पर ईमान लाने का तक़ाज़ा	191
उम्मत पर क़ुरआने मजीद का ह़क़	247
क़ुरआन की आधी आयत में पूरा इल्मे त़िब	302
क़ुरआन के अह़काम पर अ़मल के मुआ़मले में हमारी ह़ालत	467
क़ुरआने करीम का आहिस्ता आहिस्ता नुज़ूल	468

उ़न्वान	सफ़ह़ा
अ़क़ाइद मुतअ़ल्लिक़ह अम्बिया व रुसुल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام	
ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वफ़ात से मुतअ़ल्लिक़ क़ादियानियों के नज़रिय्ये का रद	58
अ़क़ीदए नुबुव्वत के बारे में चन्द अहम बातें	202
रसूलों عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मुतअ़ल्लिक़ अहम मस्अला	211
नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत की ज़बर दस्त दलील	348
नुबुव्वत और गुमराही जम्अ़ नहीं हो सकती	349
इल्मे ग़ैब	
नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इल्मे ग़ैब का इन्कार करने वालों का रद	112
ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इल्मे ग़ैब की दलील	409
नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ियामत का इल्म अ़त़ा किया गया है	489
जिन्नात और शयात़ीन	
शैत़ान से मुक़ाबला करने और इसे मग़्लूब करने के त़रीक़े	292
इन्सानों को बहकाने में शैत़ान की कोशिशें	280
शैत़ान से पनाह मांगने की तरग़ीब	281
शैत़ान से हिफ़ाज़त की दुआ़	282
क्या इन्सान जिन्नों को देख सकते हैं ?	293
शैत़ान के वस्वसे से बचने का एक त़रीक़ा	508
मौत	
मौत के वक़्त मुसल्मान और काफ़िर के ह़ालात	160

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
मौत से ग़ाफ़िल रहने वालों को नसीह़त	214	क़ियामत के दिन जन्नती मुसल्मान	
मौत के लिये हर वक़्त तय्यार रहें	309	गुनहगार मुसल्मानों को त़ा'ना न देंगे	324
मुर्दे सुनते हैं	382	जन्नतियों और जहन्नमियों के बाहमी मुकालमे	325
आख़िरत		जन्नतियों और जहन्नमियों की अ़लामात	329
मुसल्मान के उ़ख़्वी ख़सारे का सबब	93	जन्नती मोमिन को जहन्नमी काफ़िर से	
आख़िरत को भुला देने वाले		न मह़ब्बत होगी न इसे उस पर रह़्म आएगा	332
दुन्यादारों की मिसाल	94	जन्नतियों और जहन्नमियों के	
उ़ख़्वी नजात के लिये क्या चीज़ ज़रूरी है	110	अह़वाल बयान करने का मक़्सद	335
उ़ख़्वी काम्याबी तक पहुंचाने वाले रास्ते पर		**नमाज़ और ज़कात**	
चलने की तरग़ीब	119	नमाज़ से पहले पढ़ा जाने वाला वज़ीफ़ा	146
क़ियामत		ज़मीन की हर पैदावार में ज़कात है	225
क़ियामत के दिन जानवरों का भी		क़ीमती लिबास में नमाज़	301
ह़िसाब होगा	101	नमाज़ की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत	466
क़ियामत के दिन शफ़ाअ़त	114	**तिलावते क़ुरआने करीम**	
नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को		तिलावते क़ुरआन के 2 फ़ज़ाइल	12
क़ियामत का इ़ल्म अ़ता किया गया है	489	तिलावते क़ुरआन के वक़्त रोने की तरग़ीब	12
मीज़ान		इमाम के पीछे क़ुरआन पढ़ने की मुमानअ़त	512
वज़्न और मीज़ान का मा'ना	269	**सज्दए तिलावत**	
क़ियामत के दिन आ'माल के वज़्न की सूरतें	269	सज्दए तिलावत के चन्द अह़काम	514
मीज़ान से मुतअ़ल्लिक़ दो अहम बातें	270	सज्दए तिलावत की फ़ज़ीलत	515
मीज़ाने अ़मल को भरने वाले आ'माल	270	सज्दए तिलावत का त़रीक़ा	515
जन्नत व जहन्नम		**क़त्ल**	
जहन्नम को जिन्नों और इन्सानों से भरा जाएगा	284	औलाद के क़ातिलों को नसीह़त	222
पाकीज़ा दिल होना जन्नतियों का वस्फ़ है	319	नाह़क़ क़त्ल करने या क़त्ल का हुक्म देने की 3 वईदें	240
जन्नत में दाख़िले का सबब	322	क़त्ले बरह़क़ की सूरतें और एक अहम तम्बीह	240

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा
ग़ज़वात	
जंगे बद्र में फ़िरिश्तों ने लड़ाई में बा क़ाइदा हिस्सा लिया था	529
जंगे उहुद और जंगे हुनैन में पस्पाई इख़्तियार करने वाले सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ का हुक्म	532
जिहाद के 2 फ़ज़ाइल	558
क़सम और गवाही	
क़सम की अक़्साम	18
क़सम का कफ़्फ़ारा	19
क़सम के कफ़्फ़ारे के चन्द मसाइल	19
झूटी क़सम खाने और झूटी गवाही देने की मज़म्मत	49
झूटी गवाही और उस की तस्दीक़ ह़राम है	235
नाप तोल में कमी	
नाप तोल में कमी करने की 2 वईदें	241
नाप तोल पूरा न करने वालों के लिये वईद आग के दो पहाड़	371 372
शिकार	
ह़ालते एह़राम में शिकार करने के शरई मसाइल	30
ह़ालते एह़राम में शिकार के कफ़्फ़ारे की तफ़्सील	31
ह़राम शिकारों का बयान	32
ह़लाल व ह़राम	
ह़लाल चीज़ों को तर्क करने का शरई हुक्म	17
ह़लाल चीज़ों को ह़राम क़रार देने के बारे में एक अहम मस्अला	17
शराब ह़राम होने का 10 अन्दाज़ में बयान	21

उ़न्वान	सफ़ह़ा
ह़राम शिकारों का बयान	32
ह़राम चीज़ों का ज़िक्र तफ़्सील के साथ होता है	192
ह़लाल चीज़ें ह़राम क़रार देने वालों को नसीह़त	193
हर चीज़ में अस्ल इबाह़त है	223
दलील देना हुर्मत का दा'वा करने वाले पर लाज़िम है	227
ह़राम जानवरों के बयान पर मुश्तमिल आयत से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़काम	229
अश्या की ह़िल्लत व हुर्मत का उसूल	302
शराब नोशी और जूआ	
शराब पीने की वईदें	21
शराब ह़राम होने का 10 अन्दाज़ में बयान	21
शराब नोशी के नताइज	22
जूए की मज़म्मत में 2 अह़ादीस	23
जूए के दुन्यवी नुक़्सानात	23
लिवात़त	
लिवात़त की मज़म्मत	362
लिवात़त की अ़क़्ली और त़िब्बी ख़बासतें	364
मुतफ़र्रिक़ मसाइल व अह़काम	
आ'माल में ए'तिदाल का हुक्म	15
जानवर पर किसी का नाम पुकारने से मुतअ़ल्लिक़ अहम मस्अला	41
बद मज़्हबों की मह़फ़िलों में जाने और उन की तक़ारीर सुनने का शरई हुक्म	133
साबिक़ा शरीअ़तों के सख़्त अह़काम हम पर जारी नहीं	231
कुफ़्फ़ार भी बा'ज़ अह़काम के मुकल्लफ़ हैं	371

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा
इक़्तिसादी और मआ़शी बेहतरी इस्लामी अह़काम पर अ़मल करने में है	381
मसाइब की दूरी के लिये नेक आ'माल करने जाइज़ हैं	387
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के काम उस के मक़्बूल बन्दों की त़रफ़ मन्सूब किये जा सकते हैं	417
ना फ़रमानियों के बा वुजूद बख़्शिश की तमन्ना रखना कैसा है ?	464
वाक़िआ़त	
आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और एक मग़रूर अमीर	117
इस्लामी अ़क़ीदा और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का वाक़िआ़	143
फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की आ़जिज़ी	277
क़ीमती लिबास में नमाज़	301
क़ुरआन की आधी आयत में पूरा इल्मे त़िब	302
ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम का वाक़िआ़	352
ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम पर अ़ज़ाब नाज़िल होने का वाक़िआ़	356
ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम का वाक़िआ़	360
नुज़ूले तौरात का वाक़िआ़	423
बल्अ़म बिन बाऊ़रा का वाक़िआ़	472
तआ़रुफ़	
ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मुख़्तसर तआ़रुफ़	347
ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मुख़्तसर तआ़रुफ़	397
फ़िरऔ़न का मुख़्तसर तआ़रुफ़	397

उ़न्वान	सफ़ह़ा
फ़ज़ाइलो मनाक़िब	
अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام	
ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मक़ाम	150
अ़ज़मते अम्बिया	257
शैत़ान, अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को गुमराह नहीं कर सकता	377
ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का अपने ज़माने के लोगों पर इन्तिख़ाब हुवा	428
हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	
नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मज़ाक़ उड़ाने वालों का अन्जाम	75
नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गवाही देना सुन्नते ख़ुदा है	83
अ़ज़मते मुस्त़फ़ा और अ़ज़मते सह़ाबा	203
तौरात व इन्जील में मज़्कूर औसाफ़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	448
अ़फ़्वो दर गुज़र और सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	503
हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **की इत़ाअ़त और महब्बत**	
नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत की बरकत	199
रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब भी बुलाएं तो उन की बारगाह में ह़ाज़िर होना ज़रूरी है	539
सूरतों का तआ़रुफ़	
सूरए अन्आ़म का तआ़रुफ़	63

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा
सूरए आ'राफ़ का तआ़रुफ़	263
सूरए अन्फ़ाल का तआ़रुफ़	516
सूरतों के फ़ज़ाइल	
सूरए अन्आ़म की फ़ज़ीलत	63
सूरए आ'राफ़ की फ़ज़ीलत	263
सूरतों के मज़ामीन	
सूरए अन्आ़म के मज़ामीन	63
सूरए आ'राफ़ के मज़ामीन	263
सूरए अन्फ़ाल के मज़ामीन	516
पिछली सूरत के साथ मुनासबत	
सूरए माइदह के साथ मुनासबत	64
सूरए अन्आ़म के साथ मुनासबत	264
सूरए आ'राफ़ के साथ मुनासबत	517
आयात से मा'लूम होने वाले मसाइल व अह़काम	
आयत "فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ" से मा'लूम होने वाले मसाइल	26
आयत "لَا تَسْئَلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ" और इस की तफ़्सीर में मज़्कूर रिवायात से मा'लूम होने वाली अहम बातें	38
आयत "وَلَا تَسُبُّوا" से मा'लूम होने वाले मसाइल	174
आयत "خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ" से मा'लूम होने वाले अह़काम	300
सूरए आ'राफ़ की आयत नम्बर 67 और 68 से मा'लूम होने वाले मसाइल	353
आयत "وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا" से मा'लूम होने वाले मसाइल	369
ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ	
अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ और उस की मह़ब्बत पैदा करने का ज़रीआ़	76
अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से गुनाह छोड़ने के 3 फ़ज़ाइल	239
अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से ह़राम काम छोड़ने की फ़ज़ीलत	243
अल्लाह तआ़ला की ख़ुफ़्या तदबीर से हर वक़्त डरते रहना चाहिये	390
ख़ौफ़े ख़ुदा से मुतअ़ल्लिक़ आसार	519
इल्म	
इल्म के बिग़ैर दीनी मसाइल में झगड़ना शैत़ानी लोगों का काम है	197
क़ुरआन की आधी आयत में पूरा इल्मे तिब	302
दा'वतो तब्लीग़ (नेकी की दा'वत)	
नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने के बारे में अह़ादीस	44
तकालीफ़ की वज्ह से तब्लीगे़ दीन में दिलतंग नहीं होना चाहिये	266
मुबल्लिग़ को चाहिये कि मुख़ात़ब की जहालत पर शफ़्क़तो नरमी का मुज़ाहरा करे	349
क़ुदरत के बा वुजूद बुराई से मन्अ़ करना छोड़ देना अ़ज़ाबे इलाही आने का सबब है	541
वा'ज़ो नसीह़त	
साबिक़ा उम्मतों के अन्जाम से इ़ब्रत ह़ासिल करें	70
ह़िसाब होने से पहले अपना मुह़ासबा कर लिया जाए	127
क़ब्रो ह़श्र की तन्हाई के साथी बनाना अ़क़्ल मन्दी है	162
मुसल्मानों को चाहिये कि इन्सानी शैत़ानों से बचें	179

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा
इस्लामी लबादे में मल्बूस इस्लाम दुश्मनों से बचा जाए	189
ज़ुल्म करने वालों को इ़ब्रत अंगेज़ नसीह़त	209
सिर्फ़ अ़क़्ल पर भरोसा नहीं करना चाहिये	249
आयत "قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ" की रोशनी में चन्द लोगों को नसीह़त	304
अच्छे अ़मल की तौफ़ीक़ मिलने पर **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द की जाए	321
ग़रीबों की ग़ुर्बत का मज़ाक़ उड़ाने से बचा जाए	331
क़ौम की हलाकत का बाइ़स उस के रहनुमा	374
शर्ई अह़काम बात़िल करने के लिये ह़ीला करने वालों को नसीह़त	460
लालची और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करने वाले उ़लमा के लिये नसीह़त	475
दरबारी उ़लमा के लिये इ़ब्रत	476
हर अच्छे काम की निस्बत **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ की जाए	533
लिबास	
सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का लिबास	289
सफ़ेद लिबास की फ़ज़ीलत	290
आ़म और नया लिबास पहनते वक़्त की दुआ़एं	290
लिबास की उ़म्दा तश्रीह़	290
तवक्कुल और शुक्र	
शुक्र की ह़क़ीक़त और इस के फ़ज़ाइल	272
तवक्कुल का ह़क़ीक़ी मफ़्हूम	377
तवक्कुल का ह़क़ीक़ी मा'ना और तवक्कुल की फ़ज़ीलत	520
ने'मत की नाशुक्री ने'मत छिन जाने का सबब है	543

उ़न्वान	सफ़ह़ा
ह़ुस्ने सुलूक	
ग़रीबों के साथ सुलूक के ह़वाले से नसीह़त	116
नेक मुसल्मानों का एह़तिराम करना चाहिये	118
मुसल्मानों को आपस में कैसा होना चाहिये ?	320
इख़्लास	
इख़्लास की ह़क़ीक़त और अ़मल में इख़्लास के फ़ज़ाइल	296
तर्के इख़्लास की मज़म्मत	297
मसाइब	
मसाइब की दूरी के लिये नेक आ'माल करने जाइज़ हैं	387
मुसीबत के वक़्त अ़ह्दो पैमान और बा'द में उस के बर ख़िलाफ़	395
मसाइब ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदारी का सबब भी हैं	411
मज़म्मत	
काहिनों और नुजूमियों के पास जाने की मज़म्मत	25
दुन्या की मज़म्मत	35
बे ज़रूरत सुवालात करने की मज़म्मत	40
आबाओ अज्दाद की ना जाइज़ रस्में पूरी करने की मज़म्मत	42
बुग़्ज़ व कीने की मज़म्मत	319
बद शुगूनी की मज़म्मत	412
शमातत की मज़म्मत	437
गुनाह	
अल्लाह तआ़ला की रह़मत देख कर गुनाहों पर बेबाक नहीं होना चाहिये	78
कुफ़्र और गुनाहों के बा वुजूद दुन्यवी ख़ुशह़ाली का अस्ली सबब	105

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा
गुनाह करने वाले ग़ौर करें	126
गुनाहों पर इसरार न किया जाए	132
गुनाहों पर इसरार ह़ालते कुफ़्र में मौत का सबब बन सकता है	137
ब ज़ाहिर नेक रहना और छुप कर गुनाह करना तक़्वा नहीं	238
अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से गुनाह छोड़ने के 3 फ़ज़ाइल	239
ज़ाहिरी व बातिनी बे ह़याइयों को ह़राम क़रार दिये जाने की वज्ह	308
गुनाहों के बा वुजूद ने'मतें मिलना कहीं **अल्लाह** तआ़ला की ढील न हो	482
गुनाहों के बा वुजूद उ़म्र लम्बी हो तो इसे बेहतर न समझा जाए	484
गुनाह पर जल्दी पकड़ न होना अ़ज़ाब है	487
तौबा	
तौबा करने की अहम्मिय्यत और इस की तरग़ीब	194
तौबा और नेक आ'माल में सब्क़त करने की तरग़ीब	251
तौबा के फ़ज़ाइल	440
काफ़िर तौबा करे तो उस के साबिक़ा गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं	557
अ़ज़ाबे इलाही	
निशानियां पूरी होने के बा वुजूद कुफ़्फ़ारे मक्का पर अ़ज़ाब नाज़िल क्यूं न हुवा ?	72
अहले मद्यन पर आने वाले अ़ज़ाब की कैफ़िय्यत	379
नेक आ'माल करने और अ़ज़ाबे इलाही से डरने की तरग़ीब	389

उ़न्वान	सफ़ह़ा
अ़ज़ाब से अम्न में रहने का ज़रीआ़	552
ज़ुल्म	
ज़ालिम की वईद में दाख़िल अफ़राद	86
ज़ुल्म करने वालों को इ़ब्रत अंगेज़ नसीह़त	209
ज़ुल्म के मा'ना	256
तकब्बुर	
तकब्बुर की मज़म्मत	276
तकब्बुर की बहुत बड़ी क़बाह़त	311
तकब्बुर की ता'रीफ़ और इस की अक़्साम	431
तकब्बुर की तीनों अक़्साम का हुक्म	432
तकब्बुर का समरा और अन्जाम	432
दुआ़	
उम्मते मर्ह़ूम के ह़क़ में दुआ़	59
दुआ़ मांगने के फ़ज़ाइल	341
एक दुआ़ से ह़ासिल होने वाले फ़वाइद	342
दुआ़ में ह़द से बढ़ने की सूरतें	343
ख़ौफ़ और उम्मीद की ह़ालत में दुआ़ मांगनी चाहिये	344
अस्माए ह़ुस्ना पढ़ कर दुआ़ मांगने का बेहतरीन त़रीक़ा	480
दुआएं और वज़ाइफ़	
फ़क़्रो मोह़ताजी दूर होने की दुआ़	164
मख़्लूक़ के शर से बचने के लिये 3 वज़ाइफ़	187
ज़ाहिरी व बातिनी गुनाहों से महफ़ूज़ रहने की दुआ़	239
शैत़ान से हिफ़ाज़त की दुआ़	282
आ़म और नया लिबास पहनते वक़्त की दुआएं	290
मुतफ़र्रिक़ात	
नेक लोगों की पैरवी ज़रूरी है	43
"वही" का एक मा'ना	52

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
सच्चाई की बरकत	61	कुफ़्फ़ार के लिये आस्मान के दरवाज़े न खोले जाने के मा'ना	315
कुफ़्फ़ार की दुन्यवी तरक़्क़ी बारगाहे इलाही में मक़्बूलिय्यत की दलील नहीं	71	**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल	322
मुसल्मानों की बाहमी लड़ाई का एक सबब	131	मुसल्मान कहलाने वाले बेदीन लोगों का अन्जाम	325
आज़र ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का चचा था या बाप ?	140	कुफ़्र और बद अ़मली की बड़ी वज्ह	326
ह़नीफ़ के मा'ना	145	आस्मान व ज़मीन को 6 दिन में पैदा करने की ह़िक्मत	339
दीने ह़क़ के इस्तिह़्काम की सूरत	145	जल्द बाज़ी से मुतअ़ल्लिक़ 2 अह़ादीस	339
दिल अपने हम जिन्स की त़रफ़ झुकता है	184	अच्छे अ़मल को बुरा और	
कुफ़्र और जहालत की मिसाल	198	बुरे अ़मल को अच्छा समझने की औंधी सोच	367
पेश्वाओं के बिगड़ने का नुक़्सान और संभलने का फ़ाएदा	200	किसी जगह नेक बन्दों का मौजूद होना अम्न का ज़रीआ़ है	368
सीना खुलने से क्या मुराद है ?	205	अह़कामे इलाहिय्यह की पाबन्दी में अपनी	
सीने की तंगी की अ़लामत	205	नाकामी समझने वाले ग़ौर करें	379
अ़ह्द शिकनी पर वईद	243	साबिक़ा उम्मतों के अह़वाल बयान करने से मक़्सूद	382
सीधा रास्ता	245	ना गहानी आफ़ात और मुसल्मानों की ह़ालते ज़ार	385
फ़िर्क़ा बन्दी का सबब और ह़क़ पर कौन ?	253	वुस्अ़ते रिज़्क़ सआ़दत भी है और वबाल भी	388
सवाब के दरजात	255	अ़साए कलीम अज़्दहाए ग़ज़ब	399
सब से पहले मोमिन	259	काफ़िरों को जानवरों से बदतर	
आ़जिज़ी के फ़ज़ाइल	277	फ़रमाए जाने की वुजूहात	478
ह़ज़रते शक़ीक़ बल्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का त़रीक़ा	282	कोई ज़माना अहले ह़क़ से ख़ाली न होगा	481
ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अ़मल में मुसल्मानों के लिये तरबियत	287	निगाहे बसीरत से देखना ही ह़क़ीक़ी त़ौर पर फ़ाएदे मन्द है	502
क़िस्त़ के मा'ना	296	मुत्तक़ी मुसल्मान और काफ़िर का ह़ाल	510
ज़ीनत की दो तफ़ासीर	303	कामिल ईमान वालों के तीन औसाफ़	519
अल्लाह तआ़ला पर इफ़्तिरा की सूरतें	312	मोमिन की फ़िरासत	546

www.dawateislami.net